

अनुक्रमणिका.

| १. रंगीत चित्रें. | | पान १ |
|---------------------------------------|----|---|
| श्रीमंत जयाजी आंणा शिंदे | | पान १९४ |
| श्रीमंत दत्ताजी शिंदे | | |
| २. विषयसूची. | | लेखांक. |
| प्रतिनिधी जगजीवन परशुराम यांची पत्रें | .. | १, ३४. |
| „ श्रीवास परशुराम | .. | ३. |
| „ यमाजी शिवदेव निता | .. | ३५. |
| पेशवे बाजीराव बलाळ भट्ट | .. | २. |
| „ बालाजी बाजीराव | .. | ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४. |
| „ रघुनाथ बाजीराव | .. | २८, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ५४, ५५, ५६, ५७, ६१, ६२, ६६, ७६, ८५, ८९, ९५, ११०, १११, ११६. |
| „ सदाशिव चिमणाजी | .. | ५३, १००. |
| „ भाववराव बलाळ | .. | ११५, ११८, ११९, १२०. |
| „ भाववराव नारायण | .. | १२१, १२२, १२३, १२५, १२६. |
| समशेर बहादुर | .. | ८१, ८६. |
| अली बहादुर | .. | १२४. |
| रामचंद्र मल्हार सुखठणकर | .. | १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७. |

| लेखक. | लेखांक. |
|-------------------------|---|
| दाभीळकर हरी अनंत .. | १५६, १६०, १६२, १८०, १९५. |
| „ रामाजी अनंत .. | १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५७, १५८, १५९, १६१, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४. |
| „ आपाजीराम .. | १३८. |
| „ गोविंद भगवंत निगा .. | ३७८. |
| वळे कुसाजी कोनेर .. | १९६, १९७, १९९, २००. |
| „ चित्तो कृष्ण .. | १९८, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४. |
| „ घोडो कृष्ण .. | २२२, २२३, २२७, २२८, २२९, २३०. |
| „ नारो कृष्ण .. | २३७. |
| „ महादाजी कृष्ण .. | २२३, २२५, २२६, २३२, २४०. |
| अभ्युतराव गणेश .. | ४३०, ४३२. |
| आठवले जनार्दन राम .. | ३६६. |
| „ त्रिविक विठ्ठलनाथ .. | ४६२. |
| „ राघो हरी .. | ३६२. |
| „ लक्ष्मण हरी .. | ३७२. |
| „ विसाजी दादाजी .. | २६७, २७३, २७४, ३०५, ३१०, ३२७, ३७७. |
| ओढेकर त्रिविक शिवदेव .. | २६१, ४०९. |
| „ रंगराव शिवदेव .. | २५१ |
| „ शिवाजी शंकर .. | २४७, २४८. |
| अंताजी माणकेश्वर .. | ३७६. |
| कदम गणोजी .. | ४१७. |
| कृष्णाजी महादेव .. | ३६९. |
| केशव अनंत .. | ४१३. |

लेखक.

लेखक.

| | | |
|--------------------------|----|---|
| केशव गोपाल | .. | ३५४. |
| गणेश कृष्ण पेंडसे | .. | २५८, २५९, २६५, २७१, २७२, २७५, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८४, २८५, २८६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०६, ३०७, ३११, ३१२, ३१८, ३२२. |
| गणेश केशव चितळे | .. | ४४६. |
| गिरजाजी शहाले | .. | ३५०. |
| गुंडी महादेव | .. | ३९०. |
| गुल्लुले बालाजी यशवंत | .. | २४९, २८८, ३४०, ३४५, ३४६, ३४७. |
| „ भगवतराव यशवंत | .. | ४५३, ४५४, ४५६, ४५७. |
| „ लालाजी बलाळ | .. | ४११, ४४७. |
| गोपाळराव गणेश वर्णे | .. | ३०४. |
| गोपाळराव गोविंद | .. | ३९६. |
| गोपाल त्रिवक | .. | ४२३. |
| गोविंद तुकडेव | .. | ४५२. |
| गोविंद बलाळ दंडेले | .. | २६४, २६८, २९२, ३१४, ३१५, ३१६, ३२०, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३. |
| गोविंद रायाजी | .. | ३५५. |
| गंगाधर यशवंत चंद्रचूड .. | .. | २५०, २५७, २९३, २९६, ३५७, ३५८, ३९४. ४००. |
| चित्तामण शेंडे | .. | ४६१. |
| चित्तो नारायण काष्टीकर | .. | ३८७. |
| जयराम अनंत | .. | ४४०, ४४३, ४४९, ४५१. |
| तिमाजी कान्होजी भोर | .. | ३७४. |
| त्रिवक गोपाल | .. | ३१९. |
| त्रिवक वताजी | .. | ३८६, ३८९, ३९५. |
| त्रिवक सदाशिव | .. | ४६०. |
| थोरात सुमानजी | .. | २४५, २४६. |
| देवजी पाा ताकपीर | .. | २४२. |
| घोडोराम | .. | ४०१. |
| नारो गोपाल | .. | ४३४. |
| नारो विठल | .. | ३३४, ३९१, ३९३. |
| निर्नावी | .. | २५३, २५४, ३१७ ३२३, ३३६, ३४२, ३७१, ३९८, ४०४, ४०८, ४१२, ४२५, ४२८, ४२९, ४४५, ४५५. |

| लेखक. | | केसक. |
|---------------------|----|---|
| निबालकर अर्जुनराव | .. | ३८३. |
| „ जगन्तराव | .. | ३७९, ३८०. |
| „ हणमंतराव | .. | २५५, २५६, ३६५. |
| प्राणनाथ बंसीधर | .. | ३८२. |
| बाजी नरसिंह | .. | ४३१, ४३३, ४४२, ४५०, ४५८. |
| बापूजी बलाल फडके | .. | २९४, २९५, ३२१, ३३८, ३३९. |
| बापूजी महादेव हिगणे | .. | २५२. |
| बाबूराव बोडके | .. | २४४ |
| भगवंतराव शंकर | .. | ४२६, ४२७, ४४१. |
| भानु जनार्दन बलाल | .. | २६०, २६३, २६६, २८३, ३०३, ३०८, ३१३ ३२४, ३२५, ३२६. |
| „ बालाजी जनार्दन | .. | २६२, ३०९, ३३७. |
| भिकारीदास लाला | .. | ३४३. |
| भोसले जानोजी | .. | ३४४, ३४८, ३९९. |
| „ मुषोजी | .. | ३७५, ३८४. |
| „ आईसाहेब | .. | ३६७ |
| „ जीजाबाई | .. | ४०२, ४०३ |
| मनोहर बगाजी | .. | २९०. |
| महादाजी बलाल गुरूजी | .. | ४०५. |
| महादाजी शंकर | .. | ४४८. |
| माणको बलाल | .. | ४३५, ४३६, ४३७, ४५९, ४६३, ४६४, ४६५. |
| यादव रामराव | .. | ३३५. |
| येवलेकर जिवाजी ना | .. | ३९७. |
| „ नानाजी ना | .. | ३८५. |
| राघो त्रिंबक | .. | ३४१. |
| राघो दादाजी | .. | ३९२ |
| राघो मल्हार वीवाण | .. | ४६६. |
| राघो शंकर | .. | ४१५, ४१९, ४२१, ४२२. |
| राघाबाई | .. | ३५१. |
| रामचंद्र कृष्ण | .. | ३८८. |
| रामराव नीलकंठ | .. | ३५६, ३५९, ३६०, ३६१, ३६३ |
| रामाजी खंडेराव | .. | २४६ |
| रायाजी पवार | .. | ३७३. |
| रायाजी यादव | .. | २५०. |
| रुद्राजी खंडेराव | .. | ४४४. |

लेखक,

खेतीक.

| | | | |
|---------------------------|----|---|--------|
| विचुरकर त्रिवकराव नारायण | .. | ४०७, ४२४. | |
| „ चारो शंकर | .. | ३६८, ४०६, ४३९. | |
| „ विश्वासराव लक्ष्मण | .. | ४१६. | |
| वंछ लक्ष्मण केशव | .. | ३६४, ३७०. | |
| ध्यांकाजी नारायण काष्टीकर | .. | ३४९. | |
| सकुर्गाई मुलावा | .. | २४१. | |
| सखाराम भगवंत बोकीळ | .. | २६९, २७०, २७६, २८७, २८९, २९१, ३२८, ३५२, ३८३. | |
| सचीव सदाशिव चिमणाजी | .. | ११७. | |
| सदाशिव पांडुरंग | .. | ३५३. | |
| सदाशिव बापूजी फडणीस | .. | ४१४. | |
| सिंदो योगीराज | .. | ४६४, ४६५. | |
| सिवाजी नारायण | .. | २४३. | |
| सुखराम मोदी | .. | ४२०. | |
| संताजी वाबळे | .. | ४१०, ४१८. | |
| ३. धंयसुची | | | |
| ४. ध्यातिसुची | | | ३ व ४३ |
| ५. एखलसुची | | | ३ व २२ |

श्री

शिंदेशाही इतिहासाची साधने.

मालेच्या ग्रंथाची सूची.

प्रकाशित झाले

१. शिंदे राजघराण्याचा पत्रव्यवहार
२. होळकर राजघराण्याचा "
३. शिंदेशाही मुत्सद्दांचा "
४. वाकणकर संग्रह "

१७३०-१७६८
१७४०-१८५०
१७२३-१८५९
१८०७-१८४७

मुद्रित होत आहेत—

५. बाळाजी अनारदन जांबगोवर्कर "
६. शिंदेशाही चिटणीस घराणे "
७. बालाराव गोविंद गलगलेकर "

१७१०-१८००
१७६८-१८६०
१७५०-१७८२

मुद्रणासाठी तयार आहेत.—

८. शिंदेशाहीतील शेणवी मंडळी "
९. आपाजीराम दामोदरकर "
१०. जगन्नाथ विश्वनाथ जुन्नरकर "
११. हिंदी पत्रव्यवहार "
१२. श्री. महादजी शिंदे "
१३. श्री. महादजी शिंदे "
१४. श्री. महादजी शिंदे "
१५. सदाशिव जगन्नाथ जुन्नरकर "
१६. सदाशिव जगन्नाथ जुन्नरकर "
१७. सदाशिव जगन्नाथ जुन्नरकर "
१९. सदाशिव जगन्नाथ जुन्नरकर "
२१. नागोराव देवजी आणि

१७७०-१८६०
१७६८-१८१६
१७८१-१७९४
१७३६-१८६०
१७६२-१७७३
१७७४-१७८२
१७८३-१७९४
१७९४-१७९६
१७९७-१७९९
१८००-१८०२
१८०३-१८०५
१७८५-१८१५

महिपतराव आपाजी.

२२. फारसी पत्रव्यवहार "
२३. अंबाजी हंगळे "
२४. श्री. दौलतराव शिंदे "
२५. श्री. दौलतराव शिंदे "
२६. किरकोळ मंडळी "
२७. छाडेराय रासो "
२८. गवालियरनामा सत्रसाल रासो
पुढे चालू.

१७६३-१८१०
१७९४-१८०३
१८०४-१८२०
१७७०-१८६०
१७४९-
१८०३-

श्री

संदर्भग्रंथ सूचि.

| | | |
|-------------------------------|--|-------------------------------|
| १. काटे. रामचंद्र गोविंद | .. सपूर्ण भूषण | .. १९३० |
| २. खरे. वासुदेव वामनशास्त्री | .. ऐतिहासिक लेखसंग्रह भाग १, २, ३ | .. |
| ३. गाढगीळ, हरी रघुनाथ | .. विचुरकर बराण्याचा इतिहास | .. १८८३ |
| ४. दिघे. विश्वनाथ गोविंद | .. मराठ्यांच्या उत्तरेतील मोहिमा | .. १९३६ |
| ५. पारसनीस, दत्तात्रय बलवत | .. ब्रम्हेद्रस्वामीचे चरित्र भारतवर्ष मासिक पूर्ण, इतिहाससंग्रह भाग १, २, ४, ५, १६, २१, २३. | .. १९०० |
| ६. पुरंदरे, कृष्णाजी वासुदेव | .. पुरंदरे दफतर भाग १ | .. १९२९ |
| ७. भागवत, अनंत नारायण | .. होळकरशाही इतिहासाची साधने भाग १, ६. | .. |
| ८. भारतेतिहास मंडळ पुणे | .. माला पुस्तक २०, २४ त्रैमासिक वर्ष ८, १६ चंद्रचूड दफतर कला १ | .. शके १८४२ |
| ९. रघुनाथ यादव विरचित | .. पानिपतची वखर | .. १९१४ |
| १०. राजवाडे, काशिनाथ विश्वनाथ | .. मराठ्यांच्या इतिहासाची साधने खंड १, ३, ६, १०, १२, १३, १४, १५. ऐतिहासिक प्रस्तावना | .. शके १८५० |
| ११. राजाध्याक्ष, नरहर व्यंकजी | .. जिवाजी बलाळ केरकर चरित्र | .. १९०७ |
| १२. खोडो मोरेश्वर | .. इंदूर संस्थानची वखर | .. १९०० |
| १३. लेले, काशिनाथ कृष्ण | .. धार संस्थानचा इतिहास | .. १९२६ |
| १४. वाड, गणेश चिमणाजी | .. पेशव्यांची रोजनिवी भाग १, ३, ७, ९ | .. |
| १५. विजापुरकर, विष्णू गोविंद | .. ग्रंथमाला, पेशवे घाकावली, अपूर्ण | .. १९०५ |
| १६. बर्वे, मुकुंद वामन | .. राणोजी शिंदे यांचे चरित्र | .. १९१७ |
| १७. जोगरे, केशवराव बलवंत | .. चंद्रचूड दफतरातील उत्तारे | .. १९३४ |
| १८. सरदेसाई, गोविंद सखाराम | .. मराठी रियासत, पानिपत ३ नाना साहेब पेशवे चरित्र काव्येतिहास संग्रह पेशवे दफतर भाग १, २, ३, ६, ७, ९, १०, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, | .. १९२२ .. १९२६ .. १९३० |

२५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३२,
३६, ३९, ४०, ४६.

| | | | |
|----------------------------|--|----|-------|
| १९. साने, काशिनाथ नारायण | .. भाऊ साहेबाची वखर | .. | १९२२ |
| २०. सातारा ऐतिहासिक मंडळ | .. शिंदेसाहीची राजकारणे भाग १ | .. | १९३४ |
| २१. सोहनी, कृष्णाजी विनायक | .. पेशव्यांची वखर | .. | १९२५ |
| २२. शर्मा, गणेश रामचंद्र | .. सारस्वत रत्नमाला | .. | १९१० |
| २३. हितचिंतक | .. पानिपत अंक | .. | १९३३. |
| २४. संपादक | .. शिंदेसाही इतिहासाची साधने भाग १, २, ४. | | |

English.

| | | |
|----------------------------|------------------------|------|
| Bull and Haksar | . Madhav Rao Scindia. | |
| Indian Historical Com'sion | .. Report Vol. XIII | 1932 |
| Tod. Col. James | . Rajasthan Vol. I, II | 1917 |

श्रीकृष्ण भालेराई.

या भागांत ४६६ पत्रे आली आहेत. पैकी २५० दाभोळकर संग्रहांतील होत. ईसवी सन १७५० त रामचंद्र मल्हार सुखठणकर शिंदेसाही सोडून पेशवाईत दिवाणगिरीवर गेला तेव्हा त्याच्या हाताखाली काम करणारा 'फडणिसीकडील कारकून रामाजी अनंत दाभोळकर' हा शिंद्याचा दिवाण झाला. तो पुढे भाऊगदींत पानिपतावर पतन पावला. त्याचा पुत्र आपाजीराम बर्बात आल्यावर 'भुतालकीचा फडणीस' म्हणून महादजी शिंद्याकडे १७९१ पर्यंत होता. तो कृष्णगड समीप अजमेर येथे वारला. तेव्हा पुत्र किंवा कोणी बंधू जवळ नसल्यामुळे त्याचा हस्तक जनार्दन लक्ष्मण वैद्य हा ते काम करू लागला आणि १८०२ पर्यंत तो ते चालवीत होता असें समजते. अशा प्रकारे दाभोळकर घराण्याचा सवध शिंद्याशी बराच काळ राहिला. त्याचे वंशज मोजे अकोलनेर परगणे नगर या गांवाचे इनामदार असून ते तेथेच वास करितात. विद्यमान श्रीमंत जनार्दन मोरेस्वर दाभोळकर यांनी पूर्वापार स्नेहसंबंध लक्षांत घेऊन शिलेदाराच्या विनंतीस मान देऊन ग्वाल्हेरीस येण्याचे परिश्रम घेऊन कागदपत्र दाखविले. या आपुलकीबद्दल त्यांचे जितके कौतुक करावे तेवढे थोडेच. त्यांच्या संग्रहांतील पानिपतीय पत्रे तेवढी येथे दिली आहेत. इतर २०० कोटेकर वकील गुळगुळे यांच्या दप्तरांतील असून वाकी अन्यत्र सांपडली. दाभोळकर संग्रहापैकी ५५ पत्रे पूर्वी काव्येतिहाससंग्रहांत प्रसिद्ध झाली असल्यामुळे वास्तविक येथे ध्यावयास नको होती परंतु त्यांची आणि या नवीन पत्रांची श्रृंखला तुटत असल्यामुळे सदभासाठी ती एकत्रित करणे विहित वाटले. अर्थात् पुनरावृत्ति झाली तरी वाचकांची सोय प्राधान्य समजून तशी योजना करणे प्राप्त झाले. काव्येतिहाससंग्रहांतील पत्रे दुर्मिळ होत चालल्यामुळे त्यांचे पुनर्मुद्रण करून सरदेसायांनी काल ठरवून जो क्रम दिला आहे तोच हवाला लेखांकाखाली दाखविला आहे ती पत्रे वगळली असतां शोध अगदीच नवीन होत. सख्या अल्प खरीच पण ही उणीव महती भरून काढते. पणवे, सुखठणकर, दाभोळकर, वळे व पेंडसे यांची पत्रे अधिक असून अत्यंत महत्त्वाची आहेत. सार थोडक्यांत सांगा- वयाचे म्हणजे पानिपतीय वृत्तात देशारे जे अनेक बाड मराठीत उपलब्ध आहेत त्यांत भाऊसाहेबाच्या नांवावर मोडणारी बखर चिकित्सेस उत्तम विश्वासास बरीच पात्र झाली तथापि तिची खरी योग्यता काय आहे याविषयी सशोधनक्षेत्रात संशयाचा संचार अनपेक्षित रीतीने झाला आहे तो कितपत योग्य होय याचे निराकरण करून हे ऐतिहासिक बाड कोणत्या प्रतीचे असून त्यांत कादंबरीचा अंश किती आहे याचें मूर्तिमंत चित्र रेखाटणारी साधने म्हणून बरील पत्राचे महत्त्व प्रतीत होणार आहे. या पत्राचे आणि बखरीचे साम्य विलक्षण जुळते. त्याचे प्रतिबिंब बखरीच्या अनुरोधाने पण चिकित्सक वृद्धीने कोठे काय दृष्टीस पडते त्याचे साध विवेचन करणे तूर्त इष्ट नसले तरी मतितार्थ देणें मात्र प्राप्त होते.

बरील बखरीचे खरे नांव काय आणि तिचा कर्ता कोण असावा या प्रश्नाचा प्रपंच पुढे पाहूं. प्रारंभी एवढाच परिचय पुरा होय की, ही बखर प्रथम सान्यांनीं प्रकाशित केली. ती वैद्य, रानडे प्रभृति सुप्रसिद्ध इतिहासकारांस आवडून लोकप्रिय झाली. तिची ही प्रतिष्ठा कित्येकांस संशयित

भासली त्यांत राजवाड्याचे नांव प्रामुख्याने पुढे येते. संन्यासवृत्ति धारण करून इतिहासपंथास लागून, खडतर तपश्चर्या करून साधनसिद्धि संपादन अनेक मनोविषयक चमत्कार त्यांनी दाखविले त्यांत प्रथम खंड हे पहिले प्रत्यंतर होय. प्रत्यक्ष पनाच्या प्रमाणावर केलेली ही पानिपतची मीमांसा इतकी मुंदर वळली आणि कौतुकास्पद वाटली की, इतिहासांत ती प्रमाणभूत होऊन वसली. खडें व सकलून त्या आधारे प्रसार पावू लागले याचे आश्चर्य नाही. नवल एवढेच की, तिसरा व सहावा हे खड वाहेर पडून पारसनीस, चद्रचूड, पुरदरे, पेजवेदपार इत्यादि प्रचंड साधनांची अनुकूलता झाल्यावर पानिपतीय चर्चांमशांत ते सिद्धांत अढळ राहून शास्त्रीय गोष म्हणून इतिहासांत शिरू पाहतात आणि जो सांबळागोषळ परकीयांनी घातला होता त्याचीच तळी स्वकीयांच्या हातून उचलली जाऊन त्या नादांत सत्याचा वळी पडून असत्याचा उदय होऊ चावा ही गोष्ट चिंतनीय असून राष्ट्रे-तिहासास घातक आहे. यामाठी जाच लेपकाच्या मुळाशी जाऊन त्याच्या गोषाचा ठाव घेण्याचे प्रयोजन आहे त्यापलीकडे खोल जाण्याचे मानस नाही.

पानिपतचे वर्णन करणाऱ्या अनेक वजरी असल्या तरी त्यांत काशीराजाची वखर, होळ-कराची कैफियत, भाऊसाहेबाची कैफियत व भाऊवखर मुरय होत. या चोहोतरी भाऊवखर श्रेष्ठ असून तिची बहुतेक विधाने मप्रमाण सिद्ध होण्यासारखी आहेत या वजरीचा लेखक दिघाचा आश्रित असल्यामुळे या भार्गातील पथाचा प्रकाण पडून तिचा प्रभाव अधिकाधिक दिसून यावा हे सहाजिकच आहे. अस्तु या वखरीचा निवाडा मर्बस्वी भाऊसाहेबांविरुद्ध असून अथपासून इति पर्यंत दोष दाखवून त्याचे नार 'भाऊवर्दी' हा नवीन शब्द निर्माण करून सक्षेपित दिले आहे. राधोबा-सह पेजव्याचा समाचार घेतला पण तो अगदीच सौम्य भाषेत होय. खुळवून लिहिण्याची चटक म्हणजे ही वृत्ति असून तिचा झणझणट तिखटमिठासारखा भासून त्याच्या उलट भाऊसाहेबांचे प्रत्येक गोष्टीत नमयन करून राधोबासह पेशव्यास दोषमुक्त करण्याचा प्रयत्न राजवाड्याची फसून केला आहे तो दतका की, नानामाहेव व भाऊसाहेव 'अष्टपैलू व पंचतत्री मत्स्यही असून त्यांच्या हातून नून होणे केवळ अगवय होते' त्यांनी जे काही केले त्यांत त्यांच्या 'विचारदाक्तीचा गौरवच' करून पानिपतावर इच्छिला प्रकार विपरीतच घडावा असा जणू ईश्वरी सकल्पच होता म्हणून खेवटी निकाल लाविला आहे आणि 'सासात् पुरावा काहीच जाणता येत नसताही स्वामीद्रोहाचे, हराम-खोरीचे व पानिपतच्या अपयगाचे' खापर इतरांच्या मारी फोडले आहे. जुन्या वखरकारांत व नवीन इतिहासकारांत पानिपतच्या मीमांसिविषयी मतभेदाचे स्वरूप असे असून दोघाच्या दुष्टि-कोनात आकाशपाताळांनके अंतर आहे. नवे खडें तितके साधार आणि जुने खडें तितके निराधार अशी माधारण समजूत होत चालली आहे ती सर्वदा नत्य अमी वा नगो सगोषनाचे कर्तव्य इतकेच आहे की, गांपट्टील ती साधने नमोर ठेवून इनर गोषादी पडताळून जे गार निघेल ते स्पष्ट सांगाये मग ते अनुकूल अथवा प्रतिकूल असो त्याचे मुयद्रु म वाटण्याचे कारण नाही. जुन्या वाडासा वाड घालावयाचाच असेल गर तुलनात्मक दृष्टीने ती कोठे किती मग अगर गोटा आहे हें मप्रमाण सिद्ध केले पाहिजे. एरवी याद वाडविष्यांन काहीन अर्थ नाही. मगळ व दूष्ट नगोषनाची मीमा निदान अनी संभवते. या गंगना पाया घाडून त्याचा विस्तार करू पाहणाऱ्या आद्य प्रवर्तवाचे पाऊन वरें पट्टें हे अवलोकन करणे अगत्याचे आहे.

ज्या व्यक्तीवर वाडेंपाना मुरय मटादा अनेक त्याची प्रत्यक्ष पत्रे पोहून त्याचा पदा वित्री मय ननिवर्ग आहे याची परीक्षा वरचे निमित्तने मुरय अंग होय. त्या दृष्टीने भाऊसाहेबांची पत्रे

पुढें आणून त्यांचा परिचय करून देण्याचे जें कार्य केले तें अप्रतिम होय यांत शंका नाही. पण या पत्राचारें चर्चात्मक सार म्हणून जो निष्कर्ष काढला आहे त्यांत निर्बल अंग कोठेच नसून सबल पक्षाचा अतिरेक आहे. विवेचनातील हे व्यंग व्यक्त होऊन पक्षपाताची छटा देते. भाऊचा पक्ष उचलून तो सर्वस्वी उज्वल करून दाखविण्यासाठी पत्रे विपुल होती. तो मार्ग स्वीकारला असतां कोणी प्रत्यचाय नव्हता. परंतु ही सपादणी करित असतां पक्षाभिमानाचा किंवा पक्षपाताचा बोल येऊं न देतां पत्राच्या तुलनेत बखरीचे मोल ठरविण्याच्या मानगडीत भरलेच खूळ उपस्थित होऊन बसले. ते हें की, बखरीचा त्याज्य भाग सोडून बाकीचा ग्राह्य करण्याची पाळी आली मात्र या विश्वसनीय भागावरही राजवाड्याची भिस्त ठेविली नाही. जेथें ठेविली आहे ती भाऊसंबंधी नसून इतरांविषयी आहे. हा चिकित्सेचा प्रकार अद्भुत होय.

या बखरीविषयी २४ टीपेत उल्लेख केला असून ९ टीपेत त्यांतील विधाने मान्य करून १६ मध्ये 'चूक, अवास्तव, काल्पनिक' इत्यादि दोष दर्शविले आहेत त्यांत भरसमेत होळकराच्या गर्जेनेचा भाऊसंबंधी तेवढा प्रसंग होय. तो निराधार आहे असे दाखविणारें एकही पत्र नसतां अवास्तव म्हटले तरी चालेल पण शेष विधानांची वाट काय ? ती राजवाड्यांस मान्य झाली पाहिजेत. परंतु तसा प्रकार कोठेच नसून तिच्या प्रत्येक आक्षेपाविरुद्ध प्रतिपादनाचा शोक आहे अर्थात् 'बऱ्याच चुका गाळल्या असतां बखर बहुतेक बरीच विश्वसनीय आहे' या अभिप्रायाचा अर्थ कळत नाही. ही घरसोड बखरीसंबंधी एकपरी चालेल परंतु पानिपतचे चित्र दाखविणाऱ्या भानूची म्हणजे राजवाड्याच्या नीतिमान पुरुषाच्या आत्मचरित्राची विस्मृति कां व्हावी बरे ! भगवी वस्त्रे परिधान करून स्वामीद्रोह, हरामखोरी, यासारख्या निच कर्माची शिक्षा महाराष्ट्रधर्मास स्मरून देण्यास जो वीर उद्युक्त होतो त्याचें नारायणास्तुन सर्वांवर सारखे फिरलें पाहिजे म्हणजे कोणाही धनुष्यांयास ते बंदूच होईल. 'दादाजी कोढवेव लहानसाच ब्राम्हण जाला परंतु त्याने जे इन्साफ केले ते सर्वांस वंच जाहले.' प्रभूणे हें नाम अजरामर झाले ते या असिधाराव्रतामुळे. ज्या बखरीचा कैदार घ्यावासा वाटतो त्यांतही हा अभाव अंशतः आहेच, तो पुढें निदर्शनास येईलच मात्र एवढे खरे की, संशोधन संप्रदायापेक्षां तिच्या न्यायप्रियतेची ज्योति अधिक तेजःपुंज होती.

पत्राची अपूर्तता ही पहिल्या खंडातील विषयप्रवेशाची प्रकृति मानली आणि बळुंशी ती मानवी स्वभावाची सहचारी साहजिक स्थिति होती तथापि तिसरा व सहावा हे दोन खंड प्रकाश पावले त्यांत कोणी स्थित्यंतर घडले नाही साक्षात् पुरावा नसतांही अपराधी ठरविलेल्या आरोप्याची 'थैली' पाहून संशय गेला नाही. स्वतंत्र पुराव्याची अपेक्षा उरलीच ते प्रमाण जाधवाच्या डाकेंत येऊन थडकले असतां निराकरणाची त्यावर पेंवस्ती पडली नाही किंवा कोणाच्या दुराग्रहामुळें पानिपतचें अपयश ओढवले हे जाधवाचे प्रत्यंतर भानूच्या आत्मचरित्राशी ताडून फलितार्थ दिला नाही या उदासीनतेचे कोडे उलगडून मौनधारणाचे रहस्य कळणें कठिण आहे. इत्योत्तर हीच वृत्ति बहुतेक आढळून येते व ती प्रायः सर्व गोष्टीत दिसून येते. या स्थितीत बखरीविषयी किंवा पत्राविषयी जी सदिग्धता राहिली ती अद्याप विद्यमान आहे. सशय म्हणजे तो हाच. तो केवळ आम्हांसच भासला असें नव्हे, पण पानिपतीच चर्चेत नेहमीच वृष्टीस पडतो. एवंच किंचित् दिग्दर्शन करणें प्राप्त झालें. संशोधनाची प्रगती कल्पनातीत झाली तरी अद्याप बखरीच्या श्रेणीस ती पावली नाही. अनेक रूढे, रहस्ये बखरीत आहेत ती अद्याप उमगावयाचीच आहेत. ती पात्रता पत्रांना न आल्यामुळे बखरीचा आश्रय घ्यावा लागतो आणि जो तो आपल्या आवडीप्रमाणे घेतो. याला घरबंद

कांहींच नाही याचा अर्थ असा निघतो की, पत्रे असमर्थ ठरतील तेथे बत्तार प्राधान्य होय आणि या भावेच राज्याडधानी निरपायास्तव परामर्श घेतला आहे तो निदान अमान्य करता येत नाही. बत्तारीचे ठिकरी होऊन इतिहासाचे काम स्वतंत्रतेने चालण्यास बराच अवधि पाहिजे. निदान या बत्तारीसंबंधी तरी ही स्थिति आहे.

लेखक कोणीही असो बत्तारीचे निरीक्षण करून कर्त्याच्या मनोवृत्तीचा याग लागल्याबाबतून त्याच्या भीमनिचे रहस्य कळणे केवळ अशक्य आहे या दृष्टीने तिचे अवलोकन करू जाता असे निदर्शनास येईल की, बत्तारकार हा अत्यंत कुशल लेखक असून त्याची वर्णनशैली इतर बत्तारीहून भिन्न नव्हे पण मोठी चित्ताकर्षक व अर्थप्रचुर आहे. नादिरगहाच्या स्वारीपासून तत्कालीन राजकीय वानावरण त्यान पूर्ण अवगत होते. रजपूत, जाट, रोहिले व मोगल यांच्या स्वभावाची चांगली ओळख असून परस्परांतील राजकारणीय गुंते त्यास ज्ञात होते. 'मराठी कावा' त्याच्या हृदयी इतका विवला होतो की, पृथ्वीस पन्नास घालणाऱ्या मराठीवर्माची जी हानी पानिपतावर जाली त्याची भीमांसा म्हणून ही शोकमय बत्तार अस्तित्वांत आली या अपजयाची तीन कारणे त्याने दिली आहेत १. चढते कळे राज्य करीत असतां गृहकन्ध लागण्यास कारण जाहले की, दादासाहेब प्रथम स्वारी हिंदुस्थानाचे मोहिमेस पाठविले २ गिंदेहोळकरांचे जुग कुंभेरीवर विस्कटले. ३ सदाशिवराव मारु यांचा विरथि दुराग्रह नटला.

पहिल्या कारणाचा केवळ उच्चार, दुसऱ्याचा किंचित् विचार आणि तिसऱ्याचा बराच विस्तार त्याने केला आहे. बत्तारीचे दुसरें कलम हे पानिपतच्या अरिष्टाचे आद्य कारण होय. 'गृहकन्ध लागण्यास कारण जाहले की, दादासाहेब प्रथम स्वारी हिंदुस्थानाचे मोहिमेस पाठविले' हे वाक्य अत्यंत गूढ असून त्याचा अर्थ फार खोल आहे प्रथम स्वारी म्हणजे कोणाची, हिंदुस्थानची की दादामाहेबांची? हे विणेपण दादासाहेबांचे नसून हिंदुस्थानच्या स्वारीचेच समजले पाहिजे कारण की, पेन्नाच्या व गिंदेहोळकरांच्या अनेक स्वान्या तत्पूर्वी हिंदुस्थानावर झाल्या आहेत 'गिंदेहोळकरा' मिळाल्यानंतरची स्वारी म्हणावी तर त्यांत राघोबाचा नवघ येत नाही अर्थात् या स्वारीचा गर्भितार्थ १७५९ त पेन्नाच्या मराठेशाहीची गिंदेहोळकरां मिळून मोगलांशी १७५२ त अहदनामा झाल्यानंतर जी पहिली स्वारी जाली ती प्रथम स्वारी असा होय. या स्वारीत राघोबा प्रथमच होते पण ती राघोबाची स्वारी न म्हणता हिंदुस्थानची प्रथम स्वारी संबोधण्यांत बत्तारकाराना अभिप्राय असा आहे की, धानगी तेन्नाचा जो प्रकार झाला त्यांत गृहकन्धहाचे बीज होते ते प्रथम स्वारी या शब्दांत व्यक्त करण्याचा हेतू होता तो दाखविला आहे त्याचा राघोबाशी नवघ न आणण्याचा नावार्य उघट आहे की, मन्नाचे बीज स्वारीत उद्भवले नसून त्यापूर्वीच ते उत्पन्न झाले होते. मात्र या क्लृप्त्याचा अज्ञान बत्तारकाराला सावधाना नव्हता म्हणून केवळ गद्योपार्ति त्याने उल्लेख केला आहे त्याचा मुख्य उद्देश पेन्नावर आहे राघोबावर नव्हे परंतु त्याचे स्पष्टीकरण तो फक्त इच्छीत नाही. यानाठी केवळ गुप्त शारदांत त्याने ममारोप केला आहे राघोबाचे बुध्दोप दास्यभावयाने बगते तर 'दुर्ग काशीन फेरी' म्हणून अभिमान वाटणारी स्वारी हीच असून निना निर्दोषी तो फक्त इच्छीत नाही दामाडी दुर्गेतून टोळकरांस राघोबाची विजगी तो देगी करतो आणि मोठ्यांच्या स्वारीत बत्तारकाराने अनेक देऊन शब्दोपेने घेतो. याने मर्म देण की, ब्राह्मणाना परिष्कोट बगवत्तया नसता. इंग्रजीच्या आनगदीत पत्ता तर ने कां नसून मागाचे लागते. निदान मंदागाडी तरंग गाणी वारंदागां, राजातरणा, राजनूदेने, वशिष्ठ भोक्छी इत्यादि, जवानीच्या शान्यां

व अहदनाम्याचें भास्व भस्न सर्व तैली प्रकार घावे लागले असते. त्यांना संबंध विचान्या राबोवाशी नसून पेशव्यांशी होता आणि मुख्याविषयी तर मीन धारण करावयाचें होतें. अर्थात् त्यास नड-पाण्या सर्व गोष्टीस त्याने टाळा दिला आहे. तथापि सत्यास सर्वस्वी वाटू नये म्हणून एका वाक्यांत चितका संकेत भावला तितका त्याने कोंबला आहे. शब्दच्छल करून बखरीस बळेच चंद्रबळ आणावयाचे नाही. राजवाडे, चंद्रचूड, पुरंदरे, पेशवेदफतर इत्यादिकांत अनेक सावने साक्ष देण्यास डोकावीत आहेत. ती मनन केली म्हणजे बखरीची मनोवृत्ती व तिचे लेखनकौशल्य प्रत्ययास येते. हें व्यंग एकाच ठिकाणी आढळून येते असे नाही. दत्ताजी व सावाजी शिंदे यांच्या लाहोराकडील स्वाभ्याचिं ओझरते उल्लेख ही आणखी उदाहरणें सांपडतात. मीमांसक व इतिहासकार या नात्याने हा दोष असू नये, पण आहे तसें करण्याचे कारण काय घडलें असेल ते देव जाणे ! त्याची मीमांसा बखरीच्या भाषेत मिळाली असती तर खरोखरीच बहार होती. ही उणीव भस्न निघणें कदापि शक्य नाही. संशोधनाच्या शक्तीवर उकलेल ते सार मानावे लागेल परंतु ते अंतरीय भस्न म्हणतां येईल काय याची भ्रांतीच आहे. सकेतच कां होईना पण तो तरी बखरकाराने दर्शविला आहे यतिच समाधान मानून शोषास लागले पाहिजे. अशा स्थितीत बखरकाराचे अज्ञान म्हणून जे राजवाड्यांस भासलें ते वस्तुतः तसें नसून पांथरलेले सोम होय असें स्पष्ट होते. पन्नाचारे आद्य कारणाने विद्वर्षन करण्याचा अल्प यत्न यथामती अनेक टीपांतून केला आहे. त्यासंबंधी पुढें शोषाती प्रचीति येईल ती प्रमाण.

मुख्य कारणचें रहस्य उमजल्यानंतर कुंभेरीचा प्रसंग स्नेहांच्या कलुषतेचे बाह्यांग होय हे सहज ध्यानी येईल आणि शिंदेहोळकरांची जी तेढ विकोपास गेली तिचे सत्यस्वरूप कळून येईल. या चुरशीत केवळ सोवतीच वाटेकरी होते किंवा त्यांत कोणी तिसरे भागीदार होते हे निराळे सांगावयास नको. या भागांत कुंभेरीसंबंधी कांही पत्रे आली आहेत ती चिंतनीय असून त्यांत मधाचे बोट किंवा राजकीयवाद प्राधान्य होता हे स्पष्ट होईल. शिंदांचा इतिहास आरंभापासून इतका सरळ व शुद्ध आहे की, पाहिजे तसा कसोटीस लावला तरी तो हीनकस ठरावयाचा नाही. कुंभेरीचे दृश्य हे 'शुक्नीतीचे व स्वैर हेकडतेचे' फल होय विकार वाढून परिणाम विपरीत घडून शिंदेहोळकरांचे आज्ञक्य जुग जें कुंभेरीवर फुटले तें पुनरपि कधी जुडलें नाही. हें बखरीचे विधान निर्विवाद आहे. अहदनाम्यानंतर अबदालीने दिल्ली झोडली तेव्हां होळकर अटकपर्यंत घाबले पण ते दवत-दवतच. तदोत्तर पानिपतचा दुसरा प्रसंग शिंदांशी पडला त्यांत होळकरांचें साह्य लाभले नाही म्हणून 'वीरशी गेली'. नंतर होळकर एकटेच झोंबले त्यांत त्यांची 'कळा गेली' आणि दोघांचा शेदूर उतरला. याचें प्रतिविंब इतिहासांत अनेक वेळा पहावयास मिळते. होळकर कळव्याची चिडके, शिंदे राठोडाशी लढले किंवा पेशवे निझामाशी भांडले तरी सामुदायिक जुटीची सर त्यांस आली नाही. कोणाही दोघांचें जुग जमलें तें सदैव विजयीच राहिले तिघांचा जम बसला तेव्हांच स्वराज्यास विराट रूप आले. अर्थात् ज्या स्नेह्यांच्या वलावर मराठीभर्मांचा उत्कर्ष झाला त्यांत अंतर पडतांच पानिपतचे अरिष्ट आदळले. हे तत्त्व पानिपतची मीमांसा करणारी बखर कसें विसरूं शकते ! एवंच कुंभेरीच्या विकारापासून बखरीस आरंभ व्हावा याचें आवश्यक्य नाही. मात्र तेढ तेथे उगम पावली नसून विकोपास गेली हाच बखरीचा आशय आहे. तात्पर्य की, मुतालकीने चुरस वाढविली आणि शुक्नीतीने विकोपास नेली जयपूर, मेवाड, मारवाड, दिल्ली, जाट, सफरजंग, निजाम, राज-मुद्रा इत्यादि प्रकरणे उद्भवून हेकडता अनिवार होत गेल्यामुळे कुंभेरीवर विपर्यास होणे अपरिहार्यच होतें. मुतालकी काढून घेऊन स्वतः चालविणे अथवा दुसऱ्याकडे देणे शक्य नव्हते कारण पुण्यक्षेप

सोडून दक्षिणेस अगर उत्तरेस जावयाचें नसून एक दक्षिणेकडे व दुसरा उत्तरेकडे सरदार ठेऊन राज्य ह्मीकावयाचें होते [पेढ २८ ले १४१] दक्षिणेंत सोवत्यांचा संसर्ग नव्हता, उत्तर हें त्यांचें रान होतें. तिकडे ज्या गोष्टी कल्पनेत नव्हत्या त्या कर्तव्यांत आणून दाखविल्या तरी खुलापेक्षा दुःखासच कारणीभूत होत गेल्या, त्या इतक्या की, हे 'डोईवरचा कदाचित पदरही काढतील' अशी मुरळ पवू लागली. [पुरंदरे १ ले. २८७, २८९, २९३, ३१०, ३११, ३३४, ३५२] आणि दक्षिण मोकळी करण्याच्या यत्नांत भागीदार होण्याची पात्रता त्यांची राहिली नाही 'उत्तरेस सरकारी कार्य मातबर होणें नाही. जाले तर वंदोवस्त होणार नाही ज्याची फिकीर त्याजलाच केली पाहिजे' [खड ३ ले. १४९] 'अर्थात् दोघांसही उपर दाखवून' हिंदुस्थान स्वराज्यादाखल करण्याचा वानरी तैलाचा प्रकार तैसा विकार घडला म्हणून वखर जे कारण दाखवितें त्याची चर्चा सक्षेपांत केली आहे

या वखरीस जें नांव अकस्मात् प्राप्त झाले ते तिचे खरें नांव नसून 'पानिपतची वखर' असेच नांव अंतरंग पाहून जातां अधिक शोभतें असा तिचे मूळ संपादक काशीनाथ नारायण साने यांचा अभिप्राय होता असे आम्ही पहिल्या भागांत दर्शविले होते ते वाचकांस श्रुत आहेच. या वखरीचे खरें नांव काय असावें हें मूळ वखर मिळाल्यावांचून कळणे कठिण होय. तोवर तिला जें नांव मिळाले त्याजविषयी कोणी वाद घालावयाचा नाही असाही संकल्प होता परंतु अलीकडे पेशवेदप्तर प्रकाशित होऊन या भागांत जी अनेक पत्रे आली त्यांवरून जो बोध वळावत चालला त्याचे दिग्दर्शन करवेंस वाटत असल्यामुळे सक्षेपांत चर्चा करीत आहे

शिंदेबाहेरीत वखरी लिहिण्याची प्रथा होती असे पहिल्या भागांत आम्ही दाखविलें आहे त्याला आतां अधिकच पुष्टी मिळत जाते पेशवेदप्तर भाग ४२ लेखाक १३ वाचनीय असून त्यांत 'शिंद्यांची वखर' म्हणून स्वतंत्र वाढ होते आणि ते मराठ्यांच्या इतिहासाचा खर्चा तयार करीत असतां सातारकर महाराजांकडून ईश्रजाकडील वकिलातें भागून घेतले असे स्पष्ट होते अर्थात् त्या वाढास 'शिंद्यांची वखर' असे नांव असून ते सातारकर छत्रपती यांच्या सग्रही होते असे कळते हा काळ लक्षांत घेतां यापूर्वी शिंद्याची वखर म्हणून कोणी स्वतंत्र ग्रंथ सांपडत नाही अर्थात् ती वखर कोणती असावी असा प्रश्न उद्भवतो आणि तत्कालीन ऐतिहासिक मराठी वाङ्मय पाहून जातां शिंद्याची निकट संबंध ठेवणारा अथवा त्यांचा इतिहास देणारा असा ग्रंथ वरील वखरीशिवाय इतर उपलब्ध नाही. तेव्हां वरील वखरीचेच तर ते नांव नसेलना अशी स्वाभाविक शका उद्भवते आणि ती तशी असल्यास त्यांत कांही विचित्रता नाही असाही मास होतो. उत्तर हिंदुस्थानविषयक इतकी जुनी मराठीत दुसरी वखर नाही रघुनाथ यादव विरचित पानिपतची वखर म्हणून जे दुसरे वाढ आहे ते यानंतर निर्माण झाले आहे. हिचे खरें नांव पानिपतची वखर असतें तर दुसऱ्या ग्रंथकाराने कांही निराळे नांव दिले असते, अशी कल्पना होते किंवा हिचें मूळ नांव पानिपतची वखर असते तर तेही तसे स्पष्ट म्हटले असतें. पण तसा प्रकार नाही. अर्थात् हीच ती शिंद्याची वखर असावी असा तर्क वळावतो आणि वखरीचे अंतरंग पाहून जातां त्यास पुष्टी मिळते. अशा प्रकारें ही शिंद्याची वखर म्हटली तर तिच्या प्रती महाराष्ट्रात सातान्याप्रमाणे अनेक जागी होत्या असे तुंगारप्रत सांगते कारण की, तिचे वर्षे १७ विसावर १७९१ असे दिले आहे ही विचारसरणी सयुक्तिक वाटली तर तिला पानिपतची किंवा भाऊसाहेबाची वखर म्हणताच येत नाही अनेक प्रतीपैकी केवळ एका प्रतीच्या एका पानावर 'वखर भाऊसाहेबाची' अशी अक्षरें असली तरी वरील शोधाच्या आणि अतरंगीय बोधाच्या मानाने ग्राह्य होऊं शकत नाही.

पानिपत हे मराठेशाहीस मोठेच गंडांतर आले. इतकी मोठी हानी मराठ्यांची कधीच झाली नव्हती. या नाशामुळे शिलेदार, सरदार व मुत्सद्दी इतके होरपळले होते की, ते सान्यांच्या चर्चेला विषय होऊन बसले. पानिपताहून सुरक्षित बाहेर पडतांच सटवाजी जाधव या नामांकित वयोवृद्ध सेनापतीने अपजयाचे कारण तात्काळ लिहून कळविले. [खंड ६ ले ४०६, ४०९] वाळाजी जनार्दन भानू म्हणजे प्रसिद्ध नाना फडणीस हा पानिपतच्या युद्धात होता त्याने देखील अपयशाचे कारण दिले. [ऐप. ले. १९२] तसेच 'उत्तर प्रातची फौज व दौलत' का 'ल्यास गेली' याची चर्चा दक्षिणेंत चालू झाली [खरे १ ले ७१, ७३] इतकेच नव्हे तर प्रत्यक्ष पेशव्यांच्या घरांत 'दत्ताजी शिंदे यांनी मर्दुमी केली परंतु कार्य न जाहाले' असले विचार वायकांत व पुरुषात चालू होते. [ऐति. २ क्रमांक १८ ले. ४] अर्थात् पानिपतचा पराजय हा सर्वांच्या चर्चेचा विषय होऊन बसला होता हे उघड होय परंतु सविस्तर नृतात देणारे एकही लिखाण पहावयास मिळत नाही. या होमकुडीत शिंद्यांनी सर्वस्व वाहिले असताही पेशव्यांचा त्यांजवर अकारण रोष झाला. त्यांचा खजाना हडप करून त्याने जन्ती केली. हा विलक्षण प्रकार पाहून होळकरास चीड आली. त्याने या दुष्कृत्यावद्दल निर्भत्सना केली तेव्हा राधोवाने कोठे पेशव्यांची समजूत घालून जन्ती उठविली [खंड ६ ले ५०७] परंतु अपजयाचा किंतु अज्ञाप विरळला नव्हता. १७६३ पर्यंत पेशवाईचे मुख्य सूत्रधारी राधोवा याचे डोक्यांत तो भरलेला असून त्याचे फळ शिंदेशाहीस भोगावें लागत होते. हे पाहून शिंद्यांचा अभिमान बाळगणाऱ्या एका गृहस्थाने ही बखर लिहून काढली असे अनुमान केले तर वस्तु-स्थितीशी तें फारसे विसगत होणार नाही. अशी भूमिका या बखरीच्या निमित्तीची काढली तर लेखक कोणीतरी शिंदेशाहीचाच अभिमानी होता असा जो तर्क सान्यांनी केला आहे तो योग्यच होय. बखरकाराने आपले खरे नांव दिले नाही जे दिले आहे ते टोपणनांव असावे असे भासते. एकीत 'चित्तामण गोविंद' तर दुसरीत 'कृष्णाजी शामराव' अशी भिन्न नांवे आढळतात. अर्थात् ती काल्पनिक असावीत असाच भास होतो. परंतु त्यापैकी एकाचे नांव खरे मानले तर बखरकाराचा बोध होईल किंवा काय याचा विचार झालेला नाही. दोन्हीपैकी कोणते नांव खरे मानावें हा वादग्रस्त प्रश्न आहे यांत शंका नाही. पण एकदा तसा विचार करावयास लागले म्हणजे एक नांव खरें धरून चालल्यास काय निष्पत्ति होते हे पाहणे इष्ट होय आणि त्या दृष्टीने 'चित्तामण गोविंद' हें नांव थोडा वेळ खरे नांव असे समजले तर चित्तोपत हे नांव ग्रंथकाराचे येते. पण ते या सालेच्या कोणत्याही प्रकाशित भागांत येत नाही. चित्तो कृष्ण असे नांव मात्र या भागांत अनेक वेळा येते. पण ते 'चित्तो गोविंद' म्हणता येत नाही. अर्थात् बखरकाराच्या टोपणनांवाशी मिळत नाही फारच म्हटले तर लेखकाच्या पहिल्या नांवाशी साम्य दिसेल पण बापाच्या नांवांत महदंतर आहे असे स्पष्ट होय. कृष्ण आणि गोविंद ही नांवे वरपांगी पाहू जातां अगदी भिन्न असली तरी ती श्रीकृष्णाचीच नांवे होत हे सर्वश्रुत आहे. तस्मात् गोविंद म्हणजे कृष्ण मानून चित्तो कृष्ण समजले तर त्यांत नवल नाही. आणि असाच भावार्थ या टोपणनांवाच्या मार्गे असला तर त्यांत आश्चर्य काय ! बखरकाराने ही गोम कदाचित् ठेवलीही असेल असें वाटते. लेखाक १९७ चित्तनीय आहे. त्यांत 'कुसाजी कोनेर' असे नांव मुख्य लेखकाचे असून पोर्ष्यांतरगत. चित्तो कृष्ण असे नांव त्याच्या मुलाने आपले दिले आहे. एवच कुसाजी म्हणजे कृष्ण असें मानून त्याने स्वतःस चित्तो कृष्ण म्हटले आहे आणि कोनेर म्हणजे कृष्ण असें राजवाडे म्हणतात [खंड १ ले. ६५-टीप १४६] तेव्हा बखरकाराने आपले स्वतःचे नांव चित्तोपंत देऊन बापाचें नांव गोविंद वर्साविले आहे ही गोम लक्षात घेतली तर बखरकार चित्तो कृष्ण होता असें म्हणण्यास कांहीच नाच येत नाही आणि

त्यास ही कल्पना आपल्या वापाच्या नांवावरून सुचली असे साधार म्हणता येते किंवाहना 'गोविंद, कृष्णाची किंवा शामराव' ही तिन्ही नावे समानार्थी तो मानित होता असे दिसते.

टोपणनांवाचे कोडे अशा प्रकारे सरळ उलगडत असले तर बखरीत जी अनेक मर्मे दिली आहेत ती या भागांत प्रत्यक्ष पहावयास मिळतात आणि त्यांची जाणीव शिष्टाचा लेखक या नात्याने चिंतो कृष्ण यास होती असे स्पष्ट होते किंवाहना तो आपल्या वापाच्या जिवंतपणीच चिटगिरीचे काम करीत असून त्यास तात्कालीन अतस्थ परिस्थिति पूर्ण अवगत होती असा जो अंतरंग पाहू जातां भास होतो तो अवास्तव होय असे म्हणवत नाही वर जी कल्पना नांवासवयी दाखविली आहे तसलाच प्रकार 'भाऊगर्दी' या शब्दाविषयी आहे. नादिरशहान्ची स्वारी होऊन जो 'हिंदुस्थानांत गारुडीचा खेळ' झाला त्यास 'पातशाहीगर्दी' असे नांव मराठी पत्रव्यवहारांत आढळते [पेद १५ ले ७१, ७३, पेद २८ ले १६] आणि त्यानंतर पुढे गूजर, जाट, बुदेल, रजपूत यांनी जी उचल केली त्यास 'गवारगर्दी' असे संबोधिले आहे. [पेद २७ ले. १७९, पेद २९ ले. २२०, २८३] तसेचतर पानिपतावर जे मराठ्यांवर अरिष्ट आले त्यास 'भाऊगर्दी' असा नवीन जब्द निर्माण करून त्याने वर्णिले आहे हे दुसरे प्रत्यंत त्याच्या कल्पकतेचे मानले तर ते चिंतो कृष्ण या व्यक्तीचेच बहुधा: असले पाहिजे असे ओघानेच निघते यामुळेच या बखरीचा कर्ता चिंतो कृष्ण बळे असावा असा जो बोध होतो तो इतिहासभक्तांच्या विचारार्थ येथे दर्शविला आहे

बखरकार शिष्टाचा आश्रित होता असे अंतरंग परीक्षण करतां फळते अर्थात् लेखक चिंतो-कृष्ण मानला तर त्यास अनेक मर्मे ज्ञात होती असे या भागावरून कळून येईल प्रत्येक मर्माविषयी विवेचन करून विस्तार करायचाचें प्रयोजन नाही उदाहरणार्थ कांही मर्मे दिली असतां चालेल असे वाटते.

१. अवदालीचे परचक्र आले असतां ते वारून सरक्षण करण्यासाठी जो अहदनामा १७५२ त मोगलाशी करून आया, अजमेर हे दोन सुभे मुलतान, ठाठा, भक्कर इत्यादि फौजदारी घेऊन सबच हिंदुस्थानची चौथार्ड मराठ्यानी सपादन केली अर्थात् पानिपत हे त्या अहदनाम्याचेच पर्यवसान होय हे मर्म बखरकारास पूर्ण माहीत होते म्हणूनच तेव्हापासून त्याने बखरीस आरंभ केला आहे. ही गोष्ट विचारणीय होय आणि ही माहिती चिंतो कृष्ण स्वयं या भागांत देत आहे.

२. हा अहदनामा शिंदेहोळकरांनी केला. अर्थात् मराठेशाहीचा पुढील विस्तार या उभय-तांच्या सघटित शक्तीवर अवलंबून होता तो राघोबास हिंदुस्थानांत पाठविल्यामुळे कुमेरीवरच कुठित झाला. सोबत्यांचे जुग विस्कटले ते पानिपतपर्यंत एकवटले नाही हे मर्म प्रामुख्याने बखरीत दाखविले आहे ते प्रत्यक्ष चिंतो कृष्ण पहात होता

३. दत्ताजी शिष्टास 'भीम बहादुर' म्हणून जे बखरीत संबोधिले आहे त्याविषयी आचार असून ती पत्रे चिंतो कृष्णांनी प्रत्यक्ष पाहिली आहेत

४. पानिपतच्या पराजयानंतर अवदालीची मराठ्यानी जाटाच्या मध्यस्तीने जो अहदनामा १७६१ त मथुरा मुक्कामी केला त्यांत मराठ्यांच्या वतीने राघोबा चंद्रचूड व चिंतो कृष्ण बळे हे उभयर्था प्रतिनिधि होते अर्थात् बळघाची योग्यता विवित होते. तसेच बटवाड्याच्या लढाईत हा बळे खावाजी जाधव सेनापतीसह होळकराबरोबर असून जयपूरकरांचा त्याने जो मोड केला त्यावेळीं 'शिष्टाच्या निशाणास शब्द येऊं दिला नाही' असे अभिमानास्पद उद्गार काढले आहेत [पेद २

ले. ६] रामाजी अनंतादाभोलकरांनंतर हजूरची व पयकाची फडणिसी या चिंतो कृष्णाकडे पेशव्याकडून होती. ती राबोबाच्या कारकिर्दीत त्याजपासून निघाली [खंड १३ ले. ५] अर्थात् त्यानंतर उघडपणे त्यास आपले नांव देतां येत नव्हते किंवा पानिपतची वखर म्हणून कोणी बाडही लिहितां येण्यासारखें नव्हतें म्हणूनच त्याने आपल्या नांवांत गोम ठेवून शिद्याची वखर या नांवांखाली संदिग्ध समारोप पानिपतचा केला आहे असें अनुमान करण्याची प्रवृत्ति होते

‘तुंगारप्रतीतील पौष वद्य १२ मुकाम दिली इद्रग्रहस्त’ ही मिती काल्पनिक नसून खरी असली तर या मितीस म्हणजे तारीख ११ जनवरी १७६३ च्या सुमारास चिंतो कृष्ण वळे दिल्लीस होता असेही साधार म्हणतां येईल.

या वखरीचा कर्ता अद्याप अज्ञात होता तो आतां चिंतो कृष्ण वळे असावा असें सप्रमाण समजते इतकाच निर्देश करणे विहित वाटले विशेष वाद घालावयाचा नाही. हे विवेचन कितपत समुचित व साधार आहे याचा निर्णय इतिहासमर्तावरच सोपविणे वरे.

ज्या अनेक प्रती वखरीच्या उपलब्ध आहेत त्या प्रत्यक्ष पहावयास मिळाल्या नाहीत. ज्यांच्याकडे त्या असतील त्यांनी कृपा करून आम्हांस सूचना दिली तर फार आभार होतील. कारण की, एकाद्या प्रतीत जर लेखकाचा कोठें शोध मिळाला तर त्याच्या हस्ताक्षरावरून या प्रश्नाचा निकाल सहज होण्यासारखा आहे मात्र ही प्रत १७८० च्या पूर्वीची पाहिजे. कारण तोंपर्यंतच वळे जिवंत होता असे कळते.

या मालेच्या पहिल्या तीन भागांत जी पत्रे आली आहेत ती पाहू जतां कित्येकांत मिती, मास, वर्ष दिलेले नाही. त्यामुळे पत्रांची खरी तारीख समजत नाही. केवळ तकनि, अनुमानावरच काम भागवार्ते लागते नुकतेंच पेशवेदप्तर प्रकाशित झाले त्यावरून वराच बोध होऊ लागला आहे. तथापि ही नव त्यांतही अनेक जागी पहावयास मिळते. या अडचणीमुळे राणोजी शिद्यांची शकावलि अद्याप निश्चित करतां आली नाही. तथापि जयाजी, दत्ताजी व जनकोजी शिंदे यांच्या मुकामाची यादी तयार केली ती निराळी दिली आहे. जे मुकाम अगदी नि.शं.क आहेत तेवढेच मूळ पत्रांतील मराठी किंवा मुसलमानी मितीमाससह यादीत दिले आहेत. त्यांवरून त्यांच्या हालचालीचा बोध होईल. तसेच राजवाळे, पुरंदरे, चंद्रचूड ऐतिहासिक पत्रे इत्यादी जे अनेक भाग छापले गेले आहेत त्यांतील कांही भागांतील तारखा शंकास्पद भासल्या म्हणून त्यांचा खरा मितीमास जो योग्य वाटला तो दाखवून बुद्धीपत्रकें यासोवत दिली आहेत. ती देखील १७४५ नंतरच्या काळापुरती असून उत्तर-हिंदुस्थानसंबंधी आणि विशेषत. शिंदेहोळकरांचा ज्यात उल्लेख आहे अशा पत्रांसंबंधीच आहेत. पेशवेदप्तरांतील पत्राविषयी पुढील भागांत बुद्धीपत्र देण्याचा विचार आहे.

या मालेचा हा पानिपतसंबंधी भाग होय. अर्थात् पानिपत म्हटलें की, ते बहुधा मराठ्यास धारजिन नसावयाचेच प्रत्यक्ष पानिपत तर पूर्वजांस भोवलेच पण त्याचा वृत्तांत देत असतां हा भाग देखील शिलेदारास बुधरे पानिपतच वाटले. हा भाग हाती घेतला तेव्हां पेशवेदप्तराचे प्रकाशन चाळूं झाले. आणि ते सुमारे पांच वर्षे चालू होते. ते प्रकाशित होईपर्यंत मालेचे काम थोपविणें इष्ट वाटले आणि त्याप्रमाणे चार वर्षे काम बंदही राहिले. तथापि अगदीच काम बंद राहूं नये म्हणून वाकणकरसंग्रह हाती घेऊन तो १९३५ साली प्रसिद्ध केला. तदोत्तर हा भाग हाती घेतला असतां शिलेदारावर अनेक संकेतें कोसळली. ती सर्व कथा देण्यांत अर्थ नाही. थोडक्यांत सांगावयाचे म्हणजे

काही अधिकारी वर्गाच्या वैयक्तिक द्वेषामुळे राजकीय संकेत उद्भवून त्यांत ही माला प्रसिद्ध करण्याचे मुख्य साधनच नाहीसे झाले. या विचित्र कारस्थानाची वार्ता आमचे धनी श्रीमत् जीबाजीराव महाराज शिंदे आलीजाह बहादुर यांच्या कानावर जाऊन श्रीमतांनी राज्याधिकार ग्रहण करीत असतां अधिकाऱ्यांचें कपट ओळखून आम्हांस निर्दोष ठरवून संकेत निवारण केले त्याजविषयी श्रीमतांचे गुणानुवाद गाथेत तितके थोडेच. अशा प्रकारे संकेतमुक्त होऊन काम चालू झाले तींच आमचे तीन चिरंजीव बाहेरगांवीं शिक्षण घेत अगतां दोन नवज्वराने अकस्मात आजारी पडले त्यांत एक पधरा वर्षांचा मुलगा दिवंगत झाला या दुःखामुळे अत्यंत उदासीनता भासून कित्येक दिवस काम करण्याची प्रवृत्तीच होईना. याशिवाय या तिसऱ्या भागासवधी चर्चात्मक लेख लिहिला होता तोही कोठे गैरविल्हेस लागून नाहीसा झाला. पुनश्चोकांमुळे कट्टब देखील मरणोन्मुख आजारी पडले. अशा अनेक भानगडीमुळे मालेचे काम साहजिकच तुबले. छतक्यांत श्रीमतांनी सरकारी सेवेत घेऊन काम करण्याची आज्ञा केली. अर्थात् सेवेत प्रवेश करणे प्राप्त झाले. तथापि या कामाची, जाणीव श्रीमतांस असल्यामुळे सत्वरच सेवामुक्त करण्याचे आश्वासन आहे त्याप्रमाणे योग येऊन मालेचे काम शेवटांस जाईल अशी आज्ञा आहे.

कृष्ण मंदिर, त्वाल्हेर,
१ जुलै १९३७. इसवी. }

आनंदराव भोज फालके.

श्री

श्रीमंत जयाजीआपा शिंदे यांच्या मुकामाची यादी.

| पत्राकित मित्ती | हंगीजी तारीख | मुकाम. | आधार. |
|------------------------------------|--------------|---------------------------|--------------|
| सुमा सित्त अर्बेन मया अल्लफ | | | |
| १९ जाखर | ९-७-१७४५ | मुकाम उजेन. | |
| | १०-१७४५ | नर्मदी उतरून देवास जातात. | |
| ३० जिल्हेज | १२-१-१७४६ | चाभारगोदे. | |
| २६ मोहरम | ७-२-१७४६ | वराड प्रात. | |
| ९ राखर | २०-४-१७४६ | जेतपुर बुदेलखंड. | |
| १५ राखर | २६-४-१७४६ | जेतपुर बुदेलखंड. | |
| सुमा सब्बा अर्बेन मया | | | |
| २७ रजव | ४-८-१७४६ | बुदेलखंड. | |
| सावान | ८-१७४६ | गह्वरा पाो सेवडा. | कासं ले ५१ |
| ७ सावान | १४-८-१७४६ | गह्वरा पाो सेवडा. | कासं ले ५२ |
| माघ वद्य १३ | २७-१-१७४७ | दतिया. | |
| २९ राखर | २९-४-१७४७ | वघेलखडातून उजनीकडे. | |
| सुमा समान अर्बेन मया | | | |
| १४ रजव | १२-७-१७४७ | उजेनी. | |
| आषाढ वद्य ३० | २६-७-१७४७ | उजेन. | |
| १५ राखर | ३-४-१७४८ | इद्रप्रस्ताकडे. | |
| सुमा तिस्रा अर्बेन मया | | | |
| ८ जावल | २६-४-१७४८ | मुा बनास नदी. | |
| १० जावल | २८-४-१७४८ | मुा बनास नदी. | |
| ४ रजव | २०-६-१७४८ | मुा उजेन नालशाहून. | |
| २५ रजव | ११-७-१७४८ | उजेन. | |
| २ सावान | १७-७-१७४८ | मुा उजेन. | |
| माघ वद्य ७ | २९-१-१७४९ | मुा तेजगड. | पेद २७ ले ४० |

| पत्राकित मिति. | इग्रजी तारीख. | मुकाम. | आधार. |
|----------------|---------------|-------------------------------|--------------|
| शैत्र वद्य ५ | २७-३-१७४९[१] | मुगा श्रीगोदे [दत्ताजी शिंदे] | |
| ७ जावळ | १४-४-१७४९ | मुगा नजीक आगरे | पेद २७ ले ४४ |
| २१ जावळ | २८-४-१७४९ | मुगा ढवलपुर. | पेद २७ ले ४२ |

सुमा खमसेन मया

| | | |
|-------------|-----------|-------------------|
| आपाढ वद्य २ | २१-६-१७४९ | मुगा सजेन. |
| २१ रजव | २५-६-१७४९ | मुगा सजेन |
| १ जिल्काद | २-१०-१७४९ | सप्तरुपी [सातारा] |

सुमा इहिदे खमसेन मया

| | | | |
|---------------|------------|-------------------------|-------------|
| १० सफर | २९-१२-१७५० | घाट कुसला चमेळी. | |
| माघ शुद्ध | १-१७५१ | जयनगर. | पेद २ ले ३१ |
| ६ जावळ | २३-३-१७५१ | फालीनदी अतरवेद | |
| वैशाख वद्य ११ | १०-५-१७५१ | फालीनदीतीर नाा फरोखाबाद | |

सुमा इस्ने खमसेन मया

| | | |
|------------|------------|----------------------|
| आपाढ शुा ७ | १९-६-१७५१ | कस्वे समसाबाद अतरवेद |
| २२ रमजान | ४-८-१७५१ | कस्वे मउ नाा गगातीर. |
| १९ जिल्हेज | २८-१०-१७५१ | गगातीर |
| २३ जिल्हेज | १-११-१७५१ | गगातीर |
| २४ सफर | १-१-१७५२ | |
| ४ जावळ | १०-३-१७५२ | अतरवेद |
| १४ रजव | १८-५-१७५२ | नाा तुकलाबाद |
| १९ रजव | २३-५-१७५२ | नाा दिल्ली |

सुमा सलास खमसेन मया

| | | | |
|----------|-----------|--------------------|------------|
| २८ रजव | १-६-१७५२ | आगरे. | |
| २८ रजव | १-६-१७५२ | आगरे | |
| २५ सावान | २७-६-१७५२ | ब्यावरा | |
| २६ सावान | २८-६-१७५२ | लट्टेरी | |
| ५ रमजान | ६-७-१७५२ | नाा बेरसे. | |
| १० रमजान | ११-७-१७५२ | नाा वरखेडा [भोपाल] | |
| १ सवाल | ३१-७-१७५२ | सोपावरढ | कास ले १०८ |
| १० सवाल | ९-८-१७५२ | रेवातीर. | कास ले १०९ |

| पत्रांकित मित्ती. | इंग्रजी तारीख | मुकाम. | आधार. |
|-------------------|---------------|----------------------------|--------------|
| आश्विन शुभा १० | १७-१०-१७५२ | ना राक्षसभुवन श्रीगंगातीर. | |
| पौष वा ३० | ३-२-१७५३ | श्रीगोदे. [दत्ताजी] | पेद २१ ले ५२ |
| २९ साखर | ५-३-१७५३ | श्रीगोदे. | पेद २ ले ३४ |
| २३ जाखर | २८-४-१७५३ | श्रीगोदे. | कासं ले ११७ |

सुमा अर्बा खमसेन मया

| | | | |
|-------------|------------|------------------------------------|--------------|
| १९ सवान | २१-६-१७५३ | अवतिकापुरी. [दत्ताजी व बामोलकर] | |
| १२ मोहरम | ८-११-१७५३ | उजेन. | पेद २७ ले ८२ |
| १५ मोहरम | ११-११-१७५३ | नाा महतपुर. | पेद २७ ले ८२ |
| ४ जाखर | २८-१-१७५४ | झुनकी. | खंड ६ ले २२० |
| चैत्र वा ४ | ११-४-१७५४ | जटवाढा. | |
| चैत्र वा १० | १७-४-१७५४ | जटवाढा. | |
| २४ जाखर | १८-४-१७५४ | कुभेर. | |
| ६ रजव | ३०-४-१७५४ | कुभेर | |
| २० रजव | १४-५-१७५४ | कुभेर. [आरोग्य जाले] | |

सुमा खमस खमसेन मया

| | | | |
|---------------|-----------|---------------------------|---------------|
| ५ रमजान | २७-६-१७५४ | | |
| आषाढ वा २ | ६-७-१७५४ | रेवाडी | |
| २० रमजान | १२-७-१७५४ | नारनोल. | |
| ४ सवाल | २५-७-१७५४ | सांबर. | |
| ५ सवाल | २६-७-१७५४ | सांबर. | |
| २९ सवाल | १९-८-१७५४ | मेढते भारवाड. | खंड १ ले ३९ |
| ९ जिल्काद | २८-८-१७५४ | मेढते. | |
| भाद्र शुभा १२ | २९-८-१७५४ | नाा मेढते. | |
| ११ जिल्काद | ३०-८-१७५४ | मोजे बडगाव नाा मेढते | |
| १६ जिल्काद | ४-९-१७५४ | काखडकी प्रागे मेढते. | |
| २६ जिल्काद | १४-९-१७५४ | [मेढत्याची लडाई व जय.] | |
| २ साखर | १५ १-१७५४ | नागोर मारवाड | खंड १ ले ४२ |
| २६ साखर | ८-२-१७५५ | तावसर नाा नागोर. | |
| माघ वा १३ | ९-२-१७५५ | नागोर मारवाड | |
| ६ जावळ | १८-२-१७५५ | नागोर | |
| फाल्गुन शु १० | २१-२-१७५५ | नागोर. [किला अजमेर घेतला] | पेद २७ ले १०५ |
| २९ जावळ | १३-३-१७५५ | नागोर. | |

| पत्रांकित मिति. | इश्वरी तारीख. | मुकाम. | आधार. |
|---------------------------|---------------|---|---------------|
| १६ जाखर | ३०-३-१७५५ | नागोर. | |
| १२ रजव | २५-४-१७५५ | नागोर. | |
| सुभा सित खमसेन मया | | | |
| ज्येष्ठ शु ७ | १६-६-१७५५ | नागोर | |
| ६ रमजान | १७-६-१७५५ | नागोर | |
| ४ सवाल | १४-७-१७५५ | नागोर. | |
| आषाढ शु ६ | १५-७-१७५५ | नागोर | |
| १५ सवाल | २५-७-१७५५ | नागोर. [जयाजी मृत्यु] | |
| १७ जिल्काद | २६-८-१७५५ | नागोर. | पेद २७ ले ११६ |
| २७ जिल्काद | ५-९-१७५५ | नागोर. | |
| २९ जिल्काद | ७-९-१७५५ | नागोर. | |
| २४ जिल्हेज | १-१०-१७५५ | नागोर | |
| ९ मोहरम | १६-१०-१७५५ | नागोर. [अनिरुधसिंग खगा- रोत मोडला] | |
| १४ मोहरम | २१-१०-१७५५ | नागोर [दिबवाण्यासभीप खगा- रोत मोडला] | |
| १६ मोहरम | २३-१०-१७५५ | नागोर | |
| आश्विन वद्य ११ | ३१-१०-१७५५ | नागोर [अनिरुधसिंग सलुखास येतो] | |
| १ सफर | ६-११-१७५५ | नागोर | |
| ५ सफर | १०-११-१७५५ | नागोर | |
| ४ राखर | ७-१-१७५६ | नागोर. | |
| ६ जाखर | ८-३-१७५६ | इब्दे प्राो मेहते | |
| २७ जाखर | २९-३-१७५६ | पुष्कर | पेद २७ ले १२८ |
| २२ रजव | २३-४-१७५६ | रुपनगर | |
| ९ सावान | ९-५-१७५६ | रुपनगर | पेद २ ले ६३ |

सुभा सबा खमसेन मया

| | | | |
|------------|-----------|----------------------------|-------------|
| ५ जिल्हेज | १-९-१७५६ | अवतिकापुरी. [दताजी कोटयास] | पेद २ ले ६५ |
| २४ राखर | १५-१-१७५७ | श्रीगोदे | |
| माघ वद्य ७ | ११-२-१७५७ | श्रीगोदे [जनकोजीचे लग्न] | |
| २२ जाखर | १३-३-१७५७ | श्रीगोदे. | |
| १७ रजव | ७-४-१७५७ | श्रीगोदे | |
| ११ रमजान | ३०-५-१७५७ | श्रीगोदे. | |

| पत्रांकित मित्ती. | इंग्रजी तारीख. | मुकाम. | आधार. |
|----------------------------|----------------|---|---------------|
| सुमा समान खमसेन मया | | | |
| २ जिल्हेज | १८-८-१७५७ | गगातीरास निघतात. [दत्ताजी] | |
| ११ जिल्हेज | २८-८-१७५७ | [दत्ताजी] | |
| १२ जिल्हेज | २८-८-१७५७ | घाट करजा | कासं ले १४५ |
| १९ जिल्हेज | ४-९-१७५७ | घाट गुजाळ | कासं ले १४६ |
| २१ जिल्हेज | ६-९-१७५७ | घाट श्रीगगा [टोक्यावर उत्तर- णार]. | |
| २४ जिल्हेज | ९-९-१७५७ | नजीक नेवासे पिपलगाव गर्भा. | खंड १ ले ७४ |
| अधिक शुध १४ | २६-९-१७५७ | टोके. | |
| अधिक वद्य ३ | ३०-९-१७५७ | टोके. | |
| आश्विन शु ५ | १७-१०-१७५७ | औरंगाबाद. | |
| ११ सफर | २५-१०-१७५७ | नाा गहर सडीस्वारी. | |
| १६ सफर | ३०-१०-१७५७ | नाा गहर सडीस्वारी. | |
| आश्विन व १२ | ८-११-१७५७ | | |
| २५ रावल | ८-१२-१७५७ | पढतूर | |
| पोप वद्य ११ | ४-२-१७५८ | पढतूर. | |
| माघ वद्य ४ | २८-२-१७५८ | | |
| फाल्गुन शुध २ | ११-३-१७५८ | श्रीगोदे [दत्ताजीच्या मुलीचे लग्न] | |
| १ रजव | ११-३-१७५८ | भोजे सिबोद पोा हासलपुर करवदवारीहून | |
| २५ रजव | ४-४-१७५८ | उजेन. | |
| २६ रजव | ५-४-१७५८ | उजेन. | |
| २७ रजव | ६-४-१७५८ | उजनीहून कूच. | |
| २६ सावान | ५-५-१७५८ | कस्वे उरमाल नाा मुकुदवारी. | |
| २७ रमजान | ४-६-१७५८ | कोटे. | |
| सुमा तिसा खमसेन मया | | | |
| २ जिल्काद | ८-७-१७५८ | मुकुदवारीपलीकडे. | |
| २६ जिल्काद | १-८-१७५८ | नजीक गहापुरा | खंड ६ ले ३८५. |
| | | [राधोबा जनकोजी भेट] | |
| २७ जिल्काद | २-८-१७५८ | नदी वासन नाा उदेपुर ३० | खंड ६ ले ३८६. |
| | | कोम. | |
| श्रावण शुध ३ | ६-८-१७५८ | [दिशाहून दत्ताजी निघाले] | |
| २५ जिल्हेज | ३०-८-१७५८ | [होलकर जनकोजी भेट] | |

| पञ्चाङ्गित मितौ. | दशमी तारीख. | मुकाम. | माघार |
|------------------|-------------|-------------------|-------------------------------|
| २ मीहरम | ६-९-१७५८ | [होलकर वताजी भेट] | |
| १५ सफर | १८-१०-१७५८ | आमझरा [वताजी] | |
| २९ रावळ | १-१२-१७५८ | झपायता. [वताजी] | |
| ७ जावळ | ७-१-१७५९ | कुजपुरा, | पेद १ ले ११ पेद २ ले १११ |
| ७ जाग्वर | ६-२-१७५९ | कुजपुरा. | पेद २७ ले २४२ |
| १० जाखर | ९-२-१७५९ | लाहोरकडे | |
| १७ सावान | १५-४-१७५९ | गतदु पजाव | पेद २ ले १०१ पेद २१ ले १७१ |
| २४ सावान | २२-४-१७५९ | सतलज नदी. | |
| २५ सावान | २३-४-१७५९ | शतदु | पेद २ ले १०४ |
| २५ रमजान | २३-५-१७५९ | अतरवेद | पेद २७ ले २३९ |

सुमा सित्तेन मया

| | | [नजीब शुजा भेट] | |
|-----------------|------------|-----------------------------------|---------------|
| २३ रावळ | १४-११-१७५९ | मुा शुक्राल गगातीर. | |
| कार्तिक वद्य ११ | १५-११-१७५९ | नजीक सोनपत | पेद २७ ले २४३ |
| ९ जावळ | ३०-१२-१७५९ | बदाउ भा दिल्ली [वताजी मृत्यु] | |
| २० जावळ | १०-१-१७६० | पनाली पा कोटपुतली रेवाडी- हून. | पेद २७ ले २४७ |
| २६ जावळ | १६-१-१७६० | कोटपुतली | |
| पौष वद्य १३ | १६-१-१७६० | बका[या]णा. | |
| २५ रजव | १४-३-१७६० | | |

सुमा इहिदे सित्तेन मया

| | | | |
|-------------|------------|------------|--------------|
| अधिक वद्य ९ | ५-८-१७६० | दिली | |
| ७ सफर | १७-९-१७६० | दिली. | |
| ३० सफर | १०-१०-१७६० | दिली. | |
| १ रावळ | ११-१०-१७६० | नजीक सोनपत | |
| ७ रावळ | १७-१०-१७६० | कुजपुरा. | |
| २९ रावळ | ८-११-१७६० | पानिपत. | |
| ३० रावळ | ९-११-१७६० | पानिपत | |
| २६ राखर | ५-१२-१७६० | पानिपत | |
| १५ जावळ | २४-१२-१७६० | पानिपत. | |
| २६ जावळ | ४-१-१७६१ | पानिपत. | इस ५ ऐटि ३३३ |

राजवाडे खंड १ ल्यांतील पत्रांचें शुद्धिपत्र.

:०:

| लेखाक. | खरी तारीख. | आधार. |
|--------|---------------|-----------------------|
| १ | २३-५-१७५२ | पहा सिद्दसा ३ ले २०३. |
| २ | १०-६-१७५३ | पहा खंड ३ ले ३७. |
| २० | २८-१२-१७५२ | |
| २६ | १९-१२-१७५४ | पहा ले ३९, ४३, ४४ |
| २८ | १-१०-१७५३ | |
| ३४ | २२-४-१७५६ | पेद ४० ले १०० |
| ३९ | १९-८-१७५४ | पहा ले ३७. |
| ४८ | १-३-१७५८ | पहा ले ५६, १०० |
| ५० | ५-६-१७५१ किवा | सिद्दसा ३ ले ३०४. |
| | २५-५-१७५३ | |
| ५२ | १४-२-१७५७ | |
| १२९ | १-६-१७५८ | पहा ले १३० |
| १३० | २६-६-१७५८ | |
| १३१ | २६-६-१७५८ | |
| १३२ | १३-७-१७५७ | [?] |
| १३३ | ११-८-१७६० | पहा ले १३४, २२५. |
| १३४ | ६-९-१७६० | |
| १३६ | २९-१०-१७५७ | |
| १५३ | १-१७६० | पहा पेद २७ ले १८२. |
| १६८ | १७-३-१७६० | |
| १८७ | १४-५-१७६० | |
| १९४अ | १०-६-१७५९ | |
| २१७ | १५-७-१७६० | पहा ले २०३. |
| २१७अ | १९-६-१७६० | पहा ले १९५, २०२. |
| २२२ | २७-७-१७६० | |
| २२५ | १०-७-१७६० | पहा ले १३३, २१२ |
| २३६ | ३१-७-१७६० | पहा ले १३३, १३४, २२५. |
| २४१ | ६-१७६० | |
| २४३ | ६-११-१७६० | |

| लेखाक. | खरी तारीख. | आधार |
|--------|---------------|------------------|
| २४९ | २१-९-१७६० | पहा ले २४७, २५५ |
| २५५ | ८-९-१७६० | पहा ले २३६. |
| २५९ | १०-१०-१७६० | |
| २६२ | १५-११-१७६० पो | |
| २८८ | २५-६-१७६१ | |
| २९६ | १०-१७६३ | पहा ले २९९, ३००. |
| २९९ | १४-२-१७६१ | पहा ले २९६, ३००. |
| ३०० | ३-११-१७६३ | |

राजवाडे खंड ३ च्यांतील तारखांचें शुद्धिपत्र.

:०.

| लेखाक | खरी तारीख | आधार |
|-------|------------|----------------------|
| १४ | ३०-४-१७२९ | |
| १३७ | ५-१०-१७५५ | |
| १३८ | ८-९-१७५५ | |
| १४९ | १७५३ | पहा ले ४३२, ४३३ |
| १५१ | १६-८-१७५४ | |
| १५९ | १५-५-१७५१ | पहा ले १५८ |
| १७२ | १४-१-१७६१ | |
| २०४ | २१-१२-१७६० | पहा ले २१० |
| २०५ | २-१७६१ | |
| २०७ | ३-१७६१ | |
| २१४ | १२-१७६० | पहा ले २१०, २२७ |
| २२४ | २३-१२-१७६० | |
| ३७५ए | २१-२-१७५१ | |
| ३९७ | १८-६-१७५१ | |
| ३९८ | २१-९-१७५१ | पहा ले ३९७ |
| ४१६ | १६-८-१७५२ | |
| ४२७ | १-५-१७५० | पहा पेव २ ले १४, १४ए |
| ४५९ | १८-१-१७५३ | पहा ले ४२०. |
| ४९९ | १८-४-१७५९ | |
| ५०५ | २१-७-१७५७ | |

| लेखाक. | खरी तारीख. | आधार. |
|--------|---------------|----------------------|
| ५२५ | ७-१२-१७६० | |
| ५४८ | ९-१-१७५४ किवा | |
| | २९-१२-१७५४ | |
| ५४९ | ६-९-१७५७ | पहा कास ले १४५, १४६. |
| ५५० | १७-१०-१७५६ | |
| ५५१ | २८-५-१७५३ | |
| ५५२ | १७५२ | |
| ५५३ | ८-१०-१७५२ | |

राजवाडे खंड ६ व्यांतील पत्रांचें शुद्धिपत्र.

:०.

| लेखाक. | खरी तारीख. | आधार |
|--------|---------------|------------------|
| १४१ | २६-६-१७४८ | पहा ले १९१, १९२. |
| १६६ | २४-६-१७५१ | |
| १७१ | २८-३-१७५१ | |
| १७२ | २८-३-१७५१ | पहा ले २०६ |
| १९१ | ९-८-१७४८ | पहा ले १४१ |
| १९२ | ९-८-१७४८ | पहा ले १४१, १९१. |
| १९३ए | १७४९ | |
| १९४ | १८-१०-१७४९ | पहा ले १४८ |
| १९९ | १७-७-१७५१ | |
| २०० | ५-१७५२ | |
| २०७ | १७-९-१७५१ | |
| २०८ | ३-१७५१ | |
| २०९ | २१-१०-१७५० पो | |
| २१५ | २५-११-१७५३ | |
| २२४ | २-१७५१ | |
| २३३ | १६-११-१७५० | पहा ले २३५. |
| २४४ | १६-२-१७५३ | |
| २८२ | ४-१७५३ | पहा ले २४४ |
| २९१ | १७-२-१७५१ पो | |
| २९६ | १५-५-१७५४ पो | |

| लेखाक | खरी तारीख | आधार. |
|-------|----------------|-----------------------|
| ३०८ | ७-९-१७५३ | |
| ३२४ | २०-१२-१७५३ पौ | पहा ले ३२७. |
| ३२७ | १७-२-१७५४ | |
| ३३९ | १९-५-१७५५ | पहा ले ३२८. |
| | २६-४-१७५७ [?] | |
| ३४१ | १९-५-१७५७ पौ | |
| ३४३ | २९-१०-१७५५ | |
| ३५७ | १७५० किवा | |
| | १७५२ | |
| ३५८ | १७५८ | |
| ३६५ | १-१७५७ | |
| ३६६ | २१-१-१७५७ | |
| ३७० | ७-१७५७ | |
| ३७२ | ७-१७६६ | |
| ३७३ | ३१-१२-१७४८ | पहा ले १४१, १९१, १९२. |
| ३७४ | २५-१२-१७५४ | पहा खंड १ ले ६९ |
| ३७५ | ११-१७५४ | |
| ३७८ | १७६२ | |
| ३८० | १-१७५८ | पहा ले ३७६. |
| ३८२ | ८-३-१७६२ | पहा ले ३६५, ३७८. |
| ३८३ | ५-५-१७५७ | पहा खंड १ ले ६९ |
| ३८४ | ६-१७६२ | पहा ले ३८२, ४२३ |
| ३८५ | १-८-१७५८ | पहा ले ३८६, ३८८. |
| ३९२ | ७-७-१७६६ | पहा ले ४२६ |
| ३९५ | २६-५-१७५१ किवा | |
| | १५-५-१७५२ | |
| ३९९ | २४-१२-१७५४ | पहा ले ५५८. |
| ४०० | १९-१-१७६२ | पहा ले ४१०, ४२७, ४७१. |
| ४०१ | ९-४-१७५७ | |
| ४२१ | ११-१७६४ | |
| ४२३ | १६-६-१७६२ | पहा ले ३८२ |
| ४२५ | ६-१७६२ | पहा ले ४६५, ४८०. |
| ४२८ | २१-३-७६३ | |
| ४२९ | ३-८-१७६७ | |
| ४३६ | १-२-१७६३ | |

| लेखाक. | खरी तारीख | आधार. |
|--------|----------------|-----------------------|
| ४४१ | २६-५-१७९८ | |
| ४६२ | ३-११-१७५१ | पहा ले २०८. |
| ४६३ | १३-८-१७४८ | पहा ले १४१, १९१, १९२. |
| ४६५ | २६-२-१७६२ | पहा ले ३८२, ४२५, ४८०. |
| ४६६ | २८-२-१७६४ | |
| ४६७ | १३-१-१७५६ | |
| ४६८ | ८-९-१७५५ | पहा ले ४६७. |
| ४७१ | ७-१२-१७५९ | पहा ले ४०० |
| ४७२ | ६-१७६१ | पहा ले ४९८ |
| ४७३ | -१७५३ | |
| ४७५ | १७९० [?] | |
| ४७६ | -१७६४ | |
| ४७८ | ८-३-१७५७ | |
| ४७९ | १४-९-१७५४ | |
| ४८० | २-१७६२ | पहा ले ४६५. |
| ४८१ | २२-४-१७५६ | |
| ४८२ | ७-५-१७४४ किवा | |
| | २४-३-१७४८ | |
| ४८३ | २५-६-१७५६ | |
| ४८४ | ६-११-१७५५ | |
| ४८५ | २१-५-१७५४ किवा | |
| | ६-४-१७५८ | |
| ४८६ | ११-७-१७५२ | पहा ले ५१०. |
| ४८७ | २७-११-१७५४ | |
| ४८८ | ८-८-१७५४ किवा | |
| | २८-७-१७५५ | |
| ४८९ | १५-११-१७५१ | |
| ४९० | ३-७-१७५१ | |
| | २२-६-१७५२ | |
| ४९१ | ९-१७५२ | |
| ४९२ | २९-१२-१७५३ | |
| ४९३ | १०-६-१७५१ किवा | |
| | १९-१-१७६५ | |
| ४९४ | ६-२-१७७७ | |
| ४९५ | २७-११-१७५४ | |

| क्रमांक. | खरी तारीख | आधार. |
|----------|----------------|-----------------|
| ५४३ | .१७७१ | |
| ५४४ | ३-९-१७५१ | |
| ५४५ | १६-१२-१७५१ पाठ | |
| ५४७ | १७५६ | |
| ५४८ | .१७५७ | पहा खड १ ले ६९. |
| ५४९ | १-८-१७५७ | |
| ५५० | ७-५-१७५२ | |
| | १६-४-१७५५ | |
| ५५२ | १२-१७५२ | |
| ५५५ | १२-४-१७५६ | |
| ५५६ | २३-१-१७५१ | पहा ले २२४ |
| ५५७ | ६-१-१७५५ | |
| ५५८ | २२-१२-१७५४ | पहा ले ३९९. |
| ५५९ | २४-७-१७५४ | |
| ५६० | १६-११-१७५४ | |
| ५६१ | २-१२-१७५२ | |
| ५६२ | १२-११-१७५३ | |
| ५६३ | १३-११-१७६१ | |
| ५६४ | २७-१-१७५८ | |
| ५६६ | २०-१-१७५५ | |
| ५६७ | ५-१७४५ | पहा ले १७५ |
| ५६८ | १७५४ | |
| ५६९ | २६-४-१७६२ किवा | |
| | १९-१-१७६४ | |
| ५७० | ७-७-१७६८ | |
| ५७१ | ५-११-१७५१ | |
| ५७२ | १७-२-१७६२ किवा | |
| | २६-१२-१७६४ | |
| ५७३ | १-६-१७५४ किवा | |
| | ३१-१-१७६५ | |
| ५७४ | ३०-११-१७४६ | |
| ५७५ | ८-८-१७५३ | |
| ५७६ | १८-११-१७५१ | |
| ५७७ | २-५-१७५७ | |
| | १६-३-१७६४ | |

| लेखाक | खरी तारीख. | आधार. |
|-------|--------------|------------------|
| | ३०-१२-१७६७ ? | |
| ४० | ६-१७६७ | पहा ले ५, ३४. |
| ४५ | ३-१०-१७६७ | पहा ले ४४, ४७. |
| ४६ | ३-१०-१७६७ | पहा ले ४४, ४७. |
| ४८ | १७-७-१७७४ | |
| ५१ | २५-१०-१७६७ | |
| ५५ | १०-१७६७ | |
| ५६ | १०-१७६७ | |
| ६८ | २०-२-१७६८ | |
| ७९ | १२-४-१७६४ | |
| ८२ | २०-५-१७६४ | पहा खड १४ ले १८. |
| ८५ | ३०-७-१७६४ | पहा पेद १९ ले ९. |
| १२१ | २३-१-१७६६ | |

राजवाडे खंड १४ व्यांतील तारखांचें शुद्धिपत्र.

—:O:—

| लेखाक | खरी तारीख | आधार. |
|-------|------------|--------------------------|
| १४ | २४-२-१७७२ | पत्र होलकराचे पहा ले ६५. |
| ६५ | १२-११-१७७१ | पहा ले १४. |
| ६९ | ११-३-१७६६ | |
| ७१ | .१७६४ | |

| लेखाक. | खरी तारीख. | आधार. |
|--------|------------|-------------|
| १४४ | १०-१७६२ | पहा ले १४१. |
| १४५ | २८-५-१७६३ | पहा ले ७७. |
| १५० | ११-१७६३ | पहा ले १५१. |
| १५४ | ७-२-१७६५ | |
| १५५ | २७-१२-१७६१ | |
| १५६ | १६-१०-१७६४ | पहा ले ८२. |
| १५७ | १२-२-१७६६ | |
| १५८ | ८-१७६५ | |
| १५९ | २-१०-१८६५ | |
| १६० | १९-९-१७६५ | |
| १६२ | १४-३-१७६५ | |
| १६३ | ३-१७६२ | |
| १६९ | ७-१७६६ | पहा ले १९८. |
| १७० | ८-१७६६ | |
| १८१ | ९-५-१७६४ | |
| १८२ | ३-११-१७६७ | |
| १८३ | २१-१२-१७६७ | |
| १९६ | १०-८-१७६५ | |
| १९७ | ६-१-१७६५ | |
| २०० | १६-८-१७६४ | |

चंद्रचूड कला २ ज्यांतील पत्रांचें शुद्धिपत्र.

:O:

| लेखाक. | खरी तारीख. | आधार. |
|--------|------------|-------------------------|
| ४ गुा | ११-१७५९ | पहा चंद्र १ ले ४९, १३७. |
| ६ | ११-११-१७६४ | |
| ८ | २५-४-१७६८ | |
| ९ | २-५-१७६८ | |
| १० | १-७-१७७७ | |

पुरंदरे भाग ३ ज्यांतील पत्रांचें शुद्धिपत्र.

:0

| लेखाक. | खरी तारीख | कारण |
|--------|---------------|---------------|
| १ | ११-१-१७६२ | |
| १० | ११-१७६४ | पहा ले ११, ५६ |
| ११ | १२-११-१७६४ | |
| १२ | १८-२-१७६५ | |
| १३ | ५-३-१७६५ | |
| ३० | ११-१०-१७६३ | पहा ले २९ |
| ३१ | १७-३-१७६४ | |
| ४९ | १२-२-१७६७ | |
| ५१ | १०-२-१७६७ पो | |
| ५२ | २९-१२-१७६५ | |
| ५३ | २२-१०-१७६७ | |
| ५६ | २८-७-१७६३ | पहा ले १०. |
| ५७ | १-१-१७८७ [?] | |
| ६१ | २३-१२-१७६३ | |
| ६६ | २८-७-१७६८ [?] | |
| ७३ | ११-११-१७६२ | |
| ८५ | .१७६८ | |
| ११० | १७७२ | |
| १३७ | १७६४ | |
| १८० | २६-५-१७२९ | |
| १८४ | .१७५९ | |
| १९५ | १७५३ | |
| २०६ | ५-१७५५ | |
| २०७ | ९-१७५८ | |
| २०९ | २९-१-१७६१ | |

ऐतिहासिक लेख पत्र व थार्दीतील पत्रांचें शुद्धिपत्र.

—:0:—

| लेखाक | खरी तारीख | लेखाक | खरी तारीख |
|-------|------------|-------|------------|
| ६५ | ५-१७४८ | २४४ | १५-६-१७८१ |
| ६८ | ५-१७४८ | २५० | १२-१७८० |
| ७२ | २७-१२-१७५० | २५८ | २४-५-१७८० |
| ८४ | ११-६-१७५१ | २७१ | २७-५-१७८३ |
| ८९ | ७-१०-१७५२ | २७४ | ३-९-१७८० |
| ९० | ८-१०-१७५२ | २७५ | ३-९-१७८० |
| ९७ | १०-१७५१ | २७९ | ४-८-१७८० |
| १०२ | ११-६-१७५१ | २८२ | -१७७९ |
| १०३ | १२-७-१७५२ | २८५ | ६-१०-१७८० |
| १०४ | २१-७-१७५२ | २९८ | ६-८-१७७९ |
| ११२ | ३०-८-१७५७ | ३०० | १८-१-१७८१ |
| ११९ | २०-३-१७५४ | ३०८ | १४-२-१७८१ |
| १३५ | ३-१७५५ | ३१० | १७-३-१७८१ |
| १३८ | २३-९-१७४९ | ३११ | ७-४-१७८१ |
| १४५ | २८-८-१७५७ | ३१५ | १५-३-१७८१ |
| १४६ | ४-९-१७५७ | ३१६ | १९-३-१७८१ |
| १४७ | १०-९-१७५७ | ३१९ | २४-४-१७८१ |
| १४८ | २०-९-१७५७ | ३२६ | १५-६-१७८१ |
| १५१ | १७५७ | ३३१ | १४-९-१७८० |
| १५२ | १७५३ | ३३६ | १-१०-१७८३ |
| १६६ | २४-२-१७५९ | ३९० | १८-१२-१७८२ |
| २०२ | २६-३-१७६२ | ३९१ | २१-१२-१७८२ |
| २१२ | १३-६-१७६६ | ३९४ | २१-१२-१७८२ |
| २१८ | १६-६-१७६८ | ४०४ | १२-३-१७८३ |
| २२० | १५-४-१७६८ | ४१६ | १७-५-१७८३ |
| २२४ | २०-१२-१७६८ | ४८२ | २४-५-१८१३ |
| २३३ | ३०-८-१७७४ | ४८८ | १७-९-१८०२ |



श्री. जयाजी आपा शिंदे



शिंदेशाही इतिहासाची साधने

भाग ३ रा.

श्रीमंत पंत प्रधान पेशवे

यांचा असल पत्रव्यवहार.

१७८०-१८५० विक्रमी.

लेखांक [१]

श्री * संवत् १७८० पौष्य शुद्ध ९

[२४ दिसवर १७२३]

[नकल]

आज्ञापत्र समस्तराजकार्यधुरंधरविश्वासनिधी राजमान्य राजश्री जगजीवन परधराम [प्रतिनिधी]' ता कामाविसदार मोजे विप्रवली ता देवरुख सुभा प्रांत राजापुर सुहूरसंन आर्वा असरीन मयां व अलफ. राजेश्री भदनगोपाल बिन रुद्र जोसी वाग्दव्य क्लास खास नागेश्वर हे भले सत्पान्न परमेश्वरपरायेण यांचे चालविलीयानें श्रेयस्कर आहे याकरितां

(१) प्रतिनिधी मोठे की मुख्य प्रधान मोठे या प्रश्नाचे उत्तर प्रतिनिधी मोठे असें रिया-सतकाराने दिले आहे. तें कित्येकास मान्य नसून मुख्य प्रधान मोठे असे दाखविण्यांत येते. [विसंव १८३७ पान ७६, ७७] या वादात विस्तारे खोल उत्तरावयाचे कारण नाही. प्रत्यक्ष पेशवाईची सूत्रे चालविणारा नाना फडणीस याचे काय उत्तर आहे ते पाहिले म्हणजे सहज निवाडा होईल. १७८४ शीत वकीलमूतलकी हे पद शिंद्यानी घेतले त्या वेळी जो वितंडवाद माजला त्यात नानाने एका पत्री असें म्हटले आहे की ' श्रीमताचे पेशवाईपेक्षा प्रतिनिधीचे श्रेष्ठ पद आहे परंतु प्रतापापुढें काय करितात. [पाप २ ले २२६]

यावरी राजश्री छत्रपती स्वामी कृपाळू होउन मोजे मजकुरीपंकी कोंड वा मावळें कुलबाव कुलकानु हलीपटी व पेस्तरपटी जलतरुपापाण खेरीज हकदार व इनामदार करुन देउन आज्ञापत्रें सादर केली. वाकी राजपत्रें बनाम देशाधिकारी व देशक व कमाविसदार ताा मजकूर शके ४६ विकारीनाम संवंत्सरे जेष्ट बहुल प्रतिपदा मंदवारी व तीर्थस्वरुप राजश्री राउ प्रतिनिची स्वामीचों पत्रें छ २० रजत्र सन असरीन येणेंप्रो पत्रें सादर जाहालीं त्याजवरुन वोंड मजकूरची चतुसीमा.

पूर्वेस नदी सोनवीचा उगम कोड बोक्षरे पळमेस कोंड इंदुलकर मोजे मजकूर व काटवली. सिमेचा व खाले आंवेचीं झांटे पाणियापासून सोनवीस मिलली.

उतरेस सोनवी नदी पलीकडे काटवली. दक्षणेस डोंगराचे खालील निवई मार्गाची सिकापाळण काडाचे पाणियापासून आवेचे पाणियापावेतों सीमा.

येणेप्रमाणे चतुसीमा करुन कोड मजकूर इनाम दिल्या आहे. तरी सदरहू कोड यासी व यांचे पुत्रपोत्रादिवंशपरंपरेने इनाम चालवणे. प्रति वर्षी नवीन पत्राचा आक्षेप न करणे. या पत्राची प्रती लिहून घेउन मुख्यपत्र भोगवटी यासी मारनिलेजवळ परतोन देणे. जाणजे छ * ७ रविळाखर.

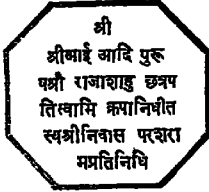
लेखांक [२]

श्री * संवत १७९० श्रावण शुद्ध १

[३० जुलै १७९३]

[नकल]

अज्ञापत्र समस्तराजकार्येधुरंधरविश्वासनिधी राजमान्य राजश्री बाजीराव पंडित ताा राणोजी बिन जनकोजी सिंदे माो निमे मोजे आठव ताा हवेली पोो पुणे. सुमा आर्वा सलासीन मया अरुफ. मोजे मजकूरचे पाटिलकीबदल तुह्याकडे रुपये ९०० नउसे हरकीचे येणे होते ते साल मजकूर मानपुरीचे मुकामी सदरहू रुपये ९०० पोता जमा जाले. मजरा असेत. जाणजे छ *२९ सफर. पाा हजूर. मोर्तब.



अज्ञापत्र समस्त राजकार्यपुरंधरविश्वासनिधी राजमान्य राजश्री श्रीनिवास परशराम प्रतिनिधी ताहां राणोजी बिन जनकोजी सिंदे पाटील निमे कसबा चांभारगोंदे पा मजकूर सरकार आमदानगर. सुा इसने आर्वेन मया आळफ. तुळी हजूर साताराचे मुकामी घेउन विनंती केली की कसबा मजकूरचे पाटिलकीचे वतन आपणास व आंबळे व मुंगी^१ याणी खुशरजावंदीने विकत देउन कागदपत्र लेहून दिल्ले. त्यास महजर करिता समई गोतानी कृष्णाजी वा पिराजी मोटे याची आपली समजाविसी केली जे सारे पाटिलकीचे वाटे सुमार २४ चोवीस पाो आंबळे वाटे तीन व मुंगी वाटे तीन बाकी वाटे १८ आठरा पाो कृष्णाजी मोटे यासी निमे नउ वाटे पाटिलकी व आपल्यास निमे पाटिलकीचे नउ वाटे याप्रो मान व कायदे देखील निमे वाटून देउन महजर करून दिल्ले असे तरी साहेबी कागदपत्र मनास अणून सरडेसमुखीचा सक करार करून आमयेपत्र सादर केले पाहिजे हणून त्यावरून मनास अणून सरदेशमुखीचा सक रुपये ४०० च्यारसे करार करून राजश्री भल्हार तुकदेउ [पुरंदरे] याचे विद्यमाने वसुळ घेउन आमयेपत्र सादर केले असे. तरी वंशपरंपरेने पाटिलकीचे वतन आनमउन सुखरूप राहाणे. जाणिजे. छ * २ रजबु. निर्देश समक्ष.

सुरुसुद्ध बार.

(२) कसबे चाभारगोंदे येथील पाटिलकीचे वतन मुगी याने जे हे शिद्यास दिले त्याच्या ऐवजी राणोजी शिद्याने कस्बे सोनकळ प्रात माळवा येथील मुजुमदारी मुगी यास दिली तेव्हापासून हे घराने सोनकळ येथें राहू लागले तें अद्याप तेथेंच विद्यमान आहे

लेखांक [४]
६४]

श्री

[४ अगस्ट १७४६] ?

पुा राजश्री मल्हारजी^३ होलकर व जयाजी शिंदे.गोसावी यांति.

उपरी. वंगालियांकडील वर्तमान आले कि राजश्री रघोजी भोसले यांची फांज महावतजगानी फुटपर्यंत पिटोन घातली. यांचा जोरा पोहोचला नाही. राजश्री अमृतराव' विदा होउन गयेस. × × × उस्करात आल्यावर सविस्तर लिहून पाठउन हाणोन लािा ते कळले. याउपरी तिकडील वर्तमान येईल ते लिहिणे. अमृतराव तुम्हाजवळ आलेच असती. सविस्तर वर्तमान ।' लिहिणे. छ * २७ रजव. बहुत काये लिहिणे.

रिपत
सीमा

लेखांक [५]

श्री

[१७४८]

आशिर्वाद उपरि. येअवतराव^१ पवार केवल वेडा जाहाला. आता तिलमात्र दुराभिमान मल्हारवाने न धरावा. त्याचा सरजाम सरकारात व्हावा हेच उचित. हे आशिर्वाद.

(३) रघोजी भोसल्याच्या या गराजयाची भिनी अद्याप निश्चित होत नाही. १७४८ हे वर्ष काव्येतिहासकारांचे जुळत नाही कारण या वर्षी 'रजव' महिन्यात शिंदेहोळकर वरोवर नाहीत व पत्र तर उभयतांच्या नावे आहे अर्थातच मिति मागं घेतली पाहिजे ती १७४६-४७ सात जाईल १७४६ हे सात विनोप सभवनिय वाटते

(४) याचे उपनाम कोठे सापडत नाही पूर्ण नाव 'अमृतराव शंकर दिनकरराव' असं दिलं आहे हा पेशव्याच्या वतीने नवाब अलावदींसान महावतजग सुभे बगाल याजकडे वकिलीचे कामावर होता. [एटि १ पान ६५] नंतर मुरारराव घोरेपडे गुतीकर याजकडे समेटास गेला होता. तेथून 'अर्काट प्राती तिरपातुराच्या हल्यात गोली लागोन' १० मार्च १७५८ रोजी मेल. [पेद २८ ले ११९, २१७]

(५) हे पत्र अत्यंत महत्वाचे होय थारकर पवाराविषयी पेशव्याचे हद्दगत यात स्पष्टच आहे मारुठ्याच्या वाटणीसवधी प्रथमत परस्परे. वैषम्य आले त्याची ही सीमा होय या सकटातून पवार वाचले ते केवळ शिंदेहोळकराच्या मीडेस्तवच होय मात्र या वेळी त्याचा प्रभाव जो खालवला तो कायमचाच होय. यानंतर उत्तरेकडील स्वान्यात त्याचा फारसा सवध राहिला नाही शिवाजी शंकर, रंगराव आपा व शिवकराव शिवदेव ओढेकर हे पवाराच्या वतीने काम करीत असत पानिपता नंतर तर ओहडीच लागली

लेखांक [६]
९२]

श्री * संवत् १८०७ पौष्य शुद्ध १०
[२७ दिसबर १७५०]

राजश्री रामाजीपंत [दामोळकर] यांसि.

सेवक बालाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार. जयापास जरूरी पत्र लिहिले आहे. हे यकांती देणे. तुम्हाजवळून वाचून पाहिली तर उत्तम. नाहीतर ज्यापासून मनास येईल त्यापासून वाचून पहातील. सविस्तर जाब मागून सत्वर पाठवणे. सर्व प्रकारे कर्जे फेडावयाचा व आम्ही केले ते सेवटास न्यावयाचा भरवसा आम्हास या ममई जयापाचा आहे. त्यानी तिलमात्र झलहारबाचे बुधीस कोणी भेद करतील तो न होउ देता ते आमचेच येकनिस्टेत राहात ते करावे. मागे गोठेमोठे कर्ते जाहले त्यानी कर्जे फेडिली. आता आम्हावर जयापावर कर्जे फेडावे जे केले ते येकविचारे सेवटास न्यावे सा सुमे दक्षण सोडवावी या कामाची पाळी आहे. श्री कृपा आहे तरी सर्वही मनावर घेउन करतील. छ * ८ सफर.

लेखन
सीमा.

(६) या पत्राची मिति काव्येतिहासकाराम जमली नाही एक वर्ष मागे जावयास पाहिजे खड ३ ले ३७२ याविषयीचीच पत्रे होत 'दक्षिणेचा बंदोबस्त करावा. दक्षिण सारी मोकळी करावी' ही वाक्ये १७५० पासून महाराष्ट्रात सर्वाभ्या तोडी झाली होती असे राजवाड्याने जे हटले आहे [खड १ ले. २५, १३८] ते बरोबर नाही. 'सहा सुमे दक्षण मोकळी व्हावी' ही भाषा १७४० पासूनच प्रचारात होती [पुरदरे १ ले. १३९] अर्थात् ती बाजीरावाची, नानासाहेबाची नव्हे या वाक्याचा भावार्थ नानासाहेब पेशवे याच्या शब्दातच घेतला ह्याणजे, 'अवरगाबाद व वन्हाणपूर दोन्ही सुमे व खजाना' घेण्यापुरताच होता. [खड ३ ले. ३७२] खजान्याचा अर्थ 'दहावीस लाख' असा आहे [ले. ७] यवढ्याकरिताच शिंदेहोळकरानी उत्तरेकडील स्वारी सोडून देशी येऊन एवढे कार्य करावे असा पेशव्याचा कल होता इतकेच नव्हे तर उत्तरेकडील जे कार्य शिंदेहोळकर अगिकार करू पाहात होते ते 'फार अवघड' व अशक्य असे पेशव्याचे मत स्पष्टच होते यासाठीच पदोपदी पत्रे पाठवीत असताही उभयता येत नाहीत असे पाहून पेशव्यास सहाय आला देशी 'आमची आदर मोगल घेत असतां तिकडेच मनसबे वाढविता. मग स्वर्गी कामास यालसे वाटते सर्व ह्याणतात की वजिराचे चाकर जाहाला. आम्ही व्यर्थ आशा धरितो' इतके निराण होऊन त्याने बेलमडार मागितला [ले. २१, २५] पण 'दक्षिणेत कामकाज पडिले असिले तरी हे कार्य मातबर या कार्ये जाहालियास सर्वे कामे साधतील' [पेद २ ले. १४] या बोरणावर ते उत्तरेकडेच राजकारण खेळले त्यात मौज ही की, जो मनोबय पेशव्याचा होता तो सिद्ध करून त्यापेक्षाही बरचढ, आकर्षक व फलदायक असे राजकारण करून दाखविले. ते शेवटी पेशव्यासही मान्यच करावे

लेखांक [७]
७२]

† श्री * संवत् १८०७ पौष्य शुद्ध १०
[२७ दिम्वर १७५०]

राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यांसि.

आसिर्वाद उपरी. राजश्री माहादोवासी^० आम्हासी विमनस्कता तीन वर्शें आहे. सातारियापासून विशेष वृथी पावली. तुमचे पक्षपातामुळे अति कष्टी होते. याचमुळे आम्हास हरयेक कामात मुरदाढ करावे याची तजवीज रामचंद्रवात्रा [सुखठणकर] [सदासिबराव] भाउकडे राजवतारणे पत्रे जात येत असेत. आम्हापासून हरयेक मसलत पुर्ता पायाशुभ्र सेवटास न जावी या भावे भाउकडेच फौज पाठवावी, आम्हास घरी वसठन भोविदरायाचे आज्ञेत वर्तवावे. उभात्राईस राखावे. तारात्राईसी गोविद रायाचे मारफातीने चढवावे. आम्हावर सर्वांचे उपर राखावे. येसा विचार दिसोन आला. तेव्हा आम्ही मा'उस साफ लिहिले की जर भाउ असेल तर पत्र दर्शनी येणे

लागले. हे राजकारण ह्याणजेच भोगल धादशाहाशी केलेला 'अहदनामा' होय त्यामुळे केवळ निजायच नव्हे तर 'बावीस सुभ्यावर' ह्याणजे अखिल भारतवर्षावर मराठ्यांच्या चौयाईची सनदशीर कबुली होऊन स्वराज्याचे रूपांतर साम्राज्यात झाले पण या वस्तुस्थितीची ओळख इतिहासाला होऊ नये, फेरविचार करित असता ती उमजू नये हे नवल आहे. असो 'एवढे मोठे यश जे आजतागायत कोणाच्याने न जाले ते करून घेतले' असे तत्कालीन पयात वणिले आहे त्याचे श्रेय सर्व्वी शिंदेहोळकरासच येते याविषयी एकही पत्रपेशव्याचे उपलब्ध होत नाही किंवा त्याचे कौतुक केल्याचे पावले जात नाही 'तुम्ही आम्ही मिलोन गानुदीखान उभे करून वेजरव यास जखरव घावी आपले कार्य मातवर साधावे' या नीतिप्रमाणे भालकीचा जो तह झाला त्यात शिंदेहोळकरास मात्र यशाचा वाटा आला नाही [पेद २५ ले १४९, १५१] आणि उभयताचा मनोभग होऊन त्याविषयी बुर्लौकिक झाला [पेद २१ ले ५५, ५६] यानंतर शिंदेहोळकर व पेशवे हे तिघे एकत्र होऊन निजामाशी झुजण्याची सधीच आली नाही पुढें ४० वर्षानंतर जो योग जुळून आला त्या वेळी देखील मनोभावनेचे हेच चित्र पहावयास मिळते

(७) याचे पूर्ण नाव महावाजी अबाजी पुरदरे हा पेशव्याचा मुख्य दिवाण असून शाह-छत्रपतीच्या निघनानंतर सातारच्या गादीविषयी जे घोरण पेशव्याने स्वीकारले त्यास याची सपती बहुधा नसावी. अर्थात्च त्याचे पेशव्याची विनसले त्याच्या जागी रामचंद्र मल्हार सुखठणकर हा दिवाण झाला तो ६ अक्टोबर १७५४ रोजी वारला. तेव्हा हा परत दिवाणगिरीवर आला हे दोन्ही पुरुष असामान्य राजकारणी होते पण रामचंद्रवात्रा सुखठणकर याची कीर्ति व प्रतिष्ठा सरस होती या पुरव्यानंतर सखाराम भगवत बोकील या पदावर आला तो बदिवासात गेल्यानंतर सुप्रसिद्ध नाना फडणीस सन १८००पर्यंत या कामावर होता ही नामावळी पाहिली ह्याणजे पेशवाईतील दिवाणगिरीच्या पदावर सर्व्व बुद्धिमान पुरुष राहिले असे ह्याणावे लागते

दाभाडियाकडील काम चांगले करा त्यावरून भिडेस पडून आले. दाभाडियाचे काम रगडून आरंभिले. नासरजंग मेळा. जप्ती करावी. दहावीस लाख मेळवावे. सरदार ही बोळावावे. हिंदायेत मोहिदीखानावर जावे. गरमी दाखउन जे मिलेल ते मेळवावे येसा विचार आम्ही केला. याजमुळे वावानी बहुत वाईट मानून घरास गेले. कोणी म्हणतात की ताराबाईकडे जातील परंतु ते कुलीन जुने चाकर हरामखोरी कधी करणार नाहीत असे वाटते. काळगत मात्र न कले. असो. आम्हासी वावासी तूट पडली. माउ अर्ध इकडे अर्धे तिकडे. रामचंद्रबाबा बाह्यात्कारे आम्हाकडे. अतर्यामी बहुत गुप्त रीतीने वावाकडे. येथे वाहेर तो सर्वत्र दाखवितात की खावंदाची मर्जा तेच प्रमाण परंतु अतरभाव तुम्ही जाणतच आहा. त्रिवक विनायेक कोनरपत हे केवळ वावाचे. गंगोवासी ल्यासी राजकारण पूर्ण. येथून मलहारवास लिहितील की खामखा वावाचा पक्षपात करून आमचे केळ मोडावे. मलहारबा मोला माणूस खामखा येखादे जागी वचनास गुतल्यास आम्हासी तट मात्र पडेल. आमचे विचारे चाले तर समजाविसी करावी. चालवावे येसे आमचे मनात आहेच. आता जाहाले तरी बरे. न जाहाले तरी पुढेही जो विचार आमचे मनापासून खुलासियाने ठडरेल तोच सेवयास न्यावा. गंगोवानी त्रिवक विनायेकाचे मारफातीने लिहिळे तर साफ जाव करावा कि खावंदासी आम्ही इरे वाढविणार नाही. एसे साफ बोळावे. जे करणे ते आमचे विचारे करावे. या मजकुरावर मलहारवास कायम आगोघर करून ठेवणे. असे असता आम्हासी विरुध करितील तर करोत. आमची तवकळ ईश्वरावर आहे. तुमचे भरवसियावर असे केले. [अपूर्ण]

लेखांक [८]

८१]

श्री

[मि १७५१]

† आसिर्नाद उपरी. गुापासून ताराबाईसी विघाड पडला याजमुळे नाना प्रकारे पेच ल्यानी केले. ज्यासि आम्ही गोड न बोळलो तो ल्याचे लगामी. ज्यासी आम्ही

(८) गगाधर यशवत चंद्रचूड. याचा सबध होळकराशी १७२९ पासून आला. [पिद २२ ले ४६] यानंतर तो मलहारजी होळकर याचा दिवाण झाला तो १७६८ पर्यंत होता. माघवराव व दादासाहेब पेशवे यांच्यात परस्परे घोडपचे युद्ध झाले त्यात याने तुकोजी होळकरास दादासाहेबाच्या पक्षाकडे वळविले त्यामुळे पेशव्याचा याजवर रोष होऊन त्याची मालमत्ता जप्त होऊन तो हालअपेष्टा मोतीतच मरण पावला. [पिद १९ ले. ७६, ७९, ८२, ८३, ८७, ९१, ९२]

गोड बोलथे तोही त्यानी लटक्या चढी लाउन आपले लगामी टाविलेच आहेत. कोटे ताल राहिला नाही यास्तव आम्ही कबूल केले की दादोबास प्रतिनिधी थावी. सर्व कारभार त्यानी करावा आमची गुजराथ कर्णानाटक दिल्याप्रा चालवावे. त्यानीही कबूल केले परंतु खाली उतरल्यावाचून मेट जाइल्यावाचून जनात नीट दिसत नाही. संशये तुटत नाही. यास्तव बहुता प्रकारे आग्रह करितो परंतु खाली उतरताच राजा पळून जाईल अगर आम्ही मागती राजास हाती धरून आपल्यास मुरदाळ करितीळ हा संशये मानून संकटात आहेत परंतु समोवती मलतान गुरे वेलितो. पोटास एक पैसा येत नाही. सोनेरुपे मोडून खावे येथपावेतो आले यास्तव मातबर मराठे मध्यस्त घेउन उतरावे येसा कारण जाहाळा आहे. [ताराबाई] उतरली तर उतम नाहीतर एका खाश्याने दाहा हजार फौजेनसी येथे असले पाहिजे. मुरारजी धोरपडे व भोगळ [निजाम] याजकडे नाना प्रकारे आम्हासी अतिव्रदास प्रवर्तून राजकारणे करितात. सर्व समाळले पाहिजे. धरकळह कठिण आहे. येतद्विषई कसे करावे. तुम्हाकडे मल्हारवाकडे देखील राजकारणे करितात असे आइकतो. त्यास तुम्हासी राजकारण केल्यास काये होणे परंतु यत्नास चुकत नाही. पुढे जे होइल ते लिहून पाठउ. हे आसिर्वाद.

लेखांक [९]
७८]

श्री

* संवत् १८०८ ज्येष्ठ शुद्ध ९
[२२ मे १७५१]

पुा राजश्री मल्हारजी होळकर व जयाजी सिदे गोसावी यांसि.

उपरी. गाइकवाडाचा मजकूर जाहला तो तुम्हास लिहिळाच आहे. तदोतर मातुशी आईसाहेब व राजश्रीनी खाली यावे येविसीचा प्रेन बहुता प्रकारे केला. त्याही जे मुदे घात [ले ते आम्ही] मान्य केले असता त्याजकडून राजश्री मानसिंग जाधवराव व आम्हांकडील मध्यरत राजश्री माहादाजी नार्क निबालकर व धोडो [गोत्रिद] आले गेले होते. त्यासह त्रिवर्गास गडावरी पाठविले होते. त्यास गडावर न घेतले. आम्हांकडील मध्यस्त गडावरी न घेतले तर न घेवोंत परंतु त्याणी आपले कडील मध्यस्तास तो ध्यावे. त्यासही न घेतले. आईसाहेब वसवासी फार. शोक व गडकरी यांचे चिंतात आमचे सूत बनो न घावे × × × यास घाडून नासितात गडकरी यांचे मते सर्व सभ्य आम्ही आहो. मातुशी व पेशवे येक जालियावर आम्हांस

कोण पुसतों. असा विचार आहे याजकरिता गढकरी यांस नरम करावयाचा विचार केला. फौज व हशम पोखते ठेउन आम्हीं कूच करून आलो. छ ७ रजबी पुण्यास येउन दाखल जालो. याउपरी होईल वृत् ते लेहून पाठउन. येथील सर्व अर्थ तुम्हास कळावा याजकरिता लिहिले असे. । छ * ७ रजब, बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [१०]

श्री संवत * १८०८ ज्येष्ठ शुद्ध ९
[२२ मे १७५१]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
नारो शंकर गोसावी यांसि.

सेवक ढालाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उपरि. येथील कुशल जाणोन स्वकीये लिहित जाणे विशेष तुम्हीं सरदारांस सामिल जालिया ताा तुम्हांकडून पत्र येउन वर्तमान कळत नाही. हे गोष्ट उचित की काये. येदा सरदारानी फार अवगढ मनसुबा केला होता. ईश्वरकृपेकरू [न] सिधीस जाउन ईराण व तुराण रामेश्वर-पर्यंत लौकीक उतम जाहाला. ते येसस्वीच. तचोगे सर्वही पार पडले. अतःपर वर्षाकाल आला. गंगापार जाउन मनसुबा करू म्हणतील तर त्यास पेच फार आहे. पलीकडे न जावे. तुम्हीं सर्वांनी पलीकडील मसळत न बावी. आटोपून देशास यावे. तुम्हीं आपले तालुकियात येउन बंदोबस्त करावा. उतम असे. । मोठी ढिमत मेहनत पलीकडे जाउन केली. हे वर्तमान श्रवण होउन संतोष जाहाला. तुमचे पत्र न आले हे बरे नव्हे. छ * ७ रजब, बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [११]
८०]

श्री * संवत १८०८ ज्येष्ठ शुद्ध १०
[२३ मे १७५१]

पुर्वणी राजश्री मल्हारजी होळकर व जयाजी सिंदे गोसावी यांसि.

उपरी रेवामकुंदपुरचा मामला बहुत अपत्तर पडला. कामाविसदाराच्या साहिब्यास तीनचार वर्षे फौज येकंदर न गेली. प्रस्तुत आपणास तो प्रांत जवळच

(९) उत्तरेस स्वारी न करिता सिंदेहोळकरानी देशी यावे याकरिता पेशव्यांनी अंतस्य सूचना केली होती असे उषळ होते हरी विठळ तर देशी देखील आला. [ले २४]

आहे. कोणी येकडेच पथके पाठवणं ती पाठउन अमलाचा पैका वैसे कमाविसदाराचा पिका उगरे ते ग्याग्या करावे. रा छ * ८ रजव. ११ तेथील बरोबरत जरूर करावा. बहूत कायें लिहिणं.

१११
सीमा

लेखांक [१२]

श्री * संवत् १८०८ ज्येष्ठ वष १३
[१० जून १७५१]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री

घोंडो दनात्रो गोसावी यासि.

सेपकः राजाजी बाजीराव प्रधान नमरकार. सुा इसने मया व आन्क. वरां सरदारानी येमुना गंगापार उउन पटाण रोहिन्यामी गाठ घाडून शत्रु परामवास नेला. तुन्ही सर्वा सरदारानी मने धाडउन जीवित्व व्रणप्रये मानोन म्यागीसेवेवर दृढोतर राहून येग संपादिले. हे गोष्ट त्याजान सामान्य जाणली असा अर्थ नाही. रामेश्वरापासून ह्याणतुराणपर्यंत लोकोतर जाणलं. याचारा तुम्हा लोकावे हिमतीची. ज्या गोष्टी वरूपनेत नव्हत्या त्या वर्तव्यास आपून दावविन्वान. उतम केले १ जाणिले छ २ २६ रजव.

देखन
सीमा

लेखांक [१३]
३८]

श्री * संवत् १८०८ ज्येष्ठ वष १३
[१० जून १७५१]

१११
राजाबाबुना
पगिदये नथान
बाळाजीबाजी
राजमान्य

राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यासि.

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य श्रा बाळाजी बाजीराव प्रधान आसिर्वंद उपरी. येथील कुमल जाणोन स्वकीये लिखित जाणे विशेष. तुम्ही पत्रे छ जमादिलाखरची पाठविली ती छ २३ रजवी पावली. लिहिले वर्तमान स्वात खुल्या[सा] हाच [की]

(१०) याच भितीची व भजकुराची पत्रे 'अताजी माणकेबर' व 'हरी विठल' याच्या नावे प्रथक प्रथक आहेत. ती घेतली नाहीत.

सादलखान पठाण पठाणाचा हरोळ होता तो लुटून पस्त केला. तदोतर अहमदखान पठाण प्रयागीहून जल्द स्वारीने फरोकाबादेस आला. याची बातमी कळोन वुनगे कोसी दुकोसी ठेउन सडे फांजेनसी मोर्चेवंदी करून राहिले. त्यास व आम्हाकडील मोर्चा × × × त होती मारामार असता पंचवीस रोजपर्यंत जाहले. पठाणास सामान सरंजाम पलीकडून पोहचत होता त्यामुळे अयास न येत. तेव्हां नवाब मनसूरअलीखान बजीर आम्हापासून पाच कोस कन्होजेजवळ होते. त्याजकडून गंगेस पुल तयार करउन फौजा निवड करून पार उतरून त्याजकडील फौज रोहिलेसुधा तीस हजारपावेतो होती त्यासी गाठ घाढून पठाण लुटून मारून पस्त केला. तेच दिवसी मोर्चातून अहमदखान पठाण रात्री पळोन गेला. त्याचा पिछा करून बुडविला. दत्ताजी सिंदे यानी फार फार शर्त केली. हती घोडे उटे निशाणे कुळ लुगारा केला. याउपरी बजिरासी फासी प्रयाग क्षेत्रा [चा] वगैरे मजकूर घातला आहे. त्याचा निकाल जाहलि यावरी [दे]शी यावयाचा विचार करून लेहून पाठः३ म्हणोन विस्तारे लिहिले ते कळले. येसियास तुम्ही एकनिष्ठ मातबर सेवक उमदीउमदी कामे दुरंदेशीने मनात आणून त्याचे ठाई नेट मारून करणे आणि सिपाईगिरीची व मनसुवेबाजपणाची शर्त करून येषास पात्र व्हावे असेच आहांत. तदनुसार हे मदयेश घेउन बजिरास पठाणानी व रे हिल्याने फरारी करून तमाम दिल्लीपर्यंत अक्रमशक्त केली असता त्याची पुस्तपन्हा करून त्यास नतिजा देउन नेस्तनाबूद केले. बजिराचा बोलबाला करून पातशाहात रोहिले पठाण घेउ च्याहात होते ते पातशाहाच्या घरात राखोन त्यास संतोष व बचनास खरेपण आणोन महदयेशाची प × × × × वोन स्वामीसेवा पैका व यश आजितागाहत जाहाली नाही ती करून दाखविलीत. याजवरून फार संतोष जाहाला. तुम्हास योग्य तेच केले व पुढेही कराल हा निशाच आहे. याउपरी साधल्या येशाचा छाम अतितर मानून कामकाज करणे ते करून सर्वाची मर्जी राखोन देशी यावयाचा विचार केलाच असेल. तर सविस्तर वर्तमान लिहिणें. लिहिणें. येथील वर्तमान तरी वरकड सर्व राज्य आमचे लक्षासिवाय नाही. मातुशी चढी लागली आहेत. त्यास गडावर दोन फल्या राजश्री निराले. मातुशी निराली.

प्रस्तुत राजश्रीचे प्राबल्य आहे. बहुधा उतरतील. श्रीकृपे लौकरीच राज्याचे कल्याण दृष्ट दुर्बुदीने राज्यात बरे ऋडा करितात त्याची कालीतोडे होउन राज्य स्वय्य होईल. पुढे वर्तमान होईल ते लिहिले जाईल. जाणजे छ * २६ रजब. † बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ ४ रमजान.

[१७ जुलै १७५१]

लेखांक [१४]

८२]

श्री

* संवत १८०८ ज्येष्ठ वद्य १४

[११ जून १७५१]

पुा राजश्री मल्हारशी होळकर व जयाजी सिंदे गोसावी यांसि.

उपरी. गाजुदीखान यास दक्षणेस यावयाचा हुकुम जाहला. तयारी होणे ते होत आहे. येविसीची सहाह पुखता देउन येथून पत्रे पाठविली असेत. त्याजकडील ही संदर्भ आहे त्यास आम्ही पठाणाचे मसलतीस गुतलो × × × बहुतेक कामे आपले मतलबा मवाफि[क] जाहली. विशिस्ट राहिली ती थोडकेच दिवसात होतील. येथील गुता उरकून गाजुदीखान याजकडील संदर्भ द्रढोतर करून त्याचे आगमन दक्षणेस होये ते करून म्हणोन लिहिले ते कळले.† येशास यतद्विषई विस्तारे अडाहिदा लिहिले आहे. जेणेकरून यासी बेमानी पदरी न येता कार्य होय ते करावे लागेल. सलामतजंग आमचे आइकेनात तेव्हां ते जरूर केले पाहिजे. नाहीतर ते आमचे भरवसियावर राहिले. आम्ही गाजुदीखान तुम्हाकडून आणून त्याचे घर बुडविले म्हणजे फिरोन आमचा भरवसा कोणी धरू नये ऐसे होणार यास्तव आधी त्यासी बोळावे. कार्य न होय तेव्हां बोळनचाळनच गाजुदीखानास आणावे. या डांडाने आपण करावे म्हणजे कार्यही आहे व लौकीकही उतम. याखेरीज प्रकार जाहल्या युक्त नाही. छ * २७ रजब. बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ ४ रमजान

[१७ जुलै १७५१]

लेखांक [१५]
८४]

श्री * संवत् १८०८ ज्येष्ठ वद्य १४
[११ जून १७५१]

पुग राजश्री मल्हारजी ह्योळकर व जयाजी सिंदे गोसावी यांसि.

उपरी. नवाब गाजुदीखान फेरोजंग बादज वरसात दक्षणेस यावयाची तजवीज करितीळसें दिसते. फेरोजंग नवाब ओसफज्याचे पुत्र खरेच परंतु बहुत दिवस दिल्लीस राहिले. मुतसदगिरीचेच काम केलें. सिपाइगिरी सरदारी काम त्यांस पडले नाहीं. प्रस्तुत ते सरदारीचे व बहादुरीचें कामास हिंमत करणार. त्यास आम्ही सलावतजगासी जागिरेची बोली लाविली आहे. तेही आम्हांसी बोलतात परंतु गाजुदीखानाचे येण्याची गरमी असंती तर चितानरूप हेही आम्हांसी बोलते. जर चितानरूप याजकडून कार्य न होते तर त्याज कडून कार्याची पेरवी करून घ्यावयांची तजवीज करितों परंतु गाजुदीखान याचे येण्याची ढील यांजमुळे तिकडील निवडले नाहीं. गाजुदीखान तुम्हांसी बोलतील. तुम्हास वचनास गोवितीळ. तुम्हीं वचनास गुंतोन त्यांस घेउन यावयांचा विचार कराळ. तर आम्ही सलावतजंगाची दस्तगिरी केली कांही वचनासहीं गुतलों. आमची जागिरेविसी याजसी बोली लागोन राहिली आहे. गाजुदीखान येतातसें यांस कळोन हेही आम्हांसी बोलतील. पुतें वचनास गोवितीळ. येकुण तुम्हीं त्यांजकडे वचनांस गुतला आम्ही याजकडे गुतलो येणेकरून दोहीकडेही फारफार अवघड जाईल. वेद्दमानीचा शब्दारोप येईल [त्यास ही गो] छ सवार्थी कार्याची नाहीं. प्रस्तुत कांही तुम्हीं त्याजसीं वचनांस गुतला नाहीं. मोकळेच आहा. ते बोलत असंतीळ तर सुखरूप बोलोत. तुम्हीहीं सलजव उचित रीतीने करावे. वचनास न गुतावें. आम्ही याजसीं जागिरेविसी बोलतो. चितानुरूप यांजकडून काम जाहल्यास उतमच आहे. जरी हे आमचे खातरखा कार्ये करून न देत तेन्हां यांजकडील बोली तोडून त्याजकडे बोली लाउन त्याजपासोन आपले कार्य करून घ्यावे लागेल. सारांश इकडील (८) प्रकार निवडला नाहीं तोपर्यंत तुम्ही गाजुदीखानासी वचनास न गुतावें.

(११) 'आम्ही सलावतजगाची वचनासही गुतलो' असे पेशवा शिंदेहोळकरांस या पत्रात ह्याणतो. पण ते खरे नाहीं असे स्वतः पेशवाच वासुदेव शिक्षित यास १४ जुलै १७५१ रोजी लिहीत आहे 'आम्ही आवश्यक ह्याणून ह्याणत होतो. ते समई रदवदली करून बोलिले सोवटास नेणे नव्हते यास्तव मोघम मजकूर ठेविला' [खड ३ ले. ३८७] 'वचन, बोल, भरवसा इमानप्रमाण' याची प्रौढी दाखविण्यात भावार्थ एवढाच की 'आधी सलावतजगासी बोलावे. कार्य न होय तेन्हां गाजुदीखानास आणावे याखेरीज प्रकार झाल्यास युक्त नाहीं.' सरळ भाषेत बोलावयाचे ह्याणजे या राजकारणाचें सूक्तासुक्त न पहाता त्याचें श्रेय शिंदेहोळकराकडे न जाळ देता स्वतःचाच पगडा राहावा असें स्पष्ट होते या सलावतजगाच्या प्रकरणात पेशव्याचा स्वार्थच जास्त बळावला असे उघडकीस येईल.

इकडीलही सर्व अर्थ तुम्हांस कळावा याजकारिता लिहिला असे. पुढे होईल मजकूर तोही तुम्हांस लिहून पाठउन. तदनसार जसजसा विचार करणे तो करांलच. ' आमचे मते याजसी वचनप्रमाण जाहाले आहे. यानीच जागीर दिल्ली तर तो यासच राखावे. त्याचा पक्ष न करावा. यानी लबाडी केली नीट न देत तर यासी इमान उजवले. आगहावर शब्द नाही. येसे जानोजी निंबालकर मध्यस्त आहेत त्या हाती जाबसाल करावे. मग पुखरूप गाजुदीखानास आणून याचे पारपत्य करावे व त्यापासून मातवरच पैका मुळक घेणे तो घ्यावा. ये गोष्टीचा पष्ट अर्थ श्रावणभाद्रपदअखेर कलेल. तदनरूप जे कर्तव्य ते करावे. जर केवल त्याचे राजकारण तुम्ही टाकिले ते नाउमेद होउन घरी बसले म्हणजे यासही आमची गरज पडणार नाही. त्यासि काही दिवस धातुपोषण बोलावे. याजपासून आपले कार्य साधावे. हे ताल्यावर नच येत तर त्यासी शफतपूर्वक बोळून मग त्यास आणावं. येसा कारेगारीने मनसबा केलियावाचून प्रमाणिकता राहाणार नाही. जर तुम्ही त्यासी केवल इमानपूर्वक बोळलेस आणि त्यास घेउन पाच मजली आलेस म्हणजे हे आमचे पाया पडतील. आम्हासही याचे आयकावे लागेल. आम्ही यासि सद्धक केला. तुम्ही त्यासी इमान केले म्हणजे महा अप्रमाणिकतेचे कारण होणार. बहुत लौकिक फटकल होणार. यास्तव त्याचे भये यास पडे कार्य याजपासून होय येसे करावे. हे ताल्यावर नच येत तर आपले इमान उगवले. येसे पष्ट बोळून मग सुखरूप तुम्ही आम्ही मिलोन गाजुदीखान उभे करून बेजरब यास जरब द्यावी. आपले कार्य मातवर साधावे. तुम्हासी ते बोळत असतील. तुम्ही दसरियापावेतो राजकारण राखावयाचे रीतीने बोळणे. इतक्यात यासी आम्ही बोली पाडून पष्ट निश्चये करून तुम्हास लिहून पाठउन. तदनरूप जे कर्तव्य ते करणे. यानी आमची रजावदी केली आणि तुम्ही त्यासि वचनइमानास गुतलेस त्यास घेउन याजवर चालून आलेस म्हणजे सर्व प्रकारे लौकिक वाईट होईल यास्तव विस्तारे लिहिले असे. सलाबतजंग थोडया दिवसात अवरगानादेस दाखळ होतील. जानबा [निंबालकर] जाउन जाबसाल करून येत तो उबार आहे. या गोष्टीस दोनतीन महिने पाहिजेत. इतक्या [त पाबसाल] आहे. चारी राजकारणे राखावी. दसरियानतर जे लिहून पाठन ते करावे. छ * २७ रजब. बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ ४ रमजान
[१७ जुलै १७५१]

[जून १७५१]

आसिर्वाद उपरि. गुा भोगळासी सल्लख, मागे गाइक्वाडाने घापु मोडिल्ल यास्तव व सोमती पाहुणे भरवसा नाही यास्तव केळ. साप्रत रामदासपंती रघोजी भोसल्यास पाचा लाखाची जागीर दिल्ली. आपले सरदारस रामचंद्र जाधव चार लाखाची. जानबा पाचा लाखाची. अणखी लाहानमोठे मोगळ मराठे समाजाउन आव घातल्या. खजाना खर्च करून वीस हजार फौज ठेविली आणि आम्हासी विधाडाचा डौल घातल्या. गुा सल्लखाचे समई आम्हासी करार केळ होता की पंधरा लाखाची जागीर जर पातशाही सनद आणउन द्यावी व गाजुदीखानास माघारा जाई येसा कराळ तर जागीर पंधराची देउ. कर्णाटकाचा अमळ नीट करून देउ. ऐसा करार जाहाळ्य होता. आम्हीं आपले वकिलास ढीग लिहिले परंतु याचे मारफातीने सनद न जाहाली. ज्ञावेदखानाचे पनास लाख रूा नजर पातशाहास देवउन सनद पाठविली. आम्हीं जागिरीचा मजकूर गोडीचेच रीतीने बोलत होतो. ते गोष्टीचा जाब उडउन सांगितला. उफराटे जागाजागा राजकारणें करू लागले. मालव्यातून नारो शंकर वगेरे याचा पैका पाच लाख येत होता तो बराणपुरचे सुभ्याने घेतला. आजपवेतो तोडाने गोड बोलत होते. आताही बोलतात की आम्हास न पुसता लबाडी केली. ताकीद करून खजाना देवितो. ऐसे वकिलासी बोतात परंतु सत्वर फौज जमा करून खामखा यावे. आमची फौज जमा या दिवसात लौकर जमा होणार नाही तो दबाव पाडवा ऐसा विचार दिसतो. आम्हींही फौज बोलाळ पाठविली आहे. आमचे मते खामखा जागिरीसाठी कटकट करावी ऐसे नाही परतु खजान्यामुळे कटकट करणे प्राप्तच जाहाले. जर तुम्ही आसतेस तर ये समई मोठे काम होते. जानबा निबालकर मध्यस्ती करतात परंतु मटी उतरेल ते खरी. तुम्हास बोलावावे तर येथे सल्लूख बरावाईट जाहाले अवकाश महिनापंधरा दिवसाचाच निघतो. तीन महिने जाहाले तुम्हास लिहित आलो की दिल्लीस राजकारण करून गाजुदीखानाचा उपर यास राहीळ तर याज्जपासून कटकट न पडताच कार्य होईल परंतु ते काही होउन न आले. असो. जसा प्रसंग बनेल तसे करू. वर्तमान कळावे यास्तव मात्र लिहिले असे. आमचा याचा विधाड जाहळ्य तरी तुम्ही इतके लाबून येउ पावत नाही. तेथेही काम तुमचे वाढलेच आहे. या उपर तुम्ही दिल्लीत टप्पात करून गाजुदीखान वाहेर काढला आणि येथे यासी आम्हासी सल्लूक जाहाळ्य [तर] तुम्हास त्याचा अभिमान

यासी आमचे वचन गुतले मग याचा आम्हास अभिमान ऐसा प्रसंग पडणार. असो ताहान लागली असता आड खणता पुरवत नाही. जे बनेल श्रीपेठने ते करू. हे आसिर्वाद.

लेखांक [१७]

१३८]

श्री

[१ सितबर १७५१]

राजश्री जयापा [सिंदे] गोसावी यासि.

आसिर्वाद उपरी. तुम्ही सविस्तर वृत राजश्री अताजी माणकेश्वर^{१२} यासमागमे सागून पाठविल्याप्रा सर्व एकनिष्ठेचा व आपले बदोबस्ताचा अर्थ विदित केला तेणेकरून बहुत संतोष जाहला. सर्व्विषी भरवसा तुमचा आहे. हर प्रकारे मल्हारबास आपले मायेत राखून तिकडील तहरह करून मोकले होणे. पूर्वी सविस्तर लिहून पाठविले आहेच. दुसरा जाहलियावर सविस्तर अर्थ लिहिला जाईल. तुमचेविशी येथे तिलमात्र दुसरा अर्थ नाही. सर्व्व प्रकारे समाधान असो देणे. छ * २१ सवाल. ' वहुत काय लिहिणे हे आसिर्वाद.

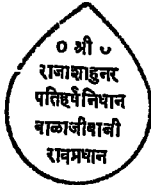
लेखांक [१८]

८७]

श्री

* संवत १८०८ आश्विन वष ६

[२९ सितबर १७५१]



राजश्री मल्हारजी हूलकर व जयाजी सिंदे गोसावी यांसि.

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य श्रा बाळाजी बाजीराव प्रधान आसिर्वाद उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहीत जाणे विशेष. सेद लस्करखान व

(१२) या पत्राचे १७५५ हे वर्ष काव्येतिहासकाराने दिले आहे ते ग्राह्य नाही. कारण या वर्षी 'सवाल' महिन्यात अताजी माणकेश्वर हा दक्षिणेत नसून उत्तरेत आहे. तेव्हा हा 'सवाल' १७५४ चा होय. 'त्रिबकराव ओढेकर, गोपाळराव गणेश हे कुथेरीहून निरोप घेउन देशास आले' त्या सुमारासच तोही आला आसावा असें मानता येते आणि वस्तुतः तो आलाही पण होता 'अताजी माणकेश्वर जवळ होते त्यास दसरियाचे दिवसी साहेबनौबत श्रीमतानी दिली'. १७५५च्या आरभी, तो देशीच आहे [पेद २७ ले ३६] '१९ राखरी कृष्णातिरी असून ५ जावली सागोल्यास'

जानोजी निबालकर हे ब्रह्म दिवस नवाव फ़रोजजंग याचे येणे इकडे व्हावे हे इच्छित होते परंतु नवाबाचे निघणे दिल्लीतून पेंचपाचामुळे न घडे यास्तव मात्र हिदायत मोहिदीखानासी व रामदासपंतांसी च्यार दिवस आपला रंग राखून होते. सांप्रत सुलतानजंगाकडून मध्यास्तीनिमित्त इकडे आले. जर आतांच नवावास जाउन मेटावे तर लौकिकास सर्व प्रकारे वाईट होतो कीं मध्यस्तीस गेले आणि तिकडेच जाउन मिळाले यास्तव आजच यास केवळ मेटातां येत नाहीं नवाव फ़रोजजंगाचे सेवेत यांची येकनिष्ठता आहेच. प्रस्तुत आम्हीही विशेषात्कारे या उभयतांस नवाबाचे जनावेत रुजू आणिले आहे. अशास हे उभयतां मर्द प्रमाणिक मानवर सर्वही आमीर यांचे लगामी. दाहा हजार फ़ौज येकीकडे व हे दोघे बुधिवंत येकीकडे. हे नवाबासी रुजू जाहाले असतां लहाणघोर आमीर नवाबासी हात बांधून सिध आहेत असें जाणावे. दुसरे आमचे वडिलांतागाईत परम श्रेही. गत वर्षीं मातबर पेंच आम्हावर पडला तेव्हां बहुता प्रकारे आमचे कार्यास आले. तोही याचा उगकार आम्हांवर आहे यास्तव तुम्ही नवाबास या उभयतांविशीं उतम रीतीने सांगून ज्यांत नवाब आकृत्रिम याजवर कृपा करीत असे करावे व नवाबाचे खास दस्तूरची पत्रे उभयतांचे नावे आश्वासनपूर्वक कीं तुमचे भरवसियावर येथे आलों तुम्ही सर्व प्रकारे माझे आहां असे विस्तारयुक्त पाठवणे. त्यांत यांची खातरजमा होईल. यांच्या जागिरा मनसबा जेजे आहे ते नवाबास बाहाल करावे लागेल. किंवाहुना आधिकही कृपा करून देणे प्राप्त होईल. हे उभयता नवाबाचे स्वाधीन जाहाले असतां नवाबाचा बहुत नफा आहे शत्रुही आपेआप गर्वहत व पादाक्रांत होउ [न] विशेष उपयोग होतो. यात पूर्ण भरवसियाचे नवाबाचे हातचे पत्र जरूर पाठवणे. छ * १९ जिल्काद. बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ २२ जिल्काद.

[२ अक्टूबर १७५१]

आहे. तेथून 'खरगोणापासी मकडाईस मोर्चे भुसकुटे याणी लाविले त्याजपासी होता' नंतर '२ रमजानी मोजे सहसाव पा नरवर' या मुकामी तो राघोबास भेटतो. अर्थातच हें वर्ष जमत नाही. १७५४ देखील शकास्यद आहे पत्राचा सदर्भ पहाता १७५१ त जुळतें आणि त्या वेळी हरी विठलाबरोवर देखी अंताजीपत आला असावा असा बाबाारही सांपडतो [पेद २ ले २६ पेद २७ ले १२९] हेच वर्ष विशेषतः समुक्तिक वाटते पेद २७ ले ३६ ची मिति चुकली असून खरी तारीख फरवरी १७५५ ची येते

लेखांक [१९]
८८]

श्री * संवत् १८०८ आश्विन वद्य ३०
[८ अक्टूबर १७५१]

पुग राजश्री मल्हारजी होळकर व जयाजी सिंदे गो.

उपरी. खान आलम याची थली दुसरी आली. ते पाठविनी आहे. नवाव
[गजिउद्दीन] फेरोजजंग यांस पावती करावी. कृपा उतर पाठउन द्यावे. जाणजे
छ * २८ जिल्काद.



लेखांक [२०]

! श्री

[अक्टूबर १८५१]

आतिर्वाद उपरि. गुग तुम्हीं पठाणाचा मोठा कठिण मनसबा केला. सेवटी
तोडमोड करून आपले मुल्कात येतेस म्हणजे भोग्यावर इकडे दवाव दुसरे गुजराथेस
बोळाविले तर यावयास जवळ. आपले ताळुकियातील कामे सहजात आमच मनात
होती ते तुम्हास जाते समई सांगितली ती सर्व होउन येती परंतु येकदेशी त्याच
प्रवाही पडला. या पत्रपूर्वी दोनतीन पत्रे पाठविली ती दसरियाचे आसपास पावली
असली तर त्याअन्वये पठाणासि वजिरासि सलूख करून द्यावयाचा डौल घातलाच
असेल. लक्षा प्रकारे तोडमोड दोहीकडे करून मोकळे व्हावे. हे उतम. कदांचित जसे मुखदा
उरते [! मुढदा उठते] तसे मागती पठाण जमावले असले तर तेही निकाल काढणार नाहीत.
तुम्हांस हे प्राप्त होउन जुझावेच लागेल. श्रीकृपेने उतमच होईल परंतु दुसरा प्रत्येक
मनसबा प्राप्त जाहालासे होईल. अद्याप आमचे मते मल्हारबाची मर्जा हाती घेउन
लक्षा प्रकारे सलूख करावा. तुम्ही मातवर सरदार केवळ जिकडे जावे तिकडेच पोठ
भरून राहावे हे युक्त नाही. सर्व या देखनाचा भार तुम्हावर. तुमची दृष्ट जरूर
चहुकोनी असली पाहिजे. विस्तर काये लिहिणे हे आतिर्वाद.

लेखांक [२१]
९७]

! श्री

[अक्टूबर १७५१]

आतिर्वाद उपरी. येथे घराउ प्रकार फार कठिण आहेत. याचा तपसील
लिहिता येत नाही. तुम्ही खामखा मल्हारबाचे इमान व आपला खासा निश्चय हाच

करणे की हजारो प्रकारे मातबरानी छाहानानी लिहिले तर ते सर्व यकीकडे ठेउन येथे आळियावर जो आमचाच मनोदय असेल त्यास शफतपूर्वक अनकूल वर्तवि, या पत्राचा भरवसापूर्वक उतर आळिया आम्हास संतोष आहे. या पत्राचे उतर आळियावर तपसील लिहून पाठव. हे आसिर्वाद.

लेखांक [२२]

श्री

* संवत १८०८ फाल्गुन शुद्ध ९
[१२ फरवरी १७५२]

राजश्री रामाजी अनंत [दामोळकर] गोसावी यांसि.

नमस्कार मूल्हारबाचा बेलभंडार पाठविला तो पावला. बहुत संतोष जाहाला. येथून हजारानि हजारा प्रकारे लिहिले तर ते मनावर न घेता येथे यावे. आम्ही येकांती सागू व्याप्री निखाळसतेने वर्तणुक करावी. हेच [जयाजी] आपास योग्य आहे व तदनरुप करतील ह्या भरवसा आहे तिकडील कामकाज उरकते घेउन लौकर यावे. चैत्रवैशाखात वीसपंचवीस येथे प्रविष्ट जाहाले तरच स्थित राहिल. नाही तर कठिण आहे. बरकड आपास पत्र लिहिले आहे. त्यास देणे. व्याचे विचारे मूल्हारबास गंगोबास दाखवावेसे जाहाले तर दावणे. सविस्तर उतर लिहिणे. छ * ७ रविलाखर.

लेखांक [३]

९६]

श्री

* संवत १८०८ फाल्गुन शुद्ध ९
[१२ फरवरी १७५२]

पुा राजश्री कृयाजी शिंदे गोसावी यांसि.

आसिर्वाद उपरी. मूल्हारबाचा शफतपूर्वक बेलभंडार पाठविला तो पावला. आधीच भरवसा त्यात येणेप्रा पाठविला तेणेकरून संतोष जाहला. जर मागे येणे जाहले असते तर महतर कार्य होते. तथापी ईश्वरश्च्छा प्रमाण. आता ता तह पाचा लाखाची जागीर त्यानी बावी इकडून त्याचे स्थल त्रिन्नक कलह्याचे दिवसात घेतला तो बावा ऐसे ठहरले. चिरजीव दादाजबळ वीसपंचवीस हजार फौज देउन गुजराथेस पोटा भरावयास रवाना केले. गैरहगाम. पोटास नाही. ठाणी बळकट. जितके होईल तितके करतील. ताराबाई हजार मन बे राजकारणे घाटितात. कुरवीर वासीस आणावे ऐसेही म्हणतात. आम्हावरही कृपा दाखवितात. मळमळीत आहे

तुम्ही हर प्रकारे तेथील निकाल काढून मालवे घुबेळखड भुदावरचा बंदोवस्त करून जेष्ठआषाढ मासी जरूर [देशी यावे.] दिल्लीकडे गडग्रह पडली x x x इकडे कोणी तोड या दिवसात करीत नाही. तुम्ही तो येणे. येथे या कट्ट्यामुळे वाहेरील घरातील फौज फार गिलाली. देश लुटला. पोटास नाही. मिलाळे तेही कळतच आहे. याउपर वीसपंचवीस वेपारखाखेर येउन पावले तरच स्थित राहील. नाहीतर राहात नाही. कमाविसदारानी सवगाईचेनिमित्ते पाय पडले आहेत. याचीही चौकसी जरूर करणे. तिकडूनही ऐजज येईसे करणें. घरान वाहेर सर्व भरवसा तुमचा आहे. विस्तार काये लिहिणे. छ * ७ रविलाखर. ब्रह्म क्तय लिहिणे हे आसिर्वाद.

लेखाक [२४]

' श्री * संवत् १८०८ फाल्गुन वद्य १२
[१ मार्च १७५२]

राजश्री रामाजी अनत [दामोळकर] गोसावी यासि.

सेवक सदाशिव चिमणाजी नमस्कार. मुमा इसने खमसेन मया आळफ. राजश्री हरी विठळ^{१३} आठे. त्यानी तुमचा कितेक आर्थ निचेदिला. ऐशियासि गरिवीने सर्व कामाचा लगाम गखून जावत्याप्रो असणे. सरदाने परस्परे पेच न वाढे, खाबदाचे लक्ष ठीक राहे ते कारणे. येदा इकडे मसलेत येक प्रकारची पःली. तुम्ही तिकडे आडकळ. याउपरी तह छोटन आपले मुळकात यावे म्हणजे बंदोवस्त होईल, तिकडे फौज फार पाठवावी तर दिस गेले यामुळे गुजराथेत सारी पाठवावी लागली. ते काम जाल्यावर तिकडूनही येईल इकडे ओढ. दोन साले पैका तिकडून न आला. कमाविसदाराकडे मबळग वकाया. सिवाय स्वारीच्या खंडण्या मातबर न वाढिल्याचा ऐवज आहे. सर्व ठीक करून आखेरसालास पचवीसतीस रुपये येत व जेष्ठआखेर सर्व रसदा आल्याने लवकर फौज तयार होईल. बसईचें सालाहून अधिक बोढ आहे. तिकडून रुपया यावा. न येई तेव्हां बंदोवस्त कसा. शब्द लागतो. याचे पर्याय सरदारास उमजळन येवज येई ते करणे. वरकडही बारीकगोटे विशेष भाव लिहित जाणे. [हरी विठळ] मशारनिजेजवळ ताा सांगितला आहे. सांगतील त्याप्रो करणे. जाणजे छ * २५ राखर. ब्रह्म क्तय लिहिणे.

लेखन
सीमा

(१३) हा विवेहोळकराबरोबर अतबंदीत राहिल्याच्या स्वारीत होता. तो या वेळी देवी आला असून परत उत्तरेकडे निघतो

लेखांक [२५]

† श्री

* संवत् १८०९ चैत्र शुद्ध ३
[७ मार्च १७५२]

राजश्री रामाजी अनंत [दामोळकर] यासी

नमस्कार. तुम्हास व सरदारास आजपावेतो या चठ मन्त्रिनियात दाहा पत्रे पाठविली. येकाचे उतर न आले. वजिराचा हेका तुम्ही धरुन बुडता व आमची आवक मोगल घेत असता तिकडेच मनसबे वाढविता. मग आम्हास श्रगीं कामास याठसे वाटते. आपाचा मोठा मरवसा. ते बहुधा बाह्यात्कारे शिष्टाचार मात्र करितातसे दिसते. जे असेल ते साफ लिहिणे. आशा सोडू. ईश्वर आमचे संरक्षण करणे तमे करील. याउपर सत्वर यावे. पुढे ऐवज पंचवीस पाठवावे. कोणाचाही संशये तिलमात्र न धरावा येणे प्रो जाहाले तर उतम. आपास पत्र लिहिले आहे ते दाखउन उतर यथार्थ शफथपूर्वक पाठवणे. सर्व म्हणतात कि वजिराचे चाकर जाहाला. आम्ही व्यर्थ तुम्हापासून चाकरीची आशा धरितो तथापि या पत्राचे उतर येई तो मरवना धरितो. जर यदा आगोटीस आलेस आज्ञेप्रो मनसबा केला तर उतम. न आलेस तर आम्ही पत्र लिहिणार नाही. जे मनास येईल ते करा. येथे श्रीकृपेने जे होंगे ते होईलच. छ * १ जमादिलावल.

पो छ १२ जमादिलाखर

[१६ अप्रैल १७५२]

लेखांक [२६]

९८]

† श्री

* संवत् १८०९ चैत्र शुद्ध ३
[७ मार्च १७५२]

राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यासी.

आसिर्वाद उपरी बिघाड जाहल्यापूर्वी दोनतीन पत्रे पाठविली. बिघाड जाहल्यावर पाचसांत पत्रे पाठविली परंतु तिकडील मनसब्याची तोडमोड करून आलीकडे आल्याची खबर न आली व पत्र तो येतच नाही. असो. तुमचे मनसब्यास बरे वाटेल ते करिता. आम्हास शिष्टाचारास मात्र लिहिता कि जें आज्ञा होईल त्याप्रा वतणुक करू ऐसे दिसोन आले. याचा तपसील समक्ष येकाती याल तर बोलू. येथील अर्थ अथाप लिहितो जे ईश्वर तुम्हास बुधी देईल ते करा. मोगलाची चितशुध नाही. ताराबवाईची चितशुध नाही. फार फौज मिलाळी. अवरू मात्र सेवटी राहिली परंतु देश अगदी गेला रुपया येक

नाही. पनास लाख कर्ज नवे जाहळे. गुजराथेस चिरजीव दादा गेले. सर्व वसुल खानी नेल. रुपया येक मिळणार नाही. लोकास खानगी नाही. घोडी पडली या वीचारे लोक दारी वसतील. कर्जदाराची दिवाली निघत चाल्ळी. याउपर पंचवीसतीस हजार ऐवज आळा तर उत्तम. नाही तर स्थित राहात नाही. हर तजविजेने काही तोडमोड करून खामखा यावे. येथे कोणाचा वसवस तिळमात्र न धरावा. तुम्ही मल्हारजी [ने] येकच निश्वय धरावा की यकांती सर्व आशय आम्हास पुसावे जे सांगू ते ध्यानात आणून तदनुरूप करावें. ऐसे केलिया तिळमात्र गुता सशय नाही. हे पुरते जाणून खामखा यावे. यदा तुम्ही ज्येष्ठमासी न आलेस तर आम्ही फिरोन पत्र तुम्हास लिहिणार नाही. छ * ? जमादिलाखळ. हे आसिर्वाद.

ढेखांक [२७]

श्री

[मार्च १७५२]

[पहिला बंद गहाळ]

! करणे. रामदासपत मोठा हरामजादा आहे. तो नाना प्रकारे दरवारखर्च व राजकारणे करून धनसबा गाजुदीखान येईनासे करील. ज्ञानेदखान त्याचे जाहळे आहेत यास्तव पुर्ते समजून येकायेकी जरव वसे ऐसे करणे. तुम्ही शाहणे येकनिष्ठ आहात तुमचा भरवसाही पूर्ण आहे. लिहिल्याप्रो करून सत्वर उत्तर पाठवणे की जेणेकरून संतोष होय. हे विनती.

ढेखांक [२८]

! श्रीशंकर

* १८०९ ज्येष्ठ वद्य ७

१०१]

[२४ मे १७५२]

पुा राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यासी

श्री रघुनाथ राजीराव आसिर्वाद उपरी. तिकडील वर्तमान आठापंधरा दिवसा आठ कासिदजेकी खाना करीत जावी ते काहीच ऋहीत नाही. अपूर्व आहे. दिळी कडील व पठाणाकडील काये वर्तमान. तुम्ही कोणत्या मनसब्याचा डौल धरल आहे तो सविस्तर लिहिणे. तिकडील विशेष वर्तमान तर रामदासपतास देवळा जाली. सळाबतजग पंचमहालात बेदराजवळ आहेत. सैद लस्कारखानास बलावणे आले होते ते शहराहून निघोन गेले. साप्रत याजवरच भार आहे. आईसाहेबाची आघाप पुर्ती निखाळसता जाहाली

नाही. दरदारी चार लुचे मिलेन आम्हाविशीचा संदेह घालितात. दादोबा प्रतिनिधी सावनुरच्या भोगलापासून खंडणी घ्यावयास गेले होते. त्याजरून त्याचे मदतीस नारायेणराव व्यंकटेश घोरपडे यास रवाना केले. प्रयोजन की भोगलासही च्यार गोप्टी सागोन दादोबास तोंडघसी पाडावे. येसियासी सावनुरकर भोगल त्याचा वक्षी बाहेर निघोन यास पिटोन घातले. तूर्त दादोबाचा आमचा घोडासा श्रेहही आहे. आम्हीच सावनुरच्या भोगलास सागून व आपली फौज हुतर्फी डौल दाखउन फसी पाडये. हे अघाप दादोबास ठाऊक नाही. वरकड क्रिकोली वर्तमान विशेष नाही. आपलेकडील वर्तमान वरचेवर लिहित जाणे. त्यासारखी आगोघर तर्तुद करून मनसबा करू. कागद आमचे कोणास दाखवीत न जाणे. छ * २० रजव. बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ १८ साबान.
[२० जून १७५२]

लेखांक [२९.]
१०३]

। श्री * संवत १८०९ आषाढ शुद्ध १२
[१२ जुलै १७५२]

राजश्री जयापा सिंदे गोसावी यासी.

आसिर्वाद उपरी. आलीकडे तुमचे वेगळे पत्र येत नाहीं. ऐसे नसावे. तुम्ही गाजुदीखानासह भ्वालेरीस आलेस यास्तव बाहेर आषाढ शुद्ध त्रयोदसीस बाहेर निघालो फौज इकड पाठविली. पातस फार. नबास पाणी फार. याजमुले कांहीं दिवस फौज जमा व्हावयास लागतील. गाजुदीखानानी पैक्याकडे न पाहता फौज ठेवावी हेच उतम आहे. सखवतजंगापासी फिरंगियानीं आव फार धरला आहे. पाहावे कितीक जमतात. तुम्ही आपले कर्तव्याचे वर्तमान लिहिणे. मल्हारबा तुम्ही निखाळस राहून जे आमचा मनोदय तो करावा. या गोष्टीवर सिध असावे. येथील वर्तमान तर ताराबाई कडील ठीक नाहीं. दमाजी गाइकवाड बहुत सुरळीतपणे आहेत. माहादोबास [पुरंदरे] समजाउन आणिले. त्यानी आमचे मनास अनकूल चालावे. दुराग्रह तिलमात्र कोणेविशी न करावा. आम्ही सर्व प्रकारे त्यावर कृपा करून त्याचे स्वरूपप्राप्ता चाकरी घ्यावी गुाही याच प्रकारे करार होउन बरोबर नेले परंतु नीट चालले नाही. यदा विचारावर

आळे आहेतसे दिसते. परिणाम ईश्वर उत्तम लाऊ. वरकड अर्थ श्रीकृपेने मेढ सावरच होईल [तेव्हा] सविस्तर कलेल. सर्वविशी भरवसा तुमचा आहे. विस्तार काये लिहिणे छ * १ : रमजान. हे आसिर्वाद.

पो छ ३० रमजान
[३० जुलै १७५२]

लेखांक [३०]

श्री * संवत १८०९ भाद्रपद शुद्ध १२
[२० सितवर १७५२]

राजश्री जयापा सिदे. गोसावी यांसि.

आसिर्वाद उपरि. सविस्तर चितातील अर्थ अलहिदा पुरवणियावरून कलेल. सविस्तर घ्यानात आणून उतरे आम्हाजवळ प्रविष्ट होत ऐसी पाठवणे. छ * ११ जिल्काद. बद्धत काय लिहिणे हे आसिर्वाद.

लेखांक [३१]
११०]

श्री * संवत १८०९ भाद्रपद वद्य १४
[६ अक्टूबर १७५२]

पुा राजश्री म्हेरजी होळकर व जयाजी सिदे गोसावी यासि

उपरी. राजश्री रामचंद्र जाधवराव यासमागमे सरदार मनसबदार आहेत त्यास नवाबाचे इनायतनामे यावे म्हणोन मारनिजेनी लिहिले आहेत. सरदार

- | | |
|---|--|
| १. मालोजीराव घोरपडे मुबोळकर. | १. रायाजी भोसले. |
| १. मकरंदसिंग नाईक निवाळकर. | १. रामराव जमिदार गदवाल. |
| १. भाळेराम पांडरे व गुरूवक्ष पांडर. | १. आनदराव जमिदार पाा कमरनगर उर्फ कनेळ. |
| १. पाम नाइक बहिरी जमिदार पाा बाग-नगिरा वगैरे. | १. अगाजी सलगर. |
| १. मानया नाईक वाा किलीच नाईक जमिदार देवदुर्ग. | १. गिरजोजी हाके. |
| १. लक्ष्मका जेवजेमकरडी जमिदार पाा कानकुर्ती. | १. राजे अजेचंद खुदारकर. |
| | १. शंकरमा जमिदार पाा अंदोळ. |
| | १. महिपतराव निवाळकर. |

१. भुपालराव निवालकर.

१. कृष्णाजी नाईक निवालकर.

१. यशवंतराव निवालकर.

१७

येणेप्रोवा सरदाररास इनायेतनामे पाठवणे की राजे रामचंद्र जाधवराव यास
इनायेतनामा पाठविला आहे तरी तुम्ही त्याजपासी येहून त्याचे हमराह मुलाजमत करणे
म्हणोन इनायेतनामे नवाबाचे पाठवणे. छ * २७ जिल्काद. † बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [३२]

श्री * संवत १८०९ भाद्रपद वद्य ३०

८९]

[७ अक्टूबर १७५२]

० श्री ०
राजाशाहूनर
पतिवर्षनिधान
वाळाजीबाजी
रावप्रधान

राजश्री मल्हारजी होलकर व जयाजी सिंदे गो यांसि.

अखंडितलक्ष्मीआलङ्कृत राजमान्य श्रो वाळाजी बाजीराव प्रधान आसिर्वाड
उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीय कुशल लिहित जाणे विशेष.

३. रामचंद्र जाधवराव यास नवाबाचे इनायतनामे सादर जाहले होते
त्याचे जाब आले. + + +

१. जानोजीराव निवालकर याची पैली.

१. खानआलम याची पैली.

४.

यकूण चार थल्या पाठविल्या आहेत. प्रविष्ट करून उतरे पाठवावयाची
असली तर पाठवणे. † जाणजे छ * २८ जिल्काद. † बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [३३]
९०]

श्री * संवत १८०९ आश्विन शुद्ध १
[८ अक्टूबर १७५२]

प्रा राजश्री मल्हारजी होलकर जयाजी सिंदे गोसावी यासि.

आसिर्वाद उपरी. [फिरोजजंग] नवाब लौकर आले तर गंगे^{३४} आलीकडे भेट होईल. तूर्त नदीस पाणी आहे अथवा नवाबास तूर्त एकाएकी जबल नेता येत नाही. रुबब येव्हा नवाबाची भेट महकूब करून जल्द तुम्ही आम्ही मिलोन कामास जावे. ते नरम केलियाबर नवाबानी जबल यावे. ते समई सावकाश भेट होईल परंतु भेटीस शुस्त काम नासावे ऐसे नाही. सेद लस्करखान ज्ञानबा कितेक तजविजानी आज पावेतो राहाविले. इतक्यात नवाबाकडील भलामाणूस येउन पावल्यास पुढेही राहातीलसे वाढते] [तथापि] भरवसा नाही. का की सलावतनगाचे कुचाचे गरमीने दुदिल होतात. नवाबानी जप्ती न करावी येतद्विषई लिहिविले. त्यास जप्ती चितात सहसा नव्हती. नालबंदीस तोय तूर्त दाहाचा आला. तुम्हीही ऐवज न पाठविला यास्तव जरूर पोटाचे संकटासाठी रसदा घेतल्या. सर्वापुढे इलाज आहे पोटापुढे कर्जापुढे इलाज नाही. तो विस्तार पत्री काये लेहावा. भेटीनतर समक्ष एक वेळ फार वार्डट तुम्हासी बोलू. यात सशय नाही. हणमंतराव निवालकरास लौकर एखादा मान्य पुरूष पाठउन भेटीस न्यावे आम्हासी बोलले ते इमान केलं ते खरे [की] लटकें हे परिक्षा जल्द पहावी. सारांश तुमचे भेटीसाठी व पुढील तोडजोडीसाठी इतके दिवस मुकाम केला. थालपर जल्द येणे. सहसा विळव न करणे. छ * २९ जिल्काद बडूत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [३४]

श्री आईआदिपुरूष * संवत १८०७ आश्विन शुद्ध १३
[२१ अक्टूबर १७५२]

राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यासि

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य स्तोत्रा जगजीवन परशराम प्रतिनिधी
आसिर्वाद उपरि. येथील कुशाल जाणउन. स्वकीयें कुशाल लिहीत जाणे विशेष. तुमचे

(१४) गंगा हाणजे गोदावरी नदी होय

जाणें त्या प्राते जाहलियातागायेत पत्र येउन वर्तमान काही लिहिले नाही. पत्राचा अभाव जाहाळा यावरून अपूर्व दिसो आले. आम्हास नाश्वरे^{१५} यांत ठेउन गेला. उपरांतिक इकडील वर्तमान जाहलें हे तुम्हास कळलेच आहे. तुम्हास जाउन बहुत दिवस जाहलें. आगमनाची प्रतिक्षा बहुत होती. त्यास ईश्वरइच्छेकरून परमुलकातून आगमन होउन समीप येणे जाहले तरी पत्र पाठवावयासी अनकूल न होय. तेव्हा हे गोष्टी ममतेच्या ठाई दूर असें. याउपरी पत्र पाठउन आपणाकडील सविस्तर अर्थ लेखन करून स्नेहाची वृधी होय ते गोष्टी कीजे. बरकड इकडील कितेक वृत कळावें लागतें येदनिमित्त मागाहून कारून आपणाकडें पाठविला जाईल. पोहोचलियावरी साधंत वृत कळेल. छ * १३ जिल्हेज १ बहुत काय लिहिणें हे अशिर्वाद.

लेखांक [३१]

श्री भवानीसज * संवत १८०९ आश्विन शुद्ध १३
[२१ अबदुवर १७५२]

राजश्री जयाजी आपा सिंदे गोसावी यांसि

अवंडितलक्ष्मीअलंकृत राजमान्य स्तो यमाजी सिवदेउ आशिर्वाद विनंती उपर. येथील कुशल जाणउन स्वकीये कुशल लेखन केले पाहिजे विशेष. x x x गेलियातागायेत पत्र पाठउन x x x परामृश न केला यावरून अपूर्व दिसोन आले. पत्राचा अभाव कायें निमित्त जाहल्य हे न कळें. आपण आम्हास श्रीमतासनिध ठेउन गेले उपरांतिक वर्तमान जाहलें तें परस्पर आपणास कळलेच आहे आपणास त्या प्राते जाउन बहुत दिवस जाहले. आगमनाची प्रतिक्षा क्रीत होतें. ईश्वरइच्छेकरून तेच गोष्टी घडोंन आली गाजदीखान यासी समागमे घेउन औरंगाबादेसमीप येणें जाहलियाचे वर्तमान ऐकोन परन अल्हाद जाहाळा परंतु समीप येणे जाहलियावरही पत्र पाठउन परामृष न जाहाळा. हे ममतेच्या ठाई दूर असें. आस आपली आमची ममता येसी नाही की विस्मरण कदापि व्हावें. येविसीचा विचार पत्री काये लिहावा. हुदगत परस्पर मनोमन साक्ष असें. आपणाकडील सविस्तर

(१५) शाहू छत्रपतीच्या निघनानतर १७५० च्या बारमी यमाजी सिवदेव याजवर जयाजी सिंधास पाठविले होते असे कळते. [पेद २ ले १९, २२] पण या स्वारीचा शेवट कसा झाला हे समजण्यास अद्याप साधने उपलब्ध नाहीत यमाजीपतास व प्रतिनिधीस नाश्वर्यास सिंदे ठेऊन गेले पण पेशव्यानी करार पाळला नाही एवढेंच हे पत्र सांगते

वर्तमान लिहून पाठविलें पाहिजे. इकडील कितेक वृत कळावे लागतें येदंनिमित्त मागाहून कारकून आपणाकडे पाठविला जाईल. येउन पोहोचल्यावर साध्यत वृत कळेल, छ * १३ [जिल्हेज. कृपा लोम] † असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३६]

श्री * संवत १८०९, पौष वद्य १२

[३१ जनवरी १७५३]

सिका

[नकल]

राजेश्री जयाजी विन राणोजी सिंदे गोसावी यांसि.

अखंडितलक्ष्मीअलंकृत राजमान्य स्नोा वालाजी बाजीराव प्रधान असिर्वाद. सुमा सलास खमसेन मया व अलफ. तुम्ही हजूर येउन विनंती केली की आपण पुरातन राज्यातील सेवक श्रमसाहास करू येकनिस्टेने सेवा केली याजकरिता स्वामीनी कृपाळू होउन नुतन ईनाम गाव करून दिव्हे पाहिजे म्हणोन त्याजवरून तुम्ही पुरातन राज्यातील सेवक श्रमसाहास बहुत प्रकारे करून येकनिस्टपणे सेवा केली हे जाणोन तुम्हावर कृपाळू ह उन तुम्हास ईनाम गाव वितपसील सुमे खुजस्ते बुनियाद येथील.

१२. मोगळाई अमलाचे सुदामत अमल चालत आला आहे त्याप्रो.

४. प्रगाणे चाभारगोदे सरकार अमदानगर.

- १. कसबे चाभारगोदे येथील पेटा.
- १. मोजे वाळू (ज)
- १. मोजे पारगाव.
- १. मोजे देउळगाव.

४

५. प्रगाणे राजणगाव सरकार जुनर

- १. मोजे लिपणगाव.
- १. मोजे लो [क] णेर टाकली.

१. मोजे हिणे

१. मोजे बेळवडी.

१. मोजे कास्टी ताा राजणगाव.

५

१. मोजे वाळज असली व ईसापुर दाखली येा गाव १ येक प्राा नगर हवेली.

१. मोजे कडनीगाव प्रो सेवगाव सरकार अमदानगर.

१. मोजे विडकिनगाव प्रो पैटण सरकार दौळताबाद.

१२

२. प्रो नेवासे सरकार अमदानगर येथील
गाव दोन

येथील बाबती सरदेशमुखी.

१. मोजे हेडगाव.

१. मोजे रघोळी.

२

१४

येकुण चौदा गावपेकी बारा गाव मोगलाई अमलाचे सुदामत मोगलाई आमला चालत आला आहे त्याप्रमाणे व दोन गाव बाबती व सरदेशमुखीचे येणेप्रमाणे ईनाम करून दिल्हा असे. तरी तुम्ही व तुमचे पुत्रपौत्रादिवंशपरंपरेने ईनाम अनभउन सुखरूप राहाणे. जाणजे छ * २५ रत्रिलावळ अन्ना प्रमाण. मोर्तव.

लेखांक [२७]
११५]

श्री

* संवत १८०९ माघ शुद्ध ३
[६ फरवरी १७५३]

राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यासी

आसिर्वाद उपरी. कितेक बोलणे आहे त्यास तुम्ही भोजन करून लौकर येणे रा छ * २ रत्रिलखर. राजश्री रामाजी अनंत [दाभोलकर] यासी आधीं पुढें पाठउन देणे. मागाहून तुम्ही बहुत लौकरीच येणे. जाणजे छ मार.

लेखन
सीमा

लेखांक [३८]

श्री

[१४ जून १७५३]

पुा राजश्री त्रिंबकराव विश्वनाथ [पेठे] स्वामी गोसावी यासी

विनंती उपरी. हेदरजगासी विरुध अम्हीं हूनये खाईखास मुदाये नाही यास्तव तिलमात्र दाखवोत नाही. ते हून करतील तर इलाज नाही. लक्षा प्रकारे ते हून करणार नाहीत. सर्व संशये वेशाखअखेर जाहला नाही तो कलेळ. तुम्हास पूर्ण आरोग्यता जाहाली न जाहाली ते लिहिणे. रामाजीपंतानी तूर्त राजकारण महकूप केले किंवा अद्याप त्याच कर्तव्यतेत आहेत हे लिहिणे. सातारियाकडीळ तुकोजी सिंदे [?] याची पत्रे पाठविली त्यावरून सर्व कलेळ.

साधारण पक्ष त्यानी आपले नवे लोकास सर्व फोज गाडदीसुधा ताकीद करून निरोप द्यावा. शफतपूर्वक बाबजी जाधवानी चालून मुमेरगिरचे मठापवेतो जावे. भाहर कारार करावा की मुलकात उपसर्ग न करावा. दरीयातील वेढा येतो त्याचे उतरतिरी

स्वर्णा आपले लोकास निरोप धावा. आम्हीं तुकोजी सिंदे गोविंदगव मात्र सर्व फोज सातआठसे रखवालीस मुलकाचे पूर्ववत ठेवावी. आज तीनचार वर्षे चालते तसे चालवे परंतु धावजी जाभव गरूर पेका खावयास आहे याजमुळे नरम येउन नीट चालणार नाही यास्तव दुसरा प्रकार कठिण. [पण] होईल तर करावा.

अर्हीं पुण्यास दाखल होउ तोपावेतो रेणेचे तिगी राहावे. तिलमात्र रजवदल करुन शहरा वाणी जिनस जाउ देउ नये. रात्रदिवस भोवते फिरावे. आम्हीं पुण्यास आल्यावर मुजफरखानाम^{१६} पाठउन. त्याने येथे कवूल केले आहे की शहरास तिलमात्र रुपसर्ग न लाविता नीट रस्त्याने चालून जाउन धावजीस धरुन आणितो. हा प्रकारही आमचे लसकरचे लोकात प्रगट होउन दहशत पड ते करावे.

शेपापंत आले आहे. त्याचे आमचे वनतच आहे. करवीरवासीच हे तिनी प्रकार तुकोजी सिंदे यास तुम्हीं लिहिणे अथवा हे पत्रच पाठवणें. त्याच्याने यात्न होईसा असेल तो करतील. आमचे जाण वरुयास या मजकुरामुळे होणे नाही यानी कार्ही वोल्हन पोकल दिसू नये. सिपाईगिरीचे दत्रावाने असावे. छ * [२ हे विंनंती-

पो छ १७ साबान.

[१९ जून १७५३]

(१६) मुजफरखा गाडदी कुकडी नदीची लढाई झाल्यानंतर पेशवाईत आला असे राजवाडे ह्याणतात [खड १ ले १६ टीप ७२] भालकीच्या लढाईनंतर तो आला असावा असे पेशवेदपतर बोलते. [पेव २१ ले ४९] त्या अनुरोधाने ही मिती पत्राची दिली आहे

लेखांक [३९]

श्री * संवत १८१० आषाढ शुद्ध १३
[१३ जुलै १७५३]
सिका [नकल]

राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यांसि.

अखंडितलक्ष्मीअलंकृत राजमान्य स्नो वाळाजी बाजीराव प्रधान असिर्वाद.
ह्या आर्वा खमसेन मया व अल्फ तुम्ही हुजूर कसवे पुण्याचे मुकामी येउन विनंती
केली की आपण राज्यातील पुरातन सेवक श्रमसाहास बहुत प्रकारे करून येकनिस्टेने
सेवा करीत आलो आहे तरी स्वामीनी कृपाळू होउन नूतन गांव मोकासे ईनाम
देह वितपसील.

१ मोजे बालुज व दाखली त्रिसापूर पा पाडिये पेडगांव.

१. मजरे सोनवडीवाडी मोजे अरणगांव पा नगर हवेली.

२

येकुण दोन गाव करार करून दिले पाडियेत त्याजवरून मनास आणिता
तुम्ही राज्यातील पुरातन सेवरु येकनिस्टेने सेवा करीत आलेत हे जाणून तुम्हावर
कृपाळू होउन हरदु गाव पो मोजे बालुज दाखली त्रिसापूर व मजरे सोनवडीवाडी
मोजे अणगाव मोकासा ईनाम नूतन साल मजकुरापासून करार करून दिलहा असे.
तरी हरदु गावचा मोकासियाचा अंनल आपठे दुमात्र करून घेउन तुम्ही व तुमचे
पुत्रपोत्रादिवशपरंपरेने ईनाम अनभउन सुखरूप राहाणे. जाणिले छ * ११ रमजान
बहुत काय लिहिणे. मोर्तव.

लेखांक [४०]

श्री * संवत १८१० कार्तिक वद्य १४
[२३ नवंबर १७५३]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत [दाभोलकर] गोसावी यांसि.

सेवक वाळाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार. सुहूरसन आर्वा खमसेन मया
व अल्फ. तपोनिधि गंगागिर मोसागोदु महंत हे का उजनीमध्ये राहानात. हुजूर
पुण्यांस आले होते. बहुत थोर आहेत. यांचे चालवणे अगत्य जाणून राजश्री जयाजी
सिंदे यांचे नावे सनद याचे चालवण्याविशी दिल्ली आहे. तरि तुम्ही मारनिलेस

सांगून सनदेप्रमाणे याचे चाले ते करणें. यास तेथे मठ पका बांधोन देणे. अतीत वैरागी यांचा कोण्हेविशीं उपसर्ग न लागतां सुखरूप राहात ते करणें. हरयेकविंशी सुग्हीं यांचा परामर्ष करित जाणें. † जाणिले छ * १७ मोहरम. † बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [४१]

श्री * संवत १८११ वैशाख शुद्ध १५
[६ मे १७५४]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री
रामाजी अनंत [दामोळकर] गोसावी यांस.

सेवक दालाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार. सुगा आर्वा खमसेन मया व अल्फ तुग्ही पत्र पाठविले ते प्रविष्ट जाहाले. लिहिला मजकूर कळला. इकडील वर्तमान चिरंजीव राजश्री दादास लिहिले आहे ते सांगतील त्याजवरून कळल. † हरयेक मनसबा आपा चिरंजिवाचे मर्जांनरुप^{१७} करितात ऐसे चिरंजीवांनी लिहिले त्यावरून संतोष जाला. पुढेही कामें नीट होय तेच करावे. करतील आपा ऐसा भरवसा आहे. चंद्र * १२ रजब. वहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ ११ रमजान.
[३ जुलै १७५४]

लेखांक [४२]

† श्रीशंकर * संवत १८११ आषाढ शुद्ध २
[२२ जून १७५४]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री
रामाजी अनंत गोसावी यांसि.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कार उपरि. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहिणे विशेष. राजश्री जयाजी सिंदे यास पत्र पाठविले आहे त्याजवरून सविस्तर

(१७) दादासाहेब उत्तरेकडे आले त्या वेळी जयाजी सिंदे बरोबर नव्हते मागाहून ते आले. त्याचे घोरण दादासाहेबास स्वैल की काय याची त्यांना शकान होती [पेद २ ले ३४ पेद २७ ले. ८२. खड ६ ले २९२] तस्मात् कुमेरीवर जाटाची भानगड उपस्थित झालीच त्या वेळी दादासाहेबांनी शिवाचा पाठिवा केला त्याला अनुलक्षण हे पत्र होय.

कलेल. सारांश रुपरामाचा हात मल्हारबाचे हातामध्ये दिव्हा परंतु अद्यापि आग्न्यात व कांलेत ठाणी बसली नाहीत याजमुळे रुपरामाने रुपया वसूल दिव्हा नाही, आग्न्यात रामाजी सखदेव आमचे आईकत नाही याजमुळे त्यास धरून आणावयास आमची फौज पांचसातसे व जाटाची हजार दोन हजार देवविली आहे. तो आणिल्ल म्हणजे येईलसे दिसते. रोज येक कारभारास दिकत पडते. गांवातीळ रुपया तरी आणीक आठ दिवसा तिनेक वसूल येतील. श्रावणी पुर्णिमेपावेतो पाचेक वसूल होतीलसे दिसते. नवे कांहीं खुसपट केले तरी कांहीं आले तरी येईल. असो. जे होईल ते करीतच आहों. सारांश तुम्ही आठ दिवसा आड सविस्तर आपलेकडील वर्तमान लिहित जाणे. माथासिंगाचा भाव काये आहे ते लिहिणे. कृणाराम गेला आहे त्याचा काय मजकूर. काय बोलतो ते लिहिणे. हरगोविंदाची काय अवस्था [केली] ते लिहिणे. मारावाडचे कोणकोण रजपूत फुटले व कोणकोण फुटणार. कांहीं रामसिंगाकडे होत चालले किंवा नाही ते लिहिणे. मोहनलाल येथे वकील माथवासिंगाचा आहे. त्यास आम्ही तुम्हांबराबर फौज धावयाविसी ताकीद केळी आहे. काहीं देईलसे दिसते. वरचेवरी वर्तमान लिहित जाणे. जाणजे छ * ३० रमजान. बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [४३]

श्री * संवत १८११ श्रावण शुद्ध ११

[२९ जुलै १७५४]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यांसी.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कार. सुा खमस खमसेन मया व आलफ. तुम्ही विनतीपत्र पाठविलें प्रविष्ट जाले. लिहिले वर्तमान सविस्तर कलेले. याज उपरी जाले वर्तमान निरंतर पत्री लिहित जाणें. जाणजे. छ * ९ शौवाल. बहुत काय लिहिणे येथून सविस्तर मजकूर आपास लिहिला आहे त्याजरून कलेले. बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ २५ सवाल.

[१५ अगस्ट १७५४]

लेखांक [४४]

श्री * संवत १८११ श्रावण वद्य ६
[९ अगस्ट १७५४]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यांसि.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कार. सुद्धरसन खमस खमसेन मया व अलफ. तुमचे पत्र येउन वर्तमान कळत नाही. तरि सविस्तर लिहिणे. वरकड वर्तमान राजश्री जयाजी सिंदे यांसि लिहिलें आहे त्याजरून कळेल. † जाणजे. छ * १९ सवाल † बहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [४५]

१२३]

श्री * संवत १८११ भाद्रपद शुद्ध १
[१९ अगस्ट १७५४]

राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यांसि.

० श्री ७
राजाजी हुन्ना
पतिवर्षनिवाण
वाळवाजीमाजी
रावप्रधान

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य भोऱा रघुनाथ बाजीराव आसिर्वाद उपरी. येथील कुशल जाणोन त्वकीये लिहिजे विशेष सूरजमल जाट याजकडील मामल्याचा रुपया पहिले हफितयाचा येणे त्याजपैकी रूपराम कटारा याणे येथे कांहीं वसूल दिल्हा. बाकी बहुत राहिली आहे. त्याचा तकादा करितों. त्यास जयापाकडे कांहीं रुपया आपण वसूल दिल्हा आहे येसे रूपराप [कटारा] सागतों. त्यास तुम्हीं जाटाचे मामळती पैकी रुपया काये वसूल घेतला आहे हें लिहून पाठविणे. जाणजे. छ * २९ गौवाल † बहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [४६]

श्री * संवत १८११ भाद्रपद शुद्ध २
[२० अगस्ट १७५४]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यांस.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कार. म्हा खमस खमसेन मया व अलफ. तुम्हीं

पत्र पाठविले प्रविष्ट जालें. कृष्णागड^{१८} फते केला. ठाणें वसविलें. जागांजागा जप्ती
अमल ठेउन रुकियाचे वृत्त लिहिले ते कळलें. आशास कृष्णागडीहून पुढें कोठे गेलेत,
हली कोठे आहां. पुढें कर्तव्यार्थ काये योजिला आहे. बिजेसिंगाचा इरादा कैसा आहे
हे तपसीले वरिचेवरी लिहित जाणें. येथील वृत्त विस्तारें राजश्री जयापास लिहिले
आहे त्याजरून कलेल. जाणिजे. † छ * † जिल्काज.

लेखन
सीमा

लेखांक [१७]
१२४]

श्री * संवत १८११ भाद्रपद शुद्ध २
[२० अगस्ट १७५४]

राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यांसि.

उपरी. तुम्हीं पत्रें कृष्णागड फते करून पाठविलें तें पावोन मविस्तर अर्थ
कळला. त्याजउपरी तुम्हीं कोठे गेलां काये करितां. बिजेसिंगापासीं जमियेत काये
आहे. पुढें जुंजावयाचा प्रकार कैसा. सफेजंगी बाहेर निघोन करणार किंवा भेडल्यात
राहोन जुंजणार हा अर्थ तपसीले लिहिणें. † जाणिजे. छ * † जिल्काद † बहुत
काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [१८]

श्री * संवत १८११ भाद्रपद शुद्ध ७
[२४ अगस्ट १७५४]

अखंडितलक्ष्मीआळंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यांसी.

सेवक. रघुनाथ बाजीराव नमस्कार. सुा खमस खमसेन मया व अलफ
पेशजीची मामलत उदेपुरची राजश्री गोविंद कृष्ण^{१९} यांजकडे आहे. त्यास याचा

(१८) वखरकार या कृष्णागडच्या लढाईचे वर्णन देत नाही. त्याचप्रमाणे मारवाडच्या स्वारीत
ज्या अनेक लढाया झाल्या त्याचा इत्यभूत वृत्तांतही तो देत नाही. मेडता व नागौर या दोन मुख्य
लढायांचाच केवळ उल्लेख करितो असे आता स्पष्ट दिसते

(१९) याचे आडनाव क्षीरसागर असे आहे हे घराणे हल्ली सादवी मेवाड येथे असून
तेथे आज्ञा आम्ही तपास केला पण त्याच्या वंशजाजवळ कोणी जुने कागदपत्र असल्याचे
आढळले नाही

गुमास्ता रामाजी गोपाल तेथे आहे त्यास तेथे रावहात नाही. दुसऱ्या रुपयाचे मामलतीचा वसूल होणे त्याजपेकी येक रुपया दिल्या नाही. बकिलीचे काम याचे हातोन घेत नाही. हवेली याजकडे आहे त्यात रावहात नाही. कुरण आहे त्यास उपद्रव करितात त्याजकडे चाळो देत नाही म्हणून विदित जाले. त्यास मारविले पदरिचे याचे सर्व प्रकारे अवशक याजकरिता येन्नीसीची ताकीद छदेपुरकरास व विष्णु महादेव [गदरे] यासी करून पूर्ववतप्रमाणें सुदामत याजकडे चाले बकिलीचे कामकाज याचे हातें घेत दुसऱ्या रुपये रोजिन्यासुधा याचे वसुलांत येत हवेलीत याचे निस्वतीचे रावत कारकून याजकडे चाळत आल्याप्रमाणे चालें उपद्रव कोणी न लावीत येसे करणें. वारंवार याचा बोभाट नये ते करणे. जाणजे छ * ५ जिल्हाद. १ बहुत काय लिहिणे

लेखन
धीमा

लेखांक [५९]
१२५]

१ श्री * संवत १८११ भाद्रपद वद्य २
[३ सितवर १७५४]

पुा राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यासि.

आसिर्वाद उपरी. चिरंजीव राजश्री दादाजबख्त तुम्ही निरोप घेउन मारवाड प्रांती गेला या वर्तमानाची पत्रे मात्र तुमची आली. त्या अलीकडे पुढे कोठ पावेतो गेला. तिकडील सेढतेवाले वगैरे रजपूत येउन तुम्हास सामिल किती जाहले. विजेसिंगाजबख्त राज तोरखाना किती जमा जाहाला. वरकड राजे रजपूत बहुत व चागले कोणीकडे शामिल जाहले व होणार. फौज दोहीकडील किती आहे. दाणा वैरण कसी मिळते. पर्जन्य कसा आहे. त्या प्रांतात फौजेस मजलीने पाणी मिळत नाही. सांग्रत पर्जन्यबुष्टीकरून तो बोढे तली जाहली असतील. हा सर्व विस्तारे अर्थ निरंतर लिहित जाणे. मोठा मंनसना. मारवाडी रजपूत अद्याप गर्विष्ठ. इकडील फौजाच्या गाठी सावकाश पडून संग्रामी भ्रमप्रस्त न जाहले. त्यासी संग्रम एकाएकी तुम्हावर प्राप्त जाहलां आहे. त्यास तजविजेने दमउन युक्तीने समय पाहुन जरब देउन कार्यसिधी करावी. श्रीकृपेने सरदारी व सिपायेगिरी व दाव उपाये जाणने

(२०) याचे उपनाव 'गदरे' असे दिले आहे या वेळी तो नामांकित सावकारात मोडत असे हा पुढें मेवाडच्या बकिलीवरही होता

सर्व गुण तुम्हास आहे. तदनुसरुप साध असाध विचार करून कार्ये करणे. जर जोधपुर निम्ने^{२१} राज्य घावेसे विचारे जाहलिया उतम आहे. दाटून अगदी घ्यावयासाठी कलहवृष्टी न करावी. हा थोराचा संप्रदाय आहे. [ज]र युध्यावाचून साम न होयेसेच असलिया सावधतेने आपले रीतीने ख्यास आथास आणून नम्र करून कार्ये संरादावे. सत्वर कार्येसिधीचे वर्तमानाचे पत्र पाठवणे व विलंबावर पडले तरी निरंतर सविस्तर अर्थ लिहित जाणे. राा छ १ - १५ जिल्हाद. बहुत काये लिहिणे हे आसिर्वाद

लक्षण
सीमा

(२१) हे पत्र अत्यंत महत्त्वाचे आहे. अहदनाम्याप्रमाणे आगरा व अजमेर हे दोन सुभे मराठ्याकडे आले तेथील बंदोबस्त ज्या तत्वावर करावयाचा ते यात स्पष्ट दिले आहे 'अजमेरचा सुभा मोठा तो बजोर समबेर शिंदे यानी सर केला आहे पहाता गनी माळव्याहून थोर परतु या सुभ्यात तिचे जमीदार राणा, राठोड व कच्छवाये. याशिवाय कोटा व बूदी वरकड लहान जमीदार आहेत' असे गोविंद तमाजी गलगलेकर वर्णन देतो [पेद २७ ले १०७, १०८] निम्ने राज्य सतोपाने तर कधीच येणे शक्य नव्हते अर्थात् शिंदे व राठोड यात परस्पर लढाई जुपली कृष्णगड व भेडता येथे दोन 'तुवल युध्य निसीम जाली ऐसे मराठे कजी कोणी हा कालवरी केले नाही ते करून यथा सपादिले' तथापि राठोड निम्ने राज्य देण्यास सिद्ध नव्हता अर्थात स्वारी लावतच चालली याच सुमारास मनसूरअलीखा सफदरजंग वारला तिकडे मोर्चा फिरविला असता विशेष फलप्राप्ती होईल असे समजून समेट करण्याविषयी शिंद्यास पेशव्याची व दादासाहेबाची पत्रे येऊं लागली शिंद्याशी सरळ सची करण्यापेक्षा दादासाहेब व होळकर यांच्या मध्यस्थीची अपेक्षा राठोडास विशेष वाटली त्याचे वकील दादासाहेबाकडे व होळकराकडे फिरू लागले तेव्हा उभयतानी मध्यस्थी करावी असा घाट घातला पण लढाईची जोखीम स्वतः सोसून यथाचे वाटेकरी होण्यास होळकर मध्यस्थी करू पाहातात ती शिंद्यास मात्र मान्य नव्हती शिंदेहोळकराची चित्तगुदता क्षाल्याशिवाय ही गोष्ट केवळ अशक्य होती निदान ती तशी परस्पर करून देणे दादासाहेबाच्या स्वाधीन नव्हते कारण की 'येथील अविवेकीच कारभार आहे' अशी ख्याती तेव्हा छाप वसावयाची कशी. मारवाडसवची शिंद्याच्या घोरणाआड न येता दुसरीकडे तळ हलवावा असे पेशव्याचे पत्र आले तेव्हा दादासाहेब व होळकर पुष्कराद्वतके समीप येऊन स्वान सपाहूनच दुसरीकडे फिरले ही मोहीम पुढे एक वर्षपर्यंत चालली त्याचा दोष शिंद्याकडे मुळीच नाही जयपची शिंद्यास दगा झाला तरी दत्ताजी शिंद्याने हिमत घरून राठोडास अगदी जेरीस आणले तेव्हाच राठोडानी निम्ने राज्य देण्याचे मान्य करून घेतले [पेद २१ ले ८२, ८३] या स्वारीत राठोडाचा इतका रंग उतरला होता की यामुळे ते कधी मराठ्यांच्या विरुद्ध उठू शकले नाहीत किंवा त्यांच्या प्रतिस्पर्ध्यांस उचड रीतीने मिळाले नाहीत ही गोष्ट लक्षांत घेण्यासारखी आहे

लेखांक [५०]
१२६]

श्री

* संवत् १८११ भाद्रपद वद्य २
[३ सित्तबर १७५४]



राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यांसि.

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य श्या बाळाजी बाजीराव प्रधान आसिर्वाद उपरी. येथील कुशल ज.गून स्वकीये लिहिणे विशेष. सांग्रत पंधरा दिवस पत्र घेउन वर्तमान कळत नाही. एसे [नसावें.] निरंतर सविस्तर कुशलार्थ लिहित जाणे. येथील अर्थ तरी फौजेची तयारी होत आहे. विजया दशमीनंतर स्वारीसाठी बाहेर निघणे होईल. जिऱडे कार्य विशेष दिसेल तिकडे श्रीकृपेनें जाणे होईल जाणिजे छ * १५ जिल्काद. बहुत काये लिऱिणे.



पोा छ २५ जिल्हेज.

[१३ अक्टूबर १७५४]

लेखांक [५१]
१२७]

श्री

* संवत् १८११ भाद्रपद वद्य २
[३ सित्तबर १७५४]

ग्या राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यांसि

आसिर्वाद उपरी. ग्या तुम्ही निरोप घेउन गेला. तेव्हां कर्ज बारावयाचा निश्चये होता. तुम्ही येवज दिव्हां तो कर्जदारास दिव्हा परतु बाकी कर्ज बहुत होने. जाटाचा मनसबा भारी पडून सेवटी पैका न मिळाला. दिल्लीत मातबर येवज मिशवा गेसे असता धराउ पेचापाचामुले तेही नीट न जाहाळे. मनात होते की हिदुस्तानातून एकदाच चाचीस पनास लक्ष रुपये यावे. येताच कर्ज बारावे परंतु तो अर्थ न घडला. तुम्हीही अगिकृत प्रतज्ञात पक्षासाठी चिरंजिवाजवळून गेला. याउपर सत्वर मातबर येवज कर्जबाबरेसा व्हुवा सत्वर तुमचे महतकार्यसिधी जाहलियावाचून येणार नाहीसे [दिसतें.] पुणेवाचून रसदाचे येवजपेकी निमे कर्जदारास बाबावप्रास व मुळ्ही सरदार माहाळकरी आपन सेवक लाहान मोठे याजवर पंचवीसा लक्षाची बेरीज करून सर्वांस सांगितले. सर्वांनी उछाहे खावदस

अवश्यक कार्य व हे दौलत कर्जरोगाने निरतर प्रस्त येवढा क्षयरोगासमान कर्जरोग दूर जाहलिया अनि उतमसेच सर्वांनी मानून जे ज्यास बेरीज सांगितली ते सर्वांनी कवूल केली दिहुस्तानात जे मातबर आहेत त्याची याद^{२२} बेरीज चिरंजिवास लिहून पाठविली आहे. जे सेवक स्वामीचे हिताने आपले हितसे मानीत असतील ते तो संतोषे कवूल करून येवज कर्जदागचे वरातेप्रा प्रवेष्ट करतील. एकदोन कोणी [होल्कर] या कार्यावर मन न घालीत तर त्याचा काये मजकूर आहे. बहुतांनी अत्रलंत्रिले स्वामीकार्ये सहजात सिधीस जाउन न करी तोच मात्र दोषस्थान होईल. तुम्ही कर्ज वारावयास रुपये दिले. सर्वांचे आगोघर यास्तव हली काही तुम्हावर बेरीज चिरंजिवास लिहून पाठविली नाही. तूर्त हेच इच्छा आहे की तुम्ही सत्वर यश सपादावे तुम्हास यश ये समई आलि [या] त्यात सर्व दौलतेस यश. जेथे यश तेथे द्रव्यास काये वाण. सविस्तर अर्थ तुम्हास कळवा यास्तव लिहिला असे. येतवर्षी जे काही उपयोगी दिसेल ते करावे. विस्तार काये लिहिणे. छ * १५ जिल्काद. हे आसिर्वाद.

लेखन
सीमा

लेखांक [५२]
१२८]

श्री * संवत १८११ भाद्रपद वद्य ३
[४ सितवर १७५४]

पुा राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यांसि

उपरी. कासिद तीन जोडी पत्रे देउन तुम्हाकडे पाठविले असेत. तंत्री तुम्ही तिकडील मनसुबियाचा अर्थ आठा रोजाच्या अतरे येकयेक जोडी कासिद सरकारच्या व आपल्या पाठवीत जाणे. १ जाणजे छ * १६ जिल्काद

लेखन
सीमा

(२२) हा कर्जरोग कमीच गेला नाही कमी न होता नेहमी वाढतच गेला विनफेडी कर्जाची ही प्रथा जी निघाली ती पुढें प्राय दुणावतच गेली अस्तु या वेळी जी फाळणी झाली तीस होळकराची समती नव्हतीच पण पेशव्याचे फडणीस जनार्दनपत भानु व त्याचा हस्तक गणेश कृष्ण पेंडसे यांचें मत काय होते तें स्पष्ट आहे ही कर्जपटी केवळ मराठ्यावरच नव्हे पण त्यांच्या माडलिकावर ही बसली तिचा सवध अवदालीशी मुळीच नसता पेशवेदपतराच्या सर्पावकारें तसा सर्धर्म दाखविला आहे तो निराधार असून शुद्ध काल्पनिक होय ह्याणून तंत्रीबही चुकली आहे. [पेद २ ले ७५].

लेखक [५३]
१२०.]

श्री * संवत् १८११ भाद्रपद वद्य ९
[५ गिरा १२५६]



राजश्री नयाजी, भिडे गोसावी यासि

सर्वज्ञानप्रदीपानाम् राजगणेश शक्ति मन्त्रमित्र चिन्तनाजी अतिवैदिक उपरी.
येवीत कु. न. नागेश्वर मन्त्रमित्रे सु. १००० वि. १००० पत्र मंत्रन आपणारुद्ध [न] येउन
मंत्रमित्रे राजगणेश शक्ति मन्त्रमित्रे परी कु. १००० लेखन करीत जति. अस्तु अर्थ
होवयाचे पत्रमित्रे सविस्तर अर्थाने होवें. जाणजे छ * १७ जिल्हाद. ' बहुत
काय लिहिणे.



लेखक [५४]

श्री * संवत् १८११ आश्विन शुद्ध ७
[१० गिरा १३५६]

सर्वज्ञानप्रदीपानाम् राजगणेश शक्ति मन्त्रमित्रे राजश्री
राजगणेश अन्त गोसावी यांसी.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कार तुम्हा गणेश खमसेन गया व अल्फ. तुम्ही
निजेनिहाम मोहिने. येम मंपादिले. हे वृत्त काशीच जिनिने नाही. या दिवसात येसे
नसावे. जसमी कोण जाया कोण जाले हे सविस्तर तपसांन्वार व पुढे मनसव्याचा डौल
काय योजिल्ले हे सविस्तर लिहिणे. जाणजे छ * ५ जिल्हेज. ' सविस्तर आपास
लिहिले आठ त्यावरून कल्पनच आसेल. पुढे कसकसा मनसुवा योजिला ते लिहिणे. पत्रे
अठारह दिवसा एमेन पाठवीत जाणे. छ मजकूर. बहुत काय लिहिणे.



लेखांक [५५]

श्री * संवत् १८११ आश्विन शुद्ध १२
[२७ सितंबर १७५४]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यासी.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कार. सुहूरसन खमस खमसेन मया व अलफ. बिजेसिंग बारापंधरा हजार फोजेनसी चालोन आला. तुम्ही त्याजवरी चालोन जाउन नीट घोडे घालोन मोडिलात. लुटिलात. पळविलात. मेडते फते केले. येश संपादिलेत. हे वर्तमान लोकानी लिहिले. तुम्ही काही लिहिले नाही. अपूर्व आहे. हंती रणास आले. दोन प्रहरपावेतों तुंबळ युध्य निःसीम जालें. येसे मराठे कजी कोणी हा काळवरी केले नाही^{११} ते तुम्ही करुन येश संपादिले. सामान गोष्टी न जाली परंतु वर्तमान न लिहिलें. हे काये- याउपरी राजश्री जयाजी सिंदे यासी सांगोन जखमी कोण कसकसे. ठार किती. बिजेसिंगके ठार किती हाती घोडे तोपखाना वगरे काये आले हे सविस्तर लिहिणें. बिजेसिंगास परामबिलें याजउपरी जोधपुरी रामसिंगास राज्यावर बसउन पुढें बिजेसिंगाचे पारपत्य कर्त तें करावे म्हणजे सर्व गोष्टी सहज घडोन येतील. तुम्हींच हेच अवलंबिले असेल तरी योजिले नसेल तरी योजोन करावें. पुढे मनसवाचा डौल कसकसा हे साधंत लिहिणें. * वरचेवरी आठा दिवसाआड सविस्तर लिहित जाणे. जाणिले छ * ९ जिल्हेज.

खलन
सीमा

लेखांक [५६]

श्री * संवत् १८११ आश्विन वद्य २
[३ अक्टूबर १७५४]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यांसी.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कार. सुहूरसन खमस खमसेन मया-व अलफ. ईकडील कितेक अर्थ राजश्री जयाजी सिंदे यांसी लिहिल्या आहे याजवरून कलेल, मुखव हेच की फारच गुंतीत न पडावे. सामदाम करून शीघ्रतेने कारभार उरकावा

(२३) हे वर्णन मेडल्याच्या लढाईसंबंधी होय. पेशवा किंवा सदाशिवरावमाऊ यांची पत्रे जी शिवाच्या नावे आली ती संपन्न नाहीत. तथापि बखरकाराचे वर्णन निराधार नाही हें लक्षांत आसावें. तसेच बखरकारास पत्राचा परिचय होता हे आता स्पष्ट होते.

उतम आहे. जाणजे छ * २५ जिल्हेज. १ तिकडील कारभार आटोपत आळा असिला तरी पुढे फाळगुनमासी जयनगर प्रांते आल्या आम्हीही दिळी व रोहिले व सवदरजग याजकडील रुपया वसूल करु. सांप्रत सवदरजग तर वारले. त्याचे पुत्र [शुजाउदौल] आहेत त्याजपासून वसूल करून घेउन. काही जाजती साधले तथापि घेउ. तुम्हास कळावे. जर चैत्रमासी तुमचे बु[गु]ते उरकोन जयनगराचे आजमासे आळा तरी आम्हीही येउ. तेथेच मेटी होतीळ. ऐसाही विचार आहे. जरी तुमचे लांबणीवर पडले व आमचेही पडले तरी ग्वाल्हेरीवरून आम्हीं स्वेचीवरून ओकारास येउ तेव्हा मेटी होतीळ. जसे बनेळ तसे करावे लागेळ. वर्तमान वरचेंवरी लिहित जाणे त्यासारखे केले जाईळ. जर तेथे लावणीखाली अवघडच किल्याचे जुझ पडले तरी मदतही होईळ परंतु आता तुम्ही लांबणीखाली पाडाल असे दिसत नाही. बहुत काये लिहिणे.

लेखन सीमा पो छ ८ मोहरम. [२५ अक्टुबर १७५४]

लेखांक [५७]

श्री * संवत १८११ कार्तिक शुद्ध १५ [३१ अक्टुबर १७५४]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री
रामाजी अनंत गोसावी यासी.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कार. सुडुरसन खमस खमसेन मया व अल्फ. तुम्ही पत्र पाठविले प्रविष्ट जाले. विजेसिंगाचे वकील आले आहेत परंतु बोलीचाली ठीक अद्यावरी जाली नाही. ठीक जालियावरी लेहून म्हणून लिहिले तें कळलें. अशास तुमचा याचा फडशा होउन निकाल जाळ असेळ ते वृत्त सविस्तर लिहिणें. जाणजे छ * १४ मोहरम. १ तेथे सांप्रत कसा विचार पडला आहे. निकाल विजेसिंग करितो किवा लबाडी करितो ऐकत नाही ते लिहिणे व जयापानी तेथील व येथील मनसुवियांचे विचार मनन करून लिहित जावे त्याजप्रमाणे आम्ही व त्यानी करावे. सारांश वरचेवरी मनसुब्याच्या तोडीजोडी लिहिल्याने काम होत आहे. बहुत काय लिहिणे. जयापा स्वदस्तरांचे निराळे प [त्र] लिहिले आहे त्याजवरून येथील मजकूर कलेळ. बहुत काय लिहिणे.

लेखन सीमा

लेखांक [५८]

१ श्री * संवत् १८११ कार्तिक शुद्ध १५

[३१ अक्टूबर १७५४]

राजश्री रामाजीपंत [दा.मोल्कर] यासी.

नमस्कार उपरि. जयापास मोठे येश आल्याचे विस्तारे पत्र तुम्हीं लिहिले ते अक्षरशाहा वाचता अति हर्षकरून चित्त संतुष्ट जाहले. श्रीने मोठे इरेचे कामात लजा रक्षिली. दतवा तुकवा^{१५} देखील जखमी जाहले. ऐसियास दतवा केवळ मीमच^{१६} आहे. असो. ईश्वरे जखमा लागून खेर जाहाली. याउपर रामसिंगाची स्थापना करून स्वकार्य साधून मोकळे होउन येणे. राणा भीमाचे पारपत्य जरूर करणे. तिकडेच भरी न राहाणे. चिरंजीव दादास लिहून ते जे कार्य आरंभिलील त्यास अनकूल होणे. सविस्तर अर्थ आपाचे पत्री लिहिला आहे. छ * १४ मोहरम. बहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

पोता छ २७ सफर.

[१२ दिसबर १७५४]

लेखांक [५९]

श्री * संवत् १८११ मार्गशीर्ष शुद्ध १

[१५ नवंबर १७५४]

[पढिला वंद गाहाळ]

[या] ना दुसरे दैवत नाहीं ऐसे समजतात त्यास ऐसीच महत्येशे येतात मूल सेवकलोकास निष्ठाच कारण आहे. त्याची फळे हे आहेत. प्रस्तुत सर्व प्रकां भरोसा जयापाचाच असे. फार करून रामसिंगाची कार्य अभिमानपुरस्कार आपां करून दिलेच. अतःपर त्याच मनसुवियांचे भरी भरोन गुंतावे येसा अर्थ नाही च्यार रजपूत मातवरासी व रामसिंगासी गाठ घालून देउन आपण मोकळे व्हावें. केवळ बिजेसिंगाची जड उखडून टाकीन म्हटले तर हा दीर्घ प्रेत्य यास फार दिवस पाहिजे व आपाकडें मनसुवे फार. मनसूरअलीखान वारले. तो मससुबा मोठाच आहे व फौद

(२५) तुकोजी शिंदे हे मारवाडच्या स्वारीत होते हे नव्यानेच कळते. महादजी शिंदे या नाव कोठे आलें नाही पण ते या स्वारीत होते असा आचार आहे इतकेच नव्हे तर 'सन खमसेना म्हणजे १७४९ सात ते बुदेलखडात आले होते असा लेख सापडतो. मात्र त्याची तत्कालीन प प्रत्यक्ष उपलब्ध नाहीत.

(२६) दत्ताजी शिंदे यास 'भीमवहादुर' असे बखरकार सवोधितो ते केवळ गौरवयुक्त पक्षपात वर्णन नसून त्यास पत्राचा पाठिवा आहे ही गोष्ट मननीय होय.

चिरंजिवापासी थोडी, फौजेविसी सर्व इमारत जयापावरच^{३०} आहे हे येकउयोगी नव्हेत. अनेक उयोग यांस चिरंजिवासमीप राहून करणे लगतात यांस्तव याणी त्या कामाचा उलगडा करावा. पूर्वील दख्तसिंग व राजे अमेसिंग यांची वाटणी आहे त्याप्रों दख्तसिंगाचा वाटा विजेसिंगा घावा. अमेसिंगाचा वाटा रामसिंगास घावा. त्याचा त्याचा यकविचार परस्पर करून देउन विजेसिंगापासून आपले स्वकार्य होईल ते करून घ्यावे व रामसिंगापासून जे कार्य कराराप्रों करून घेणे ते घेउन मोकळे व्हावें. गोहदकर राणा ग्वाल्हेरीस आपले तालुकियात बळावला आहे. त्याचे पारपत्य जरूर करावे. शत्रु लहान × × × [वंक ओळ गहाळ] आणि अविलंबे जाउन चिरंजिवास सामिल होउन उमदे मनसुवियाचा साहास करावा. [हें] युक्त आहे. येविसी तुम्हीं आताच सांगणे ते सांगोन चिरंजिवाकडे जावयाची त्वरा करणे. वरकढ वृत आपास लिहिले असे त्याजवरून वळेल. ' तिकडील कार्य उरकून सत्वर ज्या कार्यास चिरंजीव जातील तिकडे यावे. छ * २९ मोहरम. बहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

(२७) राणोजीच्या निघनानतर लीकरच जयाजी शिद्यानी 'आपली फौज हुपटीने बाढविली' ती या सुमारास बरीच बाढलेली होती. मारबाडच्या मोहिमेतच 'तीस हजार' होती असे कळते. यामुळेच शिंदे लढाईस कधी कोणाशी कचरले नाहीत आणि सर्वच त्याच्या साहायाची अपेक्षा करीत असत. पेशव्यांनी मात्र कर्जेफेडीसाठी आपली फौज कमी करण्याचे धोरण धारण केले असे बापुजी बलाल फडके सांगतो हेच धोरण पुढे बहुधा. कायम राहिले आहे त्याचा मागीलपुढील राजकाशाशी बराच निकट संबध येतो हे लक्षात आसावे नागोरास जयाजीला दगा झाल्यानंतर ' बसरा जालियावर चालीसपनास हजार फौजेसिंसी येणें होईल' असे अस्वासन मात्र पेशवा देतो पण पदरी फौजच नाही तेव्हा ती येणार कशी ? जीवाजी व यशवतराव पवार, अंताजी माणकेवर, समशेर वहादुर व नारो शकर यांच्या उत्तरे कडील फौजेस केवळ हुकूम सुटले. [पेद २७ ले. ११९, १२०] त्यापैकी जीवाजी पवार व अंताजी माणकेवर मात्र पोचले. [पेद २ ले ५२, ५४,] समशेर वहादुर तहानतर पोचला [पेद २ ले ६२ पेद २१ ले ८६] नारो शकर मागेच राहिला [पेद २ ले ६१ पेद २७ ले १२७] ही स्थिति शिद्यास लोपली नव्हती ह्याणून ही सेना येण्यापूर्वीच आपली सर्व शक्ति एकचटून राठोड व कळेवे यास पराजित केले पुढे निजामाशी साखरखेडल्यावर युद्ध झाले त्यात शिद्याची जी अपेक्षा होती ती यामुळेच [पेद २१ ले १४० पेद २ ले ८०, ८२] अबदालीविषद दादासाहेब व होळकर जात असता शिद्याच्या मार्गप्रतिकेचे कारण हेच होय [खड १ ले ५२, ५४, ७१] १७६०त होळकर जात असता शिद्याच्या मार्गप्रतिकेचे कारण हेच होय [खड १ ले ५२, ५४, ७१] १७६०त अबदालीशी जी शिंदेहोळकरांची युद्ध झाली त्यात पेशव्याकडील फौजेच्या अल्प प्रमाणाचे रहस्य यातच आहे. भाऊसाहेब उत्तरेस आल्यानंतर निजामाशी सलग्गीचे कारण ही कमीच होय पानिपतोत्तरकालीन शिंदेसाही पत्रव्यवहारात हे व्यय विशद केले आहे त्याचे प्रत्यक्ष प्रत्यतर मिळत असल्यामुळे विदित केले आहे या आसोपाची कसोटी पानिपतासबधी लावून पाहाण्यासारखी आहे केवळ

लेखांक [६०]
१३१]

श्री * संवत १८११ मार्गशीर्ष शुद्ध १
[१५ नवंबर १७५४]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यांसि.

सेवक बाळाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार. सुमा खमस खमसेन मया व अलफ. विजेसिंगाचा पराजय केल्याचे तुमचे पत्र आलें त्या आलीकडे तुमचे पत्र येउन वर्तमान कळत नाही. तरी सविस्तर लिहून पाठवणें. विजेसिंग आदि करून मारवाडच्या रजपुताची तरवार महसूर. फार करून तिकडील मर्द मनुष्य शमशेरचे काम पडल्यास कोणेविसी चुकतील हे होणेच नाही. असें असतां राजे रामसिंग यांची स्थापना करून विजेसिंगाचा पराजय करावाच करावा येतद्विशईचा उद्योग राजश्री जयापांनी करून गेले. मोठा अवघड मनसुबा होता. तथापि त्यांचे सुकृतयोगे व धण्याचे कूपेने त्यांणी येश संपादिले येणेकरून अतिशयेनी आनंद जाहळा. जे धन्यासी परम एकनिष्ठेने वर्ततात धन्याचे चरण. x x [अपूर्ण]

लेखन
सीमा

लेखांक [६१]

श्रीशंकर * संवत १८११ मार्गशीर्ष शुद्ध ११
[२५ नवंबर १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यांसि.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कार उपर. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहिणे विशेष. साप्रत तुमचे पत्र येत नाही. तरुमात अटकलेने दिसोन येते कीं कारमार बलेब्यात फैदीखाली पडला आहे. ऐसियासि तुम्ही शाहाणे आहा तोडजोड

माळव्यासाठीच निजामाची १७३७सात भोपाळावर जे युद्ध झाले त्यात 'पेशी हज्जार घोडा नर्मदा उत्तरल' होता. [ब्रह्मोत्र. १३४] १७४३सात 'पटणे प्राते जावे या उदेशे पाउणलाळ फौजेनिची पेशवा उत्तरेस आला ह्यणूनच मराठ्यांची गंगेस घोडी नहाली [पुरदरे १ ले १५०] आणि वरील ह्यण प्रचारात आली. 'महाराष्ट्रमय करण्याची प्रचड कल्पना मनात खेळत असून जे अवाढव्य कृत्य उरकावयाचे होते' ते क्वचित कसे उतरले हे किंचित तुलनात्मक दृष्टीने चिंतनीय आहे. या बाबतीत खड १ ले १५८, १६०, १६८, १६९ खड ६ ले. ४०९ खरे १ ले १४, २१ पुरदरे १ ले. ३८७ पेढ २७ ले २५९ ही पत्रे मननीय होत 'पनास हज्जार फौजेनिची मदत जाहाली पाहिजे' अशी गोविंदपत बुदेत्याची अपेक्षा होती त्याचे उत्तर सदिग्ध आहे. [खंड १ ले १७४] चिकित्साअंती सख्या ठरेल ती प्रमाण त्यात होळकरानी 'यदा वीस हज्जार फौज ठेविली' असें पेशवाच सांगतो ती सख्या लक्षात असावी. [ले ११२]

सर्वही जाणता परंतु फार गुंल्यात पडिला असिला तरी पुढे कशी मसलत करावी ते आपास पुसोन लिहिणे. येथेही राठोडीचे तरफेने बोलत आहेत. तुमच्या विचारे ज्यासी बोलावयाचे आसिले तरी बोलू. निदान कोठपावेतो बोलावे ते लिहिणे. आथवा आम्हीं शह त्या रोखे घावा येसा तुमचा विचार आसिला तरी लिहिणे. तसेही करू. सारांश तुम्हीं आम्हास लिहावयास आनमान न करणे. येथील मजकूर तरी पत्री लिहिता लाब आहे. सारोप बरावाईट गाजुदीखानापासून निकाल करून घेतला. पुढे रोहिल्याकडील रुपया वसूल होत आला आहे. ते बाकीपैकी पाचसाडेपांच दर्त देणार. बाकी पुढील बरिची ऐसे केले आहे व मनसुरअली मेडा त्याचा पुत्र आहे त्याजपासून कासीचे काम ठीक करून घ्यावे आणीकही काही नजर बगैरे साधले तरी साधावे ऐसा आमचा मनोदय आहे परंतु त्या गोष्टीस [होलकर] बहुत खटे आहेत. आम्हीं गंगाताना जाणार आहो. जर सहजाखाली काही नजर साधली तरी घेउन येउ. ऐसाही विचार आहे परंतु तुम्हीं सविस्तर लिहिणे. सारोश तुमच्या पत्राचा मजकूर पाहून त्याअन्वय करू. हे मनसुबे रिकामपणीचे आहेत. दिवस गेले यास्तव आपास पुसोन लिहिणे त्यासारखे मनसुबे करू. हाच कागद आपास दाखविणे आणि उतर सविस्तर पाठवणे. आम्हीं कुमक केल्याने काम होते येसे असल्यास खामखा बोलावणे. आम्हीं हजार कामें टाकून येउ. जर आपाचे विचारे नाहीं तरी तसेच लिहिणे. राठोडासी बोलावयाचे विचारास आले तरी बोलू व द्वाजी सिंदे यासही रामराम सांगणे कीं तुमचा कागद येत नाहीं. हा रुसवा आहे. हे सांगणे जाणजे छ * १० सुफर. ५^{००} तुमचा तुम्हींच निकाल काढिला तरी उतमच जाहाले. आम्हीं हिकडे दोन महिने गंगतीरी राहून जैनगरास परत येउ.

लेखन
सीमा

पो छ २६ सुफर.
[११ दिसबर १७५४]

लेखांक [६२]

श्री * सवत १८११ पौष शुद्ध ७
[२० दिसबर १७५४]

अखंडितलक्ष्मीआळंकृत राजमान्य राजश्री
रामाजी अनंत गोसावी यांसी.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कर. सुदुरसन खमस खमसेन मया व अलफ.

(२८) या जागी व पत्राच्या शेवटी असे दोन वेळा मोर्तब पत्रात आहे राधोबाचेच पत्र ते ।

¶ येथे त्रिजेसिंगाचा वकील आहे तो काहीं बोलणार आहे तथापि आम्ही बोलत नाही. तो काये बोलणार ते देखील आम्ही विचारिले नाही. ऐसियासि या गोष्टीचे तीनचार पर्याय आहेत. त्यात कोणचा करावा तो लिहिणे. त्याप्रो अमळात आणावे [असें असल्यास] करू.

येक पर्याय येथे वकील बोलतो त्यासी दुसरा पर्याय आम्ही जयनगरावर कोठपर्यंत बोलवे. निदान कोठपर्यंत गंगास्नान करून सत्वर यावे. आम्ही व करावे ते लिहिणे. कलम ? मल्हारवानी यावे व. शह मात्र मारवाड प्रांती मजल दोन मजली धावा आणि जे होईल ते बोलून उरकावे. कलम ?

तुम्हास सोपे पडले असिले तरी आम्ही गंगाकिनारे आरपार मुलकात सिरोन सवदरजंगाचे लेकावर शह धावा. जे साधेल ते साधावे. सांप्रत तेथील नव प्रसंग आहे.

कलम

अथवा लाँकर गंगास्नान करून मारवाडावर शह धावा. जयनगर मजल दोन मजली डावे टाकून तुम्हाकडे नीट दरमजल यावे. मग तेथील प्रसंग उरकोन तुम्ही आम्ही सारेच जयनगरावर येउन चार रुये घेउन फिरावे. हा येक विचार. येणे तरी येकले यावे किंवा मल्हारबास घेउन यावे ते लिहिणे. परंतु मल्हारबास सांप्रत आम्हास सोडिता येत नाही. ऐसे आहे.

ऐसे दोनचार विचार आहेत. तुम्हीं सुविस्तर मनन करून लिहित जाणे त्यासारखे
 ५ विचार योजणे तो योजिला जाईल." जाणजे. छ ५ * रावळ.

लेखन
 सीमा

पो छ २६ रावळ,

[१० जनवरी १७५५]

लेखांक [६३]

श्री * संवत् १८११ भाव शुद्ध १
[१३ जनवरी १७५५]

अखंडितलक्ष्मीआळंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यांसि.

सेवक बालाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार. सहुरसन खमस खमसेन मया व अळफ. रविसंक्रमणाचे तीळ सर्कारयुक्त पोा आहेत. स्वीकार करून उतर पाठवणें. ' जाणजे छ * २९ रविलोवळ. ' बहुत काय लिहिणे.

लेखन
दीमा

लेखांक [६४]

श्री * संवत् १८११ भाव वष ५
[१ फरवरी १७५५]

अखंडितलक्ष्मीआळंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यांसि.

सेवक बालाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहीत जाणे विशेष. सांप्रत तुम्हाकडून पत्र येउन वर्तमान कळत नाही. तरी आपलेकडील सविस्तर वर्तमान लेहून पाठवणे. आम्ही मजबदरमजळ कुण्यातीरास आलो. येथून मातबर फोंजेनिसी राजश्री महादाजी आबाजी^{११} [पुरंदरे] यास कर्नाटक प्रांती रवाना केले. वरकड वर्तमान राजश्री जयाजी सिंदे यास लिहिले आहे सावरून कलेल. ' याउपर तिकळे गुतल्यास पाण्यामुळे बहुत देनागत होईल यास्तव जवळ बसउन भोकळे होउन चिरंजिवासभीप यावे. त्याचे विचारे राहाणे. येणे करणे ते करावे. उट चागले चारसे जरूर पाठवणे. छ * १९, रविलाखर. बहुत काय लिहिणे.

लेखन
दीमा

पो छ २६ जावळ सन खमस खमसेन.
[१० मार्च १७५५]

(२९) रामचंद्र मल्हार कुखटणकर यांच्या मृत्युनंतर कर्नाटकाच्या स्वारीचे पुढारपण याजकडे सहजच आले. त्यांच्या मोहिमेचे वर्णन बऱ्याच पत्रात आलेले आहे

लेखांक [६५]

श्रीशंकर

* संवत १८११ फाल्गुन वद्य १
[२७ फरवरी १७५५]

राजेश्री रामाजी अनंत गोसावी यांसि.

उपरि. आमचा मुकाम काल सामरेवर आला. उदईक कूच होणार. पुष्करास स्नानास येणार आहो. बरकड मारवाड प्रांतीचा कारभार तुमच्या लिहिल्या-वरून आम्ही कांही करीत नाही. तुम्ही लिहिता जयनगरचे बंगरे स्वामी करितात तो आम्ही हे उरकोन सेवेसी येतो ऐशियाची आमची तरी कामे उरकत आली. तुम्हाकडे यावे तरी तुमच्या मनात आम्ही यावयाचे नाही. देशी जावे तरी तीर्थरूप काये म्हणतील. ऐसे दोन्ही पेच निर्माण जाहालें आहेत. आम्ही अतःपर दरमजळ गेलो [तर] तीर्थरूप आम्हास शब्द ठेवितील की तुम्ही जयापास टाकून आलेस व तुम्हास टाकून जाताही नये. ऐसे आहे. याहीवर जसे लिहाळ तसे केले जाईल. तूर्त पुष्करास स्नानास येणार. जाणजे. छ * १५ जमादिलोवल. १ बड्डत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ २३ जमादिलोवल.

[७ मार्च १७५५]

(३०) एकटे दादासाहेब आले तर येवोत पण 'होळकराचा पाय नसावा. तो आणावयाचे चिंतात असेल तर श्रीमतानीही जावे. आमचे आम्ही विल्हेस लाउ' असा शिखांचा अभिप्राय होता. या भागातील पत्रान्वये शिखास मुळीच भदत न केल्याचा दोष दादासाहेबाकडे येत नाही. पण सर्वस्वी ते निर्दोषीही ठरत नाहीत. होळकरांना बगळून त्यास शिखाकडे जाता येत नव्हते हे खरें. पण होळकरासह जयपुरावर ते शह ठेवू शकत होते. [ले. ६२] तसे झाले असते तर मारवाडकर सहजच बठणीवर येते. पण तो शह सोडून मारवाडाकडे बळप्यात व तेथून ग्वाल्हेरीकडे येण्यांत व नंतर देशी जाण्यात त्यांची कुचराई दिसून येते. उत्तरेतील मराठ्यांच्या इतिहासांत हे पहिलेच उदाहरण होय. उभयता देशी गेल्यामुळे शिंदे एकटेच राहिले व त्यांना राठोड व कछवे या दोघांचा शह पडला. राघोबा समीप असेपर्यंत कछवा स्तब्ध होता त्याचा मोहरा देशाकडे फिरताच तो कुमांडास प्रवर्तला. राठोडाची सहमत झाला. बिकानेरकर, शाहापुरवाला, करोलीकर, बूंदीवाला व रूपनगरकर इत्यादि रजपूत त्यात मिळाले [पिद २१ ले. ७४] या सर्वांचे शिष्टकृत्य शिखांनी केले. तथापि 'या जिल्हांत छावनी जाल्यानें काये मालवा, काय गुजराय व काये इकडील प्रात सर्वा ठिकाणचा बंदोबस्त घडोन येणार व दक्षणी केल्यावाचून राहणार नाहीत ह्याणून रात्रदिवस सर्व चिंतामन आहेत' या विवचनेतून मोळ्या साबाने सर्वांस मुक्त केलें खरे. [पिद २७ ले १०६]

लेखांक [६६]

श्री * संवत १८११ फाल्गुन वद्य १४
[११ मार्च १७५५]

राजश्रियाधिराजित राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यासी.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कार उपर. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहिणे विशेष. ' तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. सविस्तर मजकूर तैथील कळल. पुढेही लिहित जाणे. आम्ही सांप्रत कसे तरी जयापास उलगडून काढावे या तळासात आहों. जाणिजे. छ * २७ जमादिलावल. बहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ ३ जावळ.

[१४ मार्च १७५५]

लेखांक [६७]

श्री * संवत १८१२ ज्येष्ठ शुद्ध ८
[१७ जून १७५५]

अखंडितलक्ष्मीआळकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गो सांसि.

सेवक बाळाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार. उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीय कुशल लिहीत जावे विशेष. तुमचे पत्र येहून वर्तमान अवगत होत नाही. तर तिकडील कारभार कोठपर्यंत आला. निर्गम कधी होणार. कितेक दिवस लागणार ते कुळ वर्तमान लिहिणे. येथील मजकूर सविस्तर राजश्री जयाजी सिंदे यासी लिहिले असे स्याजवरून कलेल. जाणिजे. छ * २९ सामान. ' बहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ ५ सवाल.

[१५ जुलै १७५५]

लेखांक [६८]

१३९]

श्री * संवत १८१२ आषाढ वद्य ८
[३० अगष्ट १७५५]

अखंडितलक्ष्मीआळकृत राजमान्य राजश्री

रामाजीपत गोसावी यांसि.

सेवक बाळाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणोन

स्वकीय लिहित जाणे विशेष. तुम्ही पत्र छ १५ सवालचे पाठविले ते छ १७^{३१} जिल्हादी पावले. राजश्री जयाजी सिंदे यास दगा होउन निघन पावल्याचा मजकूर लिहिला तो कलोन बहुतच × × × जाले. ईश्वरे मोठी अनुचित गोष्ट केली. ईश्वरीतत्रास उपाय नाही. जयापासाखा उमदा सरदार यां दग्यांनी मृत्यु पावावां येसे नव्हते. होणेरास उपाये नाही. असों. राजश्री दताजी सिंदे मर्द खबरदार आहेत. तुम्ही व सर्व सरदार शाबूत आहा दतबाचेच समाधान करून जयापानी उपस्थित मनसुबा केला तो सिधीस पाउन शत्रूचे पारपत्य होय तहरह उतम प्रकारे होये ते करणे. करणे. वरकड वृत दतबाच्या पत्री लिहिले असे त्याज वरून कलेल. † दतबाचा श्रमाव सिपायगिरीचा आहे यास्तव रागे करून असमई अस्थानी निकडीस प्रवर्ततील त्यास समजाउन गोडी बसूनच सागत जाणे. आपा असता बोळत होते त्याचप्रा जाहले तर तह करणे परंतु ते साप्रत चढी लागले असतील यास्तव हरतजविजेने सभालून राहाणे. दोनचार मिलोन पंचवीसचालीस हजार जमा होउन आले तर गनिमी तरेने तीन महिने सभालणे फौजा तिकडे आल्यावर श्रीकृपेने उतमच होईल. छ * २१ जिल्हाद. तिलमात्र उदास नसता सर्व करणे. बहुत काय लिहिणे.



लेखांक [६९]
१४१]

† श्री * संवत १८१२ भाद्रपद शुद्ध १३
[१८ सितवर १७५५]

पुा दताजी सिंदे गोसावी यांसि.

आसिर्वाद उपरी. विजेसिगास उतम प्रकारे तंग केले आहे वरकड कोणाच्याने काही त्याची कुमक करवत नाही स्वामीनी त्याचे वकिलास साफ सागून निरोप थावा. कैलासवासी आपानी जो अभिमान धरिला होता तो सेवटास नेळियाने लौकिक व स्वामीकार्य सर्वास मये म्हणून लिहिले. त्यास आपानी जे अवलंबिल ते

(३१) पहा भाग १ ले १४० टीप १६५ '१५ सवाली शुक्रवारे दगा केला' त्याच दिवशी दामोळकराने पत्र लिहिले ते '१७ जिल्हादी' ह्याणजे २६ अगष्ट १७५५ रोजी पेशव्यास मिळाले असे असतां 'स्मरणार्थ यादीत' जयाजी शिवाजी जी निघनतिथि दिल्ली आहे ती खरी नव्हे [खंड ६ यादी १२३] अर्थात् यादीतील सर्वच टिप्पणे विश्वसनीय नाहीत. तपासाती कित्येक त्याज्य आहेत

आम्हास सर्व प्रकारे करणे परंतु हा राजकार्य प्रसंग आहे. आपासही येथून बुचीवाद आपा असता चार महिने पाच महिने मागे लिहित गेले. ती पत्रे तुम्ही पाहिलीच असतील. दूर पथ. दो वर्षांनी हिदुस्तानातून फौज आली. येकायेकी येउन तयार फौज कर्ता उसीर लागतो. हे लोकाची येथील रीत तुम्हास ठाठकच आहे. जर हंगाम सिध एसा असता तर येक खावद आज वीस हजार फौजेनसी तुम्हाजवळ प्रविष्ट जाहाला असता परंतु लाइलाज. गेरहंगाम व दूर पथ याजमुळे विळव जगला. श्रीकृपेने दीदा महिन्यात पाचसाहा हजार फौज येउन पावेळ. मागाहून खासाही वीस हजार फौजेनसी येतच आहे. तुम्ही अवळविले कार्य ते अगत्य आम्हास करणे परंतु होणारानरूप आपानी वेतरे बोढिले. सिपायगिरीची रीत केली. सरदारगिरीचा प्रकार न केळ. जेव्हां प्रथम भारती^{२२} लढाई मारली त्याउपरी नन्या दबावात वट सोसून सलूख हर प्रकारे न केला. पुढील संकट इर्देशीने जाणून करून मोकले जाहाले असते तर आज प्रयाग अतारवेद व अलीकडील खेचीचा मुळक सोडवणे [४] गेर कामे सर्वही सरकार क्रिफायतीची होउन गेली असती. परंतु होणारास इलाज नाही. तुम्हीही आज पावेतो सिपायेगिरी केली. आता सरदारीची रीत धरून तजवीजेनेच काही कामे करावी. जरूर संकट पडेल तेथेच नेटून सिपायगिरी करावी. तुमचा अभिमान ईश्वरास आहे व मजवर ईश्वरी कृपा आहे तो तुमचे साहित्यास कधी चुकणार नाही. ती^{२३} पिढ्याचे एकनिष्ट सेवक कामाचे असता तुमचा अभिमान नसावा हे कधीही या

(३२) भारतातील शिष्टांच्या युद्धाचे जें कौतुकास्पद वर्णन बखरकारानें केले आहे ते पक्षपाती नसून वस्तुस्थितीशी सुसंगत आहे हे या वाक्यावरून स्पष्ट होते

(३३) हें पत्र अत्यंत महत्त्वाचे असून शिष्टांच्या उत्कर्षपरपरेचे दर्शन होय याविषयी याच पेशव्याचे दुसरे पत्रही मननीय आहे [कासं ले ९९] ही दोन्ही पत्रे प्रत्यक्ष पेशव्याने शिष्टांस लिहिली आहेत 'कैलासवासी यानी बाढविले ती पिढ्याचे एकनिष्ट सेवक' हे शब्द मुख्यत उत्कर्षपरपरेस अनुलक्षून आहेत 'कैलासवासी' ह्याणजे बाळाजी विश्वनाथ असे मानले तर परपराच प्रस्थापित होते. एरवी त्या जागी बाजीराव असे धरले तर 'ती पिढ्याचे सेवक' असे नानासाहेवास ह्याणता आले नसते. वरील उद्गार विसंगत असतील असे वाटत नाही. कारण 'ती पिढ्याचे' असे स्पष्ट ह्याटले असून केवळ 'कैलासवासी' ह्याटले असता भावार्थ बदलत नाही बाढीची सगत पिढ्याची लावावयाची असेल तर 'कैलासवासी' ह्याणजे बाळाजी विश्वनाथ असे ह्याणणेच अपरिहार्य होते इतिहासकार बहुधा शिष्टांचा संबंध पहिल्या बाजीरावापासून दाखवितात हे चूक होय हा निष्कर्ष केवळ शब्दच्छल अथवा अनुमानावर विसंबून नाही पेशवेदत्तर प्रकाशित झाले त्यात 'राणोजी सिंदे कन्हैरखेडकर' याचा उदय पहिल्या पेशव्यांच्या वेळीच झाल्याचा निर्देश आहे 'तेरीज सेनापती सन खमस' ह्या यादीत 'राणोजी सिंदे' याचे

बरात घडणार नाही. सर्व प्रकारे समाधान चिंताचे करून अस्टपेळुचे रीतीने जसा जे समई प्रसंग पाहाळ तसा मनसबा करीत जाणे. सत्वरच येथून फौजही येउन पोहोचत आहे. विजेसिंगाचा वकील पनांस लक्ष घ्यावे रामसिंगास थोडीसी जागा पोटापुरती बावी असे बोलत होता. आम्ही ते गोष्ट मान्य केलीच नव्हती. साप्रत हा प्रसंग जाहला याजमुळे आम्ही साफच त्यास जात्र दिल्या की याउपर आम्हांस तह कर्ता अनकूल पडत नाही. तुम्ही जाणे. असे म्हणून निरोप दिल्या. तेथे

नाव आहे. [पिढ ७ ले २३] दिल्लीकडील पेशव्यांच्या पहिल्या स्वारीत राणोजीचे नांव आलेले आहे. [पिढ ३० ले ३०७] ही दोन पत्रे त्याचे पुष्टिकरण करितात अर्थात् राणोजी शिवाचा उत्कर्ष वाळाजीपत नात्ता हे सेनाकर्ते असताच झाला होता असे निष्पन्न होते तसे नसते तर 'तीरीज सन खमस' [अक्षर] या यादीत राणोजी शिवाचे नाव येणे शक्य नव्हते. पिलाजी जाधव, नारो शंकर ह्याचा उदयकाळ हाच येतो. 'राणोजीबाबास प्रथम खिदमतगारी व नंतर पापा मिळाली' असे निश्चयात्मक कळते [भाग १ ले १ टीप २] तसेच वाळाजी भट पेशव्यांच्या वेळीच ते 'राव लोकांत चाकरीस होते' अशा लेखही सापडतो. [भाव २ अक ४] तो पेशव्यांच्या वखरकारास भाट्य आहे. ही सर्व सामुखी उत्कर्षाची द्योतक, समुक्तिक व विस्वसनीय वाटते तथापि या बाबतीत ऐतिहासिक टिपण भाग २ ले. ३५ चे पत्र स्वतः राणोजी शिवाचे आहे ते निर्णयात्मक होय. त्यातील उदार 'या सरदारीस एक योजून पाठवावा. आम्ही आपले पुरातन चाकरीस यावे असे दुपच्या चिंत्तात आहे तरी येव' हे शब्द वाचनीय आहेत मात्र या पत्राची मिती निश्चित नाही किंवा तसे करण्यास अन्य साधनही नाही. 'भोगल पेडी गावास येई तोवरी ठाणे न सोडावे थोरतनिवाळकराशी हुंजोन, भोगल येईल तोवरी ठाणे न टाकणे फौज बाली तरी पाटस हुजवावा.' अशा संघीस लिहिलेले बरील पत्र आहे. प्रत्यतर पुराबा पुढे येऊन वर्ष ठरेल ते प्रमाण. तथापि 'सरदारी' सोडून 'पुरातन चाकरीस' जाण्यास ते तयार होते हे उघड आहे ही पुरातन चाकरी ह्याणजे शिलेदारी किंवा खिदमतगारी मानली तरी ती त्यास वच असून 'पुरातन' होती हेही निश्चयात्मक आहे. अलीकडे राणोजी याचे जनक जनकोजी शिंदे याची दोन पत्रे उपलब्ध झाली आहेत ती वाचनीय आहेत [पिढ १३ ले ५३ पेढ ३० ले १०१] त्यावरून असे स्पष्ट होते की ते पेशव्यांशी पूर्ण परिचित होते. त्यास पेशव्यांच्या 'झेपेने सर्व गोष्टीचे अनुकूल होते महाल मोकसे' सपादन केले असून ह्यातारण्यामुळे चरी विश्रांति घेऊन होते. त्याच्या जिवत्पणीच राणोजीने पराक्रम करून माळव्याची वाटणी सपादन केली होती [पिढ ३० ले ३८] अर्थात अशा पुरातन सेवकास मुहाम हुजरेगिरीवर नेमणूक करण्याची थरज काय ? खिदमतगारीची कल्पना न उमगल्यामुळे आणि शिवाच्या उदयाशी सुखठणकराचा किंवा होळकराचा सवष दाखविण्यासाठी भलतीच चित्रे इतिहासकारानी रंगविली आहेत. त्याची चिकित्सा पुढे केली आहे ऐटि २ ले ३५ चे पत्र ह्याणजे राणोजी शिवाचे जणू स्वमावचित्रच होय. तसेच पेढ १७ ले १ हे महारजी होळकरासबंधी आहे. ही दोनी पत्रे लेखक किंवा वाचक कोणी कधीच विसरूं शक्यार नाहीत

ते आता चढी लागले असतील व मध्यस्त^{२६} मारले. गेणे यामुळे मध्यस्तीसही कोणी सिरत नसेल. अद्याप त्यांनी रामसिंगास पंध्रावीसाची जागा दिली व तुमची सिबंदी खर्च मसलतखर्च फिटोन दाहा लाख ज्याजती दिले तर घेउन सद्ध ख करून त्या संकटातून सुटवे हे राज्यभार अस्टपेळपणास उचित आहे. तेथील प्रसंगानुरूप करणे. फौज तो तुमचे साहित्यास रवाना करीत असो छ * ११ जिल्लहेज. बहुत काय लिहिणे.

लेखन
हीमा

लेखांक [७०]
१४७]

श्री * संवत १८१२ भाद्रपद वष ९
[२९ सितवर १७५५]

अखंडितलक्ष्मीआळंकृत राजमान्य राजश्री
रामाजी अनंत गोसावी यासि.

सेवक दादाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार. सुा सित खमसेन मया व अलफ. तुम्हीं राा जयाजी सिदे निघन पावल्यावर पत्रे पाठविली त्याची उतरे मुजरद कासिदाबा पाठविली ती पावलीच असतील. जयाजी सिदे यांनी मारवाड भ्या मनसुबियाचा अंगेज केला त्यास आयुश असते तरी काही चिता नव्हती त्याचे तेच सिधीस नेते. तथापि त्याच्या मागे राजश्री दत्ताजी सिदे यांनी हिमत धरून मन सुबियास आव घातला. तो प्रकार सिधिस पावावाच पावावा यापेक्षा दुसरे अधिक न जाणतां राा अताजी माणकेश्वर ग्वाल्हेरीहून राा करविले. चिरंजीव राजश्री शमशर बहादर व राजश्री येसवंतराव पवार येसे दाहा हजार फौजेनसी राा केले.

(३४) मारवाडकराकडून 'रायसिंग व विजेभारती' असे दोन मध्यस्त होते त्यापैकी, विजे-भारती गोसावी हा ९ मार्च १७५५ पावेतो दादासाहेबाबरोबर होता [विद २७ ले १०७] त्यास त्यांनी मेजवानी दिली [१६ मार्च १७५५] तोच गोसावी मारेकरी झाला 'वगा व्हावपाची कारण हेच जाले की गोसावी विजेभारती राजसिंग चव्हाण व जगनेस्वर मध्यस्तीस आले होते नागोराहूनही येकदोन वेळा गोवर्धन खीची आला होता तो योग घडीन न आला मग या त्रिवर्गांनी रावत जैतसिंग राणावत बेजून येथे आल्यावरी काहीयेक दिवस सल्लुखाच्या गोष्टीत रदवदलीस लागल्या गोसावी व चव्हाण यांच्या अगभूते मारेकरी मानसे होती त्यांनी सवी पाहून दगा केला जैसिंग गोसावी व चव्हाण आपल्याला समुदाये नास पावले' असे रामराव नारायण सांगतो [विद २७ ले ११६] जूनच्या अखेरीस राघोबा होळकरासह देशी जाताच केवळ एक महिन्यात हे कृत्य झाले तेव्हा बखरकाराचा कटाक्ष केवळ काल्पनिक ह्याणता येत नाही

अखिलेचेच येउन पावतील. खासा श्वारीचीही तयारी होत आहे. दसरा जालियावर चालीसपंनास हजार फौजेनसी येणे होईल. येविसीचा विस्तार दताजी सिंधे यांस लिहिला असे त्याजवरून कलेल. ' रजपुतामधे जाटासी राजकारण राखून एकासी श्रेह तर ऐकासी बिघाड एकदाच सर्वासी कजिया करू नये. तूर्त तोडाने वरकडासी फारच गोड बोलून राजकारण राखावे. श्रीकृपेने फौजही येत नाही' मग जे समयोचित दिसेल ते करणे. छ २२ जिन्हेज. वरचेवर आठा दिवसा आठ वर्तमान लिहित जाणें. छ * २२ जिलहेज. बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ २७ मोहरम.

[३ नवबर १७५५]

लेखांक [७१]

श्री * संवत १८१२ आश्विन शुद्ध १५

[२० नवबर १७५५]

अखंडितलक्ष्मीभालंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यांसि.

सेवक बालाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार. सुभा सित खमसेन मया व अलफ राजश्री अंताजी माणकेश्वर यांस राजश्री दताजी सिंधे याचे कुमकेंस रा केले खास मारानिलेनी िहिले की दाहा हजार फौजेनसी आपण मारवाडात कुमकेस गेले. खास मानिले देसीहून गेले तेव्हां फौज गेली ती कळलीच आहे. तस्मात हिंदुस्तानची फौज ठेविली असे. खास गणतीची मुरवत सहसा न करितां दोनच'र गणखा बहुत चोकसीने दक्षणची फौज किती व हिंदुस्तानची फौज किती खात उतम व मध्यम व कनिस्ट काय फौजेत माणोस किती हे तपमीलवार लिडून पाठवावे. सारांस मारानिले कुमकेस आले म्हणोन मुरवत धरून गणती मळमळीत घ्याल तर ते गोष्ट कामाची नाही. ही गणती बहुत चोकसीने घेणें. मारानिले सेवा निष्ठापूर्वक करितात खांचे उर्जित पहिले कारणे ते केले व हालीही सेवा करून दाखवतील तदनुरुप गोर होणें तो

(३५) 'फौज येत नाही' असेच असल पत्रात आहे हा हस्तदोष खराच पण मीज ही की मनी ते लेखणी असा प्रकार मात्र घडला 'चिरजीव दादाचे लून होउन होळकरासह रवानगी होणार' [लि. ७२] पण 'खासा फौजेसह कोणी आलाच नाही' [लि. ६९]

हॉईल. त्यास अंतर नाही परंतु गणती चांगली घेणें. या गोष्टीस अल्स न करणे. तुम्हाकडे शब्द नये ते गोष्ट करणे. १ जाणिले छ * १३ मोहरम. १ बहुत काय लिहिणे

२२
सीमा

पो छ १५ सफर.
[२० नवबर १७५५]

लेखांक [७२]

श्री * संवत १८१२ मार्गशीर्ष शुद्ध १०
[१३ दिसबर १७५५]

० गी ७
राभाभादना
बनिसर्षे जगाम
५३३-५३३
रायगध'भ

राजाश्री जिवाजी पवार^{२६} गोसावी यांसि.

अखंडितक्ष्मीशालंकृत राजमान्य श्रे वाळाजी बाजीराव प्रधान आसिर्वाद. सुा सित खमसैन मया व अल्प. खासा स्वारी पुण्याहून मजलदरमजळ कुप्पातीरास गळगल्यासमीप दाखल जाली. या मुकामी चिरंजीव राजश्री दादाचे छत्र होउन यांची व राजश्री मल्हारजी होळकर यांची रवानगी आठाढाहा दिवसा त्या प्रांते करून. तरी तुम्हां राजश्री जनकोजी सिंदे व दताजी सिंदे याच्या विचारे स्वामीसेवा निष्ठापूर्वक करून जंगनामोश सरकारचा होउन येई ते गोष्ट करणे. १ छ * ९ रविळावल. बहुत काय लिहिणे.

२२
सीमा

लेखांक [७३]

श्री * संवत १८१२ मार्गशीर्ष शुद्ध १०
[१३ दिसबर १७५५]

अखंडितक्ष्मीशालंकृत राजमान्य राजश्री
रामाजी अनंत गोसावी यासि.

सेवक वाळाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उपरि. येथील कुशल जाणोन स्यकीय कुशल लिहिणे विशेष. तुमचे पत्र येहून वर्तमान अवगत होत नाही. तरी

(३६) रामासिगाकडील जगु पुरोहित याजबरोबर जी मराठी फौज जोषपुरास वेढा देऊन होती त्यांत जीवाजी पवार होते असे बामोळकर सांगतो [१ जवदुबर १७५५] अर्थात् विवक बापुजीप्रमाणेच ते शिधाबरोबर पहिल्यापासूनच असावेत असे घाटले.

तिकडील वर्तमान काय कसे ते सविस्तर निरंतर लिहिणे. इकडील अर्थ [तरी खा] सा स्वारी दरमजळ कुण्णातिरी गळगल्यानजीक जाहाली असे. येथे चिरंजीव राजश्री दादा याचे लग्न होउन आम्ही कर्नाटक प्रांती जाऊ. चिरंजीवाची व राजश्री मल्हारजी होळकर याची फौजसुधा हिंदुस्तानात रवाना करितो. लौकरीच त्या प्रांती येउन पोहोचतील. निरंतरचे तिकडील वर्तमान लिहित जाणे. समसेर बहादर पाच हजार फौजेनसी रवाना केले. नारो शंकरही रवाना केले आहेत. चिरंजीवाचे फौजेची समजाविसी जाहाली. याउपर अविळंबेच येतील. तुम्ही मल्हारवासही चडीलपण्याचे नात्याने पत्र लिहित जाणे. न्यर्थ आटीने घर बुडाले. बरे मागे जाहाले ते जाहाले. पुढे विरोध वाढउ नये. पैठणचे गोविंदबाबांनी ब्राह्मणास फार सल्ले. ब्राह्मण जीव बावयास उमे राहातात. सर्वापुढे बल चालते परंतु ब्राह्मणा [पुढे बल] चालत नाही व करू नये. ज्या ब्राह्मणाचे आसिर्वादे^{३७} दिली काविज केळी त्या ब्राह्मणासी विरोध कामाचा नाही. सविस्तर आठा दिवसाआठ वर्तमान लिहित जाणे. छ * ९, रविळावल. बहुत काये लिहिणे.



पो छ २२ राखर.
[२५ जनवरी १७५६]

लेखांक [७४]
१४४]

श्री

* संवत १८१३ श्रावण वद्य ७
[१७ अगष्ट १७५६]

पुरवणी राजश्री जनकोजी सिंदे गोसावी यासि.

आसिर्वादे^{३८} उपरी. तुम्ही पत्र पाठविले तें पावले. लिहिला मजकूर

(३७) 'यमुनातीरपावेतो अमल होईल' असा नारायण दक्षित कायगावकर याने आशिर्वाद दिला होता [पिद १० ले. ८१] 'त्याप्रो यमुनातीरपर्यंत आपला अमल जाला' अशी साक्ष पिलाजी जाधवाची आहे [पिद १३ ले ४५] दिल्लीविषयी हा आशिर्वाद कोणाचा होता ? ब्रह्मोदरस्वामी केवळ 'दिलीस गेलेत' एवढेच ह्मणतो [पिद ९ ले २२] 'आमचे महत्तर कार्य स्वामीचे आशिर्वादावर व्हावे ही इच्छा आहे' असे बासुदेव दक्षितास नानासाहेवाने विनविले होते [खड ३ ले ३७३] पण ते कार्य दिल्लीचे नव्हते अस्तु 'ब्राह्मणाचे आसिर्वादे दिली काविज केले' अशी नानासाहेब याची श्रद्धा व्यक्त होते आणि त्याच्या वेळी 'दिकारचे' ह्मणजे वार्षिक श्रावणमासी दक्षिणेचे महात्म अतिशय वाढले त्याचे मुख्य कारण हे होते याविषयी पुढे पत्र येणार आहे तेव्हा विवेचन करू. ब्राह्मणाचा छल हा वाह्यारोप असून अतरंग वेगळेंच होते 'गोविंदबाबा पैठणकर याजवर सरकारची इतराजी वहुत होती लाबोच रुपयाचे पेच असतां दत्ताजी शिंदे यांनी सोडउन घेतले आणि मुक्त केले' असे महादजी शिंद्यांनी ह्मटले आहेतो हाच प्रसंग असावा [पाप ३ ले ८८] याविषयी ही दोनच पत्रे सापडली.

(३८) हे पत्र सदाशिवरावभाऊंचे आहे. बखरकारानें खडणीचा आकडा जो दिला आहे तो दामदुपटीचा होय हेच प्रमाण वहुश बखरीत इतर जागी आढळतें ते हेतुपुरस्सर दिसते. फौजेची सख्या मात्र वास्तविक तीच या वेळी आढळते. [बखर ११]

सविस्तर कलश. सां सां कोटे येथील चालीस लाख रुपये खंडणी केलियाचा मजकूर लिहिला. त्यापैकी सरकारचां नजराणा पंत्रा एक रुपये करार, केले त्यापैकी साल मजकुरी दाहा लक्ष रुपये धावे. बाकी पाच लक्ष रुपये पेस्तर साली धावे या प्रमाणे करार केला आहे म्हणून लिहिलें तें कळले. येशास प्रस्तुत सरकारांत येवजाची निकड बहुताच आहे यांजकरिता सदरहु नजराण्यापैकी दाहा लक्ष रुपये साल मजकुरी यावें. ते सत्वर तर्तूद करून पाठविल्यास फारच उपयोगास पडतील. यास्तव पत्र पावताच दाहा लक्ष रुपये सत्वर पाठउन देणें. वरकड मारवाड प्राते वगेरें येवज स्वारीमुळे जमा जाहाला असेल तो तुम्हीं देशास याळ ते समई समागमे घेउन याळच. ' यदा पैकियाची वोट फारच जाहाली आहे याजकरितां निकड जाणून लिहिलें असे. रा छ * २० जिल्हाद. सुा सवां खमसेन मयां व अलफ.



लेखांक [७५]

श्रीगजानन

[१७५६]

[नकळ]

मा अनाम राजश्री मलहारजी विन खंडोजी [होलकर] देशमुख पाा चादवड सरकार सगमनेर सु[भा खुद]स्ते बुनियाद यासी बालाजी बाजीराव प्र[धा]न आसिर्वाद उपरी. सुहूरसन सबा खमसेन मया व अलफ. तुम्ही इजुर कसवे पुणे येथील मुकामी येउन विनंती केली की स्वामीनी पेशजी आपणास देशमुखीसमचे परगणे मजकूरपैकी गाव ईनाम मोगलाई अमळ जाहागिरीचे करून देउन ईनामपत्रे पेशजी दिल्ली आहेत त्याप्रमाणे आपणाकडे ईनाम चालत आहे. येशास हाली स्वामीनी कृपाळ होउन त्या गावच्या बाबती सरदेशमुखीदेखील जकाती ईनाम करार करून देउन दरोबस्त गाव आपणांकडे ईनाम चालवावे म्हणोन लाजवरून मनास आणून तुम्हावर कृपाळ होउन तुम्हास पेशजी ईनाम गाव जाहागिरीचे ९ नड दिले आहेत त्यापैकी का बडनेर येथील बाबती व सरदेशमुखी राजश्री गोपाळराव चिटणीस याजकडे आहेत सत्रव तो गाव वजा करून बाकी गाव वितपसीळ.

१. कसवे बौधर.

१. मोजे सिबडी.

१. मोजे नाडूर मध्ये मकरासे. [१]

१. मोजे पिपळस.

१. मोजे तीसगाव.

१. मोजे बावली भोई.

१. मोजे उगाव.

१. मोजे देरेडे.

८

येकुन आठ गाव येथील बाबती व सरदेशमुखी देखील जकात हाळी ईनाम करार करून दिल्ली असे. तरी तुम्ही सदरहु आठ गांवचे बाबती व सरदेशमुखी देखील जकातीचा अंमल आपले दुमाला करून घेउन तुम्ही व तुमचे पुत्रपौत्रादिवंशपरंपरेने सदरहु आठ गांवचे बाबती व सरदेशमुखी देखील जकातीचा अमल ईनाम अनमउन [सुखरु] प राहणे.

[म्हणो] न मारनुले याचे नावे पत्र
सरदेशमुख यास
बाबतीवाले यास
मोकासीवाले यास

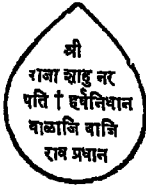
आपणे आज्ञाप्रमाण याचे नावे पत्र
दिल्हे की आपले वि x x

लेखांक [७६]

श्री^{२१}

[५२]

[१७५६] ?



राजश्री दत्ताजी सिंदे गोसावी यांसी.

अखंडितलक्ष्मीअलंकृत राजमान्य श्लो रघुनाथ बाजीराव आसिर्वाद टपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहीत जाणे विशेष. राो विष्णु महादेव [गदरे] यांजकडींल येवज तुम्हाकडे जमा करविला होता तो जमा जालाच अ[सेल.] त्यास तुम्हास आम्हा कडे यावयाचे नसेल तरी जो कोणी तुम्हां अगोदर आम्हाकडे येत असेल याजबराबरी मारानिलेबाबत पैका आधीं हुजूर पाठउन देणें. † ओझास उटे त्याबराबर तुम्हाजवळ

(३९) † या पत्रावरील सिक्का नवीन असून इकार सर्व न्हस्व आहेत. आरंभीची अक्षरे फाटलेली असली तरी त्याचा शोध इतरत्र लागतो. स्वयम बाळाजी भट पेशव्याने असंलाच सिक्का वापरला होता. [चंद्रचूड १ ले ४७] त्यावरून अक्षराची पूर्ति होते. त्या आघारेंच येथे तशी केली आहे.

सेवक श्रमसाहास करून येकनिस्टेने स्वामीसेवा^{१०} केली आहे येथियांस स्वामीनी कृपालु होउन येक परगणा दरोबस्त ईनाम करून दिला पाहिजे म्हणोन त्याजवरून मनास आणिता तुम्ही पूर्वीपासून राज्यातील मातबर सरदार तुमच्या वडीलवडिलापासून तुम्ही श्रमसाहास करून स्वामीसेवा येकनिस्टेने उत्तम प्रकारे केली. कितेक महत्कार्ये संपादिली व हालीही सेवा करीत अहां व पुढेही करावयाची उमेद धरिता हे जाणून तुमचे चाळवणे आवश्यक यास्तव तुम्हावर कृपालु होउन तुम्हास पाा यावल सरकार अशेर प्रात खानदेश हा परगणा मोक्यासबाब खेरीज करून स्वराज्य व मोगलाईदेखील सरदेशमुखी जकात कुळबाब कुळकानु हलीपटी व पेस्तरपटी खेरीज हकदार व ईनामदार करून हाली नुतन ईनाम करार करून दिल्या असे. तरी तुम्ही परगणे मार सदरदुप्रो आपले दुमाला करून घेउन तुम्ही व तुमचे पुत्रपौत्रादिवंशपरंपरेने ईनाम अनमउन येकनिस्टपणे स्वामीसेवा करून सुखरूप राहाणे. जाणजे छ * २४ रबिळावल. बहुत काय लिहिणे तरी सुन्न असा. मोर्तब.

लेखांक [७९]

श्री * संवत १८१३ मार्गशिर्ष वद्य ११
[१७ दिसवर १७५६]

[नकल]

चिरंजीव राजेश्री सदासिव चिमणाजी [भट] यांसी - बाळाजी बाजीराव
प्रधान असिर्वाद. साा सर्वां खमसेन मया व अलफ. राजेश्री जनकोजी सिंदे यांस खासा
जातीस सरंजाम पाा जुनरपैकी गाव दिले. वितपसील.

मोजे डोळस कोळगाव येथील मोक्यास मोजे सिंदोडी येथील मोक्यास बाब व
खेरीज करून मोगलाई जाहागीर ख- वाबती सावोनियाचा अंमल दिल्या
राज्य बाबती सरदेशमुखी देखील सावोत्रा असे ?

(४०) अहदनाम्याप्रमाणे आग्रा व अजमेर या दोन सुभ्याचे स्वामित्व मराठ्यांकडे आले त्यासवची जयपुर येथील मराठ्यांचा वकील गोविंद तमाजी गलगलेकर याची दोन पत्रे वाचवीय आहेत [पिद २७ ले. १०६, १०७] अजमेर सुभ्यातील मुख्य प्रतिस्पर्धी राठोड होता. त्याच्याशी 'भारतीय युद्ध करून त्यास पराजित केले. या असामान्य सेवेचा मोबदला ह्याणून मारवाडची संबंध खडण 'मुडकटी' ह्याणून सिंध्यास मिळाली. याशिवाय देशी 'खानदेशांत परगने यावल दरोबस्त व श्रीगोह भोवते ४० गाव इनाम मिळाले श्रीमत प्रधान, भाउसाहेब व दादासाहेब येसे श्रीगोहास येउ समाधान बहुता प्रकारे केले गौर केला' असे वळे सागतो त्याच्याच या सनदा होत. [ले ७५

कुलबाब कुलकानु दरोवस्त दिल्ली.
असे.

येकुण दोन गाव सदरहुप्रमाणे मशारानिल्हेकडे दिल्ले असे. तरी तुम्हीं हरदु गावास ताकीद करून सदरहु अमल याकडे सुरलीत चाले ते करणे. जाणिजे. छ * २४ रविलावल. बहुत काय लिहिणे. मोर्तव.

लेखांक [८०]

श्री * संवत १८१३ फाल्गुन शुद्ध ९
[२७ फरवरी १७५७]

राजश्री रामाजी अनंत गोसावी यांसि.

उपरी.^{४१} तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. ऐसियासि तूर्तच्या प्रसंग हरकसे ठीक राहे मदी उतरे ते करणे. पेत्तर तुम्हीं हुजूर आलियावरी उतमच होईल. तूर्त प्रसंगासुसार करणे. जाणिजे छ * ८ जमादिलाखर. † बहुत काय लिहिणे.



लेखांक [८१]

श्री

[१७५७]

राजश्री रामाजीपतमाउ गोसावी यांसि.

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य श्रेया समसेर बहादर सलाम विनती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल अिहीत जावे विशेष. राजश्री [दत्ताजी गिदे] पाटीलबाबानी आम्हास लक्ष रुपयाची वरात दिव्ही आहे त्यास जहर जाणून आपणावर वरात घेतली आहे. तरी स्वार पाठविले आहेत. याजसमागमे दर्शानी रुपये द्यावे. † ये समई रुपये लवकर येतात तरी फीजेची स्तिथ राहाती. नारो शंकर बगोरे याच्याही वराताची गत कळलीच आसेल. आम्ही तो आपल्या सागिनल्यावरून घेतल्या. पुढे आपल्यास कलेल तसे करावे. बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

(४१) हें व पुढील दोन पत्रे भोसले प्रकरणाची आहेत. १७५६च्या अगोरीस नोमने पृष्पास यणार होते. [खरे १ ले १] दत्ताजी गिदाच्या मजबुतीने जानोजी भोग्याणी या वेळी राजकारण घाटत होते असे पंगवेदपत्र बोलते. [पेद २० ले १०] पत्र त्याचें म्हण्य पुस्तें उमजत नाही. त्या प्रसंगाचें हें पत्र अनावे यात धका नाही. पुढील पत्रेदेगीन याच क्षणील

लेखांक [८२]

श्री

[१७५७] ?

राजश्री रामाजीपंत रामराव.

नमस्कार. आठादहा दिवसा हंसपुरीची रामाजी नाईकाची निशा अकरा लाखाची करून आणावी. गौसाबी यासी समागमे आणावे. जानोजी मोसल्यास संशय नसला तर त्यासही आणावे. उसीर लाउ नये. सत्वर कार्यसिधी येथी[ल] मर्जीप्रमाणे सर्व वाजवी कळमाची वाट करावी. येस बाबुरायानी कबूल नीट केले असेल तर दत्तवास घेउन तुम्ही येणे. त्यासही आणने, उगीच बारीकबारीक गाणी व लांबणी असली तर तुम्ही मात्र त्यास घेउन येणे. रात्री जागवत बसता अनकूल पडत नाही. सत्वर येणे. तुमचा साधा प्रामाणीक^२ कारभार. त्याचे बोलण्यात लटके व बारीक पेच फार. याचा अनभव तीन वर्षे घेत आलो. दूर बसून वाट पहावी हे तो सहसा अनकूल पडत नाही. हे आठादहा दिवसाचे मुदतीने गेले तर आम्ही घाटावरच आठ दिवस लाउ. केवळ सोळागांवावर बसून वाट पहाणे हे आमचे मनास सध्या येत नाही. सत्वर येणे [अपूर्ण]

लेखांक [८३]

श्री

[१७५७] ?

राजश्री रामाजीपंत [दामोळकर] यासी.

नमस्कार. व्यर्थ आग्रह करून मुकाम करविलेत. दोन बाबुरायाचा कारभाराची रीत येकेप्रकारची. काळ तुम्हाजवळ दाहा दिवसात कारभार पका करून जानोजी मोसल्यास आणितो ऐसी चिठी लिहून तुम्हास दिल्ली. सेवटी रात्री दाहा दिवसात कसे होईल ऐसे म्हणू लागले. सोळागांवावर बभून जावसाल करू लागल्यास येक महिना व्यर्थ जाईल. घाटावर जावे. समीपता पडेल. सत्वर काम विल्हे लागेल. तुमचे भीडेस्तव मुकाम केला, उधा कदापि मुकाम करणार नाही. रात्री जागणे अनकूल पडत नाही. दो प्रहरा येथे येउन काय तो निश्चये करणे. हे विनंती.

दिसतात तथापि त्याची मिती देता येत नाही. 'घाटानजीक सोळागावावर मुकाम' पेशव्याचा मानला तर मास अक्टूबरनंतरचा घरावा लागले [ले ९०] किंवा किंचित पुढेही डकलावा लागेल. [खेर १ ले ११] एवच वर्ष सद्ययित समजावे

(४२) शिवाचा दरवार 'अकृत्रिम' असे सुखठणकर व दामोळकर हे दोन्ही दिवाण प्रतिपादन करीत अथत. ती आत्मरक्षाचा वाटत होती पण 'तुमचा साधा, सरल प्रामाणिक कारभार' असा पेशव्याने अनेकदा उल्लेख केला आहे. [ले १०२]

लेखांक [८४]

श्री^{४३}* संवत् १८१४ वैशाख वद्य ५
[८ मे १७५७]राजश्री दत्ताजी^{४४} सिंदे गोसावी यांसि

सकलगुणांकरण अखंडितलक्ष्मीआलकृत राजमान्य स्नो वाळाजी बाजीराव प्रधान आसिर्वाद उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीये कुशल लिहीत जाणे विशेष. तुम्हीं पत्रे पाठविलीं ती प्रविष्ट जाहली. लिहिल्या मजकूर सविस्तर कळ्या एशास येविसीची उत्तरे अद्याहिदा लिहिली आहेत त्याजवरून कलेउ. जाणजे छ :- १९ सावान. बहुत लिहिणे तरी सूझ आसा.

लेखन
मीमा

लेखांक [८५]

श्री

* संवत् १८१४ ज्येष्ठ वद्य १
[३ जून १७५७]

[नकळ]

मा अनाम चौधरी व कानगो पाा शिवराजपुर प्रा अंतरवेद यासी रघुनाथ

(४३) '१५ मोहरमी स्वाभीनी कंलासवास केला राजश्री राजारामसाहेव पानगावी होते २६ मोहरमी आले. समस्त लहानघोरी तसलीमात बग्या आणिली थीने राज्यपदाखड केले ६ सफरी सिहासनाखड जाहाले. उमर बेबीसतेबीस वर्षांची' होती. [रेटि १ पान ६५] त्याची मुद्रा केन्हां चानू घाली हा अथाप वादच आहे. 'वाळाजीने त्याचा सिकका तीन वर्षे चालू केला नाही. तीन वर्षे तो घरसोड करीत होता' असे विधान राजवाड्याचे आहे [ऐंश १ पान ४३, ४४] ते चुकीचे ठरते. कारण की २८ जून १७५० रोजी सिंदेहोलकरादिकास जी पत्रे पेशव्याने लिहिली त्यावरील मुद्रा राजारामाच्या नावाची आहे. [चद्रचूड १ ले ८, ९, १०, १२] तेव्हा 'घरसोड' मुद्रा चालविण्यांसवधी नसून ती बंद करण्याविषयी होती. अर्थात ती बंद कधी झाली हे पाहिले पाहिजे. या दृष्टीने लेखांक १३ उपयुक्त असून मननीय आहे त्यानंतर पेशव्याने शाहूचीच मुद्रा शेवटपर्यंत वापरली असे दिसून येईल. [ले ५०, ५३, ७२, ७६, ८४ चद्रचूड ले ४७, १३०, १३६]

(४४) पहा पेद २० ले ८७, ८९, ९०. तीन कामांपैकी निजामाविरुद्ध स्वारी करण्याचे शिक्षानी स्वीकारले. पेशव्याचा पुत्र विठ्ठवासराव हा या स्वारीत शिवाचरोवर होता त्याची ही पहिलीच स्वारी होय. ती यशस्वी होऊन २५ लक्षाचा मुलुख मराठ्याकडे आला त्यात शिवास केवळ पनास सहस्राची जागीर शिंदेखंड हा महाल मिळाला [ले ११२ पेद २५ ले १८०, १८४]

बाजीराव [भट] सुा सबा खमसेन मया व अलफ. पोा मजकूरची मामलत राजश्री गोविंद
बलाळ [खेर] याजकळे असतां गंगापुत्र ब्राह्मण यांसी जमीन वीधे
१ वेनीमट व माघव १ खेमभट

२

सदरदू दोन वीधे जमीन ईनाम देहून चालविली त्याप्रमाणें हांली करार करून
सनद सादर केली आहे. तरी तुम्हीं सदरदू दोन वीधे जमीन वेनीमट व माघवभट
व खेमभट याजकळें दरसाल इनाम चालत आल्याप्रमाणें चालवणें. या पत्राची नकल
करण घेउन हे असल पत्र ब्राह्मणाजबल मोगवटियास परतोन देणे. जाणजे छ * १५
रमजान. † आझा प्रमाण. मोर्तब

लेखांक [८६]

श्री * संवत १८१४ आषाढ वद्य ५
[६ जुलै १७५७]

राजश्री रामाजी अनंत माड गोसावी यांसि.

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य श्रो समसेर बाहादर सलाम विनंती. येथील
कुशल जाणोन स्वकुराल लिहीत आसिले पाहिजे विशेष. गुदस्तां आपणापासून कर्ज
रुपये ५०,००० पनास हजार घेतले. त्यास आपण कदाचित सिंथाकडील हिसेब
विल्हेस लाविला तेव्हां सरकारातून मजुरां घेतले असिले तरी उतम. सरकारातून मजुरा
न घेतले असिले तरी सदरदू मुदल पंनास हजार व न्याजाचे हिसेबास मोघम
दहा हजार रुपये येकून साठ हजार रुपये विष्णु माहादेव गदरे कमाविशदर खीचीवाडा
† याजकडून तुम्हांकळे पाठविले आहेत. मारानिलेच्या गुमास्त्यास पत्र आळहिदा आहे
आप्रमाणे ते देतील. आपण सरकारातून येवज घेतला असिला तरी सदरदू साठ हजार
रुपये राजेश्री केशवभट करवे याचे दुकानी जमा करावे. सरकारातून घेतले नसिले तरी
साठ हजार रुपये पाठविले आहेत [तिं] पावळियाचें उत्तर सत्वर पाठवीजे. रा छ * १८
शौवाल. † बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

मोर्तब
खदपो छ २० जिल्हेज सन समान.
[५ सितबर १७५७]

लेखांक [८७]

श्री १ संवत् १८१४ श्रावण शुद्ध १
[१७ जुलै १७५७]

चिरंजीव राजश्री टादा यासि वालाजी बाजीराव प्रधान आसिर्वाद उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीये लिहीत जाणे विशेष. राजश्री कुण्याजी नाईक व रामाजी नाईक भिडे यांचे कर्ज जावजी पाटील यांजकडे पंचवीस हजार होते त्याचा हवाल्य राजश्री रेंणको अनाजी याणी घेतला आहे. तरी त्याचे नालबर्दी समजाविसीत उगउन घ्यावे म्हणोन नाईक मारनिलेनी विनती केली त्याजवरून हे पत्र आपणांस लिहिले असे. तरी सहारहु पंचवीस हजार रूा मारनिलेचे येवजी उगउन नाईक मारनिलेस घ्यावे. त्याचे हरयेक ऐवजी उगउन घ्यावे. रूा ब्रान्जारीराम व नारो कृष्ण आपल्यां जवळ आहेत यांचे अवश्यक असे तरी उभयेताचे अगल्य धरून उर्जित करावे. रूा छ * २९ सगळ. † सर्व प्रकारे अगल्य धरून याचे कार्य करावे. यास अगल्य समजून सांगून पाठवणे. हे आसिर्वाद.

पोा छ १६ सफर.
[३० अक्टूबर १७५७]

लेखांक [८८]

श्री * संवत् १८१४ भाद्रपद शुद्ध ११
[२५ अगष्ट १७५७]

पुा राजश्री सुखाराम भगवंत [बोकीळ] स्वामी गोसावी यासि.

विनंती उपरी. नवाब सुळावतजंग याजपासी शाहानवाजखान मुतलक वकिली करून होते. ते आमच्या विचारे वर्तत होते हे निमित्त त्याजवर ठेउन त्याची खिजमत दूर करून वसुळतजंग धाकटे वुंध यास मुतलक वकिली सांगितली. पुढे आम्हांसी वरिद्ध वर्तविं असा त्याचा भाव अढळला त्याजवरून राजश्री दत्ताजी सिंदे यास रूा केले होते. प्रस्तुत चिरंजीव राजश्री विश्वासराव [भट] यासही पौजेनसी रूा केले. दत्तवा चिरजिवास सामिल होउन पैठणास जातीळ. सुळावतजंग यानांही बोली लाविली आहे. येथील मर्जीनरुप वर्तोन सुलूख केला तरी उत्तम. न वर्तत तरी चिरंजीव ठीक करितील. होईल वर्तमान ते मागाहून तुम्हांस लिहिले जाईल † छ* ९ जिल्हेज. † हे विनती.

(४५) रेंणको अणाजी याविषयी पेशवेदफतरात उल्लेख आला असून तो उत्तरस दादासाहेबा बरोबर होता असे समजते. [पेव २१ ले १४४ पेव २७ ले १४५] पेव २७ ले १४५ हे पत्र १७५७ तीळ नमून १७६५ तीळ दिसते अर्थात तोपर्यंत हा जिवत होता असें जोषानेच दिसून येते

लेखांक [८९]
११२]

श्री * संवत् १८१४ भाद्रपद वद्य १
[३० अगस्ट १७५७]

राजश्री दत्ताजी सिंदे गोसावी यांसी

सकलगुणालंकरण अखंडितलक्षीआलंकृत राजमान्य श्राव रघुनाथ बाजीराव
आसिर्वाद उपरी. येथील कुशळ जाणून स्वकीये लिहीत असिले पाहिजे विशेष. अबदाळी^{१६}
पठाण याची आमद आमद गरम आहे. त्यास तो आला नांही तों आपण मारी होउन
राहावें म्हणजे उतम. तरी तुम्हीं जलदीने येणे येसीं पत्रें पैसजी लिहिलीच आहेत त्याज
वरून तुम्हीं यावयाची तर्तूद केलीच असेल व हलीही लिहिले असे. तरी याजउपरी तुम्ही
जलदी करून लावलाच मजली करून बहुतच त्वरेने येणे. रा ल* १४ जिल्हेज.

पो छ २९ रविलेंवळ रविवार.
[१२ दिसवर १७५७]

लेखांक [९०]

श्री * १८१४ अधिक आश्विन वद्य १४
[१२ अक्टुबर १७५७]

चिरजीव राजमान्य राजश्री दादा यांसि बाळाजी बाजीराव प्रधान आसिर्वाद
उपरी. येथील कुशळ जाणून स्वकीये कुशळ लिहिणे विशेष. राजेश्री वलवंतराव गनपत
[मिहदळे] याणी कडपेवाले अबदुलमजीदखान याजकडे राजश्री शामराव भिवराव यांस
पाठविले. ते कडपियास गेले. तो खासा तेथे नव्हते. सिघोट्यास गेले होते. कडपियास
गजुमिया व सिलैमखान तेथे होते. त्यास रुपयाहून जाजती जाबसाळ न करीत. हे
वर्तमान यास कळताच मारनिले कुळतूर कडपेवाले याचा तालुका तेथून सड्या फौजा
आपण बुळगियात मागे दबावास राहून राजश्री इद्रोजी कदम व सोनजी भांपकर व
हरबा चापु सखाजी विसाजी कृष्ण नरसिंगराव संभाजी घोरपडे खडेराव दारकर भगवंतराव
कदम व हैबतराव जाधव यशवंतराव लक्ष्मण वगैरे लोकसुधा रवाना केले. ते
कडपियास न गेले. मध्येच होते. तो खबर आली की गनीमिया व सिलैमखान पळून

(४६) या पत्राची तारीख काव्येतिहासकार यास साधली नाही पत्र १७५७ मधील आहे
या वेळी दादासाहेब अबदालीमुळेच उत्तरेस आले होते.- १७५२ पावेतो त्याचा उत्तरेची सबब काहीच
नव्हता पेद २ ले ९३ या पत्राची मिति '३० अगस्ट १७५७' अशी पाहिजे. पेद २ ले. ८०, ८२
यासबधीच आहेत

कडपियातून गेले. कडपियात काही नाही त्याजवरून हे सारे कडपियांस जाउन लागले. गोर्चे वंसविले. हे खबर अन्नदुलमजीदखान यास सिधोटास कळताच तेथून आपले फौजेनसी दीड हजारपर्यंत तयार होउन जुमामर्दाने मारीत मारीत कडपियात सिरोन मग कडपे भांडवावे या उमेदीने निघाला. ही खबर सरदारांस अवंगत होताच हे सारे जमा होउन विचार केला की तो येथे येउन न थावा. पुढे जाउन त्यांसि झुजावे त्याजवरून सारे चाखून कडपियापासून तीन फोसावर गाठे घातली. ते पठाण चागत्रे. हत्यार फार तीरतगवार याचे जाहाले. लोकानी आपल्यानी निकड फार खागाखाशाने केली. उडया घातल्या. त्या समई खासा अबदुलमजीदखान पास हतीवर गोली लागली. तो हती हरवानी पाडाव केला. सीर खासियाचे कापून आणले. सरकारचे लोक सदरहु मातवर नामी सरदार घोडघोड जखमी जाहाले परतु सारियाची खेर जाहाली. विसाजी कृष्ण [श्रीनीव ले] याचे घोडीस दोन तीर. चाजीपंत मारानिलेचा त्याचे धनसरीस गोली थोडकी. संमाजी घोरपडे मात्र ठर पडले. वरकड जखमी घोडीमाणसे पंडली त्याची खबर तपसीलवार लिहिली आली नाही. त्याजकडील दोनअडीचसे पठाण कापून काढिले. दोनतीनसे जखमी आहे. नव हती पाडाव जाहाले. तेथून कडपियास आले. येथील प्यादियाने कौल घेतला. सरकारचे निशाण चढूण ठाणे बसले. तेथे हाती सात सापडले. पैका नाही. तोफा मातवर तीनचार आहेत. गनीमिया व सिलीमखान करनालाकडे गेले. हे फते बळवतराव याणी फारच^{१३} चागली गे[के]ली. कुरणाटकात याजवरोवर लडणार मातवर कोण्ही नाही. याजवर याप्रमाणे सलबत पडून विसा लाखाचा मुलुक हाती लागला. यापरी दुसरा कोणी उजरून गोष्ट सागणार नाही. फारच दहशत पडलों. हे कामें खाशे फौजेने करावी ते बळवतराव मागे राहून सरदाराजवळून काम करविले यामुले तो फारच दांव लोकावर बाडला. पुढेही कामें राहिली ती चागलीच करितील. हे संतोर्चे वर्तमान कळावें याजकरिता लिहिले असे. दिदीचे गुलामुळे दख्ख[दुखळ]तून निघावे.

(४७) बळवतराव भेहदळे याजविषयी बखरीत जो कदाक्ष आहे तो निरावार नाही या कडप्याच्या कृतीस 'दिग्विजय' असे ह्यादळे आहे [पिव २८ ले १९८, २००, २१९] 'मोठी कामे खाशा फौजेने करावी. काही पटणे येथील सिंकार येकहाती मारवी' अशी नानासाहेबाची प्रवृत्ति होती असे स्पष्ट कळते. 'दिग्विजय' या शब्दाचा उच्चार बखरकारानें स्पष्ट केला आहे. भाऊसाहेब उत्तरेस गेले त्याच्या समागमें 'बळवतराव गणपत [भेहदळे] नाना पुरदरे व महिपतराव चिटणीस हे तीन मुख्य कारभारी होते.' [खरे १ ले. १४ खड १ ले. १६९] 'सरदाराची फौज मोडली या मुले' दिल्लीवर हा मोहरा दुजोनाने बाडला. [खड १ ले. २२२] तोच प्रकार कुजपुऱ्याचा झाला. पानिपतावर तर डरेस पडून तो ठारच झाला. [पेटी ३ क्र ३३]

फारच जरूर असेल तरी मल्हारबास^{४८} त्याचे फौजेसुधा ठेवावे. जर विशेष पैका मिळत असिद्या तर मात्र राहावे परंतु उगोच [होळकराचे] गपाचे आशेत गुतू नये. याअन्वये पत्रे लिहिली त्याचे उतर येत नाही. तरी सविस्तर अर्थ लिहिणे. ब्रसालतजगानीं झाहानवा-जखानास दंगा करून मारिले यास्तव पचविसाची जहांगीर नगर देउ केले परंतु आता फांजा जमा करून काहीसा चड खात आहेत. दूतत्रा [३] चिरजीव पंधरा हजार जमा जाहाले. आता दबउन काम करतील. आम्हीही सत्वरच बाहेर निघोन खारीस निघणार आहो. होईल ते लिहून पाठउ. आपण कासी पटणे येथील येथील सिकार येकहाती फौजेने मारावी. उसीर करू नये. दिल्ली कवल कंगाल होउन गेली आहे. आसपास बोस आहे. पैका आकारणार नाही. नावे मात्र माहालाची मोठी. वसूल होणे कठिण पडेल. दिल्लीची मांमळत तीस लाख जाहाली म्हणून गपा येतात. तुमचे पत्र आले नाही परंतु वसूल होणे यास विलंब लागेल सर्व वाटते. छ* २५ मोहरम. हे आसिरवांद.

पो छ ६ रोवळ

[१९ नवबर १७५७]

(४८) 'श्रीमत् देशास चाललियावर आपण मागे राहून काही कामे करावी' याप्रमाणे मल्हारजी होळकराचा विचार [पिद २१ ले ६०] १७५४ च्या स्वारीपासूनच होता. तो या वेळी देखील शक्य वाटतो. 'आमचे मते मल्हारवावर दिल्लीपासून लाहोरपावेतो कामाचा यत्नतियार देउन चिरजीवास घेउन यावे' असे पेशव्याचे मत व्यक्त होते [ले ९२] तसे झाले असते तर पानिपतचा प्रकार बहुतेक वेगळाच वळला असता अस्तु हा प्रसंग जुळून आला नाही एवढे खास. तो होळकराने टाळला की राधोबाचा लोडणा आडवा आला हे पाहाण्यासारखे आहे. 'फारच जरूर असेल तरी मल्हारबास त्याचे फौजेसुधा ठेवावे' हा पेशव्याचा प्रथम संकेत होताच तो लक्षात घेऊन राधोबाचें लाहोरचा बंदोबस्त केला ते पत्र वाचनीय आहे [ऐस्कुले ४ क्र ११] 'लाहोर प्राती रेणको आणाजी व रायाजी सखदेव ऐसे ठेविले गोपाळराव गणेश याचाही पैगाम आहे. तेही राहातील. याजसिवाय आणखी फिरकोली पथके ठेवितो तूर्त तातडीमुळे जे होईल ते करितो पुढील स्वारीस जे कोणी सरदार मातवर येईल तो बंदोबस्त करील तूर्त माघारे फिराक्याचा डौल स्वामीच्या आज्ञेवरून धरिला आहे. तूर्त या प्राती अदिनावेग मोगळ, मातवर व प्रामाणिक आहे त्याजवरच सारा यत्कार दिव्हा आहे' यावरून होळकरास 'यत्नतियार' देऊन ठेवण्याची इच्छा राधोबास नव्हती हे स्पष्ट आहे या स्वारीत आरभापासूनच होळकराविषयी दादासाहेबांचा ग्रह विपरीत होता [खड १ ले ६७ पैद २१ ले. १३८] तेव्हा त्यानीच होळकरास राहू दिले नसावें असे औघानेच निष्पन्न होते. 'पृथ्वीवलयाक्ति येथ सपादिले ते जतन करून सर्वांनी सावदाचे पाये पहावे म्हणजे उत्तम गोष्टी आहे. सुभेदार साहेब स्वामीचे आज्ञेखेरीज नाहीत' हे गंगोबा चद्रचूडाचे पत्र वाचनीय होय. [पिद २७ ले २११]

शेखांक [०.१]

श्री

[१६ फरवरी १७५८]

दिया

[जागा रिकामी आहे]

रामनगर^{२१} फते केव्याचे वर्तमान लिहिलें तें कळलें. उतम केले. राजा देठोंवास राणीसुधा आहे. त्यासकडे सदासिंघाव अवधूत गेले आहेत. तोही स्वामीच्या प्रतापे घेउन भेटेल. त्यास वंगरे इत्यादिक म्हास पदरी पडिले आहेत. या सर्वांस घेउन चरणापासीं येतो. जसी आज्ञा होईल तसी वर्तणून करू म्हणोन लिहिलें ते कळलें. येसियास रामनगरकर भेटीस आले असतील त्यास चिरजीव नानाकडे घेउन जावे. याजपासून नजर गुन्हेगारी ध्यावयाची व कर्जपटीचा येवज दुर्जनसिंग याचे मारफतीने करार जाहाला त्याचा निकाल करून घ्यावा. राजा पुढे इज्जर आणावा. मंत्रीरगड सरकारात आहेच. पुढे नीट वर्तावयास जांमिन दुर्जनसिंग यास घ्यावे. वेडपसर्ग राहात कोठे लबाडी न करीत असे करणे. याची आज्ञा चिरंजिवास निस्तारे केली असे. ते सर्व सांगतील. तसेच करणें. कोली जे भेटले त्यास कोल घ्यावा. पुढे जव्हारकराचा कोण्डी असेल नसेल तो जव्हारेत ठेउन सरकारचा

कळी माणूस १०० शंभर चांगले नवानीक[१] हल्लारवद कामाकाजाचें बहुत वेश आम्हाजबल आलं आहे हे करार करून ठेवावयाची आज्ञा सरकारच्या कारकुनास केली पाहिजे म्हणोन लिहिलें ते कळलें. येसियास वर्त कामाचे दिस आहे तो महिना दोन महिने दाहा पधराचा सेरा करून चांगले असतील तेच ठेवावे.

(४९) हे पत्र दामोदकरसमूहात सापडलें शिरोभागी नाव नाही शेवटी केवळ 'हे किताबत' आहे. तेव्हा ते कोणी मुसलमानास लिहिलेले दिसते तो बहुधा मुजफरखान गारदी असावा कारण या बंदी तो रामनगरजवळ अस्त्याचे समजते. [पेढ ४० ले १०९, ११०] 'चिरजीव नाना' हा पुरदरे असावा. एरवी शिचाकडील बाबुखानदेखील समवनीय आहे

सारा बंदोबस्त करावा. राजा जव्हारकर कोली याची स्थापना करउ. सरकारचा बातलामाथला असे करावे. जो आता पद्धत गेला त्याचे पारपत्य करावे. जर त्याणी कौल घेतला तर हुजूर त्याणी चाकरी करावी. देवजी अवधुतराव वगैरे लबाड परतु त्यास अमय देउन आणिलेत तर अन्याये माफ करुन. पुढे हुजूर त्याणी चाकरी करावी. तिकडे नसावे लबाडी करु नये. असे जामिन पके घेउन करावे. ये विसी चिरंजिवास विस्तारे लिहिले असे. ते सागतील तसे करणें.

विणेप्रो दोन कलमे. जाणीजे. छ * ७ जमादिलाखर. ज्यादा काय लिहिणे हे किताबत

लेखांक [९२]

१ श्री * संवत १८१५ चैत्र शुद्ध ३
[१० अप्रेल १७५८]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
सखाराम भगवंत खामी गोसावी यास.

पौप बालाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीये कुशल लिहित जाणे विशेष. सांप्रत तुम्हीं कोठे आहा. काय मनसुत्रां करिता ते सर्व लिहिणे. ईकडील सर्व सविस्तर चिरंजीव यास लिहिला असे त्यांजवरून कलेल. आमचे मते मन्हारबावर दिळीपामून लाहोरपावेतो कामाचा यखतियार देउन चिरंजीवास घेउन भेटीस यावे. विशेष पैका मिळणे नसता खाबंदगिरीचे तेज^१ खराब करुन गुंतून पडावे हे सहसा न व्हावे. * छ १ साबान. हे विनंती.

पो छ ९ रमजान समान.
मुा व्यासनदीपर्वतीर.
[१७ मे १७५८]

(५०) लाहोरकडे छावणी करण्याची इच्छा स्वत. दादासाहेबास नव्हती [पद २७ ले. २१८] त्यात 'खाबंदगिरीचे तेज खराब सहसा न व्हावे' अशी पेशव्याची आज्ञा आली तेव्हां राधोबा

लेखांक [९३]

श्री * संवत् १८१५ वैशाख वद्य १४
[४ जून १७५८]

आसिर्वाद उपरी. लाहोरात ठाणे वसून तैमूरसुलतान व बहामाजखान खान यास धुडाविले, लोकाने पाठलाग केला. फोज सु[ख]टली. दोषे चेंद्रभागापार गेले. अटकेआलीकडे राहू पावत नाही. राहिले तरी त्याचा पिछा उतम होईल. हे येश खल्यात बरे मिलेल त्याचा विचार विस्तार लिहिता तो कळला. ऐशियास ईश्वरे उतम येश" दिले. छ * २७ रमजान. हे आसिर्वाद.

पोा छ २ जिल्काद.

[८ जुलै १७५८]

लेखांक [९४]

श्री * संवत् १८१५ वैशाख वद्य १४
[४ जून १७५८]

आसिर्वाद उपरी. विठळ शिवदेठ [विचुरकर] मल्हारवा नजीबखानावर गेले. त्याणी फार दिवस जविले त्याजमुले वगालियाचा मनसुबा [राहिला.] आम्ही कुरुक्षेत्रास दाहापवरा लक्ष मिलविले म्हणोन आणिले तो काही नाही. तेव्हा शिठळपंत मुधोजी भोसले यास वगालियात रवाना केले आणि सरहद फते करुन अबदुलसमदखान व

माणे परतले. अर्पात् ही जबाबदारी पेशव्यावरच येऊन पडते असे असता या प्रसंगाला अनुलून पेशवेदगत रच्या सपादकाने राधोबास दोष दिला आहे तो अयोग्य आहे कारण ज्या पत्राच्या आधारावर हा आरोप आहे ती पत्रेच मुळी या वर्षातील नव्हत ती सर्व १७६७च्या स्वारीसवधी आहेत पेद २ ले ४६ हा राधोबाचाच या प्रसंगाचा खर्चा होय त्यात 'खेचीच्या आसपास मुकाम आहेत' असे ह्यादले आहे पण १७५८च्या स्वारीत खेचीवाडघात राधोबा मुळीच आले नाहीत अजमेरफडूनच परस्पर वेणी गेले १७५५ व १७६७ या दोन वर्षांतच खेचीवाडघात राधोबा आले होते पत्रातील प्रसंग १७५५ चा नसून १७६७ चा आहे एवच कालक्रमच चुकला आहे [पेद २ ले ४६, ७४, ८८, ८९, पेद २१ ले १५६, १५७, १५८, १६१ पेद २७ ले १५०, २१२] पेद २७ ले १३३ ची 'पोा सन सवा' [सिर्तेन] अशी स्पष्ट आहे ती सवा खमसैन मानता अर्बबद दिसते [खड ६ ले ४२६] अवदाली दिल्लीवर आला असता पेशवा श्रीरपपट्टणकडे का गेला त्याची चर्चा जशी निजामाकडून झाली [खड १ ले ६५] त्याप्रमाणे राधोबाविषयी या वेळी दिल्लीत चालू होती. 'लहानभोळे सर्वत्र म्हणतात घासा छावणी न जाली तरी पठाण भागती लाहोर प्राती पावसाला येतील. उगेच लोक म्हणतात ते सेवेसी लिहिले' असे असाजी माणकेवरचे पत्र पुढें येणार आहे. ते मात्र लक्षात आसावे. या वातेंस खरा आधार तो होय

(५१) नानासाहेब पेशवा हा अत्यंत कुशल लेखक होता त्याने उत्तेजनपर जी पत्रे सरदारस लिहिलेली आहेत त्याचा आधिर्भाव या सहोदराच्या पत्रात आला नाही ही उदासीनता मननीय होय

गजबाजखान यास धरले छुटले. तसेच लाहोराकडे चालोन गेला. ते दू[मूर] सुलतानखान व ज्याहानखान अबदालीची पंचवीस हजार [फौज] होती ती पळोन गेली. लाहोर घेतले. अटकेपर्यंत मोकले आहे. दोनचार छावण्या केल्या तर वजीर पातशा खेरीज करुन आपलाच थोडीचा मलुक ब्रम्हिक दीडाचा सुटेल. त्या[स] वारंवार लिहिली येत गेली की माघारे यावे याजकरिता रमारमी पाहातो. खर्चापक्षा दोनचार अधिक होतील असे पाहोन इकडील बंदोबस्त अदीनावेग अंथवा हर कोणहाचे हवाली करुन महिना दोन महिने अणखी कांही मिलेल तरी मिलउन येउ म्हणोन विस्तरे लिहिले ते कळले. ऐशियांस विठळपंतानी पातशाजाबाचा पक्ष धरुन सेवटी त्यास सोडून कैद करविला म्हणून आईकतो. त्याचे पत्र येत नाही. आपलेही पत्री हा विशद अर्थ लिहिला नव्हता. साराश ईमान देउन सेवटी कैद होय मारला जाय येसे न व्हावे. आपण मल्हारबा इमानाचे वचनाचे विरीद बाळगितात परतु प[ये]दा ते प्राती यकादोवा मातवग आणून छुटविले हे गोष्ट अती अनुचित जाहली. आपण आम्हास कोठेकोठे लाहानसाहान शब्द ठेवीत असतात. आपला हा महाशब्द^{१२} सर्वत्र दिलीपासून अटकपावेतो जाहाला असे. हे उत्तम न जाहाले. आपण न करविता लसकर वेबंद यामुले जाहले असेल परंतु निमित्त खावदावर असते. छ * २७ रमजान. हे असिर्वाद.

पो छ २ जिल्काद.

[८ जुलै १७५८]

छांकांक [९५]

श्री * संवत १८१५ ज्येष्ठ शुद्ध ३

[८ जून १७५८]

राजश्री दमाजी गायकवाड समसेर बहादर गा

अखंडितलक्ष्मीअलंकृत राजमान्य श्रो रघुनाथ बाजीराव आसिर्वाद उपरी.

यथील कुसल जाणून स्वकीये कुसल लिहीत जावे विसेष. तुम्हीं पत्र पाठविले ते पावले.

(५२) अनेक प्रसंगी नानासाहेब पेशव्यावर होळकरानी शब्द ठेविला. तसेच गायकवाडाने ही उपका दिला होता त्याचप्रमाणे दादासाहेबही देत असत असे कळते. त्याचा हा टोला पेशव्यानें मारला आहे उदाहरणार्थ पानिपतसवधी राघोबाचें पत्र वाचनीय आहे. [पुरदरे १ ले ३९८] भाऊसाहेबाविषय बखरकाराचा आक्षेप याच मासत्याचा आहे. तो काल्पनीक वादत नसून केवळ पत्राघाराचीच काय ती वाण आहे.

राजश्री सदासिब रामचंद्र^{१३} [सुखटणकर] व राजश्री सयाजी गायकवाड सोरठ प्रांती गेलि याचे वगैरे ते प्रांतीचे वर्तमान विस्तारे लिहिले ते अवगत जाले. ऐशास खासा स्वारी लाहोर मुल्तान कासमीर धरारे सुभे अटकेअलीकडील यथील बंदोवस्त करुन देशास यावयाकरिता माबारा फिरली, मजळदरमजळ जयपुर प्रांती येत असो. आमदाबादचे तहविशी सदासिब रामचंद्र यास पत्र पाठवावे म्हणोन लिहिलें त्यास आपले लिहिल्यावरुन मारनिलेस पत्र पाठविले आहे. [तें] पावेल. आपणांकडील निरंतर कुशलोत्तर लिहित जावे. रा छ * १ सवाल.

लेखांक [९६]

श्री * संवत १८१५ श्रावण वद्य २
[२० अगस्ट १७५८]

आसिर्वाद उपरी. लाहोर येथे अदीनाबेग वगैरे ठेउन बंदोवस्त केला. वजि राने बराबर असाने परतु न आले. तथापि वचनासाठी त्यास तिकडील निमे येवज सिबंदी अजी वजा करुन बाकी राहिल त्यापैकी दाना. सरकारादून कमाविसदार दूर करार करणे तो करावा. येविसी येखितयार सरकारचा. वजिरास समंध नाही. वजिरास हा निमे ऐवज दाय्यांचा करार ठहरला तेव्हा वजिराने बंगाल व अयोध्या पेटणे प्रथाम कासी वगैर फौज जमा करुन बंगालियास जावे. अता[जी] माणकेश्वर यास बरोबर न्यावे. निमे घाटणी जेथील जी खडणी होईल तेथील सरकारात पुणियांत पोहचवावयास येवज दाना. निमेत पातशाहा वजीर सिबंदी व अताजी माणकेश्वर यांजपासून मराठी फौज दाहा हजार ठेविसी असे तीस समजावावे. निमे येवज पुणियास दाना. अताजी माणकेश्वर याजबरोबर सरकारची पाच हजारच फौज त्यास ऐवज दरसालचे सा बारा येक साल देविले व सरजाम काही आहे. ज्याजती फौज जी ठेवितील ती वजि- राकडे. पैका वजिरानी आपले निमेत दाना. याप्रमाणे अताजी मानकेश्वर याणी कनूल करुन ही चाकरी वजाउन आणली तर सरफराज होतील. लडाई केली तर पारपत्य करावे म्हणोन लिहिले ते कळले. ऐशियास वजिरास दिखी सोहन जाता येत नाही. मनसूरअलीचे लेकासी वजिरासी चितसुध नाही. अताजीपंत लटकी

(५३) हा रामचंद्र महार सुखटणकर याचा पुत्र होय. याला गुजरायेंत स्वतंत्र सरदारी होती म्हणून तो या वेळी तिकडे होता. पानिपतानंतर हा पेशव्याबरोबर उत्तरेस ग्वाल्हेरीपर्यंत आला होता. पुढे तो आजन्म राधोबाचाच पक्षपाती राहिला त्यामुळे त्याचे शिवाजी कवीच जुळले नाही. तथापि मृत्युनंतर त्याच्या कुटुंबाचा परामर्ष महादजी शिंदाने घेतला असे समजते

आशा दाखउन हुजूर न यावे या भावे राहिले. हे उतम न केले. [ते] सहसा वंगाल्यास जात नाहीत. वाजवी बाकीचे रूपये मागील मामलतपैकी वसूल होतील ते पोटास खातील. [त्यांत] दूर पथ. समक्ष लढाई चोरी करितात. दूर पडल्यावर सर्व फावेल. मनास येईल तैसील चाली चोऱ्या करून खातील. अताजीपतास सहसा ठेऊ नये. हुजूर फौजसुधा आणावे. त्याजकडे कामे असतील ती सर्व जनकोजी सिंदे याजकडे लावावी. येथून आज पाच महिने निरंतर लिहितो की जे नुकसान होईल ते कबूल करून कोणाची [सखारामनापुची] रजबदलीची मीड न घर्ता त्यास फौज [व] हिसेबसुधा येथे पाठवावे. ते न जाहाले. सेवटी वंगाल्यास जाणार नाही. हरयेक निमित्त ठेऊन राहातील. यात संशये नाही यांस्तव त्यास पत्रदर्शनी बोलावणे पाठउन आणावे. छ * १५ जिल्हेज. हे आसिर्वाद.

पो छ १५ मोहरम.

[१९ अक्टूबर १७५८]

लखांक [९७]
१६५]

श्री * संवत १८१५ मार्गशीर्ष वद्य २
[१७ दिसवर १७५८]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत [दाळभोकर] गोसावी यांसि

सेवक बाळाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहीत जाणे विशेष. राजश्री दत्ताजी सिंदे व जनकोजी सिंदे कोठे आहेत. काये मनसुबा करितात ते बरण्यावर कळले पाहिजे याजकरितां निरंतर लिहित जाणे. ब्रजिराचा अगल्यवाद चिरंजीव राजश्री दादास आहे. त्याचा पक्ष धरून नजीबखानाचे^{५४} पारपत्र करावे लाहोरचा नवा मुलुक सोडविला तेथे अदिनावेग ठेविला होता. तो मूल्य पावला यास्तव तेथील वंशोवस्त चांगला जाला पाहिजे. याजकरितां दत्ताजी सिंदे यांणी तिकडे

(५४) 'गजुदीखान होलकर याचा पुत्र व दादासाहेब याचा पगडीबंद भाऊ' होता. तसेच 'मल्हारराव यास [धर्म]पुत्र बहुत माघीसिंह विजेसिंह व आणखी बहुत आहेत. त्यांत हा नजीबखानही पुत्र झाला' असे बखरीत ह्याटले आहे. ते पत्रव्यवहारात प्रत्यक्ष पहावयास मिळते. [खंड ६ ले २९१ पेद २ ले ७७ पेद २१ ले ९६, १००] गुजाउद्दौलादेखील 'मल्हारजीचे पुत्र आहेत' असे गोविंद बलाळ वृदेला ह्याणतो अस्तु पेद २ ले ७७ हे पत्र पूर्वपानिपतीय नसून १७६४तील विसते. ज्या उपकारार्थें स्मरण देविले तो योग्य १७५७ त घडला. अर्थात पत्र त्यानंतरचे होय. [खंड १ ले ४२१ चंद्रचूड १ ले १५५ पेद २९ ले ७२]

जाउन यथाभित्त बंदोवस्त राहे ते अगळ करावे. वंगाल्याकडीलही काम मातबर आहे. तेथे पैका मेलवावयाची जागा आहे. लाहोराकडील बंदोवस्त असिल्यास मनसूरअलीखानाचे लेकासारखा मातबर सोबती करून भारी फौजेनसी जावें. जरब देउन पैका मातबर मेलवावा. पटण्याकडील व वंगालियाचा मलुक सोडवावा. ठीक पडल्यास वजिरासही समागमें न्यावें परंतु त्याचे येणे पेचपाचामुळे घडेल असे दिसत नाही. दत्तवा चितावर धरितील तेच करितील. दुसरियाचे सोबतीचा” भरोसा कशास पाहिजे. तसे मनसूरअलीचे लेकापारून कासीप्रयागची नजर व आणखी कितेक बावती त्याजकडे लाउन पैका साधेल तरी साधावा. येक लाहोरचा बंदोवस्त असिल्यास हे करावे. सारांश सरकारच्या कर्जास ऐवज मातबर मिले असा मनसुवा करून पैका मेलवणे. विस्तारे उभेयतास लिहिले त्याजवरून कलेंल.† जाणजे छ * १५ रविलाखर. † बहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [९८]

† श्री * संवत १८१५ मार्गशीर्ष वद्य १२

[२७ दिसवर १७५८]

अखंडितलक्ष्मीआलकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यांसि.

सेवक बालाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीय कुशल लिहीत जावे. यानंतर तुमचे पत्र येउन वर्तमान कळत नाही. तर कोठे आहा काय वर्तमान ते लिहिणे. भारवाडात मसलत न करावी. दवावाने पैका तह करून लाहोर प्रांत मातबर सोडला आहे त्याचा बंदोवस्त करावा. ते न करिता हिकळच कालहरण करिता तरी हे मसलत नाही. लाहोरचा अदीनावेग मेला. त्या प्रांती जावे. त्याचाच कोणही [आत] जो खबरदार असेल त्यास ते काम सांगावे. बंदोवस्त करावा म्हणजे पंचवीसतीस लाख रुपये इज्ज येतील असे आहे. हे काम करावे. वजिरास सर्व प्रकारे राखावा. नजीबखानाचे पारपल्य करून वनेल तर वजीर आपण मिलोन वंगालियास जावे. जर वजीर न ये तरी इकडील खातरजमा करून वंगालियास जाउन मातबर

(५५) हे वाक्य अर्थप्रचुर आहे वगालच्या स्वारीस 'वजिराची सोबत पेचपाचामुळे घडेल असे दिसत नाही' असे तर स्पष्टच आहे पण सोबतीचा साकेतिक अर्थ निराला समवतो सोबती ह्याणजे होळकर असाही चवथार्थ निघतो

पैका मेलवावा. कर्ज वारावयास यैवज पाठवावा. इतके जागे व मातबर फौज जेथे भ्रम फार फाळ नाहीं तेथे कामाचे ठिक्क गमवावे हे उचित नाहीं. यातपरी उमदे मनसुवियाची सुरत धरून लिहिल्याप्रो करणे. वजिराचे जागे वंगालियास न होय तर मनसूरअलीचे लेकास मेलउन घेउन कासी अयोध्या वंगाला हे काम करून पनास लाखपर्यंत येवज कर्ज वारावयास पाठवावा. हे गोष्ट जरूर करणे. अंताजी माणकेश्वर यास हुजूर चिरंजिवानी बोलाविले आहे. त्यास वजिराकडील यैवज उगवला किती व रोहिल्याकडील वगैरे येवज किती उगवला याची रुजुवात करून उरला यैवज आपण गरमनरम होउन उगवे ते जरूर करावे. अंताजीपंती मागील जप्तीत व फोजदारीत व शहरात फुरोईत मनास येईल तेसे अंतर केले असे म्हणून बहुताचे मुखे श्रवण जाहाले आहे. तस्मात असेल यात संशये नाहीं. तुम्ही मुलाहिजा न कर्ना दिलीचे वकील वगैरे माहीत असतील ते हाती घेउन जरूर कळमे तहफीक करावी. फौज वजिराकडे पाचसात हजार ठेवली त्याचा यैवज म्हणून मेरठ वगैरे माहाल त्या यैवजी पंचवीस लाखाचे अंताजीपंताकडे आहेत. त्यात वसूल काय फौजखर्चा किती याचे गणतीची चौकशी तुम्हाकडील सरदार गेला आहे त्यास लिहून जितकी होईल तितकी करावी. समक्ष गाठ पडल्यावरी तिलमात्र मुलाहिजा न धरता जरूर करावी. यास अनमान मीढ न धरणे. दोघे सरदार खावंदाचे जागा व तुम्ही यखतियारी. जे नुकसान सरकारचे ते तुमचे यास्तव माहाळची व फौजेची व वजिराचे दरबारची मिलकतीची सर्व चौकशी अंताजीपंताची रकडून करावी. जुने वकील^{५६} वगैरे जो माहीत मिलेल तो हाती घेउन कळमवार चौकशी दस्ताऐवज रुजुवात सर्व ठीक मनास आणून लेहून पाठवणे. जाणजे. वेमुलाहिजा तहकिक्तात होये ते जरूर करणे. लाहोरचा बंदोबस्त होउन येक काम नवे मादबर करून यदाचे साली पंचवीसतीस लाख शा कर्जदारास धावयास पाठवणे. सर्व भरवसा कर्ज वारावयाचा दतवाचा आहे. ते जे बोद्धन गेले ते खामखा करावे. छ * २५ रविलाखर. बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

(५६) जुने वकील ह्यणजे हिंगणे जुने ह्यणण्यात भावार्थ हा की ते या वेळी कामावरून दूर होते [पिद २ ले ९१] पुरुषोत्तमपत हिंगणे केवळ शिचासमागमे होता [खंड ६ ले ३८६ ३८६] हिंगण्याचे आणि अताजी पताचे परस्पर वाकडे होते. [पिद २१ ले ९५, ९६, १००, १०५ पेद २७ ले १२६, १२९ ऐटि २ क ३१]

लेखांक [९९]

श्री * संवत् १८१५ वैश्व वद्य १२

[२५ जनवरी १७५९]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी यादव गोसावी यांस.

सेवक बाळाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीय कुशल लिहीत जाणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते प्रविष्ट जाहाले परंतु आजी तागायेत कोठीळ काय काम केले पैका कोठे मेलविला पुढे काय करणार हे काही लिहिणे नाही. मारवारात न गुतावे. लाहोर प्रांती जाउन सत्वर तिकडीळ बंदोबस्त करावा आणि मनसूरखलीखान याचे लेकास सामिल करुन बंगालियाचे कासी वगैर मातबर काम करुन पैका मेलवावा. लाहोरचा हुजूर पाठवावा. येखादे मातबर काम करुन तीन्ही बाटणीपैकी कर्ज फेडावयास पैका मातबर पाठउन द्यावा इत्यादिक कितेक रुबरु राजश्री दत्ताजी सिंदे बोळोन गेले आहेत व सर्व प्रकारे या कामात ऐशी गोष्ट बोळोन सेवटास न्यावी हा भरवसाही याचाच असे. तुम्हीं त्यासी निव्व बोळोन लाहान कामास मातबर खारीचे दिवस न गुंतता जल्दीने मोठे कामाची सोई पाहून जावे. मातबर पैका मेलउन खामखा पाठउन द्यावा. हे गोष्ट करवणें. हे या सरदारास फार अगाध नाही. दिल्ली प्रातीचा बंदोबस्त करुन कासी पत्रण अयोध्या ही कामे मंसूरखलीखान याचे लेकाचे सामिलातपणे करुन बंगालियात जावे. तिकडे फार पैका मेलवायाची सोई आहे. जरूर करावी. लाहोर प्रांती फौज ठेउन तथील बंदोबस्त करुन तथीलही सरकारात येवज फौज फेडून दाहापंधरा लाखापर्यंत राहू द्यावा. या दिवसात फार पैका येणे येकदाच कर्ज वारणे हे काही तिकडीळ पैका आल्या करीत नाही. यास्तव जरूर कबजा व मेहनत करावी. पैका मेलवावा. आजितागायेत कोठी[ळ] कायम खडणी केळी पैका कोठे काये मेलविला हे काच वर्तमान वरचेवरी लिहावे ते काहीच लिहिणे येत नाही. घरात तपसीळवार कचे निरंतर आठ दिवसाचे आतरे लिहावे. बाहेर जरूर ते लिहावे. फार थोडके लिहिता. यात काहीच कळत नाही. तरी येसे लंबचे लिहिणे लिहित न जाणे. लाब सविस्तर जनकोजी सिंदे याणी आपले हाती^{५७} लिहित जावे म्हणजे फार संतोष आहे जाणजे. छ * १४ जमादिजेवळ. हर तजुविजीने वीसपंचवीस लाख रुपये हुजूर कर्जासाठी प्रविष्ट करणे. बद्धत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [१००]

श्री * संवत् १८१५ माघ शुद्ध १५
[११ फरवरी १७५९]अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री
रामाजी अनंत [दामोळकर] गोसावी यांसि.

सेवक सदाशिव चिमणाजी [भट] नमस्कार उपरी. कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहीत जाणे विशेष. सांप्रत तुम्हाकडून पत्र येउन वर्तमान कळत नाही. त्यास प्रस्तुत तुम्हीं कोठे आहा मनसुब्याचा डौल कसकसा धरिला आहे. मातंबर काम करून सरकारचे कार्जास मातंबर येवज पाठवून द्यावा. सरकारचे कर्ज वारावे. हे तुम्हीं चितास आणिले असेल त्यास हे सविस्तर लेहून पाठविणे. राजश्री मल्हारबा येथे फाल्गुनचैत्रास येतील. त्याचे गुंतेशते उरकोन त्याची रवानगी सत्तरीच केली जाईल. लाहोराकडील वंगरे वर्तमान लेहून पाठवणे. लाहोराकडे फौज गेली होती त्यास सन मजकूरचा करार प्रो येवज आला न आला. गुा दिलीचा करार साडे बारा^{००} व्यावे. फौज पांच हजार [ठेवून] चाकरी द्यावी. येकूण सरजामच जाला. विशेष नाही. प्रस्तुत काही मंसबा बंगाला सफ-दरजंग वगैरे येखादा करावा. विशेष कर्जाची मदत जाली आहे [झाल्यास] बेहतर उतम. आजपर्यंत मामलती करार कोठील जाल्या. आताजीपंताची फौज किती भारी व सांगायारी किती. हवाले घेतले तो येवज उगवला की नाही. यासिवाय अबदालीबाबत फौज वगैरे झ[जा]टाबाबत पंचवीस लाखाचे माहाल मेरठ वगैरे दाबिले व फौजदारी वगैरे मिलोन काय येवज घेतला आहे. हुजूर येणार की नाही. [ते] सर्व लिहिणे. वर्षभर जाउन आजून येवज खारीचा न आला. आपूर्व आहे. सल्लाबाजचा येवजही पाठवणे. सविस्तर मजकूर [दत्ताजी] पाटिलबाबास सांगून उतर पाठवणे. जाणिजे छ * १२ जमादिखाखर. १' बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमापो छ २७ सावान
[२५ अप्रेल १७५९]

(५८) सन १७५७तील अबदालीच्या स्वारीमुळे राधोबा उत्तरेस आले त्यानी दिल्लीत जो कारभार केला त्याचे वर्णन या पत्रात मामिकपणे आले आहे 'गुदस्त दिल्लीचा कारभार साडेबारा घ्यावे फौज पांच हजार [ठेवून] चाकरी द्यावी. एकूण सरजामच जाला'. हे वाचनीय आहे. [पहा पत्र २१ ले १४८]

लेखांक [१०१]

१६६]

श्री

* संवत् १८१५ भाष वष १२

[२४ फरवरी १७५९]

अखंडितलक्ष्मीआढकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनत [दामोळकर] गोसावी यांसि

सेवक वाळाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उगरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहिले जाणे विशेष. तुम्हाकडून पत्र बहुत दिवस येउन वर्तमान कळत नाही. राजश्री दादाजी सिंदे यांचा मारवाडचा मातबर पैका उगवणे त्याचा उगवण्याचा विचार कसा केला तो लिहिणे व लाहूर व बंगाल व पटणे हे तीन मनसुबे प्रस्तुत मारनिलेस मातबर आहेत. त्यास लाहौरास चिरंजीव राजश्री दादानी अविनाशेग सुबेदार करून ठेविला होता तो मृत्यु पावला. त्याचा नायेब लाहौरास आहे. तो तुमचे उपयोगी असला तर कोणी सरदार फौज देउन तिकडे पाठउन बंदोबस्त करावा. बंगाल पटणें घास खारी करावी. मातबर पैका कर्जाबदल मेळवावा. बंगाल्यास क्रोड दोन क्रोड पैका मिलेल असी जागा आहे. भारी पैका मेळउन कर्जाचा परिहार करून फौज ताजी राखावी. असा विचार जाळा पाहिजे. पटणे हस्तगत करावे. ते स्थळ व्यावसायिक आहे. खासा दतबा व जनकोबानी मातबर फौजेनसी तिकडे जाउन पटणे घ्यावे. तेथे छावणी करून राहावें. तेथून बंगाल्याचा मनसुबा करावा. ते चिरंजीव राजश्री दादा बादज बरसात हिंदुस्थानास^१ येतील. तदोतर चिरंजीव व मारनिलेनी बंगाल्याची स्वारी करून मातबर पैका मेळवावा. गुदस्ताभेगा बंगाल्याची मामलत चुकवावयास वकील तुम्हाकडे आला तर चुकड नये. बंगाल्याकडील मातबर पैका धाल्याविना कर्जाचा परिहार होत नाही. भारी फौज जाउन क्रोड दोन क्रोडी पैका मेळविला पाहिजे. जर फौज न जाता पनाससाठ लक्षावर मामलत चुकवितील तरी चुकवावी. असे न होये तरी चिरंजीव तिकडे आल्यावर मनसुबा करावा. प्रस्तुत तुम्हीं पटण्याकडे जाउन पटणे काविज करावें

(५९) 'दादा बादज बरसात हिंदुस्थानास येतील तदोतर चिरंजीव व मारनिलेनी [किचाने] बंगाल्याची स्वारी करून पैका मिलवावा चिरंजीव तिकडे आल्यावर मनसुबा करावा' असे या पत्रात हाटले आहे आणि पुढील पत्रात 'इकडून चिरंजीव बुवेळखडाचे मार्ग प्रयागाजवळ येतील तुम्ही बजिरास घेउन अतर्वेधीपून यावे चिरंजीव इकडून व तुम्ही तिकडून असा भारी शह पडटाच काशी प्रयाग घ्यावी' [ले १०२] अशी योजना होती दोन्ही पत्राचा इत्यर्थ हा की राधोबा आल्यानंतर मसलतीस चालना मिळावयाची होती चातुर्मास सपताच राधोबा उत्तरेस आले नाहीत दक्षिणेस निजामाची युद्ध चालू झाले तिकडेच घुतले अबदाली अकस्मात उत्तरेस आला हाणून शिंदे दिल्ली समीपच राहिले आणि बंगालच्या स्वारीची कल्पना इत्युत्तर स्वप्नमयच राहिली.

व मुजाअतदौलाकडीळ दोनतीन कामे आहेत. कासी अयोध्या प्रयाग ध्यावे. चिरंजीवा जवळ कासी अयोध्या धावयाचा करार केला आहे. प्रयागची रदबदल आहे. तोही मनसुचा सोहळतीने होईल तरी करावा. सारांश उमदे मनसुबे करून पैका भारी मेळउन कर्जाची बोट वारून फौज ताजी राखावी. मुख्यत्वे करून हेच मर्जा आहे. गुदस्तां अवकाश नव्हता यास्तव वारा[लक्षा]वर मामलत राा विठळ सिवदेव [विंचुरकर] याणी चुकविली. येंदा मोठे काम फार येवजाचे तेच आहे. जर दिल्लीस पनास लक्षावर एरु साळा लागली तरीच विन्हे लावावी. ते सुधे बोले. देणार नाहीत परंतु जबरदस्तीने मारानिलेनी पटण्यापात्रे तो चालून जातीळ तेव्हां नरम होउन मातबर ऐवज देतील. दिल्ली प्रांती नारो शंकर अथवा आणखी कोणी दोनतीन हजार फौज ठेवावी. येंदा लाहोरा-कडीळ ऐवज आणून जरूर पावता करावा. अंताजी माणकेश्वर यास परिच्छिन हुजूर यावयाविसी लिहिले आहे. त्याचे हवालयावान्त [वाकी] राहिली. असेल तरी सरूत ताकीद करून उगवेसे करावे. वजिराकडे त्याची फौज किती व चाकर किती महिने होती. भेरठ वगैरे माहालचा येवज त्यास वसूल किती जाहाल. हुजूरचे तैनातजावत्याची फौज चारपांच हजार आहे येसे ते लिहित असतांत परंतु वजिराकडीळ फौज व हुजूरचे कराराची फौज दोन्ही मिलोन पांचसा हजार असेल. हे ते मिलोन घाळमेळ करीत असतील. यात संशये नाही. याचा शोध ने आले तरी करावा यांत सरकारची मातबर किफायेत आहे. गणतीचे निकडीची संघ पाहून महिनेमाहाळ [!] फौज चाकर ठेउन गणतीची भरती करून दाखवावी मग दूर करावी हा प्रकार त्याचा आहे. येविसीचा शोध पुर्ता करणे. मीड न घरणे. जर मीड घरणे असेल तरी मोषम चौकसी करू नये. येथे येतील मग जसे बनेल तसे केले जाईल. जर चौकसी करणे तर फारच सरूनीने खावंदगिरीने करावी. सर्व माहित मेळउन चौकसी करावी. मागे जपतीत व फुरोइत त्यानी तफावत केली असेल तेही कळमवार ठिकाणी लावणे. सारांश मळमळीत कांही न करणे. येथील मुख्य वर्तमान ईतकेच कीं क्रोड रूा कर्ज देणे. त्यास अवधी फौज घरी वसविली. वीस^१ हजार जरूरानी कामाबदल ठेविली. त्यास पैका देणे आला. तीस लाख

^१(६०) पहा ले ५९ टीप २७ पेशवाई फौज कमी झाल्याचा हा पुरावा प्रत्यक्ष पेशव्यांचाच वाचणीय आहे 'सर्व फौज घरी वसविली वीस हजार मात्र ठेविली तीस एवज देणे लागेल या स्तव ३० लाख कर्जदारास देउन ७० लाख कर्ज देणे आहे त्यापैकी ५० लाख कर्ज दस्तवानी फेडावे ह्याणोन आज्ञापिले त्यास येथील फौज कार्याकारण ठेविली ते पाहोनच ठेविली असेल कामच पडले तरी आणखी ठेवणार महाराज समर्थ आहेत फौजेची चिंता काय आहे' हे तिसरे पत्र रामराव नीळ-

कर्जदारास ऐवज पावज. वाकी सतर लाख देणे आहे. पनास लाख कर्ज तुम्ही मात्र फेडावे. एक दुसरे मातबर काम करावे वाटणी वगैरे अर्थ घ्यानात न आणिता खाभखा कर्ज फेडावे. जाते समई दतवा वोळोन गेले त्या गोष्टीवर भरोसा आहे. येविसी उ[य]भतासही पत्रे याच प्रकारे लिहिळी आहेत. तरी उमदे काम होउन पैजा मारी मिले ते गोष्ट करणे. † जाणजे छ * २५ जमादिलाखर. † आठ दिवसाआड मागीलपुढील वर्तमान लिहित जाणे. यदा केदारस[१] जाणे जाहाले होते. इमारत बहुत उत्तम जाहाली. पाण्याचे तले बलकट रुद चुनेगची जरूर बाघावे येवढे राहिले आहे. तेही फावलेयानी करावे. वरचेवर स्वारीचे वर्तमान लिहित जाणे. वजिराचा लगाम जरूर राखणे. बहुत काये लिहिणे



कठाचे पहावे [एंटि २ क्र ४१] पेशवाई फौजेची सख्या 'पसतीसचालीस हजार' अशी राबोवाने दिली आहे [पुरवरे १ ले १५९] ती यथार्थ होय [कास ले ९९] शिंदेहोळकराचे सैन्य नियमित नव्हते तथापि प्रथम १५ व नंतर २० हजार असे प्रमाण प्रत्येकी होते या मानानेच 'मराठे तो कमबेघ लाख फौज' मोजले जात असत [पिव २ ले ४ पद २१ ले ९६ कास ले १९२] याच पत्रात हिंगण्याने निजाम व सफदरजग याचेही सैन्यबल दाखविले आहे ते तुलनात्मक अभ्यासास जल्कट साचन होय तसेच इतराचेदेखील न्यून्याधिक सापडते [पिव २१ ले ५४] अस्तु ही सख्या पदरी होती तोवर पेशवा उत्तरेस येत राहिला १७४८ च्या आरभी सिद्धानी आपले बल 'दुपटीने' वाढविले ते ४० व होळकर २० एकुण ६० हजार झाले पण शाहूनंतर पेशवाईचे प्रमाण कमी झाले ते या वेळपावेतो तसेच होते बारा वर्षे उत्तरेकडे न येण्याची जी अनेक कारणे घडली त्यात हे मुख्य होय 'सा सुभे दक्षिण मोडविण्याचा' राजकीय मंत्रसिद्धीचा दीर्घकाल आणि गुजराथ कर्नाटक व बगाला इकडील महत्वाकाक्षेची अपूर्तता इत्यादिकांचे बर्म या दृष्टीने पाहाण्यासारजे आहे [पिव २१ ले ५८, १००] तसेच अबदालीने ज्या अनेक स्वान्या केल्या त्यात त्याचे सैन्यबल ठराविकच का असावे याचे रहस्य कळते [पिव २ ले ८१, १०९ पिव २१ ले ७१, ९६, ११७ पिव २७ ले २४७] १७४८तील स्वारीत केवळ मोगलाचीच फौज पण ती एकसूत्री व एकतंत्री असल्यामुळे आणि १७५२त मराठे वजिरासह सहायकारी शाल्यामळे अबदालीचे पारिपत्य झाले किंवा तो माभारा गेला आणि पुढे त्याची १७५७ची स्वारी यशस्वी का झाली व पेशवा श्रीरंगपट्टणकडे का निघाला याचे खरे मर्म समजते तसेच १७५९त सिद्धानी सामना होताच अबदाली यमुनापार होऊन नंतर बजाजच्या घाटावर सिद्धानाच पराजय कसा झाला हा विषय भीमासकाच्या चिक्लिसेवर सोडणेच बरे ले २३ पिव २१ ले ५३, ५७ कास ले २२३ ही पत्रे तुलनेसाठी जपयोगी होत

लेखांक [१०२]
१६७]

श्री * संवत् १८१५ फाल्गुन वद्य ७
[२१ मार्च १७५९]

पुगा राजश्री दत्ताजी सिंदे व जनकोजी सिंदे गोसावी यासि

आसिर्वाद उपरी. वजिराचा विचार सुधा नाही यास्तव मनसूरअलीखानाचे लेकास वजिरी दिव्हियाने पंनास लक्ष रुपये देतो परंतु येथील मर्जी कसी असेल ते कलेना यास्तव न केले. पुनरपि करावयाविसी आज्ञा आलिया लाहोरालून येउन कार्यसिधी करू सरकारचे कर्ज फेडू म्हणोन लिहिले ते अक्षरशाहा अवगत जाले. ऐसियास मातवर मनसबा करून कर्ज फेडावे हे आपणासच योग्य आहे परंतु गाजुदीखानास येथूनच स्थापिले त्यापासून हरयेक अंतर करारांत करावे [असे आढलेल तर] मग त्याचा मुलाहिजा काय आहे. कासी तो पूर्वा मनसूरअलीच्या लेकाने दिल्ली आहे चिरंजीव दादा दिलीजबल असता आपणहून धावयास कबूल होता. जर त्यास वजिरी देणे तरी कासी प्रयाग ही दोनी स्थले धावी पंनास लाख रुपये दिल्लीची वजारत देणे [तर] हे काही फार नव्हे परंतु बेरीज मात्र बोलावी. रुपये धावयास दोनतीन वर्षे लावावी याप्राय रुपये देउ केले तरी काये कामाचे. येका वर्षांत रुपये रोख धावे. या तिही गोष्टी कबूल कराव्या. तुमची पत्नी निशा व्हावी. वजीर लवाडीस आळ तरी शुजाउदबखानी गंगेवालीकडे सत्वर येउन तुम्हास नेउन आपले कार्य करून ध्यावे. तुम्ही त्याणी मिळून वजिरी करार करून धावी. रुपये धावयास दोनतीन वर्षे लावावी. प्रयाग कासी न धावी. असे असलियास विशेष त्यास वजिरी धावी असे नाही. कांती ते पंकेकरी जबरदस्त. फौज तोपखाना मोठा. जाठासी त्यासी श्रेह. याजमुले सत्वरच भारी होतील. [हे] मोगले लोक आहेत. फावलेयानी आम्हासी वाकडे वर्तावयास अनंर करणार नाही[त.] यद्यपि इतके दोश आहेत तथापि पंनास लाख रोख हातास येतात कासी प्रयाग येती असे काम होत असले तरी करावे. काही न दिव्हिया येक प्रयाग व पंनास लाख रोख दिले तरी वजिराकडे काही अंतर ठेउन करावे परंतु त्याची रीत संस्थानिकपणाची दिसते. गंगेपलीकडील समाखून असावे. दिल्लीचे खटपटीन जीव राहिला नाही. निरंतर तुमचे आज्ञेत चालावे. आबदालीचाही शह हमेशा फावलेयानी दिल्लीवर आहेच पहिला दिल्लीत ऐवज मातवर होता. मुलुकही फार होता. पातशाहाचा दबाव होता यास्तव मनसूरअलीखान वजिरीसाठी झटत होता. आता पातशाही वदबन्नीची. खजाना नाही. मुद्रक नाही असी जाली. याची रीतही गर्भश्रीमंतपणाची आहे यास्तव हे राजकारण खरेलटके या गोष्टीचा पूर्वा शोध जाटाचे मारफातीने व गोविंद वन्गळ [वुंढेले] याचे मागफा-

तीने पुर्ता करून आपगाकडील इतबारी शाहाणा मुजाउदोलापावेतो पाठउन सर्व रागरंग पाहून जर पंनास लाख रोख प्रयाग हातास येत असला तरी वजिरी बावी, नजीबखानास वक्षीगिरी विहिद्यास तीस लाख रुपये देतो म्हणून लिहिलें. ऐसियास नजीबखान पूरा हरामखोर घाट आहे. गुदस्ता चिरंजीव दादासी त्यासी काही मजा राहिली नाही. तो दिल्लीत प्रविष्ट जालिया आवदाळीचेच दिल्लीस ठाणे वसलेसे जाणावे. वेमान हरामखोर आहे. त्यास वाढवणे [म्हणजे] सर्पास दूध पाजण्याप्रो आहे. फावलेयानी त्याचे पारपत्यच करावे. मनसूर भलीचा लेक प्रयाग न देई वेरीज मात्र बोलावी रुपये चावयास तीन वर्षे खावावी असे करू लागला तरी गाजदीखानासी जे जे करार चिरंजीवानी केले आहेत ते कायम करून ते आपण येक होउन असावे. बाजद बरसात वजीर पातशाहास घेउन नीट बंगाल्याच्या सुमारे गेलिया भारी वजन पडेल. रोहिले जमिदार बहुत करून सामिल होतील. वजिरी तुम्ही येकदिल होउन बंगाल्याचा रोख धरावा. इकडून चिरंजीव सत्वरच बुदेलखंडाचे गांणे प्रयागाजवळ येतील. तुम्ही वजिरास घेउन अंतरवेदीदन यावे. भारी दबाव ठेउन प्रयाग हातास हर तरेने येईल आणि खामखा घ्यावा. चिरंजीव इकडून व तुम्ही वजीर मिळून तिकडून असा भारी शह पडल्यास मनसूरअश्रीखानाचे लेकासही मातबर नजर घावी लागेल. जर त्याणे येणेप्रो शह पडताच तुम्हास कासी प्रयाग दिल्ली नजर भारी दिल्ली तरी पातशाहा वजिरास समजून हर प्रकारे सागून त्यास वकसीगिरी घावी. हा दुसरा प्रकार. तिसरा प्रकार वजीर बाहेर न येई तरी तुम्हीच जाउन मुजाउदाल्या मेलउन घेउन कासी प्रयाग मात्र त्याजवळून घ्यावी रुपये न मागता त्यास दवणे बंगाला प्रांती निमे देऊ करून तो तुम्ही मिळून जाउन बंगाला सोडवावा व ऐवजही मातबर मेलवावा. या तिही मनसब्यात जो पका बनेल तो करावा. दिल्लीत लाहान वकील [पुरुषोत्तम हिंगणे] लबाळ फार बोलत असतात. येकास पके पाचाचे राजकारण आणिले तरी येकाने दाहाचे आणावे उगीच गोष्ट फुगउन राजकारण अडकउन पाडावे. निशेस था फा नाही. तुमचा सरल कारभार यास्तव हरयेक राजकारण पके निशेस कोणते हा शोध आपला इतबारी ज्याकडील राजकारण येईल त्याकडे पाठउन पके करून तो मनसबा करावा. तूर्त तुम्ही लाहोर प्रांती गेला तिकडेही काम फार आहे याजमुळे उशीर लागेऊ. छावणीही तेच प्रांती होईल. तेन्हा हा मनसबा बाजद वरमातेवर जाईलशे वाटते. तथापि सत्वर लाहोराकडील बदोबस्त होउन छावणीस तुम्ही दिल्ली आसपास आला तरी ही राजकारणे रूबंकार पडून येतील. तेन्हा नीट शोध करून

ज्यात मातबर पैका पनास लाख पाउण करोड कर्ज^{६१} वारावयास हातास येतातसे दिसेल [ते] तिलमात्र संशय न धरता करावे. ' छ * ११ रजव. बहुत काय लिहिणे हे वासिर्वाद.

पो छ २४ साबान. मुा सतलज नदी.

[२२ अप्रैल १७५९]

(६१) छत्रपतीच्या कर्जाची सख्या तरी सापडते परंतु पेशव्यास कर्ज किती होते हे गूढच आहे. आफडा कोठेच बाढळत नाही उपलब्ध साधनांची चिकित्सा करू जाता 'तीस लाख कर्ज जाहाले' असा लेख आहे [पुरंदरे १ ले २१३] तेव्हा १७५०च्या अती ऋण फारसे उरले नसावे असे अनुमान होते [कास ले ९९] आणि निजामाकडून 'खजिना' मिळविण्याची जी अपेक्षा होती ती 'कर्जपरिहाराय' मानली तर त्याची कल्पना बरीच निश्चित होऊ पहाते. [ले ७ खड ३ ले ३७२] ईश्वरसिंगाने विषप्राधान केल्यानंतर राज्य माववसिंगास मिळाले त्यासंबंधी करार काय होता हे कोठे कळत नाही. 'रोहिले कापून काढिले तीन ऋषी द्रव्य व पचवीस लक्षाचा मुलुक अनवदोमधे देव केला' [खंड ३ ले ३८३] हा विक्षिताचा कोटिक्रम कदाचित अतिगयोक्तीचा मानला तरी 'सफ्दरजगाने साहित्य करून कोड रुपये सरकारात घातले' हे हिण्याचे वर्णन वास्तविक असावे [पिद २७ ले १२६ ले १३] अबदालीविरुद्ध सोवती गेले त्या वेळी बादशाहाने '३० लक्ष सपयाचा करार केला होता [खंड १ ले १] त्याची निशा घेतलीच' होती फिरोजजगान्या राजकारणात किती रकम पदवी पडली असावी हे सहज लक्षात येईल असे असता 'पनास लाख नवे कर्ज जाहले'. [ले २६] 'तुम्ही एवज दिव्हा तो कर्जदारास दिव्हा परंतु वाकी कर्ज बहुत होते एकदाच चालीसपनास लाख यावे. येताच कर्ज वारावे परंतु तो अर्थ न घडला' यासाठी 'पचवीस लक्षाची वेरीज सर्वास सागितली. हिंदुस्थानात जे मातबर आहेत त्याची यादी चिरंजीवास पाठविली' [ले ५१] त्याची बरीज 'पाउणसोळा लक्ष होती [पिद २ ले. ७५] एवच ४० लक्षाची कर्जपटी झाली 'मारवाडची मामलत ५० लक्ष करार जाहाली' [पिद २७ ले १२८] 'कोटियाची ४० लक्ष नजर केली' [पिद २ ले ६६] 'कर्ज वारावयास पनास पाउण करोड येई तो अर्थ करन दाखवणे' अशी आज्ञा होळकरासह सखारामपत बोकिलास होतीच त्याने 'जाटाचा फँसला ३० लाखावर केला' [पिद २१ ले ६०] नवीन वादशाहाशी 'साडेव्यासी लक्ष मुकरर केले ४० लक्ष येदा वाकी पुढे या प्रकारचा तह ठहरला'. [पिद २७ ले ९०] जयपुरचे 'साडेसोळा' जाले [पिद २७ ले १०८] गिदेबोकिलाकडील वेरीज करून पहाता ७५ लक्ष पेशव्यास पोचले तरी 'फौज घरी वसविली बीम हजार मात्र ठेविली ७० लाख कर्ज देणे आहे ५० लाख कर्ज तुम्ही फेडावे' अशी सतत दुमणी मार्गे होतीच [ले १०१] कर्जपटी सवधी होळकराने ३० आणि शिंद्याने २० दिले ते वेगळेच [ले ५१ १०६, १०८] इतके झाले तरी 'सवा ऋषी वीड ऋषी कर्ज मागील दौलतीवरील' राहिलेच [खरे १ ले ५५] पण हा निर्देश पानिपतोत्तर होय याच कर्जापायी 'जोथाई सरजाम सरकारात द्यावा असा करार होऊन सरदारावर गडतु चढवून सरकार किफायत केली' [खंड १३ ले ७९ खरे २ ले ३७४] तरी 'दौलतीस कर्ज आहे ते वारावयाचे' राहिलेच [इस २१ पान १३६] हा कर्जरोग असाव्य होता कारण 'दक्षिणोत्तर सुवर्णनदी प्रवाह सगम सगरकूप समान पुण्यस्थली पूरयुक्त योग घडणे तेव्हा ऋणोद्धार

प्रेखांक [१०३]
१६८]

श्री * संवत् १८१५ फाल्गुन वद्य ७
[२१ मार्च १७५९]

पुा राजश्री दाताजी सिंदे व जनकोजी सिंदे गोसावी यांसी

आसिर्वाद उपरी. अंताजी भाणकेश्वरास हुजूर परिच्छिन्न दादानी मनापासून येथील आज्ञेप्रोा वोलाविले असे असता हर प्रकारे उशीर लाउन राहातात. आम्हास लिहितात की दत्तबाजी राहविले यास्तव महिनाभर राहिलो. वजिराची दत्तबाची भेट होताच दरमजल येतो. साप्रत तुमच्या लिहिल्यावरून दिसून आले की लत्राडी करून राहतात. हर प्रकारे ऐवज हाताखाळी घाळून हात उगवणार. आम्हाचा प्रमाणिकतेचा स [द] रकार त्याणी टाकिलासे दिसते यास्तव पत्रदर्शनी तिलमात्र मुळाहिजा न धरिता हुजूर यावयाविषई सख्त ताकीद करावी. न य तरी परिच्छिन्न वोलाउन आणून कैद करून त्यास हुजूर पाठवावे. तिलमात्र मुळाहिजा करू नये. मागे त्याणी जितक्या ऐवजाचे हवालें घेतले होते तो मात्र ऐवज ताकीद करून उगवावा. या साळचे वजिराकडील अधवा कोणीही ऐवज अंताजीपंताचे हाती न जाये ते करावे. तो येवज जमा करून हुजूर जरूर पाठवावा. अंताजीपंतास पत्रदर्शनी न येत तरी कैद करून पाठवावे. १
२* २१ रजव. हे आसिर्वाद.

लेखांक [१०४]

श्री * संवत् १८१६ चैत्र वद्य ६
[१८ अप्रेल १७५९]

अखंडितलक्ष्मीआळंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत [दामोळकर] गो

सेवक दाताजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उपरी. येथील कुशळ आणून स्वकीये कुशळ लिहीत जाणे निघेप. राजश्री माधवराव प्रयाग दिा चिटणीस हे राजश्री जनकोजी सिंदे याचे चिटनिसीस^{६९} आहे त्यास यांचे कामकाज यांचे हातून घेउन कैदकानु हुजूर-

अमसार्थक इहलोक परलोकी उत्तम होणार' अशी नीतीच होती [खड ६ ले १६०] अफाट फौजेचा संसार कोणा एकासच चालवावयाचा नव्हता प्रपच इतर कसे चालवीत होते याचे निदान करायलास हवे आहे तसेच स्वामीच्या कर्जाचा फाट स्वतःच्याची वाट आणि स्नेहाची अटाट चिंतनीय आहे कर्जाची कथा किंचित कौतुकास्पद असल्यामुळे दिग्दर्शन करणेचे वाटले

(६२) या वेळी हिंदुस्थानची 'मुस्त्यारी' शिबाकडे होती ह्यापून चिटणीसीकडील हे कारकून त्याच्या स्वारीसमागमे आले होते पैशवाईतून फडणिसी व चिटणीसीकडून शिबाकडे नेहमीच कार कुनाची योजना केली जात होती असे जे निघान राजवाड्याने केले आहे ते अवास्तव होय [खड १३

प्रो. येथोचिचि चालवीत तें करणे. यांचे सर्व प्रकारे सरकारानं जरूर यावस्तव हे पत्र तुम्हांस लिहिले असे व राजश्री श्रीपतराव यादव यांचे तर्फेने राा महादाजी रघुनाथ खासगीची चिटनिशी करीत आहेत. हालीं उभयतांही सिंदे यांबराबर आहेत. त्यास उभयतांचे पूर्वी पासून चालवीत आले त्याप्रो हांलीही चालवीत ते करणे. त्यांत कोण्ही खटखट करील त्यास बरेचजेने ताकीद करीत जाणें की राजश्री महिपतराव चिटनीस परंपरे सांगणे ते स्वार्थी स्वदेशीं आलियायरी सांगतील. धंदा मारनिळेचा असे. ' जाणजे * छ २० साबान. सुभा तिसा खमसैन मया व अळफ. ' वहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [१०५]
१७१]

श्री * संवत १८१६ वैशाख शुद्ध ६
[२ मे १७५९]

अखंडितलक्ष्मीआळंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत [दामोळकर] गोसावी यांसि

सेवक शालाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीय कुशल लिहीत जाणे विशेष. सुज्याअतदौलाजवळून पनास लाख रुपये घेउन

ले २ टीप २] या भागात या विषयावर अनेक पत्रे आली आहेत त्यावरून असे दिसून येईल की, गिंदेहोळकराकडे जी 'मुतालकी' होती त्यापुरताच याचा सवघ पोहूचे अतस्थ कारभारात त्यांचा मुळीच ससर्ग येत नसे गिंद्याचे कारभारी मडळ अगदी स्वतंत्र होते त्याची योजना फडणिसी किवा चिटणिसीकडून होत नसे मुतालकीपुरतीच ही व्यवस्था होती रामाजी अनंत दामोळकर हा फडणिसीकडील कारकून होता तो गिंद्याचा दिवाण झाला. त्याचा अर्थ असा नव्हे की दिवाणगिरीची योजना फडणिसीतून होत असे पानिपतावर दामोळकर वारला. तेव्हा त्याच्या जागी फडणिसीतून दुसरी योजना झाली नाही फडणिसी हा मानुचा दरक असूनही तेथून योजना झाली नाही किंबहुना गिंद्याकडील फडणिसी चितो विठ्ठल रायरीकराकडे गेली आणि ती बोडपच्या लढाईपर्यंत राहिली त्यामुळेच रायरीकराची पत्रव्यवहार पहावयास मिळतो तो सघानरूपी नसून साप्रदायपर होता इतराप्रमाणे गिंद्याच्या अतस्थ कारभारातही दबळाडवळ करून पैसे उकळावे अशी दादासाहेबाची इच्छा होती त्याचे प्राबल्य होते तोवर हा प्रकार अल्प काल दिसतो. एरवी त्यापूर्वी तसा भाग मुळीच नव्हता आणि पुढे तो प्रघात पेशव्याने बढही पण केला. 'नवे दिवाणजी जाले. त्याणीं भारूड घातले की तुमचे जुने फडनीस पोतनीस बक्षी व पागे यानी सरदारीचे डील चालवावे नाहीं तर नवे मी करितो ते चालवितील. याप्रमाणे भारूड दाखवितात यजमानाचे चिती गोष्ट येत नाही की जर याप्रमाणे जाले तर आह्मी सरदार मात्र नावाचे राहू [दिवाणजीस] येथील कारभारी दबतात यैसा प्रकार नाही जाणोन स्ति भित राहिले' ज्या कालाचा महिमा राजवाड्याने वाखाणिला त्याची वस्तुस्थिति संक्षेपत. दर्शविली आहे.

बजिरी घावी. अंतर्जाती माणकेश्वर यास दिल्लीच्या कारभारातून काढावे हा मनसुबा. दुरा नजीबखानाजबलून तीस लाख घ्याचे. त्यातून तिरा आपणच पातशाहातेचा बंदोबस्त करावा. याचे सेवटवर कसे ते ल्याहाचे तोपर्यंत लाहोरालून घेउन म्हणोन [लाहोर]ाचे पत्री मजकूर. त्यास बज्जीर दादानी सर्व प्रकारे आपले करून ठेविले निर्वळ आहेत. याजपासून केल्या करारात अतरही काही नाही. असे असोन मुज्जाअतदौलाचा मनसुबा करणे योग्य नाही. तत्रापि करणे तेव्हां जर पक्की निशा पनास लाखाची सहा महिन्यात होती असे दिसल्यास बज्जिराजबलून केल्या कारभारात अतर मातबर पडल्यास बज्जिरावर जाटानी व मुज्जाअतदौलानी येक होउन याचे. तुम्ही मुज्जाअतदौलाचा पक्ष न करावा. जर मुज्जाअतदौलाचे पके राजकारण नाही तर बज्जीर पातशा बाहेर काढून मुज्जाअतदौलाचे पारपत्य करून मातबर पैका मेळवावा. जर हे गोष्ट बज्जिराजबलून न होये बाहेर न निघे तेव्हां दिल्लीतील कारभार बज्जिरावर सोपून मुज्जाअतदौला व आपण येक होउन कासी प्रयागचे काम करून घेउन पूर्वस जावयास मुज्जाअतदौला सामिल करून घेउन त्यास निमे बंगाला देउ करून मातबर पैका मेळवावा. लाहोर प्रांतीचा बंदोबस्त उतग प्रकारे करावा. चिरंजीव दादानी अबदाली [अदीनावेग] ठेविला होता त्याचाच कोष्टी मातबर इतवारी ठेउन तो कारभार नीट करून सारा पैका हुजूर येई ते करावे. इत [को] करून दिल्लीतील बंदोबस्त होउन पूर्वस जावयास वादज बरसात ठीक पडेल. येदा छावणी दिल्लीची कराल तेव्हा सोई पडेलसे दिसते. अंतर्जाती माणकेश्वर यास वारंवार हुजूर बोलाविले असता येत नाही. बज्जिराकडे पनास लाखाचे हिसेब काढून तेथेच गुतले. कितेक लढाडया करितात. त्या तुमचे प्रत्ययास येउन त्यास ठेउ घेता. मेरठ कौरे परगणे मधीच खातात बज्जिराजबल हजिरी बारा हजार फौजेची लटकीच देतात. ही चाकसी करीन नाही. अपूर्व आहे. याउपरी त्यास पत्र पावताच हुजूर पाठवणे. सुप्रयुक्त आले तर बरे. न आले तर धरावे लुटावे. [मात्र] माल सर्व सरकारांत लावावा. मेरठ कौरे सर्व माहाळ सरकारात टावावे. बज्जिरावर पाच लाख रुपयाची बरात जिरंजीवानी दिली आहे ती सरकारात नसूळ घ्यावी. त्यास याउपरी एक पैसा न द्यावा. जर ही गोष्ट जबरदस्तीने न करिता अंतर्जाती हुजूर आला तर त्याचा येक लेक हजार रावतानसी ठेवावा. बाकी फौज बज्जिराजबल चाकरीस पाहिजे [तरी] ते दूसरी नेमून घ्यावी. परंतु अंतर्जातीस ठेउ नये. याउपरी त्याचा काहीयेक मुलाहिजा न करिता कैद करून पाठवणे. तुम्ही कारभारी मिडेस न पडणे जाणिजे. नजीबखान बट अर्धा अबदाली. त्याचे राजकारण न करावे. मुज्जाअतदौला व जाट येक जाहल्या भारी. उपयोगी नाहीत. यापेक्षा आहेत बज्जीर ते फारच उपयोगी.

परतु मुजातदौला सहा महिन्याने पनास लाख रुपये खरेखुरे देतात या वजिराजवद्दन एकदोन मातबर अंतरे याची तगिरी करवियाजोगी जाहाल्यास मुजातदौलाचे काम जरूर करावे. मातबर लाभ सोडू नये. यांचा विस्तार उभयता सरदारास लिहिला असे. तो मनात आणून उतम दुरंदेशीने सरकारात मातबर लाभ होउन येथील लक्षाने वर्त असे प्रकारे जे तुमचे तेथील माहितगिरस बनेल ते करणे. बरचेवरी कचे वर्तमान लिहित जाणे. जाणजे. १ * ४ रमजान. बहुत काये लिहिणे. अंताजीपतास जरूर हुजूर पाठवणे. सहसा रजबदल आयकू न देणे. लक्षा प्रकारे वजिरासच राखावे. कदांचित तो कगरात वाकडा वर्तत असला तर मात्र मातबर लाभ पुर्ता दृष्टीस पडला तरच मुजातदौलास हाती धरावे. परतु कासी प्रयाग हरतबवीजेने साधावा. विशेष काय लिहिणे. कर्जाची चिंता दतवास असेलच. जाणजे.

लेखन
सीमा

लेखांक [१०६]

श्री * संवत १८१६ वैशाख वद्य १४
[२५ मे १७५९]

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत [दाभोलकर] गोसावी यांसि

सेवक वाळाजी बाजीराव प्रधान नभस्कार उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहीत जाणे विशेष. पत्र पाठविले ते प्रविष्ट जाहाले. दिळीचे काम उरकल्यावर कूच करुन कुरुक्षेत्रास आलो. लाहोराकडे फौज पाठविलीच आहे म्हणून विस्तारे लिहिले ने कलले. ऐशास येविसी राजश्री जनकोजी सिंदे व दताजी सिंदे यास लिहिले आहे त्याजवरुन कलेल. निरंतर तिकडील वर्तमान लिहित जाणे. १ * समयोचित दाहा लाखाच्या हुंडया पाठविल्या त्या पाउन बहुत संतोष भरवसा वाटला. फार पका मिलाळा नसता बोढ सोसून सरकारचे कर्जाची चिंता मनात आणून ऐवज पाठवणे हे गोष्ट ईश्वरे यासच दिल्ली आहे. पुढे दसरियापात्रेतो दाहा लाख येउन पावल्यास बहुत सोय होईल. छ * २७ रमजान. बहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [१०७]

श्री * संवत १८१६ ज्येष्ठ शुद्ध ४
[३० मे १७५९]

अखंडितलक्ष्मीअलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत [दामोळकर] गोसावी यांसि

सेवक बाळाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहीत जाणे विशेष. जंजीरा व मुरत येथील पातशाही फरमान^{६३} करून घ्यावे म्हणून विस्तारे राजश्री दत्ताजी सिंदे यांचे पत्नी लिहिले आहे त्याचवरून कलेल दोन्ही स्थले सरकारांत जरूर घ्यावी लागतात यास्तव सनदा जरूर घेउन पाठवणे. १ जाणजे छ * ३ शौवाळ शुभा तिसा खमसेन मया व अलफ. बहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

पोा छ ६ जिल्हेज सन सितेन.

[३१ जुलै १७५९]

लेखांक [१०८]

श्री * संवत १८१६ ज्येष्ठ शुद्ध १५
[१० जून १७५९]

अखंडितलक्ष्मीअलंकृत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत [दामोळकर] गोसावी यांसि

सेवक बाळाजी बाजीराव प्रधान नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहीत जाणे विशेष. पत्रे पाठविली ती पावली. तिकडील कामकाज जाहाल्याचे वर्तमान विस्तारे लिहिले तें कळेल. येसियास घालपरी उतम प्रकारें वंदोवस्त होउन पोस्त येवज हातास येई ते गोष्ट करणे. वारंवार तिकडील सविस्तर लिहित

(६३) 'पातशाही फरमान करीन घ्यावे' म्हणून अताजी माणकेस्वर यास पेशव्याने पूर्वी लिहिले होते [येद २१ ले. १४३ पेद २७ ले २३०] ते अद्याप मिळाले नव्हते असे दिसते गुणदोषविषयच करीत असता मानासाहेबाच्या चरित्रकाराने जायद, पवार होळकर इत्यादि मराठ्यांपिथीचे उद्गार काढिले आहेत त्यास स्वत चरित्रनायकदेशील अपवाद ठरेल काय ? पेद १५ ले ८६ या चावतीत चितनीप होय 'आनवराव शाहूराजाकडून आहेत त्याची आम्हाची नीट नाही सवव निरोप धावा हिंदुस्तानात जाया वतनी चावी सरदेशपाहगिरी दक्षिणची वतनी करून वंदोवस्त रावपत याचे विचमाने कराया' इत्यादि धटी कळाच्या धोतक आहेत हे हसखीर न्यायाने न्याहाळावयास पाहिजे

जाणें. १ दाहा लाख ऐवज समयोचित पाठवला येणेकरुन प्रत्येयास आले की दूतवास येथील कर्जाची चिंता आहे. पुढे दसरियाआलीकडे दाहानारा लाख ऐवजी पाठवित ते करणे. अंताजीपंतास परिछिन फौजसुधा हुजूर पाठवणे छ * १४ सवाल, वहुत काये लिहिणे.



पो छ ७ जिल्हेज.

[१ अगस्ट १७५९]

लेखांक [१०९]

श्री

* १८१६ ज्येष्ठ वद्य १३

[२२ जून १७५९]

पुा राजेश्री माहादाजी गोविंद^{६४} [काकडे]

स्वामी गोसांवी यांसि

विनंती उपरी नारो शंकर याची मामलियेत सारी चोवीस लाख रुपयाची ल्यांजवरी छतीस लाख रुपयेपर्यंत आहेत व अकारतीळ यसे प्रकारे मजकूर होत होता तो सर्व तुम्हीं ममजलाच होतां. ल्याजवरी मारनिलेची मामलियेत काढून तुम्हास चिरंजीव राजेश्री दादानी सांगून पाठविले तेव्हां तिसा लाखाचा अजमास करुन दिल्हा. तुम्हीं पुण्यात पेशजी अठावीस लाख रुपयेपर्यंत कबूल करीत होता. ल्यास -तुम्ही मामलियावरी गेलियावरी मागील जमानंदीची अजमास पाहोन पुढे मामलियेत विल्हेस लाउन जमानंदी आकारली असेल ती कसी आकारली. काय वेरीज जाहाली हे लेहून पाठवणें म्हणोन वारंवार पत्रें गेली. तत्रापि तुमचें काहीच लिहिलें आलें नाहीं. किती रुपया आकारेल हळ कळ नये हका मोवम मात्र लिहिली येतांत की मागील जमानंदीचा काही थाक नाहीं तत्रापि सरकारचा रुपया आकारेल तो आकारुन क्तिफायेतच करुन दाखउ परंतु

(६४) याचे उपनाम काकडे होय. हा प्रथम गायकवाडाकडे राहून नंतर पवारकडे होता. [पिव २७ ले १४९] तेथून या वेळी तो पेशवाईत कसा आला हे या पत्रावरून समजते. या पुरुषाचा पायमुण्ण असा की जिकडे जावे तिकडे मारुडच उभे राहावे. नारो शंकरास तो अकारण भोवला असे पत्रच सांगते बुदेलखडची कमाविस याजकडे गेली तेव्हां नारो शंकर सिद्याकडे आला तेव्हापासूनच त्याचा प्रत्यक्ष सवध सिदेवाहीची घडला तो १७६६ पर्यंत राहिला. अस्तु. हा काकडे १७६४सात मानाजी सिदे फाकडे याचा दिवाण झाला. फाकडयाची सरदारी राहो अथवा जावो पण याला दिवाणगिरी मात्र हवी होती. त्याच पार्श्वी त्याचे सिद्याशी वाकडे पडले. ते इतके की चकमकीपर्यंत पाळी येऊन त्यातच त्याचा अंत झाला. [खड १३ ले. १५]

यात काये आकार ते कचेना. मागील आकार नाही म्हणावा तरी मीरखाना^{६५} [टोके] तेथं होते तेव्हा तुम्ही जमाबंदी आकारली. ते नारो शंकर याचे मागील तीस वतीस चवतीस असे इस्तावियाने होते त्याच अजमास आकारली असे याचेही सांगणीन आले व पहिलेही चालीस लाखपर्यंत गुजराईसीचा प्रकार हाही मासला आहे व हली येथे कितेक क्षेप निक्षेप निशा वरून मामलियेतही कर म्हणनात की थंदा सन सितेन छतीस लाख. पुढे दरसाल चढता चढतां येक लाखप्रमाणे पांच सालेंप्रो पाचवं साली येकेतालीस लाख घ्यावे. याजवरून व मागील आजमासे पाहता छतीस थंदा व्हावे पुढेही अकार होईल असे वाटतें परंतु तुमचे काहीच लिहिले येईना. काय आकार नेही कलेना. यात तर सरकारचा रुपया फार दिसतो. हा कसा बुडवावा. तुमचे काय ते कळले पाहिजे याज करितां सविस्तर लिहिलें असे. तरी साल मजकुरापामून पुढे दरसाल चढतां चढ लिहिल्याप्रो मामलियेत व्हावी असे असल्यास तुम्ही सरकार किफायती इतवारी आहां रुपया साधालच परंतु तुम्हांस सेवटवरी कोठवर होतें न होतें ते स्पष्ट कळलें पाहिजे. तरी पत्र पावताच सविस्तर उगउन लेंहून पाठवणें, येथें उतर चालिसा रोजानी येउन पोहचलें म्हणजे काय तो विचार केला जाईल. जर दिवम अधिक लागले तर मामलियेत तटती कीं काये विल्हेस लाविली जाईल ऐसे पस्ट समजोन सत्वर जळद उतर पाठवणे. थंदा छतीस लाख रुपये घावे. त्यात दहा लाख अजमासे सिवदी वजा होउन बाकी सवीस लाख रुपये राहिले. त्यात पंधरा लाख रुपये रसद घावी. बाकी राहिले ते पुढे पावते करावें असे बोलतात. तरी तेही समजोन उतर पाठवणे. तुमचे अजतागायेत लिहिले आले त्यात तीस लाख अजमास बेरीज. यास पुढे तपसील रुपया सरकारात दिल्या वराता जाहाल्या त्याचा इतकेच. परंतु तुम्हीं गेलियानरी जमाबंदी फळाणी ठरली असे काहीच लिहिले न आले याजमुळे काहीच क[ळ]त नाही. तर सविस्तर लिहिणें. तुम्हांकडे मामलियेत तुम्हीं गुजराईस राहू देणार नाही. यास्तव तुमचे पुतें लिहिले आल्यावरी काय ते करावें लागते. सबब जल्दीन उतर पाठवणे. साराश सिवाये सेवडे नारोपंताकडे चोवीस जाळे. तेव्हांच माहितगार चालिसाचे अजमास म्हणत होतें. तुम्हीही अठवीस बोलत होता. सेवडे चारपाचाचे राज्य. निमे दोनअडीच घेउ असे नारोपत म्हणत

(६५) या टोके घराण्याचा सवध उत्तरेसी प्रथम १७४६पासून आढळतो [पेद २१ ले. १४] हे टोके बुदेलखडात नारो शंकर गोविंद बळाल बुदेल व रघुनाथ हरी याजकडे तैनातीस होते पेद १९ ले. २५तील मीरखान बागरीवाला हा टोकेच शैता [ले. १२१] नंतर जी फौज शिवाकडे तैनातीस राहिली त्यात हे नाव १७८०पर्यंत पहावयास मिळते

होतें. सवादनअडीच जमाही येक साल ल्याणी केलें. या अजमासें तीस पहिलेंच आहेत. लाखा दो लाखाची कसर. जुनें मामलेंदारही म्हण[वी]त होतें. यात विशेष जालें नाहीं. तुम्ही आमिरीनें काम करुन दाखविणार हाच भरोसा होता परंतु दोन वर्षे जालीं. मामला उगविला परंतु जमाखर्च अजमास मागील जमा हुजूर न लिहिली. मागील जमेवाचून पुढें काम कसें जाले असेल x x मात्र फार लिहितां. हे उत्तम नाहीं. हलीं साल मजकुरी छतीस पुढें चढते लाखाप्राय पाचसाला हेळशात मागील जमाही पचतीसछतीस आहे. कर्जपटी व सेवडे नजर वगैरे करुमे आहेत. या अजमासें मागील येवज वराता वगैरे पात्रावा व पुढील करावयाचा अजमास व सन समान तिसाचा अजमास जमेचा व मागील जमेस नफा जाजती कसे काय जाले. पुढे मामला कसा पुरवतो हा साफ श्रावणशुद्धांत उतर येउन पोहोचसे करणें. ज्या कर्मासाठी पहिली घालमेल जाली तेसेच पुढे नीट समजेना असे जाले तेव्हां काये कामाचें. लिहिलेप्रो तुम्हीच करुन दाखवावें हे उत्तम. तुमच्यानें न होई तर साफ लिहिणें. तसी तजवीज करु.

१७ * २६ माहे सवाल श्रुगुवासरे. दोन प्रहरीं.

१८.न तिसा. चालिसा रोजाची मुदत जाबाची.

[२२ जून १७५९]

लखांक [११०]

श्री * संवत १८१६ ज्येष्ठ वद्य ३०

[२४ जून १७५९]

राजेश्रियाविराजीत राजमान्य राजश्री

रामाजी अनंत गोसावी यासी.

सेवक रघुनाथ बाजीराव [भट] नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहीत जाणे विशेष. ईकडील वर्तमान सविस्तर राजश्री जनकोजी सिंदे व राजश्री दताजी सिंदे यासी लिहिले आहे ल्याजवरून कलेल. जाणिले छ* २८ सवाल. सविस्तर मजकूर केसो गोविंद [?] सागता कलो येईल. वहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

लेखांक [१११]

श्री * संवत् १८१६ आषाढ शुद्ध १३
[८ जुलै १७५९]

अखंडितलक्ष्मीआळंकृत राजमान्य राजश्री
रामाजी अनंत [दाभोलकर] गोसावी यांति.

सेवक रघुनाथ बाजीराव नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहिणें विशेष. तुम्हीं विनतीपत्र पाठविले प्रविष्ट जाहाले. लिहिले वृत्त समिस्तर अवगत जालें. याजउपरी जाले वर्तमान धरचेवरी लिहित जाणें. येथील वर्तमान तीर्थरुपाचे पत्रावरून फलेल. या जाणजे छ * २२ जिल्काद. शुभा सितेन मया व अल्प. १ वहुत कायें लिहिणे.



पो छ २५ मोहरम.
[१८ सितबर १७५९]

लेखांक [११२]

श्री * संवत् १८१६ आषाढ वद्य ११
[२० जुलै १७५९]

नमस्कार. शुभा चिरजीव दादाजवळ मल्हारबा नीट^{६६} न वर्तले. नजीबखानाचे कामास गैरपेचपाच बहुत केले. हा सर्वत्र लौकिक जाहाला यास्तव संशय उत्पन्न

(६६) हे पत्र महुत्वाचे आहे मल्हारजी होळकरासंबंधी पेशव्याचे मन किती विटलें होते हे स्पष्टच आहे. शिवेहोळकरांचा समेत यापूर्वीच परस्परे झाला होता अशा प्रसंगी पेशव्यांनी वितुष्ट वाढावे हे नवल होय. पेशव्यांची समदृष्टी नव्हती असा आक्षेप होळकराचा होता तो या पत्रास मान्य आहे कर्जांची फाळणीदेखील याच दृष्टीने झाली 'शेवटीं निखालस सर्व प्रकारे जाले' तरी होळकरांच्या मनानून अढी गेली नाही मालकीच्या तहापासून जो किंतु पडला तो १७६३ च्या साली दहा लक्षांची जागीर घेतल्याशिवाय गेला नाही. [चंद्रचूड १ ले ५४] अस्तु स्वारस्य होळ्म होळ्कर चादकगहून उत्तरेस निघाले ते जयपुरास कधी पावले हे पहाणे अवश्य आहे याविषयी प्रकाश पाठणारी पत्र दुर्दैवाने अद्याप उपलब्ध होत नाहीत कार्तिकापूर्वी इंदुरीहून महत्पुरास होळकर पावल्याचा केवळ उल्लेख सापडतो. [चंद्रचूड १ ले ४९, १३७] या पत्रामुळें भाग २ ले ६१चा काल चुकीचा ठरतो. सदर पत्राची तारीख २५ जून १७४८ अशी आता घराची लागेल

लाहोराच्या स्वारीनंतर पेशवेहोळकरांच्या भेटीचा जो प्रकार कॅम्पबेरीत वर्णिला आहे तो आजवर 'चमत्कारिक' वाटत होता पण आतां त्याची बरीच निश्र्चिती होते. सुखठणकराविषयी होळकराचे मन मलीन होतेच त्यात ती पेशव्याचा दिवाण झाला मालकीच्या घाटघात त्यांनं मेळ मारली तेव्हा 'रामचंद्रबावा दरबारी नसावें' येसा किंतु जो पडला तो काही निवाला नाही' [पिव २१ ले ४९]

होताच चांदवडाहून पुढे न येता तेथे जाहिराना माधवसिंगाचे निमित्त ठेउन फौज ठेव लागले × × × कारभारी येथे पाठविले. दरबारचा रागरग पाहावा वचनप्राण घेउन या [या] प्रकारे केले. गंगोबानी स्वखारामपंतानी समजाउन सांगितल्यावर येथे आले. तीनचार हजार फौज समागमें. भेट वसवसानेच घेतली. प्रथम येकदोनदा दरबारात येता सेदोनसे खाशानसी यावे ऐसे करीत होते. मग चिरंजीव भाउनी त्याचे डेरियास जाउन बहुत प्रकारे फजीत केले. मग सावेपणे पूर्ववत येउजाउ लागले. ईतक्याचखाली येक महिना गेला. मग निवल्यावर आम्ही कर्जेपटीचा मजकूर केला तेव्हा बहुतच उब्या मारून मतलब घातला की सुलतानपुर दरोबस्त थावे. गुा दतबास सिदखंड दिल्ले. आम्हासही सुलतानपुर बावें. ऐसी रदबदल पडल्यावर आम्ही म्हटले की कर्जे सारे तुम्ही फेडावे म्हणजे परगणा देउ. ऐसी रदबदल बहुत प्रकारची गरमनरम महिना भर होउन सेवटी मुंकासा खेरीज करून मोगलाई बावती मिलोन सुलतानपुर सरजाम दिव्हा. गुा सिदखेड^{६०} घेतले यास्तव हे यास देणे पडले. प्रथम चालीस लाख कर्जेपटी दतबा व ते मिलोन करार केली होती. हा परगणा आम्ही देत नव्हतो परतु गुा तुम्हास दिव्हा आणि त्यास न दिव्हा म्हणजे ठीक दिसत नाही. कष्टी होउन जातात वीस लाख कबूल केले तरी सुचे देणार नाहीत व आपले तरफेने थोर सरदार आहेत त्याजवर कृपा त्यात करावयास अंतर न करावे हे उचित जाणून सुलतानपुर मुकासा

त्यात कर्जेपटीचें खूळ माजले त्यांमुळे पारा विशेषच वाढला. कर्जेनिवारणार्थ कोटचावधि द्रव्यप्राप्ती करून दिली असता असले चाळे होलकरास खपावयाचे कसे एवच सहा वर्षे तिकडे दुर्लक्षच केले. शेवटी उत्तरेकडील स्वारींमुळें दौलतीस कर्जे वाढले अशी कागाळी उठली ती पर्यायें होलकराविरुद्धच होती अर्थात् तिचा घटस्फोट करणे अपरिहार्य झाले. तोच हा प्रसंग होय 'जडभरताचे' हे जाडेभरडे उत्तर मननीय होय होलकराच्या स्पष्टोक्तीची अनेक उदाहरणे मिळतात. [पेद १२ ले. ४० पेद १३ ले. ५५, ५६] त्याचे हे प्रत्यंतर असून वखरकाराने या गुणाचे वर्णन दिले ते वृथा नव्हे. 'पाउण कोट देणे आहे' ही सख्या साधार आहे [ले १०१] '३० लक्षाची' फाळणी मान्य केली ती खरीच होय शिचाची मात्र सद्विध वाटते मागें ऐवज दिला होता तो अक धरला असल्यास न कळें. पण १० लक्ष कर्जांप्रीत्यर्थ निराळेच आले ह्याणून रकम शिचांनी परभारे फेडली असे मानले पाहिजे. [ले १०६, १०८] फेडीची आकाशा आणि झडत्याची प्रतीक्षा ही खऱ्या मनोवृत्तीचीं चिन्ने होत. [कास ले १४८]

(६७) पहा ले ६ टीप ६ व ले ८४ टीप ४२ सांखरखेडल्याच्या लडाईत निजामाकडून २५ लक्षाचा मुलूख सोडविला त्याप्रीत्यर्थ केवळ सिदखेड हा महाल शिचास मिळाला तो यथाचा वाटा किंवा योग्य पारितोषक होतें असे कधी ह्याणतो येणार नाही 'तुम्ही सिदखेड घेतले यास्तव हे यास देणे पडले' यावरून ही वेगणीदेखील पेशव्यांच्या जिवावर आली होती असे स्पष्ट आहे.

वेगीज करून दिल्ले. गवव जाजनी दाहा न्याव येकूग तीस लाख ल्यानी घात्रे पंसे करग केच्या केले. तुम्हाकडे वीम लाकडे तीस करार केले याजमुळे वहुन रदवदळ पडचे सेवटी करून करून पंधराची निगा वर्तव केची. उरळ पंधरा ने पंधरा महिन्याअन्नीकडे घात्रं पंसे टहगळे. सरकारचे काम कर्जाचे मोटे ते ल्यानी करून केले. न्याचा अर्ज मुळतानपुरचा करून केला. सेवटी निवाळस सर्व प्रकारे होउन तुळजापुरास जाउन नाप्रत चादवडास दाखळ जाहले. सन्वरच इंदुरास जातीळ. यदा फौज वीम हजग टेविली आहे. यासपंगी रजपुतान्यात तुम्ही गुतावंसे नाही. वाजत बरसान प्रयाग साधणे हर तजवीजेने व पुढे घगल्याकडीळ काम मातवर करणे. ही कायें आहेत. त्याचे नरद्वेत आहूनच. लिहिणे न्यागन नाही. दाहा लाग्न कर्जाभाठी पाठविल्ले ते पावळे चाकी दहा सन्वर पाठवितोळ हा भरवसा आहेच. हा सविन्नर अर्थ दूनवास येकांती सांगणे. चिरजीव दादा सन्वरच प्रयागचे सुमारे घुबेळवंडानून येणार आहे. कटाचिन निजायअलीसी त्रिवाड जाळा तर मात्र मातवरच गुता पडेळ. नो सु[ग]ना न पडला तरी सत्तरी येतीळ. यदा दूनवानी हिंदुस्थानन सत्यात उनम राखळी सर्वही यश ईश्वर ज्याची निष्ठा उतम त्यास देत आहे. छ* २५ जिन्काद. १ वहुत काय लिहिणे.

लेखन
सीमा

पो छ २५ मोहरम. सन सितेन.

[१८ वितवर १७५९]

लेखांक [११३]

१८०]

श्री

* संवत १८१६ माघ शुद्ध २

[२० जनवरी १७६०]

चिरंजीव राजमान्य राजश्री माउ याप्रति बालाजी बाजीराव प्रधान आसिर्वाड उपरी. येथील कुजळ जाणोन खत्रीये लिहीन जात्रे विरोध. राा बापुजी बलाळ दफतरदार यांचे गुजारतीने काही काम होते त्याचे कर्हा कागदपत्र शहरीहून आणावयाचे होत ते आपिले. त्यानीउ दोनतीन आसाम्या सुगमनेरी होत्या त्यास आणावयावदळ हुजूरून बुधा चोपदार व दाहा राउत नागोगाम^{६८} [भागवत] याचे दंडन जेजोरीच्या मुकामीहून रवाना केला होता. त्यास चोपदार मजकूर आपणाकडे आला आहे म्हणोन आडकिले. अशास ते

(६८) याचे उपनाम नागवन अने अमून तो पेगव्याचा वनीने निजामाकडे वकीर्तवर होना
[दि २५ मे १०, २१४]

कोण्डी वेउन आपणाकडे गेला काय मजकूर तो ल्हेून पाठवणे. तेथे कोणी आले असले तर त्याची चौकसी करून त्याचा काय प्रकार तो ल्हेऊन पाठवावे. † रा * २ जमादिलाखर. सुद्धरसन सितेन मयां व अळफ. † हे आसिर्वाद.

पो छ ९ जमादिलाखर सोमवार.

[२८ जनवरी १७६०]

लेखांक [११४]
१८२]

श्री * संवत १८१६ फाल्गुन शुद्ध ६
[२२ फरवरी १७६०]

चिरंजीव राजश्री भाउ यासि बालाजी बाजीराव प्रधान आसिर्वाद उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहीत जाणे विशेष. उदेरीचे काम राजश्री रामाजी माहादेव [विवलकर] व नारो त्रिबक यांनी जेवतेव करून केलें उदेरीच्या कार्यामुळे दोघात कुरूशता लटकीच वाढली. पाहात्या अर्थे त्यात कांहीच जीव नाही. प्रस्तुत काश्यास गेलें ते कार्य येकरूपतेने करावे तो अर्थ होत नाही. कोणी मातबर पाठउन उमेयतासच ठीक हमवार करून कार्यावर पडत ते करावें. असा कोणी योजला नाही. उभयता पुण्यांत असतां पेच वाढला होता तो रा रामाजी विस्वनाथ बरेवे याचे मध्यस्तीने बोलोंन चालोंन दोघेहीं निखालस होउन येकरूपतेने कार्य करून दाखउन म्हणोन दोघांनी करार करून पायावर हात ठेउन गेलें. असे असतां फिरोन कुरूशता वाढवित्री यास्तव मध्यस्त रामाजी बरेवे यांसच राजपुरीस उभयताकडे पाठविले आहेत. उभयतासही बरे रीतीने कडकाउन हमवार करावे. काशाचे कार्य येकमते खामखा करावेच करावें या विचारें पाठविलेत आहेत. पहावे काये करून येतात. † छ * ४ रजव. हे आसिर्वाद.

पो छ १२ रजव. माघ. सितेन

[१ मार्च १७६०]

लेखांक [११५]

श्री * संवत १८१६ फाल्गुन वद्य २
[३ मार्च १७६३]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

शंकराजी केशव गोसावी यांसि.

सेवक भाववराव वलाल प्रधान नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहीत जाणे विशेष. रा नारो केशव व गणेश विश्वनाथ भट याणी हुजूर

विदित केले की भोजे सिरगाव कथरियात नेवरे येथील खातीचे वतन पुरातन आपले असतां रागाजी व [वा]जी करमकर याणें तिगस्ता सरकारात गैरवाक्ता समजाउन खाती अमानत कराविली. त्यास साल गुदस्ता सन इसनेंत राजश्री नारो त्रिंबक देगमुख याणी मनास आपून मोकेली केली. आणि आपणाकडे दोनचार महिनें चालिली. हाली करमकरानी वंगरे याणी वेदशास्त्रसपन राजश्री रागशाहानी याचे पत्र आपून खलंड केली आहे. तरी येविसीवी ताकीद जाहाली पाहिजे म्हणोन त्यावरून पत्र सादर केले असे. तरी भोजे मजकूरची खाती नारो त्रिंबक याणी भद्राकडेस चालती केली त्याप्रो चालवणें. हरदुजणाने वर्तमान मनास आपून विल्हेस छात्रणे. जाणिजे. छ * १७ सावन. १ मुभा सन्नास सितैन गया व अल्फ. १' बहुत काय लिहिणे.

लेखांक [११६]

श्री

* संवत् १८२३ ज्येष्ठ शुद्ध ६

[१३ जून १७६६]

[नकल]

गंगाजळनिर्मल भागिणीबाई * सिंदे यासि

स्नेहा रघुनाथ बाजीगव [मठ] असिर्वाद उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहीत जाणे विशेष. सकुबाई सिंदे यांस संसारखर्चास गांव नेमून देउन पेशजी तुम्हास पत्र सादर केले असतां तुम्ही यांचे गावास खलेल करिता. वसूल घेता म्हणून हुजूर विदित जाहाले. यंसियास त्याजकडे सरंजाम देउन तुम्हास पत्र लिहिले असता तुम्ही खलेल करून वसूल घ्यावयास दरकार काय. हाली हे पत्र सादर केले असे तरी तुम्ही यांचे गांवचा वसूल येकंदर न घेणे. येविसी किरोन बोभाट येउ न देणे. याचे अमडास खलेल न वरणे. रवा[ना] छ * ५ मोहरम. सुमा सवा सितैन मया व अल्फ. बहुत काय लिहिणे हे असिर्वाद.

(६९) ही दत्ताजी शिंदे याची पत्नी होय अवदालीची युद्ध होऊन दत्ताजी वडाचच्या घाटावर पडले तेव्हा भागिणीबाई गरीबर होती वाटेत कष्ट होऊन सबलगडच्या मुकामी 'फाल्गुन वद्य ३ रविवारी' म्हणजे ३ फरवरी १७६० रोजी पुत्र झाला. [खड १ ले १६२] त्याचे नाव कळत नाही. तो जनकोजी शिवापूर्वीच वारला असावा जिवत राहता तर गादीचा तोच वारस होता अस्तु. वार्द १७८४पर्यंत जिवत असल्याचे समजते [साइस १ ले. ७७, ८६]

लेखांक [११७]

श्री * संवत १८२५ आश्विन शुद्ध १
[११ अक्टबर १७६८]

राजमान्य राजश्री बालाजी महार हवलदार व कारकून तो नागोठणे यासी
सदाशिव चिमणाजी सवीव नमस्कार. सुां तिसा सितेन मयां व अलफ. साल मजकुरी
तो मचकुरीपो तुम्हापासून घेतली रसद रुपये

३,८३२ फाजिल साल गुा व सन सत्रा सितैन दुसाला व्याज सुा.

६,५५५ गिा राजश्री आपाजीराव दामोळकर मिति जेष्ठ सुध प्रतिपदेस घेतले.

६,१६९ मुदळ रुपये

३८५ व्याज ईा मिति मार सा आस्वीन सुध प्रतिपदा.

६,५५५

१५५ किता गिा राजश्री महादजी शंकर

१०,५४२॥॥

येकुण दहा हजार पाचसे साडे बेनालीस रुपये साडे तीन आणे पोता जमा
गिा राजश्री आत्माराम रघुनाथ पावले असे. सदरहु रुपये व याचे व्याज दरमाहा दरसदे
हा १ सवेत्राप्रा व्याज बोली मुदळ ता मजकूरचे ऐवजी उगउन घेणे. शके १६९०
सर्वधारीनाम संवत्सरे आश्विन सुध प्रतिपदा.



लेखांक [११८]

श्री * संवत १८२७ कार्तिक वद्य ९
[११ नवबर १७७०]

अखंडितलक्ष्मीआळंकृत राजमान्य राजश्री

रघुनाथ हरी [नेवालकर] गोसावी यासी

सेवक भाधवराव बंगल प्रधान नमस्कार उपरी. येथील कुशल जाणोन
स्वकीय कुशल लिहीत जाणे विशेष. जोल्याजी^{७१} सिंदे पेशजी सरकार कामास अले सबब

(७०) याचे उपनाम नेवालकर असे आहे सुप्रसिद्ध झाचीवाली लक्ष्मीबाई ही याच घरा-
ण्यातील बोटची व्यक्ति होय

(७१) हे राणोजी शिवाचे द्वितीय पुत्र असून ते वरवासागर येथे कामास आले. तेथें त्यांची छत्री
असून तत्प्रीत्यर्थ ही नेमणूक होय त्याची पत्नी सगुनाबाई १७८४ सांत मृत्यु पावली. [साठसं १ ले. ७७]

कसवे सागर ताा झासी हा गांव ईनाम अहे तेथील ऐवजी इनलाख दाहा हजार रुपये नेमणूक पेशजीपासून सिंघाकडे अहे. प्रो। तालुके मजकूरचे वेहेड्यात नेमिले अहेत. त्यास जोत्याजी सिंद याची व्ही सुगुणाबाई यास रुपये १०,००० दाहा हजार खर्च देविले असेत. तरी सदरहू ऐवज वेहेड्यात नेमणूक अहे त्याप्रो। पावते करून कवज घेत जाणे. जाणिले छ * २२ रजव. सुमा ईहिंदे सवेन मया व अलफ. बहुत काय लिो.

लेखांक [११९]

श्री * संवत १८३४ मार्गशीर्ष शुद्ध १४
[१३ दिसबर १७७७]

राजश्री माहादजी सिंदे गोसावी यासी

सकलगुणालकरण अखंडितलक्ष्मीअलंकृत राजमान्य स्तो। माधवराव नारायण प्रधान असिर्वाद उपरी. येथील कुगळ जाणून स्वकीये लिहीत जाणे विशेष. देसी तुम्हास मुलेमाणसे ठेवावयास जागा नाहीं हे जणून असेर^१ किल्ला नामी परंतु तुमचे वंदलखातर साल मजकुरी तुमचे निसवतीस दिल्ला असे. तरी जंगी सामान किल्याचे उपयोगी असेल ते ठेवावे. जाजती सामान तोफा वर्गरे असेल ते सरकारात प्रयोजन लागण्यास आणविले जाईल. येविसी दिकत करू नये. किल्लेयाचे सरजामास वर्गरे अशर परगना नेमून देविला असे. सनदेप्रो। अंमल करावा. जाणिले छ * १२ जिल्काद. सु^५ मा समान सवेन मया व अलफ. बहुत काय लिहिणे ! हे असिर्वाद.

लेखांक [१२०]

श्री * संवत १८३४ मार्गशीर्ष शुद्ध १४
[१३ दिसबर १७७७]



मा अनाम देशमुख व देशपाडे

पाा अशेर सरकार मजकूर प्रात खानदेग यासी

माधवराव नारायण प्रधान सुडूरसन समान सवेन मया व अलफ. पो मजकूर जागीर बावती व सरदेशमुखी खेरीज मुक्तासा करून साल मजकुरी राजश्री माहादजी

(७२) करवीरच्या कामगिरीप्रतिथर्थ हा किल्ला या वेळी मिळाला पण तो सिंधाच्या स्वाधीन होण्यास पाच वर्षे लागली हा किल्ला सिंधाकडे जाऊ नये असा नाना फडणिसाचा अतस्य हेतु होता हाणूनच क्षतका अवधी लागला नाना आणि महादजी यात परस्परे ज्या अनेक बढी होत्या त्यापैकी ही एक होय महादजी सिंधानतरही हा किल्ला परत घेण्याचा घाट नानाने घातला तो त्यास साधला नाही. तो वृत्तात पुढे मालेत पहावयास मिळेलच

सिंदे याजकडे किले मारचे व फौजचे सरंजामास नेमून दिल्या असे. तरी मगारनिलेसी रूजु होउन जागीर व बाबती सरदेशमुखीचा अंमल सुरळीत देणे. जाणजे छ * १२ जिल्काद. अज्ञा प्रमाण.

लेखन
सिमा

बार

लेखांक [१२१]

श्री

[१७७८]

[नकल]

साहेबखान वल्द झाबाजखान टोके

खुशवहत बाशंद

तहवर व जलादत दस्तगांहा

सुमा तिसा सवेन मया व अलंफ. मीरखान वल्द हमीदखान टोके याजकडे सरदारी व जाती व फौजेचे वेगमीस सरंजाम चालत होता तो त्याजकडून दूर करून साल मजकुरी तुम्हाकडे सरदारी सांगून जातीस व फौजेचे वेगमीस सरजाम करार करून दिल्या आहे. त्यास साल तिगस्तां सन सवा सवेनात हमीदखान मुख्य पावणे सबत्र मीरखानाचे नावे सरदारी करार केली. तेव्हां पाउण लक्ष रुपये नजर घ्यावयाचा करार करून रामकृष्णराव गोविंद याजपासून मोर [रुये] वो रा बासुदेवभट खरे याचे गुजारीतीने सरकरात घेतले. तो ऐवज व दरबारखर्चाबाबत ऐवज याजसुधा मगारनिलेस पावला पाहिजे. याजकरिता सदरहुं ऐवज फिटे तोपर्यंत पो हांगरी वगैरे गांव याजकडे कमाविसीने आहेत त्याप्रमाणे त्याजकडे राखणे. तुमचे असमष्ट खार हुजूर चाकरीस असतांत त्याचा खर्च वगैरे नेमणुकी ऐवज कार्याकारण घेउन बाकी ऐवज महालचा वसूल येईल तो हिसरसीद सावकारास द्यावा. नजरेबा वगैरे रदकर्जात मगारनिलेकडे देत जाणे. ऐवज फिटे तोपावेतो घाल्मेळ करू नये. करणे जाहाली तरी मगारनिलेकडे वसूल पडिल्या असेल तो वजा करून बाकी ऐवजाची व्याजसुधा सावकारी निशा करून देउन मग घाल्मेळ करावी. सदरहुं पाउण लक्ष रुपये नजरेच्या भरण्यातील देणे तरी सावकार आलाहिदा असतील त्याचा बोमाट बासुदेवभट खरे याणी हुजूर येउ देउ नये. त्यांची वित्तकारी निशा करावी. याप्रमाणे करार करून हे सनद सादर केली असे तरी सदरहुं लिहिल्याप्रोो वर्तणूक करीत जाणे.

लेखांक [१२२]

श्री * संवत् १८४० पौष वद्य ९
[१६ जनवरी १७८४]अखंडितलक्ष्मीआलकृत राजमान्य राजश्री
आपाजीराम [दाभोलकर] गोसावी यासि.सेवक माधवराव नारायण प्रधान नमस्कार. सुा अर्वा समानीन मया व अल्फ.
तुम्हाकरिता मकरसंक्रमणाचे तीळ सक्रायुक्त पाठविले असेत. घेणे. ऩ जाणजे छ *
२२ सफर. ऩआज्ञाप्रमाणे.लेखन
सिमापो छ २० माहे रनिळोवळ
माघ वद्य ७ भृगुवार. त्रितीय प्रहर
[१२ फरवरी १७८४]

लेखांक [१२३]

श्री * संवत् १८४० माघ वद्य ५
[११ फरवरी १७८४]अखंडितलक्ष्मीआलकृत राजमान्य राजश्री
आपाजीराम [दाभोलकर] गोसावी यासि.सेवक माधवराव नारायण प्रधान नमस्कार सुा अर्वा समानीन मया व
अल्फ. श्री कासिकेत्र येथील ब्राह्मणास वर्षासनाचा ऐवज वाटावयास सरकारातून राा राघो
अनंत कारकून पाठविले आहेत. तरी तुम्हीं राजश्री माहादजी सिर्दे यास मांगोन
मशारनिळेंसामागमे स्वार व प्यादे देवउन कालपी पोहचाउन दवणे व तेथून पुढे प्रयागास
जायाची सोई चांगली करून देवणे व इंग्रजाकडील वकील इंड्रसेन [Anderson] तेथे
आहे त्यांची पत्रे प्रयाग व कासी व गया येथील कारभारी यास देवउन मार्गी जातायेतां
चौक्याचा हासिल वगैरे येकंदर न घेणे व प्रयागवळ व गंगापुत्र गयावळ यास ताकीद
करून कोणेविसीं उपद्रव न होतां देवजाची वाटणी व यात्रा करून देसी येतील तेव्हा
बरोबर प्यादे देउन आपली हद पार करून देणे याप्रो पत्रे लगतील ती देवउन याचा
बदोबस्त यथास्थित करून देवणे ऩ जाणजे. छ ~ १९ रविलावळ. ऩआज्ञा प्रमाणे.लेखन
सिमापो छ २९ जमादिळावळ.
वैशाख शुभ १ भागवार.
[२० अप्रेल १७८४]

लेखांक [१२४]

श्री * संवत १८४७ आश्विन वद्य ८
[३१ अक्टूबर १७९०]

राजश्री आपाजीराव [दाभोलकर] गोसावी यासी.

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य श्री अलीवहादुर रामराम विनंती उपरी.

येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहीत जावे विशेष. इकडे आल्यावर तुम्हांकडील व्रत काही कळत नाही. त्यास वरचेवर आपले संतोषाचे वर्तमान लिहित असावे. ग्वाल्हेरीस आम्ही गोले खरदी केले त्याचे पदरी पैका घालून आज महिना दीड महिना जाहला त्यास हाळी ते गोले येत होते ते तेथील अमळदारानी अटकाविले व गळा रस्त भरून वंगजारे आम्हाकडे येतात त्यांस माहालकरी हासिल मागतात की त्या लस्करादु[न] जाल तर हासिल देउन जाणे व मथुरेचे काादाराने सरकारचा कासिद रस्त घेउन येत असता त्याजला मार देउन हाकून दिल्या व रस्तही अटकाउन ठेविटी आहे त्यास ऐसे पर्याये आपल्याआपल्यात नसावे याकरिता लिहिले आहे. बंदोबस्त जाहाल्या करावा व पत्राचे उत्तर पाठवावे. रा छ* २२ सफर. १' बहुत काय लिहिणे हे विनंती.



पोसा छ २७ सफर. सन इहदे तिसेन.

कार्तिक. मुगा नजीक होडल.

[५ नवबर १७९०]

लेखांक [१२५]

श्री * संवत १८५० ज्येष्ठ शुद्ध ७
[१५ जून १७९३]

राजश्री तुकोजी होडकर गोसावी यांसि.

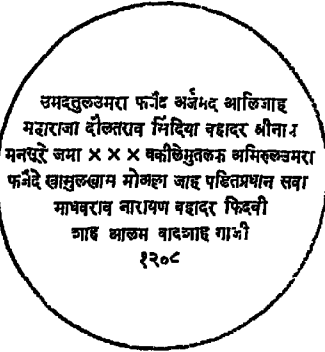
सकलगुलंकरण अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य श्री माधवराव नारायण प्रधान आसिवांद उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहीत जाणे विशेष.

मोजे नवगाव पो अंबड येथील दरोवस्त अमल आपाजीराव दामोळकर याजकडे इनाम चाळत आहे त्यास ते मृत पावले सा त्यांचे [दत्त]पुत्र राजश्री रामराव आपाजी यांजकडे मोजे मजकूरचा सदरहु अमल नाम पेसजीप्रो करार करून दिल्या असे. तरी तुम्हीं प्रो मजकूरचे जमिदारांस व मोजे मजकुरास तागीद करून सदरहु अमल मारानिलेकडे सुदामतप्रो सुरलीत चाळवण. जाणजे. छ# ५ जिल्हाद. सुा आर्वा तिसेन मया व अलफ.

लेखांक [१२६]

श्री

*संवत १८५९ भाद्रपद शुद्ध १३
[१० सितवर १८०२]



अखंडितलक्ष्मीबालकृत राजमान्य राजश्री
गोपालराव रघुनाथ^{३३} गोसावी यासि

सेवक चाजीराव र नाथ [भट] नमस्कार. सुमा सर्लास मयातेन व अलफ.
तुम्हास सरकारातून फे ज नवीन ठेवा[वयास सांगित]ले त्याच्या खर्चास करणेंल जोरस

(७३) उपनाम चिटणीस ही सनद पेशव्याच्या नावाने असली तरी ती 'वकीलमुतलकीच्या इपतरातील' होय ते दप्तर १७८४त निर्माण होऊन १८०३पावेतो शिवाच्या स्वाधीन होते त्याची फडगिशी अनेकाकडे राहिली रामचंद्र वावदेव हा याच दप्तरचा फडणीस होता [[दिमरा १ ले १९६] महादजी शिवास देवाना होताच ती शिवाचा अंकित वनून बाळाजी जनार्दन भानूने आपल्याकडे करून घेतली [एंटि ६ क्र १] 'वकीलमुतलकीचे फडगिशीची वस्त्रे आम्ही ध्यावी अशी श्रीमताची मर्जी व दीलतरावाचे ह्मणणे पडले त्यावफन घेतली' असे भानूने फडक्यास दर्शविले होते ते खरे नव्हे हे पुढें समजेलच अस्तु हे काम नाना स्वत करीत नसे दामोळकराचा हस्तक जनार्दन लक्ष्मण वैद्य हा भानूच्या वतीने काम चालवीत होता ते त्याजकडे थोडेच दिवस टिकले कारण विरोधाचे तें मूळच

बाहादर याजकळील जाईदादपैकी माहाळ दूर करून तुम्हाकडे लावन दिले येणेप्रती माहाळ

९ सूमे आगरेपैकी

माहाळ

| | |
|--------------|------------------|
| १ पो कन्हारा | १ पो किरावली |
| १ पो सरहदी | १ पो फतेपुरसीकरी |
| १ पो जगनेर | १ पो ईरादतनगर |
| १ पो खेरागढ | १ पो समसाबाद |
| १ पो मळपुरा | |

५

४

माहाळ ९

१२ सूमे साहारणपुरपैकी

माहाळ

| | |
|--------------------|--------------------------|
| १ पो गंगो | १ पो सभालका जोय्यासीसुधा |
| १ पो ताडगंगेरु | १ पो सिकारपुरखुंडी |
| १ पो पुरळपार | १ पो खातोली |
| १ पो लखनोती तामुधा | १ पो काधला |
| १ पो गंनोर | १ पो सोनपत |
| १ पो चौ[सव]खेडी | १ पो गुहाणा |

६

६

माहाळ १२

येकुण येणेप्रती येकविस माहाळ सरकार आमली साल मजकुरापासोन तुमच्या निसवतीस सरकारातून करार करून दिले असेंत. तरी सदरहु माहाळी कुलनाच कुलकाजुसुधा

होतें या वेंच घराण्याचा घोष लागून काही कागदपत्रही सापडले पण ते वाचिपयी नव्हत. त्याचा समावेश दामोलकरसंग्रहांत केला असून ते तेथें पहावयास मिळतील. फारसी व मराठी भाषेंत अशा सनदांचे लिखाण सापडते. तोच प्रकार या सनदेचाही आहे. येथें निवळ शेवटचा उतारा मराठीचाच दिला आहे. सिकका फारसीचाच आहे. अंतर्वेदीत प्रवेश होऊन मराठ्यांचे प्रस्तान बसल्यावेळी सनदापत्रें मराठीतच होत असत. पुढें हा प्रघात मात्र नवीन पडून सिकके दोन भाषेंत वनू लागले शिंदेघाहीत कांही सरदाराचे सिकके दोन भाषेंत आडळतात त्याचें कारण हे होय.

सरकार आमलाची दरोचस्त वहिवाट करून माहालचा ऐवज फौजेचे खर्चाबदल तुम्ही घेत जाणें. माहाली गावगंनावार लावणीसंचणी उत्तम प्रकारें करून उस्तवारी करीत जाणें. माहाल आबाद राहात ते करणें. सदरहु माहालची वहिवाट कमाविसीची सरकारात समजाउन देणे. पुढें माहालचा मस्ता ठराउन दिल्ला जाईल. † जाणजे, छ * १२ माहे जोवळ. † आज्ञा प्रमाण.

लेखन
सिमा

तेहरीर फितारीख दवान दहम जगादिल्लअवल सन ४५ जळसे वाला. [फारसी] बेझ.



रामचंद्र मल्हार सुखठणकर

याचा असल पत्रव्यवहार.

१७९९-१८०७ विक्रमी.

लेखांक [१२७]

श्री * संवत् १७९९ फाल्गुन वद्य १
[२८ फरवरी १७४३]

राजश्री बाळोबा [गुलगुले] स्वामी गोसावी यांसि.

पोष्य रामचंद्र मल्हार^{०४} [सुखठणकर] नमस्कार विनंती उपरी. राजश्री मल्हारबा
[होळकर]कडील कमाविसदार पैका मागतात म्हणोन लिहिले. तरी नव हजार त्याचे

(७४) हे सर्वपत्र सुखठणकराच्या हातचे असून अक्षर फार सुरेख आहे. प्रसिद्ध रामचंद्र बाबा शेणवी हाच तो सारस्वत गौड ब्राह्मण असून कोकणातील अरवली गावचा रहिवासी होता. [सामा १९३] तेथील कुलकर्ण त्याजकडे होते. शिंद्याची त्याचा सबंध प्रथम कसा व केव्हा आला याविषयी मतभेद आहे. शिंदेबाही उभी करण्यास तोच कारण झाला असाही ग्रह प्रचलित आहे. [जीकेच २५] याविषयी चिकित्सा करीत असता पेशवेदफतर प्रकाशित झाले. त्याचे मनन करितां जो बोध झाला त्याचा निष्कर्ष देणे इष्ट आहे. 'रामचंद्र करोल' असे एक नाव १७१८च्या दिल्लीच्या स्वारीत येते. [पिद ३० ले ३०८] ते या सुखठणकराचे मानले तर तो या सुमारास पेशव्यांच्या पदरी पारंगत होता असे दिसते याच वर्षी कानोजी भोसले याजकडील 'दफतरदारीवर' गेल्याचा स्पष्ट उल्लेख आहे. [पिद ३० ले. ३४१] भोसल्याची त्याचे पटले नसावे ह्मणून तो पुन्हा पेशव्यांकडे आला असावा. या वेळी त्याचे नाव पेशव्यांच्या पत्रव्यात आढळते [९ अप्रैल १७२३] यानंतर प्रात जुन्नर येथील 'मुजुमदारी' त्यास मिळाली. [७ अगस्ट १७२५] पुढे १० अक्टूबर १७२६ रोजी प्रात मालवा येथील सरदेशमुखीची मुजुमदारी प्राप्त झाली आणि २७सितंबर १७२७च्या सुमारास 'दिवा शिंदे' असा दाखला सापडतो [पिद ३० ले ३१०, ३१२, ३१३] अर्थात सुखठणकराचा सुगावा १७१८च्या सुमारास लागतो. यापूर्वीच राणोजी शिंदे पेशव्यांच्या 'तावीन' होते. अर्थात सुखठणकराचा परिचय असणे साहजिक होते. प्रत्यक्ष निकट

तुम्हाकडे निघतात सदरद्वे नव हजार [खास] देणे. वाढत काय लिहिणे सिती फाल्गुण
* वध प्रतिपदा हे विनंती.

पैवस्ता छ २७ माहे सफर.

चैत्र वध चतुर्दसी.

बदस्त माणसे दिला रा कृष्णार्जपत

[१२ अप्रेल १७४३]

संवघ आला माळव्यातील सरदेशमुखीच्या मुजुमदारीवर आल्यानंतर. हीच सधी सिदे व सुखठणकर यांच्या सागडीची होय. ते वर्ष १७२६ हे होय यापूर्वीच 'राज्यासिपेक अके ५२ अधिक आपाह शुद्ध १ इदुवासरी' जी सनद शाहू छत्रपतीची प्रधान व प्रतिनिधी यांच्या सिव्यानिशी सिंसोदे पिपलमावकर यांच्या नावे झाली आहे ती मननीय होय. 'उत्तरदेशाधिकारी मालवदेश येथील [मुख्य] प्रवान सिदे व होळकर' असा जो निर्देश आहे त्यावरून सिदेशाही उभी करण्याचे श्रेय सुखठणकरास पोचत नाही [पिद ३० ले ३८] किंवहुना सिद्याच्या उत्कर्षास कारणीभूत होण्यासाठी हुजरेगिरीची कथा व तदनुपगिक वर्णन केवळ कल्पनामय ठरते. होळकरांच्या सकेतावरून सिद्यास 'जरीपटका मुताली व शिकेकटार' मिळाली असेही मुळीच समवत नाही. होळकर 'वहुत दिवस कदव वाड्याकडे होते त्याच्याशी विवाह पडला.' त्या वेळेचे पत्र स्वयम मल्हारजी होळकराचे आहे [पिद १७ ले १] 'कदमारुडील होळकर वगैरे लोक न ठेवावे' अशाविषयी दाभाड्याचे दुसरे पत्र आहे [पिद १२ ले १५] ही दोन्ही पत्रे एकच वर्षातील असता त्याच्या तारखा मात्र सपादकाने भिन्न दिल्या आहेत. त्या पत्रांचा काल अनुमाने असा निघू शकेल की, नारो शंकर होळकराच्या पदरी १७२६सात गेल्याचे दर्शवितो [पिद २१ ले. १ पेद २३ ले ५] तेव्हा होळकराचा संवघ पेशव्याशी त्यापूर्वी अगला पाहिजे आणि वस्तुतः तो तसा होताच [पिद ३० ले ३८] किंवहुना कालानुक्रम पहाता होळकराचा सदिरघ पण पहिला उल्लेख १७१६त येतो 'फलटण जाउन होळकर जेउन येणे' याचा संवघ होळकराशी जोडला तर तो या वेळेपासून घरता येईल [पिद ३० ले. ३०७] दाड्याकडून येण्याचा काल हाच की काय असा प्रश्न साहजिक उद्भवतो. त्याचे उत्तर सप्रमाण देता येत नाही. पण एवढी गोष्ट खरी की १७२५ त 'उत्तरदेशाधिकारी प्रधान सिदे व होळकर' असे म्हणावयास काही काल लोटला पाहिजे. याचे समर्थन करणे अनावश्यक होय तथापि एका पत्राची साक्ष देणे इट वाटते. 'कैलासवासी उभयतापासून त्याची एकनिष्ठता अकृत्रिम' हे शब्द नातामाहेव पेशव्याचे असून होळकरांनी आपल्या पत्रात उच्चारिले आहेत. [पुरदरे १ ले. १६०] ते त्यांच्या उदयाचे खोसक होत. 'कैलासवासी उभयता' म्हणजे बाजीराव व चिमणाजी सट किंवा दाड्याजीपत नावा याचा संभव होत नाही पेद १२ ले. १५चे पत्र बाजीरावाच्या नावे स्पष्ट आहे. अर्थात त्याच्या वेळी होळकर दाड्याकडून आले असे निष्पन्न होतें. आणि तो काल १७२०च्या सुमाराचा दिसतो. होळकरांच्या उदयाचा जो वृत्तत कौत्रितीत दिला आहे तो बरील मानाने सरळ व शुद्ध उतरतो दाड्याजी विश्वनाथ सट यांच्या समोरच ते काम करीत असून दिल्लीच्या पहिल्या स्वारीत होते आणि

लेखांक [१२८]

श्री

[१७४६]?

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबा [गुलगुले] गोसावी यांसि.

सेवक रामचंद्र मल्हार नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून खकीये कुशल लेखन करणे. यानंतर राजश्री विठोबा गोसावी [१] हे दूर देशाहून या प्रांते^{००} आले आहेत. त्यास इकडे प्रांतात दोनच्यार ग्रंहस्त याची दर्शने घेउन तुमच्या दर्शनास आले आहेत. तरी तुम्ही याचे स्वहस्ते परहस्ते साहित्य केले पाहिजे. हे आमचेही आतविषई आहेत. तरी याचे साहित्य केले पाहिजे. बहुत काय लिहिणे, हे या प्रांते अनमन आहेत. प्रांत पाहिला नाही याजकरिता तुम्हास लिहिले आहे. † हे विनंती.

लेखांक [१२९]

श्री

* संवत १८०६ अश्विन शुद्ध २

[२ अक्टूबर १७४९]?

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबा [गुलगुले] खात्री गोसावी यांसि.

पाो रामचंद्र मल्हार साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा आश्विन † शुद्ध २ मुकाम सातारा जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. लाखा रुपयाचा वायेदा भाद्रपद पौर्णिमेचा केला होता. यैसियासी राजश्री माहाराजजीच्या शरीरी अस्वस्थता जाहली तन्मुळे विलंब जाहला. हात्री समाधान आहे. स्नान केल्यानंतर लाखा रुपयाची निशा करून देतील म्हणोन लिहिले तर उत्तम गोष्ट आसे. सदरहू रुपयाची निशा घेउन यैवज सत्वर सरकारांत पावता करणे. कराराप्रमाणे कौटेकर चालले तर त्यातच त्यांचे बरे आहे. नाही तर सर्वही तुम्ही जाणतच आहां. त्यांस हेच वर्तमान सांगोन यैवज सत्वर पावता करणे. त्यांचा आमचा स्नेह अकृत्रिम आहे. तेथे विस्तार काय लिहिणे हे विनंती.

तेथून आल्यानंतरच त्यांच्या पेशवाईत प्रवेश झाला ही गोष्ट सप्रमाण सिद्ध होते. या दृष्टीने काळ ठरविला तरी शिवाच्या उत्कर्षाचे श्रेय होळकराकडे न जाता ते स्वतंत्रपणेच सिद्ध होईल आणि कर्मितकाराचे वर्णन विपर्यासपर ठरेल यात शकाच नाही.

(७५) पहा भाग २ ले. ३१ टीप २५.

लेखांक [१३०]

श्रीराम

[१७१०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबा [गुल्लगुले] स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रामचंद्र मल्हार [सुखठणकर] नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीय कुशल लिहित गेले पाहिजे विशेष. जासुदाबारा पत्र पाठविले [ते] पावोन वर्तमान कळो आले. एसेच पत्र पाठउन संतोषवीत जाणे. 'धररूढ वर्तमान' मेवगाम-जीनी लिहिले आहे ब्यावरून कळेल. लोभ आसो देणे हे विनंती.

लेखांक [१३१]

श्रीराम

[१७५०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबा [गुल्लगुले] स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रामचंद्र मल्हार [सुखठणकर] नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीय कुशल लिहित गेले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावोन वर्तमान कळो आले. 'येथील वर्तमान तुम्हास कळलेच आहे. मेवगामजीनीही लिहिले. मुख्य गोष्ट तुमचा खांचा स्नेहच आहे. तुमचे चालावावया [स] कांही [ते] चुकणार नाहीत. यास्तव जेसे होईल तैसे राहणे. विशेष काय लिहिणे हे विनंती.

(७६) या पत्रात मितिमास अथवा वर्षही दिले नाही तथापि हे १७४९च्या पूर्वीचे असले पाहिजे. कारण उत्तरेस असता ते लिहिलेले आहे इतके निश्चित असून रामचंद्रबाबा १७४९त जो देवी आला तो पुन्हा कधी उत्तरेस गेलाच नाही

(७७) शिखांची सबब असता सुखठणकराचे हे शोबटचे पत्र समजले पाहिजे छत्रपती शाहूच्या निधनापर्यंत तो शिंदेसाहीत होता कोणत्या मितिस तो विभक्त झाला हे सांगत नाही त्याचे होळकराशी विनसायची कारणे अनेक होती पहिले वूदेलखड. दुसरे माघवसिंग जयपुरकर [पेद २७ ले १८, १९] तिसरे दतिया आणि चौथे जाट व सफरजग [पुरवरे १ ले १५७] मात्र शिखांची विरोधाचे कारण अद्याप अज्ञातच आहे 'दुखणेकरी काय कार्याचा बापा आलिया घेउन सेवेरी येतो' या वाक्यावरून १७४७च्या अती तो शिखांस बचकू लागला होता एवढे खास [पेद २१ ले २३] अस्तु. उभयता सोवत्याशी तेढ पडली तेव्हा पेशव्याने त्यास आपल्या पदरी घेतले. त्याच्यासारख्या घुरघुर राजकारणी व्यक्तीची आवश्यकता असल्यामुळे पेशव्यास तो हवा होताच. जागाही दिवाणगिरीची प्राप्त झाली

लेखांक [१३२]

श्रीराम * संवत् १८०७ ज्येष्ठ वद्य २
[१० जून १७५०]राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
बाळोबा [गुलगुले] स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रामचंद्र मल्हार [सुखठणकर] नमस्कार विनंती उपरी. येथील क्षेम जेष्ठ * वद्य द्वितीया मुकाम पुणे जाणून स्वकीय कुशल लिहित गेले पाहिजे विशेष, तुम्ही पत्र पाठविले ते पावोन सविस्तर वृत कळले, घृतारकाची पोथी व चित्रे पाठविली म्हणोन लिहिले ते काही येथे पोहचली नाहीत. तुमच्या जासुदास पुसिले [तरी] त्याणे सांगितले की मागून राजश्री भगवंतराज येणार ते [बरोबर] घेउन येणार आहेत. ते आल्यावर येउन पोहचेल. इकडील वर्तमान तर यथास्थित असे. तिकडील समाचार येणार वार्तिकाबराबर लिहीत जाणे. ' आम्ही श्रीमंतां पासी यथास्थित असो. बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१३३]

श्रीराम

[अगस्ट १७५०]

श्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
बाळोबा [गुलगुले] स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रामचंद्र मल्हार [सुखठणकर] सा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीय कुशल लिहित गेले पाहिजे विशेष, तुम्ही पत्र पाठविले ते पावोन वर्तमान कळो आले. ' आपला विचार काय करावा म्हणून लिहिला तरी दोन महिने यदाचे त्याकडे आहांत. जरी तुमच्या चिंतनरूप चालवितील तरी चाकरी कराळ. नाही तर कोण कोणाजवळी राहतो. यात ल्याहावेसे काये आहे. आपले वर्तमान वरचेवरी लिहित जाणे, बहुत काये लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

(७८) श्रीमत् ह्यणजे शिंदे की पेशवे हे सांगणे कठिण होय, मित्ती खरी मानल्यास पेशवाच सभवतो.

लेखांक [१३४]

श्रीराम * संवत् १८०७ श्रावण शुद्ध १३
[४ अगस्त १७५०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बालोबा [गुलगुले] स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रामचंद्र मल्हार [सुखटणकर] नमस्कार विनंती उपरी. येथील क्षेम श्रावण * शुद्ध त्रयोदशी मुकाम पुणे जाणून स्वकीय कुशल लिहित गेले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावोन वर्तमान कळो आले. ऐसेच सदैव पत्र पाठउन संतोषवीत जाणे. † बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१३५]

श्रीराम * संवत् १८०७ कार्तिक शुद्ध २
[२१ अक्टूबर १७५०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बालोबा [गुलगुले] स्वामी गोसावी यांसि.

पो रामचंद्र मल्हार नमस्कार विनंती उत्तरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लेखन करित गेले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले [तें] पावोन सविस्तर वर्तमान कळो आले. † जैसा प्रसंग पढेल तैसे वर्तवि. तुम्ही रोजगारी आहा. त्याहवसे काये आहे. जेणेकरून त्याची मेहरवानी होय ते करुन घेणे. बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१३६]

श्री * संवत् १८०७ कार्तिक शुद्ध २
[२१ अक्टूबर १७५०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बालोबा स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रामचंद्र मल्हार नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल कार्तिक * सुध द्वितीया जाणून स्वकीये कुशल लेखन केले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावोन लिहिले वर्तमान कळले. † रोजगारात ताल नाही म्हणोन लिहिले तरी येथे काय आहे.

आम्हां तेंथें बरे^{०१} आहां. दोहीकडे चुकाल. बहुत खबरदार. मग लिहिले नाही म्हणाल. तेकडा गेणड्याचा ढाल करावयास पाठविला आहे [तो] बहुतच पातळ बोझे हलके अमीरपसंद बहुतच अनवा करुन सत्वर पाठविणे. बहुत काय लिला लोम असो दीजे कार्तिक सुद २ हे विनंती.

लेखांक [१३७]

“श्री

[१७५०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बालोबा स्वामी गोसावी यांति.

सेवक रामचंद्र मल्हार [सुखठणकर] नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहिले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावोन सविस्तर

(७९) सुखठणकर हा गुलगुल्याचा स्वजातीय असून शिंदेशाहीत मुख्य सूत्रधार होता. परस्पर हेतिसवष निगडित होते तेव्हा सामोपचारार्थ सहानुभूति दाखविणे गुलगुल्यास प्राप्त झाले. ‘आपला विचार काय करावा’ अशी सूच्छा केली असता ‘त्याचा स्नेहच आहे तुमचे चालवावयास चुकणार नाहीत’ असे सुखठणकराने दर्शविले आहे अर्थात तो त्याचा पक्षपाती नसावा. एरवी गुलगुल्याची कृतज्ञता सहानुभूतीपलीकडं दिसून यावयास पाहिजे. अस्तु पेशवाईत आल्यानंतर तुलनात्मक दृष्टीने ‘येथे काय आहे. आहा तेथे बरे आहा’ असे जे उद्गार काढले आहेत ते शिवांस भ्रूषणास्पद होत यांत शंका नाही

(८०) शिंदेशाही ही राणोजी गिंद्याची पुण्याई होय. ती स्थापन करण्याचे श्रेय सुखठणकरास नसले तरी तिला सतेज, सबल व चिरस्थायी केल्याचे यद्य मात्र लाभते. ते नव्यानेच दिले पाहिजे असे नाही पूर्वजानीच देऊन ठेविले आहे. शिंदेशाही पत्रव्यवहारात ज्या अनेक व्यक्तींचा उल्लेख प्रामुख्याने येतो त्यात ‘रामचंद्रबाबा वालाराव गोविंद गलगलेकर व लालाजी बलाल गुलगुले’ या तिघांसबधी उद्गार मोठ्या भक्तीचे व आदराचे आहेत सुखठणकर हा असामान्य पुरुष होता राजकारण खेळून ते यशस्वी करणे हा त्याचा अप्रतीम गूण होता आणि त्याच बलावर अल्प काळात तो पुढें आला. आणि अवाजीपत पुरदव्यासारखे मागे सरले १७३०पासून १७४९पर्यंत उत्तरेकडील राजकारणी सूर्वे तो खेळवीत होता ‘बडिलाचा मनसबा सर्व तुम्हावर आहे. तुम्ही जो करणें तो दूरवेधी पाहून केला पाहिजे. यामचे तुम्ही सर्व माहीत आहा त्याहवेसे काय आहे. साराष सकलही जबाबसाल राणोजी सिंदे व रामचंद्र सेणवई यांच्याच मारफतीने आहे साराष याचा समयानसार सकलही ह्तरहित जाले. मुख्य पातशाहा आरजुमद जाहला’. [पिद १४ ले. ४९, ५०] ‘हजरत जिलसुमानी सर्व लहानथोर यास देखता वोलिले की मी आपल्यास रामचंद्रपंतास सोपिले आहे बरे करोत अथवा धाईट करोत. हा येखतियार त्याचा आहे त्यावरून निजाम बोलिले जे हजरतनी आपल्यास ज्याचे हुवाला केले त्याचे हकांत आम्ही

अर्थ कळो आला. येसैच सदैव पत्र पाठउन संतोषवीत जाणे. ' बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

अरकानाही त्यामी किंवलेकावे जाणावे मग वजीर व अमिस्लउमराव याणीही बहुतसी तारीफ केली'. [पिद १५ ले. ८३] रामचद्रपंत म्हणजे ह्या सुखठणकर होय. 'इप्रजाचा मजकूर परवा वृष्टीस पडला की रामचद्रजी बगैरे कारभारी याचे मते ती हर तजविजेने तह करावा मग चितास येईल तेव्हा गोवे घ्यावे असे आहे.' [पुरवरे १ ले १३५] 'सर्व तुम्ही करून म्हातारे जाला दौलतीचे उचित कार्यास अटकाव न पडे ती योजना करून समजाउन घेउन यावे तुम्हीही निखालस जन्माचे सोबती आहात विस्तारे काये लिहिणे मल्हारवाच्या चितातील किल्मीप दूर करून घेउन यावे' [नाना-पेगवे ५८] 'पूर्वी महादवा व रामचद्रवावा यांचा मान राखण्यात येत असे त्याप्रमाणेंच मान राखून विश्वास ठेउन कारभार घ्यावा' [खरे १ ले ६१] त्याच्या प्रतिमेचे चित्र बरील उतान्यात उतरले आहे आणि हीच या पुस्तकाची प्रतिष्ठा होय इतका अलौकिक राजकारणी विरळाच निपजला 'अस्विन वद्य ४' म्हणजे ५ अक्टुबर १७५४ रोजी सुखठणकर ज्वराने मरण पावला [ले १५६]



रामाजी अनंत दाभोलकर

याचा असल पत्रव्यवहार

१८०८-१८१८ विक्रमी.

लेखांक [१३८]

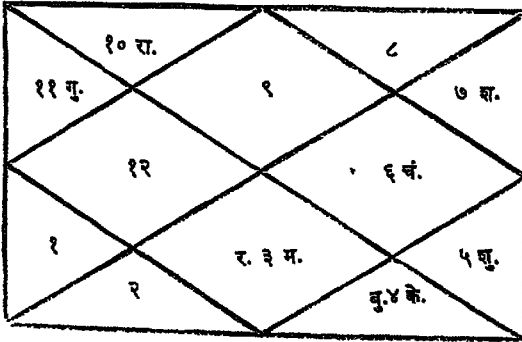
श्री

* सवत १८०५ आषाढ शुद्ध ६

[२१ जून १७४८]

स्वस्ति श्रीनृप शालिवाहन शके १६७० विभव संवत्सरे उदगयने ग्रीष्मर्तौ
आषाढे मासे* शुक्ले शष्ठ्यां भौमे घटि १० पळ ५८ सहस्रपत्नी उत्तरा नक्षत्रे व. ४६
प. २६ वर्षान योगे घटि २९ सहपरिवःगर करणे येवं पंचांग शुद्धोत्तदिने श्रीसूर्योदयात्
गत घटि ३१ पळे ५७ समये धन लग्ने सिंहांशे बहमाने श्रीमंत राजश्री दाभोलकर
इत्युपनामक रामाजी पतस्य भार्या सौभाग्यवती जानकी नाभिं प्रथम पुत्ररत्न^{८१} प्राप्तुति.

अथ जन्म लग्न कुंडलिका चक्रमिदं लिख्यते.



(८१) ही कुंडली रामाजीपत दाभोलकर याचा प्रथम पुत्र आपाजीराम याची होय. १७६८ पासून ह्याणजे वयाच्या एकविसाव्या वर्षी तो प्रत्यक्ष काम पाहू लागला. [लि ११७] १७७८च्या आरंभी

लेखांक [१३९]

श्री * मंत्र १८०८ वैशाख वद्य ११

[१० मे १७५१]

राजश्रियाविराजित राजगान्य राजश्री

वाल्मीकीवाद्या [गुलगुले] स्वामी गोसावी यासि.

पो रामाजी^१ अनंत [दाभोलकर] सां नमस्कार विनती उपरी. येथील कुजळ तां वंशाख * बहुल ११ मुकाम कालीनदीतीर नां फ़रोकावाद प्रांत अंतरवेद जाणोन स्वकीय कुजळ लेखन करीत गेले पाहिजे. यानंतर पत्र पाठविले ते उत्तम समई प्रविष्ट होउंन लेखनार्थ कळो आला. आम्हाकडील वर्तमानाविसी लिहिले त्यास तपसीलवार इकडील वृत्तांत यजमानाच्या पत्री लेहून बखेग्व^३ पाठविली असे. त्यावरून कळेल परंतु तुम्ही आपल्या मामत्याचा विचारआचार कितेक आखेराम व्रकसी व तुम्ही बोलेन गेलेस त्याउपरी कां त्यांचा जानसाल काहींच लिहिल्यात नाही. अगर सरकारचा यवत्र फ़र्नाणा आला बाकी फ़लाणा राहिल्या त्याची वाट फ़लाणी हे कांहीच लिहिले नसां. अर्पूर् आहे. याउपरी तन्हीं तथ्येच वर्तमान तावार सिधांतपुरसर लेहून मुजरत कासिदा या अम्हांकडे पाठवणे. ढील सहसा न कीजे. ^१ तुम्हांस जाते समई राजश्री [जयाजी] आपा

नाना फ़डणिसाच्या बरीने तो मुतालकीच्या फ़डणिसीवर महादजी शिद्याकडे करवीरच्या स्वारीत प्रथम आला तो १७९१पर्यंत सतत शिद्याकडेच होता याचा पत्रव्यवहार जो आम्हांस लाभला तो पुढें स्वतःच भागात पहावयास मिळेलच पत्रिकेत महादशा दाखविली त्यातच याचा अत झाला

(८२) याचे मूळ आडनाव काळे पण ते ववचितच प्रचारात असून दाभोलकर या नांवानेच विशेषतः विख्यात होते. [लि १३७, १४७] '२४ जून १७५० रोजी जयापास श्रीमतांनी वरत्रे दिली. वा रामाजी अनंत फ़डणिसीकडील कारकून होते तेच दिल्ले आहेत' [खड ६ यादी ५४] अशी नोंद आहे तिचा अर्थ या वेळीच दिले असा नसून पूर्वी होते तेच दिले असा होय दाभोलकर संग्रहात १७४५च्या सुमारास शिद्याकडून जी पत्रे पेशव्यास गेली आहेत त्याच्या नकलाचे अक्षर रामाजी पताच्या वळणाचे विसते सभवत तो शिद्याकडे असावा असे वाटते या थराण्याचा सक्षिप्त इतिहास इयजौत छापला आहे त्यात हाटले आहे की याचा आज्ञा नारो कृष्ण हा राणोजी शिद्याजवळ वपतरदारीवर होता यामुळेंच शिदेसाहीत याची समावना सुलभ झाली 'वाळीस वर्षपर्यंत पेशव्याचे पदरी होते' असा निर्देश आपाजीरामाने एका जागी केला आहे त्यावरून बरील विधान विश्वसनीय वाटतें आणि १७४२ पासून तर सनदाच पहावयास मिळतात हा रामाजीपत्र पानिपतावर कामास आला.

(८३) रोहिलखडच्या स्वारीसंबंधी 'बखेरच लेहून पाठविली असे' ते पत्र संग्रहात सापडत नाही. असो बखेर लिहिण्याची प्रथा या वेळी प्रचलित होती हे उघड आहे भाऊसाहेबाच्या नावावर भोडणारी बखेर हे त्याचे प्रत्यतर होय.

साहेबी काही काम सांगितले होते त्याचे उत्तरच पाठविले नाही. हे कोण गोस्ट आहे. सविस्तर जे लिहिणे आसेल ते लिहित जाणे. बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१४०]

श्री * संवत् १८०८ आषाढ शुद्ध ७

[१९ जून १७५१]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

ब्रह्मजीबाबा स्वामी गोसावी यांसि.

पो रामाजी अनंत साग नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता आषाढ * शुध ७ मुा कोा मउसमसावाद प्रात अंतरवेद जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करीत आसवे. यांतर पत्र पाठविले ते पावले. लेखनार्थ कळला. या प्रकारे सदैव सानंदवीत असिले पाा. वरकळ आपलं मामळतीचा मार लिहिल्या तो कळला. हिंदुस्थानी लोक विना जीवनपुक्क पारपत्याखेरीज देहावरी येत नसे त[अ]से ल्या व्याप्रोच समयानुसार होणे ते होईल. चिंता काये असे. तुम्हास जेथवरी मेहनत होईल तेथवरी करणे. साहेब चाकरी[त] ढील सहसा न करणे. ' काम येकाचे खावंदानी' सांगितले त्याचे उत्तर आज सहा महिन्यानी आले. ते रुक्षाच आले. तरी तुम्ही काये कराळ. जसे देखिले तसे लिहिले. बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१४१]

श्री * संवत् १८०८ कार्तिक वद्य १०

[१ नवबर १७५१]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळोबा [गुलगुळे] गोसावी यांसि.

सेवक रामाजी अनंत नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता छ * २३ जिल्हेज मुा गंगातीर जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. प्रात कौटे येथील वर्तमान ल्या ते सविस्तर कळो आले. तुम्ही व आखेरामजी वायदे करून गेजेस ते सर्वही टळून गेले. अयःपर तन्ही कराराप्रमाणे वसूल करून येवज उजनीस पावता करणे. यातच तुमचा मजरा असे. ' बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

(८४) पहा याग १ छ. १९ टीप ३५. 'बर्णा खावद यजमान' या नावाने शिवांस दामोळकर संबोधितो हे मननीय आहे [छ. १३९ १४६, १५२, १५८, १५९, १८१ खड १ छ. ३३]

लेखांक [१४२]

। श्री * संवत् १८०९ आश्विन शुद्ध १०

[१७ अक्टूबर १७५२]

तीर्थरूप राजश्री हरीपतदादा^१ वडिलांचे सेवेसी.

अपत्य रामाने चण्णावरी मस्तक ठेउन सा नमस्कार विनंती. येथील कुशल ता आश्विन* शुध दशमीपावेतो मुकाम नजीक राक्षेसभुवन श्री गंगातीर वडिलांचे आसिर्वादे करुन सुखरूप असो विशेष. आपण राजेश्री गणेशपंतासमागमे आसिर्वादपत्र पाठविले ते पावोन समाधान जाहल्ले. मातुश्री वाईच्या वर्षश्राधाकारणे घरात आषकाश करुन येणे कदाचित येणे न होय तरी तसेच तपसीलवार वर्तमान लेहून पाठवणे म्हणोन आज्ञा तरी आम्ही घरास यावे मातुश्रीच्या श्राधास स्वामीजवळी आसाचे हा हेत बहुत आहे परंतु प्रस्तुत श्रीमंताच्या व सरदाराच्या मेटी मात्र जाहाल्या. अघार काहा बोलीचाली जाहाली नाहीं. आष्टमी रविवारी मेटी गंगातिरी याच मुकामी जाहाल्ला. दोन दिवस दसऱ्याचे गढबडीतच गेले. तेव्हा निरोप मागता येत नाहीं तशाहीमध्ये निरोप मागितल्य तरी देणार नाहीत याकरिता येणे होत नाहीं. आपण वडील आहेत. सर्व प्रकारे मातुश्री[चे] पुत्रत्व वडिलासच वडले. आपण उत्तम प्रकारे वर्षश्राध करावे. आम्ही येथे गंगातिरी च्यार ब्राह्मण सांगावयाचे तें सांगो. वडिलास कळावे म्हणोन लिहिलें आहे. आम्हाविशी कोणे गोष्टीची चिंता न करावी. येथील गुता उरकल्य म्हणजे आज्ञा घेउन मेटास येऊ. मेटीनंतर सविस्तर कलेळ. खर्चावेचास नसिले तरी लेहून पाठवणे म्हणजे पाठउन देऊ. बहुत विस्तारे काये लिहावा. बहुत काये लिहिणे लोभ असो दिव्य पाहिजे हे विनंती.

समस्तास आसिर्वाद सांगावे व अनुक्रमे नमस्कार.

लेखांक [१४३]

। श्री

[फरवरी. १७५३]

वडिलांचे सेवेसी. सा नमस्कार विननी. श्रीमंत राजश्री नानासाहेबी कृपा करुन इनामपत्र करुन दिल्ली.

मौजे नगवगा येथील इनाम.

का आंकुलनेर येथील

१ मोक्षांसा

१ बाबती

(८५) रामाजीपत दाभोळकराचा वडील बधु हरीपत होता त्याच्या नावे हे पत्र होय हरीपताची थोडी पत्रे या भागात पहावयास मिळतील तो १७६१ पर्यंत जिवंत होता [लि १९५]

पुढें त्याचा पत्ता लागत नाही.

- | | |
|-------------------|---|
| १ बावती | १ नीम चौथाई |
| १ सरदेशमुखी | ० सरदेशमुखी देत होणे परंतु प्रति- निधी यास इनाम आहे म्हणोन राहिले. राजश्री आपाचा येतील. |
| १ पेशजी जागीर आहे | |

४

२

दरोबस्त गाव दिल्या असे.

येणेप्रमाणे इनाम^६ करून दिले असे. तुम्हांकारणे गंगाजळाच्या कावडी २ दोन पाठविल्या आहे व शालग्राम २ कावडी पाठविल्या आहेत म्हणून घेउन जतन ठेवणे. पोटारीतील तरी मौजूज जतन ठेवणे. बरकड पिसवीतील आहेत त्यातील कोणास देणार तरी काही देणे. बरकड ठेवावे. घर कसे जाहले. काम कसे. चांदण्या पुढल्यामागल्या केल्या की काये ते तपसीलवार लेंहून पाठवावे. कावडी श्रीरामेश्वरास पंनास गेल्या कळले पाहिजे. हे विनंती.

लेखांक [१४४]

श्री

* संवत् १८१० ज्येष्ठ वद्य ५

[२१ जून १७५३]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

नरोपत [गोपाळ] स्वामीचे सेवेसी.

पो रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा ल * १९ साबाण मुकाम अवतिकापुरी जाणोन स्वकीय कुशल वर्तमान लिहित असिलें पाहिजे विशेष. तुम्हीं पत्र पाठविले तें पावलें. त्यांत मजकूर की राजश्री बाळाजीबाबा [गुलगुले] श्रीमाहा यात्रेस गेलें ते त्रिस्थली यात्रा करून फिरोन श्री कासीस आले. तेथून सत्तरीच येतील म्हणोन लिहिले. त्यास उत्तम गोष्ट असे. दुसरे पाा कोट्याच्या येवजी हुंडी आठ्यासी हजार रुपयाची श्री माहारावजीनी सौजीसहासमागमे देउन पाठविली म्हणोन लिहिले. पेशास हुंडी आम्हांकडे आली नाही. परभारे श्रीमंत राजश्री [जयाजी] आपासाहेबाकडे श्रीगोंधास गेली असेल त्याचे प्रतिउत्तरही तुम्हांस आले असेल. तदनंतर श्रीमाहारावजीस

(८६) सलावतजगाचा मोड केला त्या प्रसंगी ही दोन गावें पेशव्याकडून मिळाली ती अद्याप या घराण्याकडे चाल आहेत

रुपयाविसी ताकीदपत्र पाठविले आहे. ते त्यास देउन सरकारचा रुपया सत्वर वसूल करून घेणे. इकडील वर्तमान तर श्रीमंत राजश्री आपासाहेब अद्यापि आले नाहीत. मागाहून लौकरीच येणार आहेत. कळले पाहिजे ! तुम्ही रुपयाची निकड लाउन यवज सारा कराराप्रमाणे वसूल करून घेणे. अतपर येक घडीचा विलंब न लावणे. आखेरसाल तो होउन गेले. अद्याप रुपये येत नाही. तस्मात त्याच्या मनात सरकारचा रुपया धावयाचा आहे की नाही. ते राजश्री भाहारावजीस पुसोन तपसीलवार पत्र पाठविणे. तसासारिखा विचार करणे तो केला जाईल. जो आम्ही काही बोलत नाही तो ते रुपयाचे नावच घेत नाही. हे उत्तम नाही. बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१४५]

श्री * संवत १८१० आश्विन शुद्ध ३
[२९ सितंबर १७५३]

राजश्रियाविराजित राजश्री

नारो गोपाल स्वामी गोसावी यांसि.

साो रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुणाल जाणून स्वकीय कुशळ लेखन करीत जाणे विशेष. पत्र पाा तें पावले. लिहिलें वर्तमान कळलें. कोर्टेकर यांणी सरकारचे रुपये सिध केले आहेत सत्वरीच पाठवणार म्हणून लािा. तरी येवजाची रवानगी लौकर करून पाठवणे. आम्हाकडील लोक पांच हजार फोज राजश्री सदाशिव गोपाल याजबाा देउन रवाना जाल. जळदीनेच येत असेत, [सटबाजी] राजाल्याबाा आपले कोणही नाहीत. कळले पाहिजे. राजश्री बाळोबा [गुल्युले] कोत्र्यांस आले म्हणजे त्यास लौकर इन्गूर उजेनीस पाठउन देणे. ढील यावयासि न कारणे म्हणून त्यास सांगणे. राा छ* १ जिन्हैज. ! बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१४६]

श्री * संवत १८१० आश्विन शुद्ध ११
[७ अक्टूबर १७५३]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबा स्वामी गोसावी यांसि.

साो रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुणाल ताा आश्विन * शुद्ध ११ जाणून स्वकीय कुणाल लेखन करीत जाणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. लिहिलें वर्तमान अवगत जाहले. त्याप्रमाणें राजश्री [दत्ताजी] पाटीलबाबास

श्रवण केले. त्यांचे प्रत्योत्तर पाठविले असे. तेथे सविस्तर अर्थ लिहिला आहे त्यावरून कळेल. मुख्येअर्थ राजश्री भाहारावजी याजकडून सरकारचा येवज मातबर हुजूर येईल ते करणे म्हणजे तुमच्या सेवेचा मजुरा धण्याजवळ असे. ' आपण श्रीची यात्रा करून आला उत्तम गोष्ट जाहली. जन्माचे सार्थक हेच आहे. बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती. येथून वकील^{१०} पाठविला आहे. त्याचे उत्तम रीतीने विदा करवाल ते समई रवानगी राज्याकडून करवणे. हे विनंती.

लेखांक [१४७]

श्रीगजानन

* संवत १८११ चैत्र वद्य ४

[११ मार्च १७५४]

श्रियासहसायु चिरंजीव विजईभव राजेश्री रामाजीपंत यां प्रति हरि अनंत दामोळकर अनेक अस्तिर्वाद उपरी. येथील क्षेम ताा चैत्र वद्य चतुर्थीपावेतो समस्त सुखरुप असो विशेष. तुम्हाकडील पत्र माघ वद्य पंचमीचे व फाल्गुण शुद्धा पंचमीचे पाठविलें ते चैत्र वद्य १ प्रतिपदेस दोन्ही पत्रे पावली. तेथे लिहिलें कीं आपल्याकडील सविस्तर वर्तमान लिहून पाा म्हणोन लिहिले व श्रीमंत कोठे कोणे ठिकाणी आहेत तें लिहून पाठवणें. त्यासी फाल्गुण वद्य पंचमी मुा तुंगभद्रा येथील मुकामीची राजश्री बाबुरावजी व राजश्री विसाजीपंतदादा यांची पत्रे आली होती. समस्त सुखरुप आहेत. मोगला कडील वर्तमान तरी यांचा त्याचा तह आहे तोच आहे. प्रस्तुत मोगल बराडांत फौज सुधां गेल. नवगावापासून दोहो कोशावरी सात मुकाम होते. त्याजमुले वैरणीस उपद्रव लागला. आणखी कांय उपसर्ग लागला नाहीं. सातारियाकडील वर्तमान तरी ताराबाई व यांचे अघावत सरवस नाहीं. सातारियाभोवती मुलकाची जप्ती यांणी केली आहे. वसंतगढ राजश्री येमाजीपंती घेतला व परलीस वेढा बसविला आहे. श्रीमंताचे आज्ञेप्रमाणे वर्तगूक करितात व फाल्गुण शुद्धा चतुर्दसीस राजेश्री अंताजीपंताच्या घरासंनिध दोन प्रहरां अग्नि^{११} लागली. तेणेकरून अंताजीपंताचा बाडा व श्रीमंताचा बाडा व राजेश्री महादोबाचा बाडा ऐसे दग्ध जाहान्ते. काही राहिलें नाहीं. फिरोन बाडा बांधावयासी काम लाविलें आहे. कौकणचे वर्तमान तरी महिपतगढ याणी घेतला. राजेश्री खंडोजी माणकर देवरुखांत तळ देउन बसले आहेत. बाा हशम ब्यार हजार व राउत सातसे

(८७) कोट्याची वकिली नेहमी गुलगुल्याकडेच होती. पण प्रसंगविशेषी दुसरा वकीलही पाठविण्याचा प्रघात होता असे दिसते

(८८) पहा ब्रह्म ६ यादी १०३ यादीतील या अग्निप्रकोपाची मितीदेखील चुकीची ठरते.

आहेत. मुलखास उपद्रव काडीमात्र नाही. सिंगेखरापामून पावसपावतो ठाणी माहालो माहाली बसविली. रनागिरीसंनिध राजवाड्याजवळ मीठ बंदरची जखात घ्यावयासीं चवकी बसविली. त्यांचा यांचा अध्यावत काही कळहो नाही त्याणे आपले कित्याचा वंदोबस्त करितो व आजकडील सरदार तुळाजी सालेकर दोनसे माणसानसीं यांजकडे पळोन आळ. वगैरे लोक आणखी येतच आहेत. राजकी वर्तमान तर ये प्रकारिचे आहे. तुम्हांस कळवें म्हणोन लिहिले आहे.

लेखांक [१४८]

श्री * सवत १८१? चैत्र वद्य १०

[१७ अप्रेल १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळोना [गुल्लगुले] स्वामी गो यासि.

सो। रामाजी अनत नमस्कार विनंती. येथील कुगळ ताा चैत्र * वद्ये १० मुा ठाणे कुंभेर प्रांत जाटवाड जाणोन स्वकीयं लेखन करीत जाणे विशेष. पत्र पाा ते पावळें. तेथें लिां कीं रा। माहारावजी नाथद्वाराहून आपले स्वत्वास आले. सरकारच्या येवजाच्या तलाशांत असेत. कराराप्राा देउ येसें बोलत आहेत. ताकीदपत्राविसीं लिहिले त्यास ताकीदपत्र तरी पूर्वीच पाां असें तें त्यास देणे आणि कराराप्राां येवज वसुलत येई तें करणे. इकडील वृत्तांत तरी जाटांस जेर केले आहे. साप्रत सल्लखावरी आळ असे. लांकरच मामलेत विल्हेस लागोन जाटाकडील फैसला होईल. चिंता नसे. ईश्वर इच्छेने आपला वोलनाला उतमच आहे. ! बहूत काय लिहिणे कृपा लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१४९]

[सि १७५४]

[पहिला वद गहाळ]

x ज्वराची दूर जाहली. आता कुगळरूप आसे. चिंता नसे परंतु शेरीर अस्तीगत राहिले. दोहींकडून दोघांनी धरून उठवावे धरून चालवावे येसें सांप्रत आहे. कुवत येईल तेव्हां खरे. ठाणे कुंभेर व जाटाचा मार तरी जो आहे तो प्रथमच दिवस असे. [जयाजी] आपासाहेबी श्रीमंताच्या विचारें करून येथून उठत्री हरयेके मते सेउगांव

देउगांव करून उठावें पुढें छांवणीची जागा नेमावी अगर हरयेक मनसना करावा या विष्यारे तूर्त रुपराम कटारा विप्र जाटाचा बकील तयास कुंभेरीतून बोलाविला आहे. मांजगढ काली धरून करीत असेत. करारमदार ठराव होईल त्याप्रां सेवेसी लेहून पां देउं. कोटेकर माहारावजी यास ताकीदपत्र त्याच्याच कागदाच्या जावात अम्हीच होउन मार लािा आहे जे कराराप्रो येवज येणे त्यात वसूल आला आहे तो वजा करून बाकीचा येवज जल्ददीने राा घाळाजीबाबाजवळ देणे आणि त्याचे कवज हुशुर [अपूर्ण]

लेखांक [१५०]

श्री

[जून १७५४]

जमा खासगत राजश्री रामाजी अनंत दभोलकर सुहूरसन आर्वा समसेन मया व अल्प. जमा रूपे

तेरीज

१३७४ सिहक साल गुा.

१,३९१ ह्या कमाविस पथके पागा

१२५६ नक्त.

२४ माहे सावान छ ७.

० मोहरा६ श्रीहरसिद्धीचे^६

विठोजी गव्हाणे.

जगास खर्च जाल्या

५७५ माहे रमजान.

दाखल बाज.

७५ येमाजी गूजर.

११८ सिलक चामारगोदे

७५ हरजी दिलेकर.

१,३७४

७५ राघोबा पागा.^{१०}

१०२७८ जमा साल मार.

२०० हैबतराउ गुंजाल.

३९०० रोजमरा सरकार

१५० रतोजी सिंदे.

१३९१ पथके पागा.

५७५

(८९) श्रीक्षेत्र अवतिका येथील हरसिद्धीचे स्थान प्रख्यात आहे देवालयानी डागडुजी व धर्मशालेचे काम दामोळकराने केले होते हे पहिल्यानेच समजते. मथुरेसही त्याने बराच पैसा खर्च करून यमुनातिरी घाट बांधला ते पत्र पुढे पहावयास मिळेल कोकणात जेवरे व वसणी येथील देवा-लयाचे दगडी कामदेखील यानेच करविले असे कळते [ले. १८०]

(९०) हा राघोराम पाने मीचे वागणी नजीक इस्लामपुर येथील राहणारा असून या वेळी तो सिंधाचा आश्रित होता १७६८च्या शेवटी तो 'महादजी सिंधावर फौज घेउन चालोन आला.

- लढाई होउन मारला गेला [वाढ ७ ले. ५८६] तो नृत्तात पुढे येईलच बखरीतील राघोबा शेणवई पागनीस तो हाच असावा [पान ८१]

२२०० माहलकरी.
 ३२५ जमिदार.
 २२५ कर्ज अमदन.
 १९३७ कमाविस.
 ३०० गुा जावजी.

१०,६५२

११६५२

यासी तपसील.

३,९०० बा सरकार राजश्री आपा
 सो रोजमरा ख्ये
 माहे रमजान ता सावान
 [मास १२ दरमाह ३००]

२,२०० बा कमाविसदार.

६५० माहे रमजान.

२०० बलवंतराठ नरहर पा म्हुसोदे
 निंबो [घो]र

१०० तुळजापंत पा नेमावर.

५० त्रिंबकपंत वागवोर.

३०० बाबुराठ, भास्कर भागली.

६५०

१००० माहे सवाल भास्कर बल्ल
 शाहाजापुर.

५०० माहे सफर छ १२. राघो शकर
 सोपार.

२२००

१९३७ कमाविस कित्ता.

१३५० माहे सवाल.

३५० माहे सवाल.

२०० त्र्यंबक बापु.

१५० वेकाजी दुलम.

३५०

५० माहे जिल्हाद फिरगोजी पिसे.

१४२ माहे जिल्हेज.

१०० बाबुराठ राजाराम.

४२ बाबुराठ परमु ता नागो
 जी.

१४२

१५० माहे रोवल छ ३०

१०० माहे जाखर जोत्याजी भोसले.

१३९१

३२५ जमिदार.

२५० माहे सवाल.

२५० भोकरासेकर जमिदार.

५० तुळजाजी देसाई दाहोद.

२५०

७५ माहे जिन्हेज.

५० गणेश देसाई दाहोदकर.

२५ तुळजाजी देसाई दाहोद.

७५

३२५

२२५ कर्ज अमदन. माहे जाखर

नागोपत विा कोल्हे.

३०० गुा जावजी.

२५० भिकाजीपत दिा त्रिंबक
हरी लेले.

६०० मोधी.

५०० गणेशराम कानाड माजी
काादर.

१२५०

५२५ माहे आखिर.

५०० गोपालसिंग कुरोलीकर.

२५ मेवाती मांडी चोरोन नेली
सबब घेतले.

५२५

१८७५

खासगत राजश्री रामाजी अनत [दाभोलकर] खर्च रुपये सुा आर्वा [खमसैन]
मेजवानी खर्च. ईनाम खर्च.

माहे जिल्काद.

आपाजी कृष्ण पुनासेकर.

गणेशपत भावे.

पाटील नवगावकर.

त्रिंबकपंत.

माहे जिल्हेज छ १५ रोज उट नाा.

रामराज निल्कंठ.

छ १८ जिल्हेज गणेशपंत पेडसे.

४९ माहे राखर छ १७. बरे वाटत नवते
साा अंतो ब्रांन्हण मथुरेस गेळा
तेथे खर्चास.

५ माहे सवाल छ २. मलहार माणूस दिा
तुकोजी पवार घोडी घेउन आळा साा.

२ माहे जिल्हेज छ २९ रोज. कासिद
पुणियाडून पुत्र^१ जालियाची पत्रे घेउन
आळा त्यास.

२ माहे मोहरम छ १ रोज बाबु भालदार
दिा श्रीमंत रोा पंत.

१ माहे जोवळ छ १२ रोज.
मोतददार दिा माधवसिंग राजे
बोडा घेउन आळा त्यास.

(११) कोणास 'पुत्र आल्याची पत्रे पुण्याहून आली' हे समजण्यास मार्ग नाही. कदाचित दाभोलकराच्या दुसऱ्या पुत्राचा हा जन्मकाळ असावा. कारण तिसऱ्याचा उल्लेख पुढे आला आहे.

१ गाहे जोबळ छ २२. गुा वावुराउ.
नारायण मथुरेस दिन्हे अंतोनास.

५४

११६ वावुराउ नारायण याम मथुरेस
जाते समई खर्चाम छ २ जोबळ

५ गिरमाजी खंडेराउ ब्राम्हण मथुरेस
गेला सा छ ४ जाग्वर

८१ माहादाजंराम दानार छ २३
जाग्वर मारनिले मृत्य पावळे
त्याचे क्रियेस गुा सदासिधपत
माळसे.

माहे जाग्वर छ १२ रोज.
गंगवळ गोपाळराउ वामुदेव
नो वाजकडून घेउन आळा लास.
माहे सानान छ ८. खंडोजी
कोन्हे विन वना [जा] जी कोन्हे.
माहे सानन छ. २४ रामचद्र
वैच शाहाजापुरकर.

१८०० श्रीहरसिदीप्रित्यर्थ धर्मशाला.

लेखाक [१-१]

श्री

मदन १८११ आषाढ शुद्ध ७

[२७ जून १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळोवा [गुदगुले] स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत सा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ता छ * ५
रमजान जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करीत आसिन्हे पाहिजे विशेष. बहुत दिवस पत्र
येउन वर्तमान कळत नाहीं तरी सविस्तर लिहित जावें. येथील तपसीले वर्तमान श्रीमंत
राजश्री [जयाजी] आपासाहेबाचे पत्नी लिहिला आहे त्याजरूपून कळेल. सरासरी गोष्टी कीं
माहारावजीचा व श्रीनंताचा स्नेह तरी ह्या समई फौजसुवा खासा आले म्हणजे मोठी
गोष्ट जाहली. जन्मपर्यंत स्नेह विशेष चालेल. असे करिना खाशास कदाचित आनकूल
न पडेल तरी आखेरामजीचा फौज सारी घेउन तुम्ही यावे. आसे आमचे विचारे आहे.
तुम्ही कार्यकारते आहा. सर्व तुम्ही जाणता. आम्हीं ल्याहावेसे काये आहे. बहुत काय
लिहिणे छोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१५२]

श्री * संवत् १८११ आषाढ वद्य २
[६ जुलै १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्यं राजश्री

पाळोवा [गुलगुले] स्वामी गों यांति.

पाो रामजी अनंत नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ता आषाढ * वद्य २ मुकाम शेवाडी जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करीत गेलें पाहिजे विशेष. पत्र पाां तें पावलें. तेथे श्रीमाहारावजी सरकारचा पैका चावयासि ढील करून देउंदिलखटं करितात म्हणून तपसिलें लिहिलें तें कळलें. यशास त्याचा करार केलात त्याचे नायदे तरी चुकोन गेले. अद्यापि तपसीलच लिहितां. अपूर्व असे. याउपरी कराराप्रमाणें यैवज साराच त्यांज-पासून घेउन तुम्ही त्याच्या फौजेबाा याल तेव्हां घेउन येणे. आपली फौज तीस हजार आणि श्रीमताची फौज दाहाबारा^{१२} हजार येसी चाळीस हजार फौज मातबर जथली असे. त्यांस खर्चास पंका जरूर पाहिजे. तरी यैवजी वेपुरवत होउन मागोन वाां आणणे म्हणजे धणी तुम्हांवरीं खुश आहेत दुसरें फौज त्यांची येणारसें ठिहिलें तरी बहुत उत्तम असे. हजार फौजेने त्याणी यावेसें काये आहे. च्यारपांच हजार फौज व जेजाळा व बाण येसे सांमान मातबर सिवसिंगजी [राठोड] वाा व आखेरामजी बाां घेउन तुम्हीं पत्र पावतांच स्वार होउन आडवे सामेरच्या मुकामांस येउन सांमिल होणें. याउपरी अवकाश नसे. दर मजलीने विजेसिंगासीं गाठ बाळोन त्यास तंत्री करितात. संमयासी आल्यानें उत्तम आहे. येसेच त्यांसी माषण करून फौज घेउन सवार येउन पोहोचणें. [विजेसिंग] राठोड मार याचे सिस्टकूल तरी [काय] खांमखां आपल्याच फौजेने करितात. यास संदेह नाहीं परंतु त्यांची फौज संमयास आल्याने स्नेहांची वृधी होणार. येणेप्रों त्यांज बोध करून जळदीने येणे. वरकड तावार वृतांत श्रीमंत राजश्री [जयाजी] आपासाहेवांच्या पत्रां लािां असे त्यावरून कळेल. ^१ बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

(१२) या पत्रात 'दाहाबारा हजार फौज हुजूरची दिल्ली' असे दामोलकर दर्जवीत आहे आणि पुढील पत्रातदेखील हाच आकडा दिला आहे [लि १५३] ते पत्र २५ जुलैचें असून साबर येथील मुकामाचे आहे 'सरकारची फौज चार हजार बराबर दिली' असे गणेश कृष्ण पेंडसे सांगतो [कास ले १२२] दोघेही फटणिचीचे कारकून तेव्हा खरी सध्या कोणाची मानावयाची ?

लेखांक [१५३]

श्री * संवत् १८११ भावण शुद्ध ६
[२५ जुलै १७५४]

राजश्रियांविराजीत राजमान्य राजश्री

वाळो[बा] स्वांमी गो यांसि.

पाँ रामाजी अनंत सां नमस्कार विनती. यथील कुशल ताा श्रावण शुभ * ६
मुं सांवर^{१०} जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. पत्र पां तें पावळें
लिहिलें वृत्त कळलें. दिक्कीस श्रीमंत दादासाहेब व राजश्री मल्हाररावजी [होळकर]
सुमेदार येसे राहिले. श्रीमंत राजश्री [जयाजी] आपासाहेबांचा दादाश्राव हचार फौज
इजुरची पयके श्रीमंतानी देउन मारवाड प्राते जावयासि आज्ञा दिल्ली. ते मुं मारपर्यंत
आलो. विजेसिंग राठोड मॅडल्यांसच राहून ठणे बळावीत असे. त्यांजवरी दरमजलीने जात
असो. फोटेंकरांनी व तुम्हीं मालबर फौज घेउन येतोसा करार केळत त्याप्रो फौज
च्यारपांच सहस्र निदांनी घेउन या संमयास आलेस म्हणजे स्नेहाची वृथी दिवसेंदिवस
होत जाईल. येणेप्रांच त्यांस सांगोन सिवसिंगजी राठोड व आखेरामजी यांसि मालबर
फौजेसह घेउन जळदीने येणे व पैकाही खर्चास पाहिजे. तरी येवज पोस्त श्रीमाहारायासी
स्नेहें करून बळोन पैका वा घेउन येणें, हेंगै सहसा न करणें. ' बहुत काय लिहिणें
हे विनंती.

(१३) मिठाचे प्रसिद्ध सरोवर सावर ते हेच होय मराठ्यांच्या पवरी ते प्रथम कसे पडले
याचा इतिहास चित्ताकर्पक आहे म्हणून सक्षेपात देणे इष्ट वाटते १७४८त प्रथमतः अबदाली 'सर्हिदेवर
आला त्या वेळी स्वामीच्या फौजा नेबाईवर आल्या वजिरानी तानखा सामरावर केली फौजदार
धरोवर दिघला. आम्ही विचारिले की हे गोष्ट बहुत कामाची आहे अनायासे तनखाचे वाहाण्याने
सामरेत पाय पडिला म्हणजे अजमेरच्या सुभ्यात दखल जाला बल्कि सामरेत की स्तत्यावर होत
होत सर्व बंदोबस्त होईल येसे ध्यानात आणून हे कबूल केली [खंड ६ ले १९३] तेच भविष्य पुढे
अहदनाम्यात खरे ठरले आगरे व अजमेर हे दोन्ही सुभे घेव्याची इच्छा बाजीराव भट पेशव्याची
होती असा स्पष्ट संकेत नाही तथापि नादिरशाहाविषय मोगलांची भवत करून महत्कार्य संपादवें
असा हेतू होता 'स्वामीचे वचन पूर्वी औरंगजेब पातशाहा होते त्यासी गुतले आहे की कोन्ही परचक
आले तर आम्ही कुमक करावी सर्वस्वे साहित्य करावे' [पिढ ३० ले २२२] पाछाहाची कुमक या
समई केलियाने राज्याचा लौकिक आहे माळव्यातील फौजा धिडे होळकर पवार पाठविये [खंड ६
ले १३०] 'परराज्य राहिले तरी सर्वांवर आहे त्यास फार विचार मनात न आणिता इकडील
कार्याची पेरवी कर्तव्य ते करावी.' [पिढ १५ ले ७२] 'नादिरशाहाने दिक्की घेतली तेव्हा पातशाहाची
कुमक न जाहाली फौजा वसईत गुतल्या यास्तव राउसाहेब बंकूटवासी बहुत दिलगीर जाहाले होते
फाकी पातशाहावर जपकार करावयाचा तैसा प्रसंग बनोन येणार नाही' [पिढ २१ ले २०] याचा
खरा अर्थ करावा लागले आणि त्या वृष्टीने सोबत्याची सेवा व अहदनाम्याचे महत्त्व ठरववे लागले

लेखांक [१५५]

श्री * संवत् १८११ भाद्रपद शुद्ध १२
[२९ अगस्त १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळोबा [गुळगुळे] स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा भाद्रपद * शुभ द्वादशी माा नजीक मेंढते जाणून स्वकीय कुशल लेखन करीत असावे. कौठ्याची फौज अखेरामसुधा आले म्हणोन लिहिले. तरी उतम गोष्ट केली. समये हाच आहे. बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१५५]

श्री * संवत् १८११ भाद्रपद शुद्ध १३
[३० अगस्त १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा गोसावी यांसि.

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ताा * ११ जिल्काद मुकाम मौजे वडगांव नजीक मेंढते जाणोन स्वकीये लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पुष्करच्या मुकामीहून पाठविले ते पावले. आज्ञा होईल त्या मार्गे येउ म्हणोन लािा. तर येथून राजश्री त्रिंबक बापुजी व केरोजी सिंदे [१] हे दोन्ही पथके तुम्हांकडे [सामोरा] पाठविली आहेत. ते तुम्हां येके ठिकाणी होउन मेंढते उजवे हाते टाकून लस्करांत येणे. * बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१५६]

श्री * संवत् १८११ आश्विन वद्य ७
[८ अक्टूबर १७५४]

चिरंजीव विजईभव राजश्री रामाजीपंत यासी प्रांते हरी अनंत अनेक अस्तिर्वाद उपरी. येथील कुशल तागाईत अश्विन * वद्य सप्तमीपावेतो समस्त सुखरूप असो विशेष. तुम्ही पत्रे आषाढ वद्य दशमीचे व येके भाद्रपद प्रतिपदा ऐसी दोन पत्रे पाठविली ती पावोन परम समाधान जाहाले. तरी जैसे निरंतर पत्र पाठउन सविस्तर वर्तमान लिहिले पाहिजे. भारवाड प्रांत गेले राजे रामसिंह यासी राज्यार बसवावे हे अगत्य बहुत आहे म्हणून लिहिले ते कळले. प्रस्तुत विजेसिंह मढत्यांत बसला आहे तो

बाहेर निघतो तेव्हा शुष्य होते म्हणून लिहिले ते कळले. सर्व रक्षिणार ईश्वर आहे. गावी काजकामे करावयाविसी लिहिले तरी येदा काही काम नवे करीत नाही. जी मागे केली ती तयार जाहाली. तशामध्ये नवी कामे काही करावी तरी श्रीमंताचा व तुलाजी अगरे याचा तह होत नाही याजकरिता धामधूम होईल यास्तव नवे काम करवीत नाही. वरकड लिहिले होते की झुकराजी नाई[क] भिडे याजकडून खर्चास मागोन घेणे म्हणून लिहिले होते. त्यास त्याजकडे दोनचार वेळा गेले. त्याणी सांगितले की तुम्हाजवळ काही हिसेव आहे की काये, त्यास आम्ही त्यास उत्तर दिले की हिसेव नाही. त्यास हिसेवी काही निघाले तरी देउ येसे त्रोलिले व बाकी आखेरीस आली म्हणून सांगितले याजकरिता याचा तपसीळ काये तो सविस्तर लिहिणे व हिसेव पाठवावयाचा असिला तरी पाठउन देणे. येथे श्रीमंत आपल्या स्वमुखे बोलिले की तुम्ही व राजश्री गंगोबातात्या [चंद्रचूड] येसे उभयेता आज दोनतीन वरसे जाहागीर मुळक दोन लक्षाचा खातात. येसी कोणी चुकली श्रीमंतापासी सांगितली त्यावरून श्रीमतानी चरचा केली. ते समई आमचा गंहस्त जवळ होता. त्याणे आम्हापासी सांगितले त्याजवरून तुम्हास झुचना ऋहिली आहे. ही बोली जाहाली ते समई राजेश्री अंताजी^{१४} माणकेश्वर [गंवे] जवळ होते व त्यास दसरियाचे दिवसी साहेबनौबत श्रीमतानी दिली. वरकड तुम्ही आपणाकडील सविस्तर लिहिणे. राजश्री राधोपंत राजवाडे याचे वरची समस्त झुखरूप आहेत व तीर्थस्वरूप राजेश्री नारोबादादा समस्त झुखरूप आहेत. वरकड वर्तमान होईल ते मागडून सविस्तर लिहून पाठव. कसवे आकुलनेर व नवगाव येथे परजन्य पडिला. पिके प्रस्तुत चागलीच

(९४) पहा भाग २ ले २ टीप ३ याचे उपनाम गवे [त्रैमासिक ८ अक ३ पान १३५] 'सलासीन' हणजे १७२९ पासून 'अताजी माणकेश्वर यासी ह्यालोनी मुढे याजकडील पागेच्या लिहिण्याचा घडा होता' असा लेख आहे. [पिद २२ ले ८३] अर्थात सलासीन नंतरच निराळें, पथक मिळून तो उत्तरेस आला असावा त्याला सरदारी प्राप्त झाली तुम्हा 'हिवरेकर बोकील' दिवाण होते 'गिरमाजी मल्हार बोकील हिवरेकर श्रीमत. सलासीन बापुचे सले माउ' असे वर्णन येते ते या बोकीलाचे होय. [पिद ३६ ले ३९७] या भागातील लेखाक ३९७, ३९९ चा काल चुकला आहे पत्रे १७७५ वील असून गिरमाजीपत बोकील त्या वेळी सिदेशाहीत होता [शिचसा ३ ले ४१०] अनो अहदनाम्यान्वये दिल्लीत जी फौज सोवल्यानी ठेविली त्याची सरदारी अताजीपताख दिली. तो कामावर गेला तेव्हा 'पातशाहानी साहेबनौबत दिली'. [पिद २१ ले ५५] 'मनसब हयाहजारी व नालकीची सगद वगजानडे निघालीच पाहिजे. हाच मान पेचाव्याने मान्य केला नालकीचे कोडे अगा रीतीने उलगडू पहाते मात्र ते पाहिजे तसे बघाव स्पष्ट नाही

आहेत. कोणाचा "कजियाडी नाही". राजश्री रामचंद्रबाबा [सुखठणकर] यासी अस्विन वध ४ देवज्ञा जाहली. दोनचार ताप आले. रामचंद्रबाबाची ब.इको बरोबर सयागमन केली. श्रीमंतही बहुत श्री वावाकरिता जाहाले. बाघुदेव जोमी यासही अस्विन सुध सप्तमीस देवज्ञा जाहली. बहुत काय हे आसिर्वाद.

गो राजश्री गणेश भट अगासे याचे वेदोक्त आसिर्वाद. प्रस्तुत आम्ही येथे आलो आहों. राजश्री घोडोबाआपापासी पुराण सांगत आहों. लोम असो दीजे हे आसिर्वाद.

सोभाग्यवती गोखली वयाचे आसिर्वाद. आम्ही उभयेता निघोन वाराणसीस आस्विन वध दसमीस गेथे. बरोबर येक चिरजीवही नउ. कळले पाहिजे. लोम असो दीजे हे आसिर्वाद. तुम्हावर श्रीमहालक्ष्मीची कृपा पूर्ण आहे. काही चिंता न करणे. हे आसिर्वाद.

आपत्ये महादेवाने" सिरसा नमस्कार. निरंतर पत्री संतोषवीत असावे तेणेकरून सतोष होईल. तुमचे आज्ञाप्रमाणे वर्तणूक करीत आहों. फलदाता ईश्वर आहे. कृपा केली पाहिजे हे विज्ञापना.

लेखांक [१५७]

श्री

* संवत १८११ पौष वध २

[३१ दिसबर १७५४]

राजश्रियाचीराजीत राजमान्य राजश्री

वाळोबा स्वामी गौ यांसि.

पो रामाजी अनंत नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता पौष्ये*वध २ जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे. यानंतर पत्र पा तें पावले. लीा वर्तमान कळले. रा माहाराजजी यांचे वृत्त लीा कीं श्री नाथद्वारास गेले आहेत सत्वरीच येणार असेत. सरकारच्या पैक्याची कांहीं निशा जाली कांहीं तदवीर करणार म्हणून लीा. तरी मोघमच लिहितां. अपूर्व आहे. केत्या कराराप्रमाणे सरकारचा पैबज वसुलांत येईल ते गोष्ट करणे म्हणजे तुमचाही मजुरा हानूर असे. बरकड जें लीा तें श्रीमंत राजश्री [जयाजी] आपासाहेबाच्या पत्री लीा असे त्यावरून कळेल. ' बहुत काये लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

(१५) हा हरीपत दामोदकराचा मुलगा होय. 'आज्ञेप्रमाणे वर्तणूक करीत आहो फलदाता ईश्वर आहे' या वाक्यावरून तो ससारात पडला होता असे निष्पन्न होते पण कोठे कसा हे काहीच कळत नाही त्याच्या लग्नाचा प्रश्न समोर असून वधुही धोर हवी होती [लि १८०, १८२]

लेखांक [१६०]

श्री * संवत् १८१२ चैत्र शुद्ध ७
[२० मार्च १७५५]

चिरंजीव विजईभव राजमान्य राजश्री रामाजीपंत यासी प्रति हरी अनंत अनेक आसिर्वाद उपरी, येथील कुशल तागाईत चैत्र * सुध सप्तमीपावेतो सुखरूप असो विसेश. तुम्ही पत्र माघ शुध त्रयोदसी मुक्ताम नागोर येथून श्रीगोंदे येथे जासुदाबरोबर पाठविले ते पावोन संतोष जाहाला. लिहिले वर्तमान कळो आले. तरी येसेच पत्र बरचेवर पाठउन सविस्तर वर्तमान लिहित असावे. बरकड राजकी वर्तमान तरी राजश्री रामाजी माहादेव याची खानगी कौकणात तुळाजी आप्ते याजवर जाहाली. साधीस गेले. तो सुरतेहून हपसी चार हजार आला. येउन मानाजी आप्ते याचे किलियास येउन वेडा घातला स्याजवरून मानाजी आप्ते याचे व हबसी याचे युध्ये जाहाले. त्याजउपरी रामाजी माहादेव यास मनाजी आप्ते याचे पत्र आले स्याजवरून हे आरमारसुधा बरोबर ईंग्रज घेउन गेले. स्याजनंतर याचे व शामलाचे युध्ये फारच जाहाले. शामलाकडील हजार दीडे हजार माणूस ठार जाहाले व येकदोन सरदारही मातबर पडिले व शामलाची ताराडीही दोनचार घेतली. शामल मोडून घेउन उदेरीत घातला. याजकडीलही दोनतीनसे माणूस जाया जाहाले. शामलाकडील बंदोबस्त जाहाला म्हणजे तुळाजी आप्ते याजवर आपले सारे आरमार व ईंग्रज घेउन जाणार. इकडून फौजा राजश्री दिनकर माहादेव समसेरबहादर येसे चारपाच हजार फौज घेउन गेले. विजयदुर्गास सारियानी जावे येसा कत्तार करुन गेले आहेत काय होईल ते वर्तमान लिहून पाठव. प्रस्तुत श्रीमताचा मुकाम गगातिरी आहे. बरकड राजश्री लक्ष्मणपंत [वैद्य] व राजश्री बाबुराव [लिभंय] याचे घरची समस्त सुखरूप आहेत. हरी फडका^{१६} व अंतोबा ताननकर व केशव दातार समस्त मडलीचे घरची मुलेमाणसे सुखरूप आहेत. नागोजीची बायको सुखरूप आहे म्हणून नागोजीस सांगणे. राजश्री राघोपंत राजवाड्याचे घरची मुलेमाणसे सुखरूप आहेत. कळले पाहिजे. बहुत काये लिहिणे लोभ असो दीजे हे विन आसिर्वाद.

(१६) याचे पूर्ण नाव हरी बलाळ फडके इतिहासप्रसिद्ध हरीपंत ताल्या फडके तो हाच पुणे येथील सावकार दिक्षित पदवर्धन याजकडील जमाखर्ची बह्दावरून या पुरुषाची कौटुंबिक माहिती नुकतीच प्रकाशित झाली आहे त्यात शके १६८३पर्यंत हा पदवर्धनाकडे होता असे वर्णविले आहे [प्रेमासिक १६ अंक १ पान २६] बरील पेढीच्या पोतड्याचे प्रमाण या भागात येणाऱ्या पत्रास मात्र पदत नाही हरीपंत व त्याचा बंधु बापुजी यांची अनेक पत्रे या भागात आली अगून उभयता भानुच्या पदरी राहून पेशव्यांच्या स्वारीशिकारीत काम करीत होते असे स्पष्ट होते. भानुच्या पत्रात पहिला

हसे घेतले म्हणाल तरी गौवकरी चारसे माणूस मेदळे याजमुले किला फाते लवकर जाहाला. तेथील वदोवस्ती करुन विजयदुर्गास जाणार. जी सवर्णदुर्गाची गत केली विजयदुर्गाची गत आहे. जेथे खासा [तुलाजी आंगरे] आहे तेही लोक सारे मेदळे आहेत. तेही काम लवकरच फने होईल. मुख्य गोष्टी किलेकरी व लोकाचे साऱ्या किल्याचे मेद आले आहेत याजमुले कामकाज लवकर होते. जजिरे रत्नागिरी खंडोजी माणकर याणे घेतली म्हणून वर्तमान आहे. ही गोष्ट खरी होईल. सवर्णदुर्ग घेताच वाणकोट व पालगढ रताउगढ याजवर निशाने गेली. आठ दिवसामध्ये आ [ठ] किले घेतले. किलेकरी यानी येकदर हात्यार धरिले नाही. मेदाने काम जाहाले. आंगरे याचे किले येकायेकी येतील हा भरवसा कोणासही नव्हता परंतु धरमेयानी त्याचे राज्य बुडविले. येदा काही बाकी राहत्ये पेसा मजकूर दिसत नाही. मुख्य गोष्टी की त्याचा विनासकाल आला. कोणी येक किला जुझत नाही. विजयदुर्ग आला म्हणजे आंगरे याचे राज्य^३ बुडाला. मग काही बाकी राहिली नाही. इंज बरोबर आहे व सारे याचे आरमार आहे. हिक्कून फौजाही गेल्या आहेत यास्तव आठपंधरा दिवसांनी सारा वदोवस्त होउन येईल. मुख्या गोष्टी की श्रीमताचा पुण्यप्रताप थोर आहे याजमुले जी कामे हावयाची नाही ती होउन येतात. रयेतीचे बाटे कोणी येकदर जात नाही. रयेतीस कौल दिव्हा. कोणी छुटीत नाही. याजवर होईल वर्तमान ते सविस्तर लिहून पाठउ. तुम्ही आपणाकडील सविस्तर लिहिणे. लोभ असो दीजे हे आसिवांद.

समस्तास सा नमस्कार सांगणे.

(१७) 'आंगरे याचे राज्य बुडाले' हे उदगार वाचणीय होत महाराष्ट्रात त्याची प्रतिष्ठा काय होती हे स्पष्ट होते. आगऱ्याविषयी जी पत्रे या भागात आली आहेत ती अल्प असली तरी मार्मिक आहेत. आगऱ्याचे सामान ह्याषाचे तर १० हजार प्यादे बीड हजार राजत खेरीज आरमार सामान जवरदस्त [पेद २४ ले १९] मराठ्यांचे आरमार हटले ह्यापजे ही आगऱ्याचीच गक्ती मुख्य. समुद्रकाठी वास करणाऱ्या परकिगास वचक या कोवडाचा होता हे शस्त्र आगऱ्याच्या हाती राहिले तोंवर राने चांगलाच टणकार केला यामुळे बहुतेकाचे दात त्याजवर होते. शाहु महाराजानंतर 'राज्याचा प्रकार आणखीच झाला त्यात परकियांचे सहाय घेऊन स्वकियास नामशेष करण्याची नीति स्वतःस 'शिवाजीच्या निष्प ह्यापविषयाच्या व 'शुक्लीतीने' चालणाऱ्या पेशव्याच्या वेळीच निघाली. तिचे इष्टानिष्ट परिणाम याच स्वारीत प्रत्ययास आले आणि 'हिंदुस्थानचे पातशाहा' होऊ पहाणाऱ्या पेशव्याने मराठी आरमारावर प्रत्यक्ष आणि जगान्तच्या वांट्यावर अप्रत्यक्ष उदक सोडले असे ह्याषाचे लागते. 'रावसाहेबी सर्वदा काळें माणसांचरीच मोहीम करितात परंतु गोरे माणसाची तंबी

लेखांक [१६३]

श्री * सवत १८१२ वैशाख शुद्ध १४
[२५ अप्रैल १७५५]

राजश्रियांविराजित राजमान्यं राजश्री

दाळोजीबाबा स्वामीचे शेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत सां नमस्कार विनती उपर. येथील कुशल ता छ*१२ राजव माा नागोर जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे. विशेष. तुम्हीं पत्र पाठविले ते पावले. ' लिहिले वर्तमान सविस्तर कळले. येथून सविस्तर श्रीमंत [जयाजी] आपासाहेबांच्या लिहिल्यावरून सर्व कळो येईल. बहुत काये लिंगा हे विनंती.

लेखांक [१६४]

श्री

[जून १७५५]

राजश्रियांविराजित राजमान्यं राजश्री

दाळोबा स्वामी गोसावी यासि.

सां रामाजी अनंत नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीय कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. पत्र पां ते पावले. तेथें लिहिलें वृत्त कळलें. गववार वाटणी आपली हिसे माफक मागतात म्हणून लिहिले तरी हिसेप्रां वाटणीचा पैका ज्याचा त्यांस देणे. ' बहुत काये लिहिणे. येथील मजकूर तर येथील सल्लुखाची बोली लागली आहे आठाची दिवसानी फिसल होईलसा दिसतो. माहाराव पैका देत नाही म्हणोन लिहिले तरी जसे कर्म करतील तसे फळ पावतील. बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१६५]

श्री

* संवत १८१२ ज्येष्ठ शुद्ध ८
[१७ जून १७५५]

राजश्रियांविराजित राजमान्यं राजश्री

दाळोबा स्वामीचे सेवेसी.

सा रामाजी अनंत सा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताछ*६ माहे रमजान जाणून स्वकीय कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. पत्र पाठविलें तें पावले.

करून त्याकडून घेवज घेत नाहीत' हे शब्द एका परकीय गवरनराचे आहेत. त्याची मीमारा करण्याचे परिश्रम वाचकास करावें लागतील [विद २८ ले ८७] त्याबाबून या व्रातीचे रहस्य उमगणार नाही. यासंबंधी विवेचन मालेत येईलच.

तेथें लिहिलें वर्तमान तपसीलवार कळले. त्याचा जावसाळ श्रीमंत राजश्री [जयाजी] आपासाहेबांचें पत्री लिहिला असे त्यावरून कळेल. वरकड वर्तमान तरी अर्धापि प्रथमच दिवस असे. पुढे होईल वृतांत त्याप्रॉ मागाहून लेहून पां जाईल. † नागोराहून किसनसिंग भाटी वगैरे आले होते. बोलीचाळी सलुखाची ठीक जाहली. फिरोन रांगड्यानी लबाडी करून गावात गेले. आठाचा दिवसात झक मारून घेउन पाया पडतील. कोणे गोष्टीची चिंता न करावी. बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१६६]

श्री * संवत १८१२ आषाढ शुद्ध ६
[१५ जुलै १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळोबा [गुळगुले] स्वामीचे सेवेसी

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती. येथील कुशल ताा आषाढ * शुध्व ६ मुकाम नागोर प्रांत मारवाड जाणून स्वकीयं कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. पत्र पाठविलें तें पावले. लिहिलें वृत्त अवगत जाहले व राजश्री दादासाहेब व राजश्री सुभेदार [होळकर] देशास जावयासि दरकूच ग्वाल्हेर प्रांताकडून गेले. त्यांचे तपसीलवार वर्तमान लिहिलें त्याप्रमाणें कळलें. येणेंप्रमाणेंच सदैव स्वकीय कुशलार्थ लेखन करीत जाउन सानंदवीत असावें. सविस्तर अर्थ श्रीमंत राजश्री [जयाजी] आपासाहेबांचें पत्री लिहिला असे त्यावरून कळेल. † हुंब्याचा मजकूर लिहिला तोही कळला. इकडील वर्तमान तरी जोधपुर नागोरास फौजा आहेत त्याप्रमाणेच आहेत. सद्धख जाहालियावरी तपसीलवार लेहून पाठउ. पाटणचे कारेगर आसिले तरी लेहून पाठवणे म्हणजे आम्हास काही जिनस करवावयाचा आहे तो लेहून पाठउ त्याप्रमाणें तयार करवावा. बहुत काये लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१६७]

† श्री

[१७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळोबा [गुळगुले] स्वामीचे सेवेसी.

साा रामाजी अनंत [दामोळकर] नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. पत्र पां तें पावले. लिहिले वर्तमान कळले. येथून जे लिहिणे ते श्रीमंत राजश्री [जयाजी] आपासाहेबाच्या पत्री लािा असे त्यावरून कळेल. † बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१६८]

श्री * संवत १८१२ भाद्रपद शुद्ध १
[७ सितबर १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळोबा स्वामी गोसावी यांति.

सेवक रामाजी अनंत नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता छ * २९ जिल्कादपर्यंत मुकाम नागरे यथास्थित जाणून स्वकीये लिहिणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते प्रविष्ट होउन सविस्तर अर्थ कळला. राजश्री माहारावजी यानी एक लक्ष ऱा धावयाचा करार केला आहे देतील म्हणोन लािा. पाा पाटणचे यैवजी कर्जबाय करून यैवज पाठवावा तरी हुंडी होत नाही म्हणोन लािा ते कळले. यैसियासी सदरहु दोनी यैवजाच्या हुड्या करून यैवज सत्वर पाठवणे. येथे यैवजाची बोट कसी आहे ही तुम्हांस ठावकीच आहे. तरी हर तरतूद करून यैवज पाठवणे. राजे माधोसिंगजीचे प्रपन्वाचा मजकूर लािा तो सविस्तर कळला. त्याची बुध त्यास सत्वरीच कार्यास येईल बहूत दिवस लागणार नाहीत. सदैव सविस्तर वर्तमान लेहून पाठवीत जाणे. ' बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१६९]

श्री * संवत १८१२ भाद्रपद शुद्ध ७
[१२ सितबर १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळोबा स्वामी गोसावी यांति.

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती. येथील कुशल ता छ * ५ जिल्हेज जाणून स्वकीयं कुशल लेखेन करीत गेले पाहिजे विशेष. पत्र पाठविले ते पावले. लेखनार्थ कळो आला परंतु जो हिसेब लिहिता तो वरचेवरीच उडवाउडव करून लिहिता यावरून काये म्हणावें. पांचा लांखाचा तपसील लिहित तोही सुधा न लिहिलात व आपाढमासी पोर्णमेपावेतो सात लाख रुपये धावे तेही कांठीच लिहिलें नसा. अपूर्ध आहे. याउपरी तन्ही सर्वही तपसीलवार लेहून पाठवणे. ' दोन लाख वतीस हजार बाकी येणे आहेत. त्याज बावना हजाराचा तगादा लाविन्ना आहे म्हणोन लिहिले तरी वरकड रुपये कोणी मागावे. पवारास अद्याप येक पसा पावला नाही. श्रीमंताच्या ताकिदी वरचेवर येतात. पांचा लाखाची पधरा दिवसाची मुदत होती. त्याम तीन मास होउन गेले. सात लक्ष उन्हाळुवर धावे त्याची तजवीज काय केली आहे हे काहीच लिहिले नाही. तरी अखेरामजीम पुसोन उत्तर त्याहावे. वागंदा नुकरुलियात्री अखेरामजीनी लिहिले आहे त्याप्रमाणे करावे लागेल. बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१७०]

श्री * संवत् १८१२ भाद्रपद वद्य ११

[१ अक्टुबर १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत सा नमस्कार त्रिनंती उपर, येथील कुशल ता छ * २४
जिल्हेज मुा नागोर जाणोन स्वकीये कुगल लेखन कारणे विशेष. तुम्हीं पत्र पाठविले ते
पावले. प्रांत कोटे व पाटणच्या येवजी सत्तावीस हजार दोन रुपयाच्या हुंड्या जेपुरच्या
करून पाठविल्या आहेत रुपये पावल्याचे उत्तर पाठवणे म्हणोन लिहिले. तर हुंडीपत्रे
जैपुरास पाठविली आहेत. सही होउन येवन येईल तेव्हां जाव पाठउन देऊ. राजे
माधोसिंग याच्या फौजेसी व आपल्या फौजेसी युच्य जाले. कळच्याची फौज मोडली
म्हणून लेखन केले तर पुढे राणोजी भोइटे वगैरे फौज पाठविलीच होती. मागून राजश्री

(९८) राणोजी भोइटे हे नाव पेशवेदपतरात अनेक जागी आढळते. त्यांपैकी भाग २, २१,
२५ व २७साठी ल भोइटे हाच राणोजी होय असे नि ससय कळते राणोजी शिवाची मुलगी जानकीबाई
ही भोइटेचास विली होती ते घराणे बहुधा हेच असावे. पण पत्राभावी हे शुद्ध अनुमानच आहे अस्तु.
१७५० पासून शिवाच्या सर्व स्वारीत हा भोइटे असून त्याचा प्रामुख्याने उल्लेख येतो. १७५२ नांत
तर त्याने स्वतंत्र स्वारीच मारवाडत केली होती [भाग १ ले ९८] तेव्हापासून तो तिकडेच होता [पद २
ले ३५] १७५७ नांत देशी निजामाच्या लढाईतही होता [पद २५ ले १७४] तेथून उत्तरेस आल्यानंतर
साहापुरच्या वेढ्यात गोळीने ठार झाला शिवाचा तो 'सरनोबत' होता असे बखर ह्मणते. त्याच्या
पश्चात् कोण झाला हे समजत नाही 'जनकोजी सिंदे याचा बकी सिववा सेनवाई हा हिंदुस्थानचे
लढाईत मयत जाला' असा मात्र निर्वेश आहे [पद २९ ले ४] पण बकी ह्मणजे सरनोबत नव्हे
शिंदेसाहीत ही पदे भिन्न होती. आमच्या मते साबाजी सिंदे हा सेनापती असावा कारण रोहिल
खडाच्या स्वारीसंबधी पेशव्याचें स्वतंत्र पत्र याच्या नावे सापडतें. [कासं ले ८२] भोइटेचाच्या
समाप्तये मारवाडच्या स्वारीत असून पानिपतानंतर उत्तरेकडील व्यवस्था तोच लावीत होता आणि
तो बक्षिणस गेल्यानंतरच मागें खानाजी जाधव 'सेनापती' या नात्याने बागू लागला. [भाग १ ले ९८,
२२८, २६३, २६५, २६६, २७१, २७३ भाग २ ले ७४] होळकराच्या वतीने जसा सटवाजी राजोले हा
मुतालकी सिक्कामोर्तव वापरीत होता [चंद्रचूड १ ले ४६] तसेच साबाजी सिंदे व खानाजी जाधव हे दोघे
शिवाची भुतालकी चालवीत होते. याकूबअलीखान बकील याच्या मारफतीने अबदालीबी जो तह
मारठाचा मथुरेस झाला त्यात हा जाधव व चित्तो कृष्ण बळे हे दोन प्रतिनिधी शिवाकडून होते. याच
जाधवाला 'सरनोबत' असेंही ह्मटले आहे. १७७० पर्यंत तो या पदावर होता पुढें महादजी सिंदे याचा
भाचा बहीरजी ताकपीर या जागेवर आला राबोबाने संमान साधून त्याला आपल्याकडे बळविले
तेव्हा त्याचे पारपत्थ होऊन 'खललाबचन' पावला. ही घटना १७७६ची आहे याच सुमारास होळकर-
साहीतून अबाजी इगळे शिवाकडे आला त्याला हें पद मिळाले. सिववा सेनवाईनंतर राबोबा पाने

नरसिंगराव" सिंदे व खानाजी जाधव याजवाा फौज व सवाईराम यास देउन पाठविले आरो. बहुतेक सखा होईल. सखा न जाळ तर छट्टन घेतील. चिंता नाही. नागोर जोधपुर येथील बंदोवस्त पूर्ववतप्रमाणेच आहे. कांहीं व्यंग पडो न दिले. कळले पाहिजे. जोधपुरी राजश्री संताजी बाबळे व जिवाजी पवार व हाडे व राधो हरी व अबदुलरसूल व द्वावाजी कोळ पांचसहा हजार फौज आमची आहे व जगु पुरोहित व सारे मारवाडी रागडे तेथेच आहेत. बंदोवस्त पहिल्याप्रमाणेच आहे. नागोरस तो खासाच आहेत. नागोरामवताले गांव होते ते तमाम सारे मारले याजमुळे रसदही [मारवाडकराकडे] येव पावत नाही. ' बहु काय लिहिणे हे विनती.

लेखांक [१७१]

श्री * संवत १८१२ आश्विन शुद्ध ४
[९ अक्टूबर १७५५]

राजधियांविराजित राजश्री

वाळोबा स्वामी गो यांसि.

पो रामाजी अनंत नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता आश्विन * शुभ ४ जाणून स्वकीय लेखन करित असणे. यानंतर पत्र पां तें पावले. लिां द्रुत कळले. याप्रौाच सदैव वर्तमान ताावर लिहित जाणें, ' बहुत काय लिहिणे छेम असो दीजे हे विनंती.

'बशी' होता १७६९त शिवाजी विरोध वाढवून पतन पावला तेव्हा सदाशिव महार शेंणवी वकिंगिरीवर आला प्रथम इंग्रजाकडे आणि नंतर वादशाहाकडे तो वकिलीवर गेला तेव्हा जिवाबा केरकर हा बशी झाला ही गोष्ट १७८२ नंतरची होय यापूर्वी केरकर कधीच सेनापती सरनेवत किंवा बशी नव्हता पानिपतानंतरच केरकर मेवाडात 'कमाविस' करू लागले प्रथमत १७४४त शिवाय्या पदरी पथकदार या नात्याने जिवाबा राहिला अशी वस्तुस्थिति असता चरित्रकाराने बराच पाव्हाळ केला आहे. तो अवास्तव होय हे सप्रमाण पुढें सविस्तर समजेलच सिवाबा शेंणव्याची मुलगी होती तिचा सभष कदाचित केरकराशी जुळून आला असेल तर गोष्ट वेगळी आहे मात्र तसा सदर्म कोडे सापडत नाही

(९९) पहा भाग १ ले ५, ५० टीप १०, ६२ 'चिरजीव साबाजी सिंदे नालशास पोहोचत नाही' असे राणोजी शिवाजी संबोधिले असून [पेद २७ ले ६३] 'आमचे अकारीक साबाजी सिंदे हिडुस्थान प्राते चाकरीस आहेत' असे निवाबाईनेही म्हटले आहे. [पेद २९ ले ११] अर्थात साबाजी हा कन्हैरखेडकर शिंदे होता असे नि सशय होय. पेद २७ ले ३३चे वर्ष चुकलें असून ते १७५४च्या पूर्वी गेले पाहिजे अस्तु हा नरसिंगराव याचा पुत्र होता प्रसिद्ध मानाजी फाकडे याचाच मुलगा होय.

लेखांक [१७२]

श्री * संवत १८१२ आश्विन वद्य ३
[२३ अक्टूबर १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ताा छ
* १६ मोहरम गुा नागोर जाणोन स्वकीये कुशल लखन करणे विशेष. तुम्ही पत्र
पाठविले ते पावलें. सविस्तर वर्तमान कळो आले. यजमाना[स] श्रुत करून प्रतिउतर
पाठविले आहे त्यावरून कळो येईल. येथील वृत्त राजश्री नारो विठळ लिहितील
त्यावरून कलेळ. प्रस्तुत माधोसिंग [कडवा] यानी आनरुद्दसिंगास आम्हावर पाठविले.
त्याची दुमदारी^{१००} राजश्री राणोजी भोईटे यानी छ १ ९ मोहरमी मारुन हजारबारासे घोडे
घेतले व तोपखाना घेतला. सातआठसे माणूस रजपुत कापून काढिले. हे वर्तमान तुम्हास
कळलेच आसेल. १ बहूत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१७३]

श्री * संवत १८१२ कार्तिक शुद्ध ७
[१० नवबर १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ताा छ * ५
सफर गुा नागोर जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते
पावले. सविस्तर वर्तमान यजमानास श्रुत करून प्रतिउतर पाठविले आहे त्यावरून कळो
येईल. वरकळ राजश्री नारवानानाचे पत्री लिहिले आहे त्यावरून कलेळ म्हणोन
लिहिले. त्यास नानानी आम्हास सांगितले की कांही जिनस करवणे आहे त्याची याद
लेहून घाची परंतु आम्ही याद लेहून दिल्ली नाहीं. का म्हणाल तरी आम्ही याद लेहून
पाठविलियाने काम होणार नाही आणि आपणास श्रम द्यावे हे उत्तम नाही. याजकारिता
याद लेहून पाठविली नाही. तुम्ही याळ तेव्हां जे सांगणे ते सांगो. बहूत काये लिहिणे
लोभ असो दीजे हे विनंती.

(१००) दुमदारी ह्याजें चडोळ सैन्याची पिछाडी. अताजी माणकेवर 'कार्तिक शुद्ध
प्रतिपदेस' म्हणजे ५ नवबर १७५५ रोजी भारवाडात पोचला. [पेद २ ले ५४] त्यापूर्वीच जयपुर-
कराचा सेनापती अनिरुद्धसिंग याचा समाचार शिवाकडील भोईट्याने दोन वेळा घेतला होता. पहिला
९ व दुसरा १४ मोहरमी. [ले १७२ पेद २ ले ५०] अर्थात अताजीपंताचे स्वकृतीमडन अति-
शयोक्तीचे भासते. [पेद २ ले ५४]

लेखांक [१७४]

श्री * संवत् १८१२ कार्तिक वद्य १२
[३० नवबर १७५५]

राजभियाविराजित राजमान्य राजश्री
वाळोबा [गुल्लगुले] स्वामीचे शेवेशी.

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनती उपरी येथील कुशल जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. टीका घेउन येतो म्हणून लिहिले. तर उत्तम गोष्ट आहे. घोडे व हत्ती चांगला पाहून बाा घेउन येणे. यादी पाठविली नाही म्हणोन लिहिले तरी आपण येथे आल्यावरी जे सांगणे ते सांगो. सरकारात राजश्री गोविंदराव कृष्ण याजकडून श्रीमंतानी दोनसे उट खाा करून आपणविले होते त्याजवरून [त्याने] पाटणास माणसे पाठविली. त्यास आपण उंट खाा करू दिले नाही. जकातीचा तगादा लाविला. त्यास जासुदास बरेवाईट कमाविसदार बोलले म्हणोन येथे ये[उन] नानाप्रकारे सांगितले. तरी आपण प्रसंगी होता. श्रीमंताचे दस्तक होते. येथील होते. ते [न] मानिले तरी काय चिंता आहे. हा आपला घरचा कारभार आहे परंतु श्रीमंताचे दस्तक न मानावे हे उत्तम नाही. बरे जे जाहाले ते जाळे. जासुदास ताकीदपत्रे देउन पाठविले आहेत. हे तुम्हाजवळी येतील. त्याजबाा आपली माणसे देउन उंट जे खाा केले असतील ते मुकुंदबारी पार करून देवणे. बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१७५]

श्री * संवत् १८१२ पौष शुद्ध ६
[७ जनवरी १७५६]

राजभियाविराजित राजमान्य राजश्री
वाळोबा [गुल्लगुले] स्वामीचे सेवेशी.

सेवक रामाजी अनंत नमस्कार विनंती. येथील कुशल ताा छ * ४ राखर जाणून स्वकीय कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. पत्र पाठविलें तें पावलें. तेथें लिहिलें वर्तमान अवगत जाहलें. जैनगरचे वर्तमान तरी अतुल्यसिग येथे आला आहे. सल्लुखाचा विचार बोलत आहे. जैनगरास कासिद व सांड जातात व येतात. सिघात ठरेल त्याप्रमाणें मार्गाडून लेंहून पाठउन देउं. कोर्टेकरांकडील टीका घेउन येतो म्हणून लिां तरी फार रोज येसेच लिहितां. अपूर्व आहे. लौकरीच टीका सामान व हाती

चांगलाच यसे घेउन येणे. दिरंग न लावणे. येतांना या समयांत च्यारपांच लाख रुपये येथे खर्चाकरितां तुम्हीं आणलेत म्हणजे मोठासा तुमचा मजुरा धंप्याजवळ होईल. येविसीं हेगै सर्वथा न करणे. ! येथील वर्तमान तरी अनुरुदसिंग येथे आले आहेत. बोलीचाली होत आहेत. जोधपुर खाली करून घावयाचा करार जाला आहे. लौकरच येथील निर्गम होईल. वरकड माहागाई तरी फारच आहे. च्यारपांच सेर दाणे आहेत. तुमच्या मुलकात ताकीद करुन रस्त पाठवणे म्हणजे येथेच पैका सरकारात भरितील. कलले पाहिजे. बहूत काय लिहिणे हे विनंती.

लंखांक [१७६]

!श्री

[जून १७५६] ?

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
वाळाजीबावा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशल जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करणे विशेष. तुम्हीं पत्र पाठविले ते पावले. यथील वर्तमानाचेविसी लिा तर नागोरवाल्यासी सलूख करुन कूच केले. याउपर ज्येनगरच्या मुलकात जात आसो. कलले पाहिजे. !सविस्तर वर्तमान श्रीमंत राजेश्री [जनकोजी] बावासाहेबाच्या पत्रावरून कलेल. क्कोटेकराचा तुम्हीं आखेराम याचे गुजारतीने स्नेह सपादून आम्हास राणाजीच्या मुलकातून काढले त्याजमुले खावंदाची इतराजी^{३३} कैलासवासी [जयाजी] आपासाहेब याजवरी जाली व च्यारपांचसे घोडी डोंगरात मेली. इतके केले करास की आमचा कराराप्रा पैका देतील. त्यास आज तीनच्यार वर्षे जाहली. अद्याप एका वर्षाचादेखील पैका वसुलत आला नाही. आम्हीं मारवाडात गुंतलो होतो याजकरिता इतके दिवस वाट पाहिली. आता वाट पाहवत नाही. आमचा पैका बहुत येणे त्याची वाट होत आसिली तरी उत्तम आहे. नाही तरी माहारावजीच्या मुलकात यावे लागेल. महिना पंधरा दिवस त्या मुलकात राहोन पैका घेणे लागेल. ये गोष्टीची काये ते तरतूद करावयाची असेल ते माहारावजीस पुसोन करावी आणि उत्तर सत्वर पाठवावे. वाळोबा [जयाजी] आपास कैलासवास होउन नवदहा महिने जाहले. अद्याप टीका पाठवावयासि अनकूल पडले नाही. राजे माधोसिंग व राणाजी वगैरे यांचे टीके आले आणि क्कोटेकरास टीकादेखील पाठवावयासी

(१०१) पहा भाग १ ले ९८ १७५२तील भोदटे व साबाजी सिंदे यांच्या स्वारीचा हा हवाल्ला दिसतो.

आनकूल पडले नाही. असा कसा हो भाउपणा^{१०२} तुम्ही व आखेरामाने केला, वरे जे तुम्ही करिता ते उत्तम करिता. पाटणचा यैवज लौकर पाठउन देणे, बहुत काये लिहिणे हे विनती.

लेखांक [१७७]

श्री

* संवत १८१४ चैत्र वद्य ३

[७ अप्रैल १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबा [गुलगुले] स्वामीचे साो.

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती. येथील कुगळ ताा छ * १७ रजव जाणून स्वकीये कुगळ लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. पत्र पाां ते पावले. लिहिले वर्तमान तपसीलवार कलेां आले. त्याचा जावसाल यजमानाचे पत्रां लीा असे त्यावरून कलेळ. तिकडील वर्तमान पठांगाचे [अबदाली] देखील तत्वता आणवीत जाउन वरचेवरी लेहून पाठवीत असावे. येथेही फौजेची तयारी जाली. याउपरी जलदीनेच निघोन तिकडे येणार आहेत. कळले पाहिजे. ' आम्ही पुण्यास गेले होते ते काळी संध्याकाली श्रीगोंडास आले. लौकरच समजाविसी नालवंदी होउन छस्करासहवर्तमान] श्रीमंत त्या प्रांते येत आहेत. बहुत काये लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनती.

लेखांक [१७८]

श्री * संवत १८१४ आश्विन शुद्ध १३

[२५ अक्टूबर १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशळ ताा छ * ११ माहे सफर मुा छस्कर येथास्थित जाणून स्वकीये कुशळ लिहित जाणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. लिहिले वर्तमान कळले. इकडील घृत सविस्तर श्रीमंत राजश्री [जनकोजी] बाबासाहेबाच्या पत्रावरून सविस्तर कळल. ' प्रस्तुत औरंगावादेजवळ मुकाम आहे मोगलाचा विगाड जाहाळा आहे. येक झुंझ चांगले जाहले. मोगला कडील हणमतराव [निंबालकर] याचा मेहुणा [माने] कामास आला. कळले पाहिजे. आम्हाकडील कोणी मातवर जायाच जाहाळा नाही. बहुत काय लिहिणे हे विनती.

पो छ ५ राखर

[१७ दिसेबर १७५७]

(१०२) कोटेकराबाी शिवाचा 'भाउपणा' होता आणि ती अखेरामाच्या विद्यमाने बदून आला असे स्पष्ट होते मात्र त्याचा काळ कळत नाही

लेखांक [१७९]

श्री * संवत १८१४ आश्विन वद्य ३

[२० अक्टूबर १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ * १६ माहे सफरपर्यंत यथारिथत जाणून स्वकीय कुशल लिहित जाणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. लिहिले वर्तमान सविस्तर कळले. वरकडे इकडील वर्तमान तरी श्रीमंत राजेश्री [जनकोजी] बाबासाहेबाच्या पत्रावरून कळो येईल. ' इकडील वर्तमान तरी भोगलाचा आमचा विगाड जाहला. येक जुंझ जाहले. भोगलास मोहून गोठात घातले. राजश्री हूनमंतराव निंवाळकर याचे मेहुणे नागोजी माने ठार पडले. वरकडेही कितेक लोक त्याचे मारले गेले. आपणास कळावे म्हणून लिहिले आहे. बहुत काये लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१८०]

श्री * संवत १८१४ मार्गशीर्ष वद्य ११

[५ जनवरी १७५८]

चिरजीव विजईभव राजमान्य राजश्री रामाजीपंत यासी प्रति हरी अन[त] असिर्वाद उपरी. येथील कुशल तागाईत मार्गशीर्ष * वा येकादसीपावेतो समस्त सुखरूप असो विशेष. तुम्हीं पत्र मार्गशीर्ष वा पंचमीचे पाठविले ते पावोन सविस्तर वर्तमान कळो आले. भोगलाचा सलूख जाहाला पंचवीस लक्षाची जाहागीर व किला घावा याप्रमाणे करार जाहाला म्हणून लिहिले तरी उत्तम गोष्ट जाहली. श्रीमत राजश्री विस्वासराव [भट] याची प्रथम स्वारी फते जाहाली तेणेकरून बहुतच गोष्ट उतम जाहाली. तुम्हीं पत्री लिहिले की अलीकडे पत्र येउन वर्तमान कळो येत नाही. त्यास मार्गशीर्ष शुभ पक्षी येक व येक श्या १४ येसी दोन पत्रे नवगावीहून माणसे कागद राजश्री गणेशपंत याजकडून घेउन आली होती त्याजबरोबर सविस्तर वर्तमान लिहून पाठविले होते. ती पत्रे गणेशपंतानी तुम्हाकडे पाठविलीच असतील. त्याजवरून सविस्तर वृत्त कळो येईल. सौभाग्यवती जानकी मार्गशीर्ष श्या प्रतिपदा प्रसूत जाहली. पुत्र^{१३} जाहला.

(१०३) ही जानकीबाई रामाजीपंत दामोलकराची पत्नी होय. तिला हा तिसरा मुलगा झाला. त्यांचे नाव मोरोबा असे होते.

हे वर्तमानं लिहिले आहे. ती पत्र पावलीच असतील. त्याजवळीकडे सौभाग्यवती रखमीण तीर्थस्वरूप राजश्री कृष्णाजीपंत दामोदकर याची स्त्री मार्गसीर्ष वा प्रतिपदेस प्रसूत जाहाली. पुत्र जाहाला. कळवे म्हणून लिहिले आहे. वरकड घराचे काम तरी खोळी व मजला होउन वरील मजले याच्या तुल्या माजघरच्या घातल्या. वरकड राहिल्या आहेत त्याही येकादोहो रोजानी घालितो क्लोकणचे काम तरी जेवरे याचे देवाळ्ये दगडी काम जाहाले लाकडी कामास गणेशमठ याजकडून लाकडे तोडविली होती. त्याणी दोन घेपा सोटेयाच्या गळबत मरून ठिकाणी पोहचउन आले. वसणीचे काम आहे तैसेच आहे. घोड जोसी चालो देत नाही. या प्रकारचे वर्तमान आहे. चिरंजीवाचे लग्न करावे येदा येसे आमच्या चितात आहे. त्यास राजश्री मोरो नारायण याची घोर मुली होती तिचे लग्न मार्गसीर्ष मासी जाहाले. लहान मूल आहे तिचे नावनक्षत्र पाहिले व त्याणीही आमच्या मुलाचे नांवनक्षत्र पाहिले. ते उत्तम आले. त्यास प्रस्तुत मोरो नारायण याची स्त्री कोनी निघावयास जाहाली आहे. आठपधरा दिवसानी प्रसूत होईल. उपरात माघ शुध त्रतियेस काये सांगणे ते सांगो ऐसे बोलिले. त्यास मोगलाचा सख्ख जाहाला. वरकड तुमचे कामकाजाची व मोगलाने जाहागीर श्रीमतास दिले आहे त्याचा बदोवस्त जाहा[ला] म्हणजे श्रीमताची आज्ञा घेउन घरास यावे. माघमासी अथवा फाल्गुनमासी लग्नकार्य करून घ्यावे ऐसा आमच्या चितात आहे. मोरो नारायण याचे चितामध्ये आहे स्त्री तुम्हासी शरीरसमध करावा. प्रस्तुत ते मलठणास गेले आहेत. तुम्ही पत्राचे उत्तर पाठउन देणे. राजश्री राघोपंत राजवाडे व चिरंजीव येथे घरीच आहेत. राजश्री राघोपंत देशमुख खाली [कोकणांत] गेले आहेत ते बोलिले स्त्री वसणीचे का[म] अम्हास पावले. तुम्ही कांही चिता न करणे. त्यास त्याचे उत्तर आले म्हणजे लिहून पाठउ हे अतिर्वाद.

आपत्ये माहादेव देवाने [?] सिरसां नमस्कार. लोम करित जावा.

लेखांक [१८१]

श्री

* संवत् १८१४ पौष वद्य ११

[४ फरवरी १७५८]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

घाळाजीवावा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनती उपरी. येथील कुशल ताा पोषे

* वद्ये ११ मुकाम घटदर जाणून स्वकीय कुशल लिहित जावे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले

ते पावले. लिहिले वर्तमान सविस्तर कळले. इकडील अर्थ सविस्तर श्रीमंत राजश्री [जनकोजी] बाबासाहेबांच्या पत्रावरून कळो येईल. श्रीमंताचा व मोगलाचा सद्दख जाला. पंचविसा लक्षाची जागीर व नलदुर्गचा किला श्रीमंतास दिल्या. मोगल व मुसा भुसी औरंगाबादेस गेले. याउपरी आम्हांस आज्ञा लौकरीच होणार. गुजराथ प्रांत आमच्या येजमानास वेदा स्वारी नेमिली असे. तिकडील कार्य जालियानंतरी तुम्हांकडेही लकरीच येणे होईल. आलियानंतरी सर्व बंदोबस्त करून दिल्या जाईल. चिंता न करावी. बहुत काय लिहिणे ! लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१८२]

श्री * संवत १८१४ माघ वद्य ५

[२८ फरवरी १७५८]

तीर्थरूप राजश्री [हरीपत]दादा वडिलाचे सेवेसी

अपत्ये गमाने चरणावरी मस्तक ठेउन सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता माघ * वद्य पंचमीपावेतो सुखरूप आसो विशेष. आपण दोनचार पत्रे पाठविली ती पावली स्याजवरून सविस्तर अर्थ कळला. ऐसियास आमचे येणे ये समई होत नाहीं. गुजराथ प्रांते जावे लागते. घर तयार जाहाले म्हणोन लिहिले उत्तम गोष्ट केली. सोपेही लागलेच होत आसिले तरी करावे. यातच उत्तम आहे परंतु सामान तयार नसिले तरी उगीच जिवाची बोट न करणे. पुढे होतील. तुमच्या समाधानानें येदाच करावे असे आसिले तरी येदाच करो. आपला मनोदये असेल तसे करावे. आमचा आग्रह नाहीं. मुलाचे लग्न वैशाखमासी खामखा करावे. आम्हीं आलो नाहीं म्हणोन काही चिंता नाहीं. येक मूल व सोयरा चागला ग्रहस्त पाहोन शरीरसमथ करावा. कोकणात जाणे आसेल तरी जावे आगर काम नसेल तरी न जावे. बहुत काये लिहिणे इंपालोभ आसो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१८३]

श्री * संवत १८१४ फाल्गुन शुद्ध २

[११ मार्च १७५८]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळोबा [गुल्युले] स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता ल* १ माहे रजबपर्यंत मुकाम मोजे सिवोद मा हासलपूर येयास्थित जाणून स्वकीय कुशल लिहित जावे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. तपसी वर्तमान लिहिले स्यांप्रमाणे सविस्तर कळले. यानंतर इकडील वर्तमान तरी मोगलांचा व श्रीमंतांचा सखा जाला. उपरांत

अमदाबाद प्रांते जावयाची आज्ञा केली त्यावरून दरमजलीनेच करवतबारीचा घाट उतरून आलो. हे वृत्त आमदाबादेच्या भोगलास कळताच दहशेद खासन राजश्री सुदासिब रामचंद्र [सुखटणकर] यांसी सख्ख केला. खंवायेत दरोबस्त व नगद रुपये लक्षे आमदाबादेच्या भोगलास दिल्ले तेव्हां ठाणे खाली करून दिल्ले. तदोतरी मजलदरमजल तुम्हाकडे येतो. तुम्हीही पुढे सांभारे येणे. श्रीमंत राजश्री पंतप्रधान खांमीची पत्रे करवंदबारीचे मुकामी आली की तुमची रवानगी जाहली हे वर्तमान आमदाबादेस गेलियाबरी [भोगलानें] सख्ख करून आमदाबाद खाली करून दिल्ली. राजश्री सुदासिब रामचंद्र याचे ठाणे बसले. आता तुमचे जावयाचे प्रयोजन नाही. तुम्ही उजनीस जाणे. मागून राजश्री दत्ताजीपाटील [शिंदे] आलियाबरी पुढे जाणे म्हणोन पत्रे आली. त्याजवरून कूच करून माळव्यात आलो. प्रस्तुत च्यार दिवस राजश्री पाटीलबाबा मागून येत तोपावेतो कोठ्याच्या मुलकात राहोन पैका च्याबा लागतो. तरी तुम्ही पुढे येणे. तुमच्या विचार जो मनसबा करणे तो करताबा लागेल. † याज-कारिता सत्वर येणे. आम्ही उजनीस गुतत नाहीं. बद्धत काय लिहिणे लोभ असो वीजे हे विनती.

पो छ ८ शाबान [रमजान खोह्न]
[१७ अप्रैल १७५८]

लेखांक [१८४]

श्री * संवत १८१४ फाल्गुन वद्य ११
[४ अप्रैल १७५८]

राजभ्रियाविराजित राजमान्यं राजश्री
बाळोबा स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रामाजी अनंत सां नमस्कार विनंती लपरी. येथील कुशल ता छ * २५ माहे रजेब मुां लजेन जाणोन स्वकीयं कुशल लेखून करीत गेलें पाहिजे विशेष. पत्र पाठविलें तें फाल्गुण बड्डल ११ येकादसीस मौमबारे मुकाम मजकुरीच पावले. वर्तमानाविसी लिहिले येशास येकादो रोजांत येथून कूच होउन मुकुदवरीने कोर्टें प्रांते मजलदरमजल येत असो. तुम्हाकडील पैका सर्व्ही तयार असो देणे. वसुलास हैगै न कीजे. श्रीमंत श्रीपाटीलबाबा मुळीच्या लग्नाकारणे श्रीगोबास गेले. फाल्गुण शुध २ द्वितीयेचे लग्नकार्य^{१०४} जाळे. सर्वतसर प्रतिपदेस श्रीगोंबाहूनं स्वार होउन लौकरीच तेही येणारसी त्यांची पत्रे आली आहेत. तुम्हांस कलावें यास्तव लिहिले असे. † बद्धत काये लिहिणे हे विनंती.

(१०४) बालाबाई या नावाची एकच मुलगी वत्ताजी विद्वास होती [भाग १ बसावली] तिचे लग्न या वेळी झाले. पुढें १७६४च्या वारसी 'कैलासवासी पाटिलसाहेबाचे' लेकीचे लग्न करणे बाई 'बसा' लेख बाला बाई तेव्हां दोन मुली होत्या की काय किंवा दुसरी लग्नापूर्वीच वारली ?

लेखांक [१८५]

श्री * संवत १८१५ आषाढ शुद्ध ३
[८ जुलै १७५८]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बालोबा स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ
* २ माहे जिल्काद जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. राघो
केशव यांसि क्कोट्यांत देवज्ञा जाली. तुम्हीं काहींच वर्तगन लिहिलेत नसा [तरी] अपूर्व
आहे. असो, श्रीमंताकडील यैवजा घुटावयाचा नसे हें तुम्हींहीं जाणतच आहां. त्यांस आजी
पावेतो पावले काये व पुढे त्याचा यैवज कितिक होणार त्याची पैरवी कैसी काये आहे हे
ताावार लेहून पाठवणे । राघो केशव यांसि देवज्ञा जाहली आणि आपण काहीच लिहिले
नाहीं. हे आपूर्व आहे. श्रीमंताच्या सरकाचा यैवज पावता केला पाहिजे याजकरिता
सविस्तर वर्तमान लिहिले पाहिजे. बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१८६]

श्री

[बनटुवर १७५८]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबा स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रामाजी अनंत साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणोन
स्वकीय लिहिणे विशेष. वेदशास्त्रसंपन राजश्री व्यंकटाचारी सामवेदी याचे कर्ज मोहनराम
तिवारी याजकडे आहे. सुदळ रुपये ११६ त्यास वर्षे अकरा जाली परंतु श्टजीचा निर्गम
करुन दिलहा नाहीं. वैदिक ब्राम्हण कुंटुंबवत्सल श्रम करुन सा मेळविले हे तिवारी मार
याने बुडवावे हे उत्तम नाहीं. याजकरिता आपणास ळिा असे. तरी मोहनराम तिवारी
कोटयात राहतो यैवजदार आहे त्यास उत्तम प्रकारे ताकीद करुन आचारीबाबाचे सा
व्याजमुधा देवणे. या ब्राम्हणाचा अगत्यवाद आम्हास आहे त्याप्रमाणे आपण अगत्यवाद
धरुन तिवारी मार यास बरेवजेंन माकूल करुन व्याजसुधा सदरहु रुपये देवउन आम्हास
उतर लेहून पाठवावे. तुम्हींही ब्राह्मणभक्त आहा विस्तर ल्याहावासा नाहीं. राजन्दारी
साहित्य करुन गोदान देवविले पाहिजे. । बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१८७]

श्री * संवत् १८१५ माघ शुद्ध १३

[१ फरवरी १७५९]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळोबा स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रामाजी अनंत सां नमस्कार विनंती. येथील कुशल तागायेतळ * १० जाखर मुंजा दरकूच लाहूरकडे जाणून स्वकीय कुशल लेखन करित गेले पाहिजे विशेष. पत्र पाठविले तें पावले. लिहिला अर्थ कलो आला. त्याचा जाबसाल यजमानसाहेबाचे पत्री लिहिला असे त्यावरून दलेल. सरकारचा पैका कराराप्रमाणे लौकरीच वसुलात येई ते गोष्ट करणें. वरचेवरी वर्तमान लिहित जाणे. ' बद्धत काय लिहिणे लोभ अमो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१८८]

श्री संवत् १८१६ ज्येष्ठ शुद्ध ५

[३१ मे १७५९]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

कृष्णाजीपंत स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता जेष्ठ * शुभ पंचमी मुक्ताम वागपत^{१०} सुखरूप असो विशेष. आपण पत्र पाठविले ते पावले लिहिले की राजश्री गोविंदपंताजवळ सात हजार रुपये दिले तरी तो यैवज परमारा राजश्री नानाजी नाईकाचा आहे आमचे रुपये नव्हात याजकरिता राजश्री गोविंदपंतास सागोन त्याजपासून रुपये घेउन राजश्री अंताजी कासी उन्हेलकर याजवळ पावते करून पावल्याचे उतर घेउन पाठउन देणे म्हणजे नानाजी नाईकांचे दुकानी जमाखर्च करउ. नाही तरी त्याचे आम्हावर न्याज चढेल याजकरिता लिहिले आहे. आम्ही राजश्री गोविंदपंतास परमारे पत्र लिहिलेच आहे. तुम्हीं त्याजकडे माणूस पाठउन रुपये अंताजी कासी याजवली पावते करून पावल्याचे कत्रज पाठवावे. बद्धत काये लिहिणे कृपालोभ आसो दोजे हे विनंती.

'आपलें रामचंद्राने चरणावर मस्तक ठेउन सिरसां नमस्कार विज्ञापना. सविस्तर श्रीमंत राजश्री माउसाहेबाचे पत्रावरून मजकूर घ्यानास येईल. शेवेसी श्रुत होय हे विज्ञापना.

पा छ २५ जिल्काद

[२१ जुलै १७५९]

(१०५) हे स्थल यमुनेच्या तीरी दिल्लीच्या उत्तरेस १२ कोसावर आहे मराठे कुजपुऱ्यात बाढले तेव्हा याच घाटावर अजबाली उतरला होता [खड १ ले २६० पेद २१ ले १९७]

लेखांक [१८९]

श्री * संवत् १८१६ आषाढ वद्य १०
[१९ जुलै १७५९]

राजभियाविराजित राजमान्य राजश्री
वाळोबा स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रामाजी अनंत सां नमस्कार विनंती. येथील कुशल ता छ * २३
माहे जिल्काद जाणोन स्वकीयं कुगल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. पत्र पाठविले ते
पावले. तेथें लिहिळा मजकूर त्याप्रमाणें अवगत जाहळा. त्याचा जाबसाल जो लिहिळा तो श्रीमंत
राजश्री बाबासाहेबांचे पत्री लिहिळा असे त्यावरून कळेल । बहूत काय लिहिणे हे विनंती

लेखांक [१९०]

श्री * संवत् १८१६ कार्तिक वद्य ११
[१५ नवंबर १७५९]

तीर्थरुप राजश्री हरीपंतदादा वडिलांचे सेवेसी.

अपत्ये रामाने चरणावरी मस्तक ठेउन सां नमस्कार विनंती. येथील कुशल
ता कार्तिक * वद्य ऐकादसीपावेतो मुकाम शुक्रताळ गंगातीर^{१०६} वडिलांचे आसिर्वादे
करुन सुखरुप असों विशेष. आपणाकडून दोनचार पत्रें आलीं ती पावोन बहूत
समाधान जाहाले. ऐसेच सदैव पत्र पाठउन सांभाल करीत असावें. आपण देवळांच्या
कामासाठी गावास जाणार होतां त्यास जाणे जाहालें की नाहीं ते सविस्तर लिहिलें
पाहिजे. इकडील वर्तमान तरी नजीबखान रोहिले यासी युध्यप्रसंग होत आहे.
आमच्या फौजा श्रीगंगापार गेल्या होत्या त्या [स] त्यांनी गंगापारचा मुळक जाळून राख केली.
येकदोन युध्यें भोगलाचे [रोहिले] फौजेसी जाहाली. पुलावर येउन पुळ तोडावा इतकिंवात
साडुलाखान रोहिला व दुदेखान व हाफिजरशिमखान रोहिला पांचसात हजार
फौज आली. त्यासी युध्य थोडेसे जाहले. तेव्हा ते जळाळाबाद म्हणोन नजीबखानाचे
कविले राहात होते तेथे जमा होउन सारे राहिले. त्याजमोवते आमचे लोक दोन
चार दिवस राहिले. येक हती व त्राणाच्या गाड्या व जेजालाचे उट व घोडी लस्करात
भोगलाची आणिली. सारा मुळक वीस होउन पाहाडात गेळा व नजीबखानाचेही

(१०६) रामाजीपंत दामोदकराची अनेक पत्रे पेशवेदपतरांत प्रकाशित झाली असून त्याचें
अखरही देण्यात आले आहे मग पेद २ ले ११४अ हे पत्र सशयित का रद्दावे आणि फेरविचार करणा-
रची शंका निवारण होण्यास आचार कोणता असा प्रकृत साह्यजिक उम्दवर्ती [पाफे पान ४०] पानिपत-
संबधी विचारात घेण्यासारखी अशी अनेक महत्त्वाची पत्रें आहेत त्यात याचा समावेश करिता येईल
पण ती दामोदकराचें पत्र ह्याणून कदाचित्च होऊ शकेल असे निदान आम्हास वाटते.

लोक मुक्तालाहून गंगापार बहुत गेले. नजी[व]खानाजवळ लोक थोडे राहिले याजमुले येकादो रोजी नजीवखान पळोन जाणार होता परंतु सुज्यातदौला आयोध्याचा सुमा रोहिल्यास कुमकेस दाहा हजार फौजेनसी आला त्याजमुले आपल्या फौजा गंगापार होत्या त्या आलीकडे उतरोन आल्या. सुज्यातदौला पुलापलीकडे येउन राहिल. छ १३ रविलोवली नजीवखानाच्या त्याच्या भेटी जाहाल्या. तेच दिवसी त्याची फौज गोसावी वगैरे हजारपाचसे पुलावरु[न] आलीकडे आली. युद्धप्रसंग करावा हे चिंतास आणून खंदकावाहेर थोडेसे दूर आले तो ईकडून आमचे लोक उठने व तोफाचा मार दिव्हा तेव्हां ते पळोन लागलेच पुलापलीकडे गेले. ते फिरोन माघारे आने नाही. रोहिल्याच्या चिंताम व मुजातदौल्याच्या चिंतास सख्ख करावयाचे आहे. पुढे होईल ते लिहून पाठउ. कृपालोम आसो दीजे हे विनती.

लेखांक [१९१]

श्रीकृष्णजी

* संवत १८१६ माघ वद्य ४

[५ फरवरी १७६०]

[नकल]

सिधभी राजश्री छाला प्राणनाथ वनसीधर जोग राजश्री रामाजी पढिवां को नमस्कार बांचजोर्जी. आठा को समाचार मळो छे उठा को सर्वदा भला चाहियें. आप्रंच. पत्र तुम्हारे आयो सो पायो. हकीकत विगतवार लिखी सो जाणी. सो परंतु मने जेते साहित्य पत्र मंगायो सो भेजे हैं सो लेणा. अर आपणों काम करणा. हरि हमेसा खतपत्र लिपत रहियो मीति माह * वद्य ४ समत १८१६ आंर वर्तमान पंडन गोविंदजी कहेगे उस माफक करणा. मिति मजकुर.

लेखांक [१९२]

श्री

* संवत १८१६ माघ वद्य ४

[५ फरवरी १७६०]

नकल हस्ताक्षर लक्ष्मण केशव वैद्य

पुा राजश्री गोविंद भगवंत स्वामीस

विनंती. प्राणनाथ वसीधर सावकार याजकडे आमचा ऐवज जमा आहे त्यास तों येवज राजश्री, रामाजी नो येवलेकर^{१०} याचा गुमस्ता राजश्री रामाजी नाईक लजनीस आहे त्याचे पंदरी घालून आम्हास लेहून पाठवणें. बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

(१०७) हा येवलेकर सिविसाहीत सावकार असून तो अवतिकांत रहात असे त्याची दामोदररावी देवबेन होती याची पत्रें पुढे पहावयास मिळतील याच सुमाराचे तिसरे पत्र इतिहाससंग्रहात प्रसिद्ध झाले आहे [एटि १ क्र १४]

लेखांक [१९३]

श्री * संवत १८१७ कार्तिक शुद्ध १
[८ नवबर १७६०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
लालाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत सा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता छ * १९ माहे गावळ म्या पाणिपत जाणून स्वकीये कुशल लिहित जाणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले तें पावले. लिहिलें वर्तमान कळले. आज्ञेप्रमाणें राजश्री रामचंद्र कृष्ण याचे वरातीचें रुपये पावते केलें म्हणून लिहिलें [तरी] बहुत उत्तम गोष्ट केली. इकडील वर्तमान तपसीलवार श्रीमंत राजश्री [जनकोजी] बाबासाहेबांच्या पत्रावरून कळेल. हमेशा पत्री आनदवीत जावे. * बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [१९४]

* श्री * संवत १८१७ मार्गशीर्ष वद्य १३
[४ जनवरी १७६१]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
लालाजीबाबा [गुलगुले] स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामाजी अनंत [दामोळकर] नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता छ * २६ माहे जमादिलौबळ जाणून स्वकीये कुशल लिहित जाणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविलें तें पावले. कोर्टेकाचे व पा पाटण येथील वर्तमान लिहिलें तें सविस्तर कळलें. व्यास अभिनाचें पापपत्य जाल्यानंतर सर्व पादाक्रात होतील. चिंता नसे. पा पाटण येथील मजकूर लिहिला त्याचे प्रत्योंतर श्रीमंत राजश्री [जनकोजी] बाबासाहेबांच्या पत्री लिहिलें आहे त्यावरून कळेल. सदैव पत्रद्वारे आनंदवीत जाणे. तुम्हीं वारंवार तोटयाचा मजकूर लिहिता परंतु खावद मसलतसीर सारी इमारत त्याच प्रांतीच्या येवजावरी आहे. बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

(१०८) दामोळकर पाणिपताहून निभावला पण मागे येत असता मार्गात त्याचा घात झाला असे बखर हाणते त्यास 'बाट दाखवावयापुरते रामाजीपत उभे होते. अखमी होऊन पडले' अशी नागाफडणीसाची सास आहे. [कास के १९२] के ३९७ हे पत्र आत्मचरित्रापूर्वीचें होय.

लेखांक [१९५]

श्री * संवत् १८१८ कार्तिक वद्य १०
[२१ नवंबर १७६१]

सेवेसी हरी अनंत कृतानेक सांनमस्कार विज्ञापना, ता कार्तिक * वद्य १० पावेतों स्वामीच्या कृपाकटाक्षेकडून येयास्थित असो विशेष. स्वामीनी कृपा करून आज्ञा पत्र पाठविलें ते पावोन सिरसा वंदिले. सनाथ जाहालों. पत्री आज्ञा की या दिवसात सरकारांत पैक्याची निकड. भोगलासी " विषाड जाहाला. फाजेच्या पोटास पाहिजे यास्तव तरतूद करून काही एवज पाठवणें म्हणोन अज्ञा. ऐशास स्वामीम आज मसलत आहे. या दिवसांत पैका भारी पाहिजे यास्तव स्वामीनी आज्ञा केली त्याच आज्ञेप्रमाणे तरतूद करावी संदेह नाही परंतु सेवकाचा प्रकार आहे तो धण्यास विदितच आहे. चिरंजीव राजश्री रामाजीपत सिंध्याकडील कारभार सरकारसेवा करीत होते. त्यापूर्वी धण्यानी आज्ञा चिरंजीवास केली तेव्हा चिरंजीवाने याथास्थित रीतीकडून सरकारांत याद बुद थावयाची दिल्ली. धण्यानीही कृपेकरून आज्ञा केली त्याप्रमाणे वर्तणूक केली. प्रस्तुत चिरंजीवचा प्रकार असा जाहाला. मजला काही चिरंजीवाचे हरदवावीषई ठावके नाही व ठावके त्याणे करावे तरी या गोष्टीची मजला गरजच नाही. सेवक स्नानसंथा करून स्वामीस अमिष्ट चिद्वन सुखरुप आहे. दुसरे जाणत नाही. कांही कामकाजाची माहितगिरी चिरंजीवाच्या सवसाराची मजला नाही. हे वर्तमान जगजाहिर सर्वास विदित आहे. मजकडे तिलप्राय कांही गुंता नाही तथापि या प्रसंगी धण्यास निकड आहे जाणोन कोठे कर्जवाम करून दहापांच हजार रुपये घेउन दुर्ग सरकारात भरणे करावा तरी साह्यकारीत आज्ञा मोठी अडचण. येक पैसा कोण्टाकडून निघणे नाही. असा प्रकार घडला. लाजवाच. काही इलाजच चालेना यास्तव शेवेसी लिहिणें लागलें. कृपा करणार स्वाम घणी आहेत. सारांश मी रामाजीपत याचा भाउ मागनी वडील यावरून मजला स्वामीनी आज्ञा करावी [हे] विहित. सेवकानेही सरवरा या गोष्टीची करावी परंतु याचा भाउ इतका मात्र सेवक बदलाम. बरकड तिलमात्र त्यांच्या संसारास मी वाकफ नाही. सेवेसी श्रुत व्हावे कृपा केली पाहिजे हे विज्ञाती.

(१०९) दिशात दसव्याचा भोगल उपहाप करील असे सदबाजी जाधवाचे भाकित होते [खंड ६ ले ४०९] त्याप्रमाणे पालिपत्तानंतर निजामाने दक्षिणेत उचल घेतलीच त्या वेळी स्वर्गाची टक्कई ह्याणून राघोवाने 'सप्रही गृहस्थास लुटिले. अकरा आसाम्या नेमल्या तीम गृहस्थाकडूनच ३९ लक्ष घेतले' त्यांत दामोळकरही होता याविषयी नारो कृष्ण वळे याचे पत्र वाचनीय आहे भरारीच्या कारभारास आरंभ असा झाला.



चित्तो कृष्ण वळे

याचा असल पत्रव्यवहार.

१८०२-१८३५ विक्रमी.

लेखांक [१९६]

श्री * संवत १८०२' माघ वद्य १३

[७ फरवरी १७४६]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

ब.ळोबा स्वामीचे शेवेसी.

पोा कुसाजी^{११} कोनेर [वळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ * २६ मोहरम मुकाम बराळ^{११} प्रात जाणून खकीय लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. आपण पत्र पाठविले ते पावले. तुम्ही श्रीमंतास पत्र लिहिले होते ते त्यास अक्षरशः वाचून दाखवून त्याचे प्रतिउत्तर पाठविले आहे त्याजवरून कळो येईल.

(११०) याचे उपनाम वळे हा श्रीगोद्याचा रहिवासी असून राणोजी शिधांचा लेखक होता. त्याची केवळ चारच पत्रे उरूच होतात. याला चार मुके होती पहिला महादजी दुसरा चित्तोपत तिसरा घोडोगत व चौथा नारोगत ती सर्व शिधाची आश्रित होती. त्यांची पत्रे व्यक्तित्वात पहावयास मिळतील त्यांची चित्तोपत हा चतुर असून वडिलावेळतच वावरू लागला होता आणि विशेषत. प्रसिद्धि पावला जयाजी, जनकोजी, दत्ताजी व महादजी शिधे याचा तो लेखक होता. यांचे वद्यज ग्वाल्हेरीस असून एक 'शाखा श्रीगोद्यास आहे त्या सर्वांकडे जाऊन प्रत्यक्ष तपास केला. पण कोठेही पूर्वपानिपतीय कागद सापडले नाहीत.

(१११) वऱ्हाडच्या मार्गे शिधे वुदेलखटात आले एवढेच पत्र सांगते. तारीखवार मुकाम कोठेच मिळत नाहीत.

राजकीय वर्तमान तर तूर्त बुंदेलखंड प्रांते जावयसि चराढात आले आहेत. पुढे दर मजळ जात आहेत. श्रीमंत राजश्री [रामचंद्र]बावा यात्रेस क्रोकाणात गेले आहेत. ते मागून सक्तीच येतील. तुम्ही भेटीस येतो म्हणून लािा तर बुंदेलखंडाआलीकडे राा [जयाजी] आपाची गाठ पडता दिसत नाही. राा [रामचंद्र] बावाची बातमी राखणे. कदाचित तुमची त्यांची वरहाणपुरानजीक गाठ पडली तर पडो. बुरकड तुम्ही मागील हुंडियाचे वर्तमान लिहिले तर जमाखर्चात तुम्ही पूर्वी वसुलीजमा लेहून दिल्ली आहे यास्तव वारंवार लिहिणे लागते. कदाचित वसूल लेहून दिल्ली परंतु बाकी राहिली तर मागती वाट करून घेणार तुम्हीच यास्तव सूचना लिहिली असे. सदैव घेणारासामगमे पत्र पाठउन संतोपवीत असिले पाहिजे. विशेष काय लिहिणे कृपा लोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [१९७]

श्री * संवत १८०४ पाष शुद्ध १
[२१ विसव १७४७] ?

राजश्रीविराजित राजमान्य राजश्री

वःळाजीबावा स्वामीचे सेवेसी.

पोा कुसाजी कोनेर [वळे] साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता छ * ३० जिल्हेज मुा च्वांभारगोदे जाणून स्वकीय कुशल लेखन करीत असर्वे. या नंतर आपण कृपा करून पत्र पाठविले तें प्राा जाळे. लािा वृत्त कळले. या प्रकारें सर्वे आल्या वार्तिकासमागमें पत्रद्वारा सामाळित असिले पाहिजे. वरकड अर्थ यजमानसाहेबाच्या पत्रावरून श्रुत होईल. येदा फौजा कुली त्या प्रतिच येत असेत. पुण्याहून श्रीमंत स्वामी तो मार्गेस्वर शुध ५ पंचमीस स्वार होउन जमाव होतहोत केंदूरपावला^{१००} वळे आले आहेत आपले यजमान [मागील] वर्षापेक्षा दुपटीने फौज ठेउन तयारी करीत असेत. वरकडही सरदार जलदीने तयारी करीत आहेत. सक्तीच त्या प्रांते येतात विशेष काय लािा लोम असो दीजे हे विनंती.

(११२) केंदूरपावलाकडे नानासाहेब कोणत्या साली गेले याचा शोब कोठेही लागत नाही अर्थात पत्रसंकेतावरूनच मिती ठरविणे भाग आले ती निश्चित ह्यणता येत नाही तथापि १७४६ किंवा १७४७ खेरीज इतर कोणत्याही वर्षी जुळत नाही शिवाचा मुकाम याच सुमारास श्रीगोबास काय होता दुसरे १७४६साठी बुंदेलखंडच्या स्वारीत शिवावरु एकटयाने काम सावरता आले नाही असा शोब होळकराने केला होता [पद २१ ले. १५] ती कितपत योग्य होता हे सांगण्याचे

सेवेसी चिंतो^{११३} कृष्ण [वळे] सा नमस्कार विनंती. उपर. यथील वर्तमान तीर्थरूपानी लिहिले आहे त्यावरून काले येईल. मंदैव पत्र पाठउन परामृष करीत जाणे. विशेष काय लिहिणे कृपाळोम असो दीजे हे विनंती.

हो विनंती पोष्याकित माहादाजी रघुनाथ [१] सा दडवत विनंती येसिजे. तपसीलवार वृतांत लिहिले असे त्यावरून श्रुत होईल. लोभाभिवृधी कीजे हे विनंती.

लेखांक [१९८]

श्री * संवत १८०५ वैशाख शुद्ध ९
[२६ अप्रैल १७४८]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वालाजीबावा स्वामीचे सेवेसी.

पोष्यांतरगत चिंतो कृष्ण [वळे] कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ता छ * ८ जमादिलौवल मुकाम बनास नदी जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. आपण कृपा करून पत्र पाठविले ते पावले. श्रीमंताचे व सवाईजीचे सीरसाचे वर्तमानाविसी लिहिले. तर राजश्री माधोसिंग याचा करार पूर्वी च्यार प्रगणे दहून समजावीस^{११४} करावी यैसा करार केळ होता. त्या

प्रयोजन नाही तथापि इत्युत्तर कोणाची अपेक्षा नसावी असा सकल्प करून सैन्य वाढविण्याचे घोरण सिद्धानी स्वीकारले ते यानंतरच असले पाहिजे त्या मानाने वरील मिती दिल्ली आहे.

(११३) कौनेर हे नाव कृष्णाचे आहे असे राजवाडे सांगतात [खड १ ले ६५ टीप १४६] त्याचप्रमाणे कुसाजी हे देखील कृष्णाचेच नाव आहे असे हे पत्र बोलते कारण कुसाजीपताचा मुलगा स्वतः स चिंतो कृष्ण असे स्पष्ट लिहीत आहे ते शास्त्रोक्त होते की नव्हते हे सांगण्याचा अधिकार नाही. केवळ धारण करणाराची धारणा काय होती इतकेच दर्शविणे इष्ट आहे आणि हाच प्रकार 'माघव' हागजे 'महादजी' या नावासवधी होय [खड ६ ले ४२० टीप]

(११४) कुसाजी वळे याचे असल पत्र उपलब्ध नाही. 'पौषातरगत' चिंतोपताचे हे पत्र होय. ते नवाईच्या स्वारीसवधी असून मुकाम अगदी स्पष्ट आहे हा प्रसंग ईश्वरसिंग व माधोसिंग या वधूच्या 'समजाविसीचा' आहे या वेळी पेशवा प्रत्यक्ष प्रसंगी होता. त्याच्याच विद्यमाने ही 'समजावीस' झाली सवाई जयसिंगास दोन मुले होती वडील ईश्वरसिंग व धाकटा माधवसिंग. त्या दोघात गादीविपयी वाद पडला त्याचे मुख्य कारण एवढेंच की धाकटा मेवाडच्या मुलीचा मुलगा होता आणि मेवाडच्या मुलीचा वध गादीचा मालक होईल असा करार राजपुताचा मेवाडकरांची झाला होता [Tod Rajasthan vol: page 334] त्याला भोगल किंवा मराठे याची समती नव्हती म्हणून जयसिंगाच्या पश्चात् ईश्वरसिंग वडील मुलगा या नात्याने गादीवर आला त्या वेळी

प्रमाणे टोक तोंडा मालपुर हे तीन प्रमाणे नवाईच्या मुनादला आणखी गाव देहून समजावीस केले. बूंदीचे राज त्याजकडेच ठेविले. दो रूपयाची जागा मात्र जुमेदसिगास घावी आणि सरकारची चाथाई घावी. यासिवाय मागील बाकी राहिली आहे ते घावी. दुसरे हाली मेजवानीदाखल काही करार करून सारस जाला. ये गोष्टीस तीन

मेवाडकराने माघवसिगाच्या घतीने मोठें आभिष दाखविले पण ते मोगलास पचनी पडू शकले नाही. मुख्य नड मराठ्याची होती त्यानी वडील मुलाचाच सत्पस उचलला [खड ६ ले ३५७] आप-सातील करार निकामें 'मराठे बोलतील ते करतील' या दृष्टीने मेवाडकराने मग मराठ्यास मघाविले होळकराच्या मध्यस्थीने सघान चालविले 'राणाजीनी कनीराम आपणापासी पाठविला होता माघोसिगाचे राजकारण आपण नेमस्त केले की चौविसाची जागीर त्यासी घावी पधरा त्याजपासून घ्यायें येविसी रामचद्रबाबास आपण लिहिले होते त्यासी तर आपल्या केलियाची ममता आपला अभिमान सिधेस न्यावा. स्वामीकार्यें वडिले तरी बुडो यामुळे कितेक परिघाये कवन पत्रे लिहिली आहेत तरी राणाजीनी आम्हासी करार केला आहे की २५ लक्षाचा माघोसिगास पदा घावा २० नजर घ्यावी. येविसी तिलकुल्य असत्ये नाही बूंदीचे कार्य आपले हातून विल्हे लावल्याने कार्यसिधी चागलीच होउन सर्व राजकारण बाव खात्यात वावाचा कारभार येकवोडी मूल [सिधे] तर अज्ञान न आयकेत [पेद २७ ले १८] अवघे राजे पदरी पडून दृव्यसाध्य होउन लौकिक उत्तम होतो घेवटी आपल्याआपल्या मघें समजोन राजकारण विल्हे लागतील परतु आपले कार्य ये गोस्तीने साधत नाही यास्तव आपले हाते स्थापित केलिया कार्यसिधी होउन सर्व राजे अकित होतात कार्बीमात्र नाथ होळ वेत नाही हेही प्रतिज्ञापूरवक सेवेसी लिहितो परतु इतके होउन येक रामचद्रबाबाच्या मात्र अभिमानास अतर पठे त्यामुळे ते तडफड करून अन्योन सपाये कवन खरेलटके दर्शन लिहितील त्यावर न जावे' [पेद २७ ले १९] ईश्वरसिग माघोसिग याचे मजकुराचे उत्तर उदासीनता दाखउन निराळी टाकून लिहिले एशिमास तुम्ही या प्रकारे लिहावे येसे नाही ज्यात अति दुनिमित्त नाही वर घरकलह वृष न होय येसे प्रकारे करणे तुम्हासच पडेल 'राणाजीही तुमचे व तेही तुमचे विचार कवन तोंड दवावाने केलियाने होईल येसे दिसते' [पेद २७ ले २६] पेशव्याच्या वरील पत्रासिवाय अमृतराव शकर याच कामासाठी सोवत्याकडे गेला होता 'खावदाचे आज्ञाप्रमाणे सरदारास सागतले त्यास माघवसिग व ईश्वरसिग याजकडील मनसबियाचा घोर मोठासा पडला होता तिकडील कार्यानिमित्त रामचद्रबाबाचे व राजकी मल्हारवावाचे मनोभारण करणे लागले बहुताप्रकारे स्तव कवन मरवी ठिकाणास आल्यावरी येथेच सिधात होणे तो जाहला' [पेद २७ ले २८]

'साप्त सरदारानी स्वामीच्या आज्ञाप्रमाणे माघोसिगास टोक तोंडा मालपुरा व नेवाई हे चाही पराणे अठरा लक्षाची जागा मुकरर करून बूंदी हाड्यास घावी हाड्यानी ईश्वरसिगाची रफाकत करावी सरकारचे पैसे घावे व नेषवे व समिधी व करवर हे तिन्ही पराणे रावराजा व प्रतापसिग याने खावे एसा तह करून राजकी खडेराव होळकर यास हजार स्वाराजसी राणाजीकडे पाठविले राणाजी ची फौज सरदेवर आली. ईश्वरसिगानीही आपली मुकाबल्यावर पाठविली या दोही फौजेचे झुज होउन न घावे आणि गोविंद तमाजी यासी सरदारानी लिहिले की राा निवाजी खटके व रामराव मुनवी

वार नवाईच्या तलावर लागले. कारार जाला. उपर कूच करून माघारे वनास नदीवर इसरदेच्यासंनिध येउन मुकाम केला असे. येकादो रोजा सर्वत्र लहानमोठे सरदार येकत्र होउन जो मनसबा करनील ह्या रोखे कूच करणार. कळले पाहिजे. सदंव पत्र पाठउन परामुष करीत आसिले पाहिजे. पूर्व स्नेहास आतराये न कीजे. विशेष काय

मार्गस्य केले आहे. ते सागतील त्याप्रमाणे ईश्वरसिगास चार गोष्टी उत्तम प्रकारे सागून तहाप्रमाणे फंसल करून परस्पर सोरख्य करून देणे खावदाची मरजी याप्रो ठराव जाला. फौजाचे परस्पर कोसाचे अंतर राहिले. नारायणदास सडे जयपुरास आले. मसलती उदड जाल्या रायजीने उदड सांगितले की मल्हारवाचा लेक येउन मर्षे पडला आहे. झुज करू नका म्हणतो झुज केल्याने राणाजीची तो काय कया परतु मराठ्यासी विरुध बाळते यासी विरुध करणे सलाह नाही'. [पिद २ ले १, २] 'राणाजी तो केवल स्वामीचे आश्रयावर या कार्यास प्रवर्तले आहेत एसा आवालावृषीपर्यंत लौकिक जाला आहे'. [पिद २ ले ३] याचे उत्तर ईश्वरसिगाने दिठे ते मात्र वाचणीय आहे 'महाराज वैकुण्ठवासीनी काय काय कामे श्रीमताची केली हे बालाजीरायाच्या ध्यानात नाही येसे नाही आताही आम्ही सर्व प्रकारे त्यांच्या वचनावेगळे नव्हतो परतु हा दयादाचा विचार वशपरपरेने चालत आले असेल तेच केले पाहिजे चाकरीच्या नात्याने जे सरदारानी पूर्वी देविले ते दिवले. अधिक घा म्हुटल्यास विनायुध कसे अनुकूल पडते असो श्रीमताचा व सरदाराचा हाच हेत. त्यास पहिल्यापेक्षा विशेष धावयाचे आहे हे तो घडणे नाही ज्यास ईश्वर देईल तोच घेईल परंतु पगडी बदलली त्याची फल-श्रुत इतकियातच दाखविली असो जे त्याणी केले असेल तेच उत्तम जाणूनच केले असेल [पिद २ ले. ११]

कोणाचेही नायकता आपले फौजेत शामिल जाले. राणाजीचे फौजेस जक दिघलीच आहे. यद्यपि चंडेराव होळकर याजपासी समुदाय थोडा तथापि तितक्यानिशीच त्यानी आडतासास आणिले. [पिद २ ले ४] 'राणाजीचे फौजेसी व श्रीजीचे फौजेसी युध्य जाहले श्रीजीची फते जाहली माघोसिगाकडील निघाण हत्ती तोफखाना वगैरे लूट श्रीजीकडे आली राणाजीकडील फौज पळाली. राा सडेराव होळकर व भोपतराम चारण बूदीबाला हे उभयता येकीकडे उभे होते त्यासी युधाचे समई येकत्र होउन श्रीजी कडील बुनगियावरी घातले. सेखावताची फौज संरक्षणास्तव ठेविली होती. त्यानी याजला मारून काढिले'. [पिद २१ ले. २४] हा वृतात १७४७चा होय.

'निमेनिम राज्य माघोसिगास पाडून घावे असा बोली लागली आहे हे पनास मागतात. ते पचवीस कडूल करितात. पाहावे कार्यभागाचा निकाल कसा होईल. ईश्वरसिगास गत वर्षी गर्वे विशिष्ट जाहला होता तसाच येंदा त्याच्या शतगुणे परिहार जाला'. [पिद २७ ले. ३०] 'माघोसिगास १२ लाखाचा मुलुख देविला सवाई ईश्वरसिगाची बोली होत आहे. [पुरंदरे १ ले. १६८] मल्हारवा तीर्थरुपाचा निरोप घेउन ईश्वरसिगाकडे गेले की च्यार परगणे माघोसिगासदेविले ते निभउन न्यावे. यासाठी गेले. मल्हारवाची पत्रे आली आहेत की कराराप्रमाणे ईश्वरसिग निभवीत नाही गोविंद तमाजी वकील वापुजी महादेवाचे निस्वतीचा रामचंद्रवावाचे पक्षाचा आहे त्याणे लिहिले की हे तीर्थरुपाचे करारप्रो निभान म्हणतात. मल्हारवा आईकंत नाही. [पुरंदरे १ ले. १८५] झुज होईल. बाहालियास फजित पडतील. असे वाटते. त्यास आपण तह केला तो मोडला यासाठी सवाईसही लिहिता नये' हे भाऊसाहेबांचे विवरण १७४८तील राजकारणाचे होय. [पुरंदरे १ ले. १९९].

जाणून स्वकीये लखन करणे विशेष. आपण पत्र पाठविले ते पावले. येथील सर्व अर्थ श्रीमंतानी लिहिले आहे त्यावरून कज्जे येईल. सदैव येणारबा पत्र पाठउन परामृष करीत गेले पाहिजे. बहुत काय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

ह्या राजश्री त्रिंबकजीस सा नमस्कार विनंती उपरी. ल्या परिसोन कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

सेवक चिंतो कृष्ण [वळे] सा नमस्कार विनंती. कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२००]

श्री

[सितंबर १७४९] ?

सा कुसाजी कोनेर [वळे] कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपर. स्वामीनी कृपापत्र पा ते पावले. बरकड वर्तमान राा येजमानाचे पत्री ल्या आहे त्यावरून कळेल. श्रीमंत राा नाना [पेशवे] सातारा आहेत. राजश्री [रामचंद्र] बाबाही तेथेच गेले आहेत. दरबारचे वर्तमान तर आपल्याच येजमानाचा उत्कर्ष^{११३} आहे. काही चिंता न करणे. घडीघडी वर्तमान लिहित जाणे. चिरजीवाकडे पत्र पाठविले असले ते पावले. विशेष काय ल्या लोम असो दीजे हे विनंती.

पो माहादाजी रघुनाथ सा दंडवत विनंती. ल्याप्रा सर्वदा अशिर्वादपत्री सांभा[ळ] करीत जावा हे विनंती.

लेखांक [२०१]

श्री

* संवत १८०६ आश्विन शुद्ध २

[२ अक्टुबर १७४९]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [वळे] कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता ल * १ जिल्काद मुकाम सप्तशुभी^{११४} जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे

(११७) हे पत्र सातारच्या मुकामाचें आहे. 'आपल्याच येजमानाचा उत्कर्ष आहे' हे शब्द कोणत्या प्रसंगास उद्देशून आहेत हे कळत नाही. रामचंद्रबाबा १७४९त होता असे गृहित घेऊन ही तारीख दिली आहे 'महादोवासी आम्हासी विमनस्कता तीन वर्षे आहे. सातारियापासून विशेष वृषि पावली. सुमचे पक्षपातामुळे अति कष्टी होते' असे पेशव्याने म्हटले आहे [ले ७] तो तर हा प्रसंग नसेल ?

(११८) सप्तशुभी म्हणजे सातारा.

विशेष. कृपा करून पत्र पाठविणे ते पाहिले. येथेच सर्व पत्र पाठउन परामुख करीत नेहे पाहिले. दरवारचे वर्तमान तर श्रीमंत राजश्री पंतप्रधान स्वामी श्रीमहाराजे लुहपतीच्या शरीरगत समाधान नाही म्हणून सान्निध्यम आले होते. यंत्रियस येथे आल्यानंतर श्रीमंताने भाकटे वंधु जनार्दनपंतवावांच्या शरीरगत नवरराची वेया जायी तेणे करून भाद्रपद पय ६ देवाहा नाही. नेणेकरून श्रीमंत वहुन श्रमी आहेत. खासगत श्रीमंताच्या शरीरगतीची हीनरागी वंधु येथ्यांतर जायी आहे. अद्याप उतार नाही. माहाराज लुहपतीची वेया न आहे तेच आहे. पाही उतार नाही. आपणउपाये वदवीउपाये वहुन होत आहेत. ईश्वरकृपेकरून उभयेंतासही उतार पडेल. चिंता नाही. श्रीमंत सा [समचंद्र]सुपा सुमस्तिस आप्णे आहेत. संपूर्ण आभिनवास ज्ञान्यांतर निरोप होईल. वरता वर्तमान यगारिगत आसे. वळ्हे पाहिले. विशेष काये लिहिले कृपालोम असो दीजे हे विनंती. रामने जायदे गोपालगार गिला भेटास वंत असतात. सुररूप आहेत. कळते हे विनंती.

लेटांक [२०२]

श्री • संवत १८८८ श्रावण वद्य ९
[४ अगस्ट १७५१]

राजश्रीयाविराजिन राजमान्य राजश्री

वाळाजीवावा स्वामीचे सेवेसी.

पोथ्य चिंनो कृप्या [पत्रे] सा नमस्तार विनती उपर. येथील कुलग ताळ * २२ रमजान मुकाम कस्रे मट्ट नजीक संगतीर जाणोन स्वकीय कुलग लेखन करीत गेले पाहिले विशेष. वहुत दिवस पत्र पाठउन परामुख करीत नाही. तर येथे न करावे. सर्व पत्र पाठउन सांभाळ करीत असावा. येथील वर्तमान श्रीमंत राजश्री यजमानानी लिहिले आहे त्यावरून कळो येईल. विशेष काय लिहिले कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री श्रिवक्तीवावास नमस्तार.

हो पोप्यांकित महादजी प्रभूने सा दंडवत विज्ञाप्ती. लोभाची वृधी करीत आसावे. सेवक पदरचे असोत हे विज्ञाप्ती.

श्रीशंकर.

राजश्री आवाजीपंतास [निगडीकर] नमस्तार दंडवत विनंती.

(११९) हा जनार्दनपंत भट नानासाहेब पेदाव्याचा सत्ता वधु होता त्याची ही मृत्युतिथी जाता साष्ट गिळते.

लेखांक [२०३]

श्री * संवत् १८०९ वैशाख वष ६
[२३ मे १७५२]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पोा चिंतो कृष्ण [वळे] साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ताा छ * १९ रजव मुकाम नजीक दिली जाणोन स्वकीये कुशल लखन करीत गेले पाहिले विशेष. आपण कृपा करून पत्र पाठविले ते पावले. यथील वर्तमानाचेविशी लिहिले तर छ १४ रजवी दिलीहून कूच केले. ते तुकळाबादेनजीक मुकाम केला. किरकोळी कामाकाजाचा गुंता होता तो उरकून घेतला. याउपर कूच करावे यैसे आहे. उमयेता सरदार वजीर दिलीस आल्याचे वर्तमान आबदालीने^{१२} यैकोन माघारा गेला. यास्तव यासी पातशाहजीनी निरोप दिव्हा. यानी मोठे काम करून घेतले.

(१२०) पहा माग १ ले ८६ टीप १११. राजवाडे खड १ ले. १ या अहमदनाम्याचें वर्ष निश्चित करण्याच्या कार्या जो आधार घेतला ती हीच पत्रें होत ही इसने खमसैनच्या आरंभी न घरिता शेवटी टाकली पाहिलेजत असा एक आक्षेप आहे [पाफे ८४] जे ह्वाले वरील सूचनेत दिले आहेत ते साहित्य आम्हास पहिला भाग प्रकाशित करते वेळी मुळीच प्राप्त नव्हतें. [भाग १ भालेराई ८] तेव्हा तुलनेचा प्रयत्न नव्हता. दृष्टी केवळ पत्रांतरच होती आणि जो काळ पत्रांतव्ये विहित वाटला तो विहित केला. त्याजविषयी आमह नाही वर्ष वाढत असले तर त्यास विरोध नाही मात्र कारण-मीमासा पटण्यासारखी नीट व सरळ पाहिले आक्षेपाविषयी विचार करितां सूचना गमतीची व अपूर्व आहे खड ६ यादी ८२ ची नोंद सूचक होऊन विचार करावयास लावते हे खरें पण त्याचें उत्तर सक्षेपात असे सरळ आहे की १७५१ हे वर्ष अबदालीच्या दुसऱ्या स्वारीचें राजवाड्याने ठरविले आहे [ऐप्र १ पान ५६] ते पेशवेदप्तर प्रकाशित झाल्यानंतरदेखील फेरविचारात फिरले नाही. [पान ८, १७, ५२] मग ही सूचना कां उद्भववावी हे लक्षात येत नाही. कारण नोंद प्राधान्य मानली तर अबदालीची स्वारी व अहमदनामा या दोन्ही गोष्टी एकाच वर्षातील होत. हा विसंगतगणाचा दृष्टीकोन सांप्रदायिक की कालनिर्णयाच्या अपेक्षेचा आहे! पुरवरे १ ले. २२८ हे पत्र होळकराचे खरे पण अहमदनाम्याच्या कालनिर्णयार्थ ते निरोपयोगी आहे. 'सा सुभे दक्षण सोडवावी' यासाठी गाजूद्दीनखानाची उभारणी होती. [ले. ६, ७] ते राजकारण सोवती खेळले तेव्हां 'गाजवीखान यांस दक्षणेंस यावयाचा हुकूम जाला. तयारी होणें ते होत आहे.' [ले १४] हा परिस्रोत रजव १७५१चा होता पण 'कारेगरीने मनसबा' करण्यातच संबंध वर्प गेले [ले. १५, १६, १८, १९, २७] आणि गाजूद्दीनखानास ताटकळत ठेवण्याचा प्रसंग कसा व कोठें उत्पन्न झाला हें लक्षांत येईल. त्यात विलक्षण असें काहीच नव्हतें. वस्तुस्थितीच तशी होती. अस्तु अहमदनाम्याविषयी प्रकाश पाडणारी पत्रें जी आमच्या सग्रही सांपडली ती प्राय. रजव महिन्याचीच आहेत [भाग १ ले. ८६, ८७, ८८, ८९, ९८] आणि हा मास इसने व सलास खमसैनात सघीचा होता. त्याला मार्गपुढें पाहिले तसें घेतां येईल. मात्र त्याला साधन सबळ पाहिले. ते आतां अन्यत्र आढळते.

सुभे दरोवस्त करून घेतला. सिवाये पात- चौथाई सर्व मुलकात करून घेतली
शाही खालशा. कळम १.

१ आगरे.

रूपयाचा करार केला होता त्याची निशा

१ आजमेर.

करून घेतली. कळम १.

२

श्रीकासी व वृंदावन^१ येथील सनद

नवाब गाजुहीखान यासी दक्षिणच्या सुभे-
दारीची वस्त्रे दड समागमें घेउन देशास
आतात. १.

पातशाहाची करून घेतली. १.

बाद बाहविणारे अनेक गुंते असले तरी त्या भरोस न पडता मे १७५२ हाच णळ
अहमदन्याचा असला पाहिजे असा बोध होतो मात्र त्याची कारणे निराळी आहेत. थोडक्यात मागा-
वयाचें म्हणजे १७५१च्या आरंभी सफदरजंगाच्या सहायास सोवती निघाले त्यानी 'जाखर' नासात
रोहिल्याचें पारिपत्य केले. [लि. २३] '२४ जाखरला ते काळीनदी नजीक फरोकावादेस होते आणि
२९ जाखरला ते कसबे कनबज धींगगातीरी' पावले. [खड ३ ले १५८, १५९] '५ साबानला ते मज
समसाबादेस' होते. [भाग १ ले. ९०] 'रजव' महिल्याचे मुकाम मिळन नाहीत तथापि या अवघांत
दिल्लीकडे जाणे शक्य नाही अवकाश थोडा. त्यांन ज्या अवबालीसाठी जावें त्याचा उल्लेख कोठेंच
नाही आणि त्याची स्वारी इनक्या उगिरा संभवत नाही जनवरी १७५२त रोहिले शरण आले
त्यांचा सलूख हौऊन उभयनां अंतर्वर्षांत आले [भाग १ ले. ९५, ९६] याच नुमारास 'दिल्लीकडे गडबड
पडली'. [लि २३] ती अवबालीमुळे [खड ६ ले ५४५] तेव्हां त्याच्या दुसऱ्या स्वारीचे वर्ष १७५२
ओषानेच येते. अंताजी माणकेवराची दोन पत्रें या कालाची चोतक आहेत. [विद २१ ले ५३, ५५]
'साल गुदस्त पठाण आटक उत्तरला होता. ते समई पनास लाख देउन समजाउन मागती अटकपार
करून दिल्ला जें समई सरदार दिलीस आले त्या समयीतील गोष्टी हे आहे. याचमुळे सरदाराचाही
उपर उत्तमच जाला. आता पठाण मागती आटक उत्तर हृदेवती येउन मुकाम करून घेल्ची येथे पाठ-
विला. त्याचा यांचा जाबसाल जाला. सर्वांनी येकच उत्तर दिल्ले की अजमेर अकबरशाह दोन सुभे
बाबीस सुभियाची चीय व पैका देउन सर्व येखतार मराठियाचा ठेविला. हे असल्ल मराठियासी पुचावी'.
अर्थात अहमदन्याचें आणि अवबालीच्या दुसऱ्या स्वारीचें वर्ष १७५२ ठरते वा दृष्टीनें बाग १
ले ८६ चा अर्थ आक्षेपकारणें दर्शविला आहे तो उचित असून वरील पत्राची छरी तारीख आतां
'२३ मे १७५२' समजली पाहिजे. तसेच १७५३ची तिसरी १७५७ची चौथी आणि १७५९तील
पांचवी स्वारी अवबालीची मानावी लागेल. असाच थोदाळा त्याच्या पानिपतीत स्वान्यासवर्षीं
दिसतो त्याचा विचार कर्तव्य आहे अस्तु आक्षेपकाचे अत्यंत आभारी आहोत.

(१२१) १७५०त रोहिल्यानी सफदरजंगाचा मोड केला तेव्हा त्यानें लीन होऊन सोवत्याची
मदत मागितली. त्या वेळी 'अंतरवेदीमध्यें पचवीस लक्षाचा मुलुक व क्षेत्र कासी देठ केली' त्याप्रमाणें
'पठानाबाबन तालुका व क्षेत्र कासी दरोवस्त जाह्नीर दिल्ली फर्मान जालें'. [भाग १ ले ९०]
'रोहिल्याचे पारिपत्य होऊन अमल होत आला'. काशीतदेखील व्हावयाचा पण याच समयीं अवबाली

येणेप्रमाणे कामे करून घेउन निरोप घेतला. मोठे यश सरदारास आले. जे आज ताा कोणाच्याने^{१२३} न जाले ते करून घेतले. कळले पाहिजे. सर्व पत्र पाठउन सांभाळ करीत जावा. विशेष काय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

अटक उतरला म्हणून पातशाहाने उभयतास पाचारून अहमदनामा केला. त्यात 'कासी वृदावन' ही दोनच क्षेत्रे कैवल होती. वृदावन वाटेत असल्यामुळे त्वरित पदरात पडले. श्रीचे वचन सफदरजगाचे होते. त्याची सनदही बादशाहाने दिली. केवल स्वाधीन व्हावयाचीच राहिली ते काम त्वष्ट लाऊन मन दुखवून करावयाचे नव्हते त्यात फिरोजजगास दक्षिणची सुभेदारी देवविष्याची घाई त्यासाठी सोबती देशी आले मागे बादशाहाशी सफदरजगाचे वाकडे पडले तेव्हा 'सरदाराही आपले काम करून वाराणसी घ्यावी' अशी अट त्याने घातली [खंड ६ ले ५४५] १७५४त हे काम उरकावयाचें पण कुभेरीवर स्नेहात तेढ पडली शिंदे मारवाडात गेले राधोबा दिल्लीत गुतले सफदरजग वारला. शुजास पत्रे गेली 'चिरजीव दिल्लीजवळ असता कासी अयोध्या धावयाचा करार केला. प्रयागची रदबदल होती' असा जो उल्लेख आहे तो हाच प्रसंग होय [ले. १०१, १०२] कागदी घोडे बरेच नाचले परंतु जिवंत घोडे नहाल्याशिवाय श्री थोडीच लाभणार होती पानिपतामुळे पारबेच फिरले तेव्हा 'बहावीस लक्षाची जाहगीर मुन्नादला देउन ही दोन स्थले हस्तगत करावी प्रयत्न करावा' असा सकल्प माधवराव पेशव्याचा होता [इसं २१ पान १३७] तो कवी सिद्धीस पावला नाही हे निराळें सागावयास नको.

(१२२) 'जे आजताा कोणाच्याने न जाले ते करून घेतले' या एका वाक्यात अहमदनाम्याचे व सोवत्याच्या सेवेचे सार वळ्याने दिले आहे ते यथार्थ होय. '५० लक्ष रुपये आगरा अजमेर हे दोन सुभे. सुभे मूलतान, पजाब, टटा व भकर व फौजदारी सवल मुरादाबाद व बदाय मथुरा नारनोल व सावर आणि बावीस सुम्याची चौथ इत्यादि प्रचंड प्रदेश मराठ्यांच्या कक्षेत प्रत्यक्ष आला ही शिंदे-होळकरांच्या श्रमाची फलश्रुती व छत्रपती राजारामांच्या आकांक्षेची परिपूति होय. सर्वपरीने पहाता पूर्वपानिपतीस इतिहासात या स्वारीला जोडच नाही. याकरणीच्या कल्पनेची कौतुक दूर राहून इतिहासात Shadowy figures म्हणून त्याची कीर्ति गाजावी यापेक्षा दैवदुर्विलास तो कोणता म्हणावयाचा. या स्वारीत स्नेहाच्या सघटनेचा कळस होऊन त्यातूनच पानिपतचे पतन व साम्राज्याचा न्हास उभूत झाला उभयता देशी आल्यानंतर झालेल्या भेटीचा प्रकार [ले २५, ३३, १४२] सलावतजगास बुडविल्यानंतर बाटणीत उभदबलेला विकार [वेद २१ ले ४९, ५१, ५४, ५५, ५६ पेद २५ ले १४९, १५१ पेद २७ ले ७१ चंद्रचूड १ ले ९, १५, १६, १९, १२८] 'राव उभयता बघूचे स्वारस्य होउन जिकडे जावयाचा निश्चय ठहरेल तेणेप्रमाणे लिहून' हा होळकराचा उच्चार [खंड ६ ले ५६१] 'तीर्थरूप स्वारीस जाणार आम्हास इकडे ठेवावे. सातारियाचा गुता उरकलाच तर दाहापाच ह्यार फौजेने दिलीकडे जाउन पोट भरावे असे करून पाहिले' परंतु पंच विशेषच वाढले' हे भाऊसाहेबाचे उद्गार [पुरंदरे १ ले २७२, २८७, २८९, २९३, ३१०, ३३४, ३५४, ३६७] आणि या मिषानें सधमत होऊन शिंदेहोळकर कदाचित 'डोईवरचा पदर काढतील' असा किमुमय भोतीचा संचार इत्यादिनेक गोष्टीचे मनन केल्यासिवाय सवागिवरावास स्वत्रंत्र स्वारी न लाभता राधोबाचीच प्रयत्न अशा अश्रुत पायावर का उभारला गेला या नीतीचे रहस्य उमगणार नाही किंवा 'बिजेच्या चदाप्रमाणें चढते कळे राज्य करीत असता गृहकलह लागण्यास कारण झाले की दादासाहेब प्रथमच स्वारी मोहिमेस पाठविले' ही वखरीची मीमासा पूर्णपणें पटणार नाही. ही शुक्नीतीच महाराष्ट्र-धर्मास पानिपतावर अडवी येऊन स्वराज्य व साम्राज्य ही तिला बळी पडली.

लेखांक [२०४]

श्री * संवत् १८०९ ज्येष्ठ वद्य ३०

[१ जून १७५२]

राजश्रियाविराजीत राजमान्य राजश्री

वाळ्याजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पोा चिंतो कृष्ण व घोडे कृष्ण [बले] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुंगळ ताा छ * २८ रजव मुा आगरे जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करणे विशेष. आपण पत्र पाठविले ते पावले. यथील वतमानाविसी लीा तर उभयेताच्या फौजा व वजीर घैसे दिल्लीस आल्याचे वर्तमान आवदालीने यैकोन कूच [करून] माघारे गेला. तेव्हा पातशाह उभयेतावर कृपावंत होउन आजमेर व आगरे दोनी सुमे दरोत्रस्त दिव्हे. बावीस सुम्यात चौथाई घावी यैसी सनद करून दिल्ली. या सिवाये नारनोळ व मथुरा व संमळ मुगादाबाद व सामेर यथील फौजदारीची सनद करून देउन निरोप दिव्हा. निरोप समई वहुत मानवस्त्रे व हती व घोडे व माही मरातव^{३३} व झालरदार पाळखी यैसी दिल्ली. तेच समई पातशाहजीस आर्जे करून

(१२३) शिंदेहोळकराच्या पूर्वपानिपतीय परपरेचे वखर हें जणू वाडव आहे त्यात उभय-तास 'राजे' असे म्हटले आहे. ते गौरवपर वर्णन नसून केवळ वस्तुस्थितीचे दिग्दर्शन होय असे आता पुराव्यासह सप्रमाण सिद्ध होते सोवत्याची श्रेणी ठरविण्यापूर्वी इतराच्या स्थितीचे सिद्धान्तोक्त करणे मनोरंजक आहे केजवराव सिवदेव वकील दाा शुजा यास 'राजा' अशी पदवी होती [पिद २ ले. ६९, १०७ पेद २१ ले ११७, १६३, १७६, १८६, १८८ पेद २७ ले २१९, २४०] पेशव्याकडून हिंगणे दिल्लीस वादशाहाजवळ वकिलीवर होते ते प्रथम 'राव, महाराव' व नंतर 'राजा' म्हणवीत असत. [खड ६ ले ३६०, ४६७, ५१०, ५३७ पेद २८ ले. १८] अहदनाम्यानंतर मराठी फौज वादशाहा-जवळ राहू लागली तेव्हा सोवत्यानी प्रथम अताजी माणकेश्वरास सिरोजेहून पाठविले त्याला 'साहेबनीवत' मिळून तो 'राजा' झाला. [पिद २१ ले ५५, ९६] याच जागेवर पुढे मारो ककर येउन ते 'राजेवहावर' झाले [एंटि २ क ४१] तेव्हा शिंदेहोळकराची महती काय होती हे निराळें सागावयास नकोच तथापि स्वयम पेशव्याने शिघ्रास 'राव' असे स्पष्ट म्हटले आहे [पुरदरे १ ले ३९६] तसेच निजाम सफदरजंग कमरुदीनख्वा वजीर व खास वादशाहा हे सर्व १७४४च्या सुमारे फरमानादि कागदोपत्रीं राणोजी व जयाजी शिघ्रास याच सन्नेने सवोधीत होते असा पुरावा भरपूर आहे त्यापूर्वी बाजीराव भट पेशव्याच्या विद्यमाने 'महमदशा वातस्थाने जाहागीर मनसब महाल व वतन हमराई लोकासहित दिव्हे' होते असा शोध लागतो [पिद १५ ले ८६] 'शादीवास्तीचे कूळी फर्मान घेतून येणे. सिस्पाळ इनामत देतात ते अवध्या सरदारासही इजतलायख घेणे' हा संकेत राणोजी शिघ्राजं समर्पक असून उल्लेखनीय आहे [खड ६ ले ९७] अर्थात या वेळी वादशाहाकडून उभयताचा मान-सन्मान राजेमहाराजास सोमेल अशा रीतीचाच होता याची साक्ष हे पत्रच देतें ते योग्यच होय त्याची 'सरदारी' म्हणजे 'बौलत' होती. तिचे न्यायनिवाडे चिराळे होत असून कारभारीमंडळ विभक्त होतें.

गाखुहीखान यासी दक्षिणच्या सुभेदारीची वस्त्रे देउन समागमे घेतले. छ २० रजनी दिलीहून कूच केले. राा साबाजी पाा [शिंदे] व राणोजी मोईटे मारवाडात रवाना केले. पांच हजार फौज आपली व येक हजार फौज सुभेदाराची [होल्कर] येसी आहे. आम्ही मजल्दरमजल देशास जातो. सिरोजवरून हंडयाच्या घाटेस जातो. कोठेही गुतत नाही. मोठे यश यजमानास आहे. आताही महदत कार्य चितावर धरले आहे. ईश्वर याही कार्यास यशच देईल. आम्ही सर्व प्रकारे स्वामीचे आसो. दुसरा अर्थ किमपि चिंतात न आणावा. विशेष काये लिहिणे कृपालोम आसो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकजीबावास साा नमस्कार.

लेखांक [२०५]

श्री

* संवत १८११ चैत्र वद्य ११
[१८ अप्रैल १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबावा स्वामीचे सेवेशी.

सेवक चिंतो कृष्ण [वळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ * २४ जाखार मुा कुंभेर जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे

[भाग १ ले. १०७] नवाब सफदरजग, महाबतजग, निजांम, जयपुर कोटा इत्यादि रजवाड्याकडे वकील शिंघाचे होते [खड १ ले. ६१, २०५ पेद २० ले. २९, ४९ पेद २५ ले ८ पुरदरे १ ले १८५ भाग १ ले. २] तसेच या सर्वांचे वकील शिंघाकडे असत राजकारणे तहरह स्वतंत्रतेने चालत होते प्रसंगोपात पेशवादेखील त्यांचा उपयोग करीत होता 'श्रीमत महाराज जयाजीबावा शिंदे गोसावी' हे शब्द एका वकीलवचनाचे असून ते अर्थप्रचुर आहेत जयाजी शिंदे वारले तेव्हा 'दुकाने बंद जाली.' [भाग १ ले १४३] 'व्हाही जयापाचे पुत्राची फिरली' [पेद २ ले ४८] 'माघर्वासंग व राणाजी वगैरे याचे टीके आले.' [भाग १ ले १४६ ले १७४, १७५, १७६] दत्ताजीने दौलतीचे 'युवराज्य चालविले'.

केवल शिंघाचेच सैन्य पाहिले तर ते कोणत्याही राजेमहाराजापेक्षा कमी नव्हते. सख्या पेशव्याच्या समान होती त्याचे सेनापती, सरनौबत, वकी, पागे मोदी' वेगळे असून ते मागे राहून त्याच्या वतीने हिंदुस्थानात राज्यभार चालवीत होते. [चंद्रचूड १ ले. ४६] थोडक्यात बोलावयाचें म्हणजे ते खरे 'उत्तरदेशाधिकारी' होते 'पादशाहासारखे लहान करून आपले पदरचे त्यास त्यापेक्षां मातवर केले' हे गोपाळराव पटवर्धनाचे शब्द कोणास उद्देशून होते आणि त्याचे सार काय निघते याची कल्पना वाचकानीच करावी [खरे १ ले. २४] साराख स्वराज्याचे स्वरूप साम्राज्यात करण्याचे श्रेय या स्नेहास असून ते दौलतीचे 'भागीदार वाटेकरी गवदार व मुख्य आधारस्तभ होते'. मराठेशाही म्हटली की तिचे अर्धाधिक स्वामित्व उभयताकडे होते अशा साम्राज्य सेवकाची गणना 'मामलतदार व नोकर' या सदरात करणे शास्त्रोक्ती नसून एकपक्षीय भक्ती होय. ही भाषा आधुनिक असून तत्कालीन पत्रात परिप्लुत नाही मराठेशाहीच्या मीमांसेचे भर्भ यातच होते ते यथावकाश पुढे येईलच.

विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. येथील वर्तमान तर कुंभेर किल्यास मोर्चे लाविले असे. नित्य लडाईं होत आहे. अद्याप सख्ख जाहला नाही. मानगड लागली आहे, सख्ख व्हावासा आहे. जाल्यावर लेहून पाठउ. फाळगुण वध ११ येकादशीस राजश्री खंडेराव^{१२४} होळकर यास गोली मानेस लागोन मृत्य पावले. समागमे तिथी शिखा व कळवातिणी २ व राखी ५ येकुण दहा जनी सती निघाल्या. मोठे दुख सुभेदारास म्हातारपणी जाले. राजश्री रंगराव^{१२५} सिवदेव [ओढेकर] श्रीमंताचा [राधोवाचा] निरोप घेउन चैत्र शुध १४ चतुर्दसी कूच केले. लष्करापासून आठा कोसावर जाउन राहिले. जाटानी बातनी राखिलीच होती. त्याजवर रात्री छापा घातला. खासा रंगरावजी मारले गेले. लष्कर छुटले. काही पळोन माघारे लष्करात आले. याप्रमाणे वर्तमान आसे. प्रस्तुत मानगड विशेष लागली आसे. पुढे जे वर्तमान होईल ते लेहून पाठउ. तुम्ही जाते समई राजश्री रामराव नीलकंठ याजकडील हवाला दिलहा ते अद्याप पावला नाही. तर वोळ्या प्रमाणे चिरंजीव राजश्री नारायेणास [वळे] उजनीस पावते केले पाहिजे. विशेष फाय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिवकवावास नमस्कार विनंती उपर. लीा परिसोन लोभ असो दीजे हे विनंती.

(१२४) खंडेराव होळकर याची मृत्युतिथी आता स्पष्ट होते. एका पुस्तकाठी इतक्या किंवा सती गेल्याचे हे उदाहरण मराठेबाहीत अद्वितीय होय. हे दृश्य पाहून मल्हारजी होळकराचा शोक अनिवार झाला असल्यास नवल नाही आणि त्या दुखातिरेकात प्रतिज्ञा करणे सधनवीय बाहे 'रूपरामाचा हात मल्हारवाचे हातामज्ये दिला' असे राधोवाने म्हटले आहे [ले ४२] अस्तु या वेळी अहिल्याबाईपुढा सती जाण्यास सिद्ध झाली होती पण म्हाताऱ्याने मनचरणी केल्यामुळे त्या साध्वीने आपला सकल्प सोडला असे कैफियत सांगते. तेव्हापासून तिचा पुनवत लेखून १७६१त शीतमावाई मरण पावल्यावर राज्यभार तिच्या स्वाधीन केला असे अनुमान निघू पाहते [चंद्रचूड १ ले. १६५]

(१२५) रंगराव ओढेकर हा केव्हा व कसा कामास आला हे पत्र सांगते धारकर पवाराचा कारभारी या नात्याने तो काम करीत असे. पुढे त्रिवकराव शिवचव ओढेकर हा राधोवासमागमे राहू लागला [विद २७, ले १८३, २२७] १७४८ पासून आगरा अजमेर छाहोर इत्यादि सुभे मराठ्यांकडे आले त्यात पवाराची वाटणी नव्हती. [खड १ ले. ६१] यामुळे वारा वर्षे त्यानी उत्तरेकडे पाहिले नाही. 'तैसाच यशवतराव पवार याचाही गौरव केला सरजाम बाहूगीर जप्त केल्या होत्या त्यासही वचन दिले की तुमचे सुह्रास भोक्ळया करून देऊ' हे बक्षरीचे वर्णन अगदी यथार्थ आहे [पान १०९] पानिपतानंतर १७६८ साली हिंदुस्थानचे खडणीचा हिंसा बरसवे २३प्रमाणे पेशवी पावत होता तो अलीकडे पावत नाही अशी पवार याणी विनती केली त्यावचन अतरेवेदीची वाटणी देऊ नये याप्रमाणे करार करून बरसवे १२ हाणजे केवळ निमी नाटणी मिळाली [इ.स. २३ यादी ११] एवच लेखाक ५चे उद्देश्य या प्रकारचे आहे

लेखांक [२०६]

श्री * संवत् १८११ वैशाख वद्य ८
[१४ मे १७५४]

राजभियाविराजित राजमान्य राजश्री
वाळ्याजीबाबा स्वामीचे-सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [वळे] सा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशळ ता छ * २० रजव मुकाम कुंभेर जाणोन स्वकीय कुशळ लेखन करीत गेले पाहिजे वेशेष. आपण पत्र पाठविले ते पावले. यथील वर्तमानाचेविशी लिहिळ. तर जाटाकडीळ रूपराम फुटारा गावात गेला होता तो पुन्हा सल्लुखाच्या रदवदलीस्तव आला आहे. ठराव जाला नाही. ठराव जाल्यावर मागाहून लेहून पाठउ. श्रीमंत यजमान यासी ज्वराची वेया येक मासपर्यंत जाली होती. ते ईश्वरकृपेकरून आरोगता जाली. सुखरूप आहेत. चिंता न करावी. येदाचे स्वारीस हाच मोठा लाभ जाला की यजमानास आरोग्य जाल. यथील कार्य जाल्यावर छावणीचा निश्चय होईळ. तुम्ही जाते समई राजश्री रामरावजीचा हवाला दिल्ला होता. तो आषाप चिरंजीव राचश्री नारोबास पावला नाही. तर पावता करून जाव आणविला पाहिजे. विशेषे काय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री संभाजीबाबा सा नमस्कार विनंती उपर. लीा परिसोन लाभ करीत जाणे. विशेषे काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [२०७]

श्री * संवत् १८११ श्रावण शुद्ध ७
[२६ जुलै १७५४]

राजभियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळ्याजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [वळे] सा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशळ ता छ * ५ सवाल गुा सावर जाणोन स्वकीय कुशळ लेखन करीत गेले पाहिजे विशेषे. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. यथील वर्तमान पूर्वी यथून सरकारच्या कासिदजोडिया दोन तुम्हास बोलाउ पाठविल्या त्याचा लेहून पाठविलेत त्यावरून कळो आले आसे[ळ.] प्रस्तुत आम्ही गुा मारपावेतो आलो. यथून पुढे दरमजलीने मॅडक्यास जात आसो. बिजै-सिंग मॅडक्यातच आहे. वाहेर निघोन जुंजावयाची हिमत दिसत नाही. गांव धरून राहिला असे. त्याचे काम [तोफा] खो होणार नाही. तर तुम्ही फौज घेउन

यालच. काही तोफा^{१२६} अगत्यरूप आणिल्या पाहिजे. ये समई जे साहित्य फ़ाल तेणे करून यजमान तुम्हावर कृपावंत होतील. कळले पाहिजे विशेष, काये लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकजीबाबास साा नमस्कार विनंती उपर. ल्हाा परिसोन लोम आसो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२०८]

श्री * संवत १८११ भाद्रपद शुद्ध ११
[२८ अगस्ट १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

दाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [बळे] साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ताा छ
* ९ जिल्काद मुकाम भेंडते जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करणे विशेष. यजमानास

(१२६) 'दक्षिणची फौज ह्मणजे मउ लागले ह्मणजे वेजरव घेणार कठिण लागले ह्मणजे फिरोन मागें पहाणें नाही. एशी पूर्वापार या राज्यातील तऱ्हा' हे वर्णन चिमणाजी भट्टाचे आहे [कास ले. ३१] 'खानदेशी फौज बेहिमती' असे लेख मालेत बाचावयास मिळतील अर्थात रजपुतांच्या शोभीची प्रघासा करित असता मराठ्याविषयी जे उद्गार बखरीत आहेत ते यथोचित असून तिचे कौतुक करावें तेवढें थोडें तोफेची उणीव त्याचाच मासला होय. बाजीराव पेशव्याच्या वेळी १७३३त 'फिरगी गोलंदाज नवे चाकर' राहू लागले [पिद २२ ले ७७] 'स्वामीनी आज्ञा केली की मोढाविशी बरचेबर सागतो परतु मोढ येत नाही. मग तोफेचा फारखाना चालणार नाही आम्ही जे कर्म अवलविले ते अवध्या सरकारकुनाच्या मते सिधीस न जावें यावरून शाहू महाराजास तोपाचा नाद होता असे कळतें [पिद १७ ले. ३२, ४५] निजामदेखील 'तीसपसतीस हजार याखेरीज तोफखाना तोही कोणे प्रकारचा हे तुम्ही जाणतच आहा' हे वर्णन भोपालच्या लढाईसबधी बाजीराव पेशव्याचे होय [झहोड्र ३५] अर्थात मराठ्यांचा तोफखाना निजामाच्या मानाने हीन होता हे निर्विवाद होय १७५३ च्या आरभी पेशवे व होलकर तोफखान्याच्या तयारीस लागले. 'दरमहा दीड लक्ष घ्यावे आणि मुज-फरखान याने चाकरी करावी' असे घाटत होते. [पिद २१ ले. ४९] पण 'मुजफरखान मास तीनसे रावत दीड हजार माणूस वाहा तोफानिशी ५५ हजार दरमहा करून पेशव्याने ठेविले' [पुरवरे १ ले. २९३] तेव्हा होलकरानेही 'येथे दोनसे गारवी बाहावीस फिरगी ठेविले. तोफाचे सामान बहुत उत्तम करितात दररोज तोफापासी जाउन बसावे आणि तेथेच कारभार करावा येसा ह्मक तोफेचा फार खानला आहे' [पिद २१ ले ५४] तेव्हाच १७५९त 'थोर तोफखाना वाा होता तो रामपुरियास फार खानला आहे' [पिद २ ले ११५, ११७] यासबधी सिंधाची प्रगति काय होती हे समजत नाही 'तोफखाना सिंधियाकडील तिकडे गेला अवदाली व रोहिंध्याकडे तोफखाना फार' असे राजा केशवराव सागतो खरे [पिद २ ले ११८] पण मारवाडच्या स्वारीत तोफांचा अभाव बखरीत दर्शविला आहे तो मात्र खरा ठरतो.

पत्र पाठविले ते पावले. बूंघीस आलो. पुढेही दरमजलीने येतो म्हणोन लिहिले त्या-
वरून यजमान बहुत समाधान पावले. तोफा तुम्हासमागमे नाहीत. यथे तर तोफाचे
काम जरूर आहे. तर तोफा अगत्य घेउन आले पाहिजे. येथील वर्तमान तर विजैसिंग
मेंढस्यातच आहे. बाहेर निघणार आहे परंतु कधी निघेल हे न कळे. कदाचित निघाला
तर चिंता काये आहे. आम्हावा तोफ नाही. यथे तर तोफखा [कार्य] होता दिसत
नाही यास्तव तोफा आगत्य आणणे. विशेष काय लिहिणे कृपालोभ असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिवक्त्रावास सा नमस्कार विनंती उपर. लिंगा परिसोन लोभ असो
दीजे हे विनंती.

लेखांक [२०९]

श्री * संवत १८११ माघ वद्य १२
[८ फरवरी १७५५]

राजश्रियाविराजीत राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [बळे] सा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशळ ताा छ
* २६ राखर म्हा तावसर^{१००} [नजीक नागोर] जाणोन स्वकीय कुशळ लेखन करीत
जाणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. यजमानास श्रुत करून प्रतिउतर पाठविले
आहे त्याबरोन कळे येईल. यथील वर्तमान तर जे तुम्ही पाहून गेला तेच आहे. विशेष
काय लिहिणे कृपालोभ आसो दीजे हे विनंती.

राजश्री भैरवशामजीस सा नमस्कार विनंती उपर. लिंगा परिसोन लोभ आसो
दीजे हे विनंती.

लेखांक [२१०]

श्री * संवत १८११ फाल्गुन शुद्ध ६
[१८ फरवरी १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [बळे] सा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशळ
ताा छ * ६ जमादिलौवल म्हा नागोर जाणोन स्वकीये कुशळ लेखन करीत गेले

(१२७) नागोर समीप तावसर या नावाचें गाव असून तेथेंच जयाजी शिंद्यास दगा झाला.
दहनसंस्कारानंतर छत्री त्याची तेथेंच बांधली. 'नागोरे समीप तावसर म्हणून सजलस्थान' असा
जो उल्लेख आहे ते हेच गाव होय [पिढ २७ ले. १०६] सदर पत्रात वाचणाची म्हणण्यापेक्षा मुद्र-
णाचीच चूक आहे.

पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. सर्व वर्तमान यजमानास श्रुत करून प्रति उच्चर पाठविले आहे त्यावरून कळो येईल. यथील वर्तमान तर नागोरची रसद बंद जाली तेणेकरून गडबडले आहेत. सत्त्वरीच कार्य होईल. आजमेरची मानगढ बागळी आसेत. पांचस्रा रोजामचे किला खाली होईल. वरकड वर्तमान राजश्री नारवानानानी आपणास लिहिले आहे त्यावरून कळो येईल. विशेष काय लिहिणे कृपालोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२११]

श्री * संवत १८१२ चैत्र शुद्ध १
[१३ मार्च १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [वळे] कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशल ता छ * २९ जमादिलौवळ मुक्ताम नागोर जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. आपली पत्रे आली ते यजमानास अक्षरशः वाचून दाखून प्रतिउत्तर पाठविले आहे त्यावरून सविस्तर कळो येईल. राजश्री रामाजी जगंनाथ याचेविशी विस्तरपूर्वक लिहिले ते सविस्तर कळो आले परंतु खावंदाचे काम करणे आहे यास्तव यजमानाचे आज्ञेप्रमाणे त्याच्या अंगी रुपये घाउन वसूल हिसेवाप्राा करून घेणे. येे विशी न चुकणे. तुम्हीही जाते समई तुम्हीही कबूल केले आहे त्या बोलण्यावर खावद उगेच आहेत. आखेर साली तुम्हापसी त्याचे रुपये मागो लागतील यास्तव सूचनार्थ लिहिले असे. ज्याप्रमाणे बोळन गेला त्याप्रमाणे याची निशा घेउन पैवज सरकारात पावता करणे. कळले पाहिजे. वसूल घेणे. यथील वर्तमान तर आजमेर किला फाल्गुन शुव १० दसमीस फते जाला. मकारपूर्वक^{१५} इकडे आले होते. मागून श्रीमंत आले

(१२८) मल्हाराजी होळकर 'होळकर इकडे आले. मागाहून श्रीमंत आले म्हणूनच विजोसिगाने दम धरिला असे. श्रीमंताकडील जावसाल जाला म्हणजे येथील कार्य होउन येईल' हे शब्द मननीय आहेत झुज लागून आठ मास व्यतीत झाले तरी राठोबाचे वकील राघोबाकडे शिष्टाई करीतच होते या मितिसदेखील ते समागमेंच होते एवढेंच नव्हे तर तिसरा वकील स्वतः पेशव्याकडे होता. त्याला निदोप दिला तो शिवास दगा झाल्यानंतर. [ले ६९] हा शिष्टाईचा साप्रदाय विलक्षणच म्हंटला पाहिजे 'शोसाव्याचा सावजाल वाटेने येता केला असता तरी कामास येता तेथें राहावयाचे काम काम होते' असे सखारामबापु चौकिलाने राघोबास रागाने लिहिले होते अर्थात ह्या व्यवहार त्याच्या समतीने नव्हता [पेद २१ ले. ६२] तेव्हा शिवायने चिडून राघोबास न येण्याविषयी स्पष्ट कळविले तर त्यात बाबें

म्हणोनच बिजैसिगाने दम धरला आसे श्रीमंता [राधोबा] कडील जाबसाळ जाला म्हणजे येथील कार्य होउन येईल. चिंता न करावी विशेष काय लिहिणे कृपालोभ असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकजीबावास साा नमस्कार विनंती उपरी. ल्हाा परिसोन लोभ असो दीजे हे विनंती.

राजश्री मेघशामजी साा नमस्कार विनंती उपर. पाटणच्या बाकीचे कागद तुम्हापासी दिले आहेत त्याचा फडशा करून घेणे. विस्मरण पढो न देणे. बड्डत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२१२]

श्री * संवत १८१२ वैशाख शुद्ध १४
[२५ अप्रेल १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [वळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. यथील कुशल ताा छ * १२ रजब मुकाम नागोर जाणोन स्पर्कीय कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. तुम्ही आपले पत्र पाठविले ते उतम समई प्रविष्ट होउन लखनार्थ अवगत जाला. अक्षरशः यजमानास श्रुत करून प्रतिउत्तर पाठविले आहे स्वावरून कळो येईल. यथील वर्तमान राजश्री नारायणानानी लिहिले आहे स्वावरून कळो येईल.

ते काय ? या धरास गोष्ट गेल्यावर कोठें मेजवानी देऊन विदागी झाली. 'यंदाची छावणी करावी. सत्वर सला जाला तर कूच करून जावे येसे दोन्ही विचार आहेत' हे वाक्य शिष्यांची मनोवृत्ती व्यक्त करते. तसेच सलुखाची भाषा बोलून दग्यासाठी सची साधावी असे रामराव नारायण याने जें मत प्रदर्शित केले त्याला पुष्टी मिळते. इतकेच नव्हे तर 'गोसावी यास यथा देता विसत नाही' या शब्दावरून गोसाव्याच्या मूढ भाषणास दामोळकर भाळले असे निष्पन्न होते आणि या मिषातच गोसाव्याने खासा भोपळा फोडला. 'पत्र वकील घेउन जाताना बोलला की म्हनाल तर जाउन दगा करून मारीन एसा करार करून चौथे आणिक साधक घेउन येउन संद गाठून दगा केला. यामुळे तमाम रजपुत जाट व भोगल वर्गरे काय हिंद व काय दक्षण सिरे जाले आहेत रजपुताचा विस्वास व दगाबाजी पूर्वीच विनती केलीच होती परंतु कोन्हास विस्वास न आला'. [पिद २ ले ४८] बखरीतील मारेकऱ्याची सव्या-सत्य ठरते. अस्तु ३० जून १७५५ ही जयाजी शिष्याची निषन्धिती मात्र पेशवेदप्तराच्या सपादकाची चुकीची आहे [पिद २ ले. ५० टीप]

आद्याप सलुखाची चर्चादेखील नाही; काम बहूत आटीखाले पडले आहे. कळले पाहिजे. खर्चाची बोट विशेष आहे तर कोटयाच्या यैवजी व पाटणाचे यैवजी तरतूद करून दीडपावणेदोन [लक्ष] पावेतो आगत्यरूप यैवज पाठविला पाहिजे. विशेष काय लिहिणे कृपालोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२१३]

श्री * संवत १८१२ ज्येष्ठ शुद्ध ७

[१६ जून १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [बळे] सा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता ज्येष्ठ * शुद्ध ७ म्या नागोर जाणोन स्वकीय लेखन करित गेले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. लीा वर्तमान कळू आहे. श्रीमंतास पत्रे पाठविली ते वाचून दाखवून त्याचे प्रत्योत्तर पाठविले. व्यापत्रावरून सर्व निवेदन होईल. यथील वर्तमान सविस्तर श्रीमंताच्या पत्रावरून कळू येईल. बहूत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [२१४]

श्री * संवत १८१२ आषाढ शुद्ध ५

[१४ जुलै १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बालाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पोा चिंतो कृष्ण [बळे] सा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता ४ * ४ सवाल मुकाम नागोर जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. येथील वर्तमानाचेविती लिहिले तर जेतसिंग रावत राणाजीकडील आहे आहेत. व्यासमागमे बिजैराम गोसावी व जगनेस्वर ब्राम्हण व रायसिंग ब्राम्हण जैसे त्रिर्षा आहेत. अद्याप काही भाषण नाही. पाहावे कैसा डौल होईल. गावकरी लबाड आहेत. गोसावी यासीही पश देता दिसत नाही. कळले पाहिजे. येदाची छावणी मुकाम मजकुरीच करावी हा निश्चय जाला आहे. सत्वर सला जाल तर कूच करून जावे येसे दोन्ही विचार आहेत. विशेष काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिबकजीबावास नमस्कार विनंती उपर. लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२१५]

श्री * संवत् १८१२ श्रावण वद्य १४
[५ सितवर १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेशी.

सेवक चिंतो कृष्ण [बळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशळ ता छ * २७ जिल्काद गुा नागोर जाणोन स्वकीये कुशळ लखन करीत गेले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. सविस्तर वर्तमान कळले. सर्व यजमानास श्रुत करून प्रतिउत्तर पाठविले आहे त्यावरून कलो येईल. यथील वर्तमानाविसी लिहिले तर तूर्त अनुरुद्धसिंग खंगारोत नरायेणावर फौजसुधा आळा आहे. त्याजवर येथून फौज रवाना केली असे. साताआठा रोजामघे मुकाबला होईल. ईश्वरकृपेकरून दुष्टाचे पारपक्ष होईल. चिंता नाही. विशेष काय लिहिणे कुपालोम असो दीजे हे विनंती. पाटणचे यैवजी उजनीच्या हुंड्या पाठवाव्या. हे विनंती.

लेखांक [२१६]

श्री * संवत् १८१२ भाद्रपद वद्य ११
[१ अद्वर १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेशी.

पोष्ये चिंतो कृष्ण [बळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशळ ता छ * २४ जिल्हेज मुक्ताम नागोर जाणोन स्वकीये कुशळ लखन करीत गेले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. हुंडी सतावीस हजार दोन रुपयाच्या हुंड्या पाठविल्या आहेत जमा जाल्याचे उत्तर पाठवणे म्हणोन लिहिले. तर हुंडीपत्रे जैनगरास पाठविली आहेत. सही हाउन यैवज जमा जाल्यानंतर जाब पाठउन देउ. यथील वर्तमानाचेविसी लिहिले. जोधपुरी राजश्री संताजी वामळे व जीवाजी पवार व मालोजी^{२२९} वल्द शहाजी सिंदे वगैरे लोक व जगंनाथ पुरोहित व रागडेदेखील तेथेच आहेत. कळव्याची फौज सावेरसंनिध आली म्हणोन पुढे राणोजी मोईटे फौजसुधा पाठविले

(१२९) बखरीतील मालोजी सिंदे तो हाच. त्याच्या बापाचे नाव मिळतें इतकेच नव्हे तर 'तेरीज सेनापती सन खमस' या यादीत 'शाहाजी सिंदे' ह्यांनून जे दुसरे नांव आहे ते याचेंच असले पाहिजे. अर्थात यादीतील राणोजी सिंदे हा कन्हैरखेडकरच होय हे निर्विवाद आहे. शकेस आता वाचव नाही. [पिद ७ ले. २३] याच मालोजी व शहाजीसंबंधी दुसरा उल्लेखही सापडतो. [पिद २ ले. ४९]

आहेत. मागून राजश्री नरसिंगराज शिंदे व खानाजी जाधव फौजसुधा व सर्वाईराम यैसे पाठउन दिल्ले आहे. ते हे एकत्र जाल्यानंतर अनुरुद्धसिंग याने सल्लू करून माघारे गेले तर उतमच जाळे. सल्लू न जाळ तर छद्मन घेतच आहेत. चिंता नाही. [जयाजी] आपासाहेब मूळ पावल्यानंतर फौज व तोफा पाठउन नागोरच्या आसपासच्या गढ्या चाहू व रोहेण व दुगोली व झाडोली व खाद्द दोग्ही व काळ्या वगैरे गढ्या आसपासचे गांव सर्व छद्मन घेउन गढ्या पाडून टाकल्या. तेणेकरून रसद बंद जाहली आसे. पहिल्यापेक्षा नागोरवाल्यावर दबाव विशेष आहे. यथील बंदोबस्त राखून कळच्या वरही फौज पाठविली आहे. मोठी हिंमत [दत्ताजी] पाटीलसाहेबानी^{३०} केली आसे. कळले पाहिजे. सदैव पत्री सांभाळ करित जावा विशेष काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती. राजश्री

त्रिंबकजीबावास साा नमस्कार विनंती उपर. लीा परिसोन लोम असो दीजे हे विनती.

लेखांक [२१७]

श्री

[१७५६]

राजमान्येयाविराजित राजेश्री

बाळाजीपंत स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [वळे] साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील क्षेम जाणू[न] तुम्ही आपले क्षेम लिहित जाने. यानंतर तुम्ही पत्र पाठविले ते पावळे. लिहिले वर्तमान श्रुत जाले. पत्राचा उत्तर श्रीमत [दत्ताजी] पाटीलबावानी लीा आहे स्थावरून श्रुत होईल. बद्धत काय लिहिणे हे विनंती.

(१३०) 'पहिल्यापेक्षा दबाव विशेष आहे येथील बंदोबस्त राखून कळच्यावर फौज पाठविली मोठी हिंमत पाटीलसाहेबानी केली' हे वळ्याचे उद्गार मननीय होत 'माळसाहेबाचे नेत्र सत्तोष जाहाळे. याप्रमाणे निबळा मराठियात नाही' हे बसरीचे वर्णन निराधार ह्याणवत नाही 'दत्तवा ईश्वराचे घरचे सिपार्ह. परम धीर्यवान मर्द पराक्रमी हिमतीस बहादुरीस चुकतील येसा अर्थ नाही' [खड १ ले. १५५, १५७] 'दत्तवा केवल सीमच आहेत' [ले. ५८] 'सिंदे मोठ्या हिमतीचे माणूस जवामर्द शूर पराक्रमी. येवढे आवडवर आले असता किमपि भय चिंता किंवा उद्वेग ज्याच्या मुखशीवर विसतच नाही. माझनच घेतो हेच अक्षरे तोडावाटे निषतात' [पिद २ ले ११४ अ] 'नजीब दया करन वांचला रोहिले शुजा व अबदाली तिचे येक होतील त्यासी सिंदे मुकाबला घेतील' [पिद २ ले. १७६ वेद २ ले. १०७] त्याप्रमाणे 'गिलज्यासी गाठ पडताच जुज उत्तम प्रकारे होउन त्याच रात्री

लेखांक [२१८]

श्री

* संवत् १८१२ वीष शुद्ध ६

[७ जनवरी १७५६]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पो चिंतो कृष्ण [वळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशळ ताा छ * ४ राखर मुा नागोर जाणोन स्वकीये कुशळ लखन करणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. यथील वर्तमानचेविसी लिहिले तर आनरुद्धसिंग स्वगारोद येथे आळा आहे. स्वाने करार केळा आहे की पूर्णमेपावतो जोधपुर किला खाली करून देतो. यैसा करार केळा आसे. पौर्णिमेपर्यंत जो मनसबा होईल तो मागाहून तपसीलवार लेहून पाठउ. येते समई पाटणच्या व क्रीटाच्या पैवजी हुड्या आपल्या पाहिजेत. खर्चाची वोट विशेष आहे म्हणोन सूचना लिहिली असे. विशेष काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकबाबा स्वामीचे सेवेसी साा नमस्कार विनंती उपर. लीा परिसोन लोम असो दीजे हे विनंती. गरूडवाहन कमळ बाळाजीबाबाबरावर पाठविले पाहिजे. हे विनंती.

गिलज्या यमुना उत्तरोन पार गेला'. [पिद २ ले. ११२, ११७ पेद २१ ले १७८] नंतर दिल्लीकडे ५० हजार फौजेनशी 'गिलज्या आला. [पिद २७ ले. २४७] 'गवताचे दाटीमुले निकड जाली. फौजेचे तोंड न लागले प्रथम सरदारासी गाठ पडली. गोली लागोन ठार जाले' अशी होलकराहिंगण्यादिकांची साक्ष आहे [पिद २७ ले २४७] अवदालीच्या ४० हजाराशी केवल २५ हजारांनिशी गाठ घालून त्याची वीरश्री घालविणारा मराठा वीर इतिहासात हा एवढाच होय. 'अवदाली आला याजकरिता सिंदे रौहिल्याचा कारभार ठेउन गेले. तेच समई होलकर यास सामिल करून जावयाचे होतें. ते न केले' असा पेशव्याचा आक्षेप होता [खड १ ले १५७] 'सोवती येकेजागा असलिया सवचिं पारपत्ये होईल. अवच्या हिंदुस्थानचा वदोवस्त होउन येईल'. [चद्रचूड १ ले १३७] हे सर्वमान्य तत्व असून त्याचें परिपलन न झाल्यामुळें पानिपतचे अरिष्ट कसे प्राप्त झाले आणि 'दत्ताजी सिंदे यानी मर्दुमी केली परतु कार्य न जाहाले हा दृष्टात' गोपिकाबाईचा असून तो राघोवाने प्रथम उल्लेखिला आहे. [रिटि २ क्र १८ ले ३] तीच 'री अनेक सशोधक ओढीत आले आहेत त्याचे उत्तर बखरीत मिळते. त्याचा विचार कर्तव्य आहे पण तो विषय पानिपतच्या भीमासेचा असल्यामुळें केवल दीर्घत मावणार नाही. यासाठी तो प्रश्न किंचित लावणीवर पडून विरस झाल्यास उपाय नाही.

लेखांक [२१९]

श्री * संवत १८१२ फाल्गुन शुद्ध ७

[८ मार्च १७५६]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पोा चिंतो कृष्ण [बळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ताा छ * ६ जाखर मुकाम मोजे इडवे प्राा भेडते जाणोन स्वकीय कुशल लखन कारणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. हंडया पाठविल्या आा जैनगरास पाठविल्या असे. सही होउन येवज जमा जाल्यानंतर पावल्याचा जाब मागून लेहून पाठउ. येथील वर्तमानाचे- विसी लिहिले तर नागोरवाल्याचा यजमानाचा सद्धख जाला निमे मुळुक व नागोर किला व पंनास लाख खंडणी याप्रमाणे करार करून कूच केले. ते दरकूच जैनगरच्या मुळकात जात आसो. कळले पाहिजे. विशेष काय लिहिणे कृपालोभ असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिबकजीबाबास साा नमस्कार विनंती उपर. लीा परिसोन टोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२२०]

श्री * संवत १८१३ पौष वष १०

[१५ जनवरी १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण व धोंडो कृष्ण [बळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ * २४ राखर मुा श्रीगोंदे जाणोन स्वकीये कुशल लखन करीत गेले पाहिजे विशेष. आपण पत्र पाठविले ते पावले. पाटण कोटयाच्या येवजी इड्या पंनास हजारच्या करून उजनीस पाठविल्या म्हणोन लिहिले त्यावरून यजमानास श्रुत करून प्रतिउतर पाठविले आहे त्यावरून कळो येईल. राजश्री नारोबा कळे तीनसे रूपये पाठविले म्हणोन लीा तर चिरंजीवाची पत्रे हमेशा येतात परंतु तुमचा मजकूर त्यानी काही लिहिला नाही. तुम्हापासी जात्र आला आसेल त्याची नकळ करून लेहून पाठवणे. जाते समई आपण करार केला त्याप्रमाणे येवज पावता करणे. आपण जाते समई जे म्हटलं तेच वैकिले. आपण सरकारात्न काये सोडून घेतले काये दिव्हे ते सर्व विदित आहे. सूचनार्थ लीा आसे. कराराप्रमाणे तरी येवज चिरंजीबास पावता करावा. येथील वर्तमाना तर श्रीमंत राजश्री पंतप्रधान स्वामी व श्रीमंत राजश्री

भाउसाहेब व श्रीमंत राजश्री दादासाहेब यैसे सेनेसह श्रीगोदास येहून येजमानाचे समाधान^{३३३} बहुता प्रकारे केले. नवा सरंजाम खानदेशात येक परगणा यावळ दरोबस्त दिव्हा व श्रीगोंडामोवते चालीस गांव दिव्हे. याप्रमाणे गौर केला. श्रीमंत राजश्री जनकोजीबावाचे लग्न माघ वद्य आष्टमीचा निश्चये केला आसे. कळले पाहिजे. विशेष काय लिहिणे कृपालोभ असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिवंकजीबावास साा नमस्कार विनंती उपर. लीा परिसोन लोम आसो दीजे. राजश्री राघो जर्नादन याजबाा जिनस पाठविल्ल तो पावला. हे विनंती.

लेखांक [२२१]

श्री * संवत १८१३ फाल्गुन वद्य ८
[१३ मार्च १७५७]

श्रीमंत राजेश्री [रामाजी] भा[ऊ] स्वामीचे सेवेसी

विनंती सेवक चिंतो कृष्ण [वले] कृतानेक सां नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशल तां छ * २२ जाखर गुा श्रीगोदे जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करावयास आज्ञा केली पाहिजे विशेष. कृपा करुन पत्र पाठविले ते उत्तम समई प्रविष्ट होउन समाधान जालें. स्वकीये वर्तमान कितेक प्रकारे विस्तारे लिहिलें तें सविस्तर यजमानास श्रुत केले परंतु त्यानी वर्तमान येकून आम्हांस आज्ञा जाली कीं घर येथे राहावयास आहे. वाईकामुलें समागमे आणावी. ओषधउपाये करणे तोही येथेच करावा म्हणजे घरी राहाणे ही जाले ओषधही × × × होईल आणि समजाविसीचे × × त्यास सत्वर बोलवणे त्यास × × ही आपणांस पत्र त्यास × सविस्तर कळो येईल. आपण × × × पाहिजे. यात्रेस तूर्त जाव × × (सो)कूप केले. समजावीस करुन उपरांतीक जावें म्हणोन निश्चये केला आसे. प्रस्तुत समजावीस च्याली लागली आहे. तमाम लोकास पत्रे गेली आसेंत. काही लोक आलें. राहिले तेही येथील. आपण सत्वर आले पाहिजे. विशेष काय लिहिणे कृपालोभ असो दीजे हे विनंती.

(१३१) भेदभाव न बाळगिता अविश्वांत भ्रम करुन अलोट सपत्ति कर्जासाठी समर्पण केली असता भारवाडच्या स्वारीत भोकराचा मनाने सहाय्य न केले त्याचा विषास वाटला ह्यापुनच त्यानी नारो शकराची उपेक्षा केली [पिद २ ले. ५९] आणि देखी येतांना स्वारी सरळ गावी गेली. ती रूक्षता ओळखून पेशव्याची ही सपावणी होय. या 'महालास' यावरुचोपढा असें नाव कागदोपत्री असून तो या वेळी प्राय. उजाड होता. 'भुलेमाणसे ठेवावयास किला द्यावा असे मान्य केले असतां सिवनेर' मिळाला नाही. [पिद २ ले. ७०] 'रहावयास जागा पडगाव जावें ह्यापुन करार होता ते काम

लेखांक [२२२]

श्री * संवत् १८१३ फाल्गुन वद्य ११

[१६ मार्च १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी

पो चिंतो कृष्ण व घोंडो कृष्ण [बळे] कृतानेक सा विनंती उपर. यथील कुशळ ता छ * २५ जाखर मुा श्रीगोंदे जाणोन स्वकीय लखन करीत गेले पाहिजे विशेष. हुम्मी पत्र पाठविले ते पावले. पाटणच्या हिसेबाच्याविशी लिहिले. तर ज्याप्रमाणे आज्ञाता हिसेबाचे फडसे होत आले आहेत त्याच रतीप्रा फडशा केला असे. शब्द लाबासा काये आहे. आपले पत्र तपसीलवार यजमानास श्रुत करून प्रतिउत्तर पाठविले आहे त्यावरून कळो येईल. येथील वर्तमान तर यजमानाचे लग्न माघ वद्य ७ सप्तमीस^{११} जाले. प्रस्तुत फौजेची समजावीस नालबंदी^{१२} देत आहेत. सत्परीच कूच करून हिंदू-स्थानात येणार. कळले पाहिजे. विशेष काय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकजीबाबास सा नमस्कार विनंती उपर. ल्या परिसोन छोभ आसो दीजे हे विनंती.

जाले नाही'. [गंठ १२ ले. ७२ पेद २९ ले ५९] भ्रतकेच नव्हे तर देशी पूर्वापार जे महाल होते ते पानिपतानंतर बहुतेक जप्त झाले. [पड ६ ले ५०७ वाड ९ ले १६५] त्याच्या बुडाशी जें कारण होते त्याचा मागीलपुढील राजकारणाची सबध येतो एतदर्थ ही गोष्ट वाचकानी लक्षात ठेवावी. पुढें किल्ला अक्षर घेतला त्याची पूर्वपीठिका अशी आहे. [लि. ११९, १२०]

(१३२) 'लग्नाचा निवचय अष्टमीचा' होवा [लि २२०] पण ते 'सप्तमीसच जाले' असे हा बळे मागतो. जनकोजीच्या पत्नीचे नाव 'कासीबाई' होतें भाविपयी बखरीची व बसावलीची एकवाकपती आहे. केवल माहेरचे आडनाव जुळत नाही. खडेंकरास निवालकर मानले तर वादच कुटला कासी-बाईचा वधू व्यकटराव ज्याचे नाव बखरीत येते ते पत्रात आढळत नाही हणमतराव निवालकराचे नाव अनेकदा आलें असून त्याचा 'मिहुणा नागोजी माने ज्ञात ठार पडला' हे बखरीचे कथन कसोटीचे आहे [लि १७८, १७९] याच हणमतरावाचे एक पत्रही उपलब्ध होते त्यात तो 'आपला आमचा व्हेल जिवाला माया भमता आहे' असे स्पष्ट दर्शवितो किंबहुना त्याच्या मध्यस्थीनेच निजामाशी तह झाला असावा असे अनुमान होते. [७ दिसवर १७५७] अस्तु 'पेशव्यास अगण्य' काय या बखरीच्या कटासा विषयी मारवाडच्या स्वारीचे सूक्ष्म निरीक्षण करून पाहिले पाहिजे.

(१३३) 'शिलेवाराचा हिसेव भाद्रपदमासी. नालबंदी अस्विनकार्तिकात रोजमुरा चंत्रात देण्याची प्रथा होती असे गोपालराव गणेश सांगतो [१० मे १७५५] तेव्हा अवदालीसाठी शिवाजी नालबंदीचे दिवस नसता वैशाखमासी ४० हजार फौजेस नालबंदी दिली असे बखर म्हणते ते वा पत्रात न्हरे ठरते. [लि १७७, २२१]

लेखांक [२२३]

श्री * संवत् १८१४ ज्येष्ठ शुद्ध १२
[३० मे १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
बाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पो माहादाजी^{१३४} कृष्ण व चिंतो कृष्ण व घोंडो कृष्ण [बळे] कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशल ता ठ * ११ रमजान सुकाम श्रीगोंदे जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करीत गेळे पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावळे. पा पाटण येथील नानाचे वर्तमान लिहिले व राजश्री नारो बाळाजी याची वरात जाली त्याचे वर्तमान लिहिले. ते सविस्तर यजमतास श्रुत करून प्रतिउत्तर पाठविले आहे त्यावरून कळो येईल. मुख्य गोष्ट की केल्या कराराप्रमाणे मुदतीच्या मुदतीस रुपये द्यावे यातच उत्तम आहे. राजश्री रामरावजीपासी यैवज पावता केळ त्याच्या कत्रजाची नकळ पाठविली ती पावली. सदैव पत्र पाठउन परामृष करीत आसावे. विशेष काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकजीबाबा स्वामीस सा नमस्कार विनंती उपर. लिला परिसीजे. लोभ आसो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२२४]

श्री

[१७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबाचे सेवेसी.

पोण्ये चिंतो कृष्ण [बळे] कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशल जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करणे विशेष. आपली पत्रे येतात ते श्रीमंतास श्रुत करून त्याची प्रतिउत्तरे पाठविली आहेत त्यावरून वर्तमान कळो येईल. आम्ही

(१३४) या पत्रात बळे वधूची नावे ज्या क्रमाने दिली आहेत त्याप्रमाणेच ते बढीलघाकटे होते सर्वांत लहान नारोपत होता. [लि २३७] अस्तु. या बढील महादाजीपताचा मुलगा विठलपत चांगला राजकारणी निघाला. सज्जजनगावचा तह करणारा विठल महादेव तो हाच बळे होता. त्याची पत्रे पुढे मालेल पहावयास मिळतीलच.

स्वामीचे पदरीचे आसोत. पत्र पाठउन परामृष करीत आसावा. पूर्वस्नेहास आतर न कीजे. विशेष काये लिहिणे कृपालोम आसो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकजीबाबास सा नमस्कार. ल्हा परिसोन कृपा करीत असावे हे विनंती.

लेखांक [२२५]

श्री * संवत १८१४ आश्विन वद्य ३
[३० अक्टूबर १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पो माहादाजी कृष्ण व चिंतो कृष्ण [वळे] कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपर. येपीळ कुशल ता छ * १६ सफर मुकाम नजीक झहर [औरंगाबाद] सडीस्वारी^{३३} जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते अक्षरशः यजमानास श्रुत करून प्रतिउत्तर पाठविले आहे त्यावरून कळो येईल. विशेष काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकजीबाबास सा नमस्कार विनंती उपर. लिहिल्ल मार परिसोन लोम असो दीजे. आमचे वार्षिकाचे उजनीस पावते कारणे. हे विनंती.

लेखांक [२२६]

श्री * संवत १८१४ कार्तिक वद्य १२
[८ दिसबर १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पो माहादाजी कृष्ण व चिंतो कृष्ण [वळे] कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपर. यपीळ कुशल ता छ * २५ रावळ मुकाम पडतूर जाणोन खकीय कुशल लखन करीत गेले पाहिजे विशेष: तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. ते सर्व यजमानास श्रुत करून प्रतिउत्तर पाठविले आहे त्यावरून सविस्तर कळो येईल. यजमान सवरीच श्रीमंताचा निरोप घेउन हिंदुस्थान प्रांते येणार आसते. सदैव पत्र पाठउन संतोषवीत आसावे. विशेष काय लिहिणे कृपालोम आसो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकजीबाबास सा नमस्कार विनंती उपर. ल्हा परिसीजे. लोम असो दीजे हे विनंती.

(१३५) कास ले १४५, १४६, १४७, १४८ ही पत्रे १७५७ तीळ असून सपावकाचे वर्ष बृकले आहे.

लेखांक [२२७]

श्री * संवत १८१४ फाल्गुन वद्य १२
[५ अप्रेल १७५८]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबावा स्वामीचे सेवेसी.

पोस्ये घोंडो कृष्ण [बळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशळ ताा छ * २६ माहे रजव मुा उजेन जाणून स्वकीये कुशळ लिहित असिले पाहिजे विशेष. आपण पत्र पाठविले ते पावोन समाधान जाले. उजनीस येजमान किती रोज राहणार हे ल्हा म्हणून ल्हा. तरी उदईक त्रयोदसीस कूच आहे. सांप्रत तुमच्याच मुलकात येताज. तुम्ही राव्यास व कारभारी यास घेउन सन्मुख यात्रे. नाही तरी मुलकाची खराबी होईल. श्रीमंत राजश्री [दत्ताजी] पाटीलसाहेब मागाहून^{३३६} येका महिनिया येतील. त्याजसमागमे तीर्थस्वरूप राजश्री [चितोपंत] तात्या आहेत. बहुत काय ल्हा लोम आसो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकजीबावास साा नमस्कार विनंती. ल्हा परिसीजे हे विनंती.

लेखांक [२२८]

श्री * संवत १८१५ वैशाख शुद्ध १४
[२१ मे १७५८]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबावा स्वामीचे सेवेसी.

पोस्ये घोंडो कृष्ण [बळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशळ ताा छ * १३ रमजान जाणून स्वकीय कुशळ लिहित जावे विशेष. मोतियाच्या चौकडीयाविसी आपणास सांगितले होते त्यास चाकडा राजश्री रात्रोपंत सोपारकर व अथवा रात्रो जनार्दन याजसमागमे पाठवावा. येथे पाहून ठेवावयाचा असेल तरी ठेऊ. नाही तरी सत्तरीच आपणापासी पाठउन देऊ. फार दिवस ठेवणार नाही. फोटेशाल्यानी आमचा करार केला आहे तो वैवज आपण उगउन घेतलाच अरोल. तो वैवज तुम्हा-कडील वार्षिक तीर्थरूप राजश्री [चितोबा] तात्याचे व आमचे दुसाला येणे आहे. तो वैवज राजश्री रात्रो दादाजी निा राजश्री साबाजी पाा सिंदे याजपासी पावता करावा. बहुत काय लिहिणे लोम असो देणे हे विनंती.

(१३६) दत्ताजी सिंदे चाभारपोदियास लग्नाकरिता गेले ते मागाहून आले हे वखरीचे वर्णन यथार्थ उतरते पद २७ ले ८४ हे पत्र 'दिसवर १७५८' चे असून संपादकास त्याची तारीख साबली नाही

लेखांक [२२९]

श्री * संवत् १८१५ भावण शुद्ध ४

[८ अगस्त १७५८]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक धोंडो कृष्ण [वळे] साष्टांग नमस्कार विनती उपरी. येथील क्षेम तागाईत छ * ३ माहे जिल्हेज मुा सावर जाणोन स्वकीये लेखन करीत गेले पाा विशेष. पेशजी पत्रे पाा ते पावली परंतु कासिद जात्र घेउन गेला नाही. सांप्रत आपण हुंडी पाा ते पावली. सदैव येणारासमागमे पत्र पाठउन सांभाल करीत जाणे. बडूत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

राजश्री लाळाजीस व गोपाळरावजीस साा नमस्कार विनंती. लीा परिसीजे हे विनती.

लेखांक [२३०]

श्री * संवत् १८१५ भाद्रपद शुद्ध ४

[६ सितवर १७५८]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक धोंडो कृष्ण [वळे] साष्टांग नमस्कार विनंती उपरी. येथील क्षेम तागाईत छ * २ माहे मोहरम जाणोन स्वकीय लेखन करीत गेले पाा विशाव. दुग्धी पत्र पाा ते पावले. लिहिले वर्तमान विदित जाले. आपण सरकारात कोठ्यापाौ व पाटण पाौ चालसा हजार खायाच्या हुंड्या पाा त्या पावल्या. सेकारून येवज जमा जाल्या नंतर लहून पाठउन देव. तदनंतर आपण पेशजी लिहिले होते की श्रीमंत राजश्री मुभेदाराचे ताकीदपत्र राजश्री आबाजी [रघुनाथ] पतास पाा त्यावरून मारानिलेस ताकीदपत्र पाा आहेत. हे पावतील. सदरहू चालसा हजारच्या हुंड्या राजश्री साबाजी पाा [शिंदे] याजकडे आपण पाठविल्या. स्वानी येथे पाठविल्या. त्या पावल्या. महाराव अजीतसिंगजीचा^{१३०} काल जाला म्हणून लीा त्यावरून चित्त खिन्न जाले. ईस्वरसता

(१३७) महाराव दुर्जनसालजीनंतर ४० लक्ष खडणी देऊन अजीतसिंगजी कोटबाच्या गादीवर गेले [भाग १ ले १८०, १८१] ते या वर्षी वारले तेव्हा त्याचा मुलगा छत्रसाल गादीवर बसला [भाग १ ले. २१२] अर्थात् बाबिबयी टाडचे कथन चुकले आहे हे सहज लक्षात येईल [Tod Rajasthan vol II page 416] तसेच प्रथम जनकोजीशी [भाग १ ले १९०] आणि नंतर वत्तानी शिवाजी होळकराची भेट होऊन पुकोजी होळकरास समागमें दिले असे बखर सांगते तें या पत्रावरून खरे ठरते [चंद्रचूड १ ले १३७] मंटीचा कालही या पत्राने निश्चित होतो

प्रमाण. हे वर्तमान कळल्यानंतर श्रीमंत राजश्री मल्हारजीबाबाचे मानस बहुत आहे जे तत्र स्तुलास जावे. दवाउन च्यार रूपये ध्यावे. आपले येजमानास चला म्हणत होते परंतु येजमान यानी टाळा दिल्या. जे अम्हास मारवाड व दिळीकडे जाणे जरूर आहे. तुम्ही म्हणाल माहाराष दुर्जनसाल मृत्य पावले त्याप्रमाणे अताचा प्रसंग नाही. बंदोबस्त उतम आहे. उगेच दवून रूपये देणार नाहीत. त्यानी उतर दिले जे त्याचे भाउबंद कारभारी सिवसिंग झाल्याप्रुधा हौडीते त्याची सूत्रे आम्हाकडे आली आहेत. पनाससाठ लक्ष रूपये यासिवाय मुलुक सोडवितो. येजमान बोलिले जे बहुत उतम. रूपये येत आसतील तर अम्ही मना करीत नाही. सुखरूप ध्यावे परंतु आम्हास यावयास फावत नाही. हजारपाचसे फौज देहू, याप्रमाणे करार जाला आहे. आपणास कळावे. घराउ वर्तमान आपणास कळावे म्हणून लीा आसे. बहुत काये लीा लोभ असो देणे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकबाबास साा नमस्कार विनंती. लीा परिसीजे हे विनंती.

लेखांक [२३१]

श्री

[१७५९]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राा

त्रिंबकबाबा गोसावी यांसि.

सेवक चिंतो कृष्ण साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीय लेखन करणे. यानंतर तुम्ही पत्र पाठविणे ते पावले. हतीचे वाहन पितली पाठविले ते पावले. त्याचे रूपये दाहा १० राा बाळोबा याजकडून देविले ते घेउन उतर पाठवणे. सदैव पत्र पाठउन सांभाळ करित असिले पाहिजे. राा दयानाथराव याचे वर्तमान लिहिले तर रांगडे लोक लबाडच आहेत. कळले पाहिजे. बहुत काये लिहिणे कृपाळोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२३२]

श्री

[१७६०] ?

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक महादाजी कृष्ण व चिंतो कृष्ण [वळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ * २० जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत जाणे

तदनंतर तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले लिहिले वर्तमान अवगत जाले. येसेच सदैव पत्र पाठउन संतोषवीत जाणे. श्रीमतास पत्रे पाठविली ते त्यासी वाचून दाखविली. त्याचे उतर पाठविले आहे त्याजरून अवगत होईल. विशेष काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२३३]

श्री * संवत १८१७ आश्विन शुद्ध २

[११ अक्टुबर १७६०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [बळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशल ताा छ * १ रोवळ मुा नजीक सोनपत जाणोन स्वकीय कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. श्रीमंताच्या सरकारच्या कारकुनाचा वोमाट लहून पाठविला. त्यावरून श्रीमताचे पत्र त्यासी पाठविले आहे. त्यास ते पत्राचे उतर देउन कारकुनाची रवानगी करणे. उजनीम रूपये पाठविले. उतम केले. यथून वरात जाली आहे. पनास हजाराची ते रूपये हर तजवीब करून देणे. वरात माघारी न पाठवणे. यथील वर्तमान तर दिलीहून कूच जाल. कुंजपुन्यास जातान अलीगोहर पानशाह केला. अवदाली वगैरे सर्व येमुनापारच आहेत. जुंज जाल्यावर सर्व गोष्टी होतील. काळले पाहिजे. विशेष काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२३४]

श्री * संवत १८१७ कार्तिक शुद्ध १

[८ नवबर १७६०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालबा [गुलगुले] स्वामीचे साो.

सेवक चिंतो कृष्ण [बळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ताा छ * २९ रोवळ मुा पाणीपत जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. राजश्री रामचंद्र कृष्ण यास श्रीमंतानी पंनास हजार रूपये देविले ते रूपये बहुत प्रयत्ने करून दिले. याउपर वरात न करावी म्हणोन विस्तारे लिहिले ते सविस्तर कळो आले. श्रीमंतास सर्व वर्तमान श्रुत केले असे. आपण रूपये वरातेप्रमाणे दिले तेणेकरून बहुतच कृपावंत यजमान तुम्हावर जाले

आसेत की या समई तुम्ही बहुत केली की वरातेचे रुपये पावते केले. फार उत्तम आपण केने. येथील वर्तमानाचेविशी लिहिले तर शाहजहा पातशाह कैद करून अली गोहर पातशाह नवा केला. त्याच्या पुत्रास छ । ३० सफरी वलीआहादी दिल्ली. तेथून कूच करून कुंजपुन्यावर गेले. अश्रदुलसमघखान मोमिनखान गिळज्याकडील व कुतुबशाहा नजीक[व]खानाचा येसे जमावसुधा राहिले होते. कदक खाणून भिताळे घाळून मजबुतीने राहिले होते. त्याजवर छ । ७ राबली हला केली चढे घोडे त्यास लुटले. तत्क्षणीच कुंजपुन्यावर हला करून किला घेतला. मोमिनखान गोलीने लढाईत कामास आला. अबदुलसमघखान व कुतुबशाहा यासी धरून सिरच्छेद केला. निजाबतखान कुंजपुरेकर कविल्यासुधा कैद केला. पांचसहा हजार माणूस मारले व सासात हजार माणूस जखमी केले. वरकड मुखी तृण धरून तुम्हारी गौ येसे म्हणोन निघोन गेले. दाहा हजार घोडे पांचसहा हत्ती उंटे डेरेदांडे वगैरे वस्तमाव आणिली. सरकारचा हत्ती जवाहिरगज^{१३८} पूर्वी गेडा होता तो यजमानाकडे आला. वीस हजार माणूस हलारबंद होते. ईश्वरे फते केली. अबदाली रोहिले यासी लढाई होत असे. त्यासी श्रीमंतासी कोसाचा तफावत आहे. निव्यानी गोळगोळी तोफाचा मार होत आसे. श्रीमगवंत कृपेकरून धर्माची स्थापना करून शत्रुचा नाश करून श्रीमंतास यश देईल. चिंता नाही. बडुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

† १० अक्टूबर १७६०.

† १७ अक्टूबर १७६०

(१३८) हे पत्र अत्यंत महत्त्वाचे होय वाचक आणि विशेषत पाणिपतची भीमासा करणारे इतिहासमयत हे विश्लेषण वृद्धीने वाचतील अशी आशा आहे वखरीतील कुंजपुन्याचा वृत्तात किती वास्तविक आणि विश्वसनीय आहे याची तुलना करून निवाडा करण्यासाठी हे अप्रतिम साधन होय दिल्लीहून मराठे निघाले ते '१ राबली नजीक सोनपत' मुकामी पावले [ले २३३] कुंजपुन्यावरी '७ राबली हला केला' आणि '२२ राबली पाणिपतावर' माघारे आले [खड १ ले २६१] कुंजपुन्यास असता 'शिंदेहोलकर डेरियास आले अर्ब केली की आता दिलीस जाउन पोचावे यांत उत्तम आहे ऐसे ऐकून भाळने विकल्प चिंतात आणिला. ते समयी दिलीस प्रविष्ट होते तर अवघड न पडते ते कृजपुरियात खणल्या लाउन तेथेंच स्वस्व राहिले'. हा आक्षेप वखरीचा योग्य असून सप्रमाण सिद्ध होऊ पहातो 'कृजपुरा येथील बंदोबस्त केला तो आबदाली सुज्याउद्दौला नजीबखान रोहिलेसुधा येथुना उत्तम आलीकडे आला. हे वर्तमान ऐकून तेथून अबदालीवरी फिरोज दरमजल पाणिपताजवळ गाठून सट्या फौजा कफन मार्गे बुनगे पुढें तोफाचा धारवा देउन मजबुतीने आहो' हे प्रत्यंतर पहावे [पुरवरे १ ले ३९१] जखमी व मेल्या माणसाची सख्या जुळते. अवाहर गजाचे स्पटीकरण होते कालाचे कौतुक कळतें. गोलवदीचे कथन मिळते केवळ सोदव्याचें अर्ब काल्पनिक म्हणता येतील की काय याचा विचार पुढें विस्तारे केला आहे तो वाचनीय आहे.

लेखांक [२२५]

श्री * संवत १८१७ फाल्गुन शुद्ध १
[७ मार्च १७६१]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
लाळा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंनो कृष्ण [बळे] कृतानेक सा नमस्कार विनती उपर. येथील कुणाल ता छ * २६ रजव मुकाम ग्वालोर जाणोन स्वकीय कुशल लखन करणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. कळण्याची फौज पाटणावरु[न] येहून वृदी प्रातीचा गळा कुली नेळा. नुकसानी विशेष जाली. सोपारकरानी राघो जंकर व भगवतराव शंकर यासी बेमानी केळी म्हणोन कितेक लिहिले. त्यावरून येथून तुम्ही लिहिच्याप्रमाणे श्रोमंत राजश्री सुभेदारची [होळकर] पत्रे पाठविली आहेत त्यावरून सुटका होंईल तर उत्तम असे. येथील वर्तमानाविसी लिहिले तर श्रीमंत राजश्री भाउसाहेब व श्रीमंत राजश्री जनकोजी सिंदे हे उभयेता लडाईतून निघोन आळ्य जाटाच्या मुलकातून लखे जंगलकडून बिकानेरावळे गेळे म्हणोन बहुतामुखे वर्तमान आहे त्याच्या शोघात येथून कासिद जोड्या दोनतीन पाठविल्या आहेत. तथ्य वर्तमान आले म्हणजे लिहून पाठव. तपसील्वार वर्तमान पूर्वील पत्री लिहिले आहे त्यावरून कळू येईल. विशेष काय लिहिणे कृपा लोभ असो दीजे हे विनंती. तुम्ही लिहिले की यजमानाच्या खत्रीकरिता कासिदजोडी पाठविली आहे म्हणोन लािा तर उत्तम केळे. कळले पाहिजे. हे विनंती.

लेखांक [२३६]

श्री * संवत १८१८ चैत्र वद्य १३
[२८ मे १७६१]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
लाळाजीबावा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [बळे] कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनंती उपर. येथील क्षेम छ * २६ माहे रमजान सुा श्रीमथुरा जाणोन स्वकीय लखन केले पाहिजे विशेष. आपण चैत्र सुध त्रियोदसीचे पत्र कोटेहून पाठविले ते छ २४ रमजानी पावोन लिहिला मजकूर सविस्तर विदित जाला. श्रीमंत यजमानसाहेबाचे वर्तमान तर चैत्र वद्य पूर्णिमेचे दिवसी कर्त्चे विजैपुर सबलगडचे पलीकडे साता कोसावर कर्त्चे मजकुरच्या वैरागियाचे मठी रात्रीचे वस्तीस होते. समगमे तद्दु कुंभेद १ व जाट दोषे व

वैरागी १ यसे होते. त्यास राजश्री विठळ सिवदेव [विंचुरकर] याचा खिजमतगार कुसाजी खामकर राजश्री विठळरायाच्या पुतण्याच्या सोघास निघोन जात होते. त्यास रात्रीचे वैरागी मजकूर कस्वेकर तेथे वस्तीस खिजमतगार व दोघे जाट घैसे राहिले होते. तो खिजमतगार पुरता श्रीमंतास वळखत होता. त्याणे श्रीमंत बावासाहेबां वळखोन रामराम केला. तेव्हा त्यास खुणेने एकांती बोलाउन लस्कराचे व सरदाराचे नावे घेउन वर्तमान पुसले. त्यास त्याणे सविस्तर लस्कराचे व सरदाराचे वर्तमान यजमानसाहेबास श्रुत केले. तो समागमे खिजमतगाराचे माणसे जाटाची दोघे होती त्याणी तर्क करून रामराम केला. तेव्हा खिजमतगारावर व त्या माणसावर राग केला. तेव्हा ते दूर सरकून वसले. उपर मोठे प्रातःकाळी खिदमतगार व माणसे जाटाची निद्रस्तच सोडून त्यास न कळता कूच करून लस्केराकडे जावयास गेले. खिदमतगार व माणसे जागी होउन वैरागी यास पुसले. तेव्हा त्याणे सांगितले की लस्केरास जावयास गेले. हे तहकीक करून सतरा प्रहरामघे क़रोलीवरून आले. ते येथे जाटापासी मथुरेस दाखळ जाले. त्या माणसांनी सविस्तर वर्तमान सांगितले. त्याजवर ठाकराने [सुरजमळ] इनामे दिल्ली. आनंद आनंद केला. आग्हीही इनाम देउन खुसवक्ती केली, हेतहकीक वर्तमान आहे. केवळ ठाकराचे जिवालेची माणसे होती त्याणी सांगितले. दुसरे दिवसी राजश्री विठळरायाचे खिदमतगारास आग्ही राजश्री गंगोनातासा [चंद्रचूड]नी पुसले. त्याणे शफतकिरिया करून जाहले वर्तमान सिधांत सांगितले. त्यास दिवसगत लागली. अद्यापि लस्केरात पोचलियाचे वर्तमान येत नाही. यामुळे चिंतार्णवी आहे. लस्केरात पावल्याचे वर्तमान येईल तो सुदिन असे. इकडील वर्तमान तर कितेक बंदोबस्त पूर्ववताप्रमाणे जाहला असे. वाकी दिल्लीच्या वगैरे महालचे वकील कुली आले आहेत. तो बंदोबस्त होता येक मास लागेल. मुजातडीळाने व गंगापारचे रोहिले याणी पूर्ववताप्रमाणे बंदोबस्त करून गेले असेत. आंतरवेदीत अमळ जाला. याकूपअली खान आबदालीकडील आला आहे. त्याने वजिरीचे कलमदान गाजुहीखानास वझे सुधा दिले. राहिली कामे सत्बरीच करून घेतो. श्रीमंत यजमान नित्यानी दोन कोस तीन कोस चालतात. ते गुप्तरूपे जातात. त्यास उजनीस जावयास येक मास पाहिजे. तदनंतर पत्र येईल. लस्कर दरमजळ उजनीस गेले म्हणोन गाठ न पडली. जीवंत आहेत. बडुतनी दृष्टीने यजमानास पाहिले. चिंता न करावी. वहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखाक: [२३७]

श्री *संवत् १८१८ भाद्रपद वद्य १४

[२७ सितवर १७६१]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
लालजीबाबा स्वामीचे शेवेसी.

सो नारो कृष्ण [बळे] कृतानेक सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल
ता छ * २७ माहे सफर जाणोन स्वकीय कुशल लेखन कीजे. तदनतर तुम्ही पत्र
पाठविले ते पावले. लिहिले वर्तमात अवगत जाले. तीर्थस्वरूप राजश्री [चिनोपत] तात्या
ग्वालेरीस आले. उजनीस सत्वर येतील. दक्षण प्राती मोगळाने दंगा केला. शैवगाव
पर्यंत जपती केली. संगमनेर वगरे जपती केली. बरहाणपुर शहर मोगळाने घेतले. रा
साबाजी पा सिंदे देशी गेले. कळले पाहिजे श्रीमत रा रघुनाथरावदादा पुण्याबाहेर
डरेदाखल आहेत. फौज जवळ नाही. संग्रही गृहस्थास छुटीत आहेत. सदाशिव रामचंद्र
[सुखटणकर] याजपासून चौदा लक्ष रूपये घेतले. चासदेव दिक्षित तीन लक्ष व आबा
भजगदार बावीस येणेप्रा अकरा आसाम्या नेमल्या आहेत फौजेची चिंता नाही. शक^{३३३}
पुरावयासि आला आहे. बहुत काये लिहिणे हे विनती.

तीर्थस्वरूप राजश्री राघोपंत मामास सां नमस्कार सांगणे. हे विनंती

(१३९) पहा भाग १ ले २२३ टीप २२७ 'जनकोजी सिंदे मलकापुर प्रात जटवाडा येथें जिवत
होते अशी बातमी देखी निवाबाई सिंधास देणारा चितोबा वळे होता [पिद २९ ले २] मान त्याच्या
विषयी पूर्ण निराशा पेशव्याची झाली असावी. कारण 'सिरोजेहून माघारे फिरल्यावर पूर्वलोभास
अतर केले उजनीस आले कारमान्यापासून ११ लक्ष घेतले कापडजवाहिरही घेतले पवाराचा
सरजाम जप्त केला. सार्थकाची जात घायले तऱ्हेने दिसोन आली' [पिद २ ले १४२] 'तेथून इदुरास
आले. गौतमाबाईकडे पाचसात लक्ष खर्चास व तोफा मागितल्या तिणे साफ सांगितले की आपणास
येक पैसा खावयास अनकूल पडत नाही. वाड्यात येतील ते समयी काये देणे ते देव [खरे ३ ले ७१४]
या पत्राची मिती खऱ्याची चुकली असून खरी तारीख १४ अप्रैल १७६१ येते कारण याच वर्षी दस-
न्याच्या सुमारास गौतमाबाई मरण पावली अस्तु 'येक दिवस राहून प्रयत्न करावयाचा तितका
करून पाहिला वराणपुरास गेले तेथून पत्रे पाठविली की देखचे महाल जप्त करतो येणेकडून यज-
मानाची मर्जी फारच कडू आली' [पिद ले २] 'सुभेदार याचे चित्तास उदासीनता आली सेवा केली
त्याचे फल हे पुढे केलिया कलतच आहे [पिद ले. १] 'जनकोजी सिंदे याच्या अशा गती त्याच्या
स्थलास जाउन करावयाचे नवते ते केले राणीची जयापा दत्तबा कामावर आले सर्फराजी करावयाची
ते येकीकडेच ठेउन नवेच आडलात येते चाकरी केल्याचे सार्थक हे येणेप्रमाणे असताही सेवा करावयास
चुकत नाहीत' [पिद २ ले १४३] 'चिमाबाई सिंदी पुण्यात आहे तिने श्रीमतास विनती करून

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजी बलाळ स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो कृष्ण [बळे] कृतानेक साा नमस्कार विनंती. यथील कुशाळ

जफतिया उठविल्या रवळोजी सिंदे याच्या वावाला सरजाम शीमत करनार यैसी वार्ता होती. [पिढ २९ ले ४] किंवा तुकोजी सिंदे याचा भाऊ महादजी सिंदे आजूचकर याचे नावे सरदारी सागावी यैसे घाटत आहे [खड १ ले २९२] ती यथार्थ होती 'याद कळमवार होती तिजवर नानासाहेबाचे बोलणे होउन पवारानी व सिंधाची जपती उठविली जिवाबाई सिंदी याचे कारभारियास बोलाव पाठविले' [खंड ६ ले ५०७] या पत्राची मिति राजवाड्यास साबली नाही म्हणूनच निवाबाईच्या जागी जिवाबाई हा पाठ वाचला गेला पत्र १३ जून १७६१ चे आहे अस्तु घर सुटला. सर्व भय-चकित्त जाली 'पिसजीचे पैसुन्ये काहाडून श्रीमताची पत्रे' आलीच होती तेव्हा वाईचे कारभारी गेले नसावेत अर्थात 'आबाजी महादेव निवाबाईचे भेटीस गेले बोलले. वाई रागास आली. बोलली जे आमचे अकारीक साबाजी सिंदे व चितोबा हिंदुस्थानात चाकरीवर आहेत ते आल्यावर फौज ठेवणे ते ठेविली जाईल परंतु महादजी सिंदे याचे अतकूल पडत नाही उजनीहून चितोबाचा पुत्र श्रीगोविंदास आले जनकोजी जिवत आहेत म्हणोन वार्ता मात्र सांगतात [पिढ २९ ले. ११] सापत्न मातेची अनुकूलता का नसावी याचे कारण हे पत्रच सांगते 'सक पुरावयासी आला' या वेळी आणि तोही वळयाच्याच द्वारे या वर्षातील पत्रे उपलब्ध नसल्यामुळे इत्यभूत वृत्तात कळत नाही एवढे खास का वडीलकी केदारजीकडे राहून मुखतारी महादजी सिंदे करू लागले ही व्यवस्था बहुश निवाबाईच्या समतीने असावी असे वाटते सक्षेपात कारण सागावयाचे म्हणजे १२ हजार सैन्य जे निजाभाच्या लढाईत विद्यमान होते [खरे १ ले ४३] ते नारो शकराकडून ४० लक्ष कर्जे काढून महादजी सिंधानी उभे केले दत्ताजीचे उपकार स्मरून राजेबहादुराने या वेळी पैसाचा पुरवठा केला म्हणून त्यास दिवाणगिरी दिली. त्याचे पहिले पत्र ७ दिसवर १७६१ चे पुढे येईल याच तारखेचे दुसरे पत्र निवाबाई सिंधाचे असून त्यात नारोपताचे नाव येते [भाग १ ले २६८] या पत्रान्वये नारो-पत व बाबळे याच्या नेत्रत्वाखाली जे सैन्य उत्तरेस निघावयाचे होते त्याचे अधिपत्य केदारजी व महादजी सिंधाकडे गेले. [भाग १ ले २७३, २७४] 'सिंदे याची सरदारीत चिबडा दिसतो. पेशवे बदमासली भेटीनंतर सागू' [पिढ २९ ले ३६] हे वाक्य वरील व्यवस्थेस उद्देशून आहे किंवा वेगळीच भानगड दर्शविते हे समजण्यास साधन नाही होलकराच्या भेटीचा योगही देशीच घडून आला [पिढ २९ ले ३३] तदोत्तर 'केदारजी व महादजी सिंदे यासही पाठविले आहे याचेही स्वरूप राखून उपयोग पडल ते करावे. साप्रत सिंधाचे जागी तेच आहेत' [विषय ५३] या स्वारीत नारोपताचे काम त्याचा मुलगा शिवकराव पहात होता. तो उभयतास 'यजमान' असे स्पष्ट संबोधित असे ते प्रमाण पुढे पहावयास मिळेल तसेच 'केदारजी सिंदे सुभेदार' हे हिंजण्याचे शब्द मननीय होत [खड ६ ले ४२५] हे पत्र १७६२ चे असून त्यातील शोब अप्रयोजक होय. गुलराज वकील दिमत अबदाली यासी ४०

[जाणून] खकीये कुशल लिहित जाणे. लस्कारातून कूच करून निघालो ते म्हा मुकुंदवरीस^{१४} सुखरूप पावलो. विशष. राा शशाद्रीपंत लस्कारात राहिले आहेत. त्यास पंचवीस रूपये खर्चास देणे. तुम्हास हरयेक यैवजी मजरा पडतील. चिंता न करणे. आगल्यरूप खर्चास देणे. वहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२३९]

श्रीमदनंत

[६ फरवरी १७६५] ?

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

छाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

साो चिंतो कृष्ण [वळे] कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनंती उपरी. यथील कुशल ताा छ * १५ माहे शावान जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करीत गेले पाहिले विशेष. तुम्ही मुजरद कासिदासमागमे पत्र पाठविले ते पावले. अक्षरशः आर्थ ध्यानास आळा. कौटेकराचे घोडेचे रूपयेचा हवाला तुम्ही घेतला होता त्या यैवजी चैनरायेचे दुकानची हुंडी दोष्या रूपयेची पाठविली ते पावली. हुंडीची मुदत जालिया यैवज

हजारानी जागीर अतरवेदीत नेमून देण्याविषयी' उभयतास पत्रे गेली [बाब ९ ले १] १७६३त सिधे उत्तरेकडून देशी आले. 'भेट जाली सरदारीची घालमेल नाही असा बेलमडार दिला' [खरे १ ले ३७३, ३७४] 'जयाजी दत्ताजी व जनकोजी सिधे याचे कारकीर्दीस सरजाम होता त्याप्रमाणे करार कचन दिला असे तरी दौलतीचा बवोबस्त अभ्युतराव गणेश याचे विद्यमाने करीत जाणें [बाब ९ ले १६०] अशी वस्तुस्थिति असता चिक्लिसेचे घोगडे सवायामुळे कसे भिजत पडले हे वाचकावरच सोपविणे बरे [खड १३ प्रस्तावना १, २]

(१४०) घहा भाग २ ले ६५ टीप ५२ 'जालमसिंग झाले विा कौटेवाले याणी पेशजी भटवडे याचे लडाईत पाणिपतचें साली कामकाज चागले केले म्हणून कौलासबासी होलकर याणी सिधेसुधा बमल करार कचन दिल्ला' होता असे वाता स्पष्टीकरण होते [पेव २९ ले २८३] इतकेच नव्हे तर भटवड-याची लडाई '२ जाबली इंदुवासरी' म्हणजे ३० नवबर १७६१ रोजी झाली त्यात 'कौटेकराचे अखेराम पचोली व जालमसिंग झाले व धामाई बगैरे रजपुत याणी सेवेसी अतर न केले मल्हारजीबाबाच्या मन गदास गोलीची जखम लागली' असे सिद्धाचा सेनापती व चितोबा वळे हे उभयता सागतात [पेव २ ले ५, ६ पेव २१ ले ९२, ९३, ९४] पेव २ ले ६चा शोष सपादकाचा चुकला आहे खरी सारीख ५ दिसवर १७६१ अशी येते. तसेच टाडचे कचन मिध्या आहे हें निराळें सागावयास नकोच या स्वारी-तून वळे याधारा फिरला तेव्हा मुकुंदवारीस पोचल्याचे हे पत्र असावे त्या दुष्टीनेच क्रम लाविला आहे

जमा होतील. यजमानाची आज्ञा घेउन इंदुरास गेले होते. तेथे राजश्री बाजीराव^{१४१} राबोबावामा यहुन बड्डता प्रकारे समाधान करून उजनीस घेउन आले. कळले पाहिजे. विशेष काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री नारोबास नमस्कार विनंती उपर. सदेव पत्र पाठउन संतोषवीत जाणे. बड्डत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [२४०]

श्री * संवत १८३५ मार्गशीर्ष शुद्ध ९
[२८ नवंबर १७७८]

चिरंजीव राजश्री नारोबाबाबा यासि प्रती माहादाजी कृष्ण [बळे] आसिर्वाद उपर. कसवे श्रीगोंदे येथील बाडे समाईक चौचा[चे] २ दोन व्यापैकी चिरंजीव वामनराव पुंडीराज वेगळे निघाले ते [स]मई सरकारचे बाड्याचे उतर भागीचा नवा बाडा चिरंजीवास खतत्र दिल्या. त्यात त्रिबर्गाचा विभाग नाही. दुसरा बाडा जुना थोरला नांदता सरकारबाड्याचे दक्षण भागीचा तो त्रिबर्गाचा आमचा व चिरंजीव चितोबा तात्या व तुमचे विभागाचा राहिला यात वामनरायाची वाटणी नसे. चिरंजीव चितोबा तात्या वेगळे निघाल्यावर बाड्याची वाटणी तिजाई त्याची त्यास द्यावी. [पण] त्याची समजूत न पडे सबब चौथे ग्रहस्त मध्यस्त पडून या बाड्याची किमत बमये आमला २४००० चोवीस हजार ठरावली. त्याचा तिजाई हिसा तुम्ही व आम्ही उभयता मिळून रुपये ८००० आठ हजार देउन कजिया तोडला. सदरहू बाडा नांदता तुमचा व आमचा उभयेताचा समाईक राहिला त्याची हदहद्द लांबी दक्षण उतर सिवाय आवाराच्या भिती गर्भी हत सुमार ८. येक्यासी व रुंदी पूर्व पश्चम सिवाये आवाराच्या भिती गर्भी समेत गली हत सुमार ४१ येकेतालीस याचा तपसील.

८१ लांबी दक्षण उतर.

४१ रुंदी पूर्व पश्चम हत सुमार.

[या पुढील भाग किरकोळ झणून गाळला आहे]

(१४१) बाजी नरसिंह तो हाच याचे उपनाम कोठेच दिले नाही तो इदापुरचा राहणारा असता असे केवळ अनुमान होते [बाड ७ ले ५८०] त्याची पत्रे पुढे पहावयास मिळतील अस्तु. हे चितोबा वळयाचे जेवटचेच पत्र समजले पाहिजे कारण 'हुजूरची व पथकाची फडणिवी याजकडे होती ती हुजूर होउन नारो विठलास' मिळाली [खड १३ ले ५] अर्थात ती वेणी जात असता मंडळी त्यास परत घेऊन आली पण तो महादजी शिवाजयळ टिकला नसावा असे वाटते यानंतर त्याचे नाव मुळीच येत नाही. सख्खाई शिवाभाषी फडणिसी करीत असल्याचा लेख मात्र सापडतो. [पिद २९ ले २८३] १७७८पर्यंत तो जिवत होता. [ले २४०] अस्तु पत्राचे वर्ष शंकास्पद अमुन ते १७६३ तही मागें जाऊ शकेल.

येणेप्रमाणे खांदी गर्भ येकयासी हत बंदी येकेतालीस हत याची वाटणी उभयेताच्या रजावंदीने केली.

[तपसील गाळ्ळा आहे.]

सदरहू कळमबंधा लिहिल्या आहेत त्याप्रमाणे तुम्ही अम्ही वाटणी घेउन नांदनूक करावी. यासी अंतर करु नये. मिति शके १७०० विळवी नाम संवळरे मार्गशीर्ष * शुभ ९ नवमी सन हजार ११८८ [फसली.] बंद ७ सात असेत. † हस्तक्षर माहादाजी कृष्ण [वळे] हे लिहिले सही.

गोही

अनंत शकर कळवडे

अकोबा वां नार सेट. सदाखत असी सेटे
पेटे शाहापुर का मजकूर.

खडो सदासिव कुळकर्णी का मार
जानोजी वां विणेजी क्कोथविरे माली का
मजकूर.

गोजाजी वा देवजी चडोकर का मजकूर.
खडोजी वां पंदाजी गाजेकर [?] का
मजकूर.

हरजी वां सुर्जाजी रोही [?] का मजकूर.
वापु छेजमल सेट पेट जोतपुर का
मजकूर.



श्री दत्ताजी हिंदे.



किरकोळ पत्रव्यवहार.

१७९४-१८२८ विक्रमी.

लेखांक [२४१]

श्रीमंगलमूर्ती

[नकल]

माहाराज राजश्री मोकदम मोजे बालके व मोकदम मोजे देउळगाठ व मोकदम मोजे कोरेगाठ यासी सकुमाई मुळाना व ह्यालोजी सुतार व कृष्णाजी लोहार व साकुजी कुंभार व तुळनाक माहार व खेना माहार व खंढनाक माहार व चावनाक माहार मोजे हिवेरे. गोत मायेवताचे सेवेसी के धरम दिलहे येसेजे. मायवते पुरसीस केली जे वागुलराठ पाटीळ व चावाजी पाटीळ याचे मोकदमीचे भांडण कैस आहे ते सागणे ह्यणउन पुरसीस केली तर मोजे मारची मोकदमी भोळ पाटीळ मोकदम याची. वेळ विस्तार क्रागजी पाटीळ मोकदम. त्याचा विस्तार रतन पाटीळ. त्याचा विस्तार गोदजी पाटीळ मोकदम. हे खरे तहकीक असेत. पुढे याची वर्तनूक कैसी जाली ह्यणउन पुरसीस केली तर त्यास कोन्ही भाउबंद नवता व पोटी संतानही नवते. नाचारविचार बहुत जबुन होता. त्यास जीवाजी व रघोजी गांवामधें पाटिळकी चाकर फार [दिवस] करीत होते. पुढे गोदजी मोकदमास गावात सुखे मीक माणून देत नवते. पुढे गोत मायेवते पुरसीस केली की गोदजी मोकदमाचा व जीवाजीचा व रघोजीचा दांडाभेंडा वेळविस्तार कैसा आहे ह्यणउन पुरसीस केली. तर हे जीवाजी व रघोजी त्याच्या धरामचीळ नाहीत. याचा वहीळ वावजी गावावर आला. सुकवस्तीने राहिला. क्राग पाटीळ मोकदम यानी त्यास सेत व मजे कौळ देउन लाविले. सुखकौळप्रमाण कीर्दीची सेते करून राहिले. याप्रमाणे जीवाजी व रघोजी याची वर्तनूक असे. पुढे अणीक पुरसीस केली जे

बंजारियास मोकदमी कैसी दिघली. तर गोदजी मोकदमास अन खावयास नवते. कालदुकाल पडला व गावावर दिवाणची बाकी होती. त्याचा तगादा लागला यामुळे मोकदमी देउ लागला. ये प्रांती मोकदमी कोन्ही घेईना मग गोदजी मोकदम मोजे कोबरगावास गेला. तेथे साठजी मोकदम मोजे कोबरगांउ यास भेटला. मग त्यानी माळजी मोकदम मोजे पारगाउ याजपासी पाठविले ते घेउन काा कडियास गेले. त्याजबदल अपला गणनाक माहार होता मग तेथे मोकदम काा कडे येसी पुरसीस केली ची काये निमित्त मोकदमी देता. त्यास गोदजी मोकदमानी जोव दिल्हा की दिवाणची बाकी गावावर मोबल्लग राहिली. त्यास पुढे आपल्यास थैवज काही धावयास नाही व बैलहोरही नाही. आपला बहुत नातवानीचा विचार जाला यामुळे मोकदमी देतो. त्यास पोटी संतानही नाही. अगर आपल्यास भाउबदही नाही. मग काा कडियात राजश्री भुउजी व सटवाजी बागुलराउ व जोरवे कडाचे फौजदारसाहेब पासी चाकर होते त्यास गोदजी मोकदम त्यास भेटले. त्यानी त्यास पुसिले की तुम्ही मोकदमी काय निमित्त देता. त्यानी आपला वर्तमान जो होता तो सांगितला. मग मिउजी व सटवाजी बागुलराउ यांस मिन्नतमाना करुन गोदजी मोकदमाने आपली दरोबस्त मोकदमी होती त्यापैकी निमे मोकदमी गिबजी व सटवाजी बागुलराव यांस दिघली. काा कडियाचे थली खरीदपत्र करुन दिल्हा. त्या खरीदपत्रावरुन गोदजी मोकदम व गिबजी व सटवाजी बागुलराव येसे मिळोन काा कडोगणास आले. तेथे महाराज राजेश्री त्रिंबकजी देशमुख व[हं]डे माडोगणांस आले होते. मग त्याची मेटी महाराज राजेश्री खंडोजी भोपतराव व सिदोजी भोपतराव याचा हाते त्रिंबकजी देश-मुखास भेटले. मग त्यांस मोकदमीचे वर्तमान विदित केले की भवजी व सटवाजी बागुल-राव यास आपली दरोबस्त मोकदमी आहे त्यापैकी निमे मोकदमी यांस दिल्ही. त्या वरुन राजेश्री त्रिंबकजी देशमुख यांनी महजर करुन दिल्हा. मग वनजारियानी देशमुख देशपांडिये व हालीमवाली याच्या जे खरचास रुपये पडले ते मोजेचा बसविले वर रुपये राजेश्री खंडोजी सिदोजी भोपतीराव याचे होते ते देशमुख देशपांडियांस व हालीमवाली यांस दिल्हे. त्यावरुन आपला महजर करुन गावावर आले. आपली पाटिलकी करीत होते. याचे जामिन कोळ्यांवर होते. त्याचे तरपेने पाटिलकी करावयास ताई व अंतरोजी पाटील मोकदम मोजे नारायणडोबे करीत हरदोजनु आले. त्यामाघे मिब व सटवाजी मोकदमाचा धाकटा भाउ बुबाजी पाटिलकी करीत आला. त्याजमाघे त्याचा भाचा मिकाजी पुढे मोकदमी त्याचे तरपेने करीत आले. याजवर सरराजीरामाची

मिरासपटी आली. रुपये २०० दोनसे. ते निमे वजारियानी दिल्ले आणि निमे गांवानी दिल्ले. यावर अनिक नागवण गडधी [गनीम] याची गांवावर आली. रुपये ७०० सातसै आले. ते वनजारियानी व गांवानी समाइक मिलोन दिल्ले. याजवर अनीक गांवाची बुरे व नफरी याची बुरे गनिमानी वडऊन नेली. ते गुरेही बुढवली आणि रुपये ३०० तीनसै घुतले ते रुपये वनजारियानी व गांवानी मिलोन दिल्ले. यावर पांढरी वेराण जाली. आपण गांव [सोडून] देसावर गेलो. भागती फिरोन गांव भरला. त्यांस वंजारियाचे कोन्ही गांवावर आले नवते. मग आपला गांव महाराज राजेश्री वजाजी नाईक [निंवाळकर ?] याजला जागीर होती त्यांस जमाबंदीबदल देशमुख व देशपांडे व जवारदार काा करडे तेथील पाटील व बाबाजी पाटील येसे मिलोन वजाजी नाईकापासी भुमसनाथ होते त्यांसही हा गांवास रहावयास गेले. तो तेथे सटवाजी मोकदम होते. त्यानी त्यांस मेटोन रहाउन मेजमानी केली. दुसरे दिवसी त्यांस पागोटी बघंली. मग त्यानी सटवाजी मोकदमास जाव दिल्ला की आपण नाईकाची जमाबंदी करुन कौल घेउ[न] देतो. तुम्हास घेउन गांवास जातो. त्यांस जमाबंदी करुन फिरोन परभारे जात होतो. त्यांस वनजारियांस खबर कळली. मग त्यानी जाउन घेउन आले भागती जाउन मेजमानी करुन मग देशमुखदेशपांडे म्हणो लागले की तुम्ही गांवावर चालणे. मग सटवाजी मोकदमानी जाव दिल्ला की कवार तो आहे येसा मान जालियावर भावास येउन सुका अस्तमान जालियावर राणोजी व सटवाजी झरेकर आनावयास पाठिविले. मग सटवाजी मोकदमासी वयउत काही घेउन गांवावर आनले मग सटवाजी मोकदम खानवालाशान याची मेटी घेतली. त्यानी कौल दिल्ला व ठाणियात काा करडे येथे जाउन फौजदारसाहेवास व देशमुख व देशपांडियात हालीमवाली यांस मेटोन गांवावर आले. आपली मोकदमीचा मलियात व सेतात नागर घर नवे पडीक हाजर किरदी केली त्याचे रुपये १०६ एकसैसहा पाटिल म्हणून घेतले. त्याजउपरी बाबाजीने सटवाजी मोकदमास खानवालाशान याजपासी घेउन गेले. तेथील वर्तमान जे जाले ते तुम्हास विदित आहे. त्यामधे आपले कोन्ही नवते. येसी वर्तनूक जाली. सेवेशी लिहून दिल्ली. ये लिहिले सही.

लेखांक [२४२]

श्री

* संवत १७९४ आश्विन शुद्ध १०

[२२ सितवर १७३७]

द्विसेबु राजश्री देवजी पाटील ताकपीर व कान्होजी पाटील ताकपीर विन
तान्हाजी पाटील ताकपीर मोकदम मोजे चिखली ताा हवेली प्रांत पुणे सुा समान

सलासीन मया व अल्प. सन हजार ११४७ [फसली] छ * ८ माहे जमादिलाखर
सके १६५९ पिंगलनाम सबछरे. भोजे मजकुरची मोकदमी खरीदी^{१४२} केली त्यास खर्च
या जमा १९९९६ रुपये

तपसीळ

२२०० सोनगढीन बराबर राजश्री कान्होजी ताकपीर याणी आणिलें होते.

१००० राजश्री देवजी ह्यानी दिल्ले.

१००० धाड्या हता आणविले.

२०० जीवाजी जाधव दिले.

२२००

७००० सुराद जिलीबदार याज हता सोनगढीन राजश्री देवजी ताकपीर याणी
पाठविले हता हुडी मोरोबा नाईक ताहवेकर मुकाम पुणे.
का सोनगढीन देविले.

१०७४६ गुा देवजी ताकपीर.

५० माणकोजी पाटीळ जगथाप भोजे पिपळ याजळा कर्ज दिल्ले होते त्या
पेकी त्याणे भोजे मजकुरचे मुक्तामी दिल्ले गुा खुद.

१९९९६

खर्च १९९९४

७६ श्रीचिंचवड भोरेयास खर्च.

७० श्रीजेजुरी.

१०८५० पंतप्रधान.

२४९ जिल्हेदार [बापुजी श्रीपत]

८३२ देशमुख प्राणणे मजकूर.

२०० त्रिबकपंत देशपाडिये.

३५ नाईकवाड.

रुपये यासी तपसीळ.

७ काजी प्राणणे मजकूर.

१८५ पुण्यात गोत मेळविले त्यास
खर्च

२००४ भोजे मजकुरी येउन महजर
केला ते समई गोत मेळविले
त्यास भोजन कापड वगैरे खर्च.

९२२ भेजवाणीखर्च.

(१४२) हा हिशोब महत्वाचा वाहे भोजे चिखलीची पाटिलकी ४०९८ रुपयास विकत घेतली
त्याची नोंद होऊन केवळ राजपत्रे मिळविण्यासाठी १५९०० रुपये ताकपीरास दरवारखर्च पडला
त्यावरून बाजीराव पेशव्याच्या न्यायाचे चित्र मूर्तिमत दिसते छत्रपतीच्या शिरणीचे माप आणि हा

| | |
|--|--|
| ४०९८ खरिदी मोकदमी मोजे मज- कुरीची केली व्यास मोजे मारचे पाटील यास रुपये दिले. | ३८ मोजे मजकूरचे समस्त माहार २ मागिण मोजे मजकूर. २९१ समा माहार. ३१ बाजेखर्च. |
| १०० यादोपंत माली देशमुखाचा गुमास्ता. | १९९९४ |

तपसील

७६ श्रीचिचवड श्रीमोरयादेव यासी खर्च.

१३ मोहर १ देवापुढे ठेविली गुा मुम्हाजी पाटील ताकपीर.

६३ कापडखर्च.

७६

७० श्रीजेजुरीस खर्च जाला. तपसील अलाहिदा असे.

१०३६३ श्रीमंत राजश्री पंतप्रधान खात्री रूपये. यासी तपसील.

९००० नकद रूपये पोा वजा मोरे

पाटील मौजे मार याजबदल

दिल्लें रूपये ५०० बाकी.

१३६३ बहुमान

८७३ सोन्याची कडी ३ वा.

३२४ पंतप्रधान.

३२४ आपा [चिमाजी भट]

२ उपाध्या बहिरंब भट

३९१ कारकून.

१०० आयाबा मजदार.

१२० अंताजीपत फडणीस

९५ अमृतराव चिटणीस

५० चिमाजी भिवराउ.

२६ सदासिव जमिनीस.

३९१

व्याप कोठें याची तुलना वाचकानीच करावी 'प्रधानपताच्या सर्व गोष्टी सर्वोत्कर्ष आहेत परंतु येक गोष्ट अनुचित करितात की दृव्याची आशा धरून वत [नदारापासून लाच वेतात] येवढी गोष्ट न करीत ते करवों. मागे दावाजी कोडदेव लहानसाच ब्राह्मण जाला परंतु त्यागे जे इनसाफ केले ते पातसाहा सही वद्य जाहले'. असा जो शाहूचा आरोप होता तो निराधार म्हणता येत नाही. [पेद १७ ले ५२ पेद १ ले ४२] अशा 'महजराचे काम चालीस लावते' वेळी असलीच अपेक्षा सिद्धाकडून होती. [ले २४३] किंवहुना 'सिके करावयास अनमान करण्याची' प्रथा पुढेही प्रचलित होती. [पुरदरे १ ले २४३] अस्तु. वरील उतारा साध नसून कामापुरता घेतला आहे.

२२५ नाना [वालाजीभट]

४९० बले तपसील [गाळला]

१३६३

९४ शागिर्दपेशा [यासी तपसील]

४ हरीपंत आचार्या

४ जासूद त्रिंबकजी व हंसाजी.

२ फकीरा पखाली.

१९ चोपदार.

१ मंगालची.

२ हलाल

३ कान्होपंत तपवाड्या.

१ गोविंद पाणभरा.

१ वालाजी वाड्या.

१ विठोजी आबदागिरा.

५ सोनजी सराफदार.

२० फरास बंगरा.

१ नगरची.

३२

३२

६४

३० खिदमतगार लिंगोजी [माने ?]

९४

लेखांक [२४३]

श्री

[४ सितबर १७३९] ?

चिरंजीव राजश्री मोरोवास प्रती सिवाजी नारायेण असिर्वाद उपरी. येथील वर्तमान ताा भाद्रपद * शुध त्रयोदसी गुा सातारा सुखरूप असो विशेष. राजश्री राणोजी सिंदे यानी हिचेर प्रां कर्दे येथील महजरावसी राजश्री रामचंद्रबुव [सुखठणकर] यास लिहिले होते. त्यास त्याची अमची मेटी जाली. कितेक इनेहवादाच्या गोष्टी त्यानी सांगितल्या. त्यास तेही थोर आहेत. त्याचे कार्य करावे हेच उतंम आहे. राजश्री राणोजी सिंदे इनेहवादास चुकतात येसे नाही. हा विचार चितात अणून मोजे मारचे खाापत्र मनास अणून त्याचे महजराचे काम चालीस लावणे व खााखताची नकल अम्हाकडे पाठउन देणे. येथून दुमालेपत्रे पाठउन दउन. बहुत काय लिहिणे हा आसिर्वाद.

लेखांक [२४४]

श्रीमंगलमूर्तीप्रसन

[१७४०] ?

राजश्री राजोजी पाटील सिंदे मोकदम

मोजे हिवेर प्रो कडे गोसावी यांसी.

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्ययाविराजित स्नहाकित बाबुराव चोडके मोकदम मोजे पारगोडमोलहा पा पाडियापेडगोड सुमा सन हजार ११५३ [फसली] कारणे पत्र लेहोन दिधले येसेजे. मोजे हिवेर येथील पाटिलकी आपण पेसजी घेतली होती त्यास निमे पाटिलकीचे खरीदखत कसवे कडाचे पारचे गोदजी वा रतनजी पाटील मो झरेकर यानी आपल्या वडिलाच्या नावाचे दिधले होते व त्याजवरी चौथाई पाटिलकी देसमुख व देसपांडिये याच्या दस्तकानसी महजर करून दिधला होता त्यास प्रस्तुत तुम्ही तेथील पाटिलकी मोकदमी निमे घेतली. त्यास पूर्वापासून तुमचा आमचा भाडपना यासाठी आही कागद आपण तुह्यास दिधले [कीं] तुम्ही वंशपरंपरेने मोजे मजकुरची मोकदमी करून भोगवटा घेणे. आपला कऱ्या काही राहीला नाही. आनखी कोठे काही कागदपत्र आपणापासी अमला तरी रद्द असे. सदरहु कागदपत्र आपणापासी होते ते आपण खुशरजा-वंदीने तुह्यास दिधले. आपला काही कऱ्या मोजे मजकुरी राहिला नाही. हे लिहिले सही.

निना नागर

बा गणेशराम देशपाडिये प्रो पाडियेपेडगोड.

गोही

अपाजी पा मोटे मोकदम का चार्भारगोदे. जानोजी कदम पा मोजे गारसी ता फलटण.
अपाजी पा मो का सासवड. विठल नारायेण कुलकर्णी का चार्भारगोदे.
साक्ष भगवतराये रामराये देशमुख पाडिये पत्रप्रमाणे साक्ष गोदजी पाटील व जीवाजी
पेडगाव पा आहमदनगर. सुदगळ देसपांडिये का चार्भारगोदे.

लेखांक [२४५]

श्री * संवत् १८०० मार्गशीर्ष शुद्ध १

[६ नवबर १७४३]

रोखा सके १६६५ रुधरोचीगारी नाम सवत्सरे मार्गत्वार सुघ प्रतिपदा ते दिवसी खा लिखते धाको नाम राजश्री राजोजी सिंदे यासी शिको नाम सुमानजीराड

थोरात.^{१४३} तुहापासून घेतले मुदल रुपये २००० दोन हजार यास व्याज दरमाहे दरसडे रुपये २ दोघानप्रो देउ. हे खत लिहिले सही. दस्तखत रामोजी खंडेराउ [गिा]

जेकराव थोरात. छ * २९ रमजान,
[६ नवबर १७४३]

लेखांक [२४६]

श्री * संवत १८०० मार्गशीर्ष शुद्ध १
[६ नवबर १७४३]

राजश्री राणोजीबाबा सिडे सुभेदार साहेबाचे सेवेसी.

अज्ञायांक रामाजी खंडेराउ दिा राजश्री सुभानजीराव थोरात अनेक अस्ति-
वाद विनती उपरी. राजश्री सुभानजी थोरात यानी मांई हाल्यासून कर्ज घेतले रुपये
२००० सदरदु दोन हजार त्याचं खत राजश्री नावचे तुहास दिधले आहे. मोहरनसी
दिधले आहे. हे रुपये आपणापासून भरणा भरून पावलो. धडुत काय लिहिणे हे विनंती.

छ * २९ रमजान,
[६ नवबर १७४३]

लेखांक [२४७]

श्रीगजानन * संवत १८०४ चैत्र शुद्ध ६
[५ अप्रेल १७४७]

राजभियाविराजित राजश्री

वाळोबा स्वामीचे सेवेसी.

सेत्रक मिवाजी^{१४४} गंकर [ओढेकर] साा नमस्कार विनंती उपरी येथील कुशल
तागाईत छ * ५ राखर मुकाम गडकालिंजर प्रात बुंदेलखड जाणून स्वकीय कुशल
लिहित जाणे विशेष. बहुत दिवस जाले कांही पत्र येउन वृंत कळत नाही. सदैव कुशलार्थ
पत्री लिहित जावा. यानंतर स्वामी सरमुजु[मु]च्या सनदेविषई अनमान करितात. त्यासी श्रीमत
राजश्री [रामचंद्र]बाबानी तुहास पूर्वी सांगितलेच आहे आणि [आता] पत्राचा आक्षेप
करावा जैसे नाही. येथही गड मार काम पडले आहे. या प्रसंगाकरिता गुंता आहे. येथील
निर्गम जालियावरी सनद मागून पाठउन देउ^१ आणि सर्व प्रकारे चिरंजीव मगराउ याचा
परामृष करीत जाणे. विशेष ल्या तर उपरोध आहे. लोभ असो दीजे हे विनंती.

पोष्ये दादो महादेव कृतानेक साा नमस्कार. सेवकावरी सदैव कृपा करीत
असावे. लोभ दुणाहीजे हे विनंती.

(१४३) -पेशवेदप्तरात हे नाव अनेक वेळा आले असून त्याचा सवध निजामाकी दाखविला आहे
याला पारनेकर थोरात असे म्हटले आहे [पिव २८ ले ३९]

(१४४) याचे आडनाव ओढेकर असून तो धारकर पवाराचा कारमारी होता.

लेखांक [२४८]

श्री

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबा स्वामी गोसावी यांसि.

पो सिवाजी शंकर [ओढेकर] सा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीय ळिा विशेष. स्वामीकडील पत्र येउन वर्तमान कलत नाही. तर सबिस्तर ळिा आणि श्रीमत [रामचंद्र]बाबास तुम्ही रुप्याचे सिंहासन करून पाा आहे. हातीसिंह आहेत त्याजप्रा सिंहासन अगत्येच करून चिरंजीव भगवतराठ याचे स्वाध्यान करणे अन-मान [न] करणे. पैका ळाग[ळ] तो देहल. बहुत काय ळिा लोम आणे दीजे हे विनंती.

लेखांक [२४९]

श्री

[६ मे १७४९] पूर्वी

यादी दास्त^{१९}

१६ [लक्ष] रुपये. [यासी] तपसील

८ नस्त

रुपये. २ दोन लाख निशा श्रीमंताची दिवस पंधरा १५

४ च्यार घावे मोर्चे उठवावे.

६ निशा करून घावी श्रावण वद्य किस्ती २

४ च्यार डेरेंमध्ये घावे मग कूच करावे.

निशा भोपतरामजी व बालाजी व उदेरामजी तपसील.

८

जेष्ठ सुध १

श्रावण वद्य १

३

३

१६

लेखांक [२५०]

श्री

[जनवरी १७५२]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक भंगाधर यशवंत [चंद्रचूड] व रामाजी याधव साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीय कुशल लिहित जाणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते

(१४५) पहा भाग १ ले ८८ ही यादी बालाजी यशवंत गुलगुले याची स्वदस्तुरची होय.

पाउन वर्तमान कळू आहे. इकडील वर्तमान तर पठा[णा]स परामबाते पावविलियाचे पूर्वी लिहिलेच आहे. प्रस्तुत ये प्राती छावण्या जाल्या. पठाणाकडील मुळक दरोवस्त उभयेता सरदाराकडे जाला आहे. ये प्रातीचा बंदोबस्त होउन सावरीच त्या प्राती येणे होईल. बडुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [२५१]

श्री * संवत १८०८ आश्विन वद्य ६
[२९ सितवर १७५१]

राजश्रियाविराजित राजश्री

वाळोबा स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक रंगराव सिवदेव [ओढेकर] कृतानेक नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता छ * १९ जिल्काद जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत जाणे. यानंतरी तुम्हाकडील पत्र येउन वर्तमान कळत नाही. सदैव पत्रन्दारे संतोषवीत जाणे. सरमुजुमुबा यैवज राजश्री भगवंत सामराज याजकडे पावता करीत आहा त्याजप्रा साळ मजकुरीचाही यैवज मारनिलेकडे प्रा कीजे. याचे हरयेकविसी साहित करावे भरवसा आपला आहे. बडुत काय लिहिणे हे विनंती.

पौ वैशाख शुध २ संमत १८०८

सुमा इसने खमसैन मया अलफ.

[५ अप्रैल १७५२]

लेखांक [२५२]

श्री * संवत १८०२ वैशाख वद्य १
[१८ अप्रैल १७५२]



बइस्म ^{३४६} × × × फौजदारान व राहदारान व चौकीदागान व थाने
दारान व सायर मुस्तहिफजान तर्क व शवारे आं के मन्वाजी चहार मंजिल बहल सवारी

(१४६) बाबशाही दरवारात अनेकाचे वकील रहात होते त्यात मराठ्याच्या वतीने केरट छत्रपतीचाच वकील प्रथम असे. नंतर बाजीराव पैगच्याचा वेगळा राहू लागला महादेव दिगणे याने नाव

मरदाना वगैरा अज म्मानिकचंद साड्डु नअकबराबाद भीरवद. बायद के अहदे दर असनाये राह नइल्लत नकद महसूल राहदारी वगैरा अत्रवाव ममनुआ मालिका मुजाहिम व मुतहरिक न झुदा. अज हुदूद खुद सही व सालिम चागुजरंद. दर्री वाव ताकीद दानंद. नफसील बैल सवारी मरदाना चार मंजिल. मियाना सवारी यक. वेगी दो अदद.

तहरीर फित्तारीख चहार दहम १४ शहर जमादिउसानी सन ४ [जुद्धस]

‡ रुजु दफतर दिवान [मोडी]

लेखांक [२५३]

श्री

[सितंबर १७५२]

पुा राजश्री [जयाजी] आपासाहेब गोसावी यांसि.

विनंती उपर राजश्री बाजीराव घोरपडे^{१४७} यांचेविशीं बहुत प्रकारे लिहिले तर आपणे आझेखेरीच कोण आहे. नवाबाचा भागती इनायतनामा बहुत कूपेचा पाठविला आहे. मशारनिलेस इकडे मार्गस्त करावें. शहराजवळ आल्यावर येखादा मळा मातबर माणूस पाळकीनशीन पाठउन घेउन येउन. उतप प्रकारे मुलजिमत करउन बखे बहुमानाची देवउं. पूर्ववतप्रमाणे जागिराचे बहालीचा परवाणा देवउं. ज्यादा अगल्यवाद आपणांस त्याचा अगल्यवाद सर्वास. अर्हीं तर आपल्या मर्जीचे ताचे. जे मर्जी असेल तेणेप्रमाणे करूं. † बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [२५४]

श्रीशंकर

[सितंबर १७५२]

राजश्री [जयाजी] आपासाहेब गोसावी यांसि

कृतानेक आसिवांद विनंती उपर. राजश्री नागोराम यांजबराबर पत्रें पाठविली तें पावलीं. श्रीमंताकडून पत्रे व थैल्या व अर्ज्या पारसीच्या नवाबाकडे पाठवायाच्या

१७३३पासून आढळते त्याला नुसते 'राव' म्हणत होते त्याच्या पुत्रास 'महाराव' असे कागदोपत्री म्हटले असून त्याची तशी मुद्राही सापडते [खड ६ ले ३६०] रोहिलखडच्या स्वारीत 'राजा' अशी पदवी प्राप्त झाली त्याचे हे प्रत्यंतर होय. हे व अताजी माणकेश्वराचे [खड ६ ले ५३७] उदाहरण पाहिले म्हणजे आगरे व सावतवाडीकर याविषयी ग्रामथ्य माजले त्याची तुलना करण्यास स्वल्प जाईल. पत्र व मुद्रा फारसी आहे.

(१४७) हा बाजीराव राजे घोरपडे कोण व कोठील हे समजत नाही तथापि त्याचे नाव पुढें येते खरे [ले २५४] याच घोरपड्याविषयी जयाजी चिंथाचे दुसरे पत्र सापडते [खड ६ ले. ४९१] त्याची तारीख या आघारे लावली पाहिजे आम्हाजवळील खड कसर लागलेला असल्यामुळे पत्रातील तारीख कळत नाही ले २५३, २५४ चे अक्षर कापरे पण सुवाच्य आहे. लेखक दामोदर हिगण असावा असे वाटते.

आल्या त्या तुम्हांकडे पाठविल्या आहेत गुजराणून उतरे पाठवावी व इनायतनामे आणविले आहेत त्याची याद बजिनस श्रीमंतानी लिहिलीच आहे त्याप्रो इनायतनामें तयार करउन पो. श्रीमंताची पत्रे आली ती बजिनस पाठविली असेत म्हणून लिहिले त्यास घेल्या व अर्जा व इनायतनाम्याची यादी व अर्ह्या आपल्यापासून बारा मोहरा व मततीस हा गुजराणून थैल्याची उतरे व अर्जाची उतरे व इनायतनामे आणविल्याप्रमाणे पाठविले आहेत. सदरहुप्रमाणे पाहून घेणे.

४ थैल्या

- १ स्वामीच्या नावची
- १ जाणोजी निंबालकर
- १ खानखालम
- १ राजे रामचंद्र जाधवराव

४

६ अर्ज्याचे जाव

- १ मथानी शकर
- १ राजे थेशवंतराव सिंदे
- १ सत्तुसिकनखां
- १ महमद अबदुलखां
- १ हैदरपारखां
- १ कवीजंग

६ यांच्या तरफेने आर्ह्या आपल्यापासून बारा मोहरा व हा सततीस नजर केले आहेत.
१ इनायतनामा दंगकुवर फिरंगी याचे नावे

१ वाजीराव घोरपडे

२७

१५ इनायतनामे आणविले श्रीमताच्या लिहिल्याप्रो

- १ यशवंतराव निंबालकर
- १ मालेराव गुरुबक्ष पांडरे
- १ आनदराव जमिदार कमरनगर
- १ मान्या नायक
- १ मकरंदसिंग नाइक निंबालकर
- १ आगाजी पंमलेगर
- १ मालोजी घोरपडे
- १ रायाजी मोंसले
- १ गिरजोजी हाके
- १ जमिदार पा कासुरगी
- १ महिपतराव निंबालकर
- १ झंकर[मा जमिदार] अंडोल
- १ भूपालराव निंबालकर
- १ पाकनाइक जमिदार बाधनगिरा
- १ कुण्याजी नाइक निंबालकर

१५

यासिवाये गदवालच्या जमिदारास व अजेबंदास लिहिले गेले की तुम्ही अनवरुदीखानापासी बलाबोन जाणे याकरता यांस दोघास इनायतनामे न दिघले.

१ फर्द मतालव तहवरजंग

२८

सदरहुप्रमाणें आठावीस अदद पाहून घेणे. गोळ्याचा फर्मा पाठविला तो रावला. नवात्राकडून तो पैसा जिनस हातीं लागणे कळतच आहे. विकत पाहिला मिळतो परंतु त्यापेक्षा घरीं कारखाना लाउन करविल्याने उतम होईल. आज्ञा येईल तर रुये खर्चून घरीं कारखाना लाउन अगर विकत घेउन पाठउं. येतदविषयी जे आज्ञा. हाफिज महमदअलीखां आले याची खातरजमा शफथपूर्वक करविली व सैद लुसकरखानास आणायस रुखसत केले. अर्म्हीही रविवारी निघालों. मेटिनंतर सर्व वर्तमान सांगू. श्रीमताकडील पत्रे माघारे पाठविली आहे तें पावतील. एक पत्र मोहरा १२ व सो सनतीस नजरेस देणे म्हणून दस्तावेजी होता तो अर्म्हीं आपल्यापासी ठेविला असे. १' वहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [२५५]
१११]

श्रीराकर गंगा * संवत १८०९ आश्विन शुद्ध ८
[१५ अक्टूबर १७५२]

श्रीसीवचरणी
दत्तर बापुजी
सुत हणमंतरा
व नीवळक
२

राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यांसि.

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य श्री हणमंतराउ निंबालकर रामराम विनंती उपरी येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लेखन करित गेलं पाहिजे विश्वाष. साप्रत वर्तमान येकिले x x x श्रीउतरोन अलीकडे राक्षसमुवनापासी अलें. गांवगना चिटया घासदाणियाच्या जाल्या व तमाम जिराईत सजगुरे वगरे कापून घोडियासी नेतात. पलीकडे लस्कर होते ते तेव्हाही अगदी यडीचे गाव लस्करचे मुकामालाले उठले. जिराईत गेले. साप्रत अलीकडेही येसेच होत आहे. त्यासी बीड प्रगणा आमची जागीर ते आपली आहे. दुसरा अर्थ आहे येसे नाही. गांवचे गाव उठले व जिराई तही कापून नेतात येसे जाले तेव्हा सर्वस्वें नुकसानी आहे याजकरिता हे पत्र अपणांस लिहिले आहे व राजश्री कैदारजी लेहणें पाठविले आहेत हे कितेक ५ अर्थ सागतील त्यावरून कळो येईल. तरी चितावर धरून गावगना चिटया केल्या असतील त्या मना करान्या व लस्करांत ताकीद करून जिराईत जोरीबाजरी कोणी कापून न नेत येसी गोष्टी करून मुलकाचें संरक्षण होय कोठे अजार न लागे ते केले पाहिजे. अपला अमचा ब्रेह आहे म्हणून लिहिले असें. रा छ * ७ जिल्हेज. वहुत काये लिहिणे हे विनंती. अमचा मुलूक खराब जालियाने अपणासही समाधान आहे येसे कांही नाही.

जागीर तुमचीच आहे आणि सर्वस्वें आपले श्रेहाची जोडी आहे तरी चिती धरून मुलकाचे संरक्षण केले पाहिजे. कृपा असो दीजे मी हे विनंती.



लेखांक [२५६]

श्रीश्रीशकर गगा

[अक्टूबर १७५२]

पुरवणी राजश्री जयाजी सिंदे गोलावी यांसी.

विनंती उपरी. नवाब गाजदीखान बाहादर फेरोजजंग याचे इनायेतनामे आम्हास आले व त्याकडील मातबर मनुष्य मीर शमशुदीखान आम्हांस न्यायवा आले आहेत त्यावरून आम्ही आपली तयारी केली आहे. कूच करून त्याजकडे जावें लागतें. त्यासी आपण आपले हदीत श्री उतरोन आमच्या मुलकांत येउन मोकाम केल. राजश्री बालाजीपंडित मधान हेही आपले मेटीस येणार. अजध्या फोजेचा जमाव गंगातिरी जाल्यावर मग आमच्या मुलकाचा बचाव होतो येसे काही नाही. अर्धीच पलीकडील तिरीचे गांव उठले. अता अलीकडे मोकाम जाल्याने अगदी मुलकाचा सस्मानास होतो. त्यासी आपला व आमचा काही दुसरा अर्थ नाही. आमची जागीर ते आपली आहे याजकरितां लिहिले आहे. तरी हें गोष्टी चिचांत अणून लस्करचे मोकाम आमचे जागिरीत न होये ते तेथून कूच होउन दुसरे प्रगणियाकडे त्वरित जाणे जाल्याने आमचा मुलुक काही वाचेल. तरी आपण खामखा हे गोष्टी चिती धरून केली पाहिजे. आपला आमचा स्नेह आहे यास्तव लिहिले असे. जे उचित श्रेहास ते आपण करितील हा भरवसा आहे. बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२५७]

श्री

[११ अक्टूबर १७५३]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळोबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक गंगाधर येशवंत [चंद्रचूड] सा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहित जावे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावोन बुतात कळू आला. राजश्री माहारावजीनी पैका झाडून दिव्हिया उतम आहे. इंदुरीहून कूच होउन दरमजल येत आसेत. राजश्री [जयाजी] आपासाहेबही देसीहून निघाले. सत्वरच येतील. * बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [२५८] श्री * संवत् १८११ चैत्र शुद्ध ११
[३ अप्रेल १७५४]

विनंती. ३०० छ * ९ जाखर प्रातःकाल सुखरूप असो विशेष. काल पत्रे लीआ आहेत त्यात एकदा लिहिले की सरकारचे पत्र पा म्हाणोन लीआ मग लिहिले की पत्र पाठविले नाही. त्यास हाली सरकारचे पत्र पा आहे. कळले पाहिजे. हे विनंती.

लेखांक [२५९] श्री * संवत् १८११ चैत्र वद्य १
[८ अप्रेल १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
रामाजीपंत धाउ स्वामीचे सेवेसी.

पो गणेश कृष्ण [पेंडसे] सां नमस्कार विनंती. येथील कुशल ता छ * १४ जाखर जाणून स्वकीये लिहित जावे विशेष. राजश्री बाबुराव गणेश याविसी आपणांजवळ पुणेयास असता मजकूर चाकरीचा केलाच होता हे आपणांसही ठाउक आहेतच. हाली आपणांकडे आले आहेत. चाकरीचे कामचे आहेत. या योग्य धदा सांगावा. हेही विनंती करणें ते करितील. आम्हासही अगल्य आहे. बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२६०] श्री * संवत् १८११ वैशाख शुद्ध १३
[४ मे १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
रामाजीपंत स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य जनार्दन बळाल [भानु] ३०० सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता छ * १० रजब जाणून स्वकीये लिहित गेलें पाहिजे विशेष. आलीकडे तुम्हांकडून पत्र

(१४८) या पत्राचा लेखक गणेश कृष्ण पेंडसे आहे. [पिद २४ ले. १४९] तो भानुकडील कारकून असून राधोबाच्या पहिल्या स्वारीत उत्तरेकडे होता. त्याची अनेक पत्रे या भागात आली असून कार्स ले. १२२ चा लेखक ह्याच पेंडसे होय. विद्यमान पांडुरंग कागिनाथ पेंडसे एडव्होकेट हे या घराण्यातील वसज असून त्यांच्याकडे तपास करितां कागदपत्र नसल्याचे समजले.

(१४९) याचे उपनाम भानु. याचा 'भाऊ बाळाजी भट पेणव्यावरोवर मजमुनिसवतीने फड-गिरी लिहिण्याचे प्रयोजन होते ते दिल्लीस गेले तेव्हां युद्धप्रसंग जाला ते समयी अक्षमा लागीन बालाजी महादेव मृत्यु पावले' [इस २१ पान १७४] तेव्हांपासून हे घराणे विशेष उदय पावले. नाना फडणीस याचाच मुलगा होय

येउन वर्तमान कलत नाही, तरी सर्वद पत्र पाठउन कुशल वृत्त लेहून संतोपवीत जाणें. यानंतर राजश्री लक्ष्मणपंत^{१०} वैद्य यांस पाठउन धाव्याविसी सांगितलें होते त्यावर्षान गारनिलेस तुम्हाकडे पाठविले आहेत. हे येथील सविस्तर वर्तमान सांगतील त्यावर्षान कळें येईल. राा त्रिंबकपंत दिवेंकर तुमचे हाती दिले आहेत त्याचा परामृप तुम्हीं सर्व प्रकारे घेतच आहा परंतु लेकर आहे. अद्यापर्यंत कोठे स्वारीशिकारी केली नाही व परदेगांत गेलें नाहीत. नूतन अनभ्यस्त आहे याजकरितां लिहिले असे. बहुत काये लिहिणें कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२६१]

श्री * संवत् १८११ आषाढ शुद्ध ६
[२१ जून १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पोा त्रिंबकराउ सिवदेव [धोडेकर] माा नमस्कार विनती उपरी. येथील कुशल ताा छ * २९ सावान मुकाम कस्वे आगर जाणून स्वकीये कुशल लिहित गेले पाहिजे विशेष. बहुत दिवस पत्र येउन संतोषावाप्तीस न पाविले. येसे न पाहिजे. निरंतर पत्री कुशलार्थ लिहित जावा. तीर्थस्वरूप राा रंगराउआपा कैलासवासी जाते. ईश्वरास मान्य जाले, त्यासी कोणाचा उपाये नाही. पूर्वीपासोन तीर्थरूप आवा कैलासवासी याचे ठाई मायाममता होती त्याजप्राच आपा कैलासवासी याचे ठाई लोभास कृपेस स्वामीनी आतर न केले. उमयेता कैलासवासीप्राा ममता चालवावी. कोट्याचे सर मजमुचे दुसाला वेतन येक हजार रूपये राा मगवतराउ थाजपासी प्रविष्ट केलेच आसल. सर्व भरोसा आपला आहे. येथेल सालदरसाल रूपये ५०० पांचसेप्राा राा केसो आनंत सुनेलकर याजपासी प्रविष्ट करीत जावा. आम्ही श्रीमंताची [गधोत्रा] आज्ञा कुंभेरीहून घेउन देसास चालिलो. येथून उदईक कूच करून जाउ. ' बहुत काय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

(१५०) याचे पूर्ण नाव लक्ष्मण केशव वैद्य असे अमून तो भानूच्या प्रजस्तीमुळें या वेळी दामोलकराकडे आला अर्थात ही उपराळ्याची योजना नेमणूक नव्हे हे उघड होय या वैद्य घराण्याचा सवध जो या वेळी जुळून आला तो पुढे दामोलकराणी ५० वर्षे राहिला निघासववी वराच साठ होता तो नि शेष झाला असे समजते अस्तु या पत्राची मिति सक्षयित आहे ती मागेही जाळ शकेल .

लेखांक [२६२]

श्रीगजानन * संवत १८११ आषाढ शुद्ध १०

[२९ जून १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
रामाजीपंतभाउ स्वामीचे सेवेसी.

पो वालाजी जनार्दन [भानु]^{१५१} सां नमस्कार विनंती. येथील क्षेम ता
छ* ७ रमजानपावेतो सुखरूप असो विशेष. तुह्याकडून पत्र येउन वर्तमान कळत नाही तर
असे न करावे. सदैव पत्र पाठवीत गेले पाहिजे. तुमचे घरची सर्व मनुष्ये सुखरूप आहेत.
काही चिंता न करावी. तिकडील नवलविशेष वर्तमान लिहित गेलें पाहिजे. ईकडील
वर्तमान तर तीर्थरूप राजश्री दावानी लिहिले आहे त्यावरून कळो येईल. बहुत काये
लिहिणे कृपालोभ असो दीजे हे विनंती.

† राजश्री त्रिवक्पंत [दिवेकर या]स सां नमस्कार विनंती. तुह्याकडील
वर्तमान कळत नाही तरी असे न करावे. सदैव पत्र पाठवीत गेलें पाहिजे. बहुत काये
लिहिणे हे विनंती.

† सेवेसी माहादाजी नारायण कुंटे सां नमस्कार. कृपा करीत असावे हे विज्ञासी.

लेखांक [२६३]

श्री * संवत १८११ आषाढ वद्य ६

[१० जुलै १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

गणेशपंत [पेंडसे] स्वामीचे सेवेसी:

पो जनार्दन बळाल [भानु] सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल
ता छ* ४ जिल्कादपावेतो क्षेम जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत गेलें पो विशेष.
तुह्या छ १८ रमजानच पत्र पो ते पावले. लिहिलें कीं यदा छावणीं येथें जाली
पुढे दुसरी छावणीं कोठे होईल ते पाहावीं झणोन लीं कळले. मेटीचा लाम लौकर
व्हावयाचा असिला तरी दुसरें छावणींस येथेंच पाळ. यांत ईश्वरीसतेने घडेल ते खरें.

(१५१) याचे पूर्ण नाव वालाजी जनार्दन भानु. हे संबंध पत्र त्याचे स्वदस्तुरचे असून कालक्रम
पहाता हे त्याचें पहिले पत्र म्हटले तरी चालेल. 'पधरावे वर्षी पित्याचा काल जाला सेवाधर्म-चालावा
या योगे कर्नाटक प्रांती श्रीरंगपटणपर्यंत गेलो' असा उपक्रम तो आपल्या आत्मचरित्रांत देतो. [काळ
ले. १९२] पण १७५६च्या आरंभी तो 'कोकण पहावयास' व पुल्याचे गणपतीचें दर्शनसंस्कारांसमा-
गम' होता असे पुढें स्वतःच सांगतो. [लि. ३३८]

तुम्ही आपले शरीराची जतन चागली करीत जाणे, बरचेबर सविस्तर वर्तमान लेहून पाठवीत जाणें. तुमचें घरची सुखरूप आहेत. काहीं चिंता न करणें, छ २० रजवचे १ राजश्री शंकराजीपंत भागवत यानबरोबर तुम्ही पत्र पाठविलें होते तेंही पावळें. लिहिलें वृत्त कळलें, जेष्ठ वद्य २ द्वितियेचे पत्र पो। तेही छ २ जिल्कादी पावले, लिहिलें वृत्त सविस्तर कळलें. यंदा कर्जपटी सरकारची फार भारी सर्वांवर जाहाली आहे. त्यामध्ये आम्हा उभयतावर फार भारी आली आहे. आमची इमारत सर्व तुम्हावर आहे. तर यं गोस्टीचा विचार जो करणे असेल तो-करा । राजश्री रामाजीपत [दाभोलकर] यांस लेहून पाठवावयाचे असिले तर लेहून पाठवणें. घरी मातुश्रीस पत्रें पो। ती पावती केली. उतरे घेउन पाठविली आहेत त्यावरून कलेल. बहुत काय लिहिणे लोम असों दीजे हे विनंती.

राजश्री माहादाजीपंत व बाबुराव व मल्हारपंत स्वामीस सां। नमस्कार. पत्रे पो। ती पावली. वृत्त सविस्तर कळलें. असेंच सदैव संतोषवीत जाणे. बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

सेवेसी माहादाजी नारायण कुंटे सां। नमस्कार विनंती. आपण पत्री संतोषविता तेणेकरून बहुत उत्साह होतो. असेंच पत्री दर्शन देत असावे. घरची सर्व सुखरूप आहेत. कळले पो। हे विनंती.

मातुश्री आयांचे आसिर्वाद उपरी. तुम्ही पत्रें पाठविता ते सर्व पावतात. असेंच पत्र पा। जाणे. हे आसिर्वाद.

लेखांक [२६५]

श्री * संवत् १८११ श्रावण वद्य ३
[६ अगस्ट १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतमाळ स्वामीचे शेवेमी.

पोष्य गोविंद बलाळ [बुंदेले] १५२ कृतानेक सां। नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता। भाद्रपद १ वद्य त्रितिया शु। नजीक सनोराबाद जाणून स्वकीयें लिहित असिलें पाहिजे विशेष, आम्हीं इकडे आल्यावर सविस्तर वर्तमान लिहून मुजरद दोन जोडी आपणाकडे

(१५२)-याचे सपूर्ण नाव गोविंद बलाळ खेर. मात्र या उपनामाचा लोप होऊन इतिहासात बुंदेले या नावानेच तो प्रसिद्ध होता. त्याचे कारण असे की बुंदेलखंडाची त्याचा आजन्म सबब राहिली 'गोविंद बलाळ विमत, पताजीपंत' असा त्याचा पहिला उल्लेख सापडतो. [पिढ २२ ले. ३८] अर्थात अग्रेल १७२९ पूर्वीच तो या भागात कर्माविष करू लागला होता असे निश्चित होते. 'गोविंद बलाळ

रवाना केली आणि निराली पत्रे लिहून राा गणेशपंताकडे दिलीस पाठविलीं तीं पावलींच असलील. उतर आले नाहीं. त्यास निकडील साधंत वर्तमान लिहावे. इटायेस पठाणांचे ठाणे होतें ते उठउन लाविलें. सरकारी ठाणे बसविलें. पासुकोगबादेमवे गढीबद जमिदार मवासी सुरलीत आमल देणे त्यांस ठाउका नाहीं. त्यांस मोर्चे लाउन दोनतीन गढी घेतली. वरकडाचेंही पारपत्य करीत आहों. ग्वाळियेरच्या किल्यास राा विठलराव सिवदेउ [विचुरकर] यानी मोर्चे लाविले. पडकोटासी लडाई होत होती. यांजबरोबर ःक्षणी फौज थोडकी. ईकडील जमिदारी मीर जमा करुन मोर्चे लाविले होते. पडकोटाचा दरबाजा बंद केला. लोकही किल्यांतील गडबडलेसे जाले. किलेदागने अनुसंधान गोहदवाला राणा भीमसिंग याजकडे टाउन किला त्यास धावयाचा कन्नूल केला. त्याजकडील हजार बंदूख आली. जमिदार सर्व येक मोर्च्यास. चोक्या जमिदाराच्याच होत्या. त्याचे मेदाने हजार बंदूख पडकोटांत दाखल जाली. किला वलकांवला. तो दुसरे दिवसी पाच हजार प्यादा व हजार बंदूख घेउन भीमसिंग येउन जबरदस्तीने यांचे मोर्चे उघडून आपण किल्यात दाखल जाला. किला भीमसिंगाने घेतला. तमाम मीर जमा करीत आहे. जमिदार ग्वाळियेर नरवर वीरे सर्व भीमसिंगाकडे सामिल जाले. ग्वाळियेरच्या जागियांत कजिया कराव याचा विचार आहे. राा विठलराव यानी मदत^{३१३} करावी फौज पाठवावी हणून दिल्लीस श्रीमंतास लिहिलें आहे. कितिक फौज येईल ते पाहावें. जे वर्तमान होईल ते आपणांस लिहित जाउ. तिकडे आपण गेलियावर वर्तमान जालें असेल ते साधंत लिहिले पाहिजे. आहे ते वर्तमान त लिहिले आहे. १ वरचेवर होत जाईल ते लिहित जाउन.

सोरीठ सकतपुर सिवली खेवराबोर येथील पैसा वसुलाचा आह्वास साल मजकुरी कोणी देत नाहीं. आह्मी च्यारसा रोजानी परगणेयात जातो. वसूल त्याजकडे काय आला तो साधंत हिसेव पाठवितो. बडूत काये लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री लक्ष्मणपंत [बंध] व राा चितोपंत [वळे] स्वामीस साा नमस्कार. लोभ असो दीजे हे विनंती.

पूर्वी बुदेलखडचे स्वारीस स्वामीसमागमें होता व हली आम्हासमागमेही बाकिफ जाला होता' असे चिमणाजी मठ सागतो [पेद १४ ले ८] या सुमाराची दोन पत्रेही त्याची उपलब्ध होतात. [पेद १७ ले १११ पेद ३० ले. १४] तथापि यापेक्षा विशेष विसवणीय असे साधन प्रस्तुत भागात प्राप्त झाले आहे. 'तीस वर्षे चाकरी केली. ती सर्व पाणियात जाईल' असा लेख गोविंदपताचा १७५५चा आहे. [ले. ३२९] तेव्हा त्याचा उदयकाल १७२५ असा अध्यानेच प्रतीत होतो.

(१५३) याचे मूळ उपनाम दाणी असें होय परंतु कागदोपत्री विचुरकर.या नावानेच ख्याति आहे. विचुरकरांच्या इतिहासात याचा उदयकाल १७१५ असा दिला असून १७२० साली पेशव्यांच्या

शिवांक [२८५]

श्री

• संवत् १८११ श्रावण वद्य ६

[१ अगस्ट १७५४]

विनंती. क्र० १०. सवालपावेतो सुखरूप असो विशेष. तुळाकडून पत्र येउन कुशल वर्तमान कळत नाही तर सविस्तर लिहावे. किमनगड घेतल्याचे वर्तमान मल्हार-शाही वानगीचे आणे व माचकारी लिहिले आले त्यावरून कळते. येथील वर्तमान ले आण रोच आते. कौन्टलेखार जाटाचे स्थायीन जाले. याठपरी रूपरामापासून पैका घेतील. सारांग आपणाकडोण कुशल वर्तमान लिहावे णणजे मनोप होईल. कृपा केली पाठिजे हे विनंती. समस्त मंडळीस नमस्कार.

श्रीवांक [२९६]

श्री

[अगस्ट १७५४]

राजश्रियाचिराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपत स्वागीचें सेवेसीं.

पोष्य जनार्दन वनाळ [भानु] सा नमस्कार विनती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकिये लिहिन गेठें पाठिजे विंशेण आल्लकडें तुमचे पत्र येउन वर्तमान कळत नाही. तरी सविस्तर लेहून पाठवावे. मारवाडांत तुमी गेलियावर येक पत्र आले होते. त्यास तिकडील कारभार कोणे प्रकारे विह्हे लाविला. टाणी कोणकोणती घेतली. खडणी काये केली. वसूळ आला की नाही हे सविस्तर लिहून पाठवणें. तुमच्या घरची समस्त

तैनातीस गेल्यानें म्हुंजें जाहे [पान ५, ७] तैनातीचे उरील निघान चुकीचें असून खरे वर्ष १७२४ अलावे अन्ना लेती जाधार सांनटतो आनी हाही निठळपडाचाच हेंन. 'वालीस घयें येण जागा वाडलो' असें. गोगडराय पदवर्षनात त्यानें लिहिलें आहे. [पदे २ ले. ४९१] इतरप्रमाणे त्यानेंही आपला उदयकाल दाखविला आहे. अर्थात हाच काल तैनातीचा समजला पाहिजे इतकेच मध्हे तर पद ३९ ले. १५८ हे निठळरानाचें पत्र दाखलें म्हुंजें त्याचा तयेंप पेशव्याशी शिंदेंदोळरपानंतरचा ठरतो. 'सर्वेन सारखे हे वेक जापुयें घाटते. बरकड मजकूर तर दोघे सरदार वेगळे कटन आनी मरणात जायवा निष्टेस कोपास घोट मागू वेणार नाही' हे वाक्य मननीय होय सोवत्याच्या उदयाविषयी जें विवेचन आम्ही केले आहे त्याची साक्ष हे विचुरकराचें पत्र देते अस्तु. हा १७५४ तील कुंभेरीच्या स्वारीत अनून तेपून तो ग्याल्लेरीकडे आला [पद २७ ले ८१] तेव्हां त्याचा नीमसिय घाट गोगडरायाशी दियाज हीजल मुळ जुपले त्याने रायोवास रुहाम्याची याचकन केली असता [पद २ ले ४५] 'कितिक फौज येदुंर ते पदावे' हे वाक्य राधेदाच्या कामचा उरक व मैन्याची उणीव दाखविते अस्तु. पद २ ले ४०. पद २७ ले ९५, ९८, ९९, १००, १०२ हीं विचुरकराची पर्व १७५७ तील आहेत.

सुखरूप आहेत । काही चिंता न करणें. वरचेवर पत्रें पाठउन संतोषवीत जाणें. बहूत काये लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री लक्ष्मणपंत [वैद्य] व घाडुराव लिमये स्वामीस सां नमस्कार. तुम्ही दोंन पत्रें पाठविलीं ती पावलीं. असेंच सदैव संतोषवीत जाणें. तुमचे घरची समस्त सुखरूप आहेत. काही चिंता न करणें. हे विनंती.

राजश्री त्रिबकपंत दिवेकर यास नमस्कार. पत्रें पावली. वर्तमान सविस्तर कळले. राजश्री रामाजीपंतभाळ याचे आज्ञेप्रमाणे वर्तणूक करीत जाणे. घरी काही खर्चास पाठउन देणे. तुमचे बंधु व मनुष्ये समस्त सुखरूप आहेत. काही चिंता न करणे. हे विनंती.

१ विनंती पोष्य वापुजी बळाल [फडके] सां नमस्कार विनंती. कृपा करीत आसाचे. पदरचे आहो. कृपा करावी. हे विनंती.

लेखांक [२६७]

श्री * संवत् १८११ भाद्रपद शुद्ध ७
[२४ अगस्ट १७५४]

चिरजीव राजश्री रामांपंजीपत यांसि प्रती विसाजी दादाजी [आठवले]^{११४}
आसिर्वाद उपरी. येथील कुशल ता भाद्रपद * शुभ सतप्ती मो पुणे जाणून तुम्ही आपणा-
कडील कुशल वर्तमान लिहित गेले पाहिजे विशेष. बहूत दिवस तुम्हाकडून पत्र येउन
वर्तमान कळत नव्हते त्यास ह्याली आषाढ वद्य ७चे पत्र आले त्यावरून साकल्य वर्तमान
कळलें. पुढें मारवाड प्रांते गेलियावरी साकल्य वर्तमान लेहून पाठवणे. वरकड गत वर्षी
तुम्हास आकुलनेरचे वर्तमान श्रावणमासी लिहिले होते त्याचा मजकूर ह्याली लिहिला
तो कळला. चिरंजीव राजश्री आपाजीपंतान्च्ये कमाविसीचा तपसीलवार मजकूर लिहिला
तोही कळला. 'येशास त्यास चौथाई लाउन कडून कमाविस होती तिचा मळता तुमच्या

(१५४) याचे सपूर्ण नाव विसाजी दादाजी आठवले [पिद ३९ ले १६९] वामोलकरवधूस
'चिरजीव' असे लिहिलो अर्थात तो त्याचा आप्त होता हे निर्विवाद होय नाते मात्र कळत नाही.
या पुरुषाचा सुगावा १७३३पासून लागतो [पिद ३ ले १०३ खड ६ ले ८४] १७३६च्या स्वारीत
तो पेशव्यासमार्गमें उत्तरेकडे असला पाहिजे. [पिद १५ ले ६७] १७४६त बाजीराव पेशव्यांची पत्नी
यानैस गेली तिच्यावरुबर तो होता [पिद १८ ले १४१] १७५५च्या आरंभी 'पुण्यास कारमारी
प्रस्तुत विसाजीपंतदादा आहेत असे फडके सांगतो. [ले २९५] मानपतानवरही तो जिवत होता. अशी
नोटक माहिती त्याची मिळते.

कामधिसदारांनी करून घेतला. त्याचकडे काही सना नाहीसी जालियावरी ज्या घरात आपा राहतात होते ते घरात घेतले. त्यावरी हाली दुसरी जागा गावांत नेमून दिली आहे. घर बांधायची आनकूलना पटिले तरी तेथे आकुळनेरीच राहतील. नाही तरी दुसरे जागा काढून राहतील. त्यांम सागून अगतां. गावकरी कडुल न घरीतसे जाले मग तुमचाही उपाय काय. जागिरीची कामास आपाकडे न जातो म्हणून काही आमच्या चितान दृष्टी विचार नाही. तुम्ही स्वारीतून आलियावरी भेटीनंतर साकून्य वर्तमान लिहित जाणे. चिरंजीव हम्बाजी [दामोदकर] व मुन्नाणसे सर्व सुखरूप आहेत. बहुत काये लिहिणे लोभ असो दीजे । हं आसिर्षोद.

राजश्री लक्ष्मणपंनास [धंघ] नमस्कार. लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखक [२६८]

श्री * संवत् १८११ भाद्रपद शुद्ध ९
[२६ अगस्ट १७५४]

राजधियाविराजित राजमान्य राजश्री
गमाजीपंतभाळ स्वामीचे सेवेसी.

पो गोंविंद बलाल [युंदेले] कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता भाद्रपद * शुध नवमी जाणून स्वकीये कुंगट लिहित असिले पाहिजे विशेष. बहुत दिवस जाहाले आपणाकडील पत्र येउन कुशल घृत कपट नाही. तरी सवै पत्री संतोपवीन असावे. रांगडे लोक मनमाने तेशा तिकडील खत्री उठवितात यास्तव सांप्रत वर्तमान जाले असेल तें लिहिले पाहिजे. इकडील वर्तमान तर सा विठ्ठराव सिवदेठ [विचुरकर] यानी ग्वालेरच्या किल्यास मोर्चे लाविले होते. किलेदाराने गोहदवाला राणा भीमसिंग याचकडे सल्लू करून किल्ला भीमसिंगास दिल्ला. हजार स्यार व पांच हजार प्याटिया-नसी भीमसिंग येउन यांचे मोर्चे उधळून किल्यावर दाखल जाला. यांजकडील माणसे बहुत मारली गेली. त्यावर हे निघोन आंतरीस गेले. फौजेकरिता श्रीमंत सा दादा स्वामीस लिहिले आहे. फौज जाईल तेव्हा उपराळ होणे ते होईल. आम्ही सकुगवादेस येउन पठाणाचे ठाणे इटायेस होते तें उठउन सरकारी ठाणे [बसचून] बंदोस्त करीत आहों. अग्हास वातमी आहे जे भैरतेयासी फौज जाउन लागली. विजेसिंग मेढत्यात आहे. त्यास जे वर्तमान होत जाईल ते लिहित जावे. दूर देश आहे याजकरिता सविस्तर लिहिले. विजेसिंग कोठे आहे. फौज त्याजपासी किती आहे. आपले लस्कर कोठे आहे ते

लिहिले पाहिजे. राजे रामसिंग याजपासी किती फौज जमा झाली. राणाजीकडील कोणी फौज आली न आली हे साबत लिहिले पाहिजे. इकडील वर्तमान होत जाईल ते लिहित जाउन. श्रीमंत राजश्री नानास्वामी व श्रीमंत राा माउस्वामी पुणेयांत आले. श्रीमंत राा माउस्वामी नासिकी आले होते कुशावर्ता गोसावी पनास हजार मिलेन मोठे जुज व्हावे. त्यास श्रीमंत राा माउस्वामीनी येउन गिरी मारथी याचा कजिया होता याजकरिता येउन उभये पक्षी सख्ख करुन दिव्हा. जुज होउ दिले नाहीं. स्नान करुन दक्षणेस पुणेयासी जावयासी गेले. वरकड वर्तमान उतमच आहे. राा महादजीपंत बाबा पुरधरे सासवडी आहेत. राा धोडोबा निराले निघाले. नानाही निराले जाले. त्याचे घरात फूट जाली. प्रस्तुत ते आपले घरचे कलाहात आहेत. देवासा वैद यासी पत्र लिहिले आहे त्याजला x x वे. त्याचे घरची सुखरुप आहेत. राजेश्री [जयाजी] आपासाहेबाचे शरीराची भावना कसी काय आहे तेही लिहिणे. बहुत काय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती. कुशल वर्तमानाचे पत्र श्रीमंत राा दादास्वामीचे स्वारी आल्यावर राा गणेशपंताजवळ म्हणजे आम्हास पावेळ. इटावे येथे पठाण होते त्यासही कोणीकोणी बावली दिली जे उठून न जाणे. कायम राहाणे. तीन हजार प्यादे रोहीले वगैरे दोन हजार फौज व महमूदखान आसे होते. आमची बदनक्षी व्हावी असे तमासा पाहात होते परंतु श्रीमंत स्वामीचे व राा [जयाजी] आपाचे कृपेने कार्य जाले. पठाणस घेरुन दबाउन कहा विले आणि सलूखही राखिला. याप्रमाणे जाले. पुढे वर्तमान होत जाईल ते लिहित जाईन. आम्ही येथील पंधरा रोजात कामकाज बंदोबस्ती करुन पुणेयाकडे जावयाचे करुन. बहुत काय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

वेदमूर्त राजेश्री जोसीबावास नमस्कार. लोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री लक्ष्मणपंत [वैद्य] धाशुराव [लिमये] समस्त मंडळीस साां नमस्कार.

लेखांक [२६९]

श्री

[सितंबर १७५४]

राजभ्रियारिाजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंत स्वामी गोसावी यांसि.

पोा सखाराम मगवंत [वोकीळ] साष्टांग नमस्कार विनंती उपरी. येथून कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहिते असिले पाहिजे विशेष. आपण दोनतीन पत्रे पाठविलीं ते पावली लिहिला अर्थ सविस्तर अवगत जाहाळा. येथील अर्थ सविस्तर श्रीमताही

लिहिले आहे त्याजवशन कालो येइल. हांली छ २६ जिल्कादी सनवारी तुमचे व बिजेसिंगाचें युध्य जाचे. बिजेसिंगास तुह्मीं मोडिलेत. हती तोफखाना घेतळत बिजेसिंग पळोन गेल येसे वृत जयपुरीहून लिहिलें आलें परंतु तुह्मीं लिहिले नाहीं. येसे न करावे. हमेशा फ्रें पाठवीत जाईं. ' येथे नाना प्रकारचे वर्तमान येउन रात्रदिवस कालजी वाहावी ऐसे अस्तता अजरदार करुन वर्तमान कसे न लिहिले. परस्पर जयेनगरोहून साठ आली तेव्हा कळले व दुसरीही लिहिली आली. येविसी आपल्या येजमानाचे तोडात साखर^{११} घालण, बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनती.

लेखांक [२७०]

श्री

[सितवर १७५४]

राजश्रियाचिराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपत स्वामी गोसावी यासि.

पोध्य सुखाराप भगवत [बोकीळ] सां नमस्कार विनती उपरी. येथील कुशळ जाणून स्वकीये लिहिले पाहिजे विशय. बिजेसिंग मोडिलेत फन केळीत हे हषाचि वर्तमान तुह्मीं न लिहिले. येथे कितेक प्रकारच्या वार्ता पहिले उटन होता याजकारितां तुम्हाकडील रात्रदिवस चिंता वाहात होतो येस असोन अजुरदार कासिदजोडी तच्चीं पाठवावयासी अनकळ न पडले. आपूर्व आहे. याउपरी युध्यप्रसंग जाल्याचे वृत जखमी जायां कोणकोण हे सविस्तर लिहिले पाहिजे. ' बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनती.

(१५५) 'जयापाचे मनात विषम फारसे येउन स्वतंत्र मोहीम करुन राठोडाची लढाईस गेले होईल प्रसंग तो कलेल. बहुतेक कललाच आहे' असे होलकरपक्षीय हिंयाण्याचे अनुमान होते [पिद २१ ले. ६०] तसाच गोविंदपत बुदेत्यास सशय होता [ले २६८] इतकेच नव्हे तर पेशव्यासदेखील भाति होती [ले ४९] राधोबा तर होलकराचे सहवासातच यामुळे त्याला निराशा वाटली तर नवल काय [ले. ४२] 'जन्मादारान्य मल्हारराव याचे जुगातून निचालो मल्हाररावाचे इरिने दातनिसकीस येउन सिंदे याणी फते केली आणि मल्हारराव याजपासून निचालियाचे सार्थक जाले' हे बखरीचे वर्णन किती भागिक आहे हे वाचकास कळेल 'तुम्हाकडे यद्य मिळाले ये गोष्टीचे असाह्य उजवे बापूस फार जाले त्यामध्ये पुरुषोत्तमपत मुनसी याचे तो सर्वस्व गेले त्याप्रमाणेच दादासाहेबी फते वाच- विली. रायसिंग रडत बसला' [ले २७१] 'आपासाहेबाची फते जालियामुळे सर्वांस दबा भारी नमला आहे [ले २८२] 'सोबतियास फार भारी जाले असेल' [ले २८३] 'श्रीमी व्हावयाचे त्याम थम आहेतच' [ले २७८] यावरून बखरीची सरणी किती श्लाघ्य होय हे स्पष्ट होते तेव्हा बोकिळाने 'तोडात साखर घालण्याचे' श्रेय का सपादू नये [ले २७६, २७७]

लेखांक [२७१]

श्री * संवत् १८११ आश्विन शुद्ध ८
[२४ सितवर १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाट स्वामीचे सेवेची.

पो गणेश कृष्ण [पेंडसे] सां नमस्कार विनंती.छ* ६ जिल्हेजपावेतो मुखरूप असो विशेष. गंगोवातात्या [चंद्रचूड] व दामोदर महादेव [हिंगणे] वकील छ ५ जिःहेजी आले. दाहा लक्षाची टीप जीवनदासाकडे जाली आहे. कांही शाळा व मोहरा पहिले वसूल पांच सहा आहेत तेसुधा कागदो पंचविसाचा भरणा करितात परंतु अद्याप हस्तगत नाही. गाजदी खानाने अड वातला आहे की तुम्हीं पैका घेउन देशास जाल. मागे जाट दिल्लीस येउन वसेल ये गोष्टीचा बंदोबस्त करून देणे मग पैका हातास येईल. ऐसा अटकाव जाहाल आहे. फिरोन गंगोवातात्या व वकील काल दिल्लीस संध्याकाली गेले. दसरिया येतील. ते वर्तमान वास्तविक कळल्यावर लेहून पाठउन. तुम्हाकडे यश मिळाले ये गोष्टीचे असाह्य उज्व^{१६} बाजूस फार जाले. त्यामध्ये पुरातमपत [हिंगणे] मुनसी^{१७} यांचे तो सर्वस्व गेलेसे जाले ते पत्री लिहिता येतच नाही परंतु थोडेसे लिहितो. जे साली नानावर छपा सळाबतजंगाचा पडला ते वर्तमान तुम्हाकडे कुमाउचे पाहाळांत आले ते तुम्हीं गोप्य करून नानाची फते जाली म्हणोन हतीवर साखरा वाटल्या त्याप्रोच येथे जयायापाचा लौकिक व्हावा म्हणोन दादासाहेबी फते वाजविली ऐसे आहे म्हणोन मुंनसी बोलतात. याप्रो वर्तमान आहे. इतक्यात रायेसिंगाचे लिला आले की बिजेसिंग मोढला त्यावरून रायेसिंग रडत वसला आहे. सविस्तर वर्तमान कळावे म्हणोन लिला असे. बहुत काय लिहिणे कृपा केली पाहिजे हे विनंती.

(१५६) 'जडभरत बोवला अजामीळ' [अच ले २९८, २९९] याप्रमाणेच 'उजवी बाजू किवा उजवा नेत्र' ही सार्वत्रिक सज्ञा होलकराची होती [कास ले १९२] याची उत्पत्ती अशी दिसते-की मालव्याची वाटणी होऊन मुतालकी शिद्याकडे आली तेव्हा स्नेहांत परस्पर अंतर पडू नये म्हणून ती एकटयानेच न चालविना त्यात होलकरास अधिकारी मानून भगवान्नेडघाण्या उजवे बाजूस चालण्याचा व तल देण्याचा मान होलकरास दिला आणि शिद्याने डावी बाजू स्वीकारली असली पाहिजे [पिव २९ ले १७६] त्याचे हे शब्द द्योतक असून प्रचारात झाले यालाच पुढें 'जेष्टत्व' असे नानोभिधान प्राप्त झाले [इस १४ ले ११]

(१५७) पुरुषोत्तम महादेव हिंगणे. पेद २१ ले. ६० चां लेखक हाच असून त्याचें बरील विवेचन 'किचित' विचक्षण दृष्टीनेच पहाणे या पत्रामुळें चालू पडते. अस्तु. मार्च १७८२पर्यंत दिल्लीस हा पेशव्याकडून वकिलीवर होता. [पदवा १ ले. ४७, ५०]

लेखांक [२७२]

श्री * संवत् १८११ आश्विन शुद्ध १३
[२९ सितंबर १७५४]

विनंती उपरी. पहिली मामलत ठहरल्यावर व रुपयांचे वसुलास दिरंग लागल्यावर मधे किंचित संशये वाढला होता तो दूर करावयास छ * ११ जिल्हेची बजीर मल्हारबाचे डेव्यास आला. जाटाकडील फौज व लोक जमा होउन पळवळ प्रगणियाचे ठाणे बजिराचे होते ते मारुन आपले ठाणे कायम केले व वालमगड आमचे फौजेचे मुकामीहून पांच कोस तेथे जाटाचे लोकांनी मोर्चे लाविले यतन्दिशईचा रड बहुत गायला. उपरांतिक त्याचे भाषण जालियावर उभयता श्रीमताचे डेव्यात आले. येथेही तोच प्रकार बोलिला की तुम्हीं चौ कोसावर जवळ असतां जाटाने या प्रकारे करावे ऐसे नाही. तस्मात तुम्हींच त्यास सांगून आमचे ठाण्यास उपद्रव करविला तर ऐसे न करावे. आमचा पक्ष पहिल्यापासून अंगिकारला तो सिधीस न्यावा. पैकियास चार रोज आगेंमाणें जाले तर रुपया आमचे घरात आसोन दिव्हा नाही [असें तों नव्हे] हे सर्व जनास विदित आहे. कावादावा करुन देणे लागला यास चार रज लागले तर कौलही घडलाच ऐसे नाही. लोक ज्यात तुम्हास पुतें xx करा ऐसे म्हणत ते तुम्हीं करा. याप्रमाणे मृद भाषण केले व लौकिक फाज तयार करुन पाठवावी. निदान आपण जावे ऐसा आरंभ केला तेव्हां ज्वालुदीखान व वकील रुपयांचा मजकूर बोलो लागले तेव्हां बाकीचे रुपये राहिले ते आठाचा रोजात निरचये बावेसा करार करुन पुन्हा नवीन परस्पर कौलकार लेहून बेलभंडार केला. पूर्वे करार यानी व त्यानीं मिलोन केला आहे तो चितापासून चालवावा. ये गोष्टीची आणशपथ जाली. तूर्त जाटाचे लोकांनी उपद्रव न लावावा म्हणून रुपयाम वकील जाटाकडील त्यास युक्तीने सांगितले की आम्हीं दिल्लीवर आसता तुमचा उपद्रव न लागवा. याप्रमाणे इकडील थाबउन बाकीचे [दोन] लक्षाचे निशापत्रीसाठी गंगोवातात्या व वकील [दिल्ली] शहरात गेले आहेत. त्यास पाचसात रोज जाळें. पुढे पाहावे. सारांश रुपयाचा वसूल सुधा दिसत नाही. खानखाना याजकडील सूत मल्हारबाकडे आले व त्यानी बजाउन त्यास आस्वासन दिले की तुम्हास आम्हीं लाहोरची सुभेदारी देवउन तेथे पावते करुन. दहा लक्ष रुपये बावेसा करार ठहरला आहे. मल्हारबाचे विचारे श्रीमंत देशास चालल्यावर आपण माने^{२१८} राहून कांही कामें करावी याप्रमाणें मनसबा आहे. पुढे घडोन येईल ते

(१५८) हे पत्र अत्यंत महत्त्वाचे आहे. 'मल्हारबाचे विचारे श्रीमंत देशास चालल्यावर आपण मार्गें दिल्लीस राहून कार्यभाग करावा याप्रमाणे मनसबा आहे श्रीमताचे चितात मल्हारबास देशास वेउन जावे आणि मकारपूर्वकाचे चितात तो देशाग जावयाचे नाहीच' हे शब्द पानिपतची श्लाथीव

खरे. ' मल्हारबाचे मते श्रीमंतास देशास छाउन घावे. आपण दिल्लीस राहून कार्यमाग करावा. श्रीमंताचे चिंतात मल्हारबास घेउन देशास चैत्रमासी जावें. मकारपूर्वकाचे चिंतात तो देशास जावयाचे नाहीच, याप्रो बर्तमान आहे. सारास दिल्लीचा पैका सातवाठ लाख आजता वसूल आहे. टीपा हातास आल्या आहेत. वाडे चहु महिन्याच आहेत. घडेल ते प्रमाण. दिल्लीचे पैक्याची वाट जाल्याखेरीज कूच होत नाही. कळले पाहिजे हे विनंती.

लेखांक [२७३]

श्री * संवत १८११ आश्विन शुद्ध १५

[१ अक्टूबर १७५४]

चिरजीव राजश्री रामाजीपंत यासी विसाजी दादाजी [आठवले] आसिर्वाद उपरी. यथील कुशल ता आश्विन * शुभ पुर्णिमा मुा पुणे सुखरुप असों विशेष. प्रस्तुत तुम्हाकडील बर्तमान कळत नाही तरी सविस्तर लिहिणे जाणें. सविस्तर अर्थ चिरंजीव हरीपंती लिहिला आहे त्यावरून कळेल. ' प्रस्तुत तुमची छावणी मारवाड प्रांते कोणे ठिकाणी जाली आहे पुढे काये मनसबा आहे ते साकल्य लिहिणे पाहिजे. बहुत काय लिहिणें लोभ असो दीजे हे आसिर्वाद

राजेश्री लक्ष्मणपतास नमस्कार. तुमची मनुष्ये सुखरुप आहेत. लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२७४]

श्री * संवत १८११ आश्विन वद्य ४

[५ अक्टूबर १७५४]

चिरजीव राजश्री रामाजीपंत यांसि प्रती विसाजी दादाजी [आठवले] आसिर्वाद उपरी. येथील कुशल ता आश्विन * वद्य चतुर्थी मुा पुणे सुखरुप असो विशेष. तुम्ही आषाढमासचे येक पत्र पाठविले व आषाढमासचे पत्र व माद्रपदमासचे पत्र पाठविले ते पावले. साकल्य बर्तमान कळेल प्रस्तुत तुम्ही मारवाड प्रांते गेला आहा येश्यास

भीमासा करणाऱ्या सशोधकानी अवलोकन करावेत. शिंदेहोलकरात परस्पर कलुशता वाढली तरी अहमदन्याचे ज्येष्ठ दोषासमोर सारखेंच होते. [पेढ २१ ले. ४९, ५४] सरदाराचा चढ न होऊ देतां उभयतावर उपर रहावा म्हणून राधोबाचा कोडणा गळघात पडला त्याचे हे दृष्य असून १७५७तीला अबदालीची स्वारी यशस्वी कशी झाली याचे दर्म ओळखू येते. वजीर 'पस्ट बोलतो की सर्वस्व आउन पातशाहीची अन्न गेली. [मराठे] याणी येउन साहे करावे ते न जाले. सर्वास बुडालो. बेहुरमत जालो'. [पेढ २७ ले. १७०] हे शिवशिष्यांच्या शुक्नीतीर्चे नगारे वाजले तर वावर्णे काय झाले ?

तिकडीळ ठाणीटुणी कोणती घेतली. पुढे कोणत्या प्रातास जाणार हे सविस्तर लिहिले पाहिजे. ईकडीळ वर्तमान तरी उभयता श्रीमत प्रस्तुत येथेच आहेत. दिपवाली जालियावरी कोणीकडे जावयाचे ते जातीळ. घरची मुलेमाणसें तुमची सुखरूप आहेत. वरकड साकत्य वर्तमान चिरजीव राा हुरीपंतानी लिहिले आहे त्यावरून कलेळ. बहुत काये लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

राजश्री लक्ष्मणपंतास [वैद्य] नमस्कार. लोभ असो दीजे हे आसिर्वाद.

लेखांक [२७५]

श्री * सवत १८११ आश्विन वद्य ५
[६ अक्टुबर १७५४]

विनती. रामचंद्रबावा [सुखठणकर] आश्विन * वद्य पंचमीस मृत्यु पावले. हे वर्तमान कललेच असेल. फार वाईट जाहले. वासुदेव जोसी अश्विन शुध राष्टीस वारले. रामचंद्रबावाची बायको सयागमन केले. समागमे गेली. कलळ पाहिजे. † हे विनती. † मनसब्याचा चिवडा जाळ [तो] पत्री कोठवर लिहावा. आपण जाणतच आहेत. † हे विनंती.

लेखांक [२७६]

श्री

[अक्टुबर १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजधी
रामाजीपत स्वामीचे शेवेसी.

पोष्य - सुखाराम मगवंत [बोकीः] सा नमस्कार विनती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहित असिले पाहिजे विशेष. येथील वृत्त श्रीमंती राजश्री जयाजी आपा यांसी लिहिले आहे त्यावरून अवगत होईल. † ईकडीळ वर्तमान तरी अबापि दिल्लीच्या रुपयाची वाट जाली नाही. रुपरामाकडीळ ऐवज येणार आहे. तर्त येवजाची बोडच आहे. लोकांचे समजाविसीचा प्रसंग आहे. येवज आल्या तर्त लोकांस धावयास पाहिजे. आल्याउपरी देठ. तुहीं याउपरी मारवाड्याचा निकाल काढावयाचें होत असिले तरी करून मोकळे व्हावें. दुराग्रहाखाली घालून लाववावे [तरी] न कले कोणता प्रकार होईल. काही मनोदयानरूप होउन आल्यास फार बोदू नये. त्याहीमध्ये जसे दिसेल तसे करावे. वरचेवरी वर्तमान लिहित जावे. बहुत काय लिहिणें लोभ असो दीजे हे विनती.

लेखांक [२७७]

श्री

[अक्टूबर १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंत स्वामीचे सेवेसी.

पो। सुखाराम भगवंत [बोकील] सां। नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहिते असिले पाहिजे विशेष. आपण पत्र पाठविले प्रविष्ट जालें. राजश्री दत्ताजी सिंदे याच्या जखमा नव्या जाहल्या पाणी घेतल्याचे वर्तमान लिहिले तें अवंगत जालें. बिजेसिंगानी पेगाम सल्लुखाचा केळ आहे तथ्य होईल ते लेहून पाठउन म्हणून लिहिलें तें कळले. आशास त्याचे तुमचे भाषण कसकसे जाहलें. तथ्यांत आले किंवा नाही हे सविस्तर लिहिणें ! उचित असें. साराष या प्रसंगी निकाल साधारण होत असल्यास बहुत खंबवावेसे नाही. त्याहीमध्ये तथील प्रसंगानरूप जे दिसेल ते कराल. बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२७८]

श्री

* संवत १८११ आश्विन वद्य ७

[८ अक्टूबर १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतमाळ स्वामीचे शेवेसी.

पोष्य गणेश कृष्ण [पेंडसे] सां। नमस्कार विनंती. येथील कुशल ताळ * २० जिल्हेज मुा खोजेयाची सराई यमुनातीर [समीप] दिळी सुखरूप असो विशेष आपण पत्र पाठविले ते पावले. बिजेसिंग मोडल्याचे वर्तमान लिहिले ते सविस्तर कळोन बहुतच हर्ष जाहाला तुमची पत्रे आल्यावर श्रीमत वारंवार बहुतच खुष आहेत. वरकड जे श्री व्हावयाचे खास श्रम आहेतच. ते सर्व आपणांस ठाउकच आहे. वरकड येथील वर्तमान नवविशेष लिहावेसे नाही पुण्यांत यंदा श्रीमंतानी कर्ज वारावयाचा मजकूर करून तमाम मुत्सदी लोकावर पटी घातली आहे. वरकड चाकरलोकां कारकून वगैरे तमाम याची तैनात व पाईप्यादे याचे दुमाही घ्यावे याप्रमाणे मजकूर केळ आहे येविसी श्रीमंत राजश्री [जनार्दन] बावानी आम्हांस पत्र लिहिले तेच बजिनस आपणांकडे पाा आहे खावरून कळेल. ! बहुत काय लिहिणे कृपा केली पाहिजे हे विनंती.

विनंती. आमचे उभयेता यजमानावर पटी पनास हजार घातली आहे. कळले पाहिजे हे विनंती.

लेखांक [२७९]

श्री संवत् * १८११ आश्विन वद्य ७
[८ अक्टूबर १७५४]

विनंती. आपणांस मागावे सरकारची फौज आहे त्याजकडे वार्षिकाचा येवज येणे त्याविसी पूर्वी आपणांस लिहिले आहे त्याप्रो आपण करितीलच. वाड्याकडील येवज उगवावा. स्मरणार्थ लिहिले आहे. कोणाकडे जुनी बाकी आहे जगदल्याकडे जुनी बाकी आहे ते मनास आणावी. लक्ष्मणपंताचे रुबरु जगदल्याचे कारकुना सी करुन दिली होती त्याप्रो मनास आणावे. कृपा केली पाहिजे हे विनंती. आम्हांस श्रीमंत बाबानी लिहिले आहे की यंदा कर्जपटी आम्हावर पंनास हजार घातली आहे त्यास रामाजीपंत व तुम्हीं तिकडे हा अर्थ ध्यानात अमे देणें म्हणोन ला. त्यास सिलेदाराकडील वार्षिक आहे ते आम्हीं मनास आणू. दिळीतील कारभार व ज्ञाटाकडील व जयनगरचा पैसा प्राप्त होणे ते कलतच आहे आपण प्रसंगी असते तर काही होउन येते. असो उदेपुरचा मजकूर आपण मजला मागे सांगितलाच होता तो आपण करुन घेणे तो घेतीलच. स्वमानसिंग^{१११} विष्णुपंत [गदरे] तिकडे आले आहेत. त्यास आपण स्मरणपूर्वक सागोन जे करणे ते करावे. आम्हीं खासगत काम नासिकास हजार दोन हजार रुपया × × चे लाविळ होते. त्यास पाचसहापावेतो जाईलसे दिसते. परिणाम लावणार आपण आहेत. आधी काम करु नये. आता आरंभले त्याचा सेवट लावणे आपणांस आहे. बहुत काय ला कृपा केली पाहिजे हे विनंती. पत्र फाडुन टाकावे.

लेखांक [२८०]

श्री संवत् * १८११ आश्विन वद्य ७
[८ अक्टूबर १७५४]

विनंती. कर्जपटीच्या^{११०} यादी पुण्याहून आल्या आहेत. त्यामधे तुम्हावर पटी पंचवीस हजार व गंगोबातात्यावर येक लाख व राधो लक्ष्मण दहा हजार. रामाजी यादव पंचवीस हजार हुजरातचे कारकून दफतर वगरे निमे तैनात याप्रो पटी आहे. आपणांस कळावे म्हणोन ला असे. १ हे विनंती.

(१५९) हा मेवाडकराचा वकील असून त्याच्या मध्यस्थीने २५ लक्षाचा नजराणा विधानी करार केला होता [वाड ३ ले २२९] ही रकम जमस धरून कर्जाचा विचार केला पाहिजे. पहा ले १०२ टीप ६१

(१६०) कर्जपटीचा विस्तार पहावा [ले २६३, २७८, २७९] वाड ३ ले ४८८ ते ४९६ ही पत्रे यासबबीच होत. वज्रयोगिनीच्या देवाल्याची दुसरी पटी याच वर्षी झाली [वाड ३ ले ५०८, ५११ पेद ३२ ले १६६]

लेखांक [२८१]

श्री * संवत् १८११ आश्विन वद्य १३
[१४ अक्टूबर १७५४]

पुरवणी राजश्री रामाजीपंतभाउ स्वामीचे शेवेसी.

विनती उपरी. पहिली पत्रे लाखोटा अलाहिदा आहे त्यावरून कळेल. छ * २६
जिल्हेजी आज पत्र हे लिहिले आहे. नवलविशेष मजकूर तर गाजुदीखानाकडील पैक्याचा
निकाल सत्वर न होये याकरिता खानखानाकडील राजकारण उभे करून दौलतराव
मुरार व सूराम कटारे त्या अनुमंत्रानात आहेत. दौलतराव दिश्रीत गेले आहेत. हे
वर्तमान गाजुदीखानास कळले त्यावरून तो खटा आहे. याचे वेळमंडार तुम्हीं गेल्यावर
दोनचार वेळा जाळ. त्याचेही प्रमाण नाही. सत्यान बाटले.^{२६} टीपा दहात्रारा लक्षाच्या
चार महिन्याचे मुदतीच्या आल्या आहेत. त्यासही हिंसका बेसेरसे दिसते. पुढे काये
होईल ते पाहाने. संपूरअश्रीवांन मेळा. त्याचे वर्तमान आले आहे. मंनसवे जागाजागा
घाटनात. परिणाम आविनीळ तो खरा. सविस्तर श्रीमंतानी आगास लिहिले आहे त्यावरून
कळेल. येथे पैसा अद्यान काही येत नाही. सातआठपाचेतो आला आहे तोच आहे
दुसरा रुपया नाही. कळले पाहिजे. वहुन काय लिहिणे लोम असो दीजे ! हे विनती.

लेखांक [२८२]

श्री * संवत् १८११ कार्तिक शुद्ध ३
[१८ अक्टूबर १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाउ स्वामीचे शेवेसी.

पो। गणेश कृष्ण [पेंडसे] सां नमस्कार विनती उपरी. येथील कुण्डल ता
छ * १ मोहरमपावेतो यथास्थित असे विशेष. सांप्रत आपणाकडून पत्र येउन वर्तमान
कळत नाही. तर सविस्तर लिहावे. येथील मजकूर तर गाजुदीखानाकडून पैक्यास दिरंग
लागल्या म्हणोन खानखानासी सूत्र आविलें तो मजकूर पूर्वी आपणांस लिा आहे.
हाली खानखाना व गाजुदीखान येक होउन पातशाही आंमखासांत पातशाहाजवळ

(१९१) हे पत्र अत्यंत महत्वाचे आहे. 'बेलमंडार दोनचार वेळा जाळे. त्याचेही प्रमाण नाही.
सत्यास बाटले'. हे राधोबाच्या करणीचे कौतुक पहावे 'येथीलही प्रमाण काय आहे. येथील अवि-
वेकीच कारभार आहे'. [लि २९८] 'कारभारचे तिरपडेंच आहे. हे करितात ते त्याचे मनास येत
नाही यैशा घालमेली नित्य नव्या होतात. [लि २८५] सुदैवाने हा फडणिसीकडील पुरावा होय.
अवातर पक्षपाती म्हणूनच प्रतिष्ठा पावता 'उभयता सरदाराचा बहुत भरोसा. त्यांत जयापाचा तर
विशेष होता. [खंड ६ ले ५४५] याची बखरीची तुळना करून वाचकानीच निर्णय करावा.

भेटी छ ? मोहरमी होणार. गुंता राहिला नाही. द्वायंत्राव मुरार जंत्रात^{१६१} गेले आहेत. ते व जे जे या कर्मात होते ते सहजच उगेच राहिले. गाजदीखानाचेही वित्तत विपर्यास यावयाचा तो सहजच आला. टीपा दाहाबारा लक्षाच्या आल्या आहेत. त्याच्याही मुद्रनी आहेत. पैका हातास यावयास दिरंगच आहे. सातआठ लाख आजतागाईत वसूल आहे. स्रंठाणीची टीप साडेचार लाखाची चांगली आहे ते गंगोत्रातात्यानी घेतली. त्यापकी कांही वसूल आला आहे. कांही येणे ते त्याजकडेच येतील. ते टीप [राघोबा] मागतत परंतु तात्या टीप देत नाही यावरून खावंदाची मर्जी दिक आहे. मनसूरअलीखान मेळ. हे वर्तमान येताच गेहिले पठाण व मनसूरअलीखानाचे पुत्रास पत्रे रोा केळी आहेत. अंतरेवेदीत उतरावयाचे मानस आहे. मज्हारवा आपली फौज पलीकडे उतरावयास लागले. पुढे काये होईल ते लेहून पाठउ. आपणाकडील सविस्तर लिहावे. राजश्री [जयाजी] आपासाहेबाची फत्ते जालियामुळे सर्वास दबा मारी वसला आहे. कोणी फार बोलों सकत नाही. बडत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

¶ सेवक मासवराव नारायण पाटणकर साा नमस्कार. पदरीचे असो हे विनंती.

¶ सेवेसी महादाजी केशव साा नमस्कार. लोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२८३]

श्री *संवत १८११ कार्तिक शुद्ध १४

[१० अक्टूबर १७५४]

राजभियांविराजित राजमान्य राजश्री

गामाजीपंत स्वामीचे सेवेसी.

पोा जनादिन बलाल [मानु] साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ * १३ मोहरमपावेतोा क्षेम जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत गेलें पोा विशेष. तुम्ही पत्र पोा तें पावलें. राजश्री जयाजी सिंदे व विजेसिंग मारवाडकर यांचे युध्य तुंबल जाहले परंतु राजश्री जयाजीआपा सिंदे यांस इशरें यश दिल्लें म्हणोन तपसीलवार पत्र लेहून पाठविलें तें पावोन बडत संतोष जाहाला. येसेच निरंतर सविस्तर वर्तमान [नवल आ.]लेऊ ते लेहून पाठवीत गेलें पोा. तुमचे घरची सर्व मनुष्ये सुखरूप आहेत.

(१६२) जयपुरकर सवाई जयसिंगाने दिल्लीस वेधशाला निर्माण केली त्यास 'जयमंत्र' म्हण-
ण्याचा इकडे परिपाठ आहे. त्याचाच हा निवेस असून हिंगणे वकील जन्नाबबळब रहात होते अचे
निष्पन्न होतें.

काही चिंता न करावी. जो खाव्दाचे पायांसी येकनिष्ठतेनें वर्ततो त्यास ईश्वर महदयश देतो. ही कीर्ती व लौकिक लहान जाहाल्य ऐसें नाही. मोठे यश ईश्वरें दिल्ले. स्वपरा-
क्रमाचा लौकिक व शिपाइगिरीची [शर्त] व सरदारपणाचा लौकिक मोठासा जाहाल्य. सोबति-
यास फार मारी जाहाले असेल. बहुत काये लिहिणे कुत्रालोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री लक्ष्मणपंत [वैद्य] स्वामीस सां नमस्कार विनंती उपरी. तुमची घरची
मनुष्ये समस्त सुखरूप आहेत. काही चिंता न करणे. बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [२८४]

श्री * संवत १८११ मार्गशीर्ष शुद्ध १३
[२७ नवंबर १७५४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाठ स्वामीचें सेवेसी.

गणेश कृष्ण [पेंडसे] सां नमस्कार विनंती. येथील कुशल तां छ * १२
सफर गुा वारपुळ [नजीक] दिल्ली जाणोन स्वकीये लेखन केले पाहिजे विशेष. आपण
छ २७ मोहरमचे पत्र पाठविले ते पावोन बहुत संतोष जाहाल्य. लिहिलें वर्तमान कल्लें.
याचप्रमाणें सदैव पत्रद्वारें कुशल वर्तमान लिहून पाठविले पाहिजे. येथील वर्तमान तर
राजश्री मल्हारबा रुसोन कूच करुन गेले हे पेशजी ल्याच होते. कूच करुन गेलियावर
फिरोन समजाविसी करुन आणिले. त्यांणी खानखानाकडील राजकारण केले होते तेच
करार कावसे केले. छ ३ सफरी येकत्र जाले. गावातून खानखाना तयार होउन मेटीस
आले. येथून श्रीमंत [राघोबा] फौजसुधा तयार होउन मल्हारबा आधींकरुन सर्व पुढे
गेले. मेटी जाहाल्या. श्रीमंत व मल्हारबा व खानखाना येक हतीवर बसोन डेच्याम
आले. खानखानाने भोजन केले. बस्ते दिल्ली, हती दिल्ली. मल्हारबाकडे गेले. तेथे
बस्ते हती वगैरे दिल्ले. तेच रात्री शहरांत गेले. पैक्याची निशा त्याणे करावी. बजिरीचे खिलत
याणी आणून दावे. याप्रमाणे करार केला. शहरांत गेलियावर गाजुदीखानाने सागोन पाठविले
कीं पातशाही चाकर आसिल्य तर मेटीस येणे. नाहीं तर मराठे याजकडे जाणें व शहरची
किल्याची बदोस्तती केली. तलबी लोकांचे समाधान केले. थोडेबहुत खर्चास दिल्ले.
त्यावरुन खानखानाने आपणांवर हल्य करितो म्हणोन मय मानून रात्री डोळीत बसोन
येकदा जत्रात बकिलांचे घरास आला. तेव्हां बकिलानी आपल्या घोडयावर बसउन मल्हार-
बाकडे लष्करात दा.मोदरपंत [हिंणणे] घेउन आले. खानखाना मेटल्या म्हणोन गाजुदीखान

याची वृत्त पालटणी नाही. व्याप्रमाणे पहिला होना त्याप्रमाणे यान्वे हेना. झुहरांत व्हावळ करणे तो केला. खानखाना पगेत अग्लियाक यंस विचार पहिला. सर्वत्र येक होउन खळन जाले. खानखानाचा अमिमान फार व्यर्षी छरिला तो व्यर्षे गेलां. फार खटे ईकरे केने, सेवट पहिला मनसबा गाजरीखनाकंडीक वदिलेच गुजार्गीने जाला होना तोच करा काग।सां काळा. खानखानाम लाबोर मुळतानची नुमेदारी व कठीन जगिग देवळ्या याप्रमाणे केने. खानखानाचा आठ होना तो व्यर्षे गेच मुदाड नामुद होउन त्याचें व येगीळ गृहस्ताची फजिती जाली. गाजरीखनावर दबव होना तोही गेळ. याप्रमाणे जाले. पहिला मनसबा सेवटसु आला आहे. वरील सरकारकायरीस तथा अहून. श्रीमंतची कृपा आहे. मन्हारबा वकिलावर शर्ती अहंत काटा दिव्हांत निकाल होउन कूच व्हावेमे आहे. घडेल ते प्रनाग. जहून काय डिहिणे कृपा केळी पाहिजे हे विनंती.

लेखांक [२८५]

श्री

* संवत् १८११ पौष शुद्ध ७

[२१ दिसेंबर १७५४]

विनंती. येगीळ वर्गमान तां छ * ६ गावळपवेतो यथास्थित असे. खानखाना अद्याय मन्हारबाजवळच आहेत. त्यास सनजावयांनी सममानदौला व वरील मल्हारबाकडे आले आहेत. त्यास येकदोहो दिवसी देयून झुहरांत नेतीळ. गाजरीखाना कडील करानदार जाला आहे तोच आहे. टीयाचा बगेर अथाय वमूल आला नाही. या उपरी खानखाना झुहरांत गेल्यावर सरकारचे कामकाजाचा निकाल होउन गडमुके-कराकडे जाणार. मन्हारबा अद्याय यमुना दक्षिणतिरी आहेत. सरकारची फाज उतरतिरी आहे. कारनाराचे तिरपडेच आहे. हे करितात ते त्याचे मनास पंत नाहीं. ते करितात ते यांचे मनास येत नाही वैदा घालनेली दररोज निल्य नव्या होतात. ते यरी केठवर ल्याहावे. खानखाना गेल्यावर काये होईल ते लेहून पाठउ. कृपा केळी पाहिजे हे विनंती.

लेखांक [२८६]

श्री

* संवत् १८११ पौष शुद्ध ७

[२१ दिसेंबर १७५४]

राजक्रियाविरहित राजमान्य राजश्री

-राजाजीपंतभाळ स्वामीचे सेवेसी.

पोता गणेश कृष्ण [पेंढसे] सांग वनस्कार विनंती उपरी. येवुंळ कुमळता छ * ६ गावळ मुगा नजीक पटनदगंज यमुना उतरतीर जापून स्वकीये लिहिते सेडे पाहिले विवेच्य माने आरण पत्र पाः ते पावोन सुचित्तर वर्तमान कळजे. सांग्रद पत्र येउन

कुशल वर्तमान कलत नाही. तर सविस्तर लिहावे. शरीरी समाधान आठव्या रोज नव्हते परंतु साप्रत आरोग्य आहे ह्मणोन लािा ते कळले. तुमचे शरीर वातवध आहे याकारिता थंडीचे दिवसात औषध घेउन शरीराची जतन करावी. पुणेयाकडील पत्रे आपणास येतच असतील. पुणेयास सर्व सुखरुप आहेत. पत्रे आली होती. कळले पाहिजे. दिकडील नवलविशेष तर जे आहे तेच आहे. बहून काये लािा कृपा केली पाहिजे हे विनती.

राजश्री दावाचे पुत्राचे [नाना फडणीसांचे] पत्र तुम्हास आले ते पोा आहे. हे विनंती.

लेखांक [२८७]

श्री

[जनवरी १७५५]

राजश्रियाधिराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाउ स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य सखाराम भगवत [वकील] कृनानेक सां नमस्कार विनती उपरी. यथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत असिलें पाहिजे विशेष. आपणाकडून पत्र येउन वर्तमान कलत नाही तरी सविस्तर लिह वें. इकडील वर्तमान सविस्तर राजश्री [जयाजी] आपास लिहिलें आहे ते ध्यानात आणून उतर समर्पक पाठवावें तदनरुपच अमलात येईल. सारांष दिवस गेले. अतःपर जे उतम दिसेल ते करावें. श्रीमंतर गंगेहून स्नान करून येत तो पंधरा दिवस लागतील. उतर आपलें लौकर आले पाहिजे. आपल्या साहित्यास येउन कोणेही प्रकारें तूर्न निकाल काढावा असे असले तरी सत्वर लिहावे. येथून चार मजली तुमचे शाहावरी आल्याने निकाल पढत आसिला तर तसेंच लिहावे. जो विचार आपचे ध्यानात असेल तोच लिहावा. त्याप्रोच होईल. सारास फार लावणीवरी न पडावें. माघमासात गुंता उरकावा हे उतम आहे. उतर लौकर पाठवावें. बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती. ^{१६३}

राा रामरावजी नमस्कार विनंती.

प्रो छ २९ रावल

[१३ जनवरी १७५५]

(१६३) पत्रात मित्तीन लिहिण्याची खोड सखारामपत वकील व गंगोबा चव्चूड या उभयपुत्र सारखीच होती. तेव्हां त्याची पत्रे पेवस्तीवर किंवा अनुमानावरच विसंबून रहावयाची.

लेखांक [२८८]

श्रीशंकर

* संवत् १८११ माघ शुद्ध ४

[१६ जनवरी १७५५]

श्रियासह चिंरंजीव राजश्री लाळाजीस याञ्जाजी यशवंत [गुळगुणे] आशिर्वाद. गा माघ * शुध ४ गुरुवार श्रीपुष्कराङ्गून ग्ना अजमेर जाणोन स्वकीय लेखन करणे विशेष. कासिद लस्करात्त कूच करून आला. तेथून लिहून सविस्तर पा ते पावलेच असेल. रा उधोपंत व सदाराम यास पाटणास रावना केले होते. [ते] गेलेच आसतील. आम्ही कूचदरकूच येतो. आठ रोज वाटेस लागतील. कळचे पाहिजे. हे आशिर्वाद. सेवक नारायण येशवंत नमस्कार विनंती. ला परिस्नोन कृपालोभ असो दोजे हे विनंती.

लेखांक [२८९]

श्री

* संवत् १८११ माघ शुद्ध ८

[२० जनवरी १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंत स्वामीचें सेवेसी.

पोष्ये सुखाराम भगवंत [बोकीळ] कृतानक सां नमस्कार विनंती उपरी. यथील कुशळ जाणून स्वकीयें कुशळ लेखन केलें पाहिजे विशेष. आपण पत्र व पंचवीस हजाराची हुंडी पाठविली ते श्रीमंताकडे रावना केली. आमचे पत्र पावळें. दुर्त सालजाव उटला आहे. ठाणी इकडील लुप्ततात हा प्रकार कठिणच आहे. सविस्तर राजश्री [जयाजी] आपाचे पत्नी लिहिले आहे ते पाहून त्याचा मनोदये यथास्थित लेहून पाठवावा. जयनगरचा कारभार बरावाईट विल्हे लाउन [दे]उन तह जालियावरी त्याचा मुळक राखिला पाहिजे यास्तव मार्ग जयनगर डावे टाकून साबरेवरुनच वाट चमलीकडे जावयास करार जाली आहे. श्रीमताही सत्त्वीच येतील. मुख्य गोष्ट आपास येथें ठेउन श्रीमंतानी जावें हे आमचे चिंतात येत नाही त्याहीमध्यें श्रीमतर व सुबदार मिलोन ग्वाल्हेरीचे रोखे रा विठळपंताचे [विंचुरकर] साहित्यास गेलियाने याचे काम खासखा होते असे असले तरी तोही प्रकार आपण त्यांस पुसना. सारांश ज्या प्रकारें करून मातबर सरदार पैचातून निघेत ते जहर केले पाहिजे. हेही पत्र आपल्या यजमानास दाखउन ज्यात दुरामह होउन गोष्ट नासेसे सहसा न करावें. हे उचित आहे. कासिद अजुरदार करून उतर पाठवावें. आपले उतर आल्याखेरीज कोणीयक विचार येथें होणार नाही. अती त्वरेने उतर पाठवावें. बहूत काये लिहिणें लोभ असो दोजे हे विनंती.

पो छ ७ राखर. संन खमस.

[२१ जनवरी १७५५]

लेखांक [२२०]

श्री * संवत् १८११ माघ शुद्ध ९

[२२ जनवरी १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाउ स्वामी वडिलांचे साो.

पोा मनोहर बगाजी सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ *
 ९ राखार सुा प्रगणे अहार श्रीमागिरीथीतीर येथास्थित जाणून स्वानंद लेखन करावें.
 यानंतर बहुत दिवस कृपा पत्र येउन परामर्ष न जाला. तरी ऐसें न करावें. सदैव पत्रव्दारा
 सांमाळ होत असावा विशेष. दिल्लीचे कार्यमागाचा निकाळ महाप्रयासे होउन राजश्री
 सुभेदार व राजश्री सखारामपंत [बोकीळ] जयनगरचे रोखें गेलें व श्रीमंत खासा स्वारीनलीं
 गंगास्नानास म्हणून श्री गणामुक्तेस्वर क्षेत्रास आले. समागमें राजश्री गंगाधर येशवंत
 [चंद्रचूड] आले आहेत. येथे रोहिल्याची मागीळ बाकी सादे सोळा व दीड दहाईकी
 राहिली होती. त्यात येदा साहा लक्ष ध्यावें. पुढे दरसाल सा. येणेप्रमाणे कारारमदार ठहरला.
 सामर्थ्ये तीन नसत. हुंडिया आल्यावर बाकी दों महिन्यानी येणार. निशांन्त्री जाली. बरेडी
 वगैरे माहाळ खालशाचे त्याजवर गाजदीखानाने पंधरा लक्षाची तनखा दिली. ते रुपये तीन
 वर्षांनंतर पांचसाला करून घावे ऐसे कबूल केले. याप्रोा ठहराव होउन गंगातीरेच खासा
 स्वारी मुकाम मजकुरावर आली आहे. पुढे जाटाकडील तीन किस्ता तीन लक्ष रुपये येणें
 तेथील गुंता उरकून खानखाना भेटल्यामुळ व लाहोरास त्यासमागने फौज [उ]भेदाराची
 बात होती यामुळें वजिगने काही रुपये × × ×
 खानखाना वजिरास भेटला. परस्पर त्याचा सलू × × [फौज सु]भेदाराची
 बहुधा भाषारें गेडी असेल. त्या ऐवजाचा गुंता वजिराकडून उरकून श्रीपंत व
 सुभेदार येक होउन त्या प्रांत येणार. आपणांकडील निर्गम श्रीकृपेकरून जाला असिला
 तरी उत्तम. नाहीं तर तेथील कार्यमागाचाही गुंता आपले विचारे उरकावा व देशास जावें
 ऐसा मनसुबियाचा डौल प्रस्तुत काळात दिसतो. बहुतेक आपण तिकडील गुंता उरकावाच
 व संतोषपर वर्तमान लिहावे कीं सर्वत्राचे समाधान आहे. बहुत काय लिहिणे खोम असो
 दीजे हे विनंती.

लेखांक [२९१]
१३५]

श्री

[जनवरी १९५५]

राजश्री जयाजी सिंदे गोसावी यांसी.

अद्वितीयश्रीआलंकृत राजमान्य श्री सुखागम भगवंत [त्रेकीळ] अतिवाह
विनंती उभरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये लिहित असिजे विनये. आपण पत्र पाठविले.
प्रविष्ट जाले. लिहिजे वृत्त अवगत जाले. आनास सांप्रत आपण कोठे आहेत विजेसिंगच
ईरादा काये आहे आपण मनसबा कैसा योजिला आहे हे वृत्त सविस्तर लिहिले पाहिजे.
येथील वृत्त श्रीमंती लिहिजे आहे त्याजवरून कसेल. ' सराना केवळ कुंभेरीप्रौ न गुनवे.
वहुत दिवसांच काम विचारें दमउन करावे. उतावळीनें लोक जाया होउन कार्य झुवे
होणार नाही. आम्हास सुचले ते लिहिले. नेथील प्रसंगानरूप आपण जे कार्ये ते
करितच आसतील. लोम आसो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२९२]

श्री

* संवन १८११ माघ शुद्ध १५

[२८ जनवरी १९५५]

राजश्रीयाविगजिन राजमान्य राजश्री

रामार्जुनपंतभाळ स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य गोविंद बळाल [बुंदेले] कृतानेक सां नदस्कार विनंती उभरी. येथील
कुशल ता मात्र * शुभ पौर्णिमा मुग कुण जाणून स्वकीये लिहित अतिले पाहिजे विनये.
ईकडाल वर्तमान नवाव वकाउलाखान^{३३} याजबळ चार हजार फौज व प्यादा पांचचार
हजार व तोफखाना आगाव वण जेजाले आपल्या सरंजामानसी कुण शहरच्या असागियाने
होता. आम्ही सडे फौजनसी कुन्याजबळ येउन त्यांसी रदबदल केली. सनदा दाखविल्या

(१६४) 'बकरलाखान' असाही अर्वांतर पाठ आहे परंतु आपच्या मगदंत 'बमालाखान'
असे स्पष्ट आहे ज्याची निघात दगा होण्यापूर्वीच गोविंदपंत बुंदेल्याने त्याचा मोठ केला होता.
[खंड ३ ले. १३७] अर्थात विमोडाचा माघ मालील मानून ही निति ठरविली आहे. या नानांत पंद
२७ ले. १२५, २१५ची तारीख चुकली आहे. 'बकरलाखान बुडविला. त्यास मरणा सरदार हें नर
करिता तर जमिनीवर न नाता'. [खंड ३ ले १३७] 'आम्ही गत वर्षी जुंजलो. कुणवर नेहणुन केनी
थय केला. पैला खर्चला पण खावदानी वूस न केळी'. [ले ३३०, ३३२] गचा अर्थ इतकाच नीं
'फौज वारमाही असावी'. [पिद २१ ले २६] 'अंतर्जापंत घोर सरदार. त्याची मातवर जाई'.
[पिद २७ ले १२०] तशी आपल्या पदरी असावी असा गोविंदपंताचा हेतू होता. या दर्जेच खंड
१ ले २४४ हें भाळसाहेबाचें पत्र होय.

परंतु मानीना. येक महिनाभर रोज उठोन जुजे होंत. निदान माघ सुघ त्रयोदसीचे दिवसीं तयार होउन मोगल आम्हावर चाळोन आला. जुजही उत्तम जालें. मोगलाकडील अडीचसें तीनसे माणूस ठार पडले आणि जखमी बहुत जालें. राा गंगाधर बाजीराव राा भानाजी पायेगुडे यांजकडीलही घोडीं पडलीं. माणसें पडलीं. जखमीही बहुत जाले. आम्हांकडील घोडीं पडली परंतु राा गंगाधर बाजीराव यांजकडील लोकानी बहुतच शर्थ केली. ते पत्नी लिहितां पुरवत नाही, त्यांचेंच काम आहे. मोगल लुटून पस्त केला. तोफखाना तमाम घेतला. सडे फौजेनसीं पळोन जिवानसीं गेलां. सारांश घण्ट्याचे प्रतापेंकरुन नक्ष उत्तम जाला. प्रस्तुत इकडील बंदोबस्त करीत आहों. तिकडील सांघत वर्तमान लिहावे. दिलीतील फितुरामुले आम्हांस भारी पडले. कुमेरीसारखे काम जाले. श्रीमंत स्वामीचे कृपेनेंच हे महद कार्य जाले, नक्ष जाला. तीस तोफा वगैरे छटीत आली. मोगल पळोन शभर स्वारानसी गेला. मुग्हाकडून पत्र दोन महिने न आले याजकरिता चिंता आहे. तर सांघत वर्तमान लिहावे. इकडील बंदोबस्त करीत आहो. मागाहून सांघत वर्तमान लिहून पाठउन. ' बहुत काय लिहिणे क्रांपालोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [२९३]

श्री!मोरया

१३२]

[जनवरी १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाउ स्वामीचे सेवेसी

सेवक गंगाधर येशवंत [चंद्रचूड] सां विनंती उपर. येथील कुशळ जाणून खकीये कुशळ लिहित आसावे विशेष, बहुत दिवस आपणाकडून पत्र येउन वृतात कळ येत नाहीं तर निरंतर पत्र पाठउन संतोषवृधी करावी. यानंतरे गंगास्नानास श्रीमंत [राधोबा]न्ना आम्ही आले. रोहिलियाची मामलत जाली. वसूल आला त्याची वाटणी होउन राजश्री आपासाहेबाचे वाटणीचा येवज श्रीमंतास विनंती करुन आपल्याकडे घेउन दिलीहून हुडी बालाजी सामराज यांजवर करुन पाठविली आहे. प्रविष्ट जालियाचे उतर पाठवावे. वरकळ वृत प्रस्तुत यमुनातिरास येउन मुकाम ग्वालरीच्या कामाकरिता आहे. सत्वरच श्रीमंताचे कूच करुन तिकडे येत असो. राजश्री सुबेदार सामरच्यां सुमारे आले आहेत. कागदपत्र येतजात आसतील. आपण प्रसंगी आहेत उत्तम ते करतील. आही सत्वर राजश्री सुबेदारापासी येत आसो. ' लोभाची वृधी करावी हे विनंती.

लेखांक [२९४]

श्री * संवत् १८११ माघ वद्य ५
[१ फरवरी १७५५]

श्रीमंत राजेश्री रामाजीपंतभाळ स्वामीचें सेवेसी.

विनंती पोष्य वापुजी बळाल [फडके] सां नमस्कार विनंती. येथील कुशल तां छ * १९ राखर मुा कृष्णातीर को यैनापुर येथस्थित असें विशेष. कर्णाटकाचें स्वारीस श्रीमंत राजेश्री महादोबाबाबा [पुरंदरे] गेले. आम्हाकडील बरोबर राजश्री नारोपंत पालंदे आणीख दोनतीन कारकून गेले. नारोपंतास आपतागीर दिल्हे. फौज मातबर गेली. पंचवीस हजार फौज चागली निवडक गेली. खासा स्वारीबां फौज अंतजाजी माणकेश्वर व पांडना संभसेरबहादर ही मातबर धरकळ लाहानमोठी पथकें दाहा हजार फौज राहिली. श्रीमंत कृष्णातिरी प्रस्तुत आहेत. भोगळ यादगिरीवर आहे. तो कोणीकडे जातां हे पाहून मग जिकडे जाणें तिकडे जातीळ. श्री त्रिंबकेश्वरचे यात्रेस जावें येसा विचार आहे. आपणां कळावें म्हणून लािा असें. आम्हीं आपलें आहों. कृपा निरंतर असो धावी हे विनंती.

राजेश्री लक्ष्मणपंतदाजी^{१६} [वैद्य] स्वामीस साा नमस्कार.

लेखांक [२९५]

श्री * संवत् १८११ फाल्गुन शुद्ध ६
[१७ फरवरी १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

गणेशपंतदादा [पेंडसे] स्वामीचे शेवेसी.

विनंती पोष वापुजी बळाल [फडके] कृतानेक सां नमस्कार विनंती. येथील वर्तमान तां छ * ५ जमादिलोवल मुकाम नजीक सांगोले. स्वामीचे कृपेंकरून यथास्थित असें विशेष. आपणं पत्र छ १० रावल दिल्लीच्या मुकामचे पत्र पाठविले ते पावले. गडमुक्तेश्वरास भगाश्नास जातो म्हणोन लिहिलें तें सविस्तर कळलें. इकडील वर्तमान तरी श्रीमंत राजेश्री महादोबाबावाची रवानगी कर्णाटक प्रांती जाली. माघ शुध येकादशीस मुडुतें करुन कृष्णातिरीहून यैनापुरच्या मुकामीहून गेले. समागमें फौज वीस

(१६५) दामोळकर वैद्य फडके व भानु या घराण्यात परस्परे गोतवळा होता वैद्याची मुलगी दामोळकरास. फडक्याची त्रैद्यास व भानूची फडक्यास दिली होती असे सांगतात परंतु हे नाते पत्री स्वचित्तच अढळते. फडक्याचे नाते वैद्याची काय असावे हे या पत्रामुळे मात्र स्पष्ट होऊ पहाते. [ले. ३३९] इतराचें कळेल तेव्हा खरे. परस्परे अगत्य होते हे उघड होय

पंचवीस हजार दिल्ली. मातबर पथकें बाबाचे [पुरंदरे] पथक व विसाजी बीनी त्रंबकराव सिवदेव [विंचुरकर] व त्रिंबकराव तुकदेंव जाचक करोळ वाडीकर गौली बोधे थोरात गोपाळराव गोविंद [पटवर्धन] रास्ते बरगें नारायणरावतात्या कदम मुजफरखान व तोफखाना वगैरें लाहानमोठी पथकें व सरलसकर व फुतेसिंगबाबाचें लोक भाहादाजी नां निवालकर आदी करुंन फौज देउन रवानगी केली. बराबर कारभारी रामाजी माणकेश्वर व त्रिंबक विनायक दिल्ले. मुदसंदीं रामजीबाबा चिटणीस अमृतराव शंकर [दिनकरराव] महिपतराव पोतनीस मजमदा[रा]चा कारकुंन नरसिंगराव पागा माधवराव तोफखाना गेले. आम्हाकडील राजश्री नारोपंतनाना व निलोपत व उभयना आगासे बंधु ऐसी गेले. नारोपंतास अफतागीर दिल्ले. याप्रो रवानगी जाली. श्रीमंत [महादोत्रा]बाबा गौकाकेस जाउन दोन दिवस मोर्च लाविल्लें. सेदोनसे माणूस जखमी जाले, पंनासपाउणसे माणूस ठार जालें. खावदाचे प्रतापें ठाणे घेतले. ठाणे फार चांगलें होते परंतु घेतले. पंनासपाउण लक्षाचा मुलुख आहे. सावनूरकर मोगळ याचे ठाणे घेतलें. ते [नारायणराव] तात्या घोरपडे याचे हवाली केले. तेथून कूच करुंन पातशापुरचे वारीनें पलीकडे कितुरकराचे मुलकात गेलें, तेथील खंडणी पनास हजार केली. पुढे सावनूरकराकडे जावे हा विचार आहे. श्रीमंताची आज्ञा आहे की सावनूरचा मोगळ गेला त्याचा लेक पटास बैसला आहे त्यास निमे मुलुक वाटून घ्यावा. ऐसी खावदाची आज्ञा आहे परंतु त्याचे विचारे जसा मनसबा होईल तसा करितील. येथील कामकाज उरकुंन विदरार हरपनहली वगरे संस्थानें गुदस्तांप्रो खंडावी येसी आज्ञा आहे. श्रीरंगपटणपर्यंत जावत नाहीं. वकील त्यांजकडे पाठविले आहेत. स्नेहाचे रीतीने जें होईल ते बरें. मोगळ यादगिरीवर आहे. फौज सर्व त्याची जमा जाली. जानवा [निवालकर] चंद्रसेन [जाधव] हनमतराव [निवालकर] वगैरे मराठे मोगळ जमा जाले. त्याचा मनोदये होता की आपली सर्व फौज जमा करुंन मुरारजी घोरपडें व पठान पालेगार सर्व मेळउंन श्रीमंतासी गाठ घालावी ऐसा विचार होता. त्यास मूसा बुसी समागमे होता. त्याचे खावदाचे पत्र आलें त्यावरुंन तो गेलां. दुसरा फिरगी सरदार आला आहे. मुरारजी येत नाहीं. पठान तसेच याप्रो मनसबा जाल्लियावर त्याची उमेद सहजच राहिली. मोगळाचा दुसरा विचार श्रीरंगपटणास जावे येसा होता तो राहिला. प्रस्तुत यादिगिरीवर आहे. त्याजमध्यें विशेष बल आहे ऐसे नाहीं. पुढे कोणीकडे जाईल ते पाहावें. श्रीमंताचा मुकाम यैनापुरावर होता त्यास बाबा [पुरंदरे] कर्णाटकात गेले आपण उगेच काये निमिल्ल बसावें मोगळाचा काही शह नाहीं हे जाणून कूच करुंन गगास्तानास जावे हे विचार करुंन सांगोळेपर्यंत आले. पुढें येकादो रोजी नरसीपुरास जाउन तेथून सिर्णेच्या

पाण्याने नगरावरून नासिकास जावें ऐसा मनसबा आहे. समागमे फौज समसेरबहादर पांडवा अंताजी माणकेश्वर व आईतवले कौरे दहाबारा हजार फौज आहे. नासिकास गेलियावर समसेरबहादर यास गुजराथ प्रात रवाना करावे. अंताजी माणकेश्वर हिंदुस्तानात पाठगवें. पाडवास कोंकण प्रांती परशराम क्षेत्री रवाना करावें. रामाजी माहादेव साष्टीहून जलमार्गे त्रिजयदुर्गास इंग्रज सामिल करूं जावें. वरून फौज पांडवा व इशम दिनकर माहादेव त्याजसमागमे देउन महिमतगडास जावें. तेथून भाणकर आपण मिलोन खुसकीने जावें आणि येळगार करावा. कितेक त्याजकडील भेद आले आहेत. हा नवा मनसबा प्रस्तुत सिध जाला आहे. होईल तेव्हा पाहावे. माहादाजीपंत गुरुजी दत्तर कृष्णातीरपर्यंत होते ते माघारे गेले. राजेश्री माहादाजीपंततात्या यास श्रीमंत राजेश्री रावस्वामीनी पुण्यास रवाना केले. निमित्त आपल्या दिवाणखान्यापुढे गली आहे. पुढे गपचुपाचे घर मेराळपंताचें आहे. त्यास भित त्याची आहे ती पाहून नवी मातबर भित धाडून दिवाणखान्यावरून वरच्या तुल्या टाकून खाडून गली राखोन वरती बाग करावी. दीवाणखान्यांतून तमासा पाहावा हा विचार करूं आठपंधरा दिवस पाठविले आहे. प्रस्तुत लष्करांत मी व गोविंदपंत नारखानी व माहादाजीपंत जोसी व लक्ष्मण सिधपा ऐसे आहो व राजश्री तालाजी कृष्ण आठवळें विसाजीपंतदादाचे आहेत. श्रीमंत राजश्री [जमार्दन]बाबा नासिकास भंगालानास गेले. पुण्यांत कारभारी प्रस्तुत विसाजीपंतदादा [आठवळे] आहेत. चाबा [भानु] लवकर येतील. राजेश्री त्रिंबकरावमाभा [पेठे] नासिकासच आहेत. तेही लौकरच येतील. सातारियापासून अनुसंधाने येत आहेत. प्रमाण नाही. आपणांस कळावे म्हणोन लिहिलें असें. आपण देशास येतात म्हणोन आइकतो परंतु आपण लिहिलें नव्हते तरी लिहावें. मेटीचा हेत फार लागला आहे तो श्री जाणे. मेटी होईल तें सुदिन. मजवर माया पहिल्या प्रो करावी. सर्व प्रकारे आपण वडील आहेत. बहुत काये लिहिले कृपा केली पाहिजे हे विनंती.

राजश्री माहादाजीपंत राजश्री बाबुरावजी व राजश्री मल्हारपंत स्वामी सां नमस्कार. श्रेष्ठ करीत जावा मेटीचा हेत आहे हे विनंती.

पो छ ८ जाखर

मुगा नजीक रूपनगर सात कोस

[२२ मार्च १७५५]

लेखांक [२९६]

श्री" मोरया * संवत १८११ फाल्गुन वद्य १
[२७ फरवरी १७५५]राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
रामाजीपंतभाउ स्वामीचे सेवेसी.

सेवेसी गंगाधर येशवंत [चंद्रचूड] सां नमस्कार विनंती उपरी.
येथील कुशल जाणउन स्वकीये कुशल लिहित असावे विशेष. श्रीमंतासमागमे साभरग
मुकामपावेतो आलों. श्रीपुष्करस्नानास श्रीमंत [राघोवा] येणार. आपणास पत्र लिहिले आहे.
ध्यानास आणून उचित ते करावे सर्व येकरूप^{१६६} जालिया उतम आहे. पुष्करास

(१६६) कुभेरीवर तेढ पडून शिवेहोलकराचे जुग विस्कटले आणि राघोवाजी प्रसंग पडल्यामुळे
नित्य नवी प्रचीति येऊ लागली तेव्हा कोठें होलकरजाही मुत्सद्याचे डोळ्यात अजन पडून स्नेहाची स्मृति
होऊ लागली [ले २९३] हे पत्र त्याची साक्षा पढविते जाटाविपयी आगळीकाचा बोभाट बोकाळला
तितका दोष सोबत्याचा नव्हता असे निदान कारभारियास तरी वाटू लागले. 'जयापाच्या चितात
मनसवे आहेत त्याप्रो मल्हारवानी आईकोन विल्हे लावावे' या उक्तीवरून तेढ पडली ती केवळ जाटा-
मुळे असे मात्र म्हणता येणार नाही [ले २९८] 'हिंदुस्थान प्राते जातो. राणाजीकडील पटा घ्यावा.
निमे मुलुक झरकोण घ्यावें म्हणोन आज्ञा तर दोही गोष्टीचे अगाध काय आहे कोणाच्या अश्रियाने
राहिले आहेत हे आपण जाणतच आहेत उभयताचे पारिपत्य चितापासून करणेच आहे तर आज्ञा
करावी. दादासाहेबास उचित मनसवा दिसेल ते लिहित जाणें म्हणोन आज्ञा तर हिंदुस्थानात गेल्यावर
जसा मनसवा अढळेल तसा त्यास लेहून पाठउ आपण त्यास लेहून पाठवावे की तुम्हास विनंती पाठ-
वितील ते कार्य चितावर चरून करणे म्हणजे सर्वही गोष्टी होउन येतील' हे भविष्य राघोवाची स्वारी
होण्यापूर्वीच होय. [पिद २ ले ३५] 'स्वजनविरोधाचे मूल आजपासूनच लागले आहे राघो लक्ष्मण मल्हार
वाचे सूत्रे गगोवानी पाठविले सारास्य पहाता जयापाचे पंचाचा मजकूर आहे आम्हास येथून नेउन त्यास
दबवावे आपली मातवरी हिंदुस्थानात आहेत आमची भेट जाली येकत्र जाली म्हणजे खावंद हातास
आला सर्व गुता उरकला. पुढे चित्तास मानेल तो मनसवा केला तरी कार्यास येईल. जयापास दुरा-
भिमान रामसिंगाचा आहे. तरी जसी स्वामीची मर्जी असेल तसे शेवटास न्यावे लागेल मल्हारवा
येतीलसे दिसते परंतु जयापाची मर्जी कळत नाही. भोगलासी तो कलह होईलसे वाटते व हे मवतीस
यत नाही [खड १ ले २] उत्तरेस प्रयाण राघोवाचे झाले त्या वेळची भूमिका अशी होती 'दत्ताजी
सिंदे याजवळ दाहा हजर फोज होती परंतु ते न आले. जयापाची वाट पाहात राहिले. आम्ही फजित
पडावे या आशयाने दतवा राहिले नाही परंतु मूलपण जाले असो रामसिंगाविशीं सिखाकडील भोडटे
आणून खातरजमा केली की हे काम खामखा कर तथापि ते न आले. याजमुळे मल्हारवा अमलसे
खटे आहेत'. [पिद २ ले. ३५] 'राजे माचोसिंग याजकडील जावसाल कनहीराम याचे हातून करवीत
जावा. हरगोविंद याजला जावसालात न आणावे. तो लवाड बोलण्याचा विश्वास नाही'. [खड ६
ले. ५६३] राघोवासह होलकराचे राजकीय घोरण पाहून 'पत्र' पावतील त्या मुकामी श्रीमंताचा
मुकाम करवावे कितेक मजकूर कागदोपत्री लिहिता येत नाही. भेट जाल्यावर सांगिला जाईल'

जाणे व आपण स्वदस्तूरे आपणांस पत्र लिहा आहे. त्यास हा मजकूर आपणांस कळावा म्हणोन लिहा आहे. गंगोवाताच्याही समीप होते. दुसरा मजकूर होलीचे दिवसी दौलतराव यांचा व विसाजीपंत लेंले यांचा व रामचंद्र गणेश [कानडे] काँरे वाग्भूषण यांचा कजिया'१३ होलीवर जाला. त्याचा विस्तार लावच आहं परंतु तूर्त श्रीमंतानी विसाजी पंतावर इतराजी केली, तोपखान्यास दारोगे त्रिंबक खंडेराव केले काल छ १६ जावशी त्रिंबक खंडेराव यास वरें टिकी. पागेवरही दुसरा ठेवणार. येसे वर्तमान आहे. घडेल तें पाहावे.' छरा केली पाहिजे हे विनंती.

लेखांक [२९८]

श्री

* मंथ १८११ चैत्र शुद्ध १

[१३ मार्च १७५५]

[पहिला बंद गहाळ]

विनंती ४ * २९ जावळ वर्षप्रतीपदापावेतो सुखरूप असो विशेष. येथील वर्तमान तर रामराव आल्यावर गोविंद कृष्ण [क्षीरसागर] देखील येकर श्रीमंतसहवर्तमान बसोन खडबत जाले. त्यातील सारांश अर्थ की श्रीमंतानी [राधोबा] येथे राहावे. धणी आहेत. भारवाडचा कारभार विल्हेस लावावा म्हणून आणवें. त्याचा पाये यांत नसावा. तो आणावयाचे चिंतात असिले तर श्रीमंतानीही जावे. आमचे आम्ही विल्हेस लाड. याप्रो रामराव याणी विनंती केली. त्यावर गंगोवाताच्यास श्रीमंतानी बोलाउन खडबत केले. ते जाल्यावर सारेच येकर होउन विचार केला की श्रीमंतानी रूपनगरास लागावे. गंगोवाताच्यानी म्हणून आणवें. जयापाचे चिंतात मनसवे आहेत त्याप्रो म्हणून आणवें. मग साऱ्यानी येकर होउन देशास जावे. याप्रो ठहरोन गंगोवाताच्या आज प्रातःकाली सुभेदाराकडे निघोन गेले. जावत्याळ

(१६७) हे होली अस्पान अगदी नवीन आहे या कवेचा 'विस्तार लावच आहे' तो समजला असता तर वरें होते. कारण पुढे या पुस्तकाचा 'सरजाम दूर करून घरी रहाण्यापर्यंत इतराजी झाल्याचे पत्र या भागात येते तो प्रसंग १७६९तल असून त्या वेळी कानडे व 'विसाजी कृष्ण मानी आपापल्यात कजिया केला परंतु त्याच्या दैवेकरून येथेस्थित होउन त्याची रवानगी जाहली' [पिद २० ले २७८] उत्तरेकडील स्वारीत हेच कीतुक पहावयास मिळाले तर त्याचे नवल नाही. अताजी माणकेवर, बिट्टल मिवदेव, हिंगणेवधु, नारो घकर, महादाजी फाकडे व गोविंद बलाल यांचे सब परस्पर पाहिले म्हणजे बुरशीची चाड केचल सोवत्यासच होती असे म्हणता येईल काय आणि या आक्षेपास नानासाहेब भाऊसाहेब राधोबा व भाषवराच भट हे तरी अपवाद ठरतील काय याची चिकित्सा वाचकच करतील.

लेखांक [२९७]

श्री * संवत १८११ फाल्गुन वद्य ३

[१ मार्च १७५५]

विनंती छ * १७ जावळ शनवार सुा सावर सुखरुप असों विशेष. काल पत्रे राजश्री भवानी शंकर यांच्या माणसाबराबर पाठविली आहेत ती पावोन सविस्तर कलेळ. आज प्रातःकाली कूच होउन सवतेदेवर मुकाम सात कोसावर होईल. आदित्यवारी मधे मुकाम होईल. सोमवारी पुष्करास दाखल होतीलसे आहे. येथील मजकूर तर श्रीमंत [राजोबा] तुम्हावर कृपावंत जाले. मौरोबा चिटणीस यांस पुसले की रामाजी पंतास फागद कसा लिहित असता. मौरोबानी सांगितले की अखंडित लिहितो स्वावरुन आज्ञा केली की याउपरी राजभियाविराजीत नमस्कार उपरी घेसे लिहित

पाठउ. यंदाचे स्वारीस हाच मोठा लाभ की यजमानास आरोग्य जाले'. [ले. २०६] 'जाटाचा मार तरी प्रथमच दिवस असे. आपासाहेब श्रीमंताच्या विचारे येथून उठनी हरयेक मते सेजगावदेउगाव कल्ल उठावे. पुढे जागा नेमावी अगर हरयेक मनसबा करावा या विचारे रुपराम जाटाचा वकील त्यास कुंभेरीतून बोलाविला आहे भाजपड काली धरून करीत असे' [ले. १४९]

बरील पत्राचा निष्कर्ष पाहून त्याची तुलना बखरीशी करू जाता वस्तुस्थितीचे दिग्दर्शन होते. त्यात मघाचे बोट किंतपत होते हे सांगवत नाही. एवढे खास की नजर नजराणा किंवा दरवारखर्च या नावाने अतस्थ प्राप्तीचा राजरोस मार्ग मोकळा होता [पिद २७ ले. १०४, १०८] त्यास विदे अपवाद नसतील परंतु ते आद्य कारण होते की काम हेच पहावयाचे आहे. ८० लक्षाची खडणी करणाऱ्या राजोबास व्यक्तिच २ लक्षाची प्राप्ती झाली त्या मानाने ४० लक्षामागे सिद्धास काय लाभले असेल याचे अनुमान होऊ शकते आणि ते आमिष किंवा राजकीय घोरण मुख्य कारण झाले हे सहज लक्षांत येईल. बखरीची भाषा विपरीत नसली तरी सदिग्ध व चमत्कारिक आहे आणि तीही हेतुपुरस्सर होय. मुख्य कारणाची बाधता कल्पित इष्ट नव्हती. अर्थात 'दिली काविज जाली' म्हणून अभिमान वाटणाऱ्या भागास त्याने फांटा दिला आणि ज्या सोबत्याच्या बलावर मराठाघर्षाची अपेक्षा अवलंबून होती ती कुंभेरीवर तेढ विकोपास गेल्यामुळे कशी निष्फल झाली हेच प्रामुख्याने दाखविले आहे त्याचे हे कथन मिथ्या म्हणवत नाही विकोपाचे हे बाह्यांग असून अंतरंग वेगळेच होते. ते विशद करून दर्शविले नसले तरी सर्वस्वी लपविले नाही. विकोपाचे बीज संजोपांत आरंभीच पहिल्या वाक्यात त्याने दिले आहे ते मननीय होय 'सत्युद्धाच्या आसिवादे विजेच्या चढाप्रमाणे चढते कळें राज्य करीत असतां ग्रहकलह लागण्यास मुख्य कारण जाहाले की दादासाहेब प्रथम स्वारी हिंदुस्थानचे मोहिमेस पाठविले'. ही समस्या बखरीची आजवर नीट उमगत नव्हती ती आता या पत्रामुळे उल्लूक उमटते. मात्र या राजकीय घोरणाचे रहस्य दाखविणारी पत्रे अद्याप उपलब्ध न्हावयाचीच आहेत. 'आम्ही दिलीच्या कामात नाही दिलीचे जो वरे अगर वारंट ते सर्व श्रीमंताकडे व सुभेदाराकडे आहे' या उदासीनतेचा [खंड १ ले. ३९] आणि 'शेमेच्या थोरवीचा' उजळ पडेल तेव्हा खरे. [ले २९८] तात्पर्य की उत्तरेस हीन पायंडा कोणी किती घातला याची चिकित्सा करून न्यायनिष्ठुरतेने जो निवाडा गोतामुखे इतिहासांत लागेल तो खरा.

की जयापानी आम्हास लाि आहे की तुम्ही जिकडे जाणे तिकडे जावे. आमच्या मनसब्यांत चित न घालवे. ऐसे असता तुम्ही अटकान कां राहिला येसे फारच रागे भरोन लाि आहे त्यावरून आज मोर्चे रूपनगरास लावणार होते ते राहिले. याउपरी रामराव [व] गोविंदपंत [क्षीरसागर] सल देतील याप्रो होईल. बिजेभारती [गोसावी] यास श्रीमंतानी काळ मेजवानी केडी. बिजेभारती याकडे गोविंदपंत रामराव जात असतात. बोलत असतात. याप्रो वर्तमान आहे. कळले पाहिजे. बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती. पत्र फाडून टाकावें

लेखांक [३००]

श्री संवत * १८१२ चैत्र वद्य ९
[५ अप्रैल १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाळ स्वामीचे शेवेसी.

पोष्य गणेश कृष्ण [पेंडसे] कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता ल * २५ जाखर गुा कसने खातवळी प्रा सोपार सुखरूप असो विशेष. हाळी आपणाकडून पत्र येडून कुशलार्थ कळत नाही. तरी सदैव पत्र पाठउन संतोषवीत असावें. इकडील वर्तमान तरी श्रीमंत मजलदरमजल ग्वाल्हेरीचे रोखे चालिले आहेत. वरकड वर्तमान राजश्री यादवराव यानी लिहिले आहे त्यावरून सविस्तर कळेल. ' बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री रामरावजी व चिंतोपंत [वळे] स्वामीस साा नमस्कार. राजश्री लक्ष्मणपंत [वैद्य] व बाबुरावजी [ळिमये] साा नमस्कार. सर्वास नमस्कार सांगणे हे विनंती.

लेखांक [३०१]

श्री * संवत १८१२ वैशाख वद्य ३
[२९ अप्रैल १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाळ स्वामीचे सेवेशी.

पोा गणेश कृष्ण [पेंडसे] साा नमस्कार विनंती येथील कुशल ता ल * १६ रजबु गुा कोा पोहरी प्राा नरवर सुखरूप असो विशेष. पोहरी [स] मोर्चे ढाविले आहेत. हे कार्य विल्हेस आगल्यावर ग्वाल्हेरीचे कार्य आहे. ते जालियावर खेचीस शह देउन काये होईल ते कर. पुडे देशास जाणार. याप्रो वर्तमान आहे. राजश्री [जयाजी] आपा

येई तो पैत्रावीम रोज लागतील. रामाजी पंचारही तिकडून येईल. तो वीस रोज लागतील. याप्रोो वर्तमान आहे. रूपनगरास मोर्च उदईक लागणार असे आहे. घडेल ते प्रमाण. चपरा मिळत नाही. माहगाई. रूपनगरही जेर होते ऐसे नाही. का म्हणाल तर येथे फौज आहे ती कळतच आहे. सारी फौज जिकडेतिकडे गेली आहे. येथे दोनचार हजाराचा कारभार. कागदीपत्र × × × [दोन ओळी गाहाळ] ही रामरावजी × × × होते याउसाहेबच येत होते परंतु त्याचे शरीरी समाधान नाही मग मजला म्हणाले की राम [उ] तूच जाउन येवडे कार्य करून येणे सावरून आले. आम्ही जाबस्वाळ केला की शरीर आहे उपाये काये. तुम्ही आर्ला हेच रामाजीपंत आहेत ऐमा शिष्ट ईच्या गोष्टी जाल्या. श्रीमंताचेही चिंतात आले की शूद्र ^{३६}माजला. बरे जिना काय आहे. एमे बोलिले परंतु येथीलही अविवेकीच कारभार आहे परंतु धनी आहेत. सर्व वर्तमान निवेदन केले. तुम्हांसही स्वस्तुरे पत्र लिहून दिले आहे सावरून कलेल. भिरीगाव रामगाव यास पूर्वी तुम्ही भोग्याई कडून घेतला होता तो श्रीमंतानी हुमणाबादेस कार करून दिवा नव्हता हाली भंगोबातातात्यागासून श्रीमंताजवळ रदबदल करून श्रीमंताचे दसकत करून घेतला. सनदपत्र करून ध्यावयास अम्हाजवळ आणिला नाही परंतु वर्तमान. आम्हांस भंगोबा तात्यानी सांगितले. लक्ष्मण शंकर याजकडील मामला पो भिरोज अहिरवाडा त्यांजकडे ठेउन बरकड देखील अनरवेद येथील मामलत कमाविरीने हरी विठळ यांजकडे सातिली. सरकारचे कारकून माहालोमाहाली आले. हरीपंतही काल्पीस पोहचले असतील. खरगोणचे मुकामची पत्रे हरीपंताची [फडके] आली. श्रीमंत कुष्णातिरी ऐनापुराकडे दाखल जाले. याप्रोो वर्तमान आहे पुढे होईल ती लेहून पाठउ. बहुत × × क्षमा धोर आहे. × × क्षमेने × × [अपूर्णा]

लेखांक [२९०]

श्री

* संवत १८१२ चैत्र शुद्ध ३
[१६ मार्च १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाउ स्वामीचे शेवेसी.

पो भणेश कुष्ण [पेंडसे] सा नमस्कार विनंती. छा * २ जाखरपावेतो सुखरूप असो विशेष. राजश्री सखारामपताकडील पत्रें श्रीमंतास रागे मरोन आली आहेत

(१६८) शूद्र म्हणजे कोण. शिंदे की होळकर. महाराष्ट्रमय किंवा भटवाही करणाऱ्या भरारीची ही भाषा मननीय होय.

लेखांक [३०३]

श्री * संवत् १८१२ वैशाख वद्य १४
[१० मे १७५५]

गजश्रियांविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंत स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य जनार्दन वरद [भानु] मां नमस्कार विनती उपरी. येथील कुशल तां
छ * २७ रजव जांगून स्वकीये लिहि न जाणें विशेष. तुम्ही मां येकदोन पत्रें पाठविती
ती पावली. आलीरडे पत्र येउन वर्तमान कन्त नाही तर्ग सवितर लेहन पाठवणें.
प्रस्तुत तेथील विन्यार काय आहे. कोणे प्रकारें [राठोड] जें केला आहे .पुढें काय म्हणतो.
तुम्हाया ब्रह्मनाचा आगये [काय] केला [नर] ललामामला करावा किवा स्थलच ध्यावे यात
योगता मनसत्रा करार केला आहे तो लेहन पाठवणे. तुमचे घरची माणसें सुखरूप आहेत.
घरचे पत्र पाठविले आहे त्यावरून सवितर कल्ले ' बहुत काये लिहिगे कृपाळोम
असों दीजे हे विनती.

राजश्री लक्ष्मणपंत [वैद्य] स्वामीस सां नमस्कार. तुम्ही दोन पत्रें पाठविली ती
पावली. लिहिलें साधन कल्ले. याचप्रमाणे सदैव कुशल वृत्त लेहन संतोषवीत जाणे.
बहुत काय लिहिगे लोम असों दीजे हे विनती. तुमचे घरची समस्त सुखरूप आहेत.
काही चिंता त कार्णे. हे विनती.

राजश्री वानु.व लिमये व राा त्रिंभकपंत दिनेकर यांस सां नमस्कार विनती
उपरी. तुम्ही पत्र दोन पाठविली ती पावली लिहिलें वृत्त साधत कल्ले. असेच सदव
लेहन संतोषवीत जाणें. तुमचे घरची मनुष्ये समस्त सुखरूप आहेत. काहीं चिंता न
करणें. लोम असों दीजे हे विनती.

लेखांक [३०४]

श्री * संवत् १८१२ वैशाख वद्य १४
[१० मे १७५५]

तीर्थस्वरूप राजश्री [रामाजी]माउ वडिलाचे सेवेसी

अपत्येसमान गोपालराव गणेश [ब्रह्म] सा नमस्कार विनती. येथील कुशल
ता छ * २७ रजव गुा पौर्णमासी नजीक नावर आपलें कर्पेकरून सुखरूप जाणोन स्वकीये
लिहित असिले पो विशेष. वडिलीं श्रीक्षेत्रास चैत्रमासी सन इसनेन आम्हास रावना
केले तें समई रा वानुराव माहदेव घोरपडे वगैरे लोक समागमें दिरहे. त्याचा मागील
दीड वर्षाचा चंद्रपर्यंत हिसेव देउंन पुढें आमचे निस्वतीस हिसेव व लोक लाविले. त्यास
गुा कुमेरीच मुकामी श्रीमत राजश्री दादास्वामीनी हिसेवाचा फारशा केला. त्यासमई
आम्ही विनती केली की चैत्रापासून आमचा हिसेव करावा त्यास राजश्री सखारामपंत

साहेबाकडीळ वर्तमान कळत नाही तर कोणी येईल ते समई सविस्तर लिहावे. तिकडीळ तहरह जाला म्हणोन लौकिक वर्तमान आहे. ते तर सविस्तर लिहावे. मागे आम्ही रुपनगराहून फिरल्यावर कासिदजोडीबराबर पत्रे देउन मुजरद पाा होती. ते जोडी फिरोन आली नाही. कागद पावले की नाही ते कळत नाही. तर तोही मजकूर लिहावा. बहुत काय लिला लोम कीजे हे विनंती.

राजश्री बाबुराव [लिमये] व राजश्री लक्ष्मणपंत [वैद्य] व गोविंदराव व समस्त मंडळीस साा नमस्कार विनंती उपरी. लोम कीजे हे विनंती.

वेदमूर्ती राजश्री आपा जोशी स्वामीस साा नमस्कार.

लेखांक [३०२]

श्री * संवत १८१२ वैशाख वद्य १२
[८ मे १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाऊ स्वामीचे शेवेसी.

पाों गणेश कृष्ण [पेंडसे] साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ * २५ रजबुपावेतो भाा पोहरी यथास्थित असे विशेष. आपणांकहून पत्र येत नाही तर येसे न कीजे. सदेव येणारासमागमे पत्र पाठउन संतोषवीत जावे. येथील वर्तमान तर पोहरीस मोर्च लागले आहेत. हे कार्य जाल्यावर ग्वाल्हेर आहे. रूपराम कठप्रा ग्वाळेरीस आला आहे. पुढे काय होईल ते पाहावे. बहुत काय लिहिणे लोम असो कीजे हे विनंती.

राजेश्री बाबुराव [लिमये] व लक्ष्मणपंत [वैद्य] व गोविंदरावजी साा नमस्कार.

राजेश्री रामरावजी स्वामीस साा नमस्कार. राजेश्री यादवराव खुशाल आहेत. चिंता न करावी. येथील सविस्तर अर्थ श्रीमतानी लिहाव[ला तो] यादवराव यानी लिला आहे स्यावरुन कलेळ. हे विनंती.

राजेश्री चितोपंत [वळे] स्वामीस साा नमस्कार. पत्र येत नाही अपूर्व आहे. सविस्तर श्रीमतानी राजेश्री आपासाहेबास लिला आहे स्यावरुन कलेळ. लोम असो कीजे हे विनंती.

वदेमूर्ती राा आपा जोशी यांस नमस्कार.

लेखांक [३०५]

श्री * संवत १८१२ अश्वि शुद्ध १

[१२ मे १७५५]

चिरजीव राजेश्री रामाजीपंत यासी प्रति विसाजी दादाजी [आठवले] आसिर्वाद उपरी. येथील कुशल ता आशिक * शुद्ध प्रतिपदा म्हा पुणें जाणून स्वकीय लिहित गेले पाहिजे विशेष. तुमचे पत्र चत्र सुष त्रयोदसी नोगूरचे मुकामीचे आशे ते पावोन बहुत समाधान आले व श्रीमत राजेश्री दादासाहेबकडील वर्तमान लिहिले ते कळले. ऐशास यदा तुम्हास मसळत बहुत मारी पडिली. लौकर उलगडा जाला म्हणजे देसास येणे होईल. मेटीनतर सर्व वर्तमान काळो येईल. उभयता श्रीमत पुण्यातच आहेत. राजश्री माहादोबाबा [पुरंदरे] कर्नाटकास गेले आहेत. महिन्याभरा येतील. चिरजीव राजेश्री हूरवा [दामोळकर] श्रीत्रकेश्वरास गेले आहे. तुमची सर्व मनुष्ये सुखरूप आहेत. कळले पाहिजे. बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे आसिर्वाद.

† आपले बाळाने कार्दये जोहन सां नमस्कार विनंती. आपली पत्रे हमेग येतात परंतु सांप्रत आमचे स्मरण येकाही पत्रात होत नाही. दूर देसचा कारभार विस्मरण पडिले यांत कांही अपूर्व नाही. अर्शी बडिळांस उदामपणे लिहावेंसे नाही परंतु बहुत दिवस आसिर्वाद येउन सांभाळ न जाहाळ यास्तव लिहिणे पडिले. कृपा केली पाहिजे हे विज्ञापना.

आपले सिवाजीराम सां नमस्कार विनंती.

† राजेश्री लक्ष्मणपंत [बंब] स्वामीस नमस्कार.

† बाळाजी कृष्ण साष्टांग नमस्कार. लोम असो दीजे हे विनंती.

राजेश्री नागोपंत यांस सां नमस्कार. तुमचे वरची सुखरूप आहेत. राजेश्री लक्ष्मणपंत सां प्रांतीच आहेत † हे विनंती.

राजेश्री लक्ष्मणपंतदाजी व नागोपंतदाजीस सां नमस्कार. हे विनंती.

लेखांक [३०६]

श्री * संवत १८१२ अ. ज्येष्ठ शुद्ध ५

[१६ मे १७५५]

राजश्रियाचिराजित रात्रमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाउ स्वामीचे सेवेशी

पोष गणेश कृष्ण [पेंडसे] सां नमस्कार विनंती. येतील कुशल ता आशिक * ज्येष्ठ सुष पंचमी म्हा पोहरी ग्रा नरवर सुखरूप असो विशेष. सांप्रत पत्र

बापुनी जाबसाल केला की सिलेदाराचा हिसेव भाद्रपदमासी. नाळवंदी अभिन कार्तिकांतः रोजमरा चैत्राचा हिमेव कोण्डी दैत नाही. स्याजवर आम्ही लोकांचें कर्जदार बहुत व रंशामीकार्यही न जाहलें. अड ध्यावी तरी कर्जदाराचा हमेश तगादा याजकरिता त्यांची मर्जा राखोन त्याचे आङ्गेगे हिसेव घेतला परंतु सांगोन ठेविले कीं सामाही हिसेव सरकारांत राहिला आहे. स्याजवर येथून निरोप घेउन पृणियासीं गेलो. श्रीमंत राजश्री नानास्वामीस विनती [केली] की चैत्रपासून साहा महिन्याचा हिसेव सरकारांत राहिला आहे. स्याजवर त्याणी आङ्गा केली की चैत्रमासी दिढा वर्षाचा हिसेव मागील देउन पुढें तुम्हांकडे लोक दिव्हे याप्रो तुम्हीं राजश्री [जयाजी]आपांचे पत्र आणवणे म्हणजे तुमचा हिसेव देउं. आम्हीं कुमेरीडून निरोप घेतला. त्या अलीकडील हिसेव असता तरी आपले पत्रांचे प्रयोजन नव्हतें. हुजूरचाकरी केलीच होती. रुपये सरकारातून घेतों. मागील गुता याजकरिता येथील पत्र पाहिजे. येविसीं पूर्वी आम्ही श्रीमंत राजेश्री आपासाहेबास पत्र लािा होते कीं श्रीमंतास पत्र पाठवावें त्यास त्यांचे मर्जास न आले. हाजीही त्यांस पत्र लािा आहे. त्याणी पाठविले तरी उत्तम. नाही तरी बडिली कृपा करुन आपलेच नावें श्रीमंतास पत्र पाठवावे की चैत्रामासी श्रीक्षेत्रास रावना केलें तें समई समागमें लोक दिव्हे त्यांचा मागील दिढा वर्षांना हिसेव चैत्रावेतो देउन पुढे याचे निस्वतीस लाविले. याप्रो आपलें पत्र आल्याने आमचें कार्य होते. आपलें दफ्तरी हिसेव व तेनात जावतेही आहेतच. सदरी गोष्ट लिहावयासीं चिंता काय. पूर्वी येक^{३६९} घोड्यानसीं आपणाजवळ होतो. साप्रत आटनवशे राउतांची सरदारी करितों. सर्व प्रताप बडिलाचेंच कृपेचा आहे. आपण उपेक्षा केल्या चालीसगनास हजार रुपये आगावर पडतात. म्हणजे मनुष्यपणांतून उठाने ऐसा विचार होतो याजकरिता आपणांस विनंती लािा आहे. तरी अपत्यावर कृपा करुन पत्र अक्षरशाह वाचून कारकुनीचा पर्याय चिंतात आणून प्रमाणीक कारभार लटका नव्हे. पत्र पाठविल्यास दोष नाही ऐसे चिंतात आल्यावर पत्र पाठवावे. लटका कारभार असता तरी आपणांस विनंती कदापि न लिहितों. † कळले पा. आपले वचनावर माणुसपणात पडतो. अनमान जाल्यावर उपराटी गोष्ट होते यास्तव येवढी गोष्ट ये समई आली आहे याची बाजी राखावी. † बहुत काय लािा कृपा लोभ कीजे हे विनंती.

(१६९) या गोपालराव गणेशाचे आडनाम 'बर्बे' म्हणून पेशवेदप्तराच्या संपादकांनं दिलें आहे. स्वतःच्या उत्कर्षाचा उच्चार जो या पत्रात त्याने केला आहे तो विचारणीय आहे. रामाजीपत दामोदर कर विदेशाहीत १७५०च्यापूर्वी असावा असें चें अनुमान केले आहे ते यामुळें ग्राह्य वाटते.

१ पालगड.

७

याप्रमाणे रामाजी महादेव यांणी महत्कार्य केले. पुढे विजयदुर्गास जाणार आहेत, गेले आसतील बाकी राहिले किले घेतील व श्रीमंत राजश्री माहादोबाबाबा कर्नाटक प्रांते गेले. त्यांणी पहिले गौकाक घेतले. बरकड कुळ सस्थानची खडणी करुन विदनुगास आले. तेथील खडणी करुन माघारे देशास फिरले आसतील. लौकरच येतील. पुण्याहून पत्रे आली त्यांत राजेश्री बापुजीपताचे [फडके] पत्र पा आहे त्यावरून सविस्तर कलेल. आरुण्याकडील सविस्तर लिहावे कृणीराम^{१००} आजपर्यंत येथे होणे. येवजाच्या हुड्या औरंगाबादेस दिल्या आहेत. काही येवज आला बरकड वाकी येणे. हुड्या खऱ्या म्हणोन करार [करून] गेणे आहेत. पैका वसूल होईल ते प्रमाण आहे. बहुत काय लिहिणे कृया केली पाहिजे हे विनती.

लेखांक [३०७]

श्री * संवत १८१२ अ. ज्येष्ठ वष ७

[१ जून १७६५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामजीपतमाळ स्वामीचे सेवेसी.

पोष गणेश कृष्ण [पंचमे] सां नमस्कार विनंती. येथील कुणाल ता छ * २० साबाव मुा भोजे सहश्रवे पा नरवर ना भ्वालेर सुखरुप असो विशेष. सांप्रत आपणांकडून पत्र येउन वर्तमान कळत नाहीं. तरी सदैव पत्रद्वारे कुशल वर्तमान लेहून सांभाळ केला पाहिजे. येथील वर्तमान तर भ्वालेरची घालेमेळ लागली आहे. रुपराम कटारा भ्वालेरीस आहे. त्याचे लाडपुढे कितेक आहेत. सेवट निकाल पडेळ तो पाहावा. राजश्री अंताजी माणकेस्वर येथे आले. छ १७ रोजी भेटी जाहाल्या. आपणां कळावे म्हणोन ल्या असे. ' बहुत काय लिहिणे छोभ असो दीजे हे विनती.

राजेश्री गोविंदराव राजेश्री बाबुराव व लक्ष्मणपत सां नमस्कार. भाषवराव व नारायणजी व महादाजी बाजी यास आर्शिवाद सांगावे हे विनती.

(१७०) भाषवसिंग जयपुरकर याजकडील जाबसाल करणारा कनहीराम तो हाच

येउन कुशळ वृत कळत नाहीं. तरी सबिस्तर वृत लिहित असावे इकडील वर्तमान पोहरीचे गदीस मोर्चे लाविले आहेत. वीस रोज जाहाले. रोज जखमी व ठार होत आहेत. आद्यापि येकत्री निक्काळ नाहीं. पुढे ग्वांनेर मातबर कार्य होणे आहे. राजश्री त्रिठळ सिवदेव [विचुंकर] गोहजेस मोर्चेबंदी करुन वसले होते. त्यास सांप्रत गोहजकरियाणीं याजवर घातले. जुजा मातबर जाळे. याजकडील चागले लोक पडिले व जखमी जाहाले. त्यास सारे वड सूरजमल जाटाचे आहे. रूपराम मध्ये खेळ करीत आहेत. जुंज जालियावर जगाजागा मोर्चेबंदी होते. ते माघारे उठोन त्रिठळपंतसुधा सर्वत्र येकर होउन राहिले आहेत. श्रीमंत किल्यास येवत नाहीं. जवळ गेल्लियाने शहास गुंतावे आणि परिणामही नाहीं. येथून जे होईल ते करणार. ग्वालेरीचे पारपस जाहाल्या विना श्रीमंतानी टाळ देउन देशास गेले तर त्रिठळपंत सेवटच्या वाईद्यावर सिध्द जाळे आहेत. त्याजकडून मीरखान टोके येथे आले आहेत. सांप्रत काली रूपराम ग्वाल्हेरीस आहे. लंबोधरपंत दिलीडून जाटाकडे पा आहेत. ते रूपरामाबो च्यार महिने आहेत. किल्याची बोली लाविली आहे. हस्तगत होईल ते प्रमाण. असे मातबरच पेच आहेत. खेची वगैरे माहाळ मवासी त्याजकडे च्यार सालाचा पैका येणे. कमाविसदार गुतले आहेत. त्याचे पारपस करुन पैका उगवानयाविसी पुण्याडून वरचेवर पत्रे येतात व करणेही जरूरच आहे. तथापि घडेल ते प्रमाण. राजश्री अंताजी माणकेस्वर यांस हिदुस्तानांत रवाना केले. ते मार्गी खरगोणापासी मकडईस मोर्चे घुसकुटे याणी लाविले त्याजपासी गुतोन राहिले आहेत. इकडील लिहिल्याप्रमाणे कार्य करुन श्रीमंतास देशास जाणे जरूरच आहे. यामध्ये घडेल योग तो विशेष आहे. देशाचे वर्तमान तरी श्रीमंत स्वारीडून येउन श्रीत्रंबकेस्वरची यात्रा करुन वैशाख सुध प्रतिपदेस पुण्यात स्वारी दाखळ जाली. पेशजी आगन्यावर मोहीम करुन अरमार व फौजा रवाना केल्या आहेत.

रामाजी माहादेव जळमार्गे गेले त्याणी,

१ सुवर्णदुर्ग.

१ कनकदुर्ग.

१ फतेदुर्ग.

१ गोवा

१ मंडणगड.

१ रसालगड.

रत्नागिरी खुडोजी माणकर याणी घेतली म्हणोन वर्तमान आहे. तहकीक नाहीं.

समसेरबहादर व दिनकर महादेव आल्या घाटावर आहेत.

बारी होय ते गोष्ट केली पाहिजे विशेष. बहुत दिनावधी अतिक्रम जाले असतां पत्रव्दारा स्वीय कुशल तथा नवीन घृत लेखनेकरून संतोषाविषय होय ते गोष्टीस विस्मृत व्हावी हे अपूर्वता स्वामीचे सदगुणी अवलोकिता परम विस्मय जाले. तो अर्थ कोठवर लेखन करावा. बहुत कारभाराची दाटी विशेष तन्मुले स्नेहानुसंधानी विक्षेप ह्मणावा तर स्वामीचे ठाई सर्वाविधानी सावधानता असतां हे कल्पनाही केली जात नाही. तर याचा काय अर्थ तो विस्तारे लेखन करावा व याउपरी अविस्मृतीपणे श्रेहसूत्राची वृद्धी होय ते कृपा करावयासी आपण सूझ आहेत. बहुत काय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

¶ राजश्री बाबुराव लिमये व राजश्री लक्ष्मणपंत वैद्य स्वामीस सां नमस्कार विनंती उपरी. लीा परिसोन लोम करीत जावे. बहुत दिवस कुशळार्थ कळत नाही तरी निरंतर पत्र पाठवीत जावे हे विनंती

राजश्री त्रिब्रकपंत दिवेकर सां नमस्कार. तुमचे पत्र येत नाही तरी हरवडी पत्र पाठवीत जाणे. नारोपत सुखरूप आहेत हे विनंती

¶ सेवेसी हरी बळाल [फडके] कृतानेक सां नमस्कार. पत्नी परामर्ष करावा. कृपा केली पाहिजे हे विनंती

¶ सेवेसी विनंती सेवक रघुनाथ गणेश कोशे सां नमस्कार. कृपालोम असो थावा हे विज्ञापना. सेवेसी रामाजी नारायण आगासे सां नमस्कार

¶ सेवेसी माहादाजी नारायण कुंटे सां नमस्कार. कृपा केली पाहिजे हे विनंती सेवेसी नारो अनंत परचुरे सां नमस्कार हे विनंती.

लेखांक [२१०]

श्री

* संवत् १८१२ ज्येष्ठ शुद्ध ३

[१२ जून १७५५]

चिरंजीव राजश्री रामाजीपंत यासी प्रति विसाजी दादाजी [आठवले] आसिर्वाद उपरी. यधील कुशल ता जेष्ठ * सुध श्रतीया शुा पुणे सुखरूप असो विशेष. सांप्रत तुमचे पत्र येउन वर्तमान कळत नाहीं याकारितां चित संचित आहें. तेधील मजकूर काये जाहाळा. येदा तुमचे येणे देसीं होईल कीं काये किंवा महिना पंधरा रोज तेथेंच गुता आहें ते तपसीळ्वार लिहित जाणे. इकडील वर्तमान तरी राजेश्री बाबा [पुरंदरे] कर्नाटक प्रांते स्वारी गेले होते ते तिकडील कामेकाजे विल्हे लाउन देशास आले. सविस्तर अर्थ श्रीमंतानी लिहिल्या आहे स्वाचरुन कळेल. ¶ प्रस्तुत मुकाम नागोरावरी की

लेखांक [३०८]

श्री * संवत् १८१२ अ. ज्येष्ठ वद्य ८
[२ जून १७५५]राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
रामाजीपंत स्वामीचें सेवेसी.

पोष्य जनार्दन बळाल [भानु] सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल तां छ * २१ साबान जाणून स्वकीये लिहित गेले पाहिजे विशेष. आलीकडें तुम्हाकडील पत्र येहून वर्तमान कळत नाही. तरी वरचेवर सविस्तर वर्तमान लेहून पाठवीत जाणें. ईकडील वर्तमान तरी अधिकोतर लिहावेसे नाही. तुमचे घरची समस्त माणसे सुखरूप आहेत. * कांहीं चिंता न करणें. तुमचे येणे देशास कधी होईल ते लेहून पाठवणे. लोकर मेट होईल तर उत्तम आहे. राजेश्री त्रिंबकपंत [दिवेकर] तुम्हाजवळ आहे त्याचे घरी खर्चाची अनुपती फार आहे याजकरितां त्यास कांहीं खर्चाची वेगळी करंन घावी. बद्धत काय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

मातुश्री आयाचे अर्शिवाद.

राजेश्री बाबुराउ लिमये स्वामीस सां नमस्कार विनंती उपरी. लीा परिसिजे. तुमचे घरची मनुष्ये समस्त सुखरूप आहेत. कांहीं चिंता न करणें. हे विनंती.

राजश्री लक्ष्मणपंत वैद्य स्वामीस सां नमस्कार विनंती उपरी. लीा परिसिजे. तुमचे घरची मनुष्ये समस्त सुखरूप आहेत. कांहीं चिंता न करणे.

राजश्री त्रिंबकपंतास नमस्कार तुमचे बंधु व घरची समस्त सुखरूप आहेत. कांहीं चिंता न करणें. हे विनंती.

लेखांक [३०९]

श्री * संवत् १८१२ अ. ज्येष्ठ वद्य ८
[२ जून १७५५]राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
रामाजीपंत स्वामीचे सेवेसी.

पो बाळाजी जनार्दन [भानु]^{१०९} सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जेष्ठ * अधिकासित अष्टमी इंदुवासरपर्यंत यथास्तित जाणून स्वीयसुखसंतोष लेखनें संतोषा-

(१७१) या पत्राची आणि नाना फळयिसाच्या आत्मचरित्राची भाषा किती जुळते हे सहज लक्षात येईल.

किल्यावरील जकीरा व तोफखाना गेला.

१ नवा चढविला तो सारा धावा.

१ जुना आहे तो निमे.

२

सरकारचे अमळपैकी पाा खितोळी रतन-
गड वगैरे गाव जमाबदीप्रमाणे पैका घेउन
इजाज्याने.

२८ गाा राजेश्री नारो शंकर.

१२ गाा विठळपंत [विंचुरकर]

१२ गाा अंताजीपंत [माणकेस्वर]

१२ गाा ज्योत्याजी मोरे.

६४ चौसष्ट गांव धावे.

किल्लेदार पातशाई.

१ कदीम गांव ३ तीन चालवावे.

१ राणा मीमसिंग [गोहदकर] याणें किल्ला
घेतला ते समई बारा हजार रुपये करार
केले ते चालवावे.

२

किरकोळ कामकाजे कांही आसतील ते
सहित्य करून करून धावे. पुण्यांत घर
बाधावयास जागा धावी ?

येणेप्रमाणें धावयाच्चा करार करून वेळमंडार [झाला] की सरकारचा अमळ आहे तो चालवावे.
याप्रमाणे रूपराम बोलोन ना येथून सखोजी जगथाप सासवडकर व लंबोवर बुंडिराज
व राजेश्री गोपालराव गणेश यांचे स्वार देउन पोा आहेत. तेथे जाउन किल्यावर
निशाण चढउन धावे. आपले लोक वर चढिले म्हणजे येथे वर्तमान आळियाळपर
कूच करून दरमजळ देशास जावे. याप्रमाणे केले आहे परंतु घडेल ते प्रमाण. किल्ला
गोपालराव गणेश याचे स्वाधीन केळ आहे. लक्ष्मण दिगांबर यास तूर्त किल्यावर
ठेवावे. राजेश्री विठळ सिवदेव [विंचुरकर] यांणी निशान चढले म्हणजे फौजसुधा देशास
यावे. तेथे राहावयाचा काही गुंता ठेविला नाही. अंताजी माणकेस्वर याजकडेही तेथील
गुंता नाही तूर्त येथे स्वारीबोा आहेत. देशास कूच जाले म्हणजे अंताजीपंताची
नेमणूक राजश्री गोविंद बळाल [बुंदेले] याचे निस्वतीस होणार आहे. राजश्री मल्हारबा येथे
बोच आहेत. तूर्त उत्तम प्रकार सौरस्यांतच आहे. ग्वाल्लेरचे कामकाज स्याध्याच
विचारे विल्हे लांविले आहे. येथील वर्तमान तर राजश्री सखारामपंतबापु [बोकीळ] याचा
पुतण्या निलोबा बरोबर होता स्यास नवज्वर येउन आधिक वध चतुर्दसीस देवहा

तेथून कूच जाले ते ते साकल्य लिहिले पाहिजे. बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे असिर्वाद. तुमचे घरची सर्व सुखरुप आहे हे असिर्वाद.

राजश्री लक्ष्मणपंत [वैद्य] स्वामी साा नमस्कार. लोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३११]

श्री * संवत १८१२ ज्येष्ठ शुद्ध ३
[१२ जून १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
रामरावजी स्वामीचे शेवेसी.

पोष्य गणेश कृष्ण [पेंडसे] साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ * १ रमजान जाणोन स्वकीये लेखन केले पाहिजे विशेष. सांग्रत पत्र येउन वर्तमान कळत नाही. तरी सदैव लेहून पत्रद्वारे परामर्ष करीत जावा. राजश्री यादवरावजी सुखरुप आहेत. यादवराव यास बरे वाटत नव्हते परंतु प्रस्तुत खुशाल आहेत. राजश्री सखारामपतनापु [बोकील]बरोबर पुढे गेले. कळले पाहिजे. तुमचा लाखोटा पाा आहे स्थावरुन कलेल. बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३१२]

श्री * संवत १८१२ ज्येष्ठ शुद्ध ४
[१३ जून १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
रामाजीपंतभाउ स्वामीचे सेवेशी.

पोष्य गणेश कृष्ण [पेंडसे] साा नमस्कार विनंती. येथील कुशल ताा छ * २ रमजान मुाा मोजे सहश्रावे पाा नरवर सुखरुप असों विशेष. आपण छ ३ साबानचे येक पत्र व छ १४ साबानचे येक पत्र पाठविले ते दोनी छ ३० साबानी पाबोन लिहिले वर्तमान सविस्तर कळले. याचप्रमाणे सदैव लिहित असिले पाहिजे. येथील वर्तमान तर याच मुकामी वीस रोज जाहाले. रुपराम फटारा येथे बोलाउन आणिला. ग्वालेरचा करार मदार केला. कुवर बळजीस द्यावे

कदीम मुलुक ल्यांचा जप्त केला आहे तो पाउन लक्ष रुपये रोख खर्चास जाटा वमये गव्या घेतल्या आहेत त्यासुधा- कडील येवजी देविले येक साल.
धावे.

तुम्हीं दूरदेसी गेला आहा आपले शरीराची जतन उत्तम प्रकारे करीत जाणें. शरीर रक्षिले म्हणजे-उत्तम गोष्टी आहेत. तुम्हांस विस्तारेकडून लिहावें ऐसे नाही परंतु सुचनार्थ मात्र लिहिलें असे. राजश्री' बाबुराउ लिमये कोठे आहेत. काय वर्तमान उद्योग काय सांगितला आहे ते लहून पाठवणे. बहुत काये लिहिणें कृपालोभ असों दीजे हे विनती.

राजश्री त्रिंबकपंतास [दिवेकर] नमस्कार विनती उपरी. तुमचे बंधु व मनुष्ये समस्त सुखरुप आहेत कांहीं चिंता न करणे तुम्हीं राजश्री रामाजीपंत यांचे आहेत राहून वर्तणूक करीत जाणे हे विंती

लेखांक [३१४]

श्री * संवत १८१२ आषाढ वद्य ४
[२७ जून १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतमाउ स्वामीचे सेवेसी.

पो गोविंद बल्ल [बुंदेले] सा नमस्कार विनती उपरी येथील कुशळ तां आषाढ वद्य ४ जाणून स्वकीये कुशळ लेखन करीत असिले पाहिजे विशेष. प्रस्तुत आपणांकडून पत्र येउन वर्तमान कळत नाही. तरी सविस्तर लिहिले पाहिजे विशेष. आम्हाकडील वर्तमान तर पुरवणीत लिहिले आहे त्यावरून अवगत होईल. श्रीमंत रा दादा स्वामी व रा मल्हारजीबाबा सुभेदार देशास गेले. आम्हासही बोलावणे आले आणि पाच साले जाली सरकारी हिसेब फडशा करणे आम्हासही जाणे. तुमचा मार्ग पहात होतो. त्यास तुम्हीही सत्वरच याळ. निकाल जाला तिकडील तर तुमचे येणे होईल. नाही तर चार महिने राहाणे लागेल. वर्तमान सविस्तर लिहिले पाहिजे. आम्ही येवज सरकारी भरिला. शहरी व उजेनीस त्याचा तपसील रा आपासाहेबाचे पत्री लिहिला आहे त्यावरून अवगत होईल. आम्ही सत्वरच देशास जाउन. वरचेव वर्तमान लिहित जावे. आम्हांकडे तेनाती फौज होती ते देशास गेली. फौज नाही. रा अंताजी मानकेस्वर आले आहेत. त्यास पहावे त्याची फौज येते किंवा नाही येत, त्यास मागाहून सविस्तर वर्तमान लिहून पाठउन देनो. वरकड वर्तमान पुरवणीत लिहिले आहे त्यावरून अवगत होईल. रा [जयाजी] आपास पुरवणी लिहिली आहे [ती] येकती वाचून दाखड[न] उतर पाठविजे. बहुत काय लिहिणे कृपालोभ असो दीजे हे विनती.

जाली, वापुस ताप येत आहे. प्रस्तुत या सुकामी गर्भीचा आतिशये आहे. लस्कारचे लोक बहुत दुखण्याने पडिले आहेत. सर्वत्र येकांच्याने ताप येतो. मरतातही फारच. यामुळे वापु पांचसे स्वारांनिशी काली छ १ रमजानीं येकु[थू]न निघोन पुढे सिरोज शाहाडोऱ्याचे सुमारे हळूहळू गेले आहेत. ग्वालेरचे पत्र आले हणजे श्रीमंत कूच करुन दरमजल जातील. बरकड खेचीचे पारपत्य करणे होते परंतु दुर्त तो प्रांत राहिला. शाहाडोऱ्याचे पारपत्यास पेशजी दोन हजार फौज पाठविली आहे. तेथील काय होईल ते पहावे. बरकड कामकाजे होतील ते दुर्त सर्व राहिली. देशाकडील वर्तमान तर श्रीमंत पुण्यांत आले. राजेश्री माहादोबाबाबा कर्नाटक प्रांताहून स्वारी बरीच करुन आजपर्यंत मिरजपावेतो आले असतील. त्या प्रांते नक्ष बराच राहिला. आपणांस पत्रे आलीच असतील परंतु आम्हांकडे लिहिले आले ते आपणांस लीा आहे. राजेश्री विष्णुपंताची [गदरे] भेट जालियाबर सविस्तर कलेल हणोन लीा त्यास खेचीस भेट व्हावयाचा करार होता. खेचीचा मजकूर राहिला. कलले पाहिजे. १ आपण त्याजकडे पत्रे पाा आहेत ती आम्हा कडे येतील तेव्हां सर्व कलेल. आमचे शरीरी समाधान नवते परंतु आता आरोग्य आहे. पुणेयाहून तुमचे घरची पत्रे आली नाहींत. आळियाबर पाठउन देउ. तिकडील तह जाल्याचे वर्नमान लिहिणे. लोभ असो दीजे हे विनंती.

सेवेसी वावुराउ केशव साा नमस्कार. सदैव संभाल केला पाहिजे. कृपा कराची हे विज्ञापना.

लेखांक [३१३]

श्री

* संवत १८१२ ज्येष्ठ शुद्ध ९

[१८ जून १७५५]

राजश्रियांविराजीत राजमान्य राजश्री

रामाजीपंत स्वामी चेंसेवेसी.

पोा जनार्दन बलाल [भानु] साां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ * ७ रमजानपावेतो क्षेम जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. तुम्हांकडून वहुत दिवस पत्र येउन वर्नमान कळत नाही. तरी येसे केले न पाहिजे. सदैव पत्र पाठउन नवळ विशेष वर्तमान बरचेवर लिहित गेले पाहिजे. आमचें शरीराचें वर्तमान तरी शिबलेदिवस अधिकोतरच रोगाचें प्रावल्य आहे. तुम्हास कळावें म्हणोन लीा असे. तुमचें घरची सर्व मनुष्यें सुखरूप आहेत. कांही चिंता न कीजे. १ आमचे शरीराविशी तुम्हीं चिंता किमपी न कीजे. शरीरभोग आहे तो भोगीतच आहों.

लेखांक [३१६]

श्री संवत् १८१२ आषाढ वद्य ४
[२७ जून १७५५]

• पुरवणी राजश्री रामाजीपंतभाउ स्वामीचे साो

बिनंत उपरी वर्तमान येणेप्रों

पा भुगावी आम्ही विकारीदास याजबाा बाकी येणें त्याजबाा तुम्हीं व तात्यानी सांगितले की रुपये उगवणे. त्याजवर आम्हीं फौजेनसी जाउन हवाला येक लाख तीस हजाराचा पेकी ऐसी हजार बाकी राहिली ते आम्हीं ठिकाणी लावली. काही तहसील दाढावारा वसूल जाले तो राा मल्हारजी बावाकडून फौज व रामाजी पवार वगरे येउन परगणेयात तीन महिने कजिया केला. राजेयापासून पैका घेउन गेले. आम्हीं काही बोलिलो नाही. उलढे आमची फिर्याद कुष्णाजी केशव रामाजी सखाजी रामाजी पवार याणी श्रीमंत राा दादा स्वामीजवळ केली. की येक लाख तीस हजार रुपये हे दरसाल सरदार व गागाधरपंत रामाजीपंत गोविंदपंत खातात. तीन साले जाली. तीनसाला रुपये गोविंदपंतापासून घ्यावे. याप्रमाणे वढतसी इतराजी आम्हावर केळी ते पत्री कोठपावेतो लिहावी. आम्हीं तपसील उगउन लिहिला परंतु तो त्याचे चितास न आला. पत्राचे उतर न पाा. आम्हांस सागोन पाा की पुणेयास जातो श्रीमंत राा भाउस्वामीकरवी तुमचे पारपत्य करितो. तीन लाख नवद हजार

पुणेयास तुमचा येवज लस्कारी घेतला होता तो राा हरीपत याजवळ रुपये देउन कवज आली. तिची नकळ पाठविली आहे. पावेळ. रुपये ४७४० सतेतालीसे चालीसाची

बिठुरचे शब्द लाउन लिहिले. त्यास सोबती माहादुर्जन. काही त्याचे गुण सांगता येत नाही. असो. वारवार रड काये लिहावे. मेटीनंतर साधंत बोलोन. आमचे वस्तु होईल त्यास अंतर कसे करुन. वरचेवर लिहित जाउन.

वरकड स्वकीये आर्थ लिहिला बुदेले याजकळील ब्यास हे राज्य बुडालेसे विसते. काही जीव राजेयात कारभारियात राहिला नाही. मीही येथे फार फसलो आहे. ब्यास मीही तुमचे कार्यास अंतर न करी. मेटी नंतर सर्व बोलोन.

राा गगाधरपंततात्यानी आम्हांसी परम व्देतार्थ धरिला जे राा आपा व [रामाजी] भाउ याजवर मजा करतात. हे दुख त्याजला फार जाले आहे. पुणेयात जात आहेत. घालमेळी करावी. कितेक मनसुबेयाधर आहेत. पुढे मीही श्रावणमासी पुणेयास जातो. तुमचे कूपेकरुन सर्व उतमच होईल.

लेखांक [३१५]

श्री

* संवत् १८१२ आषाढ वद्य ४

[२७ जून १७५५]

पुो राजश्री [जयाजी] आपासाहेब गोसावी यासी.

विनंती उपरी. मुजफरजग ^{१०२} गारदी श्रीमंत राा नानास्वामीनी चाकर ठेविला होता त्यास राा महादाजीपंत बावासमागमे गेला होता. त्यास तो रकम. हरामखोरी करुन सावनूरकर पठाण याजकडे जाउन चाकर जाला. वरकड फौज देशास आली. सलाबतजग यास श्रीरगपटणचे चालीस लाख रुपये मिलले. काहीसी भूक हरली आहे. आर्काट अग्न भगानगर येथे छावणी ते करितील. दरबारी कामकाज बारीक होत चालिले आहे. तपसील काये लिहावा. आपण सर्वजाण आहेत. साराष सत्वर दरबारी येणे होईल तर उत्तम आहे. दुसरा मनसुबा आहे. मनसूरअलीखान याचे पुत्र अमानसिगासारखे सिरडी जाले. नित्य नागवी तरवार आणि मध्य भक्षून बाहिर निघावे गाढव घोडे उट हती जो मिलाळा तो जिवे मारावा. फौज तमाम उठोन गेली. तलब मिलत नाही. त्यास अवध व प्रयाग खालीच दखल आहे. जर हा मनसुबा होईल तर बहुत उत्तम आहे. मारवाडचे कार्य करुन दरबारी यावे आपणांस येथे काढी इतके जुज न होता दोनी सुमे अनियासे हाती येतात. तमाम मुमिये रजवाडे सर्व शामिल होतील. निमित्यास मात्र फौज पाहिजे. हे वर्तमान मेटीनंतर सागोन. मल्हारजीबावाचे ते पुत्र आहेत. आपण जाणताच आहेत. जर आपण मारवाडचे कार्य करुन सत्वर देशास येतात तरी हे दोन सुमे आपले पदरी पडिलेच. याचे वर्तमान मागाहून साधंत आपणांस लिहून पाठउन. जागा थोर आहे. बदोबस्त मनसूरअलीखान याचा मोडिला. तिलमात्र राहिला नाही. आपण त्याचे बदोबस्तावर जातील तर [तो] तिलमात्र राहिला नाही. मेटीनतर साधंत सागोन. हेही कार्य ठीक करुन ठेविले आहे. अम्हास आपणांकरवी हे कार्य करवणे. येथे कजिया पडणार नाही. सहजात जागा हस्तगत होईल. आपणांस वरचेवर लिहित जाउन. बहुत काय लिहिणे कृपा करीत जावी हे विनंती.

(१७२) पहा ले ३८ टीप १६ हा मुजफरखान गारदी मालकीच्या युद्धानंतरच १७५२त पेशव्याकडे आला असे आता सप्रमाण सिद्ध होते [पुरदरे १ ले २९३, ३६७] वरील दोन्ही पत्रे जनवरी १७५३ची असून संपादकास त्याच्या तारखा साधल्या नाहीत. सुखठणकराच्या मृत्युनंतर १७५५त महादाजी पुरदरे याने कर्नाटकात स्वारी केली त्यात हा गेला असता तिकडेच शत्रूची आज्ञा भेटला तो पुढील वर्षी 'पुन्हा येउन पदरी पडला त्यास ठेवावा की न ठेवावा हा बुध्दिवाद' राधोवास विचारला असता त्याचे उत्तर अनिश्चित होते. [पेद २८ ले. १४५]

वावास हगवण वहुत जाहाली. वाचावयाचा पदार्थ नव्हता परंतु देवी उपाये फार केल खेणेंप्राा.

१ हती

१ घोडा

१ किरकोली दाणे

१ नवपावेतो तुळा रुयेयाची केली

येणेप्रमाणे केली. अद्याप बरे नाही. माघारे आले. श्रीरगपटणात गेले नाही. मिरजेवर आले. पुणेयास दाखल होतील. १

मुजफरजग रुसोन सावनूरकराकडे गेला. मोठी हरामखोरी केली. १

उतावलीने पत्र लिहिले आहे. यागाहून सायंत लिहून पाठउन देतो. आम्हास वरचेवर वर्तमान लिहित जावे. १

गिरीवर महिनाभरे व्हिरेचे देवळात होते. गाव मारुन गर्द जाला. किला सावधान जाला. उठोन आले. आरमार रामाजीपत [घेउन] सुवर्णदुर्ग येथे आले. समसेरवहादर वगोरे पुणेयांत येतील. किले घेतले त्याची नावे.

१ सुवर्णदुर्ग

१ कनकदुर्ग

१ फतेगढ

१ अवचितगढ

१ थाणकोट

१ मडणगढ

१ पालगढ

७

१ खोरपाटणची गढी

८ येणेप्रमाणे घेतले आहेत.

येणेप्रमाणे वर्तमान आहे ते लिहिले आहे. वरचेवर होत जाईल ते लिहित जाउन. तुम्ही नवलविशेष वर्तमान लिहित जावे. वहुत काय लिहिणे कृपाळोम असो दीजे हे विनंती.

आयोच्या प्रयाग खाली पडिली. मनसूअलीखान यांचे पुत्र [शुजा] सिरडी जाला. काही जीव नाही. त्यास आम्ही सर्व ठीक केले. येक तुमचे साहित्य पाा आपासाहेब दोन महिने फौजसुधा आल्यास दोनी सुमे जुज न होता दस्त होतील. या विचारात राा भल्हारजीबावा आहेत. पुणेयास जाउन हे कार्य आपले स्वाधीन करुन ध्यावे या मनसुबेयात आहेत. जर राा आपासाहेब मारवाडचे कार्य करुन सत्वर पुणेयास येतात तर हे कार्य राा आपाचे हवाली होउन कार्य होय तेच करावे. त्यास याचा विचार काये ते सत्वर लिहिल्या पाहिजे. या गोष्टीची वाच्यता न होये. राा आपासाहेबास येकाती पुसोन उतर पाा. वहुत काय लिहिणे कृपाळोम असो दीजे हे विनंती. हे दोनी सुमे खाली आहेत. श्रीमंत आपले खालसे ठेउन तुमचे स्वाधीन करितील. चिंता नाही. हे विनंती.

रुपये तुम्हापासून पुणेयात घेउन म्हणून मनात येईल ते बोलोन इतराजी केली. त्याजवर आम्हीं सागोन पा की बरे. वाकी भिकारीदास याची राहिली ते वसूल करावयासी मार्गसीरमासी गेलो. समागमे गंगाधर बाजीराव व मानाजी पाइगुडे होते. परगना चोरुन मी भक्षिला नाही बरे. चोर दोनी सरदार व गंगाधरपंत रामाजी पंत होतील तेथे पाचवा मीही होईन. कोणी तरी इनसाफ करील. रुपये कोणी चोरिले नाही. कोणी या गोष्टीस भीत नाही. या प्रमाणे श्रीमंत रा दादा स्वामीस रा सखारामपंती सागोन इतराजी करविली. त्यास यात कांही कोणी चोरी केली नाही. दरवारी आम्हासही जाबसाल होतील. चिता नाही. तुम्हास कडचे म्हणून लिहिले आहे. प्रसगी गंगाधरपंत होते त्याणी काही जाब साल केला नाही. आम्हास उलटे लिहितात की तुम्हीं श्रीमंत रा दादा स्वामीस तसे सांगितले नाही. तस्मात तात्याचाही पेच दिसोन आला. असो. पेच करुन अमचे काये करणार. जावसाल प्रसगी करुन. १

प्रो महादाजीपंतबाबा कर्णाटकास गेले. सावनूर बकापुर वगरे विदनूरपावेतो गेले. तीस लाख रुपयेपावेतो खडणी जाली. श्रीरंगपठणास जावे तो अगोदर मोगल तेंथे जाउन चाळीस लाख रुपये खडणी त्यांनी केली आणि महादाजीपंत

मीही कोणासी कजिया केला नाही परतु त्याचा स्वभाव त्यास इलाज काये. असो. आम्हीं तो तात्याची परम श्रेह धरितो आणि ते मनापासून आमचा घात तो इच्छितात. असो. वरचेवर तुम्हास लिहित जाउन. १

मारवाडचे वर्तमान काये. तह होते किवा नाही. छावणी होईल किवा निकाल निघेल ते लिहिणे[ले] पाहिजे. १
रा विठ्ठराउ सिवदेव फार खराब जाले. कर्ज फार जाले. हैराण जाले. किला येणे प्रा देउन धावासा ठहराव जाला.

१ जकीरा पहिला पातशाही नोफसुधा निमे जाटास धावा. निमे सरकारी धावा.
१ नवा जकीरा जाटाचा जाटाने दरोवस्त न्यावा.

१ पाउण लाख रुपये नकद जाटास धावे.
१ विठ्ठपंतानी जी ठाणी मुलक घेतला तो सर्व जाटास दिली गढीसुधां.

१ लाख रुपयेयाची जागा खुतोलीचे व रतनगडचे गाव इनाम दिले.

१ जो तालुका पहिला त्याजकडे होता त्याचा मामला सदांमदप्रा धावे. येणेप्रो ठहरले. किल्यावर ठाणे बसउन देशास जातील.

आगरेयावर फौज गेली. त्यानी सात किले व खोरगटण घेतले. रतनागिर आंजनवेल जयेदुर्ग सर्व राहिले. रतना

लेखांक [३१९]

श्री

[जुलै १७५५]

श्रीमत राजश्री रामाजीपंतभाऊ स्वामीचे सेवेसी.

पो। त्रिंकराव गोपाळ कृतानेक सां। नमस्कार विनती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीय कुशल लेखन केले पाहिजे विंगष. सांप्रत स्वामीकडील काही पत्र येउन वर्तमान फळ येत नाही याजकारितां चित सन्धित आहे. तरी आपणांकडील अनंदांरुपाचे वर्तमान लिहून सतोशवीत आसिले पाहिजे. येथील वर्तमान स्वामीच्या कृपावलोकने येथारिथित आहे. कितेक तपसीलवार श्रीमत राजश्री आपासाहेबाचे पत्री लेखन केले आहे त्याजवढन सेवेसी श्रुत होईल. येथील झडती^{१३३} सन अर्वाची पाठविली आहे. सांभाळून घेणार स्वामी समर्थ आहेत. विशेष काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनती.

लेखांक [३२०]

श्री * संवत १८१२ श्रावण शुद्ध ४

[११ अगस्ट १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाऊ स्वामीचे सेवेसी.

पो। गोविंद बलाल [बुदेले] सा। नमस्कार विनती उपरी येथील कुशल ता। श्रावण * सुध ४ मा। आया प्रात अतरवेद जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत असिले पाहिजे. यानंतर काली प्रहर दिवस राहता तुमची पत्रे नागोरचे मुकामीची आली ती पावली वाचून पाहोन आनंद पावलो. त्यास अस्तमानी पत्र इटावेयाहून आले. त्यात वर्तमान राजे माधोसिंग याणे आपले कारभारी यासी बोलिळा की रा। ज्ञयाजीआपा यांचे कार्य आम्ही केले. आसे बोलिळा. त्या मुसदीयाने इटावेयात कोणी त्याचा सोझा होता त्याजला लिहिले. त्याणे आम्हास लिहिले. दुसरे आगरेयाहूनही याचप्रमाणे आले. वर्तमान या प्रकारे श्रावण वद्य २ भू। वारी रा। आपासाहेब स्नानास चवकीवर उघडे बसले त्यासमई रजपुत दगेयासी आला. सुरी घेउन अस्तनीत लपउन त्याने पोटात दोन सुरी चाळविली या प्रकारे दगा जाला. रजपुतही मारला. त्यास रजपुत मारला तर काये वाचला तर काय. रा। आपासाहेबाची लाखाचे पालणेवाले. त्या लस्कारचे तहकीक लिहिले नाही. आले

(१७३) या पत्रावर मोठीचा खर्चा मुलानी गिरविला असून काही हिशेबी टाचणेही कोणी केले आहेत पत्र तत्कालीन दिसते ते खरे असल्यास ही केवल उज्जनचीच झडती समजली पाहिजे कारण तीन साला झडत्या तयार नव्हत्या असे अन्यत्र पावले जाते [कास ले १४७, १४८]

लेखांक [३१७]

श्रीशंकर

* संवत १८१२ ज्येष्ठ वद्य ९
[३ जुलै १७५५]

आशिर्वाद उपरी. ताा जेष्ठ वद्य नवमी जाणोन स्वकीये लखन करणे विशेष. तुमचे पत्र काली साहूकाली आले. इजारे गाव धावे त्यास रामाजी जगन्नाथ याच्या गुमास्ता म्हणतो की विना साहूकारी निशा गाव देणार नाही त्यास पचोळा गावकरी व कितेक प्रकारे सांगितले परंतु मानीत नाही म्हणून कितिक विचारे लीा तरी रामाजीस आम्ही सांगितले त्याणी मान्यही केले असतां दगाबाजी करितो. काही चिंता न करणे. त्याचा बंदोबस्त करणे तो आम्ही तेथे आलेउपरी करून. दरबारी लिहिले आहे त्याचाही जाब येतील. ते गोष्टीची चिंता काये आहे. प्रस्तुत कबिलेस रवाना करणे आहे. हे गडबडीमध्ये आहे. शुक्रवारी प्रस्थान कोठडीस आहे. मजलदरमजल जाणे लागते. याची रवानगी केलिया तेथे येतो बरखंदाज पनास त्यास हिसेव करून तयार करून येथे पाठवणे. स्वारही येथे पाा म्हणजे देणे घेणे ते देउन नाळबंदीही करावी लागती याकरिता सत्वर रवाना करणे. तुम्हीही बुधवारी साईकाली येणे. ब्रह्मत काय लिहिणे आशिर्वाद.

लेखांक [३१८]

श्री

* संवत १८१२ आषाढ शुद्ध ११
[१९ जुलै १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाउ स्वामीचे शेवेसी.

पो गणेश कृष्ण [पेंडसे] सां नमस्कार विनंती. येथील कुशल ता * ९ सवाल मुा थालनेर तापीतीर सुखरुप असों विशेष. आपण पत्र पाठविले ते पावोन बहून सतोष जाहाळा. लिहिले वर्तमान सविस्तर कळलें याप्रमाणें संदं व लिहित असावे. सल जाहळा म्हणोन आइकितो व आपणही संकलित लिहिले होते त्यास मज जाहालियाचे तथ्य वर्तमान सविस्तर लिहिले पाहिजे. इकडील वर्तमान तर श्रीमंत [राधोवा] दरमजळ थालनेरपर्यंत आले. पुढे श्रीत्रंबकेश्वरास जाउन पुण्यास जाणार. राजश्री मल्हारबा इंदुरास राहिले. पंधरा रोजा मागाहून यावयाचा करार केळ आहे. आपणांस कळवे म्हणोन लीा असे. १ कोकण प्रांताकडील नवलविशेष नाही. जे आहे तेच आहे. लोम असो दीजे हे विनंती.

राजेश्री चिंतोपन [वळे] व रामरावजी स्वामीस सां नमस्कार. यादवराव खुशाल आहेत. हे विनंती.

आहे व्याप्राच आहे. विशेष लिहावया योग्य नाही. राजेश्री बाबुराव लिमये येथे सुखरूप पावले. श्रीमंत राजेश्री दादासाहेबास कन्या जाली. ती आठ महिन्याची. दुसरे दिवसी वारली. सोा ज्ञानकीर्तीचाईचे शरीर अगस्त आहे. श्रीकृपेंकरून खावदाचे प्रताप सर्व गोष्टी उत्तम होतील. आपले घरचे पत्र पाठविले आहे. बहुत काय लिहिणे कृपा लोभ केली पाहिजे हे विनंती.

[पिढ २८ ले. ६३] अर्थात 'ब्राह्मणराज्यास निरोपद्रव जाला'. [पिढ २८ ले. ८५] 'पुण्यक्षेत्रें देवा-ब्राह्मणाची स्थले असतील ते सर्वाही उद्यार व परपाल करणेंस्तव श्रीमंतसाहेबी अवतार केला आहे' [पिढ २८ ले ८७] असे सर्वतोमुखी होणे इष्ट होते एवच 'सप्तऋषीना बबोवस्त कण देवान्ब्राह्मणाची स्थापना जैसी पूर्वी केली त्याप्रो सर्वासि सुख देउन प्रतिपाल स्वामी करणार' होते [पिढ २७ ले ७५] 'येकाती मकारपूर्वकास [होलेकरास] सांगितले की श्रीमंत ईश्वरी अवतार आहेत' [पिढ २७ ले. २१९] 'अपूर्व गोष्ट जाली येक गृहस्थ पीटशुलाची व्यथा हाणून कोल्हापुरास लक्ष्मीजवळ सेवेस गेला तेथें स्वप्न जाले की पेशव्याचे तीर्थ घेणे त्याचरन पुण्यास येउन पूजासमयी भेट घेतली ते गोष्ट विनोदावर नेली तो पेशव्यास स्वप्न जाले की तीर्थ देणे तीर्थ घेताच व्यथा दूर जाली अथे प्रसंगी होते त्यानी सांगितले' [खड ३ ले ४३३] 'श्रीवज्रयोगिनीची आज्ञा जाली की देवालये वाघाचे. त्यास येकाच्या इव्याने वाघो नये सर्वापासून मित्रा मेलउन वाघाचे म्हणोन आज्ञा' जाली असे देवी चमत्कार पेशव्यास होळ लागले [पिढ ३२ ले १६६] 'युगातरी रामकृष्णादि अवतारचरित्र तैत्तिच याही मन्मत्री देवब्राह्मणसरक्षणार्थ अवतार प्रसिद्ध श्रीमंत मामना विभवतोमुखी कीर्तिविस्तार कर्नाटकपर्यंत पावला' [पिढ २८ ले १६१] 'पातशाही स्वामीची होती. [पिढ २१ ले ९६] 'हिंदु-स्थानचा बबोवस्त स्वराज्यादाखळ होईल' [पिढ २७ ले १६१] 'साराखा महाराजास ईश्वर पृथिवीचे राज्य जाले. असा प्रताप ब्राह्मणात तो कोणाचा येकिला नाही' [पिढ २१ ले १६३ पिढ २७ ले २१९] 'स्वामीच्या तेजोप्रकासे हिमालयपर्यंत छत्र फिरते' [पिढ २ ले ९९] 'तुम्ही सावकार लोक आज्ञी पातशाहा श्रीमंत आहेत'. [पिढ २४ ले १९१] असले अनेक उतारे वेता येतील पण त्यातून निष्पत्ति निघावयाची ती बरील उताऱ्यातून बहुतेक उतरलेलीच आहे ही सर्व भाषा शाहूनतरची होय यापूर्वी तिचा उच्चार क्वचितच आढळतो आणि तो किंचित भिन्न प्रकारचा. 'तोहमास गाढवीचा खेळ आला नवी सुष्टी जाहाली' [ऐच क्र ४ ले. ८] यालाच 'पातशाहीगर्दी' असे नाव तत्कालीन लोकानी दिले आहे [पिढ २८ ले १६] 'तोहमासकुलीने बाजी जिंकली परंतु ओष्या हिंदुनी हिंसत बाधल्यास हिंदुचीच पातशाही होईल छत्रपती पातशाही इच्छिप्त नाहीत. जीर्णवार केल्यास सतोप मानतील' [ब्रज ११८, ११९] 'रामाचे मनी राणाजीस दिलीत तक्ती वसवावे सबब जे बरकड राजे थोर असल्यासही रासस सलाम करणार नाहीत आणि राणाजी व राजेशी एकच आहेत बवळ राणा-जीस बसड हिंदु राजे सर्वत्र स्वारीची प्रतीक्षा करितात'. [ऐच क्र. ४ ले. ७] हे परबक्र निस्त-जीस बसड हिंदु राजे सर्वत्र स्वारीची प्रतीक्षा पडले वारसाचा प्रकन उद्भवून [पिढ १९ ले १६०] 'शाहूचा जिवात्मा तो वाह्यात्कारी त्याचे सेवक अतर्पामी स्वामीचे शाहू कैलासावास केल्यावर दोही राज्यावर सत्ता स्वामीची आणि आम्ही सेवक स्वामीचे आन्नेप्रमाणे वर्तणूक कर' [कास. ले २४६] रामाचे वैभवाची वृषी व्हावी यास्तव बहुत श्रम केले कावडी रामेश्वरास

वर्तमान आइकताच भोजन न केले. निद्रा दोन रोज लागत नाही. त्यास आमचे कासिद गेळे आहेत त्यास हे वर्तमान काये कसे जाले याचा तपशीलवार वर्तमान लिहिले पाहिजे. ईश्वर हे लटके केले तर कोट गुणे बरे आहे. अम्हांस परम संकट अम जाले आहेत. तपशीलवार वर्तमान लिहिले पाहिजे. हे वर्तमान आइकोन काहीच वर्तमान लिहावयासी सुचले नाही. बहुत काय लिहिणे कृपाळोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३२१]

श्री * संवत १८१२ श्रावण शुद्ध १२
[१८ अगस्ट १७५५]

श्रीमंत राजेश्री रामाजीपतभाउ स्वांमीचे सेवेसी.

विनंती पोष्य बापुजी बळाल [फडके] कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनती. येथील कुशल ता छ * ९ जिल्कादपावेतो यथास्थित असे विशेष. आपण पत्र पाठविलें ते उत्तम समई पावोन संतोषावाप्ती जाली. ऐसेच निरंतर येणारा वार्तिकासमागमे पत्र पाठउन परामर्ष करीत असिले पाहिजे. छ २७ रमजानचें पत्र पाठविले तें पावले. तेथे लिहिले की नवलविसेस वर्तमान लिहिणें म्हणोन आज्ञा त्यास श्रीमंत राजेश्री दादासाहेब श्रावण शुभ त्रितियेंस पुण्यास दाखल जाले. श्रीमंत राजेश्री नानासाहेबास पुत्र जाहाळा. सातआठ दिवस जालें. श्रावणमासचा समारंभ उत्तम प्रकारें जाला. बारा साडे बारा लक्ष^{१००} लागले पंचावन हजार ब्राह्मण जालें. सातारियाकडील व कोंकणचे वर्तमान

(१७४) 'दाभाडे सेनापती याणी पुण्यक्षेत्राचे ठायी श्रावणमासी धर्मदक्षणा देउन लौकिक सपा-दिला. त्याचा परामभव करून श्रीमती वास्तव्य केल्यापासून दिगत कीर्ति मेलउन आसमुद्रात ध्वज-रोपण केले' असा इतिहास वेदाती देतो [खड ६ ले ४३६] श्रावणमासाचे महात्म बाळून पेशवाईत प्रति वर्षी मोठा समारंभ होत असे त्याला वार्षिक उत्सवाचे स्वरूप प्राप्त झाले उत्सवांचे ते कारण समजले जात असल्यामुळें दानधर्माचे प्रमाणही वाढत गेले या दक्षिणेलाच 'धर्मादाय अथवा देकार' ह्यागत त्यासवधी केवळ दोन वर्षांचेच आकडे उपलब्ध होतात त्यावरून धर्मादायाची कल्पना होऊ शकिले '१६ लक्ष धर्म केला ८० हजार ब्राह्मण मिळाले होते मूठीने बोजळीने चुकटीने दक्षणा दिली मोनून दिले नाही' [खड ३ ले ४३२, ४३३] हा खर्च १७५३चा असून १७५५ साली 'साडेबारा लक्ष लागले ५५ हजार ब्राह्मण जाले' असे फडके या पत्रात सागतो 'भोहराची दक्षणा वाटावी' अशी इच्छा पेशव्याची होती असे अनुमान करण्यास बाव आहे [खड ३ ले ३८७] या धर्मसत्राचे वीज परमार्यासाठी पेरले गेले असले तरी ते प्रपंचाचेही मुख्य साधन होते 'काय निमित्त्य की राज्य या प्रकारचें झाले' [विद २८ ले. ५६] बाहुमहाराजाही सेवकास वाढविले कृपा विणेप करून राज्यमाराचा सर्व यत्न्यार दिलहा [खड ६ ले २७६, ३३६] दिवब्राह्मणाचे पूजास पुण्यपात्र जाले'

सविस्तर वर्तमान कळले. ग्वालियेरचे वर्तमान पूर्वी लिहिले आहे त्यावरून कळलेच असेल. त्याजवर मजलदारमजल देशास आलो. श्रावण शुभ त्रितयेंस पुणियास सर्व मंडलीसहित मुखरूप पावलो. येथे आल्यावर श्रीमंत राजश्री नाना स्वामीस श्रावण शुभ चतुर्थीस पुत्र जाहाळा. आपणास कळावें म्हणून लिहिले असे व श्रीमंत राजश्री दादास श्रावण शुभ अष्टमीस कन्या जाहाली. ती दुसरे दिवशी देवआज्ञा जाहाली व सौ जानकीबाईस बरे वाटत नाही. ईश्वर आरोग्य करील. कांहीं चिंता नाही. तुमचे धरचा कागद घेउन पाठविला आहे ! त्याजवरून सविस्तर वर्तमान कळेल. जानकीबाईस फार बरे वाटत नाही. कळल पाहिजे. विष्णु महादेव [गदरे] याजकडील कारकुनीचे रुपयाविसी लािा त्याची मेट जाली होती. याद पाहिळी. त्याणी सांगितले की लुदेपुरचा येवज आला म्हणजे सर्वाची प्रविष्ट करु. ते सर्व कागद त्यापासीच आहेत तेहीं सत्वरच येणार आहेत. आल्यावर विरहे लागेल. बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३२३]

श्री * संवत १८१२ श्रावण शुद्ध १२

[१८ अगस्त १७५५]

विनती फ़ासीबा थौराताकडे तीर्थस्वरूप राजश्री कुण्याजीपंत मामाचे रुपये येणे आहेत त्याचा वाइदा सन सितचा नालवदी समई तीनशे रुपयाचा आहे. त्यास राजश्री श्यामराव नागनाथ यास सागोन तीनसे रुपये यदाचे त्याजपासून घेउन आपणाजवळ ठेवावे. गेले सालचे तीनसे रुपये आपणाजवळ आहेत ते त्यास येथे आम्हीं दिले. पंधरासे रुपये आपले नारो शंकरपैकी आम्हाजवळ घोडाजी नाईकानी जमा केले आहेत. ज्यास देणे आसेल त्यास देवावे अगर घरी हरीपंताजवळ घावयाची आज्ञा करावी. देउ. कळले पाहिजे ! बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३२४]

श्री * संवत १८१२ श्रावण वद्य ७

[२९ अगस्त १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपत स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य जनार्दन बलाल [मानु] साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ * २० जिल्काद जाणून स्वकीये कुशल लिहित असले पाहिजे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविलें ते पावले. लिहिले वर्तमान सविस्तर कळले. असेच निरंतर पत्र पाठउन संतोषवीत जावे. नवलविशेष अधिकोत्तर वर्तमान आढळत जाईल ते वरचेवर लिहून पाठवीत जावे.

सेवेसी हरि बलाल [फडके] कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनंती. कृपा केली पाहिजे हे विनंती.

पो छ १२ जिल्हेज.

[१९ सितबर १७५५]

लेखांक [३२२]

श्री * संवत १८१२ श्रावण शुद्ध १२

[१८ अगस्ट १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतमाळ स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य गणेश कृष्ण [पंडसे] सा नमस्कार विनती उपरी. येथील कुशल ता छ * ९ जिल्हादपावेतो समस्त सुखरूप असो विशेष. तुम्ही पत्रे पाठविली ती सर्व पावली.

पाठविल्या राज्यप्राप्तीकरिता हवी वाहिल्या' [कास ले ३६] प्रथम जो धर्म गुप्तपणे चालू होता तो पुढे उघडपणे होऊ लागला 'यमुनातीरपर्यंत अमल होउन [पिद १० ले. ८१ पेद १३ ले ४५] अनेक वेळा 'आसिर्वादि फत्ते जाह्नाली'. [त्रच ले ४३, २६, ३६, ५२] 'श्रीमताची दौलत आसिर्वादाची' [त्रच ले २३९] 'आसिर्वादाचा महिमा थोर तन्मुले सर्व गोष्टी अनुकूल आहेत' [त्रच ले २२, २३] आणि 'ब्राह्मणाचे आसिर्वादे दिली काविज केली' अशी पदोपदी प्रचीति येत गेली [ले. ७३] अर्थात दानाचे स्तोम माजावे यात नवल नाही या दानधर्मसि विचुरकर अहिल्यावाई इत्यादिकांनी श्रेयस्कर मानले होते. [मददा १ ले ५, ८१] त्याच्याशी कर्तव्य नसून उगीच दोष देण्याचे प्रयोजनही नाही. केवल तारतम्य न्यायाने महाराष्ट्रधर्मसि ही प्रथा कितपत पोषक होती एवढेच पहाणे इष्ट अमुन त्या दृष्टीने निष्कर्ष काढणे भाग पडते हा प्रश्न तत्कालीन लोकास होवला होता. [ले ३३८] नाही असे नाही 'मोठा दीर्घरोग अवदाली आहे महाराजे हिंदुस्थान व दक्षण या रोगापासून सोडविलेसे होईल. ५० लक्ष प्रति वरणी महाराज धर्म करिताती म्हणून येकितो माझे मते जरी हा रोग दूर जाला तरी त्याजपरिस शतगुण धर्म याजमवे आहे यथार्थ लिहिले आहे' [पिद २७ ले २५१] अशी पुच्छा एका चाणाक्ष गृहस्थाने पानिपतच्या सग्रामापूर्वीच प्रत्यक्ष पेशव्यास केली होती ती वाचनीय होय वार्षिक दानापेक्षा महाराष्ट्रधर्माची चाड पेशव्यास अधिक होती की काय असा सहज प्रश्न उभवतो. त्याचे निराकरण केल्यासिवाय इतिहासाला गत्यंतर नाही. महाराष्ट्रधर्माचा अभिमान वाळगणाऱ्या पुरुषाने स्वामीच्या कर्जाची सोय लावून स्वतःच्या कर्जाची फेड कोणत्या रीतीने केली सोवत्याचे साध्य कितपत केले आणि आपल्या ध्येयपूर्तीसाठी तोफखाना आरमार व फौज किती वाढविली सारांश सर्व महाराष्ट्रमय करण्याची कल्पना मूर्तस्वरूपांत आणून महाराष्ट्रधर्मध्वजारोपणाचे श्रेय किती संपादिले हे पाहू जाता पेशव्याची श्रद्धा या धर्मावर कितपत होती हे स्पष्ट होऊ शकेल. पेशवाई देकाराचे वार्षिक प्रमाण [पिद २३ ले ६६ खड १ ले १३२] आणि 'धर्मादाय चालत आहे तो पाचा लक्षाची दौलत राहोपर्यंत चालवावयासी अनमान कर नवे' [इस. २१ पान १३७] हे बचन लक्षात घेऊन अहिल्यावाईचा दानधर्म कीर्तिकारक असला तरी साम्राज्यसवर्धक नव्हता असा शोध लागला आहे [मोइसं. २४ पान ११०, ११४] तो तुलनात्मक दृष्टीने कितपत न्यायनिष्ठरतेचा आहे याचा निवाडा करण्याचे काम वाचकावरच सोपविणे बरे

लेखांक [३२५]

श्री * संवत् १८१२ भाद्रपद वद्य ६

[२६ सितवर १७५५]

राजश्रियांविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंत स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य जनार्दन बळाल [भानु] सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल
 ताा छ * १९ जिल्हेज जाणून स्वकीये लिहित गेले पाहिले विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते
 पावले लिहिले वर्तमान कळले. राजश्री ज्ञयापास दग्याने रागड[या]नी मारिले. वाईट गोष्ट
 हुजाली. आपासारखे अतःपर माणूस होणे नाही. राजश्री दूतबावर सर्व बोझे पडले आहे.
 तरी तुम्ही तेथे वद्धत सावधपणे असणे. राठोडाचा विस्वास नाही. राजश्री दूतबास पत्र
 लिहिले आहे स्यावरून कळेल. श्रीमंतानी प्यार लक्ष^{३६} हो तिकडे देविल आहेत त्याच्या
 चिठया आळाहिंदा पाठविल्या आहेत स्याप्रोत येवज घेईल. ईकडील वर्तमान तरी नवल
 विशेष ल्याहावेसे नाही घरची सर्व मनुषे सुखरूप आहेत. १ काही चिंता न करणे. राजश्री
 बालकृष्णपंत लिमगे तुम्हांकडून आले. त्याणी वर्तमान सांगितले स्यावरून सविस्तर कळले.
 राा त्रिंबकपंत दिवेकर यास दोनसे हो खर्चास देविले तेव्हाड्याने स्याचा काल चालतो
 असे नाही. घराणदार कुलीन ग्रहस्ताची मुले आहेत. कर्जदार आहेत याजकरिता तुमचे
 हाती दिले आहेत यास्तव उत्तम रीतीने परामर्श करावा. कर्जापासून मुक्त होत तें करावे.
 येखाद घदा मजसु अगर फडनिसी मालन्यांत अथवा स्वदेशी योजून खामसा सागावीच
 सागावी. यदर्शी अनमान सहसा न करावा. स्या ग्रहस्तावर मोठा समय आहे यास्तव
 वारंवार तुम्हास ल्याहावे लागते. याचे उतर स्मरणपूर्वक लेहून पाठवावे. वद्धत काय
 लिहिणे कृपालो^४ असो दीजे विनंती.

(१७६) 'बकील माधवसिंगाचा आहे त्यास आम्ही फौज छावयाविसी ताकीद केली आहे
 काही देईलसे दिसते' हे राधोवाचे कथन [ले ४२] किंवा 'खासा स्वारीची तयारी होत आहे चालीस-
 पनास हज्जार फौजेनेसी येणे होईल' हे पेशव्याचे वचन [ले ६८, ६९, ७०] जसे फौल मिघाले त्याच
 प्रमाणे 'चार लक्ष पाठविले' असे भानु सागतो त्याचा प्रकार होता ही सर्व रकम शिबास पोचली नाही
 'श्रीमंत स्वामीनी देविले लाळ रुपय' ते उजनीस जमा करविले' असे गोविंदपत बुंदेले लिहितो [ले
 ३३३] या समयातील इतर देवघेवीचा व्यवहारही चितनीय होय 'जयनगराकडून तीन लाळ देविले
 होते त्यापैकी एक पैसा आला नाही रोहिल्याचा येवज देविला तोही पावला नाही' असे दागोलकर
 सागतो. [पिद २१ ले ७२] तसेच 'श्रीमतास खर्चास मागितले परंतु छावयास अनमान करितात
 म्हणोन लेखन केले तर येते समयी मागोन पाहणे दिले तर फारच उत्तम जाले नच वेत तर आम्ही
 चाकरलोक आहो. कर्ज हीईल ते तेच वारतील' [कास ले १४८] हे शिबाचे पत्र वाचनीय होय

जयाजी सिंदे यांचे वृत्त लेहून पाठविले त्यावरून चिंतास बहुत खेद जाहाला. अशा सरदारास अशी गत न्हावी असें नवते^{११} परंतु ईश्वरइच्छेस उपाय कोणाचा आहे असे नाही. याउपरी तन्ही राजश्री दत्ताजी सिंदे बहुत सावधतेकरून राहात तो विचार करावा. बहुत काय लिहिणे कृपालोम असों दीजे हे विनंती.

राजश्री लक्ष्मणपंत [वैद्य] स्वामीस सां नमस्कार उपरी. ल्छिा परिसीजे हे विनंती.

पो छ २५ जिल्हेज

[२ अक्टूबर १७५५]

(१७५) जयाजी जिज्ञास दगा कसा झाला याचे कारण जाणण्याची जिज्ञासा सर्वांस उत्पन्न झाली त्याविषयी दाभोलकराचे पत्र पेशव्यास गेले [ले ६८] ते किंवा चिंतोवा वळघाचें पत्र अद्याप उपलब्ध नाही यासंबंधी केवळ दोन पत्रे पेशवेदप्तरात प्रकाशित झाली असून पहिले रामजी पवाराचे असाने असे भाषा सांगते. [पिद २ ले ४८] दुसरे रामराव नारायणाचे होय. [पिद २७ ले ११६] ही पत्रे विचारणीय असून 'रजपुताचा विस्वास व दगावाची सर्व पूरवीच विनती केलीच होती परंतु कोन्हास विस्वास न आला' ही पवाराची उक्ती पत्राघारे उचित वाटते 'दुराग्रह्यांशाली घालून लाव वाचें न कले कोणता प्रकार होईल' [ले २७६] 'दुराग्रह होऊन गोष्ट नासेसे न करावे' [ले २८९] 'केवळ कुभेरीप्रो न गुतावे उतावलीने लोक जाया होऊन कार्य सुधे होणार नाही' [ले. २९१] 'आपाचे वर्तमान कल्ले. मोठा घात जाला सर्व दौलतेचा भार त्यावरी या गोष्टी कोण्टा रीत्या च्हाव्या. पुढील वदोवस्त सरदार मर्द आहेत तुम्ही प्रसंगी आहा. चिंता नाही उपरोधिक नाही. ही सखारामपत बोकिलाची भाषा चिंतनीय आहे [ले ३२९] अस्तु 'आपासाहेब रानानांस चवकीवर बसले त्या समई रजपुत दगे यासी झाला सुरी घेउन अस्तनीत लपउन त्याने पोटात दोन सुरी चालविली रजपुतही मारला गेला' असे गोविंदपत दुंदेला सांगतो [ले ३२०] वकील घोडियावर बसून चौथे आणिक साधक घेउन येउन दगा केला चौथे तेही मृत्यु पावले मग लस्करात गंजनाद जाला अवघे सित जालेत विचार दूढ केला द्वाही जयापाचे पुढाची फिरली. मोचें कायम केले अजमेरीस विचार यावयाचा होता तो राहिला की आता फूटून फळी उचलावी तर बाजी जाते. अवघे फितूर करतील. आता खेळ मोडवा. घाह न सोडवा, आता दद लागले रागड कापून काढावे यैसा करार जाला' हे वर्णन वखरीशी ताडून पहावें [पिद २ ले ४८] तसेच 'दगा च्हावयासी कारण हेच की गोसावी राजसिंग च्हाण व जगनेस्वर माध्यस्तीस आले होते. नागोराहून गोवर्धन खीची आला होता. तो योग घडोन न आला. मग या त्रिवर्गानी जैतसिंग राणावत घेउन येथे आल्यावरी काहीयेंक दिवस सलुखाच्या गोष्टीत रदबदलीस लागलिया गोसावी व च्हाण याच्या अगभूते भारेकरी मानसे होती त्यानी सची पाहून दगा केला' याची वखरीशी तुलना करावी म्हणजे वखरीच्या सिद्धांताची श्रेष्ठता लक्षात येईल 'मकारपूर्वक इकडे आले मागून श्रीमत आले म्हणोनच विजोसिगाने दम धरला. [ति]कडील जावसाल जाला म्हणजे येथील कार्य होऊन येईल' हे बळघाचे विवेचन [ले. २११] रामोवाकडकणीराम याचे आगमन [ले. ३०६] आणि पेद २ ले. ४९ पेद २१ ले ७४, ७७ या तीन पत्रातील नामावली वखरीच्या साहित्यपत्राशी जुळवून जें सार शास्त्रीयरीत्या निघेल ते सशोधकानीच काढावें हेच श्रेयस्कर होय.

शुध नाही. अद्याप त्याचा कारभार निर्गमांत आला नाही. काय ठराव होईल तो पाहावा. सातारियाकडील वर्तमान तरी दोनतीन महिने सिदमट टकार व विठ्ठराव बाबाजी जाधव याचा दिवाण आले आहेत परंतु आद्याप करारांत गोष्ट आली नाही. मुख्य गोष्ट परस्परे यास व आईसाहेबास इतवार कोणांचा पुरत नाही. याचे मानस राम] राजा आधी बाहिर काढावा मग मेटीस जावें. त्याचा आशय आधी मेटी व्हाव्या मग जों विचार करणे तो करावा. याप्रोा दौन दोघाचे मनसवे आहेत. तेव्हां मेटी कशा होंतील. या प्रकारचे वर्तमान आहे. आपणास कळावें म्हणोन लिहिलें असें. † बहुत काये लिहिणे † लोम असो दीजे हे विनती.

लेखांक [३२७]

श्री * संवत १८१२ आश्विन शुद्ध ९
[१३ अक्टूबर १७५५]

चिरजीव राजश्री रामाजीपंत या प्रति विसाजी दादाजी [आठवले] आसि वार्द उपरी. येथील कुशल ता आस्विन * शुध नवमी मुा पुणे जाणून स्वकीये लिहित गेले पाहिजे विशेष. बहुत दिवस पत्र येउन वर्तमान कळत नव्हते त्यास श्रावणमासचे पत्र आले व आगोघर येकदोन पत्रे आली त्यावरून साकल्य वर्तमान कळलें. राजश्री जयापास दुस्तानी दगा केला. बहुत काम जवून जाले परंतु ये गोष्टीस काहींच उपाये नाही. त्यामार्गे राजश्री दताजी सिंदे व राजश्री जनकोजी सिंदे आहेत. कोणेविसी जुमस खातातसें नाही. मसळत भारी पडिली आहे. तुम्हीं बहुत सावधपणे असिले पाहिजे. राजश्री दताजी सिंदे व राा जनकोजी सिंदे यास पत्रे पाठविली आहेत.

म्हणून त्याचा कारभार निर्गमांत आला नाही' खड ३ ले ४६४, ४६५ ही पत्रे या प्रसगाचीच असून 'मल्हारजी होलकर याचे चिंतात होते की सख्य करून द्यावे' परंतु त्याच्या मध्यस्थीने ते घडले किंवा नाही हे सांगवत नाही तथापि एवढे खरे की 'उभयपक्षी समजावीस होउन समान वाटणी वीलतेची करून समाधान करावें' असा निश्चय' पेशव्याने ठराविला [खड ३ ले ४६९] भाऊवदकी प्रथम भोसलेकुळात उम्दवून पुढे ती नागपुरकरात प्रबल झाली तेव्हा शाहूनी 'तिजाई सरजाम देउन रघोजी भोसल्याचे समाधान केले' [खड १ ले १६३ पेद २० ले ५] आणि स्वतः कोल्हापुरकराची वारणेचा तह वाटणीदाखल केला [कास ले १४, १९, २०] अतः समयी रघोजी भोसल्यानेही आपल्या मुला-विषयी व्यवस्था करून ठेविली होती [खड ३ ले ४७४] तिकडे दुर्लक्ष करून 'समान वाटणीस' समति दिल्याबद्दल पेशव्यास दोष देता येत नाही हे वरपायी खरें आहे पण वाटणीची पाळी स्वतः वर आली तेव्हा हे तत्व मात्र सचले नाही मग इतरासाठी ते का मानवले असा साहजिक प्रश्न उम्दवतो आणि या शोरणाचे जे दुष्परिणाम घडले ते विचारणीय होत एवढेच येथें सुचवावयाचे आहे

पं पोा गणेश कृष्ण [पेंडसे] साा नमस्कार विनंती. मागे आपण पत्रे पाठविली ती पावली. सविस्तर कलेले. याचप्रोा सदैव पत्री संतोषवीन असावे. घरचा लाखोटा पाठविला आहे त्यावरून कलेल. घरी सर्व सुखरूप आहेत. लोम असो दीजे हे विनती. राा आपा जोसी यांस साा नमस्कार प्रविष्ट करावा हे विनंती.

लेखांक [३२६]

श्री

[१७५५]

राजेश्री रामाजीपंतभाउ स्वामीचें सेवेसी.

विनंती उपरी. ईकडील वर्तमान तरी राजश्री मल्हारबा चांदवडास आले आहेत. त्याचे कितेक मुदे होते ते श्रीमंत गजेश्री दादासाहेबानी मान्य केलेच आहेत. परंतु लौकर पुण्यास यावयाचा विचार दिसत नाही. कित्याचे बगंरे कितेक मनसबे घातले आहेत. त्यास रात्रश्री राघो लक्ष्मण आले. त्याणी श्रीमंतास सविस्तर वर्तमान सांगितले त्यावरून लखानसाहान कामकाज होती ती केली. याउपरी येतीऱ्से दिसतें. येथे आल्यावर मेट जालीवर नवलविशेष वर्तमान जालियावर लेहून पाठउ. आगरे याजकडून राा पुरंघरपंन आले होतें त्याच्याने बोलीचा ठराव जाला नाही. श्रीमंतानी त्यास आज्ञा केली की रत्नागिरी जयगढ विजयगढ अंजणवेल गोवलकोट इतके किले घावें तेव्हां सख्य करावे. पुढें चाकराप्रमाणे वर्तवें. विजयदुर्ग आणिख येकदोन किले ठेवावे याप्रमाणें जालें तरी सख्य होईल म्हणोन आज्ञा केली. त्याच्याने कबूल न करवें. अंजणवेल गोवलकोट मात्र देउन सख्य करावा हा विचार होता परंतु राहिला आणि निरोप देहून आगरे यांकडें पाा आहे. आपणांकडील दामोदर रघुनाथ पाठविलें आहेत. याप्रोा मान्य केले तरी उत्तम नाही तरी पारपत्य उत्तम प्रकारे होईल. कर्णाटकाकडील मजकूर तर मुजरफरखान लढाडी करून गेलां तों सावनूरकांकडें राहिला त्याणे त्या प्रांती दगा आरंभिला आहे. सोंघे बगंरे ठिकाणाची खंडणी घेतली. सरकारची ठाणी त्या प्रांती आहेत त्यास तसदी देणार आहे यास्तव तिकडें फौजा रवाना करणार. समजाविसीस प्रारंभ जाला आहे. पथके रवाना करितील खासा लभन जालियाखेरीज दूर जात नाही. बाहेर निघोन चहूकडें अबाई घालावी फौजा जमा कराव्यां याअनवये दसरा जालियावर बाहिर निघतील. राजश्री रघोजी भोसले^{३०९} याचे पुत्र येथे आले आहेत. परस्परें बंधूत चित

(१७७) 'फाल्गून शुभ त्रितीया सुक्वारी' म्हणजे १४ फरवरी १७५५ रोजी 'रघोजी भोसलें नागपुरकर भात जाले. त्याला चार पुत्र होते'. [पिढ २० ले ८०] त्यात परस्परें चित शुभ नव्हते

प्रकारें बंदोबस्त होईल. शिवाजीपुरवाला फौजेखेरीज दबत नाही. त्याविशीं चिरंजीव
 राा चाचांसही लिहिले आहे. ते जाउन तेथील अमल ठीक करितील. आम्हीं मेहनत
 करावयासी सावधानीस अंतर करणार नाही. सर्वस्वें आपलें आसो. येवजाविसी आपण
 लिहिणे होतें त्यास ईकडे दिली आगरे यामघे मोठेमोठे सावकार याची दिवाळी
 निघाली आहेत. विचारें करुन हुंडी करावी लागती. चकले कुरा व चकळे कडा हे
 जागा श्रीमंत राजश्री दादा स्वामीनी राा गोपालराव याजकडे देविली. ते सनद घेउन
 आलें. त्यांस कजिया करितां नये. सनदी गोष्ट. आम्हीं सर्वस्वें गुंनलों आहों परंतु
 धण्याची अन्ना प्रमाण मानून जागा गोपालराव याचे स्वाधीन करुन त्याची रजावंदी
 केली. चारपांच परगने मात्र तूर्त अम्हाकडे आहेत. देशास जावयाची तयारी केली.
 दरमजलीनी देसास जातो. जें विनंती कारणे तें श्रीमंतास करूं. जे अन्ना करितील त्याप्रो
 वतों. श्रीमंत राजेश्री नाना स्वामीची पत्रें निकडीची चार जोडी आली की जागा
 द्दकनाहक त्याचे हवाली करणे. त्यास श्रीमंत स्वामीचे दरबारचा प्रसंग एक प्रकारचा
 जाला आहे. आम्हीं गत वर्षी जुजलो कजिया पडला. पैसा सरकारी भरला. त्याजपकी
 येक उगवडा नाही. आसे परम सकट. गोपालराव अंताजीपंत आले. तमाम मुलकात
 कजिया जाला. राा अंताजीपंत आमची गोष्ट आईकोन माधारी गेले, तो पुणेयाहून पाच
 पत्रें आली. चारपाच जोडी श्रीमंत स्वामीची आली. त्यांस येथे कटवट केली येकादा
 कारकून मारला गेला लुटला गेला तर तीस वसें चाकरी केली [ती] सर्व पाणियात जाईल.
 असे परम संकटात पडिलो तो हाथं काये लिहावा. साल गुा पंसा दिव्हा सरकारी तो
 उगवला नाही. श्रीमंत स्वामीची या प्रकारे सरफाराजी. कुरावर जे मेहनत केली श्रम केला
 पैका खर्च जाला ते साचं राा अंताजीपंत नाना सागता कलो येईल. तूर्त दरबारी गेले.
 श्रीमंत स्वामीजवळ जातो जे ईश्वरछेजे होईल आणि पार पडो ते पडोन. त्यास तुम्हीही
 परम संकटात पडला. आम्हीं ईकडे पडलो. आम्हास तुम्हाकडील परम चिंता आहे.
 पुणेयाहून फौज श्रीमंत स्वामीनी रवाना केली. आज सतावीस रोजाचा कासिद आमचा
 आला. त्यांस राा समसेरबहादर व राा यदवंतराव पवार वगैरे बारा हजार फौज तुम्हाकडे
 रवाना केली. राा अंताजीपंत ईकडून गेले. तेही जाउन पावलेच असतील आम्ही मोठे
 घोरात पडलो आहो. असे कधी आम्ही कजियात पडत नाही परंतु ईश्वरे घोरात पाडिले
 आहे. वरचेवर वर्तमान तुम्हास लिहूत जाउन. बहुत काय लिहिणे कृपालोम असो
 दीजे हे विनंती.

प्रविष्ट करावी. वरकळ सर्व मनुष्ये सुखरूप आहेत. तुमची माणसे सुखरूप आहेत. काही चिंता नाही वरच्यावरी वर्तमान लिहित गेले पाहिजे बहुत काये लिहिणे लोभ असो दीजे हे अस्तिर्वाद.

राजेश्री लक्ष्मणपंत स्वामीस नमस्कार. तुमची मनुष्ये सुखरूप आहेत हे विनंती.

लेखांक [३२८]

श्री

बकद्वार १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामजीपंतभाउ स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य सुखाराम भगवंत [बोकीळ] कृतानेक सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लेखन केलें पाहिजे विशेष. आपणांकडून पत्र येत नाही. तरी येसे न करावे. सदैव पत्नी परामृश करावा उचित आसें. राजश्री आपाचे वर्तमान राजश्री दत्ताजीबावानी लिहिले ल्यावरून कळले. मोठा घात जाला. सर्व दोळतेचा भार ल्यावरी. या गोष्टी कोणहा रिखा व्हाय्या. ईश्वराचे चिंतास आलें ते जाले. पुढील बंदोबस्त सरदार मर्द आहेत तुम्हीं प्रसंगी आहां. चिंता नाही. श्रीमंतानी संमशेरबाहादर वगैरे फौजा तुम्हांकडे रवाना केल्या आहेत. सदैव पत्र पाठवीत जावें. उपरोधिक नाही. बहुत काये लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३२९]

श्री * संवत १८१२ कार्तिक शुद्ध १३

[१६ नवबर १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

गमाजीपंतभाउ स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य गोविंद बलाल [बुंदेले] कृतानेक सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता कार्तिक * सुध त्रयोदसी जाणून स्वकीये लिहित असिले पाहिजे विशेष. आपण पत्र पाठविले ते पावले. मविस्तर कळोन संतोष जाला. पा विठ्ठरथ्या येवजाविर्सी लिहिलें तेही कळलें. येसियासी गतवर्सी जमिदारानी हरामजादगी केळी होती. अम्ही बकाउलाखानाकडे गुंतलों. इकडे अमलांत खळखळसी जाली. ल्यास यंदा उतम

पुढे गेलें. जुज गारी जाले. मंवाती मारुन कहाडिले. टाणी काये[म] केली. घोडी माणसे फार पडिली. आग्हास वर्तमान आग्हास कळले यावर आग्ही घावोन म्हेणपुरीकडे आले. त्याजवर आग्ही चडुकडे गडबड पाहोन म्हेणपुरीकर भेटीस आला. त्यासी सडक केला. चालीस घोडी पडिली व सिधवदी अग्हावर पडिली ते पडिली. सडक केला. जे रुये वसूल आले ते आले. बाकी राहिणे ते वाइदेवदी करुन घेतली आणि राजे यास निरोप देवन आज तीन रोज माघारे येमुनातिरास आलो. याजउपर दरमजलीनी श्रीमंत स्वामीजवळ जाउन. वरचेवर तुग्हास लिहून पाठउन. आमचा सर्वस्वे असरा गा आपा होते. ईश्वरे त्याजला दगा करविला. आता त्याचे ठाई रा दताजीबाबा व जनकोजीबाबा आहेत. त्याजहून [विशेष] आमचे चालवितो. मिती कार्तिक सुद १५. वहुत काये लिहिणे फणालोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३३१]

श्री * संवत् १८१२ कार्तिक शुद्ध १५
[१८ नवबर १७५५]

पुरवणी राजश्री रामाजीपंतभाऊ स्वामीचे सो.

विनंती उपरी. आग्हास आसरा सर्व तुमचा आहे. मारवाड प्रांते गुंतला. ईश्वरे तेथील बदोबरत सत्वर होउन यावे. इकडे आपेध्येचे काम ठीक आहे. तुग्हास येग देईल ईश्वर. असो. दरवारी जातो. वरचेवर तुग्हास लिहित जाउन. रा अंताजी मानकेस्वर यास आग्ही पत्र लिहिले आहे त्याजला प्रविष्ट करावे. दरवारी जो प्रसंग प्रस्तुत आहे तो तुग्ही परभारा ऐकित्याच आहे. वरचेवर लिहित जाउन. रुये चार रोज न पावले ते सावकारियांत मोठी फजिती जाली. काही लिहिता पुरवत नाही. येणेप्रमाणे येवज पाठविला व कवज पाठवितो

४५००० पा विठ्ठरपैकी ओरंगावादेची हुडी.

पाठविली आहे. शहरी पाठवणे.

४०००० म्हेणपुरीचे येवजी तुग्ही लाळा मिकारी-
दास याजला देविले त्यास येकादोन
रोजी वानु निहाळचद याजला रुये
देउन कवज पाठवितो.

लेखांक [३३०]

श्री * संवत् १८१२ कार्तिक शुद्ध १५
[१८ नवंबर १७५५]

पुा राजेश्री रामजीपंतभाउ स्वामीचे सोा

बिनती उपरी. तुम्ही स्वकीये आथ लिहिला आणि रागे भरुन लिहिले तेही कलले. तुम्ही रागे मारिला तरी फिकिर नाही. पां विठ्ठर येथे साल गुा विस्वासराउ याणी कजिया केला, त्यास आम्ही गम खाउन त्याजलाच खपीप केले त्यास साल मजकुरी त्याणी साल गुाचे कारकून दूर केले. साल मजकुरी दुसरे कारकून त्याणी ठेविले. हाली सलुखे वर्ततात. गाव वाटणी तो केली नाही परतु वसुलास लावणीस गाव साल मजकुरी वाटून घेतले त्याजमुले कजिया वारला. पुढे तुमची आमची भेट जालियावर जागा वांटून घेउन. साल मजकूरची फिकिर न करणे. येदा शिवराजपुरकराचे पारपत्य करणे आहे ते करुन. वरकड भेणपुरीवाला राजा याजपासून साल गुा भेणपुरीजवळ घेउन रुये आसी हजार ठहराविले. काही स्वार ठेविले. सात्य पोटास ठहराउन दिले. राजा केंसोराम नागर होता. त्याजला पोटास देउ करुन बजिराकडील फौजदार तो येकीकडे ठेउन राजे याचे हवाली कामकाज केले. अम्ही ठीक करोन शंमर स्वार राजेयाजवळ ठेउन कुराकडे गेले. त्यासमागमे रामाजी पवार वगैर भेणपुरीकडे आले. दोनतीन महिने कजिया जाला. तमाम मुलक मारु[न] गर्द केला. लाख रुये भेणपुरीकरास पडिले. त्यांजवर वेसाखमासी चिरजीव जनार्दनपंत पाा. काही धोडेबहुत काम जाले. राजा श्रमी की मी काय करावे. पावारानी जागा मारली. त्याजवर मुगाव परगनेत पठाणास आहमदखान पठाणास जागीर जाली. अम्हास संकट आले. मुगावात पठाण बसले म्हणजे इटावे सकूरेवाद फुद तालगाव सोरीट सकतपुर याचेमध्ये हे जाले कामाचे नाही जाणून दिलीस बजिराकडे पैगाम करुन मुगाव परगणा ईजारा करुन घेतला आणि चिरजीव जनार्दनपंत भेणपुरीकडे पां. त्यास राा आपांचे वर्तमान ईकडे आलियावर तमाम जमिदार हरामजादगीस येउन लबाडीस आले. भेणपुरीकराने जमाव करुन चिरजीव जनार्दनपंतावर छापा घातला. जुज मातवर जाले. तीसपसतीस धोडे पडिल. मलेमाणूस ठार जाले. धोडी जखमी जाली. फारच कजिया जाला. हा कजिया भेणपुरी जाला. तो मिरजा साकर मेवाती व पतसिकतरेकर वगैरे चार हजार प्यादे दीड हजार स्वार जमाव करुन सकूराबादेवर आले. तीन गडी घेतली. त्याजवर अम्हास वर्तमान कलले. घाबोन गेले. तो सकूराबादेहून मरो कृष्ण

विशेष, तुम्हीं वरात राा भिकारीदास याजला जोगपुरचे बाकीचे येवजी केली. दोळतसिग भिभ्र याजला देविळत रुये ४०००० चालीस हजार ते रुये पुगणे देउन कवज घेउन कवजेची नकळ पाठविली आहे. मार्ग कठिण म्हणून असल कवज न पाठविली, बाकी आसी हजार राहिले त्याचे वाहदे राजेयापासून करून घेतले आहेत. वरचेवर वसूल करून तुम्हाकडे हुडी पावेल. वरकळ वर्तमान तर अम्हीं देशास जातो. वरचेवर लिहित जाउन. आमचे मानस होते मारवाडचे कामकाज तुमचे जालियावर देशास येता. समागम अम्हीं येतो. त्यास काम विळंबाखाले पडिले. पाउस त्या रानी नाही आणि दाणा मडाग. त्यास जे वर्तमान असेल ते सविस्तर लिहिळे पाहिजे. वरचेवर वर्तमान लिहित जाउन. माधोसिगाने फांज ठेउन वाहिर निघाला म्हणून वर्तमान आहे. दिल्लीत पातशा वजीर याणीही वाहिर^{३००} प्रस्तान केले. येक आजमेरीकडे यावे धिजेसिगाचे साहित्य करावे. माधोसिग आपण येक होउन तिकडे जबरई मराठेयाची

(१७८) पहा ले ४९, १५३ टीप २१, ९३ सावरेंत पाव शिरताच अजमेरचा सुभा अहदनाम्यात मराठ्यानी साधला तेव्हा रजपुताची लढा पडला त्याविषयी केवल एकच पत्र उपलब्ध आहे. [खड १० ले २९५] या पत्राचा लेखक जयपुर येथील मराठ्यांचा वकील असून मारवाडत भोइटे गेला असता जाट व कळवा यांच्या भेटीचा सवाद तो वेत आहे पत्र महत्त्वाचे असून राजवाड्यास काल साधला नाही याचे आश्चर्य वाटते जाट व जयपुरकर याची दुसरी भेट नवबर १७५३त झाली [खड ६ ले २९५] अर्थात् ही पहिली भेट त्यापूर्वी म्हणजे १० अक्टुबर १७५२ नंतरची समजली पाहिजे. [भाग १ ले ९८, १०३] 'आपली फौज घामिल जालियामुले रामसिगजीची बाकी सरथी दिसते विकानेरकर अद्यापि उभयपक्षी शामिल जाला नाही' माधवसिगजीचा व बखतसिगजी चा पूर्वीपासून स्नेहभाव होताच साभत काली त्याजकडील कधीदान चारण येउन पैमसिगजीचे विद्यमाने मजबूती करून गेला न कले कसा काय करार जाहला एवच टीका पाठउन एक्यता जाणविली कुसलसिग झालावेकर याजकडील राडा होता त्यास सोख्य सपाडून दिवले इतक्यात सुरजमल जाट यासह पैमसिगजी येउन पावले सुरजमलजीसी व बखतसिगजीसी परम स्नेह याजकरिता त्यानीही बहुत काही विचार केला की इतके दिवस दसणी चौथार्डेचे ग्राहक म्हणवीत होते. आता सर्वेत्न ग्राहक जाले. आगरियात दखलच केला. राहिली अजमेर याचीही सनद हातीं ठेंवितत फौज रामसिगजीचे कुमकेनिमित्त्य गेलीच आहे. तुर्कानीही तिकडेच डोल दिवला आहे. या गोष्टीची पैरवी आतापासूनच केलिया उत्तम. याचा मनसुबा दिसोन झाला की वजीरसावंभौमाविकासी भर भरून एकदा राजविराज करून सर्व जमिदार राजे येकर होउन पुरुषार्थ दाखवावा समजुंती तो सकलही जाहालेच आहेत' हे भविष्य किती खरें निघाले याची साक्ष हे बुदेल्याचे पत्र होय 'वजीर हिदुस्थानाचा विषाड रजपुतास घेउन करणार' या अताजीपताच्या किंवा 'राजदिवस सर्व चिंतामग्न आहेत' या गलगलेकराच्या बोलाचे वर्म कळत नव्हते त्याची आता चागली जाणीव होते [पिव २१ ले ५५ पद २७ ले १०६] चौथार्डे की निमें राज्य हा मुख्य राडा होता निमे राज्य घेण्याची नीती स्वकीयपरकीयात कशी खेळत होती याची चिकित्सा करून त्याचे उत्तरदायित्व कोणाच्या वाट्यास किती जाते हे पहावे लागेल ले ४९, २९५ खड ६ ले २७६ वाड ३ ले २२, २९, ४७, २०५ पद २ ले ५६, ८४, १०४ पद २० ले २९ पद २१ ले ११, ७९, ८२, ८३ पद २७ ले ८७ ही पत्रें या बाबतीत मननीम होत

येणेप्रमाणे पचासी हजार देविले. साल मजकुरी येवज चिरजीव. वात्रा वरचेवर आपणांकडे पाठवितील. मेणपुरीचा येवज वायदे केले आहेत. वरचेवर बाबु निहालचंद याचे पदरी घालून तेही कवज पाठवितील. सध्या चालीस हजाराची बरात केलीत. हे शर रोजात कवज पाठवितो. तमाम मुलकात जमिदार हरामखोरी करितात. बारातेरा रे घान्य. तमाम मुलकात डाके पडतात. चोरमये जाले. लिहिता विस्तार आहे. वरकड दावनी घाट तुम्ही बांधता त्याजविसी राा मोरो कृष्ण सिकुराबादेचा अमलदार त्याजवर हा हजार रुपये घाटास देविले आहेत. घाटावर जो कोणी तुमचा असेल त्याजवळ वेटी पाो तो सिकुराबादेडून रुपये घेउन जाईल. मोरोपंत यास तुम्ही पत्र आपले नावे णे की रुपये फळाणे यांस देणे म्हणजे मथुरेस पावते करून देतील. भाउ अम्ही कुरे णविसी फार भ्रम केले. जिवानसी खर्च जालो होतो. खर्चाखाले आलो. खावदानी बूझ ा केली. बरे. दरबारी जातो. जे तुम्हास साहित्य होईल ते करावे. वरचेवर लिहित ाउन. बहुत काय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

क्रमांक [३३२]

श्री * संवत १८१२ कार्तिक शुद्ध १५
[१८ नवबर १७५५]

पुा राजेश्री रामाजीपंतभाऊ स्वामीचे सेवेसी.

विनंती उपरी. वारवार काय लिहिणे जे आम्हा आमची ते तुमची. जीव जेथे एक तेथे दुसरा विचार काये लिहिणे बरे ईश्वर सर्व उतमच करितील. तुम्हास जसे तंकट पडिले आहे ते सर्व आम्ही जाणतो. त्यांस ईश्वर सर्व परिहार करील. वर्तमान लेहित जाणे. सागरपावतेतो आम्ही पत्रे तुम्हास लिहित जाउन. सागरास अम्ही मोठे पेचात ाडिले. येक ईश्वर परिणाम लावील तरीच लावील. नाही तर ईश्वरावर भार आहे. तुम्ही मसगी असता तर मोठे कार्य होते. त्यास मोठे पेचात गुतला. असो. तेथूनच जे होईल ते साहित्य करणे. वरचेवर लिहित जावे. मिती कार्तिक * सुध १५. बहुत काये लिहिणे ग्रेम असो दीजे हे विनंती.

क्रमांक [३३३]

श्री * संवत १८१२ मार्गशीर्ष शुद्ध ३
[६ दिसवर १७५५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंतभाऊ स्वामीचे सेवेसी

पोष्य गोविंद बलाल [बुंदेले] साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशळ ाा मार्गसीर * शुध ३ शुा रायेपुर जाणून स्वकीये कुशळ लेखन करीत असिले पाहिजे

प्रयुक्ती जाळियामुळे फांजा अगदीच गढिल्या. श्रीमंत क्रीकणातील किले पाहावयासि गेले. ऐसा इकडील विचार. मातुश्री ताराबाई सातारा गेली. राजमुद्रा^{१०} नाही. कळले पाहिजे. अम्हास रा पाटिलबाबांनी पांचसे रुपये उनेलीवर देत होते ते तुम्हाकडे

ही गोष्ट हातची नव्हती. तथापि तसल्या प्रकार सोबत्याचा म्हणता येणार नाही स्नेहाचा साधा सैल शाला ही गोष्ट पानिपतच्या पराजयाचे प्रमुख कारण होय असे मत वखरीचे आहे ते १७४८ व १७५७ या दोन स्वान्याचे मनन करिता कदाचितच चुकीचे ठरेल असे वाटते अस्तु याविषयी कोणाचे घोडे कोठे अडले हा प्रस्न सोडविण्याचे काम वाचकाचे होय

(१८०) 'हिंदवी स्वराज्य करणे' हे शिवरायाचे वीर असून [खंड १५ ले. २६८] या 'स्वराज्य-साधनाचा' अर्थ 'हिंदुपदपातशाही' होता अशी भूपणादिकाची वाणी सांगते [भूपण ७८] आणि 'दक्षणाची पादशाही दक्षिण्याच्या हाती राह्ये' असा लेख प्रत्यक्ष शिवाजीचा आहे [शिपस २ ले १९०१] या वाण्याचा म्हणजे हिंदुपदपातशाहीचा उच्चार करणारें शिवकालीन पत्र अद्याप उपलब्ध न्हावयाचें असले तरी या ध्येयाच्या व्यापकतेविषयी आता शक्येस चाव मुळीच उरत नाही. कारण 'महाराष्ट्रवर्म रक्षावा म्हणून विजापुर भागानगर औरंगाबाद व दिली घेण्यासाठी' ४ जून १६९१ रोजी घोरपट्यास सनदच प्राप्त झाली होती [शिचसा ५ क्र ६] अर्थात राजारामाची ही महत्वाकांक्षा म्हणजे शिववाची दीक्षा असली पाहिजे 'हि महाराष्ट्रराज्य आहे. तुम्ही या राज्याची पोटतिडिक धरता तरी कित्तेक राजकारणे आहेत चालपा करून जमाव घेऊन सावधपणे राहून स्वामीकार्ये वृष्टीस पडेल ते करून ठेविणे औरंगजेबाचा हिसाब धरीत नाही ईश्वर करितो तरी फत्तेच आहे' ही भाषा वरील हेतु दाखविणारी आहे [खंड १५ ले. २८२, ३४७] 'स्वामीचे वेलेस उभयता महापुरुष होते त्याच्या कृपादृष्टीने सर्व कल्याण होत होते. तथापि महाराज अवतारी बंदी होते तेणेकरून इच्छिले पदार्थ सिध्दीस गेले. महाराष्ट्र नूतन निर्माण करून स्वधर्मस्थापना केली'. असे आग्ने विषय करून सांगतो तेव्हा शकाच कोठे रहाते? [खंड ३ ले २७३] राजारामानंतर शाहु परत येईपर्यंत मराठ्यांचा सेनापती घनाजी जाधव याची आकांक्षा काय होती याचा बोव पुढील पत्र करिते 'दुही निशेव करून समुद्र-वलयकित पृथ्वीत स्वामीचे शासन चालऊन कृतकार्ये न्हावे या [भाने] उदित होऊन बुधिवैभवे-कडून समग्र सेना सजली जाऊन योजिला मानस हा पराक्रमेकरून अल्प काले सिध्दीते पाऊन पुढे अनु-पदेकडून ताम्रात्मत राज्य साधावें [प्रद २५५]

यासंबंधी शाहूचे वैयक्तिक असे काहीच ठाम मत नसून 'हिंदुपदपातशाहीची स्थापना करण्याची प्रस्तावना बाजीरावाने केली' असा अभिप्राय राजवाड्याचा आहे. [ऐप्र १ पान ३५] त्याचा विचार करूं जाता हे विधान अवास्तव वाटते 'दिलेद्रास अत्युनमाव होऊन फार अमयदाचरण केले त्यास कालेकरून शिक्षा करणे ईश्वरसच अगत्य तदनुसार परयाय अलीगोहर याचे येण्यात दिसोन आले याचे येणे महदानदास कारण जाले' [खंड ६ ले १०] 'बाबांचे राज्य स्वराज्यात करून सहा सुभे खेरीज गुजराथ मालवा साबेल तेषवर साधणे' [ऐप्र १ पान ३५] ही यादी मनन केली तर 'महाराज म्हणजे हिंदुपदपातशाही' या ९ मे १७१९च्या महजरातील उदगाराची कल्पना चांगली होते [खंड ३ ले १३५] 'परराज्य साधावे साहेबाचा चौका वसे ठाणी व जागा साध्य होत काटक हाता शाले घेऊन दुष्टास नतीजा पावे यैसा येत्नउपाये करावा असा शाहूचा संकेत होता [पेद १७ ले.

जाली तर आतरवेद प्राते अमलात खतरा करावा हा विचार आहे. वरचेवर लिहित जाउन, मागे चिरवीव घालाजीस ठेउन अम्ही देशास जाउन. तुम्ही सर्व प्रकारे चिरजीवाचा परामर्ष करीत जाणे. चिरजीव वरचेवर तुम्हास वर्तमान लिहित जातील. आगरेयात हुडी मारवाडा प्रांतीची होत नाही याजकरिता हुडी दीड लाख श्रीमंत स्वामीनी देविले लाख रुये साही परगणेयाचे येवजी असे अडीच लाख रुये उजनीस रा रामराउजीकडे जमा करविले. तेथून रसद रुये पावळियाची आळियावर पाठउन देउन. वरकड वर्तमान वरचेवर लिहित जाउन. तिकडील नवलविशेष लिहित जावे. बहुत काय लिहिणे कृपालोम असो दीजे हे विनंती. मुजरद जोडीसमामे पचेतालीस हजार रुये याची हुडी ओरंगावादेची भिडुर येवजी पाठविली ते पावथीच असेल. उतर पाठवीजे हे विनंती. रा अंताजी मानकेस्वर यासी पत्र पा आहे ब्यास प्रविष्ट करुन उतर घेउन पाठविणे. हे विनंती.

लेखांक [३३४]

श्री

* संघत १८१२ पौष शुद्ध ५

[२२ जनवरी १७५६] ?

राजश्रियाविराजित राजश्री

बाळोबा दाजी स्वामीचे सेवेसी.

सेवक - नारो विठल कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. यथील क्षम ताा पुष्य * वद्य ५ गुा पुणे जाणून स्वकीय लेखन करीत गेले पाडिजे विशेष. बहुत दिवस आपणाकडून पत्र येउन कुशलार्थ कळत नाही तर ऐसी निष्ठुरता किमपी न करावी. सदैव पत्र पाठवीत असावे. यानंतर आम्हाकडील वर्तमान तर आम्ही यथ पुण्यात आहो. यदा नालवंदी समाजावीस^{३३} नाही. दंगा असावा तर घावी ते निर्वैर

(१७९) पहा ले. ५९ टीप २७ सैन्य घटविल्याचे कारण 'निर्वैरप्रयुक्ती' असे या पत्रात दिले असून अन्यत्र निराळेंच निदर्शनास येते [ले ३३४] कारण कोणतेही थडले असो परतु ही उणीव मराठ्यास घातुक झाली असून अवदालीविपयीची जवावदारी आणि तदगमूत महाराष्ट्रमय करण्याची कल्पना या दोन्ही गोष्टी त्यामुळे पार पडू शकल्या नाहीत हे मात्र खरे होय. स्नेहाचे जुग होते तोवर अनेक सक्टे आली पण ती सर्व बारापाणी झाली असे इतिहास सर्रास सागतो. या दृष्टीने उभयता एकत्र असते तर अवदालीस केव्हाही भारीच होणे त्यात अहदनाम्यानुसार बादशाही सैन्य मिळते तर पारपत्य अगदीच स्वल्प होते. अवदालीचें पस्वक वारुन महाराष्ट्रधर्मप्रचारार्थ ज्या पवित्र तत्त्वांची उभारणी झाली त्याची वजावणी मात्र होऊ शकली नाही. योग्यपस अनुकूल किंवा प्रतिकूल होणे

जाले तेच आहे. यात आपण सर्वज्ञ. आम्ही तो ऐवज यंत्रेचा कष्टून ठेवीत आसो. सन्मार्गी पाहून ठेविला आहे. यात जे आपणास उचित आसले ते पूर्त चित्तात आपण पाठवणे. आम्ही पदरीचे आसो. इकड महागाई बहुत. आजीपावतो दोन पाइळी दाणे आहेत. बहुत गिा म्हणून रागांस न यावे. बहुत काय लीा आजुरदार कासिद रिंकामा न पाठवावा. सदैव पत्री सामाळीत आसावे लोभ आसो दीजे हे विनती.

टाकल्यास चोरपोर खातील आणि मोडल्याचे श्रेय आपणाकडे' येईल 'दुसरे छत्रपती जीर्णोधार केल्यास सतोप मानतील [अन पान ११८, ११९] नादिरगाह 'दक्षणेस चाल करणार मोठे अरिष्ट आहे याची पंरती हिंदुस्थानची फौज सामिल करून घ्यावी आणि चमेलीपलीकडेच गुतवावे ये गोष्टीची तरतूद करण्यासाठी [पिद १५ ले ५५] मेवाड मारवाड व जयपुर या तीन वलिष्ट हिंदुराजाकडे राजकारणे चालू झाली 'रायाचे मनी राणाजीस दिलीत तक्ती बसवावे सवव जे वरकड राजे थोर असताही राउस सलाम करणार नाहीत आणि राणाजी व राजथी एकच आहेत. वदल राणाजीस वसत' हे आमिप पेशव्याकडून दाखविण्यात आले ते चितनीय होय [ऐच ऋ ४ ले. ७] याच वेळी 'दक्षिणेत कुल मोगलाई अमलाचा बदोवस्त केला पाहिजे असा विचार होता पण वरील दोन्ही गोष्टी प्राय असाध्य झाल्या कारण की सर्व सैन्य या वेळी वसईवर गुतले होते त्यामुळे काहीच करता आले नाही आणि आकस्मिक लागलेली सैन्याची सधी बाया गेली इत्युत्तर हिंदुपादशाहीचा छत्रपतीचा अधिकार सपुष्टात आपून तो वळकावण्याची महत्वाकांक्षा पेशव्याची प्रबल होऊन प्रगत झाली हे निश्चित होय. 'महाराजांनी मालवा विली आंगरे प्रयाग पटणे वुदेलखड इतका मुलुक दिला असता रोखे करावे येसे नाही' हा निर्वेश पेशव्याशी समजोता झाल्याचे दाखवितो [पिद ३० ले २४५] पण त्याचा विस्तार उलगडा होत नाही 'सा सुचे दक्षण मोकली न्हावी' या भावें ही सवड कदाचित गिवाली असावी किंवा पातशाही गर्दीनतर ती धारणा झाली असावी [पुरवरे १ ले १३९] १७४०त बाजीरावाचा अत होऊन नानासाहेब पेशवाईवर आले 'याचे समाधान तेच रखून सर्व राज्यभार चालवावा हेच योग्य आहे' इतकी समती गिळण्यासारखी सहानुभूति कोल्हापुरकराशी होती. [पिद ३० ले २२७] एवच हिंदुपातशाहीच्या मघाचे दोट प्रथम बाजीरावाने मेवाडकरास दाखविले तेच आमिप नानासाहेबाने करवीरकरास दाखविले 'शाहूचा जीवात्मा तो बाह्यात्कारा त्याचे सेवक अंतर्गामी स्वामीचे. शाहू कैलासवास केल्यावर दोही राज्यावर [सत्ता] स्वामीची आणि आम्ही सेवक स्वामीचे' [कास ले २४६] या आमिपालाच दोन्ही राज्याचे एकीकरण अशी सज्ञा राजवाड्याने दिली आहे खरी पण वरील शब्दात एकीकरणाच्या उदात्त तत्वापेक्षा स्वार्थाचाच गण अधिक येतो 'पूर्वसकल्प सिद्धीस नेंचन प्रमाणिक वचन पहिली बोली केली आहे करारदाज यादी लेहून दिल्या आहेत त्याप्रमाणे निदर्शनास यावे' याचे स्मरण शाहूचा अत समीप आला असता करवीरकरानें धावे हे सहाजिकच होते. [पिद ६ ले. १, २] 'शाहू मरते वेलेस काय काय बोलले होते सकवारबाई बोलली की राज्याचा खावंद सभाजी हे नवे उभे केले हे खूळ आहे या खुलाला हाती घरून बघवील ही गादी धन्याची त्यास देईल त्याचे वरे होणार नाही हे साफ सती निघते नेली बोलली स्वामीसही स्मरण असेलच त्यास सकवारबाई व राजा याचा भाव कदापि दुसरा नव्हता परंतु ते वेलेस चौधानी भर देउन त्याचे येकू नये असे करून हें खूळ उभे केले या झाडास एरड्याची फळे आली सभाजी

देविले. ते सनद मागा पाठविली ते पावलीच असेल. तर सदरद्व पांचसे रुपे व आपले दात्रत्व सदापासून पावले नाही. ते एसे मुजरद कासिद पाठविला आहे तर उजनीस पावते हुंडी करून करावे. तथून जिवबा आम्हाकडे पावते करतील. कदाचित रागास येउन कर्ज देणे एसे म्हणतील तर तोच प्रकार आहे. आपले वचन

१२] 'दक्षिण प्रातीच्या मनसब्याची कल्पना चिंतात आहे ते तपसीले पहिले लिहिले आहे. विदित होईल. स्वामीचे चिंतात उतरेकडील भर भरला आहे तो मनसबा करालच. दिलीसी बेहा लाविला म्हणजे कोणे वेलेस तन्ही अरिष्ट येईल [पिद १७ ले. ४७] उगीच निजेकी गाघले उठविली' न पाहिजे असा शाहूचा कल होता. [पिद १७ ले १८] अर्थात प्रस्तावनेचे प्रयोजनच कोठें रहाते ? प्रथम दक्षिण की उत्तर एवढाच भेद होता

यासबवी शाहूचा शब्द पाळला जाईल अशी परिस्थिति १७३१ नंतर राहिली नव्हती याला कारण दामाड्याचा नाश हे होय 'दामाडा मारिला महाराजांनी आमचे काय केले' अशी वृत्ति पेशव्याची झाली [पिद १७ ले ३०, ५३] 'रायाचा प्रताप येसा जाला की हस्तनापुरचे राज्य घेउन छत्रपतीस देतील तर आज अनुकूल आहे [पिद ३० ले १३४] परंतु दक्षिण तालुका धावा हे स्वामी कदापि सांगणार नाहीत [पिद १७ ले ४७] या निराशेमुळे शाहूचा शब्द शेवटारा कसा जावा आणि मराठ्याचे घोडे उत्तरेकडेच धाव का मारू लागले याचे रहस्य कळते. १७३५च्या अती पेशवा स्वारीस निघाला तो शाहूची आज्ञा घेउन चालला नव्हता तेव्हा याला प्रस्तावना म्हणता येईल काय ? स्वामीची आज्ञा न घेता तातडो करण्याचे दुसरे कारण असे दिसते की भोगलाचा सेनापती खानदौरा व त्याचा सोवती सवाई जयसिंग या दोघाचा पराजय शिंदेहोलकरानी याच वर्षी केला होता ती शिकार हातची जाऊ नये असे समजते दिल्ली हस्तगत करून दिग्विजय संपादनाचा असा मानस पेशव्याचा होता यात शका नाही परंतु कित्येक हितचिंतकांस हे कार्य साहसाचे भासत होते 'मनसबा करणे तो बहुत विचारें केला पाहिजे [पिद १५ ले २१] एकेच दिवसी सर्व पृथ्वी गोला करावी येसे नाही' असे रेटरेकर व पुरंदरे निवून सागत होते. [पिद १४ ले. ५४] या सदेहास्तव दडनीति सोडून साममार्गाचा अवलंब करून सरदेशमुखीच्या बरोबरीने सरदेशपाडेगिरी इत्यादि हकाची मागणी केली. हेतु हा की दक्षिण तालुका स्वामी देत नव्हते तो भोगलाच्या नावावर पदरात घेऊन दोहीकडे पगडा बसवावा. मागणीचे वाढते माप भोगलास मानवेना. त्यात निजाम बलिष्ठ असून त्याचा अतस्थ विरोध होता. तेव्हा भोपालावर युद्ध होऊन निजाम 'ठिकाणी लागल्यावर अवघी दक्षिण निर्वेच होईल' असा सक्कल होता [पिद ले ३३] तो मावळून शेवटी मालवाच पदरात घेऊन सतोष का मानून ध्यावा लागला याचे कारण उघड होत नाही. ज्या साली हा प्रकार घडला त्याच वर्षाच्या अखेरीस नादिरशाहाची स्वारी झाली 'स्वामीचे वचन पातशाहासी गुतले आहे की परचक्र आले तर सर्वस्वे साहित्य करावे.' [पिद ३० ले २२२] याचा अर्थ पेशव्याने असा केला की 'छत्रपती पातशाही इच्छित नाहीत. तोहमास गारुडीचा खेळ आला. सर्व सृष्टी नवीन जाली. तोहमास्तकुलीने बाजी जिंकली परंतु औष्या हिंदुनी हिंमत वाचल्यास पातशाही हिंदुचीच होईल एसा प्रसंग दिसतो पातशाहीचा बंदोबस्त केल्यास लौकिक मोठा. त्यास आपण राजकारण राखून अभिसलउमरा यासारखे न्हावे पोटास फौजास लागेल ते पातशाही माल पैदा करून त्यात घेऊ फौजेस जागिरा अलाहिदा मागाव्या आणि सर्वासि माजी करावे. मोडून

लेखांक [३३५]

श्री

* संवत् १८१२ पौष वद्य १३

[२९ जनवरी १७५६]

श्रीमंत राजश्री भाठ स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य अज्ञांधारक यादो^{११} रामराव सां नमस्कार विनंती. येथील क्षेम ताा पोष्य * वद्य १३ मुा लस्कर दरजागा ना सानूर कोस तीन जागून स्वानंद लिहावयासि लेखकासी अज्ञापिलें पाहिजे विशेष. [बहुत] दिवस जाहले वडिलाकडून पत्र येउन वृत कळो येत नोते म्हणून चित सचित होते. तो कडून्याचें पारपत्य कल्याची पत्रे श्रीमंतास आपळी आली ते वाचून सविस्तर कळोन बहुत समाधान जाहले श्रीमंत हे विजयाचे वृत वाचून परम सतोष पावल्याचा ताळ सर्ष श्रीमंताच्या पत्रावरोन सेवेसी भुत होईल. यानंतरे येथील वृत तरी पूर्वीपानोन लेख करीत होतो त्याजवरोन श्रत जाहालें असेल. आलीकडील वृत श्रीमंताचे लग्नसिधी मार्गेश्वर शुध १४ कृष्णातिरी जाहाले. लग्नसिधी करुन सत्वरच हिंदुस्थानात आपणांकडेस श्रीमंत रा दादासो येणार होते परंतु सामंत्य मुरारजी घोरपडे व मुजफ्फरजंग व सानूरकर पठाण येकर होउन बारा हजार फौज व दा हजार प्यादा सानूरापासोन तीन मजली चालोन आले. त्याचे पारपत्य करणे जरूर जाहले त्याजमुळे तमाम लोकास पत्र पाठउन फौज जमाव करुन मुा मजकुरास आलें. मार्ग येताना येक ठाणे वागलकोट म्हणून सोनूरचे पाचसात दिवस मोर्चे लाउन ठाणे घेतले तेव्हा मुरारजीस सलावत बसोन झहराचा अश्रये घरुन राहेला आहे परंतु रंग दिसोन येतो की येक वेळ लढाई जाहाल्याखेरीज गोष्टमात तहास येता दिसोन येत नाही. हा निर्गम अठापधरा दिवसांनी विल्हेस लागल्यां लौकरच श्रीमंताचे आगमन हिंदुस्थानात होईल. इतकियावर पहावे. तुम्हाकडील [ल] पत्राचा मार्ग सडक जाहाल्याचे रात्रंदिवस श्रीमंत त्रिवर्ग पाहातात. तरी तेथील प्रसंगीचे वृत श्रीमंतास बरचेवर लिहित असावे तेनेकडून बड्ड समाधान पावतील. येसे वर्तमान आहे.

(१८१) 'रामराव नीळकठ, रामराव नारायण व रामराव यादव' या नावाचे तीन पुरुष पूर्वपानिपतीय स्वारीत शिखासमागमें होते चौथें नाव 'रामराव तरसिंह पुणतावकर' असेही आढळते [विद २७ ले २७६] त्यापैकी कोणत्या रामरावाचा हा यादवराव मुलगा होता हे सांगणे कठिण होय तथापि हा रामराव निळकठाचा पुत्र असावा असे वाटते. कारण की पेंडशाच्या पत्रात याचा जो निर्देश येतो त्याचा रामराव निळकठाशीच सवध दिसतो [लि ३००, ३०१, ३११, ३१८] हा राघोबाच्या स्वारीबरोबर उत्तरेकडून या वेळी देशी आला होता. त्याची पत्रें मात्र अद्याप सांपडली नाहीत

राजश्री त्रिविक्रवाबास नमस्कार. दाजीस लािा आहे स्मरण देउन कासिद
रा करावा. चिंरंजीव राा गोपाळजीस आसिर्वाद. तुमचे घरीची समस्त सुखरुप आहेत.
जिवन्ना आजीपा येथेच पुढ्यात होते. मातुश्री x x x [श्रीगों]द्या गेले. हे अशिर्वाद.
वरांत सां आकास नमस्कार सांगणे.

आषाढा गादीवर बसवावा सारे खुशालही होतील ङागही लागणार नाही सकवारबाई जितसती
आपली खावद आई तिने सांगितले ते केले काही बेमानी नाही आपल्या खांवदाचे न थकले आणखी
दुव घरली त्याचे हे फल येते हे पुढे समजावे'. [पेद ६ ले १४७] हे पुरंदर्याचे पत्र वाचणीय असून
पेशव्याच्या करणीत एकीकरणाचा अश कित्ती होता आणि 'कोल्हापुरचे न करने' हें पत्र कसे लिहिले
गेले याचा विस्तार करणे नलगे वाचक स्वयम निवाडा करू शकतील.

४ जनवरी १७५० रोजी सातारच्या गादीवर रामराजा विराजमान झाला खरा पण त्यास
राज्यारोहणावढक जी भरपाई करावयाची होती ती तात्कालीन भापेतच देणे बरे पेशवे बाम्हनी
राज्य कश म्हणतात' भरपाईचे स्वरूप असे बणिले आहे [पेद ६ ले १९, ५०, ६७, ६९] राम-
राजाचे वाढविलेले झाड एरड्याची फळे देणारे निघाल्यामुळे 'समूल वृक्ष काढतील तरीच या
राज्याचा लगाम हाती' राहतो अशी विवचना लागली [पेद ६ ले ८७] हा हेतु ओळखून तारावाईने जी
राजकारणे केली ती श्लाघ्य होती अथवा नव्हती हा प्रश्न वादग्रस्त आहे तथापि तिच्या ङागोऱ्याचा परि-
णाम एवढा घडला की इरानजुरानपासून रामेश्वरापावेतो दुर्लोकिक जाहाला तो दूर करावा अशी
चिंता पेशव्यास उत्पन्न झाली. [खड ३ ले १३६] यामुळे झाडावर स्वतः धाव न घालता कुऱ्हाड
दुसऱ्याकडून चालविण्यासाठी करवीरकराभी सख्य साधून 'राजारामास कैदवाखल प्रतिष्ठीने पोटास
देउन ठेवाने पुरते ठिकाण लागले तसे करावे असा सिद्धांत ठरला [पुरंदरे १ ले. ३६९] राजा
असल नसून नकल म्हणजे तोंतया आहे अशी दांडी पिढून त्याची मुद्राही बंद पडली करवीरकर
समाजी या वेळी का वचकला हे कळत नाही जीजाबाई वेगळे समाजीचे यणे येकदर होत नाही
आसे जाले इतकाच ओझरता उल्लेख वरील पत्रात येतो त्यावरून परिस्थितीचे आकलन वरीवर होत
नाही एवढे खरे की यानंतर त्याची अवश्यकता कमीच भासू लागली आणि नवीन मुद्रा आपणच
करावी असा सकेन या भागातील पत्रावरून होतो. त्याचे कारण पुढील घडामोडींवरून असे दिसते
की एका दगडाने दोन पक्षी मारावेत एवच हा वाद शिथिल होऊन लावणीवर पडण्याचे रहस्य
काय ? १७६०च्या दिसवरात 'समाजी समाप्त जहाल्याचे वर्तमान आल्यावर मृगीकर भोसले
याचा भाउ राजा करावा. जिजाबाईने कारभार करावा ताराबाईप्रमाणे नेमणूक खालन स्वस्थ
राहावे याप्रमाणे कवूल केल्यास उत्तम नाहीतर जप्ती करावी असे ठरले' [ऐटि २ क्र १६]
समाजीची एक राणी गरीबर असून प्रसूतीची प्रतीक्षा न करिता ही व्यवस्था व्हावयाची होती.
'परामृपाचे पत्रही न पाठविता इकडील वदोवस्तास फौज पाठउन दिल्ली तेव्हा पताच्या श्णानुवचास
सीमा आहे आणखि वचनासी नृतले असता याप्रमाणे घडोन आले'. [पेद २६ ले २४९] याच
दुमारास 'सातार जाउन नवा राजा वसउन येणे असी आज्ञा' पेशव्याची होती [पेद ६ ले. २२४]
असा हा एकीकरणाचा इतिहास सक्षेपांत आहे यालाच नवी मुद्रा करणे हे सांकेतिक नाव तात्कालीन
प्रजात आढळते

आलीकडे तुम्हाकडून पत्र येउन वर्तमान कळत नाही. प्रस्तुत कोठे आहा काये वर्तमान हे लिहून पाठवावे. ईकडील वर्तमान तर श्रीमंत राजश्री नानासाहेब व श्रीमंत राजश्री दादासाहेब कोकण प्रांत पाहावयास व पुण्याचे गणपतीच्या दर्शन^{१३} स्वारीस आले. समागमें आही आहो. पुणियांत श्रीमंत भाउसाहेब व राजश्री विस्वासराज आहेत. आपणास कळावे म्हणोन लिहिलें असे. तुमचे घरची सर्व पुणियात सुखरूप आहेत. † बद्धत काये लिहिणे लोभ असों घावा हे विनती.

राजश्री लक्ष्मणपंत वैद्य व त्रिंबकपंत दिवेकर स्वामीस सां नमस्कार विनंती उपरी. पत्र पाठउन सतोपवीत जावे. नारोपंत दिवेकर आझाबरोबर आहेत. तुमचे घरची माणसे सुखरूप आहेत. हे विनंती.

लेखांक [३३८]

श्री * सप्त १८१२ फाल्गुन वद्य ३०

[३० मार्च १७५६]

श्रीमंत राजश्री रामाजीपंतभाळ स्वामीचे सेवेसी

पोष्य बापुजी बछाल [फडके] साा नमस्कार विनंती. येथील कुशल तां छ * २८ जांखर म्हा विजयदुर्ग येथस्थित आसें विशेष. बद्धत दिवस पत्र येउन परामृष होत नाही तरी सर्वदा साभाल करित असावे. श्रीमंत उभयेता कोकण प्राते स्वारीस व देश पाहावयास आले. समागमें श्रीमंत नाना फडनीस आहेत. आम्हास बरोबर आणिलें आहे. श्रीमंत भाउसाहेब पुणियांत आहेत. दरवारची मर्जीस आपण वाकिफच आहेत. येदा फांज^{१४} ठेविली नाही. पैका कोणास देत नाही. कर्ज फेडावे हा हेत फार आहे परंतु फिटता दिसत नाही. आपणास कळावे. † बद्धत काय लिहिणे लोभ केळा पाहिजे हे विनती.

(१८३) 'दादासाहेबाची स्वारी पुढ्याच्या गणपतीस गेली ती फाल्गुनात परत आली' अशी नोंद पेशवेसकावलीत आहे ती या पत्राचारे चुकीची ठरते [पेढ १५०] कारण अगवी उजव आहे की १७५८च्या फाल्गुनात राधोबा लाहोराकडे होते [ले ८९, ९०, ९३, ९५]

(१८४) हा बापुजी फडके मार्मिक लेखक असून स्पष्टवक्ताही होता 'दरवारची मर्जीस आपण वाकिफच आहेत येदा फौज ठेवली नाही पैका कोणास देत नाही कर्ज फेडावे हा हेत फार परंतु फिटता दिसत नाही' हे प्रस्तुतचे वर्णन आणि 'घोडयास दाणा ठाळक नाही घोड्यामाणसात जीव राहिला नाही परिणाम कठिण दिसतो' हे पानिपताचे भविष्य चिंतनीय होय [पेढ २ ले १३०] नानासाहेब पेशवा व सदाशिवराव भट या उभयेताविषयी राजवाड्याची साधने व तदनुषंगिक चिकित्सेचा नमस्कार मानवून निराळीच चिजे सशोधनाती निदर्शनास येतील यात शकाच नाही

रा अंताजीपंती पत्र कार्तिक वद १४ मितीचे पाठविले त्यात मार की अन्यरुवासिंग सडा हजारा स्वारानसी आपल्या गोटात येउन उतरला. नागोरचा सडा ठहरला आहे. हे वृत्त मागाहून लखन करून पाठवितो त्याजवरून निजण्यास आपल्या पत्राचा सर्वास लागला आहे. तर सविस्तर वृत्त खावदास लिहावे. वरकड वृत्त सर्व येयास्थित असें. निरंतरी पत्री वडीलपणें सांमालीत असावे. विशेष काये लिहिणे लोमाची वृधी केली पाहिजे. हे विज्ञप्ती.

लेखांक [३३६]

श्री

[१७५६] ?

राजश्री रामाजीपंतभाउ स्वामीचे सेवेसी.

विनंती उपरी. देसीहून आजच चिरंजीव रो बाबुराव याचे पत्र आले वसाळतजग आरकडेस जाउ[न] तेथील सुभा आपले मार्येत घेउन फुलचरीचे फिरगी सुधा सर्व येक गाठ जाहली. हे गोष्ट निजामअली यासही भारी जाहाली. तूर्त सडा बतजंग व निजामअली याचा मजकूर फुलचरीकडे जायाचा आहे. श्रीमंताचा त्या[चा] सहजच सडख जाहाला. राजेश्री मल्हारजीबाबाही या प्रांती यावयास मोकळे जाहाले. सत्वरच येतील. हे विनंती. हिसेब आपाजीपंत याजवळ घावा. हे विनंती. श्रीमंत स्वामीचे दैव थोर [की] वसाळतजंगाने फिसाद केला. त्याचे कजियात निजाम गुतले. दहा लक्षाची जागीर आमदनगर दि[कि]अ भोगळ देईलसे दिसने. श्रीमंत रा नाना स्वामीस शरीरी अवकाश नाही. श्रीमंत रा विस्वासराठ^{१८२} स्वामी स्वारीस जातील. तूर्त कजिया वारावसा आहे. हे विनंती.

लेखांक [३३७]

श्री * संवत १८१२ फाल्गुन वद्य ३०

[३० मार्च १७५६]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपंत स्वामीचें सेवेसी.

पोष्य बालाजी जर्नादन [मानु] सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशळ तां छ * २८ जांखर मुा विजयेदुर्ग जाणून स्वकीये लिहित जावें विशेष.

(१८२) या पत्राचें वर्ष सदिग्ध आहे. होळकराचा तळ देशी असून ते उत्तरेकडे येण्यास मोकळे झाले अशी सधी १७५६ किंवा १७५९ ची होय. अर्थात पहिला योग येथें ग्रहित घरला आहे. [ले ७३] मास मात्र सांगवत नाही.

आलियाता तुम्हाकडील व्रत काहीच वळत नाही. आम्हाकडीत वर्तमान तरी मेटी जाहल्यानंतर सविस्तर लिंगाच होते. पावळच असेल. अलीकडील वर्तमान तरी गुदस्ताचा हिसेच विल्हेस लागला. साल मजकूर पर्जन पळिला नाही यामुळे नापीक आहे. अर्ध जमाही नाही स्थाकरिता कारकून देणे [तो] तहकीकात करील त्यावरी त्याणी जबाब दिल्या की कारकून कशाचा पाहिजे. आम्ही त्या प्रांते येतो. वुंदी व जमिदार होळकराचे कमाविसदार तहकीकात मनास आणून निर्गम करून. तुम्ही कोटेस जाणे. महारावजीस ताकीद करून कराराप्रो रूपये आणवणे. नाही तर स्नेह राहणार नाही असे बोलिले. काये करावी. धणी ज्याप्रो आज्ञा करील त्याप्रो करणे आले. उदईक स्वार होउन येत. येतो. तुम्हास कळावे याजकरिता लिंगा आहे. राजकी वर्तमान तरी रूपनगरात मोर्चे लाविले. जवळ गेले. सुरंग लाविला आहे. याचा मुदा घेतले बिना सोडीत नाही. तोफा मातबर लाविल्या आहेत. फते करतील. येथून निर्गम जाहलिया त्याच मार्गे येतील असे आहे. तुम्ही आपले काजकाम शहाणपणे करीत जाणे. रामोस साणके डोर दर्जन सिंगाने घेतले त्याविसी श्रीमंताचे पत्र रावराजा समेदसिंगास धैली पा आहे. ते पाठउन गुरे आणवणे. बहुत काये लिहिणे हे अशिर्वाद. येथे रा नारबा नानानी वगैरे लोकानी गुलाबदाण्या व घरजा नक्षी येण्या सांगितल्या आहे तरी सातआठे गुलाबदाण्या व घरजा १० येशा करवणे. तेथे होतील त्या तेथे करणे नाही तर कोटयातही काही थोडयाशा करवणे परंतु सत्वर करवणे. लष्कर त्या प्रांतास येतील तेव्हा वस्ता त्याच्या हवाला करावयास पाहिजे. तरी सर करवणे. बहुत काय लिहिणे हे अशिर्वाद.

लेखांक [३४१]

* भीरंकर

[१० मे १७५६]

सेवेसी राणे त्रिंबक कृतानेक साष्टांग नस्कार विनंती. लिंगा परिसोन सविस्तर वर्तमान तीर्थस्वरूपानी लिंगा आहे त्यावरून विदित होईल. व्दादसी त्रयोदसीस स्वार होउन येत. सासपत्नी मातृभी आकाजी व सौ बाईस सा नमस्कार प्रविष्ट करावा. सर्व खुशाल आहेत. सत्वरच येतील म्हणून सांगावे. बहुत काये लिहिणे कृपा असो दीजे हे विनंती. चिरजी [व] राजश्री गोपालरावजी ता चिरजीव लाळाजीस अशिर्वाद.

* हे स्वतंत्र पत्र नसून ले ३४०च्या अतीचा मजकूर असावा.

लेखांक [३३९]

श्री * संवत् १८१३ चैत्र वद्य १०

[२४ अप्रेल १७५६]

श्रीमंत राजश्री रामाजीपंतभाउ स्वामीचें सेवेसीं.

पोष्य वापुजी बलाल [फडके] सां नमस्कार विनंती. येथील वर्तमान ताा छ * २३ रजवु म्हा पुणे जाणून स्वकीये लिहित असिले पाहिजे विशेष. बहुत दिवस आपणांकडून पत्र येउन परामृष होत नाही [तरी] सदैव पत्री सामाल करावा. श्रीमंत कोंकण प्रांते गेले होते ते फाळगुन वद्य पंचमीस पुण्यास दाखल जाले. आपणांस कळावे. राजश्री मल्हारजी हॉलकर छोंणीवर काळ आले. आज जेजुरीस जातील. एकदोन दिवस तेथें राहून मग पुण्यास येतील. येथें आल्यावर सविस्तर लेहून पाठउं. राजश्री हरीपतदादा [दाभोळकर] सर्व मनुषे सुखरूप आहेत. † बहुत काये लिहिणे कृपा केली पाहिजे हे विनंती.

राजश्री लक्ष्मणपंत दाजी स्वामीस साा नमस्कार. लोभ करीत जावे हे विनंती.

† सेवेसी माहादाजी बलाल [गुरुजी]^{१८५} साा नमस्कार विनंती. स्वामीचे घरची मनुष्ये समस्त सुखरूप आहेत. सदैव पत्री सामाल करीत असिले पाहिजे. बहुत काये लिहिणे कृपा केली पाहिजे हे विनंती.

[पो] छ २४ सावान.

[२४ मे १७५६]

लेखांक [३४०]

श्रीशंकर * संवत् १८१३ वैशाख शुध ११

[१० मे १७५६]

श्रियासह चिरंजीव राजश्री नारोवा यासि वाळाजी यशवंत [गुलगुले]
आशिर्वाद. ताा वैशाख * शुध एकादशी इंदुवार मुा रूपनगर सुखरूप आसो विशेष. आम्ही

(१८५) याचे खरे आडनाव कोठे मिळत नाही. 'गुरुजी' या नांवानेच त्याची सर्वत्र प्रसिद्धी होती 'महादाजीपंत गुरुजी दप्तर कृष्णातीरपर्यंत हीते ते माघारे गेले' असा पहिला घोष १७५५त लागतो [ले २९५] १७६०च्या अती तो पेशव्यावरोवर उत्तरेकडील स्वारीत होता [कास ले. १९२] नंतर पहिल्या माघवराव पेशव्याचा तो विश्वासपात्र झाला. [इस २१ पाल १३६] सखाराम पंत बोकील व नाना फडणीस याच्या समान त्याची प्रतिष्ठा होती. याच गुरुजीच्या मध्यस्तीने पेशव्याचा गुप्त पत्रव्यवहार महादजी शिंद्याशी होत असे त्याचे केवळ एक पत्र या मागात पहावयास मिळते तथापि त्याचा स्वतंत्र लेखक शिंद्याकडे रहात असून त्याची काही पत्रेही प्राप्त होतात. 'राघो बलाल सहघडूचे' उर्फ गुरुजी असे त्या लेखकाचे नाव असून तो १७६८ पासून १७८७ पर्यंत शिंद्याजवळ होता. मग तो या गुरुजीचा बंधूच असला तर न कळे या प्रकारे गुरुजी या नावाच्या दोन व्यक्तींचा व्यवहार शिंद्याशी होता ही गोष्ट वाचकानी लक्षात असू द्यावी. याच महादाजीपंत गुरुजीच्या ठायी शिंद्याचा कोभ असून विश्वासही होता हे पुढें निदर्शनास येईल.

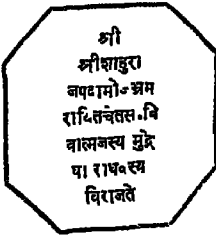
कलो आले की आपल्यास स्मरण नसेल. बरे आता स्मरणपूर्वक हिंस्र पाहिला पाहिजे. सदरहु पाच हजार श्रीमंत राजश्री भंगधरतात्याच्या [चद्रचूड] नावे वसूल लहून सरकारचा कजिया फैसल तिकडेसच करावा अगर आपल्या चितास नये तर आपली खासगत चिठी पाठवणे म्हणजे आम्ही तुमच्या नावे लेहून सरकारचे रुपये राजश्री रामराजजीकडे जमा करून देऊ. आम्ही स्वामी सिवाये काही नाहीत. जे आज्ञा कराल त्याजप्रमाणे वर्तणूक केली जाईल परंतु जोपर्यंत राा ताल्याच्या विद्यमाने फैसल तिकडेच होईल तर उत्तम आहे. यावर आम्ही विजयादगरीचे दिवसी मोहूर्त करून सत्वरच सेवेसी येहून पाचतो. भेटीनंतर सकल वर्तमान निवेदन होईल. सदरहु पाच हजारानी रकम वा रोहिला मा राजेश्री दामोदरपत [हिंगणे] वकील हे आपण आम्हापासून खासगत हिसेवी मजरा घेणते. सेवेसी कलावे यास्तव लेखन केले आहे. विशेष काय लिहिण लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३४४]

श्री लक्ष्मीकांत

१४९]

[२४ नवबर १७५६]



राजश्री बालाजी पंडित प्रधान गोसांवी यासि

सकलगुणालंकरण अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य श्री जानोजी भोसले सेनासाहेबसुमा दंडवत विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये. कुशल लिहित असिले पाहिजे विशेष. गोसांवी यांनी पत्र पाठविले ते प्रविष्ट जालें. लिहिलें वर्तमान आक्षरशाहा अवगत जालें. राजश्री सिवाजी भिकाजी यांजकडे नावती सरदेशमुखी प्रौ वराड येथील साल गुदस्ताचा आषाढमासचा साडे व्याणव हजार रूपये येणे स्यास सुदत होउन गेली स्यास ताकीद करून येवज पाठवावा मारनिलेचा बदोवस्त करून मामला यथास्थित चालविला नाही झणोन येवजास दिरंग लागला. सिवाजी भिकाजी आपलें तर्फेचेच आहेत म्हणोन विस्तारे लिहिलें. एशियास गोसांवीयानी आमचे

लेखांक [३४२]

श्री

[१० जून १७५६] ?

अपत्ये बालाने^{१८६} चरणावर मस्तक ठेउन सां नमस्कार. हाळी पत्रें वळिळांकडून आळीं त्यावरून सविस्तर वर्तमान कळलें. पत्री तपसीळ फार लिहिला परंतु आमचे स्मरण न जालें. वरकळ श्रीकृासीमध्य तीर्थरूप राजश्री दादा व मातुश्री आजीबाई सुखरूप आहित सो मातुश्री बाई यास जेष्ठ वद्य प्रतिपदेस देवज्ञा जाली. आपणास कळाव म्हणून लीा आहे. येथील वर्तमान तरी मेटांनंतर परस्परे निवेदन होईल. बहुत काय लिहिणे कृपा केली पाहिजे हे विनती.

राजेश्री गोविंदराठभाउ स्वामीस सां नमस्कार विनंती. लीा परिसोन कृपा कीजे.

राजश्री लक्ष्मण गोविंद दाजीस सां नमस्कार.

लेखांक [३४३]

श्री

[२८ सितवर १७५६] ?

श्रीमंत राजश्री रामाजीपंतभाउ स्वामीचे सेवेसी.

आज्ञाधारक लाळा भिकारीदास^{१८७} कृतानेक सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील क्षेम ताा अस्विन * सुष ८ मुकाम उजेन जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत आसिले पाहिजे विशेष. स्वामीनी पत्र पाठविले ते उत्तम समई पाउन वर्तमान अवगत जाले. पाच हजार रुपयेचा मार आपल्या पत्री व सरकारच्या पत्री लिहिला सांसि याचे वर्तमान येसे आहे जे सदरहू पाच हजार आम्हीं तुमच्या धरु हिसेवी मजरा दिले. आपण हिसेव मनास आणिल्या पाहिजे. आम्हांकडे काही रकम राहिली नाही. हे रुपये आम्हापासून आपण मजरा घेतले आणि. आम्हास दोनतीन टपकी लिहिले त्याजवरून

(१८६) विसाजी दादाजी आठवले याचा हा बहुषा पुत्र अथवा आप्त असावा. कारण की हे नाव आठवल्याच्या पत्रात येते. [ले. ३०५] या पत्राचे वर्ष संशयित वाटते. सगुणाबाई मट यात्रेस गेली होती तेव्हा कदाचित हा समागमे गेला असेल असे समजून क्रम दिला आहे. तो मागेपुढे होऊ शकेल.

(१८७) 'सिंचाकडून भिकारीदास गुजादौला ह्याकडे आहे' असे माऊसाहेवाने म्हटले आहे तो हाच वकील होय. [खंड १ ले. २०५] त्याचे नाव १७५५तही येते. [ले. ३३१, ३३३] अर्थात त्यापूर्वीच तो वकिलीवर असला पाहिजे. १७५१ हे साल घरले तर बावगे नाही. या पत्रात दामोदर पंत हिंगण्याचे नाव दिले असून तो १७५७त मरण पावला [खंड १ ले. ६३, ६९] तेव्हां ओघानेच वर्ष त्यापूर्वीचें मानले पाहिजे.

लेखांक [३४६]

श्रीशंकर * संवत् १८१३ मार्गशीर्ष वद्य ५
[१३ दिसवर १७५६]

श्रियासह चिरंजीव राजश्री नारोवा यासि घालाजी यशवंत [गुळगुळे] आशिर्वाद. येधीळ क्षेम ताा मार्गशीर्ष * वद्य सप्तमी जापोन स्वकीय लिहिणे विशेष. पत्र पाा ते पावळे. दस हजार रुपायाच्या हुड्या पाठविल्या. त्या पावल्या. बहुत काय लिहिणे हे आशिर्वाद.

लेखांक [३४७]

श्रीशंकर * संवत् १८१३ पौष वद्य २
[७ जनवरी १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
गंगाधरबाबा स्वामीचे शेवेसी.

पोष्य वाळ्जजी यशवंत [गुळगुळे] साा नमस्कार विनंती. ताा पौष्य * वद्य द्वितीया भृगुवारपर्यंत ययास्थित असे विशेष. बहुत दिवस आपणाकडीळ कुशलार्थ कळत नव्हता. सांप्रत आपले पत्र आले. राजश्री नारो शंकर याणी तोटाबाा दुराग्रह बहुतच केला. राजश्री लक्ष्मण नारायण व चंद्रमान सावकार दरम्यान होउन स्याज कडून मुक्तता करून आपणासि ठेविले. तुर्त याचे अटकावात आहे. राा सदोबा व राा रामचंद्र साबाजी उभयता येत्नास गेले आहेत असे लिहिले ऐसियास याणी हवाला कितिक रूपयाचा घेतला बनोन काये आले हा सविस्तर वृत लखन करावा प्रस्तुत वर्तमान यैकितो की राा भवानी शंकरजीचे पुत्र तेथे आहेत त्यासि राा नारो शंकर याणी कजिया आरंभिला. त्याचा त्याचा इतला तो काहीच नाही. महाली येत तो तुम्हाकडून होती. हा काये विचार आहे. असेच असले तरी त्याचा उपराळा करून त्यासि कजिया न होये ते करावे. लेकरे आहेत. त्याच्या कर्तुत्वावर नजर न घानी. आपला स्वधर्मच करावे. यानंतर सौा चिरंजीव आनुबाईस आणावी. मुहूर्त पुढा नाही. आपण लिहिले की संकट प्राप्त जाले हे मुक्त जाहलियावरी पाा तरी सरकारचा तो गुता उरकला. मुहूर्तासही आवकाश आहे. तरी आपण कृपा करून हा मुहूर्त साधलाच पाहिजे. तेथूनही मुक्तता जाहलीच आहे. त्यास आपल्या विचारे होईल तरी हा मुहूर्तच उतम आहे. उद्याचा दिवस कसा येईल हे कळत नाही. आम्ही तो लिहितच गेले. तुमच्या चिंतास येईल ते खरे. सहा वर्षे लनास, जाहली. आधाप दर्शन नाही. ऋणानबंधास काय इलाज आहे. बहुत काय लिहिणे. उतर येईल त्या प्रोा करू. कृपाळोभ असो दीजे हे विनंती.

निसवतीस अमल दिल्ली आहे त्याचा बदोबस्त न केल्याने सरकारचा येवज सुटेल की काये. मामळतीचा बदोबस्त करणे तो आम्हीं केलच आहे. सिवाजी भिकाजी आमचे तर्फेनेच आहेत. सरकारचा येवज मुदतीस पाठवावा उचित गोटी परतु निजाम आली आले याणी बराडात दंगा नजरेचा केला यांजमुळे माहालोमाहाल बाकी ५ राहिली आहे म्हणोन मुदतीस अंतर जालें. अतःपर आम्हीं बराडांत येतांच झार्डयानसी येवज पाठवीत आसो. पेस्तर सालचा मजकूर लिहिला त्यास सरदेशमुखीचा अमल आम्हाकडे तहनामियांत गोसांवीयानी लेहून दिल्लीच आहे त्याप्रमाणे साल मजकूरचा येवजांची ताकीद मामलेदारांस केलीच आहे. कराराप्रमाणे अंतर होणार नाही. १ रा छ * २ माहे रविलबल. बराडात आल्यावर आईवजाचा निकाल मामलेदारास सागून जळदीने आईवज पावे येशे होईल. सूजा प्रती विशेष काये लिहिणे. कृपालोम आसू दिला पाहिजे हे विनंती

मोतब
३५

पो छ २८ रविलोबल

[२१ दिसबर १७५६]

लेखांक [३४५]

श्रीशंकर * संवत १८१३ मार्गशीर्ष शुद्ध १४

[५ दिसबर १७५६]

अध्यासह चिंरंजीव राजेश्री नारोबास बाळाजी यसवंत [गुलगुले] आशिर्वाद उपरी, ताा मार्गशीर्ष * शुध चतुर्दसी जाणोन स्वकीय लेखन करणे विशय. जवारी याची मोतेची जाडी चौकडी व नथ येक व आगोठ्या २ हिरेची येक येक पंनाची यैसा माल सातसे रुपयेचा घेउन हुंडी करून दिल्ली. हुंडी झटी निघाली. यैसियास तो भूदेवजीचा जावाई आहे. माल आमचा आहे. तरी तुम्ही येत्न करून माल घेणे. जवारी मार याजकडे आमचे रुपये येणे आमचे ह्या घेउन उबम करितो याजकरिता लिहिले असे. वस्ता त्याणी गहाणे ठेविल्या असतील तरी आपले पदरचे ह्या सेपंनास देउन माल आपले हस्तगत करणे. आधी तो जेणे करून माल ये ते करणे. त्यापासी काही धायास नसले तरी आपणापासून ह्या देउन माल घेणे. या गोष्टीस अंतर न करणे. हे आशिर्वाद.

याची आसामीचे वेतन साला रूपये ७५० साडे सातसे देविले असेत तरी राजेश्री बोंबे
रघुनाथ द्याा श्रीमंत राजेश्री महारजी होळकर याजकडेस र्णा पाविले असेत. सदरहु
सनदाप्रो रूपये साडे सातसे मारनिल्हंस देणे. सके १६७८ धातानाम संवत्सरे फाल्गुन
* शुध १४ सुा लस्कर नजीक गंगरड. वड्डत काये ल्या कृपा निरंतर असो देणे हे विनंती.

पो छ २३ जाखर

[१४ मार्च १७५७]

लेखांक [३५०]

श्री * संवत १८१४ वैशाख शुद्ध १

[१९ अप्रेल १७५७]

राजश्री लालाजीबाबा कमाचिसदार

प्रो कौटे गोसावी यांसि.

अखंडितलक्ष्मीअलंकृत राजमान्ये स्नेा गिरजाजी श्हाणे द्याा चिंतोजी
नारायेण दंडवत विनंती उपर. लिहावया कारणे की आमचे आसामीबा वरात तुम्हावर
प्रो पाटण याचे ऐवजी रूपये २५० आक्षरी आडीचसे याची राजश्री चिंतो
नारायणाची घेउन आले होते ते सदरहु आडीचसे रूपये भरून पावले. रून् करून
देउ. हे कवज ल्या सही. मिती सके १६७९ ईस्वरनाम संवत्तर वैशाख * शुध १ प्रति-
पदा समत १८१३. बहुत काये लिहिणे हे विनती.

नगरा निशाणी.

गाही.

बा दादो अनंत कुलकर्णी गोजे दीसी

फट्नीस द्याा श्रीमंत सुमेदार

लेखांक [३५१]

श्री

[२७ अप्रेल १७५७]

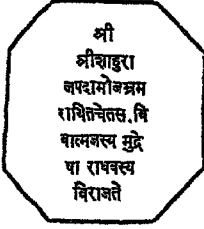
सहस्राये चिरंजीव त्रिजईमव राजश्री रामाजीपंत यासी प्रति गंगाज्यान्हवी राधाबाई
कृतानेक आसिर्वाद उपरी. येथील वर्तमान वैशाख * सुध ९ पर्यंत कुशल जाणउन स्वऱ्तीये
वर्तमान निरंतर लिहित असिले पाहिजे. यानंतर पलहारीसमामणे पत्र पाठविले ते पाउन
समाधान जाले. येसेंच निरंतर पत्र पाठवीत असावे. यानंतर पत्री लिहिले कि माया
निस्तुर केली पूर्वमायेस अंतर पडिले त्यासी आमची ममता पूर्ववत्प्रमाणे दिवसेदिवस

लेखांक [३४८]

श्रीश्रीलक्ष्मीकांत

१५३]

[७ फरवरी १७५७] ?



राजश्री बालाजी पंडित प्रधान गोसावी यांसि.

सकलगुणालंकरण अखंडितलक्ष्मीआठंकृत राजमान्य श्रीं जानोजी मोसले सेनासाहेबसुमा दंडवत विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीय कुशल लिहित असिलें पाहिजे विशेष. गोसावियांनी पत्र पाठविलें ते प्रविष्ट होउन लेखनार्थ अवगत जाहाळा. एशियास गोसावियाचें लक्षानरूपच इकडील विचार आहे. वरकळ सविस्तर अर्थ वरचेवरी पत्री लिहिला आहे त्याजरून श्रुत जाहाळा असेल. वारंवार ल्याहावे एसे नाही, फौज तयार आहे. जिकडे बोलाविलें तिकडे येत असो. वढगस्त सरदारी याजमुले गवगवा येउन पडतो. याउपरी विलंब न लावितां गोसावियाचें आज्ञाप्रौं मजळदरमजळ फौजसह गंगातीराकडे येत असो. गोसावियांचे आज्ञेखेरीज आह्या डील तिलतुल्य विचार नाही. रा छ = १७ माहे जमादिलोवल. श्री सु ५ ज्ञा प्रती विशेष काये लिहिणे कृपालोम आसू दिला पाहिजे हे विनंती.

मोर्तब
मुद्र

छ ८ जमादिलाखर. रविवार.

[२७ फरवरी १७५७]

लेखांक [३४९]

श्री

* संवत १८१३ फाल्गुन शुद्ध १४

[४ मार्च १७५७]

राजश्रियाविराजित राजेश्री

बालाजी येशवंत स्वामीचे शेवेसी.

सेवेसी व्यंकटाजी नारायेण कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशेल जाणोन स्वकीये कुशेल लेखन करीत असिले पाहिजे विशेष. चिरंजीव चिंतो नारायेण

लेखांक [३५३]

श्रीकालिका * संवत १८१४ आषाढ वद्य ३०

[१६ जुलै १७५७]

श्रीमंत राजश्री सुभेदारसाहेब साहेबाचे सेवेसी.

आज्ञाधारक सदाशिव पांडुरंग किले पावगढ कृतानेक आसिर्वाद विज्ञापनां येसीजे. येथील क्षेम तागायेत छं + २८ माहे सवालपर्यंत साहेबांचे कृपादृष्टीकरून किले मजकूरचें व सेवकाचें वर्तमान यथास्थित असे. यानंतर उर्जेनी कासिद यांच बरोबर आज्ञापत्र आलें तें काल छं २७ रोजी पावलें. त्यांजमध्ये आज्ञा कीं आमदा वादचे वातमीकरीता पहिले जासूद पाठविले ते वसउन ठेविले आणि वातमी वरचेवर लिहित नाहीं येसी सुस्ती न करणें. त्यास पहिले जासूद हंगोजी व गोविंद छं ७ रमजांनी आले. तेच समई सर्व वर्तमान तपसीलवार शहरातील व बाहेरील लष्करचें लिहून रवानां केले ते पावले नसतील. मुख्य गोष्ट वातमीची कीं या फौजेस अद्याप प्रथम दिवस आहे. निव्व दुसरे चौथे दिवसी भोगळाची फौज बाहेर निवोन युध्य होत असे. पर्जन्य प्रथम वडूत जाहाळा. ते दिवसी याणीं मोचें उठविले. तेव्हा तेच मोचें भोगळानें कायेम केले. फिरोन याणी हळा करून उठउन आपले वसविले. ऐसी हिंदोळा लढाई आहे. काही भोगळ जेर जाहाळा नाहीं. शहरात लोकांस वडूत उपद्रव. सर्वस्व लुटून घेत असे. भारी फौज आलेया विलंब होणार नाहीं. वरकड वर्तमान अजंम बाबुखानजीच्या पत्रावरून सेवेसी श्रुत होईल. सोथेची खंडणी दोनतीन वसे आली नाहीं याजकरितां फोज झालोदेस पाठउन सोधचे गाव मारले. अद्याप सख्खास आलां नाहीं. फोज तेथेंच आहे. सेवेसी कलावें म्हणोन लिहिलें असे. किले मजकूरवा बंदोवस्त उत्तम प्रकारें साहेबांचे पुण्यप्रताप आहे. वडूत काय लिहूं कृपा असो दिली पाहिजे हे विज्ञापती.

लेखांक [१५४]

श्रीगजानन * संवत १८१४ भाद्रपद शुद्ध १३

[२७ अगस्ट १७५७]

श्रीमंत राजेश्री भाउ स्वामीचे सेवेसी

विनंती सेवक केसो गोपाल कृतानेक साष्टांग नमस्कार विज्ञापना. येथील कुशल ता भाद्रपद * सुध त्रयोदसी मदवारपावेतो स्वामीचे कृपादृष्टीकरून म्हा श्री

(१८८) सुठ व लोणावडा हीं सस्थाने सिद्याची अकित होती असे जे विधान केले आहे त्याचे हें प्रत्यक्ष प्रत्यंतर पहावे. [भाग ४ ले. १ टीप १३]

बुधी होत आहे. त्याहीमवे अम्हांकडून ममनेस क्षीणता व्हावीसी नाही. सर्व प्रकारे तुम्हांवितरिक्त अम्हास अधिकोतर कोणी अहे असें नाही. यानंतर अंकुलनेरचा मजकूर किनेक प्रकारे लिहिला कीं चिरंजीव माहादाजीपत कबूल न केलें तर आमचा मजकूर अंकुलनेरावर काहीं सर्व प्रकारे मुखाचे चाळीवणे तुम्हांस अवषक आहे. सर्व प्रकारे पूर्वापासून तुम्हीं उभयेतानी चिरजीवाचा परामृश करीतच आला आहां. अताही सर्व प्रकारे चाळिविले पाहिजे. तुम्हांवाचून मुलास दुसरा विचार नाही हा तुम्हास विदितच आहे. आम्ही त्याहावेसे नाही. यानंतर अंकुलनर अम्हांकरिता करुन आणिलें आणि चिरंजीवानी कबूल न केले म्हणउन लिहिलें तर मुलास आपण अज्ञा केली कीं गाव ईजारा पधरा सहश्रास करुन ताहुद लिहून देणे म्हणउन सांगितलें. त्यासी राजश्री गोविंदमठचे पत्र अलें कीं आंकुलनेरची मामलेत कबूल न करणे म्हणउन गोविंदमठनी लिहिलें एसा कितेक मजकूर लिहिला. त्यासी तुम्हीं चिरंजीवापासून ताहुद लिहून घ्यावा येसा नाही. मुखांपासून तुमचें कार्यास अंतर पङ्गार नाही. येसा विचार होता त्यासी प्रस्तुत राजश्री कृष्णाजीपंतास साहेबयेखत्यारीने गाव स्वाधीन केला केला आहे. त्यासी चिरंजीवाचा अनविस्वास आपणांजवळ जाला येंसें दिसोन आले याकरितां मुलास बहुत प्रकारे रागास आलो की तुम्ही काये अन्याये केला की तुमचे ठाई विस्वास नाही येसा प्रकार दिसतो. † बहुत काये लिहिण कृपालोम असो देण हा आसिरवाद.

लेखांक [३५२]

श्री * संवत १८१५ वैशाख शुद्ध १०
[१९ मे १७५७]

श्रीमंत राजश्री दादासाहेब स्वामीचे सेवेसी.

विनंती सेवक सखाराम भगवंत [वोकीळ] साष्टांग नमस्कार विज्ञापना. येथील कुशल ताा छ * १० रमजान यथास्थित जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करावयासी आजा केली पाहिजे विशेष. स्वामीनी छ ४ रमजानचे पत्र पाठविले ते छ ९ मीनहूस प्रविष्ट जाहाले. तेथें आजा की लखउकंद साकरेचे सुजाअतदोले वहादर याजकडील वकीळ त्रिकनदास यांजकडून आणून पाठवणें म्हणोन लिहिले त्यास लखउकंदाचा तलास आज्ञेप्रो करुन आणून सेवेसी पाठउन देउ. † हे विज्ञापना.

काही खर्चास दिले त्याजवरून येथे टिकलो आहे आणि कामही चालते जाले आहे. श्रीमंत सुमेदाराकडील व तात्याकडील काम चालते. कर्जवाम करून छत्रियाचे काम चालीस लाखाचे तरी येथे कोणापासी येक पैसा मिळत नाही. कर्जही मिळत नाही. तरी कृपा करून तीन हजारची हुंडी जरूर पाठवणे म्हणजे माळ ठिकाण्यास जागेळ. नाही तरी गाल छीजतच जाईल. आमचा उपाय नाही यास्तव लिहिले असे. आणीक उपाय नाही. जरी छत्रियाचे काम पुगत जाले म्हणजे अम्हास येश येईल. आपला तो लौकिक जाला आहे. त्यासी पुरी पडले म्हणजे उत्तम होईल. बहुत काय लिहिणे हे विज्ञापना

वासिद अमच्या घरास गेला तरी आपण उजनीस असला तर सरकारचे कासिदाचगार हुडी देउन पाठवावी तो देउन जाईल. आमचीही काही खर्चावेचाची खयर ध्याळ तरी उत्तम आह. बहुत वेखर्ची जाला आहे यास्तव लिहिले आहे. काही घ्नास येईल तरी लिहून पाठवणे. आजपावेतो आपल्या कारवगर निघत येक रुपया लिहिला नाही आणि घेतलाही नाही. काम चालत होते. पुढील जागा करून ठेविली होती. बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [३५५]

श्री

* संवत १८१४ भाद्रपद शुद्ध

[सितवर १७५७]

श्रीमंत माहाराज राजेश्री पंत स्वामीचे सेवेसी.

विनंती सेवक गोविंद रायाजी दोनी कर जोडून सिरसाष्टांग नमस्कार विनंती. ता भाद्रपद * सुध पावेतो मुा फरकावाज येथे स्वामीचे कृपादृष्टीकरून सुखरूप असे विशेष. स्वामीचे आज्ञापत्र वद्य ८ मीचे आले ते येथे सुध ३ पावले. तदनंतर नवान्नसाहेब याजकडे गेले. वर्तमान विदित केले की दोचउ रोजी कूच झोउन अनूप शहाराजवळ फौज पोचते तुम्हीं आपले सरजामाची तयारीमधे राहावे. वरकड आपल्यास सुज्यातदवळे व शाजदीखान वजीर हे काही गोष्टीस लाविलील तर येकांदर न लागवे. याप्रमाणे सांगितल्यानंतर बहुत प्रकारे आपण खात्री मानावी त्याचे गोष्टीत काही फायेदा नाही. या गोष्टीने तुमचे मनोरथ सिधीस जातील, मग नबाब यानी उतर दिले जे आम्हास कोणी सर्व पातशाहीची जागा व पारची जागा किवा धनही पुष्यकळ देईल तरी ते आपण मानीत नाही. तुमचा माझा करार जाहाल. तुमचा सांगाती मी आहे. कोणाकडील कोणी आला तरी तुम्हीं ल्याचा विचार मनात संशय न मानणे. विल कुल तुमचे आहे. वरकड म्हणाल जे कागदपत्र वकील चहुकडून येतात त्याचा विचार तर

वृंदावन येथे सुखरूप असो विशेष. पेशजी दोनतीन पत्रे पाठविली त्याचे उतर स्वामी कडून येकही आले नाही. पठाणाच्या दगियामुले सर्व खराबी येथील दोज[?] श्रीमथुरा वृंदावन येथील जाली ती लिहिता पुर्वत नाही. पठाणाचा चालीस रोज मुकाम जाला. चौवियाचा तो सत्यानास गेला. श्रीमथुरामची ब्यार हजार माणसे मेळी व बंदीस गेली. श्रीवृंदावन येथील आठसात हजार^{३८९} माणूस मेले. कोणजवळ येक तांब्या राहिला नाही. बेफाम होते. येकायेकच चालीसपचेतालीस कोस आला आणि येथील लोक म्हणत होते की आजपावेतो या दोही स्थलास हिंदुमुसलमानाने कोणी हात लाविला नाही यास्तव कोणी येथील माणूस निघाला नाही आणि वस्तभावही कोणी नेली नाही यास्तव अम्हीही कोठे गेले नाही. फाल्गुण सुध येकादसीस तिसरा प्रहरपावेतो पठाण दिळीहून माधारा गेलियाची खबर होती सांयकाली येउन पोहचला. अम्ही येकादसीस अधरात्री पार अतरवेदीत येकेक धोत्रानिसी निघोन गेले. दुसरे अगवख राहिले नाही. गाडे छकडे वस्तभावेचे भरिळे ते निभावले नाही. येथील येथे छुटले. अम्ही येकादसीस रात्री निघाले ते समई शिकारखानियाची बाकी रुपये सा^{३९०}त हजार होते ते पुरुन ठेविले होते. त्यासी येक आमचा चाकर अम्हापासून फुटोन काा कायेत होता त्यासी तेथील मोकदमानी त्या चाकरास फुसलून श्रीवृंदावनात आणून मोकदमानी व त्या चाकराने वस्तभाव काढून नेली व ते मोकद[म] कार्दम आहेत. फौज आली परतु अगरीयावत्नच दुरुन दिलीस गेली आणि रुपरामानेही स्याजवळ करार केले होते की आपण वस्तभाव घेउन देउ. त्यासी फौज गेलियालपरी ती गोष्ट राहून गेली. जरी आपण येउन जवरदस्तीने वस्तभाव ध्याल तरी हातास येईल. बहारघाटाची बाकी रुपये २२०० बावीससे गेले आहेत. छत्रियाचे काम राहिले आहे. माल तयार जाला आहे. तरी हे रुपये हातास तील ते समई काम होईल. अगर तेथून हुडी येईल तरी काम पुरत होईल. माल उजाडतो. रुपरायास ताकीद करुन रुपये घेउन देवणे अगर तेथून हुडी तीन हजारची पाठउन देणे. तरी हा माल ठिकाणी लागेल. अधिक [ल] कोणाचे देणे राहिले होते ते कर्जवाम काढून दिले आहे आणि घाटावरी सकाडा माणसे मेळी आहेत. त्याची दोनचारसे रुपये लाउन ब्राह्मणभोजन करावयासी रुपया नाही आणि अम्हाजवळ एक कपदिक राहिला नाही श्रीमत राजश्री[गंगोबा]तात्यानी

(१८९) हे पत्र महत्त्वाचे आहे. 'मथुरेतील ब्राह्मण व बैरागी बेसावध होते वृंदावनात आठ हजार बैरागी हत्यार धरुन मेले' या बखरीच्या वर्णनाची तुलना करुन पहावी म्हणजे तिची प्रीबी पटेल. अनेक साक्षीपंकी ही एक झाली आणि तीही दामोलकराच्या कारकुनाची होय. तो स्वानुभवच सागतो. [लि. ३३१] लेखकाची पहिली दोन पत्रे उपलब्ध नाहीत.

लेखांक [३१६]

श्री * संवन १८१४ अधिक आश्विन शुद्ध १४

[२६ सितवर १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीवावा स्वामीचे भेवेसी.

सेवक ।।मराठ नीलकंठ कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशल ताा आधिक * शुभ १४ पर्यंत यथास्थित जाणोन स्वकीये कुशल लखन करीत गेले पाहिजे. तदनंतर श्रीमंत राजश्री यजमान स्वामीनी तनह्याच्या बाकीविषई आज्ञापत्र पाठविले ते वजिनस आपणाकडे पाठविले आहे. मनन करून स्वामी आज्ञेप्रमाणे बाकीचा येवज झाडि-यानिसी पाठउन द्यावी. श्रीमंताचे मुकाम टोक्रेवरी आहे. या प्रांती आगमन सत्वरीच होईल. येवज सत्वर पाठउन दिल्या पाहिजे. वरकड इकडील वर्तमान यथास्थित असे. तिकडील स्वकीये व राजकी वर्तमान लिहिले पाहिजे. । वहुत काये लिहिये कृपालोम असो देणे हे विनंती.

पो छ २३ मोहरम. कासिदवरावर

[८ अक्टूबर १७५७]

लेखांक [३५७]

श्रीमोरया

[१७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

गोविंद देवजी दिा राजश्री

चिमणाजी गोविंद स्वामी सोस.

सेवक गंगाधर पेशवत [चंद्रचूड] व आनंदराबराम साा नमस्कार विनंती उपरी. गोपाळ त्रिंबक याची सनद तुम्हाकडे पाठण येवजी येजमानानी करून दिल्ली आहे त्याजविसी तुम्ही गर्दगुदर करिता म्हणून कळो आले. त्यास सरकारची सनद आसता दिकत का कावावी. सनदेशरहुकुम चालवणे. तुम्ही व राजश्री वाळाजीवावा येकेविचार राहून सरकारचे कामकाज करीत जावे. दरबारी कोणे रीतीने वर्तणूक होती. तुम्ही न्दत दाखवावे. योग्य नाही. सांराश येकरूप आसत जाउन कार्यभाग करीत जाणे. कोणेविसी विलक्षण न दाखवणे. सारशे आसणे. हे विनंती.

त्यास नको म्हणावे येसे नाहीं आंण त्यासही आम्ही सांगितले जे आपण राजश्री ज्ञनकोजीबावा व राजश्री दत्ताजीबावा व स्वामीचे नाव घेउन सांगितले की त्याचा माझा कडलकरार जाहाले [जे] ते जिकडे नेतील तिकडे मज जाणे. याप्रमाणे सांगितले आण येक गोष्ट मनसबेची केली ते कोण तर जुजातदवळा येथून पनरा कोसावर येउन राहिला. [तो] तूर्तच घाटावर येईल याजकरिता त्याचा हिरीस लाडाईचा माडून फौजेची आफ्ना दाखउन मामलात करा म्हणउन त्याचे वकिलास सांगितले. लडाई करुन काही परिणाम नाहीं. तुजा येक मातबर मळमाणस पाठउन दे अम्ही बोली करुन मामलात करुन देउ. येसे बोलिले की आपल्यास जे जे घाट आहेत त्यांजवर तो नये येसे केले. सरजाम तयारीचा करणे म्हणउन आज्ञा त्यास सरजाम तो तयारच आहे. वगैरा जो करणे तो करीतच आहे. श्रीगंगा काही अघाप उतरली नाहीं. दोन नक्षत्रे याप्रमाणे झडी. येथील मर्ये दानशा बारा नजीक आहे. येथे गंगा वढोन आली. येक खेव नाव माटे म्हंनतीन दिवसांमचे येतो. याप्रमाणे पात्र जाहाले. आंणखी त्याणी सांगितले जे आम्हीं इमान प्रमाणाचे कागद लिहोन ठेविले परंतु तुम्हीं जे तेथे सेरदाजखान याजपासी इमानाचे कागद ठेविले आहेत ते येणेप्रमाणे श्रीमंत राजेश्री ज्ञनकोजीराव व श्रीमंत राजश्री दत्ताजीराव श्रीमंत राजश्री पंत येसे तिनी वर्गाचे इमानप्रमाणाचे निराले निराले सिके मोहरानिसी सेरदाजखान याजपासी आहेत ते आणवणे. ते येथे तुम्ही आमचे हवाली करा. अम्हीं तुमचे हवाला करुन देतो आंण बिदा करु. त्यास स्वामीनी कृपा करुन सेरदाजखान याजपासी कागः पाठवावयासी आज्ञा केली पाहिजे. पेसजी नकल त्या पत्राची सरदाजखान याने पाठविली असल. आले नाहीं तर असल येत ते करणार स्वामी घणी समर्थ आहेत. याजकडील काही कोणे गोष्टीचा संवशय नाहीं. बिलकुल आपले येसे याचे भाषणावरुन व तरतुदीवरुन दिसते. काही गुंता नाहीं. श्रीगंगा मातुश्रीचा मात्र गुता. वरकड काही दिसत नाहीं. वरकड सुजातदोला साडीहून माधारा बिठुरा नजीक दोन कोसावर गेवा. साडीहून माधारा तीन कोस आण तेथून विठूर दोन कोस. त्याची मातुश्री येणार होती. ते नवात्र याणी मना केली की तु न येणे. तुमचा आमच कोण स्नह आहे. अम्हीं दक्षिण्याचे आहो त्यावरुन [ती] न आली. सर्व अटक इमानाचे पत्रावर आहे. ते मुजरद कासद स्वामीनी लेहून पोचती मजगासीं करावी किंवा सेरदासखान याचा जासूद घेउन येईल तर मज पत्र लिहावे म्हणजे मज कलेल. सेवेसी श्रुत होय वरकड वर्तमान त्याणी आपले सरदाजखान यासी लिहिळे आहे त्यातही सर्व गुंता इमानाच्या पत्राचा मात्र आहे. जे वर्तमान अधिकोत्रर दिसेल तरी सेवेसी लिहोन पाठउ. बहुत काय लिहिणे कृपा करणार स्वामी घणी समर्थ आहे हे विज्ञापती.

येविशी आपणास दोनतीन वेळा लिहिळे, त्याच उतर आले नाही. मग आम्ही त्याची सनद सदाराम तेजपाळ याचे दुकानी देउन त्याजभासोन दीडसे रुपये घेतले. तुम्ही सेटी मार यास प्रविष्ट करणे. १ सरकारची पत्रे आली होती ते आपणाकडे पावली आसेल. अम्ही देशास जातो. श्रीमंताचे दर्शनात आपण आज्ञा केली त्याप्राा वर्तमान निवेदन करू. बहुत काय ल्हा लोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकजीबाबा स्वामीस साा नमस्कार विनंती उपर. कृपापत्री सांभाळीत असिले पाहिजे हे विनंती.

लेखांक [३६०]

श्री * संवत १८१४ अधिक आश्विन वष ७

[४ अक्टूबर १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामराउ नीलकंठ कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशळ ताा आशिक * वष ७ पर्यंत यथास्थित जाणोन स्वकीये कुगळ लेखन करीत गेले पाहिजे, तदनंतर कृपा करून पत्र पाठवले ते उत्तम समई प्रविष्ट होउन कुशलार्थ आवगत जाला. सा राघोबाबास पत्रे लिहिली ती त्यास प्रविष्ट केली. आम्ही त्यास जे सांगणे ते सांगितले. आमन्वरेचा कार्यभाग उरकून याच मार्ग येतील. प्राा कोटेचा पाटणचा हिसेव तुम्ही सरकारात ल्हून पाठविलात आसल, आ हीही येथून दशमीच्या मुहूर्त स्वार होउन १ राजेश्री राघोबास तुम्हाकडे वाटे लाउन जाउ. त्याची निशा देसी करणे तैसी करून तिकडे पाठव. वरकळ सरकारचा हिसेव तुम्ही पाठविलाच आहे. आम्ही प्रसंगोचित जातो. आपले आज्ञेप्रमाणे तेथे निवेदन करू. बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३६१]

श्री * संवत १८१४ आश्विन शुद्ध ५

[१७ अक्टूबर १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

वाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक रामराउ नीलकंठ कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. यथील कुगळ ताा आश्विन * शुध ५ पर्यंत यथास्थित जाणोन स्वकीये कुशळ लखन करीत गेले पाहिजे विदेश. स्वामीनी पत्र पाठविले ते उत्तम समई प्रविष्ट होउन कुशलार्थ आवगत

लेखांक [३५८]

श्रीमोरया

[१७५७] ?

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबा [गुलगुले] स्वामीचे शेवेसी.

सेवक गंगाधर येशवंत [चंद्रचूड] व रामाजी यादव सास्तांग नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून शुकुशल लेखन करित अंसावे विशेष. बहुत दिवस जाले कांही वर्तमान कळल नवते. त्यास रो आबाजीपत [निगडीकर] आले याणी आपले व प्रगणे मजकूरचे वर्तमान सर्व निवेदन केले. त्यास येविशी पत्रे धावी परंतु येजमान मजलदरमजल पुढे चालिले याजकरिता सांप्रत अनकुल न पडिले. यजेमानापासी पोचल्याउपरी ताकीदपत्रे पाठउन देऊ व तुम्ही येकाविचारे राहून सर[कार] किफायेत होय ते करित जाणे. याणी तुमची स्तुत बहुतसी केली. येसीच पुढेही करित येसे येक्याचिते असावे. ' येविसी सूझा प्रती विशेष काय लिहिणे. लोभाची वृधी करावी हे विनंती.

लेखांक [३५९]

श्री * संवत १८१४ अधिक आश्विन वद्य ३
[३० सितवर १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळोबाबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सत्रक रामराळ नीलकंठ कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. यथील कुशल ताा आधिक * वद्य ४ पर्यंत यथास्थित जाणोन स्वकीये कुशल लखन करित गेले पाहिजे. तदनंतर आपण पत्र पाठविले ते उत्तम समई पाठन सकळ वर्तमान आवगत जाले. प्राा पाटणपैकी येवज माा सादाराम तेजपाल याचे दुकानची हुंडी पाठविली ती पावली. त्याची रसीद अलाहिदा पाठविली आहे ते प्रविष्ट होईल. दुसरे आपण राजश्री राबोबास पत्र लिहिले तेही त्यास प्रविष्ट केले. आमझरेचा कार्यभाग जालेवर तेच मार्ग येतील. श्रीमंत राजश्री यजेमान [शिंदे] स्वामी टोक्यावर आहेत. मागून श्रीमंत राजश्री विश्वासराउ वळळ [भट] येणार. यांची त्याची भेटी जालियांवर कुचे करून येणार. सत्बरीच आगमन होईल. राा आउंवा गोसांवी श्रीगोंदेकर यांसि श्रीमंत दात्रेव तमाम मंडली करून दिले त्याप्रमाणे आपणावरीही रंा १५० दीडसे करून दिले.

केले पाहिजे. तदनंतर आम्ही दक्षणेस जावयानिमित्त प्रस्तानास आळियानंतर श्रीमंताकडील पत्र आले. तेथे ताम्राचा व यजमान स्वामीचा युधप्रसंग, जाल. परस्परे हर्षामर्ष होउन समानरूपच राहिले. सख्खाचाही पैगाम [आला] सिध्न कालेच सख्ख होउन येईल परंतु मार्गाची सुरक्षितता पाहून चालवे. याजकरिता काही दिवस येथे मुकाम केला. अतःपर कूच उदईक करून मजलदरमजल जाऊ. याउपर राजश्री राघो केशव यासि श्रीमंत राजश्री पंत प्रधान स्वामीनी क्कोटयास राजश्री यशवतराउ पवार याच्या हिस्त्याचा यैवज सरकारच्या कर्जाचे यैवजी ध्यावयाबदल यासि पाठविले आहे. यविर्षई मुख्य श्रीमंताची आज्ञापत्रे व श्रीमंत आपले यजमान स्वामीची तुमच्या नावे व राजाचे नावे आहेत. ते स्वामीच्या दर्शनाती दाखवितील. त्यासि आपण सरकारच्या कामा बरी नजर देउन पवाराकडील कमाविसदार प्राचीन असतील ते जरी उठोन जातील तरी सुखरूप जावोन. अज्ञाही तेथील याच प्रकारची आहे परंतु तुम्ही याच्या कार्याची साहिता करून यैवज सरकारचा वसूल, जालिया यानी श्रीमंतापासी आपली तारीफ केलिया कृपा संपादिलीसी जाली आणि याच्या कार्यात अतर आपणाकडून जाल्या रुपये, तो सरकारचे आहेत. घेणार जबरदस्त ते घेतील. परस्पर साहित्य न जालिया शब्द लागेल यास्तव अम्ही आपणास सूचनार्थ सरकारचे कार्य जाणोन आणि राघोपंताचा आमचा परम श्रेह त्याप्रमाणे रक्षण कार्यमाग करावा. हे तेथील रीतीस नावाकफ म्हणोन आपणास लिहिले यास्तव ज्यामध्ये याचा कार्यमाग होय ते करीत जावे. सदैव पत्री परामर्षास अविस्कार आसावे. वडूत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

राजश्री त्रिंबकजीबाबास साा नमस्कार विनंती उपर. लीा परिसोन लिहिल्या प्रमाणे साहित्य करून जेणे करून मुख्या शब्द न लागे ते करावे. हे विनंती.

लेखांक [३६४]

श्री * संवत १८१४ कार्तिक वद्य ७
[३ विसवर १७५७]

श्रीमंत राजश्री भाउसाहेब [दामोदकर] स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य लक्ष्मण केशव [वैद्य] कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनंती. येथील वर्तमान ताा कार्तिक * वद्य ७ पर्यंत स्वामीचे कृपावलोकने करून समस्त सुखरूप असो विशेष स्वाम गेलियादारम्य दोनतीन पत्रे आली परंतु सेवकाचा परामर्ष पत्री न

जाळ. रसीदा लहून पाठवणे म्हणोन लिहिले त्यावरून रसीदा लेहून पाठविल्या आहेत. प्रविष्ट होतील. दुसरे श्रीमंत राजश्री विश्वासरावजी व श्रीमंत यजमान स्वामी फौजसह आवरगावादेस शाह देउन बैसले आहे. भोगलाचा याचा हर्षामर्ष वाढला आहे. तेथील विचार जालियावर काये मनसब होईल तो पहावा. १ आम्हीही देशास जावियाचा निश्चय आम्हिन वच ? प्रतिपदेस फेला आहे. आमची कासिदजोडी गेली आहे. सविस्तर वर्तमान आलिया लहून पाठउ. बरकड इकडील वर्तमान यथास्थित असे. आपणा कडील हर वडी येनारासमवेत पनाची लेखन करून सांमाळीत गेले पाहिजे. १ बहुत काय लिहिणे कुगलोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३६२]

श्री * संवत १८१४ आश्विन वद्य १

[२८ अक्टूबर १७५७]

बंधुवर्गसिरोमणी राजेश्री रामाजीपंत स्वामीचे सेवेसी.

सेवक राघो हरी आठवले मुा पुणे साा नमस्कार विनंती. येथील क्षेम ताा आश्विन * वद्य प्रतिपदापर्यंत सुखे असो विशेष. आम्ही अधिक आश्विन वद्य त्रयोदसीस पुणेयासी आले. आपले दर्शन बहुत दिवस भेट जाहाली नाही. भेट होईल म्हणून आलो तो आपण लस्करांत गेलेत. बरे भेट होईल तो सुदिन. वडीवडी येणारा मांणसासमागमे आमचे स्मरण करून पत्रिकाप्रेष करून संनोषवावे हे योग्य आहे. स्मरणार्थ लिहिले आहे. कुटुंबगत आहो येसे चितात आपून लोभ करीत आसावे. आम्ही ज्या यजमानापासी होतो त्याणे संतोष दिला तो आर्थ पत्री लिहितां नये. आम्हा-विशीं सामालास आतराये न करावा म्हणून बंधुवर्ग राजश्री हरीपंत दाजीस लिहावे ते तो सामालास आतराये करीत नाही. सर्वथें सामाल करीत आहेत. तेथे विस्तर पत्री लिहावे येसे काये आहे. कुगलोम करीत आसावे हे विनंती.

लेकांख [३६३]

श्रीराम * संवत १८१४ आश्विन वद्य १२

[८ नवंबर १७५७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

बाळाजीबावा स्वामीचे सेवेसी

पाो रामराउ नीळकंठ कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनंती उपर. यथील कुशल श्रीकृपेकरून ताा अश्विन * वद्य १२पर्यंत यथास्थित जाणोन स्वकीय कुशल लखन

लेखांक [३६६]

श्री * संवत् १८१४ मार्गशीर्ष शुद्ध १२

[२१ विसवर १७५७]

श्रीमंत राजश्री दादा स्वामीचे सेवेसी.

विनंती शेवतू जनार्दनराम^{११०} कृतानेक साष्टांग नमस्कार विद्यापना.

छ * ९ रबिलाखर मुकाम नजीक गंगेरू नजीक ठाणे श्रीम स्वामीच्या कृपेकरून वर्तमान यथास्थित असे विशेष. अज्ञापत्र सादर जाले तेथे आज्ञा की राजश्री मल्हारजी होळकर व विठ्ठल सिवदेव [विचुरकर] नजीबखानाच्या पारपत्यास पाठविले आहेत तरी तुम्हीं यासी सामिल होउन नजीबखान याचे पारपत्य करणे म्हणोन आज्ञा. त्यास नजीबखान तो गंगा उतरोन पार गेअ. आम्ही याजबरोबर राहावे तरी याचा आमचा बनाव बसणार नाही. स्वामीचे पाये सोडल्यास सहा महिने जाले. सरकार कामासाठी इकडे आलो. त्यास इकडील कामाची विव्हेवाट जाहाली. याउपरी आम्ही निवोन धण्यपासी येतो. येविसी पूर्वी पत्रे सेवेसी पाठविली आहेत. आज्ञा होणे ते जाहालीच असेल. ते पत्र आम्हास पावले नाही म्हणोन हाली सेवेसी विनतीपत्र लिहिले आहे. त्यास-उतर आल्यावर निवोन सेवेसी येतो. सेवेसी श्रुत होये हे विद्यापना.

पोा छ १५ राखर

[२७ विसवर १७५७]

लेखांक [३६७]

श्री

[२९ विसवर १७५७]

श्रीमंत माहाराज मातुश्री आईसाहेब^{१११} यानी राजश्री रामाजी आनंत यांसी आज्ञा केली येसीजे. सांप्रत तुम्हाकडून विनंतीपत्र येउन वर्तमान विदित होत नाही. तरी साकल्य वृत्त विनंतीपत्री लिहून पाठवणे. यानंतर साहेबी तुम्हास संक्रमणाचे तीळ शर्करायुक्त पाठविले आहेत घेउन विनंतीपत्र पाठवणे. जाणिजे छ * ७ माहे रबिलाखर. १ बहूत कृपे लिहिणे.

लेखन
शुध

(१९०) 'चिरजीव जनार्दनपत' असे गोविंदपत बुढेले एका पत्रात जें नाव देतो [लि ३३०] तो हा पुरुष नव्हे पेट २१ ले १३७, १४२ पेट २७ ले १८८ वा हा लेखक आहे त्याचे आठनाव आठवले असे सपादकाने विले आहे

(१९१) ही मातुश्री जीजाबाई सोसले करवीरकर असावी कारण त्याची दोन पत्रें पुढें आली आहेत [लि ४०२, ४०३] पेट २१ ले. १०६ हे पत्रसुद्धा याचेच दिसते

जाला. येसे नसावें. सदैव पत्रप्रसणी आज्ञा करुन सामांल केला पाहिजे. दसरा जालियावर स्वामीकडे येणार त्यास मोगळाचा सळा लाबतच चालला मार्ग सुरलीत चालत नाही म्हणोन आज जाउ उर्धा जाउ येसे करतां इतके दिवस लागलें. याउपरी कधीं यावें ते ल्या पोा व्याप्रोा निधोन येईन. आपले घर तयार होत आले. खालचे काम तयार जाले. वरचे मजल्याचे काम चालत आहे. सर्व सुखरुप आहेत. सेवेसी विदित व्हावे, बहुत काये लिहू कृपा वर्धमान केली पाहिजे हे विज्ञापना.

† राजश्री नानाजी ना ता राजश्री जिववा' नार्क स्वामीचे सेवेसी सा नमस्कार विनंती. कृपा कीजे हे विनती. वाो राजश्री धुराणीकबाबांस व घोा राजश्री मास्कर भटजीस नाना तुम्हीं आमचे साा नमस्कार प्रोा करावे. हे विनंती.

† सेवेसी रामाजी केसव [वैद्य] कृतानेक साा नमस्कार विनंती. सदैव कृपा पत्री सामांल करावा. कृपा वर्धमान केली पाा हे विनंती.

लेखांक [३६५]

१५७

श्रीशंकर * संवत १८१४ कार्तिक वद्य ११

[७ दिवसर १७५७]

श्रीसिवचरणि
तत्परवापुत्री
सुतक्षणमेतरा
वनीचळक
१

राजश्री दत्ताजी सिंदे गोसावी यांसी

सकलगुणालंकरण अखंडितलक्ष्मीअलंकृत राजमान्य श्रो हृणमंतराउ निंबाळकर रामराम विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. नवाबसाहेबाचा व आपला हर्षामर्ष अजी तीन महिने वाहळला आहे येणे करून दुतर्फीही श्रेहास उतम नाही. त्यासी त्यांचे व आपलें रहस्य व्हावे येसा मनोदये आमचा आहे. त्याचे पदरी तुह्यासारखे मातबर सरदार आहांत व इकडे याचे पदरी अम्ही आहों त्यास अपला श्रेह आणि जिव्हाळा मायामता आहे म्हणून अपन्यास श्रेहाने पत्र लिहिले आहे. तरी हे गोष्टी ऋ चितात आणून उतर पाठवाचे म्हणजे कोणी कारकून पाठउन देउं. हे यंश आपण न्यावे यांत उतम आहे. बहुत लिहिणे तरी आपण सूत्र आहेत. राा छ * २४ रोवळ. बहुत काये लिहिणे कृपा असो दीजे हे विनंती.

मोरा
वसुध

लेखांक [३६८]

श्रीशंकर

[जनवरी १७५८] ?

श्रीमंत राजेश्री रामाजीपंतभाउ स्वामीचे शेवेसी.

पो नारो शंकर^{३३} सां नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल स्वामीचे कृपेकरून यथास्थित आसे विशेष. बहुत दिवस जाले कृपापत्र येउन वक ाचा परामर्ष होत नाही. येसे नमावे. सदैव कृपापत्री सामाळ करीत असावां. याउपरी गत वर्षी पुण्यांत आलों तेव्हा मागील मामळतीचा फडशा करून पेस्तर इजारा कारारवाकं करून घेतला. करारप्रांी सरकारचा पैसा ठेविला नाही आणि चाकरीसही अंतर केले नाही. श्रीमंताची आज्ञापत्रे दोनच्यार आली. तेथे आज्ञा की श्रीमंत राजेश्री दादासाहेब याजकडे जाउन आपला बंदबस्त करून घेणे त्यावरून सासात मास श्रीमंतासमागमे चाकरी फौजसह दिल्लीपर्यंत केली. तेथे आज्ञा जाली कीं आम्हास पैका श्रौंड रुपये येतात तुम्ही मामळत सोडणे. येसी आज्ञा जालियावर चाकरलोकास उजूर काये.

(१९२) 'आम्ही साठवासष्ट वर्षे दिवसेदिवस आतू मिळविली' असा चरित्रार्थ या पुरुषानेच आपला दर्शविला आहे. [खरे ३ ले ७२७] हे पत्र २६ जुलै १७६७चे होय. अर्थात त्याच्या प्रपचास प्रारंभ १७०७ पासून झाला असे निष्पन्न होते १७१८तील दिल्लीच्या स्वारीत 'नारो शंकर असे नाव येते ते याचे असावें असा भास सपादकास झाला तो मात्र सदिग्ध आहे. [पिद ३० ले. ३०८] त्याविषयी सहायनिवृत्ती या प्रकारे होते १७२६पासून १७४१पर्यंत तो होलकराकडे होता 'आमची चाकरी उपरालियाची होती' [पिद २३ ले. ५] 'नस्ती खेकटी काहाडोन आपणावरी काविषी करितात. पुढे श्रीमंताचे पदरी पडो यैसे करावे दाहापचरा वरसे होलकराची चाकरी केली परतु मराठे बयेमान आणि उभयताचा प्रसंग यैकोन [शिंदेहोलकरांच्या] बुधीस भूष जाला आपणावरी फारसी गाड आहे. तरी उपराला श्रीमंताकडोन करउन पदरी घेवणे'. [पिद २१ ले. १] 'राणोजी सिंदे व रामचंद्र बावा याणी आमची स्थापना केली. ते पदरा वर्षे क्रमिली' असे या पत्रांत म्हंटले आहे त्यावरून १७४२ त त्याचा मनोव्य पूर्ण होऊन तो पेशवाइंत परत गेला असे स्पष्ट होतें 'उभयतां सरदार व बावा स्वामीनी आम्हास इकडील पारपत्यास ठेविले म्हणून याच्या बधुचें पत्र मिळते ते यथार्थच होय [खड ६ ले. १८४] यानंतर पुढे १७५७च्या आरमी दोषावर बरबळ आली. 'लक्षमणे शंकराचा लबाबिमा नारो शंकरापासी आहे ते आलियावर जप्ती करितो' हे राघोबाचे कथन [खड १ ले ५९] आणि 'स्वामीची आज्ञा घेउन क्षासीचें मार्गें आली. तमाम ठाणी वोडसे दतिया भदावर कष्टुवाधार मिलोन खाली करून दिली तदनंतर किले क्षासी व करेरा हवाला करून रंसीव घेतली. बाकी रजु करून दिली. भाहाबाची गोविंद याचे जाब घेउन हवाला केले. चुगलानी भराच्या गोष्टी करून मामळत काढिली परतु परिणामी तन्ही कलेल'. हे वर्णन या पत्राशी जुळते. [पिद २३ ले ९२] 'नारो शंकर याजवर क्षासीचे मामळतसवधी हिसेबाचा पैच होता. ते समई दताजी सिंदे यानी विनती करून आपलेपासी

राजेश्री राजोजी सिंदे व रा रामचंद्रबाबा [सुखठणकर] याणी आमची स्थापना केली. ते पंदरा वर्षे क्रमिली. आता आपले हातें स्थापना करुन सरदारीचा डौल सजून सरंजाम जागा देउन अभिमान धरुन आपले तेनातीस करुन घ्यावे. मामलत करणार नाहीं. सिलेदारीचा [स्वीकार] करुन काही दिवस आयुष्याचे घालवावे आणि सत्समागमें राहावें. यासिवाये दुसरा अर्थ नाही परंतु बखेडा पदरी आहे याची सोय करुन देवावी. शफ्तपूर्वक येविषई अभय उतर पाठवावें म्हणजे समाधान होईल. मार्गप्रतीक्षा करीन आसो. उतर सत्वर पाठविले पां. येसमई टाकिलीसांड न देणें. निदानचा प्रसंग आहे. तुम्हासखे मुर्वी असोन कोणास शरण जावें. † बहुत काय लीा हे विज्ञापना.

लेखांक [३६९]

श्री

* संवत १८१४ पौष शुद्ध १

[१० जनवरी १७५८]

चिरंजीव राजमान्य राजश्री रामाजीपंत या प्रती कृष्णाजी माहादेव आसिर्वाद. येथील कुशल पोष्य * शुभ प्रतिपदापावेतो वर्तमान येथारिथित असे विशेष. आपण पत्र मार्गशीर्ष वद्य सप्तमीचे पाठविले ते पावोन संतोषवासी जाहाली. लेखनाभिप्राये अवगत जाहाला. यैसेच सदोदित कुशलवृत्त लेहून संतोषवीत असावें. सन्ना जाहाला म्हणोन लिहिलें उतम गोष्ठ जाहाली. ईश्वरें येश तुम्हास दिल्हे. प्रज्या सुख पावेल. येजमानास असिर्वाद देतील येणेकरुन सर्व कार्यसिधी आहे. आमचें वर्तमान यथारिथित असे. चिरंजीव राजश्री हरीपतांचें पत्रावरुन विदित जाहालेंच असेल. घरची मनुष्ये सुखरुप आहेत. चिरंजीव आपा व बेकटराव लक्ष्मणराव सुखरुप आहेत. घरही तयार होत आले आहे. चिरंजीवाच्या लग्नाकारणे यावे वधूची विवेचना केलीच आहे. सविस्तर घरच्या पत्रावरुन विदित होईल. सालिसीची सुखरुप आहेत. राजश्री वाळाजी कृष्ण जोसी याची मुळी सांगोन आली आहे. दूरचा पत्र आहे. पारस्थली जावें तेव्हां बरेच गेळे पाहिजे. तुमच्या नावावरी मुळी सांगोन येतात. वाळाजीपंतही नामाकितामध्येच आहेत. आपणांस विदितच आहे. आपल्या विचारात येईल तरी लेहून पाठवावें. तीर्थस्वरुप राजश्री दादानी साउसीहून लेहून पाठविले आहे की आपणांस काहीं सामर्थ नाहीं. तुमच्या विचारास येईल ते करणें. त्याबलाही तरे वाटत नाहीं. राजश्री वाजीपंती पेशजी पत्र व कारकून पाठविला होता. त्यास त्याचा जाब व मुलाचा जन्मकाळ पाठविला. त्यास त्याचा जाब आताच आला. घटितार्थ येतो. बावीस गुण लाभतात. त्यास हे वर्तमान चिरंजीव हरीपंतास व सखुबाईस पुसिले. त्याच्या चितास आले त्याजवरुन कबूलही केले आहे.

सेवेसी रामाजी^{१९३} केशव [वैद्य] कृतानेक सां नमस्कार विज्ञापनां. स्वामीनी पत्नी सामाळ केळ त्यावश्न बहुत संतोष जाला. येसेच सदैव कृपापत्रीं सांभाल न्ताम्. बहुत काये लिहू हे विज्ञापनां.

लेखांक [३७१]

श्री

[१७५८]

पुरवणी.

वरकड ईमारतीची कामे कोणकोणती तयार जाहाली व पैका काये लागला तो लेहून पा म्हणून लिहिलें त्यासी येणेप्रा

विता.

४००० तुम्ही गुा नेमून दिल्ली कामे काळवादेवीचें तलें व गावटनातील तले व बोढ्याची काठची वाट आडापासून पाठपर्यंत लाव हात ७०० येकून नेमणूक हो च्या हजार. त्यासी आपण असते समई येक हजार दिल्लेत. बाकी तीन हजार राहिले तें आम्ही दिल्ले. कामे तयार जाहाली येकून रुपये

१५०० आडवी वाट गावची रंगाजीपंताच्या घरापासून आडपर्यंत. दुसरी वाट पाटापासून आडवी बाघवाटेपर्यंत व उजवी बाघवाट गुरवाच्या घरापासून वडापर्यंत येकून लावी हात पंधरासे येकून रुपये.

२००० कासारवडीचे तले लांबी हात ४० रुदी हात ३० व उची हात १० येकून नेमणूक रुपये दोग हजार.

३००० येथील नव्या बाड्यातील काम मिति व विहीर मिलोन रुपये

१२०० सोपा व पळमेकडीळ सोपा दोनी मिलोन हात १०० शंभर यास खर्च रुपये

११७००

येणेप्रमाणें खर्च आहे वरकड समस्त ग्रामस्तांचा मनोगत आहे की श्रीसाहा लक्ष्मी व स्वल्नाथ याच्या देवल्याभोवती पोवळ पादडी करावी. यैसा सर्वांचा मनोगत आहे. येकदोन वेळा आम्हांस पत्रे लिहिली होती. आपली आज्ञा येईल त्याप्रमाणे वर्तणूक कर. तीर्थस्वरूप राजश्री नारोपंतदादांस पत्र पा तें पावळें. मुलाचा वृत्तबंध येथे माघमासी पुण्यास येउन केला. आवडीचे लग्नही जाहालें. शरीरसंबध रा बाळाजीपंत जोसी हाळी वस्ती बावधन नातु रा विसाजीपंतदादाचा द्वारकावाईचा मूल. कलले पा व रा बाबुराव

(१९३) हा लक्षमणपंत दैद्याचा कनिष्ठ दंड असून हे सवव पत्र त्याच्या हातचें आहे [ले ३६४]

सदरदूप्रमाणे रुमाली गट ६७३॥ किमन रुपये ४५, पचेनाश्रीम घेउन तुम्हास गिरास करून दिवली असे. छदमोठनाड पंडरनाडी पूर्वम रानोज, जामूद व दक्षणेस गावची गधी, पन्नीकडे वाजोजी जामूद नवी वरेदी व पश्चिमेस गावची गधी, पन्नीकडे गावची गावकुम् व सनरेस मुमचे तुम्ही दरवजा पूर्वमुम्ही त्यावावा व गेरी दरवाजियासेनारी त्यावाची व पनेळ आपने आगनामचे त्यावाने. येणेप्रो तुलाम गिरास करून दिवली आहे. या जागियावर इमान बाधोन लंकराचे लेकरी [उपभोग] करावा आणि नांदावे. यास तोणी ठाटादरून करील त्यास आपण ममनाउ. आपण आपने वेनाश्रीम स्मनेन तुम्हास गिरास करून दिवली असे, हे वरेदीगत लेहून दिवले सरी

गिा नागर
ना गोंविंद नागरण जोसी
कुटुंबणी का मार.

रामाजी वा कान्होजी मोर हिसा १५
रानोजी वा कान्होजी मोर डि २ रु ३०

गोदी

शिंठांजी विन जोगाती वा मो मोर

मन्हारजी विन गंगाजी को मार.

लेखांक [३७५]
१६१] ५

श्रीरघुीर * सवन १८१५ चैत्र वद्य १२
[मुद्रा अस्पष्ट] [८ मे १७५८]

राजश्री रघुनाथपत [भट] गोसावी यासि

सकलगुणात्करण अखंडितरक्षमीआलंकृत राजमान्य श्रो मुषोजी भोंसले सेनाधुरंधर दंडवत विनंती उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीय कुशल लिहित असिले पाहिजे विशेष. आपण जामूद जोडीसमागमे पत्र पाठविलें [ते] सुसमई प्रविष्ट होउन लेखनासिप्राय अवगत जाया लाहोर फते नोउन जाहानखान पळोन गेला. त्याजमार्गे फांजा गेल्या आहेत म्हणोन लिहिलें त्याजवरून बहुत संतोष जाना. हर घडी येणारा समागमे पत्रद्वारा साकन्य लिहित असावे. रवाना छ * २५ माहे सावान. अं सूझा प्रती विश्वास काये लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनती.



पो छ २, रमजान.
[१७ मे १७५८]

जनकोजी सिंदे याची फौज मालवियांतून जातां येतां आमचे परगणे गंगराड व डुग यास उपसर्ग फोजेचा लागोन तसनस फार होते. त्यास प्रसंगी आपण असोन परगणियाची खराबी होत्ये. हा विचार नसावा. तरी येदा फोजा तिकडे जातील त्यास आमचे [पर] गणियांतून जाउं न थाव्या अगर कोणां कमाविसदाराचे सांगितल्यावरुन उपसर्ग लागो न थावा. राजश्री कसेो विस्वनाथ तुम्हापांसी येतील त्यास स्मरण धरुन काडीमात्र उपसर्ग दोही महालांस न लागे येसे करावें. आपले भरवसियावर बेफिकर असों । ताकीद उतम प्रकारें करावी. राा छ * ९. माहे रजव्र. । बहुत काय लिहिणे लोम कीजे. ५ । हे विनंती.

मोतैव
छद्

लेखांक [३७४]
१६०]

श्रीगजानन

* संवत १८१५ चैत्र शुद्ध १०
[१७ अग्रल १७५८]

खरेदीखत शके १६८० बहुधान्य नाम सबछरे चैत्र * शुभा १० सोमवार ते दिवसी त्रिमाजी वा कान्होजी व रामाजी वा कान्होजी मोर मजरे मोरवाडी कौं अकोलनेर प्रो पांडेपेडगाव यासी बिठोजी पाटील मोकदम व सम्स्त दाहीजन समाकुल पांडरी मजरे मार को मार सन हजार ११६७ कारणे खरेदीखत लिहून दिवले एसजे. सन हजार ११६१ येकसटीच्या सालात दोही राज्याचा दंगा जाला. तमाम मुद्दक जाळून छद्दन परागंदा जाला साजमुले मजरे मार परागंदा होउन [लोक] मुलकावर गेले. तो सन हजार ११६२ बासटीमध्ये भोगलईकडील जागीर निघोन स्वराज्यात श्रीमंत रो भालसाहेबास [दाभोलकर] जागीर जाली. मग साहेबी रयत गोळा करून मजरे मजकुरास कौल दिल्ला आणि गावची वसात केली आणि साहेब मोहीम प्रांत मारवाड देशास गेले. तो मागे राजश्री गोपाल शंकर सरदेशमुख याणी को मजकुरावर दंगा करून राजश्री कृष्णाजीपंत शेकदार व राा चांदजी पाटील जाधव व विसाजी बावाजी कुळकर्णी येसियास धरून ठणे पिंपळगाउगर्मा येथे नेउन जबरदस्तीने सन हजार ११६१ येकसटीचे खंडनी सन ११६४ चोसटीमवे केली. त्यास रुपये धावयास एवज नाही. कोठे काही [मिळेना] नाईलज जाला. मग तुमच्या गळा पडोन तुम्हास जागा पांडरी गावची खलपैकी खरेदी दिवली तपसील गज सुमारीप्रो

करार

३१ पूर्व पश्चम गज सुमार

१९॥ उत्तरदक्षण गज सुमार

लेखांक [३७७]

श्री

* संवत् १८१५ मार्गशीर्ष वद्य ७

[२२ दिसबर १७५८]

चिरजीव राजश्री रागाजीपत या प्रणि विसाजी दादाजी [आठवले] असिर्वाढ. येथील ता. मार्गशीर्ष ७ वद्य ७ सप्तमी मुा पुणे सुखरूप असो विधेय. सांप्रत तुम्हाकडून पत्र सावरने मुकामने आढि ते पावणे त्यावरून सविस्तर वर्तमान कळले. येतेच निरतर पत्र पाठवीत अग्निचे पाहिजे. यानंतर नि[इ]कडील वर्तमान तरी प्रस्तुत श्रीमंत उभयेता श्रेयेच आहेत. पधरा दिवस सगमावरी मुकाम जाळा होता. श्रीमंत मातुश्री ताईस सगमावरीच देवाळा जाती. त्याउपरी मग मागनी गावांत आणे. बरकड वर्तमान यथास्थित असे. तुम्हीं लिहिले की ग्राहोराम जानो त्यास निकडे गेल्यावरी साकल्य लिहोन पाठवणे. तुमच्या घाची समस्त सुखरूप आहेत. बद्धत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनती.

राजेश्री लक्ष्मणपंत स्वागीस नमस्कार. तुमची माणसे सुखरूप आहेत हे विनती

लेखांक [३७८]

श्री

* संवत् १८१५ माघ शुद्ध १४

[१० फरवरी १७५९]

श्रीमंत राजश्री तात्यासाहेब स्वामीचे सेवेसी

अज्ञाकित गोविंद भगवत निा रामाजी अनत [दामोळकर] सिरसा नमस्कार विनंती विज्ञापना एमीजे. श्रीमंताचे पत्रजापैकी रोख रूपये पोहचले १२,४९ येकोणिसे येकोणपनास रूपये पावले. मिनी माघ * शुद्ध १४. पुमा तिसा खमसेन मया व अलफ. सन ११६६ [फसऱ्ही] माहे जमादिलाखर. बद्धत काये लिहिणे हे विज्ञापती

साक्ष जीजाजी आणाजी पन्नाप्रा साक्ष.

साक्ष कृष्णाजी विठळ दिा

श्रीमंत गंगाशरपंततात्या मा त्रिगजपुर.

लेखांक [३७९]

श्री

* संवत् १८१६ ज्येष्ठ वद्य २

[१२ जून १७५९]

१७२]

राजश्री रघुनाथरावजी [मट] गोसावी यासी

श्रीमंत प्रतापगुणवंत येथर्यकुसुमविलसितेकवसंत श्रेष्ठप्रभाव श्रोा माहारार जसवंत निंबालकर दंडवत विनती उपर. येथील क्षेम ता छ * १६ सवाल जाणोन निजानंद लिहिणे विशेष. लाला त्रिजनाथ यानी श्रीमंताचे प्रातापासून रूपये घेतले सरकारचे

लेखांक [३७६]
१६२]

श्री

* संवत् १८१५ चैत्र वद्य १३
[५ मे १७५८]

श्रीमंत राजश्री दादासाहेब स्वांमीचे शेवेसी.

बिनती सेवक आंताजी माणकेस्वर [मोघे] कृतानेक साष्टांग नमस्कार विज्ञापना. सेवकाचें वर्तमान ताा चैत्र ४ वद्य १३ शुक्रवार मुकाम दिल्ली स्वांमीचे कृपावलो कर्न करून यथास्थित जाणोन स्वकीये लेखन करावयासी आज्ञा केली पाहिजे विशेष. सेवकास स्वांमीनी कृपा करून पत्र छं ९ साबानचें पाठविलें ते पावले वर्तमान लाहोरचें फतेचें व शत्रुचे पारपत्याचें व तिकडीळ मुलूक काबिज केल्याचे लिहिलें तें सविस्तर वाचून परम आनंद जाला तो पत्री कोठवरी ल्याहावा. हिंदुस्थानात कीर्त लौकिक मातद्वर जाली. कुल राजे उमराउ सुमे यास दहशत पडिली. सारे हिंदुस्थानाचा सूड आवदाळीपासून येक स्वांमीनी घेतला तेणेकरून येशाचे परवत जाले. स्वांमी येशाचीच आहेत. याचा विस्तार सेवकास लेखन करावयासी सामर्थ कैचें. हें वर्तमान वजिरानी येकोन बहुतच हर्ष मानिला. शत्रुनी बहुत उन्मता करून मधु [रा] क्षेत्रीचा कटा केला होता त्याचें फल ईश्वरें लवकरीच दाखविलें. स्वांमीस येश आलें. याचा संतोष फारच वजिरानी मानिला त्याचा परिहार कोठवर ल्याहावा. स्वांमी आवतारी पुरुष आहेत. त्याची स्तुत मनुशानी काय करावी. वरकड इकडील सविस्तर वर्तमान आळाहिदा पुरणिया लिहिल्या आहेत त्या धानास आपून याची उतरें वेगळाळी पाठवावयास स्वांमी समर्थ आहेत. सारांश गोष्ट सेवकास आश्रा स्वांमीचे पायांखेरीज दुसरा कोठेही नाहीं. येविशई वारंवार सेवकानी ल्याहावेंसैं नाहीं. स्वांमीच्या दृष्टीस थोडकेच दिवसांत पडेल. १ जरी स्वांमीची छावणी लाहोर प्राती जाली तरी वजीर पातशाहास घेउन येतो जरी करिता आपण काही आपली दाहा हजार फौज ठेउन इकडे येतील तरी हें दोघे सरदार आपल्या सरदाराजवळ ठेवितील. आपण जेथे खासा छावणी करितील तेथेच हे खासा वजीर छावणी आपणाजवळ करितील. आपणा वेगळे कोठे खासा निराले राहात नाहीत परंतु वजिराने व लाहाणमोठे सर्वत्र ह्यणतात [की] खासा छावणी न जाली तरी पठाण मागती लाहोर प्राती पाउसाळा येतील. उगेच लोक म्हणतात ते सेवेसी लिहिले. कारणे न कारणे येकथार खावदाचा. वजिराच्या यावयाचा निश्चये कोणे प्रकारचा कोणे स्थली ती आज्ञा निवडून सेवकास व वजिरास ल्याहावी त्याप्रो त्या स्थली दाखल होउन. राा बिठळ सिवदेवही [विचुरकर] त्वरेच सेवेसी येनील त्याज्जा रा कुण्णगवजी येतील. सर्व बिनती करितील. सेवेसी श्रुत होये हे विज्ञापना.

मो छ ५ रमजान
[१३ मे १७५८]

गारनुप्रेष्या जवार्ना अज्ञा जे अंजनडोह येथील बाजारास अटकाव केला आहे तो तूर्त न
 क्तरावा. राजश्री साधाजी नाईक व माहादाजी नाईक स्वारीस गेले आहेत ते आल्यावरी
 त्याम सागोन विरुद्धे लाविले जाईल. येसियासि अग्न्यास अज्ञा प्रमाण. येविर्ई राजश्री
 भल्लहारपंन खिन्नमतगवजी यानी पूर्वी सेवेन विनंती केली असेल व प्रस्तुतही करितील.
 सांप्रत पूर्ववत्प्रमाणे बाजार व मार्ग चाली लागला हे वृत्त राजश्री माधवराव सविस्तरे
 निवेदन करितील त्याजवढून श्रुत होईल. हे विज्ञप्ती.

लेखांक [३८२]

श्रीरामजी

[१५ अक्टुबर १७५९] ?

श्रीधरजी लसकर माहासुमस्थाने श्री सरवउपमां जोग सदा राज्यमान राजश्री
 भाउसाहबजी श्री रामांजीबाबा जोग श्री उज्जण सु श्री सेवक प्राणनाथ बंसीधर तथा
 श्रीमोहनलाल केन नमस्कार वचनां. ईहां के रामाचार माहाराज की कृपा सु भले है.
 माहाराज के सुपसमांचार सदा आरोग चाहीजे. अग्रच. आप का क्रीपापत्र बोहोत
 दीन हूये नही आया. सो सेवक उपर मेहेरवांनगी कर लीपोगे और हकीकत असी के
 राजश्री मौरजा आदल्लेगजीने माहाराज की तरफ के रुपये छै हजार अक छ हजार
 दीवाये सो सेठ माधवजी कीसनजी की मारफत हम कु पोहोचे. सो माहाराज के
 जमां कीये हैं. उसको रसीद आगु सेठ माधोजी कुं हमने लीप दीवी है सो माहाराज कु
 पोहोचेगी ओर भुंखर बाबत रुपय आपने हमारे ईहां दीवाये ये सो हनोज ताई
 कोडी ? आई नही है. सो माहाराज कु मालूम रहे. बोहोत का लीषे. हेम माहाराज
 के हे. मेहेरवांनगी कीसक रवोगे. क्रीपापत्र सदैव लीषोगे. म १८१५ के मीती
 आसोज * बदी ? ० दसमी. ली. सेवक मोतीचंद का रामराम पोचे. सेवक आगनाकारी
 पुनमचंद का रामराम बंचनाजी.

पत्रीका श्रीमंत भाउसाहबजी श्रीरामांजीबाबा जोग का लसकर पुर. [अपूर्ण]

लेखांक [३८३]

श्री

[१७५९] ?

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

रामाजीपत स्वामी गोसावी यासि.

पोष्य सखाराम भगवत [बोकील] सां नमसस्कार विनती उपरी. येथील
 कुशल जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. राजश्री काशी

रामचंद्र याचे आसामीविशई ताकीदपत्र राजश्री त्रिठळ येमाजी याजला पाठउन ताकीद करुन ल्यास आसामीचा येवज पावता ह्ये येसे करावे. स्मरणपूर्वक ताकीद करुन आसामीचे रुपये पोहोचवणें म्हणोन यावे. १ बहूत काये लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [३८४]

श्रीरघुवीर * संवत १८१६ पोष शुद्ध १४
[१ फरवरी १७६०]

राजश्री रघुनाथपंत [मठ] गोसावी यांसि.

सकलगुणालंकरण अखंडितलक्ष्मीअलंकृत राजमान्य श्रो मुघोजी मोंसले सेनासुरंधर दडवत विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये लेखन करीत असिले पाहिजे विशेष. गोसावी यांणी बहूता दिवसी स्मरणपुरस्कर पत्र पाठविले ते प्रविष्ट होउन परम संतोष जाहाला. पूर्वीही पत्राची प्रतीक्षा बहूत दिवस करीत होतो परंतु कालदेशस्तव अविस्मरणता जाली. येसेच सदैव पत्रंदारा कुशलार्थ लेहून तोषवीत जावे हे आपणांस उचित आहे. पत्री अर्थ लिहिले की कोठे आहा काय वर्तमान ते ल्याहावे. येसियासी पूर्वीपासून अद्यापात वृत्त वारंवार राजश्री पंतप्रधान यासी लिहित गेले ल्याजवरुन आपल्यास विदित असेलच परंतु विस्मयेकरुन लिहिले ल्याजवरुन अविस्मरणाचे आश्चर्य वाटले. अस्तुं सांप्रत बराडात परस्परै यैक्यता होउन येके विचारे वर्तून कार्यास अखिले यावे येसे अचेरत असता ल्याजकडोन जाबसालाचे करारात अंतराये दिसोन आले. आपले पत्र आले की मोगलाचा विघाड आहे. मुकाबला जाहाला नित्यशा युध्य होत आहे. हाली मोगलावर तोंफा जेजाला बाणाचा मार करुन रोगळ सिक्किदा केला आहे. तुम्ही लवकर यावे ल्यास छ ८ रोज माहे जमादिलाखरी ल्याजपासून कूच करुन मजळदरमळ सत्वरच येत असो. मेटीअंती सविस्तर अर्थ श्रवण होतील. खाना छ * १३ माहे मजकूर. आम्हीं कोणेही प्रकारे गोसावियाजवळ येतो. वरकड सर्व अभिमान आपल्यासच आहे. उचित तेच केले पाहिजे. सूझा प्रती विशेष काये लिहिणे कृपालोभ असो दिल्हा पाहिजे हे विनंती.

छ १८ जमादिलाखर माघमास सुा सितेन.

[६ फरवरी १७६०]

लेखांक [२८५]

श्री * संवत् १८१७ वैशाख शुभ ९
[२३ अप्रैल १७६०]

श्रीमंत राजश्री भाउसाहेबजीचें सेवेसीं.

सेवक पाा नानाजी नार्हक महाजन मुा उजनीहून कृतानेक साां नमस्कार विनंती उपरी. राजश्री प्राणनाथ बनसीघर महतापासून घेतले रुपये १५६७५ अक्षरी पधरा हजार सहाशे पंचाहतर रुपये रासी हस्ते राजश्री गोविंदपतानी हुकानी भरती केली. मिती वैशाख * शुभ ९. जमा अनामत आसेत. शके १६८२ दस्तूर रामाजी शंकर समत १८१७ माल्बीं.

लेखांक [३८६]

श्री * १८१७ अधिक श्रावण शुद्ध ११
[२३ जुलै १७६०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालोबा स्वामी गोसावी यांसि.

पोष्य त्रिंबक दताजी कृतानेक साप्दांग नमस्कार विनती उपरी. येथील कुशळ तागाईत * १० माहे जिल्हेज मुकाम उजेन जाणून स्वकीये कुशळ लिहित गेले पाहिजे विशेष. पत्र पाठविले ते पावले. लिहिले वर्तमान विदित जाहले. त्यास स्वस्थान पाटण येथील ऐवज श्रीमताकडे लस्करात पाठवावा. त्यास अगर येथील हुंडणावळ बारा रुपये घेतात तर आपले विचारास नये म्हणोन आम्हाकडे हुडया करून ऐवज रवाना केला. त्यास येथ हुंडीपत्र पावली ते सकारली आसेत. ऐवजी मुदती बरडुकुम पावेल परंतु साल आखेर जाले आसोन बाकी ठेविता हेच आपूर्वात आसे. खावंद मोहिमसीर. वराता येथून होतात त्यास देणे पडते. खर्चास येवज नाही म्हणोन राघो हरीचे पथक रवाना केले आहे. त्यासही येवज त्याचे आज्ञेप्राा दिल्याच पाहिजे. तर येवजविना मद्दाला वेगळा ठेव नाही. मग त्यापो देणे तर धावा. येसे तुम्हासही धाकफ आसोन दिरंग लेहून पाठविता हे उत्तमात नाही. याउपर तरी त्वरा करोन सनदे बरडुकुम प्रविष्ट जाल्या खावंदही बरेच म्हणतीऊ. कोठेकर तो दिवसाकडे पाहून स्थिरता करतात. आल्पबुचीचे कारण आहे. आती करारमाफक देणे सुटणार [नाही] देतीलच परंतु सध्याच त्यास हर प्रकारे उमजवन ज्या रीतीने तुम्हास येवज येई ते करणे. रात्रंदिवस दुमणीस आंतर न करणे. मुसलचे नसले तर खावंद समजोन घेतील. तुम्ही पाटणच्या

धैवजाच्या हुंडिया पत्र पावताच रवानगी करणे. परमारे यजमानानी आणविले आण तुमच्याने पावते होत आसले तर करावे. उतमच आसे. लष्करचे व येवनाचे व मुजातदोलाचे मजकूर लिहिला तो विस्तारे कळला. याउपरही वरचेवर लिहित जाणे. प्रस्तुत ढाक उठली आहे त्यामुळे वर्तमानात विलंब लागतो तर तुम्ही लिहित आसावे. आम्ही खासगत फरमास सांगितली ते केलीच आसेल. ते सोबतीने पावती करावी. बड्डत काये लिहिणे कृपालोम आसो धावा हे विनंती.

राजश्री नारोबा स्वामीस साा नमस्कार. तरतूद करोन धैवज सत्वर पाठवणे. हे विनंती.

लेखांक [३८७]

श्रीगजाननप्रा. * १८१७ अधिक श्रावण वद्य ९

[५ अगस्ट १७६०]

राजश्रियाविराजित राजश्री

लालाजी बलाळ [गुलमुळे]

प्रा पाटण स्वामीचे सेवेसी.

सेवक चिंतो नारायण कास्तीकर कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीय लिहित जावे विशेष. श्रीमंत राजेश्री जनकोजी पाा सिंदे मगे मोजे मजकूर यानी आपली असामी पेसजीपासोन असामी करार केली त्या प्रा असामी दर साल रुपये २५० अडीचसेप्रा चउ सालाची असामी करार रुपये १००० हजार याची नेमणूक प्रा आपणावरी दिल्ली. त्यासि रो मुरतराम व सिरदारसिंह महेता यास इकली. त्याजपासोन रुपये येक हजार यथे नखत मरणा भरोन घेतले. हं रुपये मार निलेचे पदरी सदरहु सनदेप्राा याचे पदरी धालोन कवज घेणे. यात्रिबई श्रीमंताची ताकीद फार असे. तरी पत्र देखताच रुपये सदरहु देणे. वरात याजपासोन घेणे. मिति शके १६८२ विक्रम नाम संवत्सरे अधिक * वद्य ९ मुा दिल्ली स्वस्थान इंद्रग्रहस्त. बड्डत काय लािा हे विनंती.

पैवस्ता छ १ रावल.

[११ अक्टूबर १७६०]

लेखांक [३१८]

श्रीलक्ष्मीकांत * सप्त १८१७ यादपद शुद्ध ८
[१७ सितवर १७६०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य रामचंद्र कृष्ण कृतानेक साा नमस्कार विनती उपरी. येथील कुशल ताा छ * ७ सफर मुा दिली सालेमार बाग जाणून शानंद लेखनें सतोषवीत आसिलें पाहिजे विशेष. श्रीमंत राजश्री जनकोजीबाबाही [शिंदे] आम्हापासोन खर्चाची वोट जाणून रुपये ५०००० पन्नास हजार घेउन तुम्हावर हुंडी लिहून दिल्ली असे. तर पत्र पावताच सदरद्वै यैवज देणे. खूबचंद खुशलचद यांस भरती करून देणे परंतु जो यैवज घाल त्याची पकी सावकारी निशा घेउन यैवज देणे. निगा ठिकाण खेरीज यैवज देत न जावे. आम्ही सरकारात यैवज तो पुरता भरून दिल्या असे परंतु मारनिलेकडे आमचे पंचवीसतीस हजार रूा घेणे आहेत म्हणून आपणाम लिहिले असे. तरी वरातेप्रमाणे वायेद्या बमोजिव पनासा हजाराची पकी निशा चौकसीने घेउन यैवज पदरी घाल्णें. आम्ही कासिद जोडी आमची मुजरद पाठविली असे. त्यास उतर सत्वर पाठवावें. अजुरा रोज तेरा रोजाभ्या आहेत. तर हुंडी आमची सकारून आम्ही सरकारची वरात पाठविली आसे. ते घेउन यैवज जाची सावकार मजकुराची निशा आपली घेउन यैवज पदरी घालोन आम्हास लिहून पाठवावे. जर हुंडी माघारे आली तरी सकराईनकराई आजुरा व्याजसुधा सरकारातून श्रीमंतास घावे लागतील ऐसे पण्ट समजोन यैवज सत्वर पदरी सावकाराचे ठिकाणा चौरूस करून घावे. बद्धत काय लिहिणे कृपालोभ करावा हे विनती.

पौा छ १८ सफर

[२८ सितवर १७६०]

लेखांक [३८९]

श्री

*[१ अक्टुबर १७६०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजीबाबा स्वामी गोसावी यांसि.

शेवक त्रिंबक दत्ताजी कृतानेक नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ताा छ माहे सफर मुक्ताम उजेन येथास्थित जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करीत आसिले पाा

विशेष. यैवजाची जरूर [म्हणून] राघो हरी खजीना न्यावयास आला. त्याची पूर्त जाली पाहिजे. तुम्हाकडे मुजरद कासिद पाठविला त्याजरून तूर्त हुंडीपत्रे ९ येकूण रुये तीस हजारच्या येकवीस दिवसाच्या मुदतीच्या पाठविल्या त्या प्रविस्ट जाल्या. वायदेसिरी यैवज घेउन पावती पाठविली जाईल परंतु येवजाची वोढ फार. आवदाचा प्रसंग कठिण जैसे आसता साल गुा यवज बाकीस ठेवावा हे उक्तमात नाही. दिरंगावर घालून आजपर्यंत राखले. प्रस्तुतही झाडून कड्या वारला नाही. पुन्हा पत्राचा आक्षेप ठेवलाच आसे. माळ्यातही आवचड जाले आहे परंतु माणसे घरोघर बसउन येवजाची रोजिना जमा करीत आसो. येविसई तेथीलच आज्ञा आहे याचा [विचार] परस्पर मनास आणोन येक वळ गुंता झाडून उरकावा. बोमाठ कोठवर ठेवावा. त्यासही मर्यादा आहे की नाही. याउपर शिळक पसा न ठेवता बनेल त्याप्रमाणे येवज प्रविष्ट करुन देणे. बहुत विस्तारे पूर्व लिहिले त्याने काय जाजे. याजमुळे संकलित आर्थे लिहिला आसे. मनन करुन लचांड वारणे. विशेष काये लिहिणे कृपा निरंतर असो देणे हे विनंती.

राजश्री नारोबास नमस्कार. लालाजीचा कारभार नुतन आहे. तुम्ही तो कालदेशवर्तमान जाणून चालढकली नेना. आपूर्व आसे. खावंदावर दिवस कठिण आहे. पैसा येकंदर न ठेवणे. हे विनंती.

पौ * छ २१ सफर
[१ अक्टूबर १७६०]

लेखांक [३९०]

श्री * संवत १८१७ कार्तिक शुद्ध १
[८ नवबर १७६०]

राजभियाविराजित राजमान्य राजश्री
लालाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

विनंती सेवक गुंडो महादेव कृतानेक विज्ञापना. येथील कुशल ता छ * २९ माहे रावळ गुा पाणिपत जाणून स्वकीय कुशल लिहित आज्ञा केली पाहिजे विशेष. आपण कृपा करुन पत्र पाठविले ते पावले. लिहिला अर्थ सविस्तर कळला. वरातीचा मजकूर लिहिला. त्यास निकडीचा समय जाणून वराती जाली. आपणही आज्ञेप्रमाणे रुपये दिले. या गोष्टीने श्रीमंतसाहेब बहुत खुशाल जाले. स्वाम सज्ज आहेत. इकडील वर्तमान तरी अन्नदालीसी लडाई लागली आहे. याचे पारपत्य जाल्यानंतर सविस्तर

वर्तमान शेवेसी लेहून पाठउ. सदैव कृपापत्री सांभाळीत जावे. सविस्तर वर्तमान श्रीमंता या पत्रावरून कळेऊ. दुबारा ल्याहावेसे नाही मागाहून फत्रे जाळियावरी लेहू. बहुत काय लिहिणे हे विज्ञाप्ती.

समस्त मंडळीस साा दडवत विज्ञापना.

लेखांक [३०.१]

श्रीशंकर * सवत १८१७ कार्तिक शुद्ध १
[८ नवबर १७६०]

चिरंजीव राजश्री लाळाजी यांसि प्रती नारो विठळ आशिर्वाद उपर. पथील क्षेम ताा कार्तिक * शुध १ प्रतिपदा मुा पानपत सुखरूप आसो विशेष. तुम्ही पत्रे दोनतीन पाठविली ती पावली. त्याचे उतरे मागा पाठविली ती पावलीच असतील. वरात केलियाचा प्रकार लाि त्यास निकड पाहून यथे खर्चास नाही जाणून यथे रूपये घेउन तुम्हावर वरात केली. यातपर तूर्त होणार नाही म्हणून बोलिले. त्यास रोज सावधता करावी. त्यास दोन कोशावर त्याचे आमचे लष्कर राहते. आठाचौ दिवसी तथे जातो. त्यास जितकी तजवीज होउन आमचे हाते होईल तर करीत जाउ. मोगलाचा प्रकार तर यका कोशाचे अंतराने दोनी फौजात राहिल्या आहेत. मधे येक कोश मैदान राहिले आहे. आपली फौज पानपतगाव पाठीशी देउन मधे बुळगे पुढे तोफखान देहून फाज उतरली आहे मोगल [अबदाली] रोज यद्दून तोफा आणून कटकट करितो. आजी झा बुधवार षष्ठी ताा आजी सनवार प्रतिपदापावेतो युद्ध होतच आहे. पुढा काय होईल ते पाहावे. उमपतो पक्ष भारी फौजा आहेत श्री करील ते होईल. तूर्त तोफाच^{११}

(१९५) 'मातवर फौज गाडवी व तोफखाना वरीवर आहे. मल्हारवा जाट यासहित अबदालीचे पारपत्य करावे हाच विचार आहे' [खड १ ले १७४] हा सकल्प वरील २८ अप्रेलच्या पत्रात प्रथम मारुसाहेवाने दर्शवून पुढे तोच भावार्थ उघड करून दाखविला आहे 'मातवर फौज तोफखाना गाडवी व दोन्ही फौजा सरदाराच्या व जाट इतके पाहून उभे राहून चालून घेउन तेव्हा अबदालीच्याने दम धरून उभे राहणे तोफाचे माराखाली बार येणे कळतच आहे' [खड १ ले १८७] या निश्चयाप्रमाणेच तो 'ढबलपुरचे बाटे उतरोन गिलच्याचे पारपत्यास जातो' [खड १ ले १८६] सौवत्याच्या सलामसलतीची अपेक्षा मुळीच नव्हती 'दिलीस किल्यात अबदालीकडील लोक होते तोफाचा मार विल्हा तेव्हा घाबरे होउन कौल मागो लागले' [खड १ ले २२४] यामुळे तर तोफाविषयी विश्वास विशेषच वाढला 'दिलीहून कूच जाले कुजपुन्यावर जातात अबदाली यमुनापार आहे' [ले २३३] 'पाणिपताजवळ गाठ पडली तोफखान्याचा अरावा रचून लढाई करावयास तयारी केली' [खड १ ले २६४] 'श्रीमतीही चोहोकडे तोफखाना पसरला आहे यवन चालोन येईल तरी क्षणमात्र बुडेल'. [खड १ ले २६५] 'नित्यानी गोलगोली तोफाचा मार होत आहे' [ले २३३] 'मोगल

मुख्य होत आहेत. निकड होईल ते दिवसी श्री करील ते होईल. गोस्ती संकटाच्या आहेत. कासिदास दोनव्यार रोज राहा म्हणत होतो परंतु सोबतीकरिता निघोन आला. मागाहून होईल वर्तमान ते लिहोन पाठउ परंतु तुम्ही आणखी कासिदाची जोडी वरचेवर पाठवणे खबर लेहून पाठउन देउ. बहुत काय लिहिणे लोम कीजे, राजश्री नारोबास आशिर्वाद. चिरंजीबास लावकरून कळेल. संकटाचे आहे. श्री निवारण करील. चिता न कीजे. हे विनंती.

राजश्री राघोबास अशिर्वाद. पत्र पा ते पावले. लािा वर्तमान कळले. साऱ्या जोडिला जागा जतन करून कालहरण^{१९६} करावे. हे विनंती.

† सेवक अनंदराव नारायेण साा नमस्कार. लािा परिसोन लोम कीजे हे विनंती.

लेखांक [३९२]

श्री * संवत १८१७ कार्तिक शुद्ध २
[९ नवबर १७६०]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजी स्वामीचे सेवेसी.

सेवक राघो दादाजी साा नमस्कार विनंती. येथील वर्तमान ताा ल * ३०
रविळावळ मुा पाणिपथ यथारिथत जाणोन आपणाकडील लिहित आसिले पाहिजे

रोज तोफा आणून कटकट करतो तूर्त तोफाच मुख्य होत आहेत. जागा जतन करून कालहरण करावें सायकाली माघारे सरोन स्वस्त राहतात'. [लि. ३९२] 'पुढे तोफा आरबा देउन मजबुदीने आहो. त्याचे चालून यावें ही वाट पहातो आल्यानतर एकदाच लगटाने मारून बुडवावा येसे आहे' [पुरदरे १ ले ३९१] 'तोफाऱ्याच्या आरज पसरून खदक खणून पानिपत पाठीसी घालून सड्या फीजा तोफाचे मागे उम्या याप्रमाणे बंदोवस्ताने राहिले आहेत त्यापासीही चालीस पनास तोफ चांगली आहे' [खड १ ले २७२ टीप] एवच भाऊची भिस्त तोफाच्या गाड्यावर होती.

(१९६) हे पत्र महत्वाचे असून पानिपतचा परिणाम काय लागणार होता हे भविष्य '८ नवबर' रोजीच यात वर्तविले होते. हा लेखक साधारण खड्कशाहा नसून १७४५ पासून अनेक राजकारणात वावरणारा होता [लि ३३४ भाग १ ले २५, ८१, १९१] 'सविस्तर श्रीमताच्या पत्रावरून कळेल दुबारा त्याहावेसे नाही मागाहून फते जाल्यावर लेहू' [लि. ३९०] याचा ज्वनितायेंही वरीलप्रमाणेच निघतो ही दोन्ही पत्रें एकाच तारखेची असून कुजपुऱ्याहून परत आल्यानतरची होत. अर्थात कुजपुऱ्यावर जाणे हीच चूक झाली. त्यात तिकडे लावणे तर घोडचूक होती. यामुळेच अद-दालीस यमुनापार होता आले आणि ही चाल भाऊच्या आगलट येऊन युद्धाचे पारबेंच फिरले असा वखरीचा जो सिद्धांत आहे तो या पत्राने अटल ठरतो.

विशेष. भाद्रपद आमावास्याचे स्वामीनी पत्र पाठविले ते पावले. हुंडी वरातेचा तपसीळ वर्तमान सविस्तर श्रीमंताच्या पत्नी लिहिले. तसेच राजश्री पाटीलबाबाच्या पत्नी लिहिले होते. ते साद्यंत अवघे वाचून श्रवण करविले त्याजवरून श्रीमंतासही च्यार गो[ष्टी] पाटीलबाबानी सागायाच्या त्या सांगितल्या. त्यावरून पत्र लिहिले आहे त्यावरून कलो येईल. आणिक पेशजी खंडणीच्या करारमदाराबदल आखेराम आला होता तेव्हा पांच हजार आखेराम यासी बोलला. ते तुमच्या तीर्थरूपानी कबूल केले. जे आधी वसूल येईल त्यातील पांच हजार तुमचे देउन वरकड सरकारात दाखल करून. पांच हजार आपल्याकडे आले जैसे बोलिले जैसे सांगतात. हे सावरी आम्ही लाहोरास गेलो ते तैसेच राहिले. तेथु[न] आल्यावर तुम्हास कागद लिहिले. त्या वरून तुम्ही दोनच्यारदा सबब लिहिली. निदाने अडीच हजार पोहचाविले. राहिले अडीच हजार ते देतात न देतात किवा कैसे हे दोनतीन तुमची पत्रे आली त्यात तपसीळ काहीच वर्तमान लिहिले नाही. त्याजवरून पाटील तुम्हावर श्रमी आहेत. यैसियासि हातास येत तो यत्न करावाच. नाही तर पत्र लिहिता त्यात परिहार तरी लिहित जावा परंतु विस्मरण न करावे. कल्युगी प्रपंची इस्टत्व मित्रत्व सर्व स्वार्थाचे आहे. परमार्थ कोण पाहातो. याकरिता तुम्हास लिहिले आहे. वरकड यथील वर्तमान सर्व सेना कुली दिल्लीवर होती. त्यास बातमी आली जे सरहद्देकडे अबदुलसमदखान व कुतुबशाह व भौमिनखान गिलज्याकडील फौज दाहापंधरा हजार अमल करीत होते ते आवघे मिळोन अंतरवेदीत जावया गिलज्याकडे आले. ते कुंजपुल्याजवळ आहेत आणि कुंजपुरेवाळा निजाबतखान रोहिला याचाही आसकरा होता. याबदल वर्तमान यैकतच तथून 'दिलीस आलीगोराचा पुत्र स्थापून प्रतिनिधित्व त्याकडे आणि पातशाह गजसिका अलीगोराच्या नावे ठहराउन तो बाहिर धंगलास आहे या करिता जैसे करून कूच केले. ते पंनास कोस पांचवे दिवसी कुंजपुल्यास पोहचलो. तेच क्षणी भोवती फौज राहिली होती ते तुडउन कुंजपुराही घेतला. तिचे सरदार गिलज्याकडील धरून मारिले. निजाबतखान कुंजपुरेवाळा त्याला कविलासुधा धरिला. जखीम लागल्या. द्रव्यही काही त्याणे दाविले. सुखी प्राणी आणि जखमाही लागल्या होत्या त्यामुळे तो मेल. वरकड बंदीस आहे. आम्ही कुंजपुल्यावरी लावलो^{१९७}

(१९७) हे पत्र अत्यंत महत्त्वाचे होय बखरीतील कुंजपुल्याचा वृत्तात किती वास्तविक व विश्वसनीय आहे याची तुलना करण्याचे हे उत्कृष्ट साधन होय. 'लडाई तर पाण्यावर मोकूफ आहे'

मागा गिळग्या व नजीबखान रोहिळा व सुजातदौळा जैसे यमुनेआलीकडे सोन-पयाच्या सुमारे उतरले. हे वर्तमान कुंजपुण्यावरी असता येकिले. मग तेथून कूच केले ते पाणिपथावरी माघारे दोन मजली येउन मुक्ताम केला. गांव पाठीसी देउ[न] तोफखाना

[खंड १ ले २२४] 'कुंजपुण्याकडे जाणार आहो आम्ही तिकडे गेल्यानंतर तेही इकडे राहत नाहीत त्या रोखे सहजात येतील. तेव्हा दिलीकडील शह चुकला. आपला मुलुक पाठीस पडोव लडाई पडली तरी तिकडेच पडेल असाही प्रकार योजिला आहे' हा वेत २ सितवरचा होय [खंड १ ले २३७] 'लडाई न होता सर्व प्रयत्न आबच राहून होतील ते कच सेवटी नेटाने सर्व येकत्र जमहून लडाई कर'. [पुरंदरे १ ले. ३८९] 'यमुनेचे पाणी हलके होताच अबदालीचे पारपत्य यथास्थित करावे असा डोल आहे. प्रस्तुत दिलीहून कूच करून ललेच्यास कुंजपुण्याचे सुमारे आलो पुढे जाऊ महिना भर फौजा उत्तरावयाजोगे पाणी होत नाही कुंजपुरियास समदखान आहे त्याचे पारपत्य करितो. अबदाली तिकडे आला तर उत्तम. न आल्या फिरोज येउ' हे पत्र ११ अक्टूबरचे होय. [खंड १ ले. २५९] याच तारखेचे पत्र बलबतराव मेहदले याचे असून ते मननीय आहे. 'कुंजपुण्यास जाण्यास पाणपतपावेतो येउन पोचले नदीस पाणी आठचार दिवस उत्तरावयास पाहिजेत गिलचा पलीकडे आहे कूच करून पलीकडे तिराने येणार होते [रेटि १ क्र १४१] 'यमुनेचे पाणी फार याकरिता दिलीवरी बसोन उपयोग नाही यास्तव कुंजपुण्यास जाउन अबदुलसमदखान याचे पारपत्य करावे या अर्थे दरकूच जात आहे आम्ही कुंजपुण्याकडे गेलो इकडे अबदालीचे कूच होउन आल्यावर उत्तम जाले. दिलीकडील मुलुक मागे मोकला राहिला. इकडेच लडाई पडेल कदाचित ते इकडे न येता तिकडे तुमचे रोखे जाहले तरी बरेच आहे. आम्ही पाठीवर यमुना उतरून अतरवेदीतोन पारपत्य कर. अबदाली आम्हाकडे येईल तिकडे आला तरी पाणी आहे तो आहे चार रोजात कुंजपुरियाचे पारपत्य करून सारगपुराकडे उतरून नजीबखानाचे विल्हे लाउन पुढे अबदालीचे पाठीवर येउ' हा सकेत वाट चालत असता १४ अक्टूबरचा होता. [खंड १ ले २५८] '७ राबली हला केला कुंजपुरा लुटून फस्त केला. पुढे गिलग्याचे पारपत्य करावयासी जमेदवार जाहाले आहेत तोही लुटून घेतील'. [पिव २१ ले १९२] 'येथे कुंजपुण्यावर चार रोज जाले समदखान याचे सिर कापून भात्यावर लाउन लस्करात फिरविले व कुतुबगाहा त्याप्रमाणे मारिला' [पिव २१ ले. १९३] अबदाली यमुनेपलीकडे आला आपल्या फौजा आल्याड आहेत यमुनेस उतार जाहल्यावरी काय होणे ते होउन येईल कुरुक्षेत्र १६ कोस आहे येकादोही रोजी येथून कूच करून कुरुक्षेत्रास जाउन तीर्थविघ करून पुनरपि दिलीस जाणार. [पिव २१ ले १९४] ही सर्व पत्रे २० अक्टूबरची होत 'दिलीचा बंदोबस्त करून श्रीमत कुंजपुण्यास आले. हला करून मोडले. गोट लुटला तसेच करून गाव घेतला लोकास लूट पुर्ती मिळाली'. हे आदिचन गुा चतोर्दसी गुरुवार मुकाम कुंजपुरा यमुनादक्षिणतीरचे पत्र पुरदव्याचे होय [खंड ६ ले ४०५] 'कुंजपुरा व पाचसात हजार फौज पाचसा प्यादा लुटला यामुले अबदालीचे लस्करात दहशत पडली. अबदाली कूच करून वापपतेवर ४ कोस काही फौजा उतर लागला लोकरच त्याचे पारपत्य होईल अबदाली अलीकडे आला तुम्ही पुढे येउन वाटा त्याच्या माराव्या' हे पत्र भाऊसाहेबाचे २५ अक्टूबरचे होय [खंड १ ले. २६०] 'श्रीमताची व मोगलाची दोती कोसाची तफावत येकदोन रोजात युव तुचल होउन श्रीस करणे ते होईल सफेजगीस काही बाकी नाही घाट यमुनेचा आगऱ्या

व गारदी वगैरे पुंढा रचून हुंझाची तरतूद येथेच केली. तो गिलज्या यथून सोनपत दक्षणेस वीस कोस तिथे होता. तो चौ रोजी यथे दीडा कोसावर येउन राहिल आहे. रोजबरोज आपली फौज तयार पुढा होती. त्याची फौज तयार होउन पुढा होती.

पासून कुंजपुऱ्यापावेतो श्रीमताचे हाती लागले' असे नारो शकर सागतो [खड १ ले २४३] 'उभय पक्ष भारी आहेत. निकड होईल ते दिवसी श्री करील ते होईल गोष्टी सकटाच्या आहेत चिरजीवास लिहिलेवरून कलेल. जागा जतन करून कालहरण करावे'. हा लेख नारो विठलाचा असून ८ नवबरचा आहे [ले ३९१] 'वातमी आली जे सरहद्देकडे अबदुलसमद कुतुवसाह व भोगिनखान गिलज्याकडील फौज दहापन्नरा हजार अमल करीत होते ते अवघे मिलून अतरवेदीत जावया गिलज्याकडे आले ते कुंजपुऱ्याजवळ आहेत. यावदल वर्तमान येकताच कुंजपुऱ्यास पोहचलो कुंजपुरा घेतला आम्ही कुंजपुऱ्यास लावलो मागो गिलज्या यमुनेआलीकडे सोनपथाच्या सुमारे उत्तरेले हें वर्तमान कुंजपुऱ्यावरी येकले. मग तेथून पानिपतावरी आलो' [ले. ३९२] हे पत्र ९ नवबरचे होय 'आमची फौज उत्तरेकडे रोख दक्षणेकडे. अबदालीची फौज दक्षणेकडे रोख उत्तरेकडे आम्हावर येणेप्रमाणे फौजा आहेत ग्राहू भारीच आहे अबदालीचा गडबडीमुळे बाटा वद जाहल्या (पेद २७ ले २५९) हें पत्र १४ नवबरचे होय 'तेथून पुढे कुरुखेत्रावरून सरहिदकडे जाउन तो प्रात काविज करून तिकडील जमिदार सिख जाट सामिल करून फौज तवाना करावी हा मनसबा करून पुढे येक मजळ चालिलो तो अबदाली बागपतास उतरावयास लागले हे वर्तमान येताच श्रीमत माबारे फिरले मुकामास आले. तो तेही सारे उतरून ५ कोस आले १३ राखरी सरदाराकडे जजवी वावूस चालून आले जूज मातवर जाले. त्यास मोडून गोटात घातले सध्याकाल जाला नाहीतर तेच दिवसी पारपत्य उतम होते. [पेद २१ ले १९७] हे पत्र २७ नवबरचे होय

अबदालीस गाढून तोफखान्याच्या बलावर त्याचा समाचार घ्यावा असा मुख्य मनोदय भाऊसाहेवाचा असून त्यासाठी अगदी उतावले झाले होते पण पावसाचे दिवस व यमुनेस अयाग पाणी ही अडचण नडली [पुरवरे १ ले ३८७] सेनापती या नात्याने भाऊसाहेवाची तुलना करू जाता पानिपतचा निवाडा करणाऱ्या त्याच्या शेवटच्या चालीची चिकित्सा करण्यासारखी आहे 'लडाई पाण्यावर मोकूफ' होती अर्थात पाणी केव्हा उतरेल हा प्रश्न अत्यंत महत्त्वाचा होता. त्याविषयी 'महिनाभर उतरावयाजोगे पाणी होत नाही' असा भाऊचा तर्क होता. मौज अशी की याच तारखेला सेनापतीचा मुख्य भन्नी येहदळे सागतो की 'नदीस पाणी आठचार दिवस उतरावयास पाहिजेत'. ही गोष्ट त्याने भाऊस सांगितली नाही किंवा निवेदिली असता भाऊने अनादर केला असे म्हण्टे पाहिजे या दोन व्यक्तींच्या मतभेदाची निवाडा करणारे साधन पेशवेदप्तरात उपलब्ध झाले असून ते आनु व फडके यांचीच पत्रे होत. [पेद २ ले १३०, १३१] बरील पत्रांची तारीख १५ सितबर १७६० अशी आहे. 'दिलीचा किला घेतला अबदाली अनूपसाहराकडे होता पत्रांची तारीख १५ सितबर १७६० अशी आहे. 'दिलीचा किला घेतला अबदाली अनूपसाहराकडे होता हाती लागल्या. तेथेच मुकाम करून राहिला त्यास पाणी यमुनेस फार उपाय नाही नावा सर्व आपल्या आहेत महिनाभरा पाणी उतरेल. लडाई मातवर व्हावी असा विचार दिसतो' दोघाचे मत मेहदळ्याची जुळते यास प्रत्यक्ष प्रत्यतर हे की अबदाली २३ अक्टुबरला यमुनापार झाला अर्थात

इकाकील तिकडील गोळे सुटतात. साईकाली माघारे सरोन स्वस्त राहतात. यैसे दाहा अकरा रोज दीपवली प्रतिपदा साईकालपर्यंत यैसेच होत आले आहे. पुढा जे होणे ते श्री इच्छा प्रमाण.^{१९८} बहुत काय लिहिणे कृपा निरंतर असो दीजे हे विनंती.

राजश्री नारोबाबा स्वामीस साा नमस्कार विनंती. वरी लिहिले त्यावरून काळेल. बहुत काय लिहिणे कृपा निरंतर असो दीजे हे विनंती.

राजश्री मवानी शंकरजी ताा राजश्री राघोबा स्वामीस साा नमस्कार विनंती. कृपा करोन बहुत दिवसी पत्री स्मरण लिहिले. पावोन बहुत संतोस जाला. यैसेच सर्वकाळ कृपाइक्षणास विस्मरण न कीजे, विशेष काय लिहिणे हे विनंती.

भाऊजी कल्पना फोल ठरली आणि त्याच्या दुराग्रहामुळेच बिकट परिस्थिति उत्पन्न होऊन पानिपतचे अरिष्ट ओढवले हा पुरावा पेशव्यांच्या पक्षाचाच होय 'श्रीमताच्या बुधीस महानबुधी परतु भावी अर्थ तेणेकरून विपर्यास पडला आप्त होते ते अनाप्त जाले. जे अनाप्त होते ते आप्त जाले. त्याचे वाक्याचे ठायी विश्वास आपली रीत सोडून यवनाची रीत घरली श्रीमत अति बुधिवान. गर्व मात्र विशिष्ट' याचा जो अर्थ शास्त्रीयरीत्या होत असेल तो करून भाऊसाहेबाविषयी जो सिद्धांत राजवाड्याने प्रतिपादन केला आहे तो शास्त्रीय आहे किंवा पक्षपाताचा होय हे वाचकच ठरवितील. सोबत्याकडील पुरावा अद्याप अनुकूल होत नाही बखर व कैफियत ही दोनच प्रमाणे आहेत ती त्याच्य नसून 'भाऊगर्दी' हे नाव जें निर्माण झाले ते निराधार ठरणार नाही असे सधोषनाती प्रत्ययास येईल. बखर मागाहून लिहिली गेली असली तरी कुजपुऱ्यावर लाबवल्याचा आक्षेप मात्र तत्कालीन आहे इतकेच नव्हे तर पुढील भविष्य स्पष्ट दर्शविले आहे

(१९८) 'श्रीकृपेने होणे ते होईल' असे पेशव्यांचे उदगार असून [लि. १६, २५] 'त्याचे काम होणे जाणें ईश्वराधीन आहे' असे सत्तारामबापू बोकिलाने म्हटले आहे [पिद २१ ले. ६२] 'गिलज्या भारीच आहे यश देता ईश्वर समर्थ परतु यदाचा समय परम कठिण आहे' [पिद २७ ले २५८] किंवा 'शहू भारीच आहे ईश्वर निवारण करील तेव्हा खरे' [पिद २७ ले २५९] अथवा 'परम सकटाचे दिवस आले ईश्वर काय करील ते न फले यमुनेस उतार जाहल्यावरी होणे ते होऊन येईल' [पिद २१ ले १९४] असले लेख अनेकांचे वाचावयास मिळतात तद्वतच हे वरील वाक्य होय त्याचे सार इतकेच की लाभ हानी जीवन मरण यश अपयश विधी हात या सिद्धांताची ती प्रायः भावातरे होत भाया प्रत्येकाची भिन्न असावयाचीच तस्मात् 'ईश्वर ज्यास यश देईल त्यास सुखे देच' अशी बुद्धेच्याची जवती आहे. [खड १ ले. १४७] त्याचा कीस काढून राजवाड्याने विलक्षण अर्थ केला आहे होळकराच्या भिडेमुळे नजीदखानास वाचविल्याचा दोष मुख्यतः बखरीचा आहे तो साधार सिद्ध करण्याची ही क्लिप्ती अचाट होय गोविंदपतासबधी बखरीचा आक्षेप निरर्थक नसेल परतु तसा चिटोरात्मक पुरावा अजून प्राप्त होत नाही पेशव्याविरुद्ध बखरीचे आक्षेप तिखटमिठाचे भासून इतराविषयी साखरेचे वाटावेत ही चिकित्सेची गोडी चमत्कारिक वाटून नामूल लिख्यते किंचित या श्रीदावदल आचार्याविषयी पदोपदी ञका येते

लेखांक [१९३]

श्री * संवत् १८१७ कार्तिक वद्य १३
[५ दिसेंबर १७६०]

श्रियासह चिरंजीव राज १ लालाजीस व राजश्री नारोबास प्रति नारो विठळ अशिर्वाद उपरी. ता छ * २६ राखर मुा षाणपत जाणून स्वकीय लीा विशेष. तुमची दोनतीन पत्रे आली. त्याचे उतरे पाठविली ती पावलीच असतील. आलीकडे वर्तमान तर झा ता छ मजकूरपावेतो दीड मास मोगळाचे आमचे शुद्द होत आहे. हाळी छ २२ रोजी जवळ कोशावर डेरे होते तेथून माघारे यमुनेकड कूच करून पांच सहा कोशावर गेले. तथून स्वारी यती. इतका प्रकार आहे. तुम्हास कळावे म्हणून लीा आसे. त्याचा जोरा आम्हावर नाही. माघारा सरला. बहुत काय लिहिणे. चिरंजीव बाबुरावजीची आसामी आपण चालवीतच आहात परंतु राा दाजी गेलियावर येकादी मागेपुढे दिकत पडेल याकरिता सरकारची सनद करून पाठविली असे. सर्वविशी आपण त्याचे चालविणे. सर्व आमावर आहे तो चालिलळ तर आम्हावर दृष्टी देउन चालविले पाहिजे. कुटुंब तथे आणिले आहे. बाळोबासही राा दाजीनी काही करून दिले होते. सर्व आपण चालवितात. पूर्वाही वडिलानी चालविलेत. सर्व आम्हावर आहे. यात उचित ते कीजे. बहुत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनती.

लेखांक [३९४]

श्रीमोरया * संवत् १८१७ माघ वद्य ४
[२३ फरवरी १७६१]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजी स्वामी गोसावी यांसि.

शेवक गंगाधर येशवंत [चद्रचूड] नमस्कार विनंती उपरी. येथील क्षेम जाणून स्वकीये कुशल लिहित जाणे विशेष. तुम्ही पत्रे माघ वा चतुर्थीची पाठविली ते पावोन लेखनार्थ अवगत जाला. माघोसिंगाचे वर्तणूकेचा प्रकार येजेमानाचे पत्री लीा त्या वरून सर्व कळले. इकडीळ वर्तमान श्रीमंत राजश्री पंतप्रधान सुरजेसमीप आहेत. पुढे राजश्री बाबुजी नाा व त्रिंबकराव सिवदेव व राजश्री गोपाळराव गोविंद [वर्षे] वीसपंचवीस हजार फौजनसी आलेत. मागाहून दरमजळ श्रीमंत येतात. ते येउन त्याच्या आमच्या मेटी जाल्यानंतर आज्ञा घेउन ते प्रांतास येत असो. बरकड येजेमानाच्या पत्रा वरून कळेल. सर्वदा पत्र पाठउन वर्तमान लिहित जाणे. १' बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [३९५]

श्री * संवत् १८१८ चैत्र शुद्ध ८
[१२ अप्रेल १७६१]राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
लालाजी स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक त्रिंबक दत्ताजी सा नमस्कार विनंती. येथील कुशल ता ल * ६ माहे रमजान जाणून स्वकीय कुशल लेखन करीत गेलें पाहिजे विशेष. आपण पत्र पाठविलें तें प्रविष्ट जालें. लेखनार्थ कळो आला. तीस हजार रुपयेच्या हुंड्याबाबत कबजाचा मजकूर आपण लिहिला की सात मास होत आले अद्यापि x x म्हणून कितेक तपसिले कडून लिहिले. तरी आम्हांकडून अंतर न पडलें. आपणच कबजाबद्दल कधीही लिहिलेंच नव्हतें. हालीं पत्र पाठविले त्यावरून कबज पाठविले आहे. हे प्रा होईल. वरकड दिळीकडील वगैरे सर्वही वृतांत लिहिले. त्याप्रा कळले. याउपरीही विशेष आढळेल त्याप्रा वरचेवरी लिहित असावें. श्रीमंत राजाश्री बाबासाहेबांचेही संतोषाचे वर्तमान ग्वालैरीहून लिला आलें असें. त्यासी आज्ञांतवासांत असतांच त्या जागांत माणसें आपलीं आणावयासि व राा सूरजमळ जाटाकडील माणसें यैसी ग्वालैरीहून गेलीं आहेत. लीकरीच धणीसाहेब आपले त्रैन्यांत येतील यैसे पत्रात लिहिले आले असे. हर्षांचे वृत्त कळावे यास्तव लिला आहे. जे जे मवास लबाड्या करितात त्यांस तंबी करावयाबद्दल राजश्री साबाजी पाटील शिंदे यासी फौजसुधा ग्वालैरीहून पाठविले आहेत. ते हाली मकुंदबरीचे सुमारे वडोघावरून तिकडे चालले आसेत. तुम्हांस कळावे सबब लिला आहे. १ वरात लेहून नेयास आळस करून आम्हास निषेध होउन लिहिता तर आम्ही घेउन येत जायाची आज्ञा कराल तर तैसेच कलेल. बहूत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [३९६]

श्रीगणराज * संवत् १८१८ चैत्र वद्य ४
[२ अप्रेल १७६१]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीपंत व गणेशपंत स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक गोपाळराव गोविंद [बर्वे] नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता ल * १७ रमजान मुक्ताम नगर नजीक सुरोज जाणून स्वकीये लिहित जावे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. लिला मजकूर अवगत जाहला. राजा माधोसिंग फौजसुधा

या प्रांती आले. तमाम महालच्चा अमल उठविला आहे. त्यास आपण खेचीचे पारपत्यास फौजसुधा राहिले. हे वर्तमान आइकोन आपले जागा दबले आहेत. सा पांचसात हजार फौजसुधा आलेनंतर सहजात जातात. अमल वसतो म्हणोन लियो ते कळले. दिल्ली कडील वर्तमान सर्व कळले. यैशास आम्हास हिकडे छावनी राहावयाची श्रीमंताची आज्ञा नाही. खेचीचे पारपत्य करून अक्षत्रितियेस देशास जावयास निघोन जावे. त्यास खेचीचा तह जाहल्य. अहीराची दोनचार स्थळे घेतली. तूर्त येथे मुकाम करून राहिले आहे. अक्षत्रितिया करून आम्ही देशास जाणार. तुम्ही तिकडील सविस्तर वृत्त लिहित जावे. † बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

पैवस्ता छ २४ माहे मजकूर.

[३० वज्रले १७६१]

लेखाक [३९७]

श्रीकृष्ण

* संवत १८१८ चैत्र वद्य ४

[३ मे १७६१]

राजश्रियाविराजित राजश्री

हरीपंतदादा स्वामीचे सेवेसी.

सो जिवाजी नाईक येवलेकर^{११} यांणी आवतिकाहून सा नमस्कार विनती उपरी. येथील कुशल ता चैत्र * वदी १४ पावेतो आपले आसिर्वादे करून सुखरूप असो विशेष. स्वामीकडील बहुत दिवस आसिर्वादपत्र काही आले नाही तेणेकरून समाधान नाही. तर ऐसे नसावे. सर्व वर्तमान लिहिणे विशेष श्रीमंत रा रामाजीपंतमाउचे वर्तमान तर आम्हीं कासदजोडी पाठविली होती. त्यात लिहिले होते कीं रा धणेस्वर व हसरराज जयेनगरकर याणी माघो सेठ लजेनकर याजला पत्र पाठविल कीं माउ कुरुक्षेत्रा आसपास आहेत आसे आम्हीं लेहून पाठविले होते. त्यास आता दुसरे वर्तमान रा रामाजीपंतमाउचे आले कीं आजमेरीस येक खजमतगार माउचा व येक कुरुक्षेत्रीचा ग्राम्हण आसे दोघे जण माउची हातची चिठी घेउन दोवेजन आलेत. रा गोविंदि राव अजमेरकर याजला चिठी लिहिली कीं सो रामाजी अनंत विनती उपरी. आम्हीं खिजमतगार व येक ग्राम्हण आपणाकडे पाठविले आहेत. हे वर्तमान सुखजबाणी सागती ते कळो येईल. इतकीच चिठी हातची स्वदस्तूर अजमेरीमचे रा गोविंदरावजीपासी

(१९९) याचे पूर्ण नाव जिवाजी कासी येवलेकर. पानिपतसबजी याचे दुसरे पत्र महत्वाचे आहे. [पेटि १ क्र १४ ले २] खड १३ ले. ४३ हे पत्र याचेच होय

आले. हे वर्तमान सांगितले राा गोविंदराव आजमेरकर त्याजकडील येक ग्रहस्त वकिलीस श्रीमंत नानासाहेबाकडे [पेशवे] प्राा उन्हेलीवरुन आला. तेथे आमचे चिरजीव आंतोबाचे घरी आले. अंतोबाणे पुसले की कोठून येणे जाले. त्याणी सांगितले की आम्ही अजमेरीहून गोविंदपताकडोन आलो. मग त्याचे नाव राा राजाराम भवाजी आकोलेकर त्याणी सर्व भाउचे वर्तमान सांगितले की मज देखता भाउचा पुरजा स्वदस्तर आळ राा गोविंदपताणी दोनशा रुपयाची हुडी करुन त्या दोषापासी देउन व आणिक येक जोडी बरोबर देउन पाठविले की दुसरा पुरजा घेउन येणे. त्यास भाउस जखमा तीन आहेत. आता बरे जाले. येक जखम गोळी निघाली. दुसरी जखम तरवारेची. वार दोन खाचावर आहेत. आता जखमा बऱ्या जाल्या. मग ग्रामण व खिजमत-गार दोषे आजमेरीस आले असे प्राा उन्हेलीस अंतोबापासी सांगितले. मग चिरजीवानी उन्हेलीहून आपले स्वार देउन त्या ग्रहस्तास अम्हाकडे पाठविले. मग आही फिरोन वर्तमान भाउचे पुसले. मग त्याचे हातचे पत्र येक लिहून गोविंदपंतास घेतले व अम्हीं लिहिले की भाउचा हातचा पुरजा आहे तो अम्हाकडे पाठउन दीजे. तोच मी आपणाकडे पाठउ. ऐसी पत्रे लिहून कासदाची जोडी आजुरदार करुन वारावे रोजी उजेनीमधे अजमेरीहून स्वदस्तर भाउचे आहे ते घेउन यावे. मग आपणाकडे पाठउ. ऐसी जोडी करुन पाठविली. मग संध्याकाली राा महादाजी बाजी चिटनीस सरकारचे त्याजळ खबर हे कळली. मग ते आम्हापासी आले. त्यानी सांगितले की तुम्हीं पुरजा भाउचा आणविला परतु राा गोविंदपंत काही पुरजा देन्हार नाहींत. त्या पुरजावर त्याणी रुपये दिल्ले असतील तो दस्तावेज काही देन्हार नाहींत. मग अम्हीं दुसरी जोडी कासदाची करुन दुसरी पत्रे राा गोविंदरावजीस लिहिली की भाउचा पुरजा स्वदस्तर आहे तो पाठविने. तुम्हीं जे हुडी करुन पाठविली असल ते रुपये आम्हीं देउ. पुरजा पाठउन देणे. घरी मनुशे फार हराण होत आहेत असे फिरोन पत्रे लिहिली. दुसरी कासदाची जोडी अजुरा करुन पाठविली. बोळी वारा रोजाची केटी. ते स्वदस्तर आलिया आपणाकडे पाठउन देतो. त्यास इकडोन जोडया कासदाच्या दहाबरा पाठविल्या परतु त्याचे स्वदस्तर येईना. कोन्ही जोडया आल्या कोणही आठदहा आल्या नाहींत. त्यास हे वर्तमान खरेखुरे आहे. त्यास राा सताजी वाबले अजमेरीस तेही याच प्रकारे तेथे गेलेत. त्याजळाही पत्र आम्हीं लेहून पाठविले की पुरजा भाउचा स्वदस्तर आहे तो पाठविने. आपणांस कळावे. त्यास बडिलानी अम्हांवर विशाद केळ असल की उजेनीमधे असोन वरतमान पाठवीत नाहींत. येथे कासदाचे जोडया उदळ पाठविल्या. त्यास हे वर्तमाणास जीव पडळ त्यास

माउ कुरुक्षेत्री येका भ्रामण्याचे घरी आहेत. सुखरूप आहेत. चिंता न कीजे. पहले पत्रात लिहिले ते खरचे आहे आणि हे वर्तमान दुणावले. चिंता तिलाप्राये न करणे. बारावे रोजी स्वदस्तूर उजेनीत आणविले आहे. येथे आलियावर येथून साता रोजा आपणापासी पाठवितो. चिंता तिलाप्राये न करणे. घरी सर्वास मणुषास सागावे की खुशाल आहेत. येथे आम्ही काही गिंसुर बसलो नाही. येक घडी चईन पढत नाही. जे रोजी स्वदस्तूरे येई ते रोजी अम्हास अन्य गोड लागेल. येथे जे मढकी आहे त्यास नी अन्य गोड लागत नाही. त्यास सर्व मढकीवर व अम्हावर आपला रागच आहे सबब की वर्तमान लेहून पाठवीत नाही. तर स्वदस्तूर आलिया आपणाकडे रवाना करितो. वडील राग भरले तर आमचा उपाये नाही. लेकरावर कृपा असो धावी. अम्हास नित्य खबर भाउची घेणे मग पुढे दुसरे कार्य करणे. माउवाचून अम्हास कोण आहे त्यास श्रीमत जनकोजी सिंदे यास नी आणावयास गेले आहेत. तेही थोडक्या रोजात लस्करात येउन दाखळ होतील. त्यास राा मल्हारराव होळकर स्वैचिवाड्यात आले ते दरमजळ उदेपुरास रामपुरियावरोन जातात. त्यास रामपुरा माघोसिंगाच्या ग्रहस्तानी घेतला होता तो रामपुरा फिरोन मिर्जा अदलबेग राा जनकोजी सिंदे याजकडील आहेत याणी घतला. राा साबाजी पाटिलनी जे ठाणी उठविली होती ते माघारा बसविली असे वर्तमान आले. उदेपुराचा राणाजी शात^{२००} जाला कोणही जहर घातले आणि मारले म्हणोन मल्हारराव जातात. टीका कोन्हास देउन काही नजर घेउन मग जयेनगराकडे जावे असे आहे. त्यास या प्राा वर्तमान आहे. सारोष हेच की माउ कुरुक्षेत्री आहेत चिंता काडीची न करणे. बड्डत काय लिहिणे हे विनंती.

सौभागवती वर्जचुडेमडित उभयेता बाईस व सौभाग्यवती वर्जचू[डे]मडित जाणकीबाईस आमचा साा नमस्कार प्रविष्ट करणे. मातोश्रीसमान सकुबाईस नमस्कार सांगणे. वडिल्याचा आसिर्वाद आला पाहिजे तेणेकरून समाधान आहे हे विनंती.

राा म्हादाजीपंतास राा लक्ष्मणपंतदाजीस [वैद्य] साा नमस्कार सांगणे. बड्डत काय लिहिणे हे विनंती.

(२००) उदेपुराकडे जाऊन दहावीस लाख मिळविण्याचा होळकराचा मनोदय होता. [पिव २७ ले २६९] परंतु उज्जनीकडे पेशव्याने बखेडा केल्यामुळे निरस्ताह होऊन तिकडील कसावसा निकाल काढून ते इंदुरासच आले. [पिव २ ले १४३]

लेखांक [३९८]

श्रीशंकर

* संवत १८१८ चैत्र वद्य १४
[३ मे १७६१]

आशिर्वाद उपरी. ता * चैत्र वद्य १४ रविवार जाणोन स्वकीय लखन करणे विशेष. तुमचे पत्र आजीचे आले औरंगाबादेच्या हुंडयाचा मजकूर लिहिला तो कळला. जर तुमच्या विचार्ये येईल ते करणे. येथे चिठी पाठवाळ तरी लिहिल्याप्रा देउन देसास माणूस आजी माभ्यान्हीउपरी रवाना करून. घोडी सारालीयास न पाठवणे. येथे पाठवणे. त्याजवरून तुम्हाकडे पाठविली आहे. देशी जे लिहावयाचे ते लिहिल आहे. होउन येईल ते खरे. दरबारी काही ताल राहिला नाही. बरे ऋणानुबंद प्रमाण आहे. हे अशिर्वाद.

लेखांक [३९९]
१८८]श्रीलक्ष्मीकांत * संवत १८१८ वैशाख शुद्ध ४
[८ मे १७६१]

राजश्री बाळाजी पंडितप्रधान गोसांवी यासि.

सकलगुणालंकरण अखडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य श्रो जानोजी भोसले सेनासाहेबसुमा दंडवत निनंती उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करीत आसिले पाहिजे विशेष. गोसांवियानी पत्र पाठविले ते प्रविष्ट होउन लिहिला मजकूर आवगत जाहाळा. माघारे जाता मुलकाची पायमाली न करावी. बराड प्राती गेल्यानंतर मोगलाई आमलची जप्ती करावी म्हणोन लिहिले एशियास गोसांवियानी आम्हास व राजश्री गोपाळराव यासी खेचिवाडियाचे पारपत्यावदळ ठेविले होते. त्यास तेथील गुंता उरकून दरकूच सुरजेस आलो. तेथून मंडले प्राताचे बदोवस्तावदळ सागराचे सुमारे आलो. तो राजश्री त्रिसाजी गोविंद कमाविसदाा दिमत राजश्री बाळाजी गोविंद [बुंदेले] हे भेटीस येउन निवेदन केले की बुंदेखंडात बुंदेल्यानी जमाव करून तमाम ठाणी घेतली. येक सागर व हाटे राहिले त्याजमध्ये हाटयास मोर्चे लाविले आहेत. त घेतल्यानंतर सागरास लागतील म्हणजे बुंदेखंडचा आमलच उटतो. याची साहित्य केलिया मुलक राहतो नाही तर नाही यास्तव या प्रांती येउन हटयाचे मोर्चे कापून काढिले. वरकड

ठाणी घेउन मारनिलेचे स्वाधीन केलियाचा मजकूर सविस्तर पेशजी लिहिलाच आहे. सांप्रत राजश्री हिंदुपत राजे याचा ऋ वकील सौरश्यानिमित्य आला आहे. त्यास कमा-
विसदार मशारनिलेचा व त्याचा तहरह करून देउन सत्वरच आपले प्रांतास जावयाचे
होईल. जातेसमई उतम प्रकारे फौजेत ताकीद करून गोसावियाचे मुळकात पायेमाळी
सर्वथेव होउन येणार नाही. वरकड बराड प्रांतीचे जप्तीचा मजकूर तर प्रस्तुत ईस्तमाळतीचे
दिवस आहेत. या दिवसात जप्ती जाहाळिया ईस्तमाळतीत आराखना होती यास्तव हे दिवस
जाहाळियानंतर गोसावियाचे आज्ञेप्रमाणेच वर्तणूक होउन येईल. राा छ * २ माहे शवाळ.
१ सूज्ञा प्रती विशेष काये लिहिणे कृपालोभ आसू दिला पाहिजे हे विनती.

मोर्तम
छर

छ १७ जिल्हकाद. इसने सितैन.

[२१ जून १७६१]

लेखांक [४००]

श्रीमोरया

*[१३ मे १७६१]

राजश्रियाविराजित राजश्री

लाळाजीबाबा स्वामी गोसावी यांसि.

पो गंगाधर येशवंत [चंद्रचूड] साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशळ
जाणून स्वकीये लिहित जाणे विशेष तुम्ही पत्र पाठविले ते पाउन लेखनार्थ आवगत बाला.
राजसिंग [बोडचढा] उमेदसिंगाचा सख्ख करून उन्हेरियावर जाणार. सुरतराम सुमराम
पोता रामपुरियासि गेला. मसोबाचे ठाणे घेतले. श्रीमंत [पेशवे] उजनीहून कूच करून
देसास गेले म्हणून लिहिले. यैसियासि राजसिंग वगैरे कछव्यानी बहुत बदफैली
केली. त्याचे पारपल श्रीइछेने थोड्याच दिवसात होईल. सुरतराम चद्रावत
रामपुरियासि येक होणार. चिंता काये. तिकडे राजश्री सुमेदारसाहेब आले आसेत
त्याचे पारपल येयास्थित होईल. श्रीमंत गेल्याची पत्र परभारे इकडेही आली व्हामुळे
कितेक कामात कचाई^{१०९} जाली. खावदाचे विचारास आले ते खरे. तुम्ही पत्र पाठउन

(२०१) 'विदेहोळकर या उभयताची फूट कदापि कर नये पहिले या गोष्टी समजूनच
जोडफलाचा साबा साधून टाकला आहे. उभयतात कोणाचा आव कोणाकडून चालतो कितिक कल-
वळा पहिले याणीच परिहार केल्या आहेत आणि आताही जितके हे अर्थप्राण वेचतील तितके अन्य-
त्राच्याने होणार नाही'. [मदवा १ ले ३३] ही अहिल्याबाई होलकराची मुक्ताफले असून सरळ

वर्तमान लिहित जाणे. आमचा मुकाम साम्रत श्रीमथुरेस जाला. आंतरवेद वगैरे

भाषेत बोलावयाचे म्हणजे मराठेशाहीच्या मीमांसेचे सार होय. वरील पत्र अत्यंत महत्वाचे असून हा विषय विवेचनीय असला तरी तूर्त विचार केवळ पानिपतीय कालापुरताच कर्तव्य आहे सक्षेपांत सागावयाचे म्हणजे सोवत्याच्या चुरशीस कारण मुख्यत मराठ्यांची 'मृतालकी' झाली प्रथम ती पवाराकडे होती [भाषड पान १०, १४] नंतर होलकराकडे गेली [पिद ३० ले ३१७] शेवटी शिंदे श्रेष्ठ ठरून ती त्याच्या पदरी पडली [पिद ३० ले ३१८] 'राणोजी शिंदे सोवती मातवर होते परस्परे मर्जी रखून स्वामीकार्यास तत्पर होते त्यामुळे कामेही उमदी होऊन आली मजे विपर्यास आला ते केवळ आपलीच बोट सेवटास न्यावी या विचारे वर्तनूक करू लागले. आम्ही दुसरी गोष्ट दिसू न दिली गत वर्षी सवलगडचे अनुसधान आम्हाकडे आले त्याचा निश्चय सर्वांनी मिलोन केला सेवटी ममता निर्माण होऊन ते दुसरीकडे गेले. अवदा तेच करार केले आमचा मात्र अपमान केला. तेच वेळेस सोवतीची पूर्ती जाली देवगतीने राणवास देवज्ञा जाली मग तर बोलता नयेसे जाले लोकविरोध दिसोन येतो. दावाना आमची हेकडता दर्शनाची या पश्चातापेकडूनही तिकडे गेले. स्वामीनी शब्द लाऊन लिहिले जयापाची ममता घरून जैतपुरास सामिल जाली'. [पिद २१ ले. १५] कल्लुवतेस आरंभ असा झाला म्हणूनवाचा स्वभाव मानी. शिंदे स्नेही पण जेथे त्याचे वर्चस्व खपत नव्हते तेथे सुखळणकराचे कसे निभावयाचे अर्थात 'वावाचा कारभार येकवोढी मूल तर अज्ञान' [पिद २७ ले. १८] 'आजीपावेतो सोसिले आपला लौकिक दाखवावा तेथे येकविचारे होऊन कार्य कसे होऊन येईल आम्ही राजकारण आणावे ते लटके करून दाखवावं यैसा अभिमान त्याची वावा-चाच आग्रह सेवटास न्यावा आणि आमचा अपमान करावा यैसे उत्तमात गोष्टी नाही'. [पिद २ ले. २५] ही भाषा चालू झाली सवलगडसर्वी पत्रे उपलब्ध नसल्यामुळे वरील आक्षेपाचे आकलन होत नाही. पत्रान्वयेच बोलावयाचे तर मूल म्हणजे जयाजी शिंदे अज्ञान होते हा आरोप अनुचित होय कारण की ते १७३० पासूनच काम करू लागले होते [पिद २२ ले ४९] सुखळणकर सेवक खरा पण तोही जन्माचा सोवती असून उमदी कामे घडवून आणण्यात त्याचाही वाटा होता त्याला येकवोढी म्हणावे तर मृतालकी चालविणारा कोणीही असला तरी त्याच्या माथी हा दोष नेहमीच यावयाचा राज-कारणे लटकी करून दाखविण्यासारखी स्वर्षा परस्परे वाढलेली नव्हती तेव्हा हा आक्षेप पोकळ असून खरा अर्थ असा निघतो की वयमाने वडील असल्यामुळे राणोजीनंतर मृतालकी आपल्याकडे यावी अशी इच्छा वाढावली आणि त्या दुराशेपायी शिंद्यास सोडून होलकर डोंगरपुराकडे गेले ही गोष्ट अनुचित होती या वियोगाचे दुःख आटून शिंद्यानी होलकरास पाचारिले परंतु परत आल्यानंतरही त्याची मनोवृत्ति पालटली नाही किंबहुना हेकडता वाढत जाऊन अनिवार होत गेली समाधान एवढेच की 'राजश्रीच्या कर्जपरिहाराचें' ती पेगव्याच्या पध्यावर मात्र पडली स्नेहात तेव येऊन होलकर मागे राहिले शिंदे देखी आले. त्यानी आपले 'सैन्य दुपटीने वाढविले' [ले. १९७] याच वेळी उत्तरेस अवदाकी 'अटक उतरोन लाहोरास आला श्रीमतास पत्रे आली की सत्वर येणे त्यावरून हेही जातात परंतु पथ दूर'. [पुरवरे १ ले. १६३] 'दिलीकडील प्रसंग अवघड रामचंद्रवावा म्हणूनवा येके जागा नाहीत'. [पुरवरे १ ले. २१३] अर्थात पेशवे 'जाऊन पोहचले नाहीत'. [पिद २७ ले. २९] ही नेवाईची स्वारी यात्रेदाखल होऊन 'परचक्र वाचन महत्कार्ये सपादू पह्याणाच्या साधकाचे कर्म' अभिप्रेत होते ते सची आली असता साधले नाही [पिद २१ ले २०] बुद्धकपि निजाम वारला म्हणून पेगवे देखी परतले.

आमल इकडील कामये केला. थोड्याच रोजात राहिल्या कामाचा निर्गत करून घेत.
' बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

पंथस्ता छ * ८ माहे सवाळ.

वैशाख सुध १० बुधवार.

[११ मे १७६१]

होलकर जयपुराकडे बळके शिवांस छावणीस ठेविले तात्पर्य हे की सुभेदारवरी लोम करून काये याचे हाते ध्यावी याची सलावत दिली आदिकसन रजवाड याजवरी आहे स्नेही यैसे की याचे पत्र जाईल ते समई अवध फौजेनसी येतील हा सरदार कायम आहे निसरडा होत नाही' [पुरदरे १ ले १५७] 'मल्हारराज याचा आशय पाहिला की खावदाचे भेटीस जावें आणि साफ विनंती करावी की याजपरी आमचे त्याचे [मुखठणकराचे] वनत नाही मजला चाकरी सांगाल ते करीन बहुत यत्न केला की येकदिल व्हावें परंतु यानी ते गोष्टी मनास आणिली नाही अशी परिस्थिति प्राप्त झाली तेव्हा साताऱ्याच्या मुकामी कडावयाचा वाद वाढून त्यात शिवाचा 'उत्कर्ष' राहिला असे समजते [कि. २००] सविस्तर वृत्तात समजण्यास साधन नाही एवढें खरें की यानंतर गोडीने उभयता उत्तरेस निघाले. 'अपसात चित्तबुद्धि नाही याजमुळे मनसबा सिधीस जाणार नाही श्रीमत अगर भाउस्वामीनी दिल्लीस जावें पातशहात बजिरात येकता करून आपले कार्य भातवर दृढ्य मुलूख ध्यावें असा समय येणार नाही. स्वामीखेरीज सरकारीकार्य होणार नाही जाले तरी बंदोबस्त होणार नाही असे पंच आहेत'. [खंड ३ ले १४९, १५१, १५८, १५९] असले लेख येतात परंतु अशा परिस्थितिच 'अवघड मनसबे सिद्धीस जाऊन इराणतुराणपर्यंत लौकिक होण्यासारखी लोकोत्तर कृत्ये घडून ज्या गोष्टी कल्पनेत नव्हत्या त्या कर्तव्यास आल्या' [ले १०, १२] 'पैका व यश आजतागाईत जालो नाहीत ती करून दाखविली'. [ले १३] 'आगरा अजमेर मुल्तान इत्यादि सुभ्यासह हिंदुस्थानची चौपाई सपादून' स्वराज्याचे रूपांतर साम्राज्यात झाले [ले २०३, २०४] ही अपूर्व सची स्नेहाचा साधा जुळविण्याची आली असता तिचा सदुपयोग व्हावा असा भाव योग नव्हता त्याचे कारण मुख्य पेशव्याची इर्षा ही होय 'ग्रहकलह लागण्यास कारण दादासाहेब प्रथम स्वारी हिंदुस्थानाचे मोहिमेस पाठविले' असे जें बखर सांगते त्याचा अर्थ हाच होय यानंतर उभयताची सागड कधीच जुळाली नाही आणि पानिपत-सबधी बखरीची भीमासा या बरील गोष्टीला धरून आहे त्यात तारतम्य किती आहे हे या भागातील पत्रें सांगतील. अखिल भरतखंडाचे स्वामित्वाचे सीमाय लार्भले असता भरारीच्या हस्ते दिल्ली काबिज जाली' म्हणून कृतज्ञता वाटणे हे द्वैतनीतीचे चिन्ह असून 'उगेच गपाचे आघेस गुदु नये' [ले ९०, ९२] 'मल्हारराज गपा भारतीय त्या आयकाव्या' [पुरदरे १ ले ४०५] ही वाक्ये त्याचीच द्योतक होत. या नीतीचे प्राबल्य असता राजकीय क्षेत्रात बालाजीपत भानू जन्म पावला अर्थात 'सर्व हिंदु स्थानाचा यशस्वितार मल्हारराजवर आहे' [पुरदरे १ ले ४१८] परंतु जे कारणे ते सुभेदाराचे अनुभूते करतात यास्तव कठिण दिसते' [खंड ६ ले ४१०, ४१५] या उदगाराचे आश्चर्य नाही. या नीतीचेच पालन पुढील आयुष्यात भानुने केले. त्याला अनुलक्षण बरील शब्द अहिल्यावादिचे आहेत अस्तु. पेवाचे साधारे फिरले हा आक्षेप केवळ होलकराचाच होता असे नव्हे तर 'श्रीमत माधारे फिरले ही

श्रीमंत माहाराज राजश्री पंतप्रधान स्वामीचे सेवेसी.

विनंती सेवक धोंडोराम कृतानेक साां नमस्कार विज्ञापना. ताा छ * २६ माहे शवाळ सुा मोजे तिंजली पोा कळबुरगे स्वामीचे कृपावलोकने करुन शेवकाचें वर्तमान यथास्थित असे विशेव. छ २३ रोजी कळबुरग्याहून सळावतजंगाचे व निजामअलीखानाचे कूच जालें ते चार कोस आले. छ २४ रोजी पांच कोसाचें कूच जालें. छ २५ रोजी मलीखेदानजीक जातीळ. हे प्रस्तुत कोयेळकोड्याचे शुमारे जातात. तिकडे आठचार रोज फिरुन कांही पैका मेलउन फिरतफिरत बेदरावर छात्रणीत यावे हा मनसबा आहे. करनूळकर व कडपेकर व सावनूरकर पठाण व दुरारजी घोरपडे यांसी यांची पत्रें वरचेवर जातात की मेटीस सत्वर येणे व इंभ्रजांस मुळक सिकाकोळ व राजबंदरी वगैरें घावीसी करुन स्वांसही बोळाविलें आहे. नवे मराठे ठेविले आहेत. स्वांचा तपसीळ तरी सेवेसी वारंवार लिहित गेलों. सारांश यांचा जमाव भारी दिवसेंदिवस होत चालिला. उभयेतां निवालकरांस वरचेवर पत्रें जातात की सत्वर येणे. प्रस्तुत तरी प्रजन्यकाल आळ. आता यांच्याने काही होतां दिसत नाही. छावनीत जमाव करुन मजवूत व्हावें पुढे महाराजांकडून विघाडीचा मार जाला तन्हीं सिध आहेत. नाही तरी हरयेक गोष्टीवरुन हेच कुकुर काढतील. रेमा शुमार दिसतो याजकरितां विनंती लिहिलीच लिहितो. येथील मजकूर कचापका माहाराजांस कळावा म्हणून सदैव विस्तारे लिहित जातो. पुढील कर्तव्याचा मजकूर सर्व महाराजाचें ध्यानांत आसेल. कितेक तपसीळवार वर्तमान राश्री कृष्णरावजी मुंनसी यासी लिहिलें आहे त्याजवरुन ते विनती करितील. तें ध्यानास येईल. सेवेसी श्रुत होय हे विज्ञापना. छ २५ शवाळी तिगलीस आले. येथून मलीखेद दोन कोस आहे व सेदंबा सहा कोस आहे. दरकूच कायेळकोड्याकडे जातात. पुढे होईल वर्तमान ते सेवेसी लिहिल्यांत येईल. राजश्री राजे विठ्ठलदास याणी

गोष्ट फार वाईट जाली वरे आपल्यास चाकरी करणे नाही मग मनसबा करास पाहिजे. असा भानूचाही अभिप्राय होता [पुरवरे १ ले ४१७] 'जमाव ४० हजार जाला होता. गिलजावर नजीब-खानावर सळावत पडली होती वकील येत होते परंतु लोकास रोजमर्या न कळला. श्रीमतानी यैवज न पटविला येणें करुन दूडी जाली'. [खड ६ ले. ४१३] असे जावव सागतो हे लक्षांत असावें 'स्वारी गेली फार जलदीनें जाणेच होते तर हलक्या मजली करुन जावे. थोडी फौज ठेवावयाची होती म्हणजे वीहीकडील वदोवस्त होता' हाच कटाक्ष होलकराचा होता [पिद २१ ले. २०५]

स्वामीचें पत्राचें उतर पाठविलें आहे त्यात फार मायेममतेने लिहिलें आहे. त्यास त्याचे उतरही त्यास फार गोड ममतेने लिहिलें पाहिजे. हे विद्वापना.

छ ९ जिल्हाद.

[१३ जून १७६१]

लेखांक [४०२]

श्री

संवत १८१८ ज्येष्ठ शुद्ध ७

[९ जून १७६१]

राजश्री रघुनाथपडित [भठ] यांसी.

श्रीमंत माहाराज मातुश्री जीजाबाईसहिब यांणी आज्ञा केली येसीजे. तुम्हीं विनंतीपत्र पाठविले ते प्राा होउन लेखनार्थ कळला. तेथे लिहिलें जे चिरंजीव कुसाबाईच्या प्रस्तकालसमई सेवकाचे निस्वतीच्या बाईका संनिध आसाव्या. लटका^{१२} मार जाहाल्याने सेवकासी मानणार नाही. कन्यचा पुत्र न व्हावा म्हणोन लिहिलें ते उचितच लिहिलें. यामागें जाहाले तपूही आमच्या घरांत कन्यचा पुत्र जाहाल नाही व पुढेही होणार नाही व सांप्रतही खोटा मार नाही. आपल्या प्रत्यासही येईल. पुण्यंसील आनुबाईसही बोळउं पाठविलेच होते. आपणं बुधिमत आहा. साहेबाचा लोभ न टाकणे. मघेस्त आपण आहेत. राजश्री प्रधानपंताकड पत्रे गेलीच आहेत. मागाहून राजश्री द्वापो नारायेंण यांची रवानगी करुन पाठवीत आहों. कळले पाहिजे. जाणजे छ * ५ जिल्हाद ! बहुत काये लिहिणे.

लेखन
सीमा.

वार.

छ ११ जिल्हाद. सन इसने.

[१५ जून १७६१]

(२०२) 'शाहुमहाराजानतर दोही राज्यावर सत्ता स्वामीची आणि आम्ही सेवक स्वामीचे आज्ञेप्रमाणे वर्तणूक करच' असी क्षपथ वाहून [कास ले. २४६] 'राजारामास कैदवाकल प्रतिपेने पोटास देउन पुतें ठिकाण कागेल तसे करावें असा करार' [पुरदरे १ ले ३६९] करणारा पेशवा सातारची 'नवी मुद्रा' म्हणजे नवा राजा करणार होता [खरे १ ले ३३] ही वासना कोल्हापुरचे समाजी जिवत असेपर्यंत फलद्रूप झाली नाही. 'समाजी समाप्त जाहल्याचे वर्तमान आल्यावर भोसले मुगीकर याचा धाकटा भाउ उमाजी हा राजा करावा जिजाबाईने कारभार करावा. ताराबाईप्रमाणे खर्च नेमून घावा खाउन स्वस्थ राहावे याप्रमाणे कबूल केल्यास उत्तम नाहीतर जपती करावी' असे ठरविले. [रिटि २ क्र १६] आणि प्रसुती होऊन कन्या की पुत्र होती याची वाट न पाहता मुगीकरास राजा करपाचे घोरण पेशव्यास शोभेसे नव्हते पण याविषयी विचिनिषेव असा उरलाच नव्हता असे पत्र सांगते.

लेखांक [४०३]
[१९१]

श्री * संवत् १८१८ ज्येष्ठ शुद्ध ७
[९ जून १७६१]

राजश्री बालाजी पंडितप्रधान यांसी.

श्रीमंत माहाराज मातुश्री जिजाबाईसाहेब उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीये लेखन केले पाहिजे. यानंतर आपण पत्र पाठविलें तें प्रविष्ट होउन लेखनार्थ कळला. तेथें लिहिलें जे साहेबाचा पढदा सेवकांसी नव्हतां हणोन लिहिलें ते खरें. आपल्यासी पढदा श्रणीही नाही. कैलासवासी माहाराज स्वामीची आक्रम ममता असतां साहेबी बियोग केला उचित नाही म्हणोन लिहिले ते प्रमाणच आहे. आपण बंधूच आहेत परंतु राजश्रीच्या आज्ञेनरूप च्यारी गोष्टी तुम्हां प्रती बोलावेंसें होते आपण दूर राहिलां. समेटी साहेबापासून घडेल न घडेल हे आपण जाणतात प्रत्यासही येईल. येथील अर्थ आपल्या-सिवाये नसल्यास आपण इतका सदेह घेउन ल्याहावे. सर्व प्रकारे करून आपल्या ममतेची आब्दों. राजश्री शेषो नारायण यांसही मागाहून पाठउन देत आहों. पुण्यसील आनुबाईसही येणेविशीं पत्रे गेलीच होतीं. कळले पाहिजे जाणजे खाना छ - ५ माहे जिल्काद. बद्धत लिहिणे तरी सूझ असा.

लेखन
सीमा

पो छ ११ जिल्काद.

वार.

सन इसने सितेन. जेष्टमास

[१५ जून १७६१]

लेखांक [४०४]

श्री

[१७६१]?

यादी माहाळ प्रात अंतरवेद.

निा सरकार.

निा सिंदे.

१ पो ईटावे.

१ पो फुंद

१ पो मुयेगाव

१ पो विलासपुर सिकदरा

१ पो हरेवापुर

१ पो विरोण

१ पो मगळपुर

१ पो सकतपुर

१ पो शाहापुर आकरपुर

१ पो सोरेळा

‘छत्रपती याजला प्रधानानी १३ वर्षे अमर्याद होउन सेवेची रीत टाकून नजरबंद ठेविले श्रीकृपेने त्याचा फलादेगही त्यास जाहला’ असे प्रतिनिधी सागतो [ऐटि १ क्र ३२] त्याचा मतितार्थ हाच की पानिपतमुळे ही दोन्ही राज्ये बाचली.

- १ पो रासमाहला
 १ पो आकबरपुर बीरबलाचे
 १ पो कासगंज
 ७॥ पो चकले कडा
 १ कडा
 १ करोली
 १ आयर्वण
 १ रारी येकडला
 १ हंतगाव
 १ कुटरा
 १ येकड गाजीपुर
 १ कोंडा सुतोरे

१५॥

गोपालराव गणेश याजकडे माहाल
 सरकार व उभयेता सरदार मिलेन होते.

- १ कुरा
 १ जाजमठ
 १ मोसमपुर
 १ कुटिया गुजेर कुवरपुरा
 १ बुंदकी
 १ कोंडा सुतोरे
 १ हसवा
 १ फतेपुर
 १ अयासा.

९॥

- १ पो बालबोर नानामठ
 १ पो तालगाव
 १ पो मोर रासमाहला
 १ नबीगज सिकदरा
 १ पो-खेवरा बारा
 १ पो घांटपुर
 १ पो मस्वावण
 १ पो सिवली

१४

निा होलकर

- १ पो सकुराबाद
 १ पो देवकली ओरया
 १ पो समीय [ट]
 १ पो कनोज
 १ पो तालगाव निमे
 १ पो मोर रासमाहला

५

पो बिठुर समईक उभयेता दिवाणाकडे
 [दामोलकर व चंद्रचूड]
 सवगजपुर नगद[रया] दोन माहालन्या
 सनदा रघुनाथ हरी^{१०३} यासी

(२०३) ही यादी पूर्वपानिपतीय विसते जका इतकीच की हा रघुनाथराव हरी कोण.
 टकले नेवालकर किवा आठवले? याचा उमज पडल्यासिवाय कालनिर्णय होत नाही.



पानिपतोत्तर पत्रव्यवहार

१८१८-१८२८ विक्रमी.

लेखांक [४०५]

श्री

[१७६१] ?

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

नारोपंत नाना स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य माहादाजी^{१०५} बलाळ [गुरुजी] कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरीं. नारो गोपाळ काही कार्याबदल कोट्यास जात आहेत. तरी येथून स्वारप्यादे यासमागमे दिले आहेत. तरी तुम्ही तेथून नर्मदेपर्यंत स्वारप्यादे दहून पोहचाउन रसीद आणून पाठउन घावी. बहुत काय लिहिणे लेभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [४०६]

श्री

[७ नवबर १७६१]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजी बन्हाळ स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक नारो^{१०५} शंकर [विचुरकर] कृतानेक नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीय लिहिणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले. तिकडील सविस्तर अर्थ लिहिले

(२०४) माहादाजीपत गुरुजी पेशव्याबरोबर १७६१च्या आरभी उत्तरेस आला होता [कास ले १९२] त्या सुमाराचे हे पत्र असावें एरवी ते १७७४त घालाने लागेल कारण त्याच वर्षी तो शिवाकडे उत्तरेस आला होता [पिब २९ ले २४७] हे पत्र याच गुरुजीचे होय पण मपादकाची तारीख मात्र चुकली आहे खरी तारीख २६ अगष्ट १७७४ अशी पाहिजे

(२०५) भाग १.ले. २६८ अन्वये-या पत्राची तारीख ठरविळी आहे.

ते कळो आले. ऐसियासि प्रस्तुत देशी यवनाचा [निजामाचा] विघाळ आहे. त्यास येथील बंदोबस्त लौकरच होईल. तदनंतर फौजेसह त्या प्रांते आल्याउपरी सर्व बंदोबस्त होउन येतील. तुम्ही तिकडील वरचेवर वर्तमान लिहोन पाठवीत जाणे. ' बहूत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [४०७]

श्री

* संवत १८१९ चैत्र वद्य १०

[१८ वज्र १७६२]

राजेश्री खानाजी जाधवराव सेनापतजी गोसावी यांसि.

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य श्याा त्रिवकराव नारायेण [विंचुरकर] कृतानेक विनती. येथील कुशल ताा छ * २२ माह रमजान जाणून स्वकीय कुशल लेखन करीत असिले पाहिजे विशेष. पत्र पाठविले ते पावले. तेथे लिहिले वर्तमान कळो आले. दर्शनातुल्येच छाम जाहला. येणेप्रो सदैव परामर्ष करीत असावे. वरकड सांचंत अर्थ येजमानानी लिहिला आहे त्यावरून कळेल. आपण च्यार रोज घीरेघीरे गनिमी काब्याने असावे तो या पत्रामागेच सडीफौज पावेल. माहून येजमानही दरकूच येतील. कळले पाहिजे. ' बहूत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [४०८]

श्रीशंकर

[१७६२]

विनंती उपरी. बहूत दिवस आपणाकडील कुशलद्वत कळत नाही या करिता चित सापेक्ष आहे. तरी सविस्तर लेखन केले पाहिजे विशेष. मागा येकदोन पत्रे पाठविली. कबिला सुटावा हा अर्थ लिहिला. त्याचा जाबसाळ आला नाही. साहुकाराचे देणे किती राहिले. त्यास पांच हजार रुपये देउन कबिला सर्व सुटत असिला तरी येथून कर्जबाम करून पाठउन. कबिला सुटत असला तरी यथून साहिता करूनकबिला सुटत नाही तरी काये कामाचे. पाा पाटण इजारा केला अमिमानात्तव तो अमिमान कार्यास आला. धामुळे वोढग्रस्त जाहलो परंतु यजमानसाहेबी आब रक्षिला. येरवी दोन अधिकही होते. त्यास तथील बंदोबस्त यथार्थ असे[ळ] तरी ल्याहावे म्हणजे कार्य करू. नाही तर को घेहून बळमामली करितील तरी काये कामाची. सर्व कबिला आम्हापासी ये कबिला आणावयास साहित्य यथून पाठउन. यथेच राहील. तुम्ही जो विचार करणे

दरबारी जाणे अथवा विचार करणे तो करावा. कविलेखी काय प्रयोजन आहे. दरम्यान मातबर आदमी घेउन काम करणे. नारो शंकर याचा कारभार बदामाली. त्याचा सांप्रदाये तसाच. राजश्री लक्ष्मण नारायण आमचा स्नेही. त्यास लिहावे तर या कर्तव्यास तो तोच अधिकारी याकारिता त्यास कसे लिहावे या कार [ता] पुरता बंदोबस्त हे शर्त कबिल सद्दून शाहबादेस पोहचलेनतरी हा सावकाराने घावे असे करून लिहून पाठवणे उपरी साा चिरंजीव आनुबाई लग्न जाहालिया सातवे वर्ष. हमेशा आम्ही लिहितो की पाठवणे त्यास आपण न पाठविली. आता मूळ थोर जाहाली. कार्तिकाने चावदावे वर्ष प्राप्त जाहले. आता किती दिवस ठेवावे. अनुकूल प्रतिकूल हे तो ईश्वरइच्छा. आज सात वर्ष होउन गेली. आम्ही वारंवार लिहितच गेलो. येताजाताचे साहित्य यथून पाठउन देतो अथवा तुम्हासही अनकूल होते परंतु आपल्या चिंतास न आले. ऋणानबध. त्यास तुम्ही काये कराल. गुदस्ता सरंजाम पाठविला. तुम्ही अपु[र]ता पाठविला. काये करावे. याउपरी तेथे ठेवावे हे उचित की काये. आम्ही काय करावे. तरी याउपरी कृपा करावी. सरंजाम पाठवितो रावाना करून घावी. अनकुलता होउन येईल ते समई पाठउन. तरी काये चिंता आहे. आपणास कर्तव्य असेल ते अनकुल जाल्यास करावे परंतु सुलीस येकदर न ठेवावी. याउपरी तुमचा जाबसाल येईल त्याप्रा करून. आमचा ऋणानुबंधास असेच आले. तुम्हास काये बोल लावावा. याजकारिता वडील बोलत गेले की जे करणे ते त्वरेनेच करावे कालचा दिवस कळत नाही परंतु तुम्ही सर्वही अमान्य केले बरे जाहले ते जाहले. याउपरी यकंदर न ठेवणे [अपूर्ण]

लेखांक [४०९]

श्री

[वकटुबर १७६२] ?

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी

सेवक श्रिवकराव^{३०६} सिवदव [ओढेकर] साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीये कुशल लिहित गेले पाहिजे विशेष. प्राणणे पाटण येथील सरकारचा

(२०६) ओढेकराचे कर्ज पेशव्याकडे बाकी होते त्याची 'सोय' म्हणजे फेड केली तेव्हा परगने पाटण येथील तिसरा हिंसा राघोवाने ओढेकरास लावून विला [वाड ९ ले १९३] या पत्रात तो 'सरजाम' होता असे म्हटले आहे अर्थात ती योजना सिद्धास नडणारी असल्यामुळे पार पडली नाही [भाग १ ले २७६] ओढेकरास सिद्धाची 'दिवाणगिरी सांगितली' होती त्या मानाने पत्राचा काल विला आहे. [ले ४१३ वाड ७ ले ६८१]

हिसा आम्हाकडे सरजामत दिव्हा आहे. त्यास तेथील कमाविस राा केसो आनत यासि सांगितली आहे. तरी प्रगणे मजकुरी आमलाची सुरुवात जाल्या दिवसापासून मारनिले यासि रुजुवात हिसबकितेबची करुन समजाउन बावी. समाईक खर्चवेच वगरे याचे रुजुवातीने करुन, हे व आपण येकविचारे राडून कामाचा बंदोबस्त होउन उतम प्रकारे चाल ते करीत जावे. आमल जाल्या दिवसापासून नरुताचा व गल्याचा बसूल जाला आसेल तो रुजु करुन देणे. १ वहुत काये लिहिणे जोम असो दीजे हे विनती.

लेखांक [४१०]

श्री * संवत १८१९ भाष वष १३

[१० फरवरी १७६३]

राजश्री लालाजी बहाळ कमाविसदार पाो पाटण गो.

अखडितलक्षुमीअलकृत राजमान्ये श्रोा संताजी बाबले^{२००} व गणोजी कदम दंडवत विनती उपर. आम्ही राजश्री सिदोजी इंदलकर याचे समजाविसी दिल्या क्रोटयास आलो होनो ते समयी सिलेदाराच्या खर्चाबाा घेतले रुपये.

१५ संताजी बाबले.

१५ सिलेदार निा येमाजी गुजर.

४२ निा गणोजी कदम.^{२००}

४३ सिलेदार निा आपाजी पवार

११५

येकुन येकसे पनरा रुपये पाा मजकुरचे येवजी गुजरुन मुजरा घेणे. छ * २६ रजेव सुा सखास सितेन मया अलफ. बहुत काये. लिहिणे हे विनती

(२०७) मोजे पिंपरी तालुके श्रीगोदे येथे हे घराणे विद्यमान असून तेथे गेल्यावर भिवाजीराव रामराव बाबळे यांनी आपल्याजवळील कागदपत्र मोठ्या सतोषाने दाखविले ते मालेत पुढे क्रमशः येतील या घराण्याची वखर पत्राघारे कोणी १८९८ साली रचिली आहे त्यावरून बरेच कागद असले पाहिजेत पण ते सर्व सापडले नाहीत अस्तु या घराण्याचा मूळपुरुष यमाजी बाबळे असून त्याचे नाव पेशवेदप्तरात पथकदार म्हणून येते [पेद ३० ले २५] त्याच्या पाच मुलांपैकी वडील मुलगा सताजी हा शिद्धाकडे असून दुसरा जानराव होलकराकडे होता या उभयताची प्रतिष्ठा दोहीकडे असून बखरकाराची गाढ परिचय होता मात्र याची पारिपतीय पत्रे सापडत नाहीत मार्गशीर्ष वद्य ९ शके १६८६ म्हणजे १७ दिसवर १७६४ पर्यंत सताजीचे नाव येते अर्थात तो यानंतर वारला हे लघड होय

(२०८) या कदमाचे मूळ नाव कोणते हे कळत नाही परंतु गिरसगावकर म्हणून हे विख्यात आहेत याची एक गाखा शिरसगावकाटघास असून दुसरी ग्वाल्हेरीस वास करते श्रीयुत वामनराव कदम शिरसगावकराची परिचय असून त्याच्याकडे काही कागद असल्याचे समजले पण ते प्रत्यक्ष

लेखांक [४११]

श्रीशंकर * संवत १८१९ फाल्गुन शुद्ध ५
[१८ फरवरी १७६३]

तीर्थस्वरूप राजश्री भावोजी स्वामी वडिलचे सेवेसी.

अपत्ये लालाजीने कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता फाल्गुण* शुद्ध पंचमी मुकाम नजीक सोपर जाणोन स्वानंद लेखन केले पाहिजे विशेष. हरीसिंग भारदी याचे लोक जखमी जाहले त्यास खर्चास रूपये तीनसेची वरात आम्हावर परगणे मजकूरचे यैवजी केली त्यावर आम्ही श्रीमंतास परगणेची नादारी वगैरे जी आर्जे करावयाची ती केली परंतु त्याची आज्ञा रूपये घाच त्यावरून पांच गारदी व वरात आपणाकडे पाठविली आहे तर वरात घेउन रूपये तीनसे जैसा जाणाल तैसे करून याचे पदरी घालणे आणि कन्नज घ्यावी. पांच गारदी^{२०१} पाठविले म्हणोन लिहिले त्यास गारदी तर महकूप राहिले. दोघे स्वार पाठविले ते त्याचे पदरी रूपये घालणे. बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [४१२]

श्रीशंकर * संवत १८२० चैत्र वद्य ६
[३ अप्रैल १७६३]

आशिर्वाद उपरी. ता चैत्र * वद्य ६ रविवार जाणोन स्वकीय लेखन करणे काली छाप पाठविली ते पावली. वर्तमान लिहिले ते कळले. राा सदासिवपंताचे पत्र पाठविले ते पावले. पाा पाटण यथील साल मजकूरचे यैवजी पंनास हजार रूपये पाठवावे छागतात. त्यास साल मजकूरचा यैवज काये जमा जाला ते वर्तमान लिहिणे. राा राघो जनार्दन देसीहून आले. येथे तीन रोज होते. हरामजादा. बरे काय चिंता

पहावयाचा सुयोग आला नाही अस्तु 'कदम तर केवल गुहस्थानापन आहे' या वाक्यावरून हा गणो जी कारस्थानी असून त्याचे वजन शिंद्याजवळ होते असे दिसते या भागात त्याचे नाव अनेक वेळ आले असून एक पत्रही उपलब्ध होते ते पुढे पहावयास मिळेल

(२०९) पहा भाग १ ले २३७ पानिपतापूर्वीच गारदी व फिरगी याचा प्रवेण पेशावे व होळकर याजकडे झाल्याचे समजते [पेद २२ ले ७८ पेद २१ ले ४९, ५४] तसेच शिंद्याकडेही गारदी होते ही गोष्ट या पत्रामुळे नि सकोचपणे कळते १७७० साली कुमरीकर जाटाच्या पदरी वरेंच कदायती सैन्य होते त्याचप्रमाणे १७७३त शिंद्यानी बाढविले असावे असे अनुमान निघते कारण की खर्च घेऊन मुसा मपत यास पलटणीसह कोटेकराकडे पाठविल्याची अनेक पत्रे महादजी शिंद्याचीच आहेत ती पुढे पहावयास मिळतील

आहे. त्याचे काही चालिरे नाही. राा कुसाजीराम सर्व वर्तमान निवेदन करतील. तूर्त येथील टीपाटापा वसूल जाळा नाही. याजकरिता गोविंद मनाजी म्हणून ब्राह्मण आले आहेत. दरबारी काही ताल राहिला नाही. सालही बोलास आले. याजकरिता मुकाती व वाकी जळदीने वसूल करणे. रुपये पंनास हजार पाठवावे लागतात. कल्ले पो हे आशिर्वाद.

लेखांक [४१३]

श्री * संवत १८२० अधिक अयेष्ट शुद्ध ३
[१६ मे १७६३]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजीबावा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक केशव अनंत कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपरी. प्रो पाटणचा सरकारी हिंसा जहागीर श्रीमंत राजश्री त्रिवकराव नानाकडे होती त्यास श्रीमंत राजश्री पंतप्रधान स्वामीनी श्रीमंत राजश्री महादाजी सिंदे यासि आज्ञा केली की सरकारी हिंसा जप्ती करणे त्याजवरून जप्ती राजश्री सिंदे याणी तुम्हाकडे सांगितली त्याउपरी श्रीमंत गजश्री पंतप्रधान स्वामीची पत्रे राजश्री सिंदे याची आणिली की जप्ती हिंसा सरकारी करावयासि सांगितला होता तो त्याजकडे बहाल करार केला असे. त्यास त्याजकडे सुदामतप्रमाणे आमल देणे आणि जप्तीमुळे वसूल वेतला असेल. तो माघारे देणे. त्या उपरी राजश्री सिंदे याचे पत्र तुम्हा आणिले त्यास प्रो मजकुरी तिसरे हिंसे याचा आमल सुदामतप्रमाणे तुम्ही आम्हास दिल्या जप्तीचा आमल तिसरे हिंशाचा झाळ १८ जोबल ताळ १ जिल्काद सुमा सळास सितेन संवत १८१९ येकुण माहे पांज रोज चवदापावेतो तुम्हाकडे होता त्यास समाईक वसूल नगदी व गळा खरीफ रबी जमा जाहला पैकी तिसरा हिंसा नगदी व गळा बरहुकुम कचा हिंसेव कुल झाइन तुम्हाकडून आम्ही भरुन पावलो. जप्तीच्या हिंसेबाचा धड्या तुम्हाकडे राहिला नाही. तिसरे हिंसेचा हिंसेव भरुन पावलो. पुढे आमल छ २ माहे जिल्काद सुमास सळास सितेन जेष्ठ सुध ४ पासून तिसरे हिंसेचा आम्हाकडे करार जाहला असे. बहुत काये लिहिणे हे विनती.

साक्षे त्रिबंक बाबुराव नाा

चिंमणाजी गोविंद कादार.

लेखांक [४१४]

श्री * संवत १८२० ज्येष्ठ शुद्ध ७
[१९ मे १७६३]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
लाछाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी

सेवक सदासिव^{११} बापुजी [फडणीस] साष्टांग नमस्कार विनंती उपर.
येथील कुशल ता * छ ५ माहे जिल्काद मुगा प्रांत नरवर जाणून स्वकीये कुशल लिहित
असिले पाहिजे विशेष. स्वामीकडे दोनतीन पत्रे पाठविली ती पावलीच असतील परंतु
उतर पाठविले नाही. स्वामीनी करार केला त्याजला बहुत दिवस जाले म्हणून कासिद
आजुरदार येथून पाठविला असे तर करारप्रमाणे आकारनाम्याकडील पैज व जालम-
सिंग याजबाबद जैसे येकंदर हुंडी उजनची करून कासिदाबरोबर पाठविली पाहिजे.
येविसी दिवसगत न लावावी. खर्चाची तारांबल आहे यास्तव लिहिंले असे. याउपर
कासिद रिकामा वाटे न लावावा. लिहिल्याप्रमाणे पैजची हुंडी करून पाठविली पाहिजे.
कासिदास गुंता न होय तो अर्थ करावा. फीजचे वर्तमान तर इकडे लावणी होता दिसत
नाहीं. कळावे बहुत काये लिहिणे सूचना लिहिली असे कृपा कीजे हे विनंती

हेच पत्री राजश्री नारवा नाना स्वामीचे सेवेसी नमस्कार. कृपा कीजे हे विनंती.

या पत्रावरून हुंडी पाठविली.

मिा जेष्ठ^{११} वद्य ५ दक्षणी समत १८२०
[३१ मे १७६३]

(२१०) शिंदेसाहीतील फडणीस घराण्याचा हा मूलपुरुष असून त्याचा वध येथे ग्वालेरीस
विद्यमान आहे. तलेगाव डमढेरे येथील हे रूहाणारे असल्यामुळे तलेगावकर असे आडनाव पडले. मात्र
कागदोपत्री फडणीस या नावानेच प्रख्यात झाले. महादजी शिंद्याच्या विश्वासाची जी अनेक माणसे
होती त्यापैकी ही एक व्यक्ती असून तिच्या स्वामीमक्तीचे उज्वल चित्र पुढें मालेत पहावयास मिळेल.
याची जी थोडी पत्रें सापडली ती जमाखर्ची असून राजकारणी नव्हत

(२११) या वर्षी जत्रीत अधिक ज्येष्ठमास मोडकाने दिला आहे तो तसा नसून अधिक
आपाढ पाहिजे असे जे मानूने दर्शविले आहे [चंद्रचूड १ प्रस्तावना ९] ते या पत्राने खरें ठरते. या
विषयी अधिक प्रकाश टाकणारे पत्र पुढें महादजी शिंद्याचे येणार आहे त्यावरून ही गोष्ट अगदी निर्वि-
वाद वाटेल

लेखांक [४१५]

श्रीमार्तंडचैरव.

* संवत् १८२० कार्तिक शुद्ध १

[६ नवबर १७६३]

राजभ्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पोष्ये राघो शकर कृतानेक साा नमस्कार विनती. येथील कुशळ ताा छ * २९ रविलाखर मुा पुणे जाणोन स्वकीये कुशळ लिहित गेले पाहिजे विशेष. कृपा करुन पत्र पाठविले ते उतमसमई पावोन दर्शणातुल्य आनंद जाळा. पत्नी कितेक मजकूर लिहिळा ब्यास उष्यनीस कौटेकरास पांचा लक्षाची ताकीदपत्रे लिहिलें होते परंतु राजेश्री त्रिंबकरावजीच्या जिदीमुळे श्रीमत पाटीलसाहेबी ते कागद फाहून टाकले. तर तूर्त त्या तगाद्याचें प्रयोजन नाही. स्वकीय वर्तमान खर्चाचे वगैरे लिहिलें तें सर्व कळले परंतु प्रौ पाठण येथील मामलत साल मजकुरी दुसऱ्यास सांगितली आहे. सरकारात येवजावी निकड लागली म्हणोन रसदेच्या ऐवजी रुपये घेतले आणि मार्गी नर्मदेतीरी सदा करून दिल्या तेव्हां आम्ही श्रीमंतास बहुता प्रकारें सांगितले. त्यानी उतर दिलें की तुम्हास सूचना न करता आम्ही गफळतीने केले तर काये चिना आहे. चौ महिन्या साल्ही गेल्यातच आहे. पुढें त्याची मामलत त्यांजकडे सांगू. यैसे वचन घेतलें आहे व तुमची फडनिशी सनद करून पाठविली आहे. हिसेबाचा मजकूर लिहिळा की याचे तेव्हा आपणच यावे त्यास मार्गी खर्च बहुत पाहिजे तर येविसी श्रीमंतास निवेदन करून उतर पाठवणे त्यावरून सरकारचे पत्र पाठविले आहे. स्वारी तें प्राती जाल्यावर हिसेव घेउन येणे येविसी सांगणे ते सांगितलेच आहे.

दुसरे पाटीलसाहेब उजेनीहून दरकूच टोक्यापर्यंत आले तो इकडील वर्तमान श्रीमंत राजेश्री पंतप्रधान यानी कनाटकची स्वारी करून गंगातिरी राक्षसमुवनावर भोगलाची फौज बुडविली. चिठळ सुंदर याचा सिरच्छेद केला. भोगळ पळून औरंगाबादेत गेला. त्यामागे शैत्यसहवर्तमान गंगा उतरून शहराभोवता शह देउन पेशजीचा सुलुक व नवी जहागीर घेउन खाशी स्वारी टोक्यास आली. तेथे श्रीमंताच्या व सर्व सरदारांच्या मेटी जाहल्या. समागमेच पुण्यास आले. तों राघोजी थोरात हिंदुस्तानावून राजेश्री जनक्रोजी सिंदे याचे नाव आपणास ठेउन तोतया करून पुण्यात आला होता. समागमे तीन हजार फौज होती. त्यास श्रीमंत पुण्यात दाखल होताच त्यास हाजूर बोलाउन कैद केला. त्याची फौज पळाली. राहिली फौज व डेरेदांडे लुटून सरकारात नेले. तो

कैदेत आहे. श्रीमंत पाटीलबाबास सत्वरच सिरपाव देउन बिदा करणार आहेत. श्रीमंत मल्हारराव [होळकर] व नारो शंकर घरास गेले आहेत. त्याची रवानगी हिंदुस्था[ना]त जाली आहे. त्याही फौजा सत्वरच त्या प्रांतास येतील. त्या प्रांतीचे राजकी माधोसिंगाची फौज रणथंबोराकडे आली होती ते अलीकडे साधांत वृत लेखन करणे.

। तुम्हाविशीं महाराजजीस अखेरामजीस पत्रे लीा [कीं] समक्ष सांगितले आसता आद्यापवर लाळाजीचा गौर न केला म्हणोन पत्रे पाा आहेत पाटणाविशीं श्रीमंतास बहुत संकोचविले परंतु रुये पंचवीस हजार रुद्राजी खडेरायाने दिले. याजला निकड म्हणोन हे कर्म आम्हास न कळत जाले. सनदा नर्मदातिरी जाहल्या यास्तव आम्हास कळले नाही. आम्ही त्यासमई लस्करात नहोतो यामुळे गफळत जाली. आता श्रीमंताचे वचन दडतर घेतले आहे की पुढील वर्षापासून मामलत त्याजकडे सांगू. तूर्त श्रीमंत पाटीलबाबा पुणियात आहेत. याजला आठापंधरा दिवसानी आज्ञा जालियावर श्रीगोंद्यास जाणार. तदनंतर त्या प्रांती येणार. आपण तेथे राा महाराजजीस अखेरामजीस पत्रे पाा ते देउन काही बंदोबस्त जाला तर करून घेणे. हे येथून निघाले म्हणजी तुम्ही उजनीस येउन याजला मेटणे म्हणजी सर्व बंदोबस्त घडोन येईल. गुलराजाची [वकील अबदाली] वरात तुम्हावर आहे पाटणचे येवजी त्यास मामलत निघाली याजवर येवज कुठून बाल. जिकडे मामलत तिकडे वरात लागेल. येथील मर्जी कीं हेही रुपये त्यानी द्यावे. गणोजीबाबाची कारस्तानी परंतु तुम्ही न देणे. इकडेही प्रजन्य नाही. खरीफ गेले. रबीची आशा नाही. श्रीमंताची तुम्हावर पूर्ण दया परंतु कारभारियानी आपल्या स्वार्थास घालविले. अस्तु. तूर्त उपाये नाही. ही मजलस तूर्त येसीच आहे. लिहावे येसे नाही. श्रीकृपेने तुम्ही उजनीस आलिया मनोदयानरूप सर्व कार्य होतील. चिंता न करणे. कळले पाा. बहुत काय लिहिणे कृपालोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखाक [४१६]

श्रीगजानन • संवत १८२० कार्तिक वद्य ४

[२४ नवबर १७६३]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजी बलाल गोसावी यांसि.

सेवक विश्वासराव लक्ष्मण [विचुरकर] साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील क्षेम ताा छ * १८ जमादिलावलपावेतो मुा किले करेरा कुशल जाणून स्वकीय लिहिणे. बहुता दिवसा स्मरणपूर्वक पत्र पाठविले ते पावोन समाधान जाले. श्रीमंत राजश्री

भाउसाहेबाचे^{११} आगमन जाले याचे लिहिले ते प्रमाणच आहे. आश्विन वद्य २ रविवारी किले मजकुरास रा चिमणाजीपंतास पाठउन आणिले. समारंभ खुशालीचा जितका करावयाचा तो केला आणि करीतच असो. रा गोविंद सामराज [शिरवळकर] यानी हाती येक व घोडे नजर केले. धोंडो पदमाजी दिा सटवाजी जाधवगव आले. रा नारो रघुनाथ शूहाडोरेकर वगैरे लहानमोठे ज्यानी येकिले ते आले. मेटी जाहल्या. पागा वगैरे सरंजाम जयत चालिल. फौजाही जमा करितात, तीनचार सहश्र जमा जाले. आणीक येतात आस ठेवितात. रा गणेश संयाजी [खांडेकर] व रा काशी नरसिंह वगैरे दोचौ दिवशी येणार. सारांश फौजेचा थाट यथेच्छ होत जातो. तुम्हास कळावे. जरकरिता तुमचे राजे यास व आमात्यास श्रेह संपादन अगा बांधणे तरी खर्चास व नजर हतीघोडे व सेवेसी अद्वैरामजी सारखाः मातबर माणूस येउन प्रसंग राखावा. कृपा संपादावी [हें] योग्य असे. यावर राजे कारमारी शहाणे माणूस दूरंदेश आहेत उत्तम जाणतील ते करतील. विस्तार कशास लिहावा. बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

सो पाो चिमणाजी वामन साा नमस्कार विनंती उपरी. ळाा परिसेन श्रीमताचे मेटीस संस्थाणिकास समारंभे आपून सन्मान केलिया कृपेस पात्र आनायासे होतील. बहुत काये लिहिणे प्रतापसूर्य उदयास पावला. येसे समयी सेवा केली वाया जाणार नाही. तुम्ही कृपा करिता म्हणून ळाा असे हे विनंती. श्रीमंतानी कार्तिक वद्य ४ गुरुवारी पोषाक केला. स्वारी हतीची केली. नजरा सर्वांनी केल्या. तुम्हास कळावे म्हणोन ळाा. तुमच्या हरकारेयानी चरित्र पाहिले [तें] सांगतील.

केखांक [४१७]

श्रीराम * १८२० कार्तिक वद्य १३

[२ विसवर १७६३]

राजश्री लालाजी वास्तव्य कोटे गोसावी यांसी

अखडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य स्तोा गणोजी कदम रामराम विनंती उपरी. येधील क्षेम ताा कार्तिक * वद्य १३ त्रयोदसीपर्यंत यथास्थित असो विशेष. तुम्ही पत्रे पाठविली ते पावली. साकल्य आर्थ ध्यानास आला. पाटणची मामळतीचा प्रकार

(२१२) हा लक्ष्मण शकर विचरकराचा पुत्र असून नारो शकराचा पुतण्या होय १७६१ च्या अती तो राजबहादराच्या वतीने उत्तरेकडे आला [पिद २९ ले ३०, ३३] पानिपतावर भाऊसाहेब कामास आले तेव्हा हा तोतया निर्माण झाला हे खूळ काय आहे याचा ठाव लावण्यासाठी 'भाउसाहेबा बरोबर विचुरकराचे दिवाण चिमणाजी वामन व विठलपत बकसी त्यास ओळखावयासी पाठविले असता' त्या दोघास परिक्षा होऊं नये आणि विस्वासरावही त्याला कसा भाळला याचे नवल वाटते

लिया तो कल्ला. यैसियास तुम्हाकडून मामळत तगीर करावी असा प्रकार नव्हता परंतु तो प्रसंग तैसाच होता. रा रुद्राजी खंडेराव सनदेप्रो वर्ततील. तुम्ही चार महिने निश्चित बसावे. चडू महिनेयानी स्वारी हिंदुस्थानात होईल त्या प्रो ते आल्यावरी तुमचा बंदोबस्त करावयाचे रीतीने करून दिल्या जाईल. ताकीदपत्राविसी ल्या तरी राजश्री महादजी शिंदे वीढास गेले. त्यासि पंधरा रोज लागतील याजकरिता ताकिदी न आल्या. वरकड मजकूर येजमान पुणियास गेले. श्रीमंत पशवे याणी बहुमान उतम रीतीने दिल्या. तोतया निर्माण जाला तो खोटा. आखेरसालपर्यंत व फौजा त्या प्रांती येतील. सर्व मनोदयानरूप घडोन येईल. वरचेवरी पत्र पाठवीत जावे. उतरच लिहिणे हे विनंती.

आपले रुपये ९०० नवसे तुम्हाकडे [येणे] ढागिणे करविले ते लजनीस संभाजी काळे [याज]पासी पावते करणे व महाराव याजलाही रामराम सांगणे व अखेरामजीस रामराम सांगणे. हिंदुस्थानाकडील वर्तमान वरचेवरी लिहित जाणे.

लेखांक [४१८]

श्री

[दिसबर १७६३]

राजश्री लालाजीपंत गोसावी यांसि.

अखंडितलक्ष्मीआळंकृत राजमान्य श्री मंताजी बाबले दंडवत विनंती उपरी. यथील कुशल जाणून स्वकीय कुशल लेखन करीत अपिले पाहिजे. यानंतरी तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले. येजमानानी मामळा दूर करून राजेश्री रुद्राजीपत यासि सांगतली कमाविसी पाटणचा मार्गाची दस्तके सरकारची पाठवा आम्ही मेटीस येतो म्हणोन ल्या त्याजवरून कळले. यैसियास तुमचा रुपये सरकारात पेसजीपासून गुतला आसेल तोही खराच आहे. त्यास तुम्ही यावयाचा मजकूर ल्या तर सांप्रत तुम्ही वाटखर्च वगरे करून देशास यावे नाहक खर्चाखाली यावे हे आमच्या ब्यानास येत नाही याजकरिता तुम्ही त्या प्रांतीच तक्रार राहाणे. इकडून देशीहून फौजाही त्या प्रातास सत्तरीच येणार आमची तुमची मेटा जालियाउपरी सर्व गोष्टीचा बंदोबस्त करून दिल्या जाईल. तुमचेविसी साहित्यास आतर होणार नाही. वडूत काय लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

[पिद १९ ले १६] हे पत्र महत्वाचे अमून तोतयाचे कारस्थानात याचे अग पूर्ण होते याची ही कबुलीच समजली पाहिजे भूमगड मुकाजी होळकरापुढे तोतयाने आपली जबाानी दिली आहे ती वाचणीय होय [पिद १९ ले १९]

[विसवर १७६३]

राजश्रियांविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजीबाबां स्वामीचे सेवेसी

पोष्य राधो शकर कृतानेक साा नमस्कार विनंती. येथील कुशल ताा मार्गेश्वर * शुभ मुकाम श्रीगोंदे जाणून स्वकीये कुशल लखन किरित असिले पाहिजे विशेष. अपले पत्र अन्ने त सुसमई पावोन लखनान्वये दरषनवत अनद जाला. तर येसेच सदोदित पत्र प्रेषून मोदवीत असिले पाहिजे. पत्री पाटण रुद्राजीपंतास दिल्ली स्थानी कितेका प्रकारचे तुम्हास उपद्रव दिले फडनिसीविषई व द्विषोवाकितोत्राविषई व गिळज्याची वरात होती त्याजविषई दिले म्हणोन तपसीलवार वर्तमान लिहिले ते कळले. येजमान गुरुदरषणास^{२१३} वीडास गेले होते ते त्रिती[ये]स येथ दाखल जालेउपर तुमचे कागद येजमानास नेउन दिले. वर्तमान सर्व तपसीलवार निवेदन केले व पत्रीही लिहिले होते ते समई राधोबा पोतनीस व राधोबा वक्षी व चितोपंततात्या [वळे] येसी सर्व मंडळी होती. यजमानाची पत्रे रुद्राजीबाबास की याची फडनिसीची असामी पहिलेपासून आहे व दप्तरही लिहितात यांचे काम याचे हातेच घेणे व यानी का साळ मजकुरी काये वसूल केला आहे तो रजुवात घेउन नेमणुकेप्रमाणे खर्च मुजरा देणे. याची वस्तभाव तेथे आहे त्याजला उपद्रव न देणें याचप्रमाणे निक्षुण ताकीद लिहिली आहे. तुम्ही लिहिले होते की येक वाटेच दस्तक पाठवणे व माहाराव [व] अखेरामजीस यजमानाचे पत्र याजप्रमाणे पाठवणे की मशारनिलें अम्हाकडें येत आहेत तर याजला कोणी साड्ढकार अडवितील त्याजला ताकीद करुन मशारनिलेस अम्हाकडे पाठवणे म्हणजे आम्ही तेथ येउ. त्यास हेही वर्तमान निवेदन केले त्याजवर अज्ञा केली जे अम्हीच दोती महिन्या उजनीस येउ तेव्हा येतील. अल्यावर त्याच्या मनोदयानरुप जे होणे ते होईल. याजप्रमाणे अज्ञा केली तर येजमानही उजनीस लवकरच येतील तोवर तुम्ही तेथच राहाणे. येक पत्र माहारावजीस व

(२१३) 'पूर्वपानिपतीय शिदेशाही' हा स्वतंत्र लेख मालेत दुसऱ्या भागात आला आहे त्यात महादजी जिंदे व मनसूरशाह याचा परस्पर सवध दाखविणारे अनेक उतारे दिले आहेत त्यापैकी पहिला उतारा या पत्रातील होय हें वाचकाच्या सहज ध्यानी येईल आणि आजवर सदिग्ध असलेले गुप्तशिष्यत्वाचे हे नाते आता स्पष्ट होईल वरील लेख कित्येकास आवडला नाही तो शाहाजीच्या वसजास किंवा शिष्यास नव्हे पण मुसलमानी शाहीचा डका वाजविणाऱ्या भक्तास लागला त्यात श्रोवण्या सारखे काहीच नसता अनेक निनावी पत्रें येऊन अन्य स्थानेही वरेंच प्रसाद झाले तेही सोळव्यास अद्यत कारण झाले ही गोष्ट वाचकास विदित असावी म्हणून केवळ उल्लेख केला आहे

अखेरामजीस याजप्रमाणे श्रीमंत यजमानसाहेबाची पत्रे लिहिविल्यात की लालाजी बलाळ तुम्हापासी अहेत त्याच्या खर्चावेचाविषई किंतकदा तुम्हास लेखन केले व रुबरुही सांगितले होत तर त्याचा राजीनामा करून पाठवणे. तुमचा अमचा स्नेह आहे तर ज्या गोष्टीने श्रेहात अंतर न पडे ते करणे. येसे लिहिवले अहे ती पत्रे पावतील.

राजकी वर्तमान तर श्रीमंत दादासाहेब [भट] तर अद्यापि पुण्यातच अहेत अविध औरंगाबादेसच अहे. त्याचे डेरे विजापुराकडे जावयासी जाले अहेत. श्रीमंत पंतप्रधान माधवरावजी करनाट प्रांती जाणार म्हणोन वदंता आहे. पुढें राजश्री गोपाळ गोविंद याजळा विदा केले आहे सबब जे हैदरनाईकाने करनाटक प्रांतीची ठाणी उठविली कुण्यातीरपर्यंत याजकरता व श्रीमंत महारराज सुभेदार याजळा व नारो शंकर व चिठळ सिवदेव याजळा हिंदुस्थान प्रांती विदा केले अहे. सत्वरच दोती महिन्यात तिकडे येतील, आपले येजमानास हाळ दोन दिवसाची डीळ फौज ठेवायासी वगैरे बंदोबस्तास लागतील. यांजळाही ते प्रांती यावयाची जळदी अहे. फौज ठेविल्याउपर येतील. † तुर्त पैसा संप्रही नाही. फौजा तर ठेविले पाहिजेत यास्तव गुता असे. श्रीमंत प्रधानपंताची कृपा आपले येजमानावर आहे परंतु ज[पै]सेखाळी सरदारी याजमुळे आदाप सरदारी वंदोवस्त नाही. चिंतोबा तात्या [वळे] तुर्त येथेच आहेत. याचा भारआभार त्याजवर आहे. त्यानी जाखुमचे कर्म आपल्यावर केले नाही. पुढे हिंमतही पडत नाही. पाहावे. निवडळ तै मागून लिहू. आपणाविषई मंडळीस श्रीमंतास निषेध कर्तव्यात कमी न केळी. आमलात येईल ते खरे. आम्ही सर्व प्रकारे आपले कुटुंबी सेवक असो दुसरा अर्थ न जाणावा. सर्वदा पत्र प्रेशनी आनंदवीत असावे. सरकारची उत्तरे आपले लीाप्राो पाा आहेत. हे विनंती.

† हे पाा राजश्री नाना स्वामीस साा नमस्कार विनंती. लिखितार्थ परिसोन कृपा निरंतर करावी. आम्ही सर्व प्रकारे सेवक घरचे आहेत. दुसरा अर्थ किमपि न जाणावा. श्रीमंताची कृपा आहे. आम्हीही समयोचित विनंती घरचेवर करीतच आहेत. जे सर्व प्रकारे ते ग्रहस्त बुडाले आहेत. राा वाजीराव व राघोबा पांतनीस याजळाही फजित केले जे तुम्ही लालाजीसी वचेन बरेच पाळले. हा कृतोपकार त्याजवर उतम केळा. त्यासि ते म्हणाले आमचा उपाये नाही. जेव्हा उजेनीहून निघतेसमई केवळच नाहलाज जाला आणि काम न सरकता देखिले तेव्हा सुकेल्यास वळचन पेढिली जैसे जाले. यैसी भाषण जाली कळावे. आताही तुमची मामलत तुम्हाकडेच ईश्वरसतेकरून होईल आणि यैसेकरिता त्या ग्रहस्ताची हमीही राहिली तरी तुम्हाकडून वसूल करून देवितील.

तुम्हावर श्रीमंताची पूर्ण ममता आहे यधीविषई संशये किमपि न जाणावा. कळूळ पाहिजे. बद्धत काय लिहिणे कृपालोभ कीजे हे विनंती.

राजश्री राधोबादादास साा नमस्कार. राजश्री गदाराम सााहानीस साा रामराम. स्वामीचे सेवेसी केशव सामराज कृतानेक साा नमस्कार विनंती. लिखितार्थ परिसोन कृपा निरंतर करावी. हळकारियासि सरकारकार्याकरिता विलंब जागळ यासि रागास न यावे. हे विनंती. बापुचे पत्र सोपारास अगत्यरूप पाठउन हळकारे येतील जातीळ त्यासमागमे उतर पाठवावे

लेखांक [४२०]

श्री

* संवत १८२० पौष शुद्ध १
[४ जनवरी १७६४]

श्रीमंत राजश्री रामाजी अनंत दामुळकर स्वामीचे सेवेसी.

सेवक सुखराम मोदी निा सिदे रामराम विनती उपरी. ल्याहावया कारन येसिजे. तुम्हाकडे आमची उचापत होती. राजश्री दत्ताजीपाटीळ [शिंदे] दिल्लीवर पडले त्यासमईच्या हिसेबाची बाकी राहिली हाती व कोटपुतलीपासून बुनग रवान उजनीस आळ त्या हिसेबाची बाकी हिसेबाची रजुवात राजश्री लक्ष्मणपंत दाजी [वैद्य] साा तुम्हाकडे बेवीसे पच्यानव २२९५ साा बाकी राहिले होते ते साा आम्ही पुन्याचे मुकामी भरून पावळो हास्ते राजेश्री आपाजीराव राम दामुळकर. या हिसेबामधें तुमचे कळम आम्हाकडे जा[स्त] जागळे तर आम्ही व्याजसुधा भरून देउ. बद्धत काय लिहिने हे विज्ञापना मिति सके १६८५ सुभानु नाम सबळरे पैस सुध १ प्रतिपदा. सुभा आरबा सितईन मया व आळफ. छ * २९ जमादिलाखर. हास्ताक्षर मळार गोविंद गुनभरित कसवे पेन.

५ लीषतंगं सुषराम मोदी वूपर लीषो सही. [हिंदीत आहे]

लेखांक [४२१]

श्री

[जनवरी १७६४]

राजश्रियाचिराजित राजमान्य राजश्री
लालाजीबावा स्वामीचे सेवेसी.

पोष्य राधो शंकर कृतानेक साा नमस्कार विनंती. येथील कुण्डल ताा पौष * शुध पर्यंत मुकाम श्रीगोंदे जाणून स्वकीये कुशळ लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. आपली पत्रे कार्तिक वद्य १०चे मितिचे व येक सप्तमीचे मितिचे आले ते सुसमई पाउन लखनार्थ

सर्व वि[दित जा]ला. पत्री लखन केले की फडनिसीची सनद न पावली हलकारियानी मात्र मुखजबानी सा[गि]तले की धर्मरावजीचे [गळगळेकर] कागदात घातले परंतु [अ]द्यापि सनद पावली नाही म्हणोन लिहिले × × पावल्याचे प्रत्योतर पाठवणे व पुर्वील × × रुदाजीपंताचा मजकूर लिहिला होता त्यास मशारनिलेस सरकारचे ताकीदपत्र व महारावजीस व अखेरामास सरकारची पत्रे की राजश्री लालाजी बलाळ तेथ आहेत याच्या खर्चाची बहुत तंगचाई जाहिर जाली आहे तर हमेशा पावत होते परंतु या तीर्था वर्षात तुमच्या आमच्या स्नेहाचे सत्र व मुलुक पाई[माली]के सत्र व न पोहण्या सो अब पत्र पावताच मशारनिलेची खातरजमा करून राजीनामा लहून पाठवणे याजप्रमाणे पत्रे पाठविली आहेत. ती पावतील. आपण देसी यावयाविषई दोनतीनदा लेखन केले. हे वर्तमान सर्व अम्ही येजमान स्वामीचे कानावर घातले व तुमचे पत्रीही लखन केले होते उपर येजमानास या गोंडीचा संकाच बहुत आहे. म्हणाले जे आम्ही विन्हाअपराध त्याची मामलत काढली आणि त्याजला येथे बोलावावे हे उचित नाही. म्हणाले जे तुम्हीही त्याजला लखन करणे की आम्ही ते प्रांती लौकरच येउ. आल्याउपर तुमचे मनोदयानरुप जे होंगे ते होईल व या संकोचाकरिता दस्तकाची परवानगी न रिह्नी. तर यजमान स्वामीची मर्जी याजप्रमाणे आहे की अम्ही उजनीत येउं तोपर्यंत तेथचा राहाणे. तेथ आल्याउपर तुम्हीही येणे. याजप्रमाणे प्रकार आहे तुम्हास कळावे. तर तुम्ही येजमान ते प्रां [ते] येयत तोपर्यंत तेथ राहावे. जरकरिता यावयाचाच प्रकार उत्तम दिसोन येत असेल तर तेथील बंदोबस्त करून मग देशास येणे. स्थल मोकळे सोडून न येणे व राजश्री गणोजी कदम म्हणत होते की लालाजीकडे नानत्यावा हवाल्याचे रुपये नवसे आहेत ते आम्हास पावले नाहीत तर याचा प्रकार काये तो लेहून पाठवणे.

येथील राजकी वर्तमान तर सरदारीची दिवाणीगिरी नारो शंकराचे तर्फेने अवचितरावजी[स] जाली. त्रिंबकरावजी तगीर जाले. सरकारात द्वयाची बहुत जास्ती आहे तो तपसील कोठवर लेहावा. हाल नवी फैज ठेवणे व श्रीमंत पंतप्रधान स्वामीस चार लक्ष रुपये देण व कैलासवासी पाटीलसाहेवाचे लेकीचे लग्न करणे इतका खर्च आहे आणि तरदद तर किमपिही अद्यापि दिसत नाही. अवचितरावजी नवे दिवाणजी जाले आहेत त्याणी याजप्रमाणे भारूळ घातले आहे की तुमचे जुने फडणीस पोतनीस बक्षी व पागे यानी सरदारीचे डौल चालवावे नाही तर फडनीस पोतनीस पागे बक्षी मुशुमदार नवे मी करितो. ते डौल चालवितील. मुजमुवर व फडनिसीवर विष्णु महादेव [गदरे]

पांच लक्ष रुपये कर्ज देतात व बक्षीगिरीवर दोन लक्ष रुपये गंगोबातात्याचा पुतण्या देत आहे व रावजी म्हणतात की आम्ही पांचपर्यंत कर्ज मिळउन देऊ याप्रमाणे भारूड दाखवितात. ये[ज]मानाचे चिंतास गोष्ट पुरती येत नाही की जरकरता याज प्रमाणे जाले तर सर्व कारभार अवचितरावजीकडे पडेल अम्ही सरदार मात्र नावाचे राहू. यानी फडनीस व पोतनीस याजला म्हणतात की तुम्ही सरदारीचे ढील चालवणे, याजउपर त्याणी प्रत्येतर याजप्रमाणे दिले की आम्ही पूर्वीपासून ज्याजप्रमाणे करीत अजे अहोत त्याजप्रमाणे अज्ञा कराल तर चाकरीस हाजर आहेत, यजमानाचे मानस की याजला काही टक्कावे जैसे आहे, पुढे ज्याजप्रमाणे होईल ते लहून पाठड. राजश्री बाजी नरसी यानी येक साहूकार विष्णुपंत राणीचा दिवाण आहे त्याने जानोजी भासल्यास तीस लक्ष रुपये दिले हाने त्याजला आणनार आहेत. आल्यावर कोण्या प्रकारे तरवूद होईल ते लहून पाठउं. श्रीमंत राजश्री पंतप्रधान माधवराउजीचे डेरे बाहेर आज महिना होत आला आहे कर्नाटक प्रांता जाणार म्हणून अफवा बहुत आहे व जैसे येकिल्यात आले की हेदरनाईक माधारा फिरोन गेला म्हणोन येकिले आहे व श्रीमंत राजश्री दादासाहेब तुळपुरास आले होते नासिकास जावयासि ते माधारे पुण्यास गेले म्हणोन येकतो. श्रीमंत सुभेदाराची व नारो शकर व विठळ शिवदेव [विचुरकर] याची रवानगी हिंदुस्तानात जावयाची जाली होती परंतु सुभेदाराचेथें त्याचे नातीचे लग्न आहे याजकरिता गुंता जाला आहे. जाल्याउपरी तेही लौकरच हिंदुस्तान प्रातात येतील. मागून आपलंही यंजमान येतील. कळळ पाहिजे. हमेशा तिकडील जेपुर प्रांतीचे वगैरे जे वर्तमान वर्तल ते लहून पाठवीत जावे.

† राा जालमसिंगाचा गांव ना[न]ताबा ताकीद रुद्राजीपतास पाो गुदस्ताप्रमाणे जालमसिंगाचा आमल चालवणे दिकत न करणे म्हणोन पत्र पाा [ते] पावेल. त्याजकडे गणोजी कदम याचे रुपये आहेत म्हणोन म्हणत होते. त्यास ताकीद करून वसूल वेणे अगर कैसे आहे हे उतर पाा. वरकळ साखांत वर्त[मान] व ताकीदी रुद्राजीपतास पाा आहेत. श्रीमंतास पूर्वी सूचना केली की ते लटकीलाडी लिहितील यास्तव संकोच लालाजीस फार आहे. त्याजवर म्हणाले लालाजी[ची] गैरवाजबी वर्तणूक नाही. आम्ही जाणतो तो लिहिल तर लबाड पडळ. तुम्हावर कृपा तर विशष दिसती परंतु वारवार आम्ही श्रीमंतासच संकोचवितो की फार अयुक्त केले [कीं] पाटण त्याचे काढले. त्याजवर कारभारियास म्हणतात अयुक्त केले. कारभारी म्हणतात आमची आश्रु लोक घेत होते म्हणोन

धुकच्यान वलचण वसली यैसा प्रकार. सारांश उजनीस आलिया आपण खामखा यावे. श्रीकृपेने मनोदयानरुप सर्व घडोन येईल. कितेक उपरोध लिहिले तर लाळाजीसाहेब आम्ही सर्व प्रकारे तुमच्या कुटुंबांतर्गत आसो. कैलासवासी राा [वाळाजी]वावासा जैसे तुम्ही तैसे आम्ही होतो. स्वामी कृपा केली तदनरुप आपण दया करुन सेवकच जाणता येतदविषई म्या उपरोध लिहावा यैसा नाही. मनोमन साक्ष आसे. दुसरा विचार न जाणावा. इतका प्रकार न होता परतु मी समयासि नहोतो म्हणोन जाळा जालि[या]स उपाय नाही. कळले पा. जरकरिता येणेच उचिन जाणाल तर श्रीमंत तर परवानगी देत नाईत. आपणास सल उतम हाच की भ्रम दूर करावा तर तेथील बंदोवस्त करुन देवदर्शनाच्या निमित्त्या सर्वांची आज्ञा मागून प्रसंगास यावे म्हणजी याजवर बोन उतम प्रकारे पडून कायल आहेत पुढे विशेष होतील. प्रसंगी आसलिया धधियाची सोयसाय दृष्टिस पडल ते कली नाईल. कळल पा. राजकीस्वकीये वर्त[मान] सर्वदा लखनी तोषवीत आसावे. बहुत काय लिला कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

हे राा नाना स्वामीस साा नमस्कार. लिलाप्रो कृपालोम वर्षमान कीजे. सेवक कुटुंबांतर्गत जाणावे. द्विडत किमपि न जाणावे. कृपालोम असो दीजे हे विनंती.

होा राजश्री रात्रोवादादास साा नमस्कार. लिलाप्रो लोम कीजे.

होा साहाजी श्री सदारामजी हे असिर्वाद वंचना. कृपा रनेह राखो छो तीसे नादा राखोगा. म्हाके साहाजी उप्रात क्यै मीने छै. आठा लाईक संदेव कृपा कर कागद पत्र कामकाज लिषीगा.

लेखांक [४२२]

श्री

[फरवरी १७६४]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजीवावा स्वामीचे सेवेसी.

पोष्ये राधो शंकर कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा माध * वध मुकाम श्रीगोडे जाणूण स्वकीये कुशल लखन करीत गेले पाहिजे विशेष. आपण पत्र पाठविले ते पावले लिहिला अर्थ सर्व ध्यानास आला. पत्री लिहिले होते की सरकारचे पत्र राा रुद्राजी खंडेराळ याजला होते ते लानला दाखविलेउपर मशारनिलेनी अतालपाताल येक केले. बोलिले जे पत्र मघूनच आणिले यैसे कितेक प्रकारे

बोळो लागले त्याजवर आजाजीपंत वगैरे दोघी प्रहस्ताची पत्रेही ही पाठविली परंतु पंत मजकुराचे मर्जास न आले तेव्हा स्वार्प्यादे पाठवून पाणी बंद केले तेव्हा ते खानाजगीवर आले. तेथ धर्मरावजी [गळगळेकर] होते त्यांनी मध्यस्ती पडोन कनिया चुकविला. ते समई सिवंदी मात्र मुजरा दिल्ली व कमाविसीचा मुशाहिरा मुजरा न दिव्हा यैसे तपसीले वर्तमान लखन केले ते कळले व राजकी वगैरे वर्तमान लिहिले तेही विदित जाले. राजश्री रुद्राजीपंताचे वर्तमान सर्व येजमान स्वामीस निवेदिले व आपले पत्रीही लखन होते ते अक्षरशाह भ्रवण करविले व राजश्री रुद्राजी खंडेराउ याजला सरकारचे ताकीदपत्र तेथून याजप्रमाणे पाठविले आहे की राजश्री लाळाजी बळाळ याजविषई पूर्वी तुम्हास ताकीद लिहिली होती की प्रागे पाटण येथील सिवंदीखर्च वगैरे तुमचा अमल जाहत्या त्यासारखे पूर्वील जो हिगोवाचे रुजुने होईल तो त्याजला मुजरा देणे म्हणो[न] लिहिले होत तर तुम्ही सिवंदीखर्च मात्र दिव्हा कमाविसीची वेतन मुजरा न दिव्हा म्हणोन विदित जाले तर तुमचा अमल जाला त्या तारखेचे पूर्वी त्याचे वतनाचे जे होईल ते मुजरा देणे व त्याचे फडनिसीची आसामी पूर्वीपासून तेथील आहे तर फडनिसी काम याचे हासे घेणे. याजप्रमाणे निखून ताकीदपत्रे पाठविली आहेत ती पावतील.

येथील प्रकार तर पूर्वील पत्री आपणास लिहिला त्याजवरून कळलाच असेल. त्याजवर अद्यापि फौज ठेवावयाची तरतूद काही दिवोन येत नाही. राजश्री नारो शंकर राजे वहादर श्रीमंत पंतप्रधान भाषवरावजीकडे जावयासि येच मार्गे गेले. येथे दोनतीन मुकाम केले. आपले येजमान सामोर जाउन घेउन आले. नानानीही येथील वंदोबस्तात मन घातले. प्रथमतः आपले येजमानानी फडनीस पोतनीस वगैरे सर्व मुत्सदी याजला विचारिले जे तुमच्याने डौलं चालवत असल तर अम्ही नारो शंकर याजला काही म्हणत नाही. जर न चालत असल तर तसे असल मग आम्हाकडे काही शब्द नाही. अम्ही तो नाबिलाज जालो आहोच. हाही पेशव्यास चार लक्ष रुपये देणे ते तरी कर्ब काढून वारा. मग फौज ठेवावयाचा प्रकार तर ज्या प्रकारे बनेल त्या प्रकारे करून घेऊ. हाही हे × उट मोठी भारी आहे. पेशव्याचे रुपये दिव्हाखेरीज सरदारी येथारिथत राहणे काठिण आहे. याज प्रकारे आपले घरात मनसबा केला तेव्हा येथील पूर्वील मुत्सदीयाच्यानी तर हा प्रकार बनोन आला नाही. तेव्हा दुसरे दिवशी नारो शंकराचा व येजमान स्वामीचा येकांत जाहला. येजमान बोळले जे नाना सर्व प्रकारे वढील आपण आम्हास आहेत. आमचे सरदारीचा तर हा प्रकार आणि हल्ली पेशव्या[स] चार लक्ष

रुपये देणे व नालबंदी देउन फौज ठेवणे त्याजलाही दहा लक्ष रुपये पाहिजेत. पेशव्याचे रुपये दिल्यावाचून व फौज ठेविल्यावाचून सरदारीचा बंदोबस्त कोणे प्रकारे राहातो तर तुम्ही आम्हास पंधरा लक्ष रुपये कर्ज घेउन दवणे. अम्ही विजयादशमीपर्यंत तुमचे रुपये फेडू. नाही तर कमानिसदारावर बरात म्हणाल तर बराता देउ. यात आपले घ्यानास येईल त्याजप्रमाणे करावे. यंसे संभाषण जाहले. याचे प्रत्योतर राजश्री गणोजी कदम वंगरे तथ गेले त्याजवळ याजप्रमाणे केले की पूर्वी अम्ही सरदारी उमी केली ते रुपये आचापि थोडबडु[त] बाकीच आहेत यैसे बोलले. तेव्हा नानानी मुढे याजप्रमाणे घातले की फडनिसी पोतनीसी आज सता बक्षी याचा समध वगैरे सर्व हुडे आहेत यद विषई तुम्ही किमपि न बोलावे. आमच्या घ्यानास येईल तैसा सरदारीचा बंदोबस्त करू. महादजीबाबानी आमच्या म्हटल्याप्रमाणे आसावे. यसे मुढे घातले तेव्हा येजमान स्वामीनी तो कबूल केले परंतु नानाचे अंतःकरणात यैसे आले की हली तो याच प्रमाणे कबूल करतील परंतु पुढे याचप्रमाणे चालणार नाही. सबब जे नानाचे राहाणे काहीयेक होत नाही आणि अच्युतरायाच्याने येथील कारभारी दबतात यैसा प्रकार नाही येसे जाणोन नानाही स्तिमीत राहिले. मग नानानी त्रिंशक मल्हार याची रदबदली खा[च]रोदविषई. केली. चाळीस हजार रुपये नजराणा व दोन लाख रुपये रसद घेउन स्वाचरोद त्याजला सांगितली अणि आपण कूच करोन पंतप्रधान स्वामीकडे गेले. नंतर येजमानसाहेबानी येक लक्ष रुपये बाजी नरसिंह व पनास हजार नरहर लक्ष्मण रा यैसे चार लक्ष रुपये पंतप्रधान स्वामीचे वारले. पुढे फौज ठेवणे आहे त्याची तजवीज याप्रमाणे दिसती की ज्याचे पथकाची त्याने संचणी करुन उजनी पर्यंत चालवे मग तेथे सर्वत्रास नालबंदी द्यावी. त्यास या प्रकारास राजश्री बाजीबा व राधोबा पोतनीस व गणोजी कदम तान्हाजी खराबे व रघोजी गाढवे व राधोबा घायेगुडे इतक्याचे संमत आहे परंतु पैशाविन्हा फौज जमा होणे कठिण दिसते. इतकियावर येजमानाचे दैव सबळ दिसते. राजश्री राधोबा पागे याजपासून दीड लक्ष रुपये कर्ज घेतले. बरकडही मुतसथापासून व्याख्याचे मानस. ते पुढे जे होईल ते लहून पाठवीत जाउ. १ वरकड साथांत वर्त[मा]न होत जाईल तैसाविसी लिहित जाउ. सांप्रत री खांनाजी जाषव येथे आले आहेत. त्याची समजाइश जाहली. पूर्ववतप्रगो सरनौबती त्याची त्यानी करावी. त्याचे पथकपागा त्याजकडे सांगावी. तूर्त राा कारभार दिवाण अच्युतरावजी करतात गणोजी कदम तर केवळ गुरुस्थानापन्न आहे. पत्रे अच्युतरावजीसही लि[हि]त जाणे.

अच्युतरावर्ज पात्री तुमचे मेहुणे राा गोपाळराव आहेत. अच्युतरावर्जस ल्याचे आगल्यही विशेषे टिसते. तुमची पत्रे ल्याजळा होती ती देउन उतरे पाा आहेत. रूदाजी-पतानी तुमची नालस विशेषे लिहिली होती ती पत्रे अच्युतरावर्जनी आम्हास दाखविली की तुम्ही ताकिदी ह्याप्रो करिता आणि तेथेळ वर्तमान साधांत हे आहे ल्याजवर ल्याजळा उतम प्रकारे त्याच्या ग्रहस्तपणाची रीत उमजविली. राा गोपाळरावभाउस सांगोन त्याज्या उतर यथास्थित लिहिली आहेत. येक आम्ही होतो दुसरे गोपाळराव भाउ आगेमागे प्रसगी आहेत. आपण चिंता न करावी येजमानाची. वरकळ मजलसची तुम्हावर दयाच आहे. आम्ही तर केवल तुमचे सेवकच कुटुंबांतर्गत असो. येदर्शी सिद्धाचार किमपि नसे. तुमच्या देऱास यावयाविपई आम्ही बहूता प्रकारे म्हटले परंतु गुरुच्या [कदम]व यजमानाच्या चिंतास प्रशस्त नाही की ल्यानी न यावे. आम्ही अन्याये गोष्टी केली लाला-जीसी त्याचा धधा विनापराध काढळा ग्हुणोन सकोचतात. तर तुमची मर्जी खामखा याव-याची आहे तर लाकर येणे. हे श्रीगोंघात कृत वास्तव्य येक मास आहेत. तदनंतर लैकर ल्या प्रति येणार यास्तव लिहिले आसे. तुमची याची गाठ मार्गांत पळवी तर मग देऱास येणे होणार नाही यास्तव लिहिले आसे. चिरंजीव वापुचे पत्र पाा पावल पुन्हा त्याजळा पत्र ल्या आहे [ते] पावते करावे.

श्रीमंत प्रधान मिरजवर आहेत. फांज सातआठपर्यंत आहेत श्रीमंत दादा- [साहेब] नाशक त्रिंबकी आहेत. गोगल औरंगाबादेस आहेत. श्रीमंत सुभेदार फौज-सुधा कूच करुन मजल्दरमजळ हिंदुस्थाना[त] येणार. तुम्ही आपळे साकल्य वर्त[मान] सर्वदा पत्रोपत्रां तोषवीत असावे. बहूत काय लिहिणे कृपालोम असो धावा हे विनंती

होा राजश्र नांना स्वामीस साा नमस्कार. ल्याप्रोो कृपा वर्धमान कीजे. सेवक पदरचे आसो. येदर्शी किमपि दुसरा प्रकार न जाणावा. आम्हां केवल तुमचे आसो. हे विनंती. राा राघोबादादास साा नमस्कार. राा सदारावर्जमजीम असिर्वाद सागावा.

लेखांक [४२३]

श्रीशंकर

* संवत् १८२० माघ वष ९
[२५ फरवरी १७६४]

श्रियासह चिरंजीव विजयीभव राजमान्य राजश्री लालाजीबाबा यासि प्रति गोपाल त्रिंबक कृतानेक आसिर्वाद उपरी. यथील क्षेम ताा माग * बहुळ नवमी मुा श्रीगोंदे जाणून स्वकीये कुशल लिहित जाणे विशेष. बहूता दिवसी स्मरणपूर्वक पत्र पाठविले ते प्रविष्ट होउन भेटीतुल्य हर्ष जाहळा. येसेच निरंतर पत्रव्दारी

तोषवीत जाणे. यानंतर ईकडील दरबार वर्तमान तरी श्रीमंत राजश्री पंतप्रधान क्वार्टरकचे स्वारीस गेले. भिरजेपुढे दोन मजली गेले आहेत. हेदरनाईकाचा वकील आला आहे. बोली ठरेल ती काये पाहावे, श्रीमंत राजश्री दादासाहेब नाशिकास स्नानसंख्या करावयाचे उद्देशे गेले आहेत. राजश्री मल्हारजी होळकर याणी फौज ठेउन हिंदुस्थानात जातात. मालजी होळकर यास फौज देउन खानदेशच्या घाटाखाले रवाना करून आपण जेजुरीस आले होते तेथून कुरकुबास आले. राजश्री पाटीलबाबाही येथून कुरकुबास गेले. उभयेताची भेटीभाषण होउन चांदवडास सुभेदार गेले. तेथून श्रीमंताची भेटी नासिकी घेउन मजलदरमजळ त्या प्रांती येतील. राजश्री पाटीलबाबा फाल्गुण शुध ब्दितीयेस डेरे बाहेर बावे यैसा कारार आहे. पाहावे परंतु फौजेस अद्यापि नालबंदी दिली नाही. द्रव्याचे अनुष्णुप आहे. स्वदेसचे मामलेदार कडून व त्रिंबक मल्हार यासी खाचरोद सांगोन व विष्णु महादेव [गदरे] यांस उ[न्हें]ळ सांगो[न] व कारकूनमंडली फडनीस पोतनीस याजकडून यैसे द्रव्य काही जमा केले. त्यातून सरकारचेच लाख देउन वाकीतून फौज ठेउन त्या प्रांती येणार. आठपंधरा रोज अधिकउणे लागतील परंतु हिंदुस्थानात जातात हा निश्चय आहे. सविस्तर कळवे करिता लिहिले असे. देसी येणार म्हणून तुम्ही लिहिले ते उतम आहे. भेटी होईल. येणे न जाहले तरी त्या प्रांती आम्ही आलेवर भेटी होईल. बरकड सविस्तर लिहिल्याप्रमाणे अवगत जाहले. आमचे वर्तमान तरी हा कालपर्यंत येथे आहो. सगदाराची व दिवाणजीची कृपा मात्र आहे. पुढे ईश्वरइच्छेने घडेल ते खरे. आपण पाटणचा मजकूर लिहिल्या तो कळला. यैसियासि यजमानाची व तुमची भेटी होईल तेसमई पाटणच्या सनदा सिध आहेत. आपण क्षित न करावे. तुम्हावर यजमानाची कृपा आहे. बरकड नवलविशेष ल्याहावेसे नाही. मागा ममत करीत होता त्याहीपेक्षा दिवसेदिवस विशेष करीत जावी. दूर पडलो म्हणून विस्मरण न करावे. बहुत काय लिहिणे लोभ असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [४२४]

श्री

[१ मार्च १७६४] ?

राजश्रीयाविराजित राजमान्य राजश्री

नारोबा नाना स्वामीचे सवसी.

सेवक त्रिंबक नारायेण [विंचुकर] सा नमस्कार विनंती. येथील कुशल माघ १ वद्य १४ चतुर्दसी जाणून स्वानंद लेखन करीत अशिलें पाहिजे विशेष. सांप्रत पत्र येउन

क्षमवृत्त कळत नव्हते यांकरिता चि[त] सापेक्ष होते त्यास हाली कासिदासभाग्ये स्मरणपूर्वक पत्र पाठउन परामर्ष केल्या त्यावरून दर्शनातुल्य संतोष जाहाळ. येसेच निरंतर पत्नी सांभळ करीत असिले पांढिजे यानंतर इकडील वृत्त सर्व यथास्थित असे, अधिकोत्तर ल्याहावेसे नाही. राजकी वृत्त भीमंत पुणेस आहेत. काही फौज कोंकणांत सावनावर^{३४} रवाना केली आहे त्यामुळे कोंकणांत कुडळ प्रांते धामधूम आहे धारण चार रुपये जोनजंले व पांच रुपये गहू हरमरे भाप[व] आहेत. वडूत काय लिहिणें कृपा निरंतर असो द्यावी सर्व मंडली कुशलरूप आहेत हे विनंती.

सेवक धनशाम त्रिंबक साा नमस्कार विनंती. सदेव पत्नी सांभळ करीत असवे तेणेकरून चित संतोष पावेळ. ऋपा करीत जावे हे विनंती.

लेखांक [४२५]

श्रीशंकर

* संवत १८२१ चैत्र वद्य ११

[२६ अप्रेल १७६४]

भ्रियासह चिरंजीव राजश्री नारोवास आशिर्वाद उपरी. ताा च्ये[त्र] * वद्य दशमी सांभ्यवार जाणून स्वकीय लखन करणे विशेष. आजीचे पत्र तुमचे आले औरंगाबादेच्या हुडया चैनरामजीच्या दुकानची साडेअठराचा कतार केला त्यास वीस हजार रुपयेची कतणे. बाकी सामान आहे साडेतरा अडीच हजार येथून उजनीची करवितो. यकून वीस हजार उजनीची वीस हजार औरंगाबादेची यकून चालिस हजार तूर्त पाठवावे. औरंगाबादेच्या हुडीपैकी दोनतीनची चिठी सदरामजीवरी करणे. मुदती दस रोज उजनीच्या घाटवार लिहिणे म्हणजे रूपये उजनीस घेउन जाव हजूर पोहचेल. सत्वर रवानगी करावी लागते तरी सितावी पाठवणे. बहुत काय लिहिणे हे आशिर्वाद.

लेखांक [४२६]

श्रीमार्तंडमैरव

* संवत १८२१ चैत्र वद्य ११

[२६ अप्रेल १७६४] ?

राजभ्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक भगवंतराज शंकर. कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. यथील कुशल ताा चैत्र * वद्य ११ पर्यंत मुा श्रीगोंदे जाणोन स्वकीय कुशल लेखनआज्ञा करीत

(२१४) सावतवाडीकर भोसले याजवर स्वारी केल्याचा हा पहिला लेख होय लेखकाने देशाहून पत्र पाठविले असे मानलें तर वर्ष १७६२ किंवा १७६४ घरावे लागेल आम्ही षोडशे घेतले आहे ते शंकास्पद समजावें

असिले पाहिजे विशेष. येथील वर्तमान तरी मागाहून तपसीलवार छखन करू. तेथे आमळ राा नारो बाळाजी याचे तर्फेचा आळ आहे त्यासि आमळ तुम्ही देणे खटखट न करणे. तुम्ही प्रसंगास आल्यावर येथे जैसी चौघाची वाट होईल तैसी तुमची होईल. कळल पाा. आम्ही तुमच्या कार्येस कमी करणार नाही परंतु हे रुपये पुणियात घौन चुकले. आता उपाये कोणाचाही नाही. पुढे साल आहे यावर तुम्ही प्रसंगास आल्यावर ज होणे त होईल. कळल पाा. बहुत काय लिहिण कृपालोम असो देणे हे विनंती.

‡ स्वामीचे साा केशव सामराज साा नमस्कार विनंती. लीाप्रो^{२१५}
[आता सिवंदी ठेवाल ती आगावर पडल. कोणी यांणी मामलत जाईल. खराब करतील यास]त[व अमल सोडून देण] तुमची पाटणची फडनिसीची सनद घेउन ठेविली आहे. ही मागाहून पाठउन देउ [व तुम्ही त्या गह]स्ता[स लीा होते त्यासी ते काम होता दिसत नाही आणि] द्रव्य पाा आहे हे फसल आणि तुम्ही बु]डाल येसे आहे. अद्यापि तरी ते [गृह]स्त श्रीमंत पाटीलसाहेबसामागमे [गेले आहेत] तोपर्यंत तुमचे उतर आले तरी तुमची पत्रे जैसीतैसी तुम्हाकडे पाठउ. तुमची पत्रे येउन न पोहचली आणि ते येउन पोहचले तर कसे करावे. अम्ही तरी ते माणूस ठेउन घेतले आहे. तुमची सला येईल तर पत्रे त्याची देउ न आली तर न देउ. याचे उतर सत्वर पाा. कळल पाो. हे विनंती. उतर लौकर लौकर पाठवणे. हीळ न करणे. तोवर आम्ही कागज त्याजपासी देत नाही. जर दिले तर रुये घेउन होमकुंडी घालतील. हे विनंती.

तुम्ही चिठ्या पाठविल्या आहेत याच्या पेठा तुम्हापासी आसो देणे. सावकारास सांगावे जे आम्ही सांगू तेव्हा हुंड्या पटवणे. [फडणिसीचे सनदेसही] बहुत [वेल] लागेल व तुम्ही कजिया त्यासी न करणे. अमळ देणे. कळल पाो. बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [४२७]

श्रीमार्तंडभैरव * संवत १८२१ वैशाख शुद्ध ७
[८ मे १७६५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजीबाबा व राा नाना स्वामीचे सेवेसी.

सेवक मंगवंतराउ शंकर कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा वैशाख * शुद्ध ७ पर्यंत मुा श्रीगोंदे जाणोन स्वकीय कुशल लेखनआज्ञा करीत

(२१५) या व पुढील पत्रात कित्येक जागी साकेतिक लिपी असून ती अगवी नवीन आहे. चार वर्षे सतत मनन केल्यानंतर तिचा बोध झाला तो कसांत वाकड्या अक्षरात दाखविळा आहे.

असिले पाहिजे विज्ञाप. कृपा करून पत्र प्रेषिले ते उतमसमई प्रविष्ट होउन लखनान्वय दर्शनवत आनंद जाला. तरी यैसेच निरंतर प्रेषित पत्री तोषवीत जावे. येथील वर्तमान तरी श्रीमंत पाटीलसाहेब जोतिर्लिंगाहून आले. उपरांतिक येथून त्वरा हिंदुस्तानात जावयाची भारी आहे. बाहेरच राहिले गांवापासून दो कोसावर. दरमजळ जातीळ. श्रीमंताची आज्ञा आहे जे श्रीमंत दादासाहेबास भेटून जाऊ नये^{१६} येदविशीं कारकून वगैरे समागमे आहेत. त्यासी हे सत्वरच त्या प्रांतास येतील आणि आपणही अवंतीस दर्शनास येतील. येथील प्रसंग [येसा देखिला मुसाहेबत बालरायानी मागली] पाहिली तेव्हां [इहया परमारे तुम]च्या जासू [दाकहून देविल्या त्यासी त्याणी महाद] जीवावाचेही वचनकथन घेतले जे [यानी याची मामळत यास]च [सागावी] ऐसा सिधांत केला आहे. त्यासी सर्व सविस्तर वर्तमान येदविसीच सेवेसी आणी लखन केले आहे त्यावरून श्रुत होईल. आमच वर्तमान तरी श्रीमंत सुखुबाईची [शिंदे] दिवाणगिरी राा बाजीराउबावानी केली त्याचे तर्फेने आम्हास सांगितली. त्यासि आमचे राहणे येथे जालेमुळे तिकडे येतील. चिरंजीव राजारामभाउ पयकासमागमे लस्करात येईल व चिरंजीव गोविंदराउ सांतामहूस पाठव. बापु सोपारात आहेच. आसि आपणही प्रसंगी आहेत हरयेकविसी साहित्य करतीलच. लिहावे यैसे नाही व आपल्याविसी राजश्री बाजीराउबाबासही बहुता प्रकारे विनंती केली त्यानीही सर्व मान्य केले आपल्या कार्यास गै करणार नाहीत. श्रीमंत पाटीलसाहेबासही विनंती केली. त्यानीही मान्य केले. राजश्री बाळाबाबजीही [गळगळेकर] तुमच्या साहित्यावर आहेत. त्याच्या तीर्थरुपजीनीही [धर्मराव तमाजी] त्यास तुमच्याविषई फार लिहिले आहे. सारांश दरबारी अष्टे प्रहर बाळाराबजी साधनात आहेत. ते तुमच्या कामास चुकणार नाहीत. त्याच बचन घेतले जे कार्य जाहले तर यैवज देणे न कार्य जाल तर ऐवज न देणे यैसे वजन घेतल आहे कलावे. आम्ही तुम्हासिवाय नाही. सर्वस्वे पदरच आसो. कळल पा. बहुत काय लिहिण कृपालोम असो देणे हे विनंती.

स्वामीचे सेवेसी आज्ञाधारक केशव सामराज साा नमस्कार विनंती. लिंगा पो हे विज्ञापना.

(२१६) हे व ले ४१९ ही दोन पत्रे अत्यंत महत्त्वाची असून माघवराव पेशवे व महादजी शिंदे यांचा सवष द्वाब्धिपगारी आहेत इतकेच नव्हे तर विदुरत्वाचा जो कलक महादजी शिंधाच्या माथी कित्येकानी लादला आहे त्याचे कोठें या पत्रानी चांगलेच उलगडू पहाते पेशव्याची ऐक्य बाळगून, सुखुबाईचा कैवार घेऊन दास्यत्वाचा आरोप ठेवून महादजी शिंधाचे उच्चाटन करून सरदारी राघोबाने मालाजीस दिली अशा प्रकारें रचलेले विदुरत्वाचे कुमाड चिकित्सेस किती उतरले याचा विचार भालेरार्हत केला आहे

लेखांक [४२८]

श्रीशंकर

* संवत १८२१ वैशाख शुभ ८
[८ मे १७६४]

आशिर्वाद उपरी. ता वैशाख * शुभ ८ मंगळवार जाणोन स्वकीय लेखन करणे. काली पत्र पाठविलें ते पावळें. विजयध्वजीची पोथी असल व लिहून पाा ते पावळी. वाो ऋष्णाचार्य यांचा पुत्र शेरगडास गेला आहे. आजी उदईक येईल त्याजकडे प्रत स्क्रंध आणखी आहेत ते घेउन पाा तेही लिहिले पाहिजेत. कागद कोरे येथून पाठविले ते जाहले की बाकी किती आहेत ते लिहिणें. नारो बाळाजी आळे. वरात पनास हजार रुपये श्रीमंत पाटीलसाहेबी श्रीमंत पेशवेचे येवजी दिल्ली म्हणू[न] तरी बरे. त्यांचा येवजच पनास हजार होतो. हर साल वेईल त्याने वरात दिली नाही. बरे जेव्हा देईल तेव्हा घेउन, दरबारी ताल राहिल नाही. बरे ईश्वरसता जें होतां होईल ते खरे. देशी हलकरा पाा त्यास आजी दोन मास जाहले. पाव दुखत होता मडगावी पडिला तेथून चिरजीवाने दुसरा हरकारा कागद देउन श्रीगोदेस रवाना केला होता. चिरजीव राघोबा येणार आहेत त्याजबाा जाव येईल. बहुत काये लािा हे आशिर्वाद.

लेखांक [४२९]

श्रीशंकर

* संवत १८२१ जेष्ठ शुद्ध ८
[७ जून १७६४]

आशिर्वाद उपरी. ता जेष्ठ * शुभ ८ गु[रु]वार जाणोन स्वकीय लेखन करणे विशेष. श्रीमंत यजमानाकडे कासिद हुंडिया देउन रवाना केला होता तो काळ बुधवारी आला. यजमानाची पत्रे व चिरंजीवाची पत्रे आली ती पाठविली आहेत. तेथे तुमच्या कार्याचे कागद असतील ते ठेउन घेणे. वरकड कागद पाठउन देणे. जाणजे हे आशिर्वाद.

लेखांक [४३०]

श्री

* संवत १८२२ चैत्र शुद्ध १
[२२ मार्च १७६५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीबाबा स्वामी गोस.

सेवक अभ्युतराव^{११०} गणेश नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणोन स्वकीय लेखन करित जावे विशेष. तुम्ही सरकारात पत्र पाा तेथे लािा की अखेराम व

(२१७) याचे आडनाव कळत नाही. नारो शकराचा तो आप्त असला पाहिजे कारण की 'चिरजीव' असे त्याने याला संबोधिले आहे. प्रतिनिधीची जप्ती करून मुताळकी नारो शकरास सांगितली तेव्हा ते काम हाच त्याच्या वतीने करित असे. पुढे २५ नवंबर १७६३ रोजी तो शिवाकडे आला.

जालमसिंग याणी इकडील वर्तमान ऐकोन डेरे बाहेर दिल्ले आहेत म्हणोन लिला. ऐसियासी समयस यावे ते न आले. आता यावयाचे प्रयोजन नाही. ईश्वरसतेने सर्व गोष्टी येथास्थित जाहल्या. वर्षप्रतिपदेच्या मुहूर्त फोटयाचे रोखे ढाळा दिल्ल्या आहेत. देशीहून मातुश्री [सखुबाई]ना दहा हजार फौज आली व पहिली येकूण फौजेचा भरणा मातबर जाहला. येकादो रोजात फौजेचा गवगवा वारुन येथून कूच करुन मजलदरमजल फोटयाचे रानात येतो. अखेराम याणी यावयासि माघेपुढे पाहून अनमान केला हें गोष्ट उतमच केली. रांगड्याचे भरवसियावरीच आजताा कामेकाजे केली असा प्रकार नाही. ते न आले हे उपयोगीच पडले. यातपरी तुम्ही आस सागोन ऐवजाची तरतूद करुन ठेवणे. पेशजी [दताजी] पाटीलबाबांनी महाराव छत्रसाळजीस टीका देउन घेतले आप्रोच आताचा प्रकार आहे. तरी तुम्ही साफ ताकीद करुन ठेवणे. पेशजीप्रा होईल तेव्हाच टीक्याचा प्रकार होईल. कळले पा. रा. छ * ३० रमजान. वहुत काये लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [४३१]

श्री * संवत १८२२ वैशाख वद्य २

[७ मे १७६५]

राजभियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

पो बाजी^{२१०} नरसिंह कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल तागाईत वैशाख * वद्य २ साा अवंती जाणून स्वकुशल लेखन करुन आनंदवीत गेले पाहिजे

[वाढ ९ ले. १२२, १६०] 'कुल डौलाची दिवाणगिरी अच्युतराव गणेश दिमत नारो शकर यास सांगितली असे तरी पेशजी रामचंद्र मल्हार याजपासून कारभार घेत होते त्याप्रमाणे घेउन येकविचारे [दोबस्त करणे] असे मारुड घातले. सुखठणकराची सर नारो शकरास येत नसली तथापि त्याची उपमा [अधिकार देणे निदान राधोबाच्या स्वाधीन होते इतकेच नव्हे तर उत्तरेकडे जाण्यायेण्याची याता-पात पडून न देतां त्याच्या या सांगितकडून ते काम घेऊन सवाईसुखठणकर करणे अगाध नव्हते याच शिलेविषयी ले ४२१, ४२२ ही दोन पत्रे मननीय आहेत अस्तु बोडपच्या लडाईपर्यंत हा शिवाकडे होता. केदारजी शिवास मुरळ पाडून भरारीच्या पक्षास वळविल्याबद्दल तो नगरच्या किल्यावर अटकेत गेला. [पिद १९ ले. ९२] 'म्याही कोणाचे सांगितल्यावर हा खेळ केला' असे तो वदणार होता परंतु याचे पुढें काय झाले हे कळत नाही

(२१८) पहा ले २३९ टीप १४१. 'मानाजी शिवास सरदारी देउन माहाबाजी गोविंद त्रकडे कारभारी दिल्ले तेव्हा चौ हजाराची सरदारी देत होते ते अमान्य करुन महादजी उठोन उत्तरेस' आले. [पिद २९ ले. ४८] 'आनदराव फालके, राधोजी धायगुडे, खानाजी जाधव, बाबाजी व जयाजी

विशेष. स्वामीनी राजश्री नयोपंतासमागमे पत्र पाठविले. ते पावले. ब्यात लिहिले की तीन पत्रे पाठविली येकही पत्राचे उतर न आले. त्यास आम्हासी पत्रे पावली नाहीत. पावल्यावर उतरे कां न पाठवावी. स्वामीसिवाय आम्हासी दुसरा हितु कोण आहे की इतके लिहावे. त्यास आमचा काही दुसरा विचार तुम्हासी पूर्वीपासून नाही. येविषई दुसरा अर्थ चिन्तात सहसा न आणावा. यानंतर कोटेकर वसवस करिता[त] म्हणून लिहिले. त्यास खातरजमेची पत्रे पाठविली आहेत ती घावी. स्वामीनी त्याची खातरजमा उत्तम प्रकारे करावी. समागमे घेउन यावे. आमचे व तुमचे विचारे सरकार उपयोगी पडत आसल्यास मामलतीचा जाबसाल केला जाईल. मध्यस्थानी यावयाची चिन्तात संशय किमपि न आणावा. जाबसाल न बनला तर त्याजला पावते करून देऊ हा जिमा तुम्ही आपला करोन घेउन यावे. दुसरे रुद्राजीपंताकडील येजव येणे त्यापैकी हुंड्या तूर्त तीन हजारच्या पाठविल्या त्या पावल्या. येसियासि त्याचा जाबसालाचा फडशा तुम्ही याळ तेव्हांच केला जाईल येविषई काही चिन्ता न करावी. याचा प्रकार कितेक मारानिलेस सांगितला आहे त्यावरून कलेल. इकडील वर्तमान तर येकादो रोजात कूच होउन हुडोती प्रांती येतील तेव्हां मेट्टीही होईल. परस्पर सर्व अर्थ कळतील. बहुत काये लिहिणे हे विनंती

लेखांक [४३२]

श्री * संवत १८२२ वैशाख वद्य १०

[१४ मे १७६५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीबावा स्वामी गोसावी यांसि.

सेवक अच्युतराव गणेश चमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल जाणून स्वकीय लिहित जावे विशेष. तुम्ही पत्र पागे ते पावोन लिहिल अर्थ सविस्तर कळला. येशास येथील जुने लोक खानाजी जाधव बगैरे व नवी मंडळी याची समजुती करणे होती यास्तव आठवार दिवस अधिक लागले. इली दरोबस्त फौजेची समजोती पडली. उदईक येथून कूच करून दरमजल कोटयासच येत असेत. रांगडे आज दोन महिने येतात

भोवडे, राधो केशव' इत्यादि मंडळी जी महावजीच्या पन्नास होती त्यात हा 'बाजीराव, राधो पोतनीस व राधोराम पागे' हे तिघेही होते. या सर्वांवर कोपून भरारीने त्याच्या घरादारावर नागर फिरविले. [वाठ ७ ले. ५८० वाठ ९ ले. ३५९]

परंतु अद्यापि कोण्डी वकील येउन मामळतीचा गुंता उरकावा ते गोष्ट त्याजपासून न वडली. आता फौजच त्या प्रांते आलियावर काही गुंता पडत नाही कळवे. पंशजी तुम्ही गंगाजल्या दोन पाठविल्यात त्या पावल्या परंतु पातळ फार आहेत यासुळे पाणी थंड राहात नाही कळवे. वरकड सविस्तर सरकारच्या पत्रावरून कळेल. रा छ * २३ जिल्काद. बहुत काय लिहिणं.

लेखांक [४३३]

श्री * संवत १८२२ वैशाख वद्य ११
[१५ मे १७६५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी

सेवक बाजी नरसिंह कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल तागार्हत वैशाख * वद्य ११ मुकाम काल्यादेह [समीप अवंती] जाणोन स्वकुशल लेखन करीत गेले पाहिजे विशेष. स्वामीकडील पत्र येउन सर्व तिकडील अर्थ कळला. यैसियासि राजश्री खानाजी जाधव वगैरे देशीहून आले त्यांची समजाविश व्हावी होती यास्तव गुंता जाहला. आता आजच कूच होउन हाडोती प्रांती येत असो. गुंता राहिला नाही. तिकडील जे येतील त्याजला समागमे घेउन यावे. त्याजकडे गुंता मामळतीचा आहे तो निर्गम त्यानी करावा. या गोष्टीत स्नेह राहिल तेच त्यानी करावे. वरकड कितेक आर्थ स्वामीचे व आमचे मेटी अंती सर्वही परस्पर कळेल. उंटाचे ताकीदीकरिता पूर्वी ताकीदपत्रे पाठविली [तीं] पावली आसतील. त्याजला थावी. अतःपर ते तुम्हासी उपसर्ग करणार नाहीत. वरकड इकडील आर्थ राजश्री नथो मोरेखर यानी लिहिला आहे त्यावरून कळेल. बहुत काय लिहिणे कृपा असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [४३४]

श्रीशंकर * संवत १८२२ वैशाख वद्य १४
[१८ मे १७६५]

श्रियासह चिरंजीव राजमान्य राजश्री लाळाजीबाबा यांसि नारो गोपाल कृतानेक अशिर्वाद. यथील कुशल ताा वैशाख * वद्य १४ मंदवार प्यार घटिका प्रथम दिवसपावेतो यथास्थित असो विशेप. काळ मयाराम वामणाबरावर व काल्याबरावर पत्र पाठविले ते दोनी पावोन सविस्त' वर्तमान कळो आले. 'वाळावयाचा निश्चये

ठरळ. जालमसिंगजीनी बागात प्रस्थान केले. आम्हास मुहूर्त नाही याकरिता दोन दिवस राहू. मंगळवारी मुहूर्त चांगला आहे तोपावेतो स्थिरता असली तरी उत्तम. नाहीतर इंद्रुवारी चालणे होईल. तुम्ही इंद्रुवारी येथे येणे म्हणून लिहिले तरी उत्तम आहे. सोमवारी आपणाजवळ येतो. मगरधज घोडा कान्याबराबर पाठविला आहे तो पावेळ. सोमी घोडी आम्ही येतेसमई घेउन येउ. चैनराम मिश्र तहू घेउन गेला तो आला नाही. यथील वर्तमान आजी साहीकाळपावेतो भयाचा कटा होईल. मोजे अरनिटा व वलकवासा कत्वा तीन गाव कटे करावयाचे राहिले व अठसे व दाहाबारा गांवचे होणे आठदहा दिवसाचे काम आहे. हे उरकिलेवर उनाळुचाही उमज नजरेस पडेल. जमितीचे दिवस बाज खादले. त्यास जमितीचा येदा काही ठिकाणा नाही. लोक बहुत नादार त्यामुळे बहुतसे कट आहेत परंतु सध्या उनाळुचा हंगाम याचे निर्गमाची मुक्किल. आपणा समागमे गेल्लियावर माग येथे सांभाळी ऐसे कोणी नाही याकरिता आपणास लिहिले आहे. त्यास आमचे चालावयाची कसी काये सल्ला ती लिहावी त्यासारिखे यथून तयारी करून येउ. फौजेचे लजनीहून कूच जाल्लियाचे वर्तमान आले की नाही हे लिहून पाठवावे. आमचाही चालावयाचा विचार. आजीच लिहून पाठवावा. त्यासारिखे तयारी कागदपत्रा करून ठेउ. कळले पाहिजे. खुशाल बामणास कागद देउन काल आपणाकडे पाठविला. तो पाउन कागद लिहून आजी त्यास पुढे रवाना केलाच आसेल. राजश्री आबाजीपंतास [निगडीकर] विडे देउन रवाना केले. त्यास अहिल्यावाई^{२११} तो इदुरास गेली. हे कोणी कडे जातात. अडीच सहल रुपये त्यास दिल्लेच असतील. बहुत काय लिहिणे कृ पाळो असो दीजे हे आशिर्वाद.

लेखांक [४३५]

श्री

[जून १७६५]

राजश्रियाविराजित राजश्री

लाळजीबाबा स्वामीचे शेवेसी.

शेवक माणको^{२१२} बलाळ कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. राजश्री

(२१९) १७६४त मल्हारजी होळकर उत्तरेस आले त्या स्वारीत अहिल्यावाई समागमें होती. अवदालीची अवाई एकताच होळकराने सिला ग्वालेरीकडे पाठविले असता वाटेत दोन दिवस मथुरेत थावली म्हणून ते रागे भरले तेव्हा तोफखाना घेऊन ती ग्वालेरीस आली गोहूदकर जाटास जरव देऊन तेथून ती सिरोजेस पावली [HRC vol xiii pages 135 to 139] ती या वेळी इदुरास आली असावी.

(२२०) पेव २३ ले. १०७चा लेखक ह्याच असावा असे वाटते. वरील पत्र रामाजीभाऊ दामोळकराच्या नावें असून त्याची तारीख १७ दिसंबर १७५७ अशी पाहिजे. या वेळी तो कर्हेंराजप-

आनंदराव^{२११} फ़ालके याजळ रुपये ८५०० साडेआठ हजार देणे, गई न करावी. हईगईं कराल तर तुम्हास आपली आन आसे. बहुत काये लीा हे विनंती. रोकडे देणे.

गावी असू शकतो. पुढें तो बाजी नरसिंहाचे निस्वतीस गेला १७७०च्या स्वारीतही तो विद्यमान होता [ले ४३६, ४६०] कोणत्याही पत्रात त्याने आपले उपनाम दिले नाही 'गोपालराव रघुनाथ गिा फालके याचे आज्ञे भाणकोपत नाना व योगिराज आपा आरणगावकर नगराजवळील अथवा इद्रापूर नरसोबाचे' असे एक टाचण आमच्या सग्रही असून 'रघुनाथ भाणकेशवर यास भोवें विल्हेडी पोा नवलाई ह्या गाव छ १ जिल्हेज इसने तिसनपासून' होता असा शोधही लागतो या घराण्याचा शोध अद्याप लागत नाही

(२२१) सपादकाचे हे स्थापनपणजे होत. याचे बवू सटवाजी पानिपतावर राहिले आणि हे घाचले पेद ३९ ले. ४०तील आनंदराव फालके ते हेच वरील पत्राची तारीख १८ नवबर १७६१ अशी हवी आहे भाऊगदीत शिवेशाहीची विपन्नावस्था झाली त्या वेळचे हे सुखठणकराचे पत्र असावे अस्तु महादजी शिंद्यानी पदरात घेऊन परामर्ष केला म्हणूनच या पत्रात त्याचे नाव येते. पुढें १७८३ साली ग्वालेरचा किल्ला जाटापासून सर करीत ते रणात पडले. त्याची छत्री ग्वाल्हेरीस आहे त्याचे वडील निंबाजी यानी राणोजी शिंद्याच्या पदरी राहून वेवरी नजीक राहतगडच्या युद्धात सरदारी सपादन केली त्याचे नाव ब्रह्मोद्वस्वामीच्या चरित्रात येते [अच ले २००, २०७, २१०] 'यैजित्तत छ ३३ रमजान सुमा खमस अशरीन मया आलफ बमचालसी श्रीनिवास परखराम प्रतिनिधी' इत्यादि कागदात 'फालके मूळचे तीवर रजपूत विलीहून बाले' असे हाटले असून आम्हाचे पणजे लक्ष्मणराव हे कविही होऊन गेले 'कविप्रिया, भक्तसिंधू सुवावहृतरी' इत्यादि काव्यमय ग्रंथाची रचना त्यानी हिंदीत केली आहे त्यात जी वखावली दिली तिचा उतारा येणेंप्रमाणें

॥ दोहा ॥

प्रथमहि निजकुल के पुरुष बरनी बस विधेध । पीछे फिर रचना करो ग्रथ अर्थ अविशेष ॥
 'आद सुधावर बस मे पाडव कुल सुग्यात । भये तरिडु अनेक हू भारत कहि विख्यात ॥
 श्री राजा जनमैजते साध ज्ञानचे जान । अनगपाल भूपाल ने दिल्ली दीनि दान ॥
 तिहुनपाल तिन के भये बसे चडरुजा ग्राम । तिन के सुत भूपाल सुत सोनपाल तिह नाम ॥
 गाम सोहनीया मे बसे पुत्र अविका मात । तिन ते तेरा साध मे मान भये विख्यात ॥
 मान बसायो गुवालयर जग में तिनको नाव । बोलसाहू नो साध में बसे बोलपुर गाव ॥
 असलद्वै तिन के भये बसे करारे आय । पिहले हे असा हये सुध आनद सरभाम ॥
 हर्देसिण तिन के भये तिन के देवीचद । तिन के पुत्र जुझार हुवे सब आनदकद ॥
 सवन बडे हे जेतसिण तिन के दो सुत जान । सहारूप महारूप सो दशिन गये निदान ॥
 तन के छोटे भ्रात जो बसे आय आरोन । अंक बसे फिर मोहने तिन बधाने कोन ॥
 सहारूप महारूप दोळ दशिन पडूचे जाय । ऊद भयो जब माग को ह्यगज सपत पाय ॥
 पातसहाने मान को दशिन दीन मुहीम । तिन के सग गये तहा रहे सवारे भुम ॥

॥ सोरटा ॥

दशिन भुम सुगम बाई देस प्रसिद्ध हे । तहो पाडली ग्राम सुवद नास कीनो तहा ।

लेखांक [४३६]

श्री * संवत् १८२२ श्रावण शुद्ध ५
[२३ जुलै १७६५]

राजश्रियाविराजित राजश्री

लालाजीबाबा स्वामीचे शेवेसी.

शेवक माणको बलाल निा राजेश्री बाज नरसिंह साा नमस्कार विनंती
उपरी. विशेष देणे येवज रुपये.

३५००० राजश्री राघोपंत दादा

३७००० भोवानी नार्दिक राक्ष कर्जबा

७२०००

येकुन रुपये बाहातर हजार रुपये देणे. येवज देउन पावळियाचे कवज घेणे.
मिती श्रावेन * सुचे ५ पंचेमी. हे विनंती.

॥ दोहा ॥

सहारूप के पुत्र दियो गोयो नाम । दायोजी के सुत जुगलचंद सु नायक नाम ॥
नायकजी के सात सुत सात पटी के राई । साह नृप राजोसने भरा लाराई आद ॥
सातो भाताय हुवा नकस फाजाह फार । श्री साहू प्रसन्न हो नाम फालका धार ॥
ययुरवेद अरु माघुनी साषा परवर तीन । अत्र गीत गावत सर्व जान लेऊ परवीन ॥
गोयाजी सब ते बडे तिन सुत भालेराव । तिनके सुत अपाजी भये तिनते बाजी गाव ॥
तिन सुत महिपतरावजी उन के हरजी जान । मानाजी तिन के भये तिन सुत पडू मान ॥
नायकराव सुतासु सुत तासुत निंबाराव । तिन ते सटवाजी भये जग मे कीरत गाव ॥

॥ सोरठा ॥

भाजसाहेव सग आये हिंदुस्तान मे । भई मुगल सो जग जूझे पानीपत सुथल ॥

॥ दोहा ॥

ऊभय पुत्र तिन के भये जेठे हैवतराव । जगजीत नहुज साठ प्रयो जानत जगत सुभाय ॥
दुसीयसु माधवराव जग बहादुर कुलकलस । भीमसेन बल भाव जुध जोर जय जग सुजस ॥
श्री माधव माहाराज सिंदे आलीजा भयो । तिन के हुकम सु काज दिल्ली को सूभा दयो ॥
मार यवन कीने सुवस सोके सोक कितव । दिल्लीपती सुप्रसन्न हो दीनी तवहि किताव ॥
करन फते समयेर जंग बहादुर यो कहो । तिन के दो सुत हेर रामराव लछमन लहो ॥

भालेराईच्या स्फुरणास पूर्वजांची ही काव्यरचनाच सर्वोपरी प्रेरक झाली आहे.

लेखांक [४३७]

श्री * संवत् १८२२ श्रावण शुद्ध १०
[२७ जुलै १७६५]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीबाबा स्वामीचे शेवेसी

सेवक भाणको बलाळ साा नमस्कार विनंती उपरी, साा त्रिंक्क नाईक व लक्षमण नाईक या उमयेतास साा ३००० तीन हाजार देणे, छ * ९ माहे सफर, बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

सदलहू चिठीप्रतो रुये भरुन पावलो माा लक्षमण शेवाद्दी पैठणकर, मिति श्रावण शुभा १० सनवार.

लेखांक [४३८]

श्री * संवत् १८२२ भाद्रपद वद्य ९
[९ अगस्ट १७६५]
[नकल]

गुंडरीक व्यासजी श्री गोपाळरामजी जोग्य लिखतं रामराव उधव व मानको बलाळ केन नमस्कार. अपरंच. राज की मारफात सिरकार में खंडनी ठाहारा ती में रुपया म्हा की मारफत पोहचा तपसीळ.

नगदी रुपया

हुंडी रुपया

टीपा साहूकारा

१०५३३०।

७६६१९।।।

२८०००

एक लाख पांच हजार तीन छंत्तर हजार छ सो गुनीस
सो सवा तीस आना बारा

अठाईस हजार

एकुन रुपिया दोय लाख खंडणी मचे पोहचा. मिति मादवा बदी ९ समत १८२२.
सुा सित सितेन मया अल्फ. छ * २१ सफर.

नमस्कार बंचजो. रुपया दोई लाख आया श्री गुमानसिबजी का सरकार का गुजारत लालाजी बलाळ [गुल्लुले]

लेखांक [४३९]

श्री * संवत् १८२२ फाल्गुन शुद्ध ५
[१४ फरवरी १७६६]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजी बलाळ स्वामी गोसावी यास.

सेवक नारो शंकर [विंचुरकर] साा नमस्कार विनंती उपरी, येथील क्षेम ताा * छ ४ रमजान सुा कचनारसराय प्रांत अहीरवाडा जाणोन स्वकीय लेखन करीत जावे.

यानंतरी वहुता दिवसी तुम्ही पत्र पाठविले ते प्रविष्ट होउन सवित्तर विदित जाणे. कितिक प्रकारे पत्रो उपरोधित प्रकार लिहिला तरी तुम्हासी आम्हासी दुसरा प्रकार नाही. राण्याचे स्नेहाचा मजकूर लिहिला तरी पुरातन स्याचे घरासी आमचा स्नेह आहे. तुम्ही लिहिले स्या प्रमाणे राजे यास वहुतच घरोवीयाचे व स्नेहवजे पत्रे लािा आहे[त] ते प्रविष्ट करणे. श्रीमंत राजश्री दादासाहेबाही भोसल्याकडील दारमदार करोन वरहानपुरास दाखल जाळे. पुढे दरमजळ हिंदुस्थानचे बदवत्तास येत आहेत. बरोबर मातबर नौज व उमडे सरदार तोफखाना असे. तुम्हास कळवे. मागाडून वर्तमान होईल ते तुम्हास लिहू. आपल खासेकडील^{२२२} वर्तमान दरपे लेखन करीत आसिले पाहिजे. बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [११०]

श्रीशंकर

[२ दिसेंबर १७६७]

श्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

नाना स्वामीचे सेवेसी.

सेवक जयराम अंनत कृतानेक साधग नमस्कार विनंती उपर. येयील क्षेन ताा छ * १० रजव जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत असिल पाहिजे. आपलेकडून सांप्रत वेदमोर्ती रो चैनराम मिसर आळे वर्तमान साकल्य कडो आळे. आम्हास तर

(२२२) पहा ले. १०४ टीप ६२. ले. २६०, २६६, ३०८, ३१३ हीं जनार्दनपंत मानु यांचीं पत्रे पाहिलीं म्हणजे कारकुनांची योजना पंजवाडितून होत असे हीं राजवाड्याचें विधान किती भ्राम्यक आहे हें सहज कळून येतें. दामाड्याच्या परामबालंतार 'कीर्ती सरकारकून आमचे निसवतीस हुडे मागतील ते न घावे. आमचे कारकून आहेत यांसी जे अधिकार आहेत तेच करार करावे. प्रबान छडिनील तर साहित्य करावे अशा यादीवर स्वामीनी दस्तक केले' [पिठ १२ ले. ६७] हें उदाहरण पाहिजे असतां गिदेहोलकरासारख्या भागीदारांनीं या तत्वाचा संबंध किती पोचत होता याची तुलना होऊ शकते. पानिपतानंतर जो अनियमित कारभार राबोवानें केला त्यांत हें सूत्र त्यानें चालवून पाहिलें त्याचा इतिहास ले. ४२१, ४२२ देतात. या करणीचें कारण राबोवाच्या भडोतच प्रहारां इष्ट होय. 'हिकडे कमाविसदार सरदार व सरंजामी यास खाविदगिरी कर्मी अमते चाकरी कमी हें पुरतें ठाडक नाही. ठाडक अमेल परतु विसरले आहेत. फारकदन पोरेच आहेत. नवीच माळ आहे. येक मल्हारजी होलकर मात्र जुना त्यास सर्व ठाडक आहे. त्याचीं भीड तीर्थरूप चालवीन आले त्याप्रमाणे चालड परंतु लहानघोर मल्हारबाचीच रीत घरील तर कसे पुरवेळ. पगिछिन पाणपन्थ करावे लागेल. नारांज रगडून कारभार करितों. बंदोबस्त केलियाने दरसाल १ करोडोचा नफा निवेळ. हिंदुस्थान व कर्नाटक दोन्ही बंदोबस्त पहिलेनेळा अधिक होतील. किती चाकर नरम होनात हें दृष्टीम पडेळ. [अंठ १४ ले. ६९] हें उद्गार लजांत घेनले म्हणजे त्याच्या कनेक करणीचें कोडें मुटें.

आपले पत्र नवते. रास पत्र होती ते पाठन वर्तमान सर्व अग्रगत जाळे. साडेचीचा मार लाला तो कळो आला. पूर्वी चिठी मनुषनेत्राचा पाठविली ते पावली, बाकी आढीच राहिले ते सत्वर पाठउन घावे आणि लिहिले की चिठी पाठविलीयावर रो लालाज चे लाले आले की नाच्या दुकानी जमा करने लागतात तुमचे चिठी आल्यावर नास दिले. बाकी अडीच येथेच चिठी पाठउन घावी त्यास दिरहे जातीळ. दुसरे दिवस फर्माप लाला ते आमचे लाले आकारद [व्यर्थ] गेले. आम्हास लटिकवाद रो यासि आनिळा आता जवानी चोंवे सांगत होते की मागून सत्वरच जिनस येती. आता आळो तर सुखानसुखी येवो. वरकड वर्तमान राजको रोचे पत्रावरून विदित होईळ. मूळ कारण की लालाजीनी येजमानाचे दर्शनास यावे यांत कुशल तुमचे आहे. समागमे ज्याचे आहेत त्याजवर मर्जी येजमानाची नाही निमित्त लाला आहे की हरयेक बहाना करुन रोनी यावें. इतकियावर इच्छा त्याची, रो रामरावजीची मामळत बखेड्यात पडोन लर्चाखाले आले. दरबार येक प्रोरचा आहे त्याजविसी कोन्ही मानूस कापा-काजाचा बंदोबस्त करी येसे नाही. तोर्थरूप रो ताला त्याजपासी आहेत. करवरेस पौले आहे परंतु वेखडा तुटला नाही. आपनास विदित त्याचा प्राा आहे. आम्ही तर तीन वर्से खराब आहे हे आता रोचे उर्जित जाले जैसा हेत करतील ते कळेल. आपण सेवका-धर कृपा ममता करीत आसावी. सूझास काप लिहाव. रो लालाजीचे कुटुंब खुशाल आहे. कन्याही खुशाल आहे. हे विनंती. रो दाजी स्वामीस साा नमस्कार. लोभ कीजे हे विनंती. श्रियाविराजीत राजमान्ये राजश्री रावजी स्वामीचे सोा सेवक साा नमस्कार. लोभ कीजे, आपली भेटी[ची] इच्छा आहे. घडेल तो सुदिन जाणावा. हे विनंती.

अर्खांक [४४ ?]

श्रीमार्तण्डभैरव * सवत १८२४ मार्गशीर्ष वद्य १

[६ दिसेंबर १७६७]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक भगवंतराव शंकर कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ताा मागेस्वर * वद्य १ पर्यंत गुाा उजेन जाणोन स्वकीय कुशल लेखनथाज्ञा करीत असिले पाहिले विशव. आम्ही आज कूच करुन देशास गेलो. हिशेबाचा निर्गम जाला. श्रीमंत पाटीलसाहेब इंदुरास गेले. आम्ही उदईक त्यास आटोपून जातो. स्वामीस कळ्यावे.

येथील साद्यंत वृतांत राा नथोपंत दाजी सेवेसी निवेदन करतल त्याजवरून श्रुत होईल. स्वामीचा येवज येणेप्रमाणे येथे आला त्याचा हिसेब.

| | | | |
|-------|----------------------------|-------|-------------------------------|
| २३५०० | किया हुंड्या | १९००० | रसद |
| १२७२ | किया आमच्या खताबाबत वारासे | २००० | आचुतराउ |
| | वहातर स्वामीचे जमा घरून | ५०० | गणोज कदम |
| | दिघले | ६०० | पोतनीस दुसाला |
| ५१३९ | किया हुंडी | ८५० | फडनीस दुसाला |
| | | ३५० | ५०० |
| २९९११ | | ७०० | मुञ्जमदार दुसाला |
| | बाकी ६५९ रुपये. | ६२० | विठल आपाज' वरात |
| | | २५ | नथोपंत |
| | | २० | दफ्तर |
| | | १५ | फडनविसीचा कारकून |
| | | १०० | सिकेनीस |
| | | २५ | गणेशा निया दिवाणजी |
| | | ४७९७ | वरात सिलेदारीची मगवतराउ शंकर. |

२९,२५२

सदरद्द सासे यकुणसाठ रुपये निघाले ते राजश्री नथोपंतदाजी याचे स्वाधीन केले. स्वामीस कळ्यावे. देशास आम्ही जातो तिकडे जैसा प्रसंग वरतेल तैसा स्वामीस लेखन करून पाठवितो. यथील सर्व मान्य राा नथोपंथ दाजी सांगता कळू येईल. आम्ही सर्व प्रकार आपले आसोत. फार लखन करावे येसे नाही. स्वामीनी म्हारावजीची पत्रे रांगडे करवडकर वंगरे यास पाठविली उपर केला तैसेच वरचवर साहित्य करीत जाणे. देशी वर्तमान होईल ते वरचवर लहून पाठवीत जाउ. कळल पाा. बद्दत काय लिहिणे कृपालोम असो देणे हे विनती. राजश्री नाना स्वामीचे सेवेसी साा नाना दीजे.

लेखांक [४४२]

श्रीगजानन * संवत् १८२४ मार्गशीर्ष वद्य ६
श्रीसांव [११ दिवंबर १७६७]
श्रीमोरया [नफळ]

यादी^{२२३} करारनामा राा तुकाजी होळकर व भावादजी सिंदे यांणि सरकारचे कर्ज श्रीमंत राजश्री पंतप्रधान यांचे वारावयावदळ करार सुमा समान सिंनै नया आल्फ. कार्तिक शुध प्रतिपदेस करार ५०००००२ रुपये.

ता

२५००००१ होळकर यांजकडें रुपये २५००००१ सिंदे यांचकडें रुपये
पनास लाख रुपये करार.

यांसि हफतेवंदी.

१६५०००० कार्तिक शुध प्रतिपदा सन समान ता आस्विन शुभा दशमी सन सवैनपर्यंत तिसा सिंनै.

१६५०००० आस्विन शुध दशमी सन सवैन सा ता कार्तिक शुध प्रतिपदा सन सवैन.

१७००००० कार्तिक शुध १ प्रतिपदा सन सवन ता आस्विन शुध दशमी इहिंदे सवैन.

५०००००० सदरहु पनास लाख रुपये हफतेवंदीप्रमाणें घावे.

सरकारांतून कलम करार करुन घ्यावे. कांही ऐवज हिंदुस्थानांत वरता कराव्या वांटणी हिंदुस्थान येथील तह सेकडा तह- कांही ऐवज देशी देउं. त्याची हुंडणावळ बरहुकुम तह पेशजीचा तह आहे तूर्त आठ- सरकारांतून घावी. ऐवज मागील कर्मदारांस वणीने लिहिला आहे परंतु पेशजीचा तह- देत जावा.
प्रमाणें १०० रुपये.

(२२३) १८५७च्या वडात एका मराठ्यास पाचसात हप्तरें लुटीत सापडली तीं सवैन आळन केवळ पांचसात कागद उरले त्यापैकी हा एक होय अर्थात रावोराम व बाजी नरसिंह या दोन व्यक्तींचा साठा इत्युत्तर दुर्लभच समजला पाहिजे नस्तु. हे पत्र अत्यंत महत्त्वाचे आहे याविषयी पुढें ऋची तरी चर्चा करू. यावीप्रमाणे रकम पदरात पडली किंवा नाही हे निश्चित होत नाही

| | | |
|---------------------|--------|-----------------------------|
| | तपसील. | २३१- होळकर. |
| ३० सरकार. | | २३१- सिंदे. |
| २५ स्वारी प्रधान. | | २३१- सरकारची फौज बराबर. |
| ५ स्वारी दादा[सहिव] | | स्वारीस जाईल त्याची बांढणी. |
| <hr/> | | <hr/> |
| ३० | | १०० |

यास सरकारचे फौजेची बांढणीचा पैका तेवीस रूपये साहा आणें सन समान कार्तिक शुभ प्रतिपदा ता आश्विन शुभा दशमी सन तिसांपर्यंत बांढणी येईल ते येवजांत घ्यावी येणेंप्रमाणें येक साल मात्र येवजांत घ्यावी. पुढें पेशजीच्या कराराप्रौं चालवें. तीस [सेकडा] सरकारचे आहेत ते सरकारात घ्यावे.

सदरहू लिहिल्याप्रमाणें राघोराम [पागे] व वाजी नरसिंह सई करार. छ
* १९ रजब सुमा समान शितैन मपां व अलफ. मार्गसीर्ष मास गुा पुणें.

छ १९ रजब समान शितैन. १ १७७ फसली.

मार्गसीर्ष वा ६ शुक्रवार शके १६८२ सर्वजित.

१२ दिजंब १७६७ इसवी.

लेखांक [४४३]

श्री * संवत १८२४ पौष शुद्ध १

[२२ दिसंबर १७६७]

श्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

नारोबा नाना स्वामीचे सोा

सेवक जयराम अनंत कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपरी. येथ ल क्षेम ताा छ * ३० रजब जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करने विशेष. आपले पत्र कासदा समागमे आले त्याजवरून लााले ङागिने आलेत ते सावकाराने आधापिवर न दिव्हे ना चिठी दिव्ही. सुका [मिर्धा] दिक्त घेउन बसला आहे की मजला चैनराम सांगून गेला की आम्ही जेथे असू तेथे चिठी पाठवणे व ङागिने आमचे स्वाधीन करने म्हणून म्हणतो. ज्याचे येथे जिनस आला तो सावकार निवर्तला म्हणून त्याचा पुत्र इंदोरास क्रिया करावयास गेला आहे तो आल्यावर देउ म्हणतो. बाकी येवज दीड राहिला त्याचा व मी जोडा पूर्वी लााला आहे तो सत्वर करुन पाठवणे. रोा तर तेथे राघोरामाजवळ आहेत. पावळियाची पत्रे दोनतीन आली. श्रीमंतास वोलाविले आहे. कूच सत्वरच होउन त्या प्रातास जाणार. विदीत होय. आपण कृपापत्री संतोषवीत जाणे. सेवक पदरचा आहे. पूर्वी

रौ रामरावजीसभागमे मानसास व त्यास खर्चास रौनी देविले ते आपण दिल्लेच असेल. बहुत काय लिलाने हे विनंती.

हो राजेश्री गोविंदरावजी स्वामीस साा नमस्कार. आपण तर x x चा नमस्कार देसीहून लिला ताा जैसे न पाहिले. सदैव पत्री संभाल करावा हे विनंती.

राा दानीस व रामचंद्रपंतास नमस्कार.

लेखांक [४४४]

श्रीशंकर * संवत १८२४ फाल्गुन वद्य १०

[१४ मार्च १७६८]

राजश्री राज जालमसिंगजी गोसावी यांसि.

अखंडितलक्ष्मीआलंकृत राजमान्य स्तोत्रा रुद्राजो खंडेराव आसिर्वाद विनंती उपरी. येथील कुशल ताा छ * २४ माहे सावळ मुकाम हांडे जाणून स्वकाय लेखन करीत असिले पाहिले विशेष. सौस्थान कोटे येथे राजाजीकडून आमचे कर्जाचा येवज येणे खतेही आपल्यास वृंदीचे मुकामी आगण्या^{अर्थ} कडून श्रीमंताची स्वारी आली तेव्हां आपल्यास दाखविली होती. फडशा करून धावा म्हणोन श्रीमंतानीही आज्ञा केली होती. आपण कबूल केले की निर्गम करोन देवितो ल्याउपरी दोन पत्रे लिहिल. परंतु उचरही न आले. त्यास आमचे येकवीस हजार रुपये कर्ज आहे. कैलासवासी श्रीमंत मल्हारजी बाबा हौळकर मुकेतचे किल्यासी तोफा लाविल्या होव्या त्या वेळेस आखेरामजी याणी राज्याजीचे नावे खत देउन आम्हाकडून येवज देविल. यास निकाल होत नाही. आमचे कर्ज राज्यावर आहे. राज्याचा बचाव केला आहे. लाख दीड लाख रुपये होतात. वर्षाचे वर्षास व्याजाचा हिसेब करून येवज घेऊ आणि आपण देविली. सांप्रतही श्रीमंत राजश्री पाटीलसाहेब याचे पत्र आपल्यास आहे. हे ध्यानास आणोन आमचे कर्जाचा निर्गम करून देवावा. याउपरी ध्यानास नये तरी तैसेच उतर ल्याहवे ल्याप्रमाणे हुजूर लेहून पाठऊ. बंगरेडकर सखतावत आपले प्रांतात राहून आम्हाकडील पाो निमथोर म्हूसैद्याचे चार गांव भासून नेले. आपले राहाळचेही सखतावत व रजपूत सामिल होउन बरोबर जमियेत घेउन येत आसतात. आपण त्यास निष्कृण ताकीद करावी. या उपरी ध्यानास न आले तरी ज्या ज्या ठिकाणचे मलेमाणूस त्यासि सामिल होतात त्याचा मुबदला करावा लागेल. बहुत काये लिहिले लोम कीजे हे विनंती.

(२२४) १७६८ पूर्वी महादजी शिंदे आगण्याहून वृंदीस आले होते असे निष्पन्न होते परंतु मितीमास मात्र अद्याप कळत नाही

लेखांक [४४५]

श्रीशंकर

* संवत् १८२५ ज्येष्ठ शुद्ध ३
[१९ मे १७६८]

आर्शिवाद उपरो. ता जेष्ठ * शुध ३ गुरुवार त्रितीय प्रहर जाणून स्वकीय लखन करणे विशेष. काल तुमचे पत्र आले. त्याचे उत्तर न आले म्हणोन पुनुरुक्त आज आले तर देशी जावयास सिबंदी ठेविली. जर नजीक जाणे असिले तरी तसीच ठेवावी. नाही तर दूर करावी. नाहक सिबंदीचे कार्य काही नाही. तरी प्रस्तुत सिबंदी ठेवावयाचे काम काहीच नाही. कार्याकारण लागेल तेवढी ठेवावी. कविल्यास जावयाची अवघ कोणी पडिल्याखेरीज रवाना करीत नाही. जेव्हा जावयाचे होईल तेव्हा ठेवावे. प्यादेस काय नुन्य आहे. हा सविस्तर अर्थ कालच लिहिला. तुम्हास का पोहचला नाही हे न कले. आम्ही आजीच येणार होतो. त्यास राजभ्रां सिवजी भिकाजी यांची रवानगी करावी यास पाो याजकरिता राहिलो. उदईक अथवा परवा येतो. तेथील जनाना घर आहे. तेथे दांडा कमडी कौल्लु सुषे करून ठेवणे. पाणी पडेल तेव्हा घास रवाना करणे. प्रस्तुत आम्हास तेथे राहणे तेव्हा कविलाही तेथेच राहिले याजकरिता घर उत्तम करून ठेवणे. बहुत काय लिहिणे हा आर्शिवाद.

लेखांक [४४६]

श्री

* संवत् १८२५ ज्येष्ठ शुद्ध १०
[२६ मे १७६८]

श्रीसकलगुण राजमान्य राा

आपाजीराव स्वामीचे सेवेसी.

सेवक गणेश केंराव [चितले] सां नमस्कार विनंती. येथील कुशल जाणोन तां ज्येष्ठ * शुध १० पावेतो स्वामीच्यां कृपेकरून सुखरूप असों विशेष. हिकडील वर्तमान तर श्रीमंत राा दादासाहेब[भट] दारणासंगमी गंगातिरी येउन फौजबंदी करिनात म्हणोन कालच राा सदाशिव रामचंद्र [सुखठणकर] दोन हजार फौजेनसी आमच्या गांवावरून [गेले] पैटणास मोकाम आज आहे. गंगातीरकर ब्राह्मण दक्षणा मागावयासी गेले होते त्यामी उतर दिले की पंधरा दिवसी दादासाहेब आम्ही हिकडे येउं मग दक्षणा देउं. ऐसे उतर दिले. याउपरी आजच बातमी तहकीक आली की राजेठाकलीवर कवड्यांची फौज व पांढरा कोण आहे ऐसी जमा होउन तीनचार हजार उम्या गंगातीराने आमच्या गावावरून पैटणास जाउन दादासाहेबाकड जाणार. मागाहून पीराजी नाइकाची खबर आहे. दादासाहेब

टोकायांस जाणार म्हणोन तहकीक वातमी आहे. मग कोणीकडे जाणार काय मजकूर आहे तो काही कळत नाही. गावाकडे बाकी निमे कमीसी आहे वसुळत येत नाही तशामध्ये लस्करचां उपद्रव मोठा. कडवा भूस राहाता दिसत नाही. स्वस्ताई मोठी. माल गळ स्वस्त. महाग कोणी घेत नाही. दोन हजार रूा सरकारचा गळ पडिला आहे. कोणी घेत नाही. कोणांच्या जोरा पोहचउन बाकी घाडून घेत लागलों तर होईल तमाम विकतात. पुढे गाव पडतो यासी उपाय काय करावां. कदाचित दादासाहेब टोकायांस आल्यावर फौजेचां जमव जाहाल्यावर जप्या बसवितील की काय हे कळत नाही याजकरितां तेथील दरबारचा मजकूर काय आहे हा कळत नाही. या प्रांती तमाम लोक बोळतात की उभयतांचा त्रिबांड आहे. तर काये वर्तमान ते साकल्प लिहिले पाहिजे. तशासारखे येथे पुढे छावणीची आशा सोडून सावध राहो परंतु अशामध्ये आम्ही येयून निघालो तर गाव आमच्या आधी निघणार. नित्य लष्करची अवाई आहे. राणात मोकल्या मने आउते चालो देत नाही. चोर राजत छटितात. कळवे. कदाचित त्रिबांड जाहाला टोक्यावर दादासाहेब लवकरच येणार तर दरबारांत काही बंदोबस्त अधीच करून ठेवावां. मग ईश्वरमता प्रमाण.

राा चितो विठळ [रायरीकर] यांसी पत्र राा विसाजीपंत लेले याचे व आपले येक बहुत माये ममतेचें ऐसी दोन पत्रे.

राा चितो अनंत सातारकर यासी पत्र राा बाबुराव बुंदेले नाही तरी त्यासी मीड चांगली पडेल ऐसा कोणी असेल त्याचे पत्र देउन पाा.

राा आंबाजी महादेव यासी पत्र गोरेसीचें येक.

येणेप्रमाणे आधीच बंदोबस्त केल्याने कदाचित घालमेल जाहाली तर कामास वेईल. पत्र लिहाल त्यात जप्तीचा मजकूर किमपी आणू नये. मोघाम पत्र घरोन्याची लिहावी की त्या प्रोा खासा स्वारी आली तर नवगाव आपला आहे. ममतेची घरबोच्या नात्याने लिहावी. श्रीमंताची दोन ताकीदपत्रे आंबाडचे कमाविसदार रघुनाथ सदाशिव व पांडुरंग सिवदेवपंत चौपाईवाळा या उभयतांस दोन पत्रे की तुम्ही घासदाणे यांचा वगैरे हरयेकरांचा नवगावावर रोखा न करणे. ऐसी खरपूस दोघास दोन ताकीदपत्रे घेउन पाा. जाळणापुरचा जामूद कापडाचे तटु घेउन गेला आहे त्यासामगमे दोन हजार रुये चिठी व राा त्रिंबकाचे पांचशा रूा पत्र पाा आहे जाउन पोहोचेल. जासुदाचे नाव दताजी.

माहारास लौकर माघारा वाटेस लावणे. मग सरकारच्या ताकीदपत्राचा गुंता पडेल तर मागाहून जालणापुरकर जासूद येतात त्यासमागमे पाा. आंबेडकर हमेशा गावावर रोख राउत पाठवितात नवे कमाविसदार जाहाले आहेत म्हणोन दोषास दोन पत्रे पाहिजे. ताकीदपत्रामध्य भोसल्याकडील घासदाणेयाचा वगैरे उपसर्ग न लावणे म्हणोन खरपूस पत्रे लिहून घ्यावी. बहुत काय लािा हे विनंती.

राा महादाजीपंत स्वामीस साा नमस्कार. कचे वर्तमान दरबारचे लिहून पाा तशासारखे येथून आटोपून येउ. तुम्हीं श्रीमंतासमागमेच आहा की वरी राहाळ. हे विनंती राा महादाजी सिंदे बीडास होते तेथून कूच करुन माघारे श्रीगोबाकडे गेले. मग कोणीकडे गेले ते न कले.

पो छ १४ मोहरम. जेष्ठ वाा ५.

[३१ मे १७६८]

लेखांक [४४७]

श्री * संवत १८२५ ज्येष्ठ वष १३

[१२ जून १७६८]

साहेबाचे सेवेसी आज्ञाधारक लालाजी बलाल कृतानेक विज्ञापना यैसीजे. ताा जेष्ठ * वाा १३ पावेतो साहेबाचे कृपावलोकने सेवकाचे वर्तमान येथास्थित असे विशेष. पोा पाटण श्रीकेशोराव येथील मामलत सरकारातून सन तिसा अवळ सालपासून आम्हाकडे सांगितली त्यास पोा मजकूरचे ठाणे राजश्री राज जालमसिंगजी याचे विद्यमान बुंदीकरानी मिती जेष्ठ वाा १३स आमचे हवाले केले. सेवेसी श्रुत होय हे विज्ञापना.

लेखांक [४४८]

श्री * संवत १८२५ आषाढ शुद्ध ३

[१७ जून १७६८]

चिरजीव विजईमव राजमान्य राजश्री आपाजीराव पासी प्रति महादाजी शंकर आसिर्वाद उपरी. येथील कुशल ताा आषाढ * शुा ३ पावेतो सुखरुप असो विशेष. तुम्हाकडील वर्तमान श्रीमंत राजेश्री रावसाहेब याची लडाई धोडपेखाली जाहालियाचे वर्तमान येथे सरकारची प्रत्रो आली त्याजवरुन कळो आले व लागलीच दुसरे दिवसी उभयता श्रीमंताच्या भेटी जाहाल्या ही पत्रे आली त्याजवरुन कळो आले. ईश्वरे फार गोष्ट उतम केळी. पत्रे सरकारची आली वर्तमान मात्र कळले परंतु तपसीलवार कळले नाहीं. तरी सविस्तर तपसीलवार लिहावे. श्रीमंत पुण्यास कवी येणार ते लि[हि]णे. कामकाजे तेथे

विल्हेस लागो लागली तरी सिंदे याची फडनिसी हुजूरची थपवा सिंधाचे खासगत डौलाची फडनिसी करून घ्यावी. प्रस्तुत राजेश्री मॅरोरोबादादा [मातु] याचा बोळवाळ जाहाळ आहे यास्तव त्याचे हातून काम होईसारखे आहे यास्तव सूचनार्थ लिहिले आहे. आता सिंधाचे डौलाची फडनिसी केळी तरी काये चिता आहे, चितो विठळ [रायरीकर] याचा प्रकार आता आहे तो कळतच आहे. याखेरीज दादासाहेब याजकडे मुखळ होता त्याची घाल्मेल होईल तरी येकादा धंधा योजून करून घेणे. बहुत काय लिहिणे हे असिर्वाद.

लेखांक [४४९]

श्रीशंकर * संवत १८२५ आषाढ शुद्ध ९.

[२३ जून १७६८]

राजभ्रियाविराजित राजमान्य

नारोपंत नाना स्वामीचे सो.

सेवक जयराम अनंत कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपर. येथील क्षेम ता ७ * ७ माहे सफर जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करीत गेले पाहिजे. आम्ही देशाहून आलो रौनी वस्तभाव अधिक येगली होती ते वाटे लाविली ते वेउन आले. ते वरतमान नाथु जाटानार सो पत्र पुजेहीहून ल्याले आहे कळले असेल. हलीही हीरा यास हे एक वर्तमान रौनी उत्करचे ल्या आहे की उमयतामचे लढाई जाली. जेष्ठ [राधोबा] पळोन किल्यावर सडे पाचचार जनासी गेले. घरकळ फौज छुटली गेली. फने श्रीमंत कनिष्ठसाची [माधवराव पेशवे] जाली. आता उमयेता सरदार सत्वर येतील. आपणास कळवे. आमचे वर्तमान तर उमयेता बंधु रौचे शुभचिंतक करीत बसले आहे. ईस्वर सत्वर येजमानासुचा या प्रती आपोने म्हणजे सर्वांचे मणोरथ सिधीस जातील. आमचे उर्जित करणे रौचे स्वाधीन आहे. त्यांचे पदरी आलो, आपनही कृपापत्री संतोषवीत जाने. रो लाळाजीबावाही अवंतिकेस भेटले. कृपा करितात. आपनही ममता करून पत्री सांभाळीत जावे. बहुत काय ल्याने लोम कीजे हे विनंती.

हो रो नथोपंतदाजी स्वामीचे सो सा नमस्कार. लोम कीजे, हो सा रो रामचंद्रपंत ल्या गोविंदरावजी स्वामीस नमस्कार सांगने.

हो राजश्री गोविंदरावजी स्वामीचे सेवेसी सेवक सा नमस्कार. कृपापत्री सांभाळ करीत जावा हे विनंती.

लेखांक [४५०]

श्री

[३ सितंबर १७६८] ?

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीवावा स्वामीचे सेवेसी

सेवक बाजी नरसिंह कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल तागाईत श्रावण * वष ७ पुा श्री अवंती जाणून खकुशल लेखन करीत असिले पाहिजे विशेष. तुम्ही क्कोटियासी पावला प्रगणे पाटणात आमळ केला म्हणोन येकिले आणि राजश्री आनंदराव रुद्र यासी तुम्ही हिताचे प्रकार समक्ष बोलोन आतरयामी आणिक प्रकार जाणविला म्हणोन वर्तमान येकिले. तर हे गोष्टी उचित नसे. आम्ही समक्ष स्वामीस राजश्री बालारायाकडून कितेक परिणामाचे प्रकार सांगविले तेही स्वामीनी मान्य केले. तेथे गेलियावर काही स्मरण राहिले नाहीसे दिसोन आले. तर हे गोष्टी तुम्ही फटकाळ केली. अतःपर स्वामीस लिहिले आहे तर ज्या गोष्टीने त्यांची रजामंदी करोन आम्हासमीप पावेत आणि तुमचे गुणानुवाद येथे वर्णीत ते केले पाहिजे. याने परिणाम श्रेहासी उतम आहे. कळले पाहिजे. सदैव पत्री आनंदवीत जावे. बहुत काये लिहिणे लोम असो दीजे हे विनंती.

लेखांक [४५१]

श्रीशंकर * संवत १८२५ मार्गशीर्ष शुद्ध ५

[१४ दिसंबर १७६८]

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

नारोबा नाना स्वामीचे [सेवेसी]

सेवक जयराम अनंत कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. येथील क्षेम तााळ * ४ शावान शुा अवंती जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करीत असिले पाहिजे विशेष. [बहुत] दिवस वर्तमान तुम्हाकडील येत नाही तर जैसे न करावे. हरषडी पत्री संतोषवीत जावे. पूर्वी तुम्ही कासदासमागमे पत्र रो रावजीस पाा व आम्हास पाा त्यास जिन्नास तुम्ही जोखिमबाल्यावाार पाा ते सुका खिजमतगाराजवळ पावली. त्यास हुंड व जिनस त्याजपासीच होती. रानी तर आम्हास देने म्हणून सांगून गेले होते. त्यास सुकाने हुंडी तर घेतली की मजळा चैनराम सांगून गेला की डागिने तर हवाल करणे हुंड न दीजे त्याजवरून हुंड आम्हास न दिव्ही जिनस तर रोचे पत्री तपसीळ आपण लाला

होता स्याप्रो आम्ही रो लालाजीचे नावे रसीद लिहून दिल्ली असे. ते पाउन सविस्तर कले येईल. हुंडनिमित्त कासद उदेपुरास पा आहेत तर उतर आल्यावर घेतली जाईल. व[च]मी जोडा सत्वर पाठवणे. लस्करचे वर्तमान तर श्रीमत [महादजी शिंदे] यानी आज कूच करून क्वालिया देवा[हा]वर डेरे केले आहेत. मागून गाजीवा दौची रोजानी दाखल जाल्यावर पुढे कूच कारणार कळावे. बहुत काय ल्या हे विनंती.

लेखांक [४५२]

श्रीशंकर * संवत १८२५ पौष वद्य २
[२३ जनवरी १७६९]

श्रीकेशवराज.

राजश्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजी बलाल स्वामीचे शेवेसी.

सेवक गोविंद तुकदेव व कोनेर केशव द्या नारो बलाजी साा नमस्कार विनंती उपरी. श्रीमत राजश्री महादजी शिंदे यानी प्रो पाटण येथील मामलियेत आम्हाकडे दिल्ली स्याची सनद बजिनस आम्ही तुम्हास दिल्लीत स्यावरून तुम्ही प्रो मारचे ठाणे व माा मामलीयेत आमच्या स्वाधीन केली ते भरून पावली. बहुत काये ल्या मिति राा छ * १४ माहे रमजान सुा तिमा सितेन मया अलफ. समत १८२५ पौष वद्य २. बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

साक्ष

रंगो चंदरराव द्या त्रिंबकराव शिवदेव गोविंद देवाजी द्या चिमणाजी गोविंद

लेखांक [४५३]

श्री * संवत १८२५ पौष वद्य ५
[२७ जनवरी १७६९]

श्रियासह चिरंजीव राजश्री लालाजीस प्रति भगवंतराव येशवत [गुलगुले] आशिर्वाद उपरी. येथील कुशल ताा पो * बहुत शुघ ५ सुा मडगांव जाणून स्वकीये कुशल लेखन करीत असिले पाहिजे विशेष. बहुत दिवस तुम्हाकडील पत्र येउन वर्तमान कळत नाही तरी सविस्तर लिहिणे. आम्हाकडील वर्तमान पत्री मागा दोनचार वेळा लिहिलेच आहे. दुखणेने दुम पुरविली आहे. घरामध्ये मजसिवाय कोणी दुखणे शिवाय राहिले नाही. ईश्वरे आज पो सर्वास जगविले. घरी तर खोकला बहुतच आहे. मागाच जगावीसी नव्हती परंतु

आयुष्यमर्यादा होती त्यामुळे जगली. आता बहुत दिवस आयुर्दाव दिसत नाही. ईश्वर इच्छा. दुखगेमध्ये अतिशये जाहाळा तेव्हां आम्ही पुसिडे की जुझा हेत काये आहे. तिणे सांगितले की आपला हेत काही राहिला नाही. सर्व सामर्थानरूप जाहले परंतु चिरंजीव मेघशामजीची मुले प्रतिपालण केले इतराची लग्ने करून दिली. या मुलाचा तर घाकुटपणापासून प्रतिपाल केला त्याची लग्ने [करावी] इतका हेत राहिला आम्ही बोलिले की जगझीस तर लग्न करीन. त्यात त्याच्या प्राकतनी जगली. तेव्हा शरीरसंबंध आज तीन वर्षे गला पडतात परंतु आमच्या विचारे चिरंजीव मेघशामजी येणार त्याच्या समक्ष कारणे ते करावे. सेवट त्याचे येणे न जाहलेमुळे दिवसेदिवस वाढली. आपल्या कुला मध्ये कोणी राहिले नाही. संरक्षण केले तेव्हां या मुलकात मुले आमचीच. कितेक वर्तमान ला। सारांश गुदस्ता रा राघो बापुजीची लेक आली. तिकडली येदा इसळामपुरीहून मैत्र्याची लेक आली. समरुकराची लेक आली. लक्ष्मण सिधनाथ रा नारो शंकर याकडे राहतात ते तर गला पडिले, कारणे जरूर. त्यास आकस्मात रा भस्कर बलाळ वार्डगणकर जालनापुरी राहतात त्यावर दोन वर्षे कसाला. भोसलेच सुटून आले. कुसावर्ताची घेउनच आले. शरीरीसंभंध चालोन लक्ष्मी आली. सर्वांच्या चितात करावी आमच्याने बाहेर जावयास सामर्थ नाही. ईश्वरे घाट घातली. मा तर शुध त्रयोदसीस लग्न भडगांवीचे जाहले चिरंजीव रामचद्राची सोयरीक जळगावजामोदी येथे रा निळाराम कानविंदे याची ल्हान नवरी नव वर्षाची ते केली. मासीरमासी त्याचे करावे मग माघमासी हे करावे हा निश्चय त्यास निलोबाने अत्याग्रह केला की या महिन्यात अनकूल नाही तेव्हां राहिले. हेच गांवातच घडोन आले. सविस्तर कलावे म्हणोन ला आहे. वरकड राजकी वर्तमान श्रीमंतसाहेब नगरी आहेत. राजश्री रामचद्र गणेश [कानडे] याजवर इतराजी^{२५} बहुतच होती परंतु कृपालु होउन इतराजी दूर केली. तूर्त सरंजाम तो काढला तूर्त घरी राहावे पुढे सरंजामही होईल चिरंजीव साो आनदीबाई कारणे लुगडी दोन नारायेणपेठी व खण जालणापुरी दोन येसे पाठविली, लुगडी उंच नाहीत. नारायेणपेठीची लांबहंद लग्न जाले तिचा मान मात्र पाठविला आहे. लुगडी खण कुंकू

(२२५) पहा ले २९७ टीप १६७ 'रामचद्र गणेश व विसाजी कृष्ण [वीनीवालें] याणी आपापल्यात कजिया केला हे वर्तमान श्रीमंतास कळताच दोघा जणा बलाउन आणिले आणि सरजाम महाल गाव वगैरे चीजबस्त सरकारात जप्त करावी याप्रमाणे बोलण्यात करार जाला तो इतक्यात गोविंदपंत बालकोबा व कृष्णराव काले या तिघानी रदबदली करून माघती पूर्वंवत स्थापना करून निरोप देउन रवाना केले'. [विद २० ले. २७८] इतकेच समजते. कजियाचे मूळ कळत नाही

पो आहे हे तीस खात्रे. दुसरे चिरंजीव साा सगुणेस लुगडे येक व खण येक पो आहे हे तीस देणे. नावे लिहिली आहे त्याप्रा पावत करावी. उंच कापडच घेतले नाही. आस्ते मध्ये लावतंदा पाहून मात्र पाठविली आहेत. चिरंजीव सोा सकुवाई लग्नादारम्य येये आहे. चिरंजीव आपास किती वेळा त्रोजाविला परंतु येणे न जाले, हीस तीन वर्से नहाण आहे. तिचे आईने व तिणे अतिशये केला मग श्रीधरजीची सून याची सोवत पाहून रवाना केली आहे. सुखरूप पावेल. चिरंजीव भेषशामजीचा मार्गी च्यातकप्रो पाहिला परंतु त्याचे येणेच न होय तेव्हां कोणता उपाय करावा. जरुरास जाणोन दोन तटे दोन माणसे टेउन रवाना केली. रवाना करावी हा तो विचार नव्हता परंतु आतिशये देखोन रवाना केली आहे. त्याजवळ पावेल. त्याचे लग्नच केले [हा] आन्याय जाहला. तसा शंभर रुपये रवानगीस लागले. आधीच कर्जे वर सवार त्यात हा विचार जरुरच करणे लागला. वहुत काय लिहिणे हे आसिर्वाद.

लेखांक [४५४]

श्री

*[१५ फरवरी १७६९]

श्रियांसह चिरंजीव राजश्री लालाजीस प्रति भगवतराव येशवंत असिर्वाद उपरी. येथील कुशल ताा माघ * शुध नवमी जाणोन स्वकीये कुशल लखन करीत असिंने पोजे विशेष. सांप्रत तुम्हाकडील वर्तमान कळत नाही. चिरंजीव नारोत्राचे पत्र त्याचे बरी आहे त्यात त्रिहिल की सर्व सुखरूप आहे. चिरंजीव लालाजी महारावजीच्या लस्करात आहेत. येथून जाउन पावणे दोन महिने जाहले लवकरीच येणार त्यावरून संतोष जाहला. येणाराबरावरी आपणाकडील कुशल वर्तमान लिहून पाठवीत जाणे. आम्हाकडील वर्तमान दोनचार पत्रे पाठविली [तीं] पावलीच असतील. आजपो सुखरूप आहे. चिरंजीव कुशाबाचे लग्न मासिर मुघ १३ केले संमंघ राजश्री भास्कर वळाळ बाईगणकर यासी केला. त्याची नात केली. जालणापुरी लग्न करावे हा त्याचा हेत आमच्याने जावत नाही तेव्हां त्याणेच कुटूंब घेउन आले. येथे लग्न जाहले. त्यावरी दोन वर्षांची तवाई. मोसलेचे अटकेत होते सुटून आले. मग हाच प्रसंग करावयास लागले. आठ दिवस पो अनमान केला देणेवेणे वगैरे सला अम्हास इसलामपुरीहून मंत्र्याची व नारुकराची सोयेरीक आली. जावयास दोन हजार रुपये मक्षायास मार्गी पोलेत हे देखोन चौधाच्या मते मान्य केले. त्याणे मात्र हजार रुपये दिले. सर्व उमयेपक्षी करावयाचे ते करून घ्यावे काळावर नजर देउन मान्य केले. हजार रुपये नवऱ्याचेच सरंजामास पुरले. वरकड

सामान दिले. लग्न जाले. समुदाय बाराच मिलाळा व ब्राम्हण दोन हजारपो मिलाळे. वडिलाच्या पुण्ये सर्व यथास्थित जाले. चिरंजीव रामचंद्राचे लग्न माघ वद्य १ स्वाग होउन जांमोदीस गेले. सप्तमीचे लग्न संमंघ निलोराम कानविंदे यासि केला. लग्न होउन आठा रोजी येतील. मुख्य गोष्ट घरचा आग्रह दुखणेत होता त्याप्रो ईश्वरे सिध्दीस नेला. पुढे ऋणानबंध प्रमाण. साो सखु पाठविली त्याबाा सर्व लिहिले आहे. आपणाकडीळ वर्तमान लिहित जावे. चिरंजीव वाबुचे स्त्रीस देवी आल्या. फारच आल्या ईश्वरे बरे केले. वड्डत काये लीा हे विनंती.

लेखांक [४५५]

श्री * संवत १८२५ माघ वद्य ११

[४ मार्च १७६९]

जमा कारकुनी सुमा तिसा सितैन मया व आल्फता माहे सवाल छ * २४ रोज उर्फ माघ वद्य येकादसी जमा रुपये.

| | | | | | |
|--------------------|------|------|---------------------|------|------|
| पा झाहाजापुर | ३००० | २५० | भवानजी ताकपीर | ... | १५० |
| बिठळ येमाजी. | | | जिले पावागड. | | |
| पा सीतामड्ड गुा | ७०० | | पा आमझरे वीा | | २०० |
| हर जीवाजी. | | | मुकुंदराव महादेव. | | |
| पा राजगड गुा | ७५० | २५० | गोपालराव भगवंत | | ९० |
| दामाजी खंडेराव. | | | सीतामड्ड वा. | | |
| पा सुंदरसी व नेवरी | २००० | | [सिलेदार] | | |
| ५०० १५०० | | | रामसिंग पवार सिले | ३०० | |
| वीा दौलतराव बाबले. | | | दार | | |
| पा झोकरबडोद गुा | १००० | . | नांदखेले व सोनवनी. | ९६६ | ... |
| त्रिंबकजी इंगले. | | | मंडली सिलेदार. | | |
| पा वढवाई. | १००० | ३०० | कृष्णाजी बलाळ सिले. | ३०० | ... |
| पा दाहद गुा | १००० | ३०० | दार. | | |
| जयराम बाबुराव. | | | बिरोजी बाबले मंडली | १७० | ... |
| [सागो]रदिगठाण | १००० | ३०० | हिमतसिंग सुनेरकर | ३० | .. |
| गुा सेळ माा आमा. | | | हिंदूसिंग खीची | १०० | |

| | | | | | |
|----------------------------|------|------|-------------------------|-----|------|
| ता पावागढ गुा | १५०० | ... | आनंदराव नरसिंह | १५ | |
| केशो महादेव | | | आनाजी तुकदेव सिलेदार | १५ | ... |
| पाा धरगाव | ३०० | ... | उजलाजी काले | ७५ | . |
| पाा डोंगरपुर गुा | २०० | १०० | रामा गोसावी सिलेदार | ५ | |
| परसराम सोयराजी. | | | खलोजी घाटगे | २० | |
| जमिदार दाडुदकर | १००० | १०० | महिपतराव निबाळकर | २५० | |
| भिर्जा अबदुलरहीमवेग | ८५०० | | खेत्रोजी जाधव | ८ | . |
| मंदोसर सुभे आजमेर. | | | बुधसिं | ७ | |
| ३५०० ५००० | | | जानेखान | ६ | |
| हरबाजीराम | ३५०० | ५०० | मो बेनीराम | १६ | |
| जयराम पांडुरंग | | ३००० | बंनसीधर पेडगावकर | २९ | |
| पाा भोवरासे निा | ५०० | १०० | मीरसिकिदरशा | २५ | . |
| ज्ञामराव विस्वनाथ. | | | भवानी शंकर पौतनीस | | |
| महादाजी सिवजी | | ३०० | हरबाजीराम पावागढ. | | |
| शंकराजी पांडुरंग | | २०० | जीवाजी माणकेस्वर धरगाव. | | |
| केशों कृष्ण | | १०० | पथक कृष्णाजी बलाल. | | |
| कासीराव म्हाकुंदे | १८८ | | कारकून निा फडनीस. | | |
| इस्माईल बोहरी | ८ | ... | सदासीव बापुजी [फडनीस] | | |
| सावलदास केजमल | | २५ | गोविंद हरी. | | |
| प्रिथीमल मेवामल उजनकर | | ५० | बालाजी जनार्दन. | | |
| मयाराम मिर्धा जैसिंगपुरेकर | ... | ९ | रामचंद्र बलाल. | | |
| किसनसिंग सुंदरसीकर | | ५ | आबाजी रघुनाथ चिठणीस | | |
| हरलाल व्यास नवलईकर | | ३० | | | |
| काजी खाचरोकरद | | २२ | | | |
| जमिदार नवलईकर | | २० | | | |
| जमिदार पानब्याहर | | १२ | | | |
| काजी नवलईकर | | ५ | | | |
| मुसाहेबखान | | २५ | | | |

| | | |
|---------------------|-------|------|
| महमदअली बोहरी | | १५ |
| मनसाराम पटणी | | ३५० |
| उंटाचे कारकुनीबदल | | ११० |
| भारथसिंग घागलीकर | | ४०० |
| रुद्राजी खडेरार निम | ५०० | |
| घोर म्हसोदे. | | |
| हसनभाई बोहरी नि | ३५० | १५० |
| मुळाजी उजेनकर. | | |
| शालजोड्या | | २५० |
| | २८८०४ | ८८३७ |
| जमिदार बढवाईकर | | १०० |
| | २८८०४ | ८९३७ |

लेखांक [४५६]

श्री

[६ मार्च १७६९]

चिरंजीव राजश्री लालाजी प्रति भगवंतराव येरावंत आसिर्वाद उपरी. येथील कुशल माघ * बहुल त्रयोदसी जाणोन स्वकीये कुशल लेखन करीत जावे विशेष. बहुत दिवस तुम्हाकडील पत्र येहून वर्तमान कळत नहवते त्यास उदेभान कासिद याजबराबरी पत्र पाठविले [ते] पावोन संतोष जाहला. येणाराबा आपणाकडील बरवेपणाचे वर्तमान लिहित जावे. आम्हाकडील वर्तमान आजपो सर्व सुखरूप आहे. घरो दुखणेचे वर्तमान लिहावे म्हणून त्रिहिल त्यासी सहा महिने दुखणेने जेर केले. बौषधउपाये बहुत केले काही गुण आहे [ला] नाही. खोकलेने बहुत कष्ट आहेत. अहोरात्र खोकला. उपाये बहुत करितो. ऋणानबंध प्रमाण. बरकड राजकी वर्तमान लिहावे म्हणून ला [तरी] श्रीमंत माघ शुभ पंचमीस उभयेता दाखल जाहले. फौजा कर्नाटक प्राती रवाना केल्या. मागे हा मुलकात प्रजन्यामुले मर्हता जाहली. मृगशीर अखेर प्रजन्य बारा दिवसाची झडी चौ मुलकात जाहली. गंगातिरी साळू पेरले गहू पेरले उत्तम [उगवले.] वर्षा पेर स दुपट पीक आहे. खानदेशी सत्रब जाहले. सरकाराच्या पागा तमाम खानदेशात चारणीस आल्या. उंटेहती

तमाम आले यामुले काही आधेली रुये जास्ती आहे. चिरंजीव घनवाचा मूळ गुदस्ता मुंज वांधली तो वारला. रावोवास मध्यम रोजगार विनायकपंत करारडे यास दसऱ्याकडे सुभा त्याचेसमागमे पांचसे रुये देतात. सदासिव यास छहानसा महाळ सांगितला. राधोबाचे मुडीचे लग्न अचरेस होणार, जाले असेल. आत्माजी बलाळ कोंकणात गेले. येथे मात्र घनवाचे कुटुंब तो आहे. बहुत काय लिहिणे हे अशिर्वाद.

लेखांक [४५७]

श्री

[१८ अप्रेल १७६९]

श्रियासह चिरंजीव राजश्री लालाजीस प्रति भगवंतराव यशवंत कृतानेक आशिर्वाद उपरी. येथील कुशल चैत्र * शुभ १३ जाणून स्वकीये कुशल लखन करीत असिले पाहिजे विशेष. बहुत दिवस तुम्हाकडील पत्र येउन वर्तमान कळत नव्हते त्यास नशुबरावरी पत्रे पाठविली त्यावरी चिरंजीव वावुरायाचे मनुय आले त्यावा पत्र पाठविले तेही पावले. लीा वर्तमान कळो आले. मामलतीचे यथास्थित आहे म्हणून लिहिले ईश्वरे याच प्रकारे चालवावे. वरकळ आम्हाकडील वर्तमान मागा येकदोन वेळ लीाच होते त्या आलीकडील वर्तमान चिरंजीव कुशात्रास देवी आल्या. आज महिना जाहला. खपिल्या पळिल्या. मागाहून चिरंजीव रामचंद्रास देवी आल्या. लग्न करून येताच आल्या. आजचा नवा रोज आहे चोरपाणी घातले. तोंडावर वहुतच आल्या. डोल्यापासी आतिशये आल्या आहे. आंगावर माफकच आहेत. ईश्वर कल्याण करो. कोंकणात रवाना करणे जरूर होते परंतु मुलास देवी आल्यामुळे दिवस लागले. टाकून जाता नये. ऋणानबंध. राजकी वर्तमान श्रीमंत राजश्री रावसाहेब व दादासाहेब येकत्र जाहले. राा जानोजी मोसले याच्या भेटी जाहल्या. सौरस उत्तम प्रकारे जाहला. श्रीमंत दादासाहेब आनंदवलीस येणार. श्रीमंत कोरेगानी नवी हवेली तयार जाली तेथे येणार येसी वदंता आहे. आणखी दुसरा विचार [नाही] सौरस्य जाहले. वरकळ वर्तमान भेटीचे लीा तरी भेटी होईल तरी उत्तम. भरवसा कोणे गोष्टीचा नाही. ऋणानबंध भेटीचा असेल तरी होईल. घडीघडी पत्र पाठउन संतोषवीत जावे. चिरंजीव घोंडीबाईचे वर्तमान येकिले की अद्याप चालत नाही. हे काये. पांगुलगाडी करून घावी म्हणजे पायास जीव येईल. बहुत काय लीा हे अशिर्वाद.

लेखांक [४५८]

श्री * संवत १८२६ चैत्र शुद्ध १५
[२० अग्रेल १७६९]

राजभ्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
लालाजीबाबा स्वामीचे शेवेसी.

शेवक बाजी नरसिंढ सा नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता चैत्र * शुद्ध १५ गुा देहबरो नजीक उदेपूर जाणोन स्वकुशल लेखन करीत जावे विशेष. तुम्हा कडून पत्र येउन वृत कळत नसता कासिद पत्र घेउन आळा पर्याय सर्व कळला. यैसि यास श्रीमंत राजश्री पाटीलबाबा वारीपलीकडे उदेपुराजवळ जाउन राहिले आहेत. मोर्चे लविले. आमचे शरीरभावणेचे वर्तमान आदियापीवर प्रथम दिवस आहे. ईश्वरकृपे करून आरोग्यता^{२५} होईल. आपले वर्तमान निरंतर लेहून पाठवीत जावे. बहुत काये लिहिणे हे विनंती.

लेखांक [४५२]

श्री * संवत १८२७ चैत्र शुद्ध ३
[३० मार्च १७७०]

राजभ्रियाविराजित राजमान्य राजश्री
लालाजीबाबा व नारोवा नाना
स्वामीचे शेवेसी.

सेवक माणको बळाल कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल जाणोन स्वकीये लिला गेले पोा विशेष. आमचे वर्तमान ताा चडत्र * सुध ३ तीन मो कुंमेर जाटवाळा सुखरूप असो. काळजी न करणे. राजकी वर्तमान तो जाटाणे किले धरून बसला. जुजे बातनीसी नित्य होतात परंतु थोरले युदे काही जाले नाही. होताही दिसत नाही. कळ[कि]ले धरून बसला. पुढे पोा. तुम्ही कासिदावा पत्रे पोा ते पावली. सेकर नाईकाचा जाव घेतला आहे. श्रीमंत भाउचे पत्र येकादो रोजानी मागहून घेउन पोा.

(२२६) बाजीपत बाजारी पडला म्हणून उदेपुराहून उज्जनीस जात असता वाटेत मदेसरी ८ जून रोजी मेला. [पिद २९ ले ८७] गगाविष्णु वैद्य पुण्याहून मराठी सैन्याबरोबर उत्तरेस आला होता बाजीपतास वैद्याने रसायन दिले त्याप्रीत्यर्थ २५ हजार रोख व २ हजार हजाराचा गाव वश-परपरा घेतला. औपघाने गुण आला पण पुन्हा रोगाने उलट खाऊन बाजीपत दिवगत झाला असता गाव दूर झाला तो परत भिलण्यासाठी वैद्याने गान्हाणे नाना फडणिसाकडे केले [पिद ३९ ले. १२९] एवच सैनिकांच्या स्वास्थ्याची व्यवस्था या काळी कशी होती याची कल्पना होऊ शकते.

चिंता न करणे. आपण हुंडी रुपये दोन हजाराची रो त्रिंबक नाईकानी पो तो यैवज खामखाये देणे. आपले वाकीचे सा दोन हजार तुम्हाकडे होते तो यैवज शिवरामपंतास दिघळा असला तर तुम्ही आपल्यापासोन देणे वाकीसापैकी मो देउ परंतु चिठी मावारी न फिरे ते करणे. हुंडी उजणीची भिलाडा मणदोसर्ची करून घावी. अनमाण कगल तर तुम्हास आपली अपय असे. जैसे न होय की आकर नावल व नकार नावल देणे न पडे जैसे करणे. बहुत काये. ल्या कूपालोम असो दीजे हे विनंती.

पो छ २४ माहे जिल्हेज.

चैत्र वध ११ समत १८२६.

[२१ अप्रेल १७७०]

लेखांक [४६०]

श्रीमोरेस्वरप्रो

* संवत १८२७ वैशाख वध ८

[१८ मे १७७०]

राजश्रियाचिराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीबाबा स्वामीचे शेवेसी.

शेवक त्रिंबक सदासिव साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल ताा वो * वध ८ गुा अंतरवेद जवारची गढई नजीक जाणून स्वकीये कुशल लिहित जाणे विशेष. तुम्ही पत्र पाठविले ते पावले लिहिले वर्तमान कले आले. तुम्ही लिहिले की हुंडी रुपये २००० दोन हजार चालती उजेणची करून दिल्ली त्यास उतम जाहले परंतु उजेणचे कत्रज अजून आम्हाकडे पाठवणे. यानंतर तुम्हाकडे खासगत वाकी तो मजकूर काहीच लिहिला नाही त्यास यैवजपैकी कमल चौकीचा यैवज वजा करून वाकी यैवज उजेणीस पावता करून येकून यैवज दोन पाठउन देणे. आम्हास यैवजाची गरज आहे सबब तुम्हास लिहिले तरी सदरहू यैवजाचा कत्रजे आगत्य पाठवणे. उपर लेहावे तरी उपरोध दिसतो आम्हायोग्य कामकाज अस[ळ] ते लेहून पाठवणे. आमचा यैवज येणे ताा

१००० शिंदो योगीराज याणी तुम्हावर चालती उजेणीची

१००० मानको बलाल याणी तुम्हावर चाली उजेणीची ल्या

१६९७ खासगत याची तपसीळ पूर्वी ल्या

४६९७

सदरहू यैवज येणे पैकी तुम्ही लिहिले की रुपये दोन हजाराची हुंडी करून दिल्ली म्हणोन त्यास आमचे अडतीयाने लिहिले की ते जावसाल येसा देतात की रो

निश्चानंद भटजीचा वैवज येईल तेव्हा देउ आनी तुम्ही लिहिले की हुंडी करून दिल्ली. त्यास याच भाव काये हे उमजत नाही. तरी तुम्ही साकले मजकूर लेहून पाठवणे. बाकी येवज पैकी कळम चांकी रुपये ४०० ठेउन बाकीचा वैवज उजेणीस पावता करून कबज अम्हाकडे पाठवणे. यानंतर तुम्ही लिहिले की जबाहर[गढच्या] लढाईचा मजकूर लिहिणे त्यास चत्र शुध ११स कुंभेरीहून कूच करून तीन कोसाचा मुकाम केला. नंतर त्याणे त्रितीये प्रहरी ह्रीगबाहेर निघोन अलीकडे तीन कोस आला तो बातमीची फौज उमी होती. त्यास तेथून बातमी मुकामी आली मग येथून तीम्ही फौजा तयार होउन सोपर गेले. त्यास सायंकाल आला. मग शाहावर गोष्ट पडली सबब तोही गुतला आणि आपल्याही फौजा गुंतल्या. मग रात्री लढाई जाली. त्यास श्रीमंत पाटीलबाबा याचे तोफेचा मार कबरग्यास बसला सबब गोल होता तो फुटला. मग तरवारसी गाठ पडताच पळ पडताच पळ सुटला. मग फौज छुटली. आपलेकडे छट हती पांच तोफा अठरा गंजिप्याच्या गाळ्या पांच वगैरे घोडी बंदूक सुमार नाही. सिवा छटचा [मार] राा रामचंद्र गणेश [कानडे] याजकडे थोडीच आली आणि होळकर याचेही लस्करात छट गेली. आपणास कळवे. बहुत काय लािा हे विनंती.

पो छ ५ माहे सफर.

जेष्ठ सुध ७ समत १८२७. मुा कोटे
[३१ मे १७७०]

लेखांक [४६१]

श्री * संवत १८२७ ज्येष्ठ शुद्ध ७
[३१ मे १७७०]

राजभ्रियाविराजित राजमान्य राजश्री

लालाजीबाबा [गुलगुले] यांसि.

प्रती चिंतामणमठ झेंडे^{२२०} कृतानेक आशिर्वाद उपरी. येथील कुशल ता जेष्ठ

* शुद्ध सप्तमी मुा सोनई नजीक गोकुल प्रो आंतरवेद जाणून स्वकीये कुशल लेखन केले पो विशेष. आपण येथून गेलियाता पत्र येउन परामृष होत नाही तरी जैसे न करावे. हरघडी येणारासमागमे पत्रन्दारे सांभाल केला पो. यानंतर आम्हाकडील वर्तमान तरी त्रिवर्ग सरदार यानी जाटासी लढाई केली. त्याचा मोड जाहला. आपले

(२२७) शिद्याचे मूळ उपाध्ये विपट असून बोडे हे त्याचे जावई होते या वेळी जें राज्यो-पाव्येपण याजकडे आले ते आजवर सतत चालत आले आहे काही काळाने विपटही परत आले पण त्याचा सबब पुरोहित म्हणून राहिला नाही

येजमानानी बहुतच त्याचा पराभव करून हाती व तोफा पाडाव करून आणल्या. त्याची मामलत होती तो नजीबखान राजश्री तुकोजी होळकर याची आणून राजश्री रामचंद्र- [कानडे] यासी भेटविला. त्रिवर्ग सख्य जाहाले त्याजमुळे त्या उमयेताचे येजमानाचे चित शुध्दता नाही. आता रोहिल्यानी मसलत दिल्ली ती त्या उमयेतानी यंकून येथे येउन वसिले आहेत. आता खर्चाची व वैरणीची विपल्य पुढे नदीस पाणी आल्यावरी धान्याचीही छोईल र्थसी दिसती. परिणाम काही उत्तम दिसत नाही. आपणास कळावे म्हणून लीा असे. आपण येथून जातेसमई राजश्री द्वाणकोपंत नाना याचे विद्यमाने वर्षासनाचे तीनसे रुपये पाठउन देतो म्हणून करार केला. त्यासी आघाप काही येवज पाठविला नाही. तरी सदरहु रुपये तीनसे राजश्री त्रिवकरावजी यासी देविले आहेत तरी त्यासी देउन त्याचे कत्रज ध्यावे. सरजाम आपणास करावयासी सांगितला होता त्यासी दागिणे उत्तम करावे आणि त्रिवकरावजीचे स्वाधीन जो जिनस होईल तो करावा. सरजाम वडूत अपूर्व केला पागे. श्रीमंताचे पसदील्याख होय तो करावा. आपला भरवसा जाणून आम्ही सरजामा विसी बेफिकीर आहो. वडूत काय लिहिणे कृपालोभाची वृथी केली पागे हे आशिर्वाद.

लेखांक [४६२]

श्रीगजानन * संवत १८२७ आषाढ शुद्ध १२

[४ जुलै १७७०]

[तालीक]

वेदशास्त्रसंपन राजश्री रामभट विन नारायणभट

गडबोले. गोत्र कोसिक सूत्र [हिर]ण्यकेशी

वास्तव्य क्षेत्र माडुलीसंगम. स्वामीचे सेवेसी.

विद्यार्थी त्रिवकराव विश्वनाथ आठवले माहाजन मोजे सौमेश्वर ताा धरचिरी प्रांत राजापूर तालुके रत्नागिरी सांग नमस्कार विनंती. सुमा इहिदे सवैन मया व अलफ. शके १६९२ विक्र[ती]नाम संवसरे आषाढ शुद्ध व्दादसी तीर्थरूप कैलासवासी^{३३} विसाजी दादाजी यांचा काल शुद्ध प्रतिपदेस जाहला याजकरिता तुम्हास दत्त जमीन आपणास सरकाराद्वज मोजे खेड ता सातारा येथे आहे त्यापेकी जमीन x x बीघे

(२२८) पहा ले २६७ टीप १५४ विसाजी आठवले याची निघनतिथी या पत्रात सापडते. हे धरणे फाळक्याची पाडळी तालुके कोरेगाव या गावी वास करीत असून त्याजकडे काही कागदही आहेत ते पुढे मालेत बहुवा. पहावयास मिळतील

८ १ मलें जमीन

८ ४ कोरखवह.

८ ५

सदरहु पाच बीघे जमीन तुम्हास बारावे दिवसी दत्त दिल्ली असे. तरी तुम्ही व तुमचे पुत्रपौत्रादिवीशपरपरें अनभवणे. जाणजे छ * १० रोवळ. बहुत काये लिहिणे कृपालोम कीजे हे विनंती.

लेखांक [४६३]

श्री * संवत १८२७ भाद्रपद शुद्ध ५
[२५ अगस्ट १७७०]

राजभियाविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजीबाबा स्वामीचे शेवेसी.

सेवक माणको वळाल व शिंदो योगीराज कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनंती उपरी. येथील कुशल ता भाद्रपद * सुध ५ मुा नजीक सादणी प्रांत अंतरवेद जाणून स्वकीय कुशल लिहित जाणे विशेष. राजश्री मोजीराम शेठ आगरेकर यास रुपये १००० येक हजारार्ची चिठी लेहून दिल्ली गुमानशाहीची ते रुपये जरूर द्यावे. माघारे न फिरवावी. जरूर येवज द्यावा. निकळ जाणून देविले गुमानशाही रुपयाकरिता मनात शंभय चितात न आणावा. रुपये मुदतीप्रो द्यावे. इकडील मजकूर तरी दोन महिने फौजा याची राणात आहेत. नजीबखान व त्रिवर्ग सरदार याच राणात आहे. जाटासी मामलात आद्यापि जाली नाही. हामतखान वगैरे याचा बंदोबस्त काहीच नाही. आद्यापि प्रथम दिवस. तुम्हापासून आल्यावर त्रिवर्गस येक रुपया मिळाला नाही याप्रो हवाल आहे. आम्ही कर्ज खातो कळवे. बहुत काय लिहिणे हे विनंती.

हो राजश्री नारोबा नानास सा नमस्कार. ल्या परिसीजे. रुपये जरूर द्यावे. चिठी दुसरी आहे. हे पत्र मात्र लिहिले गुमानशाही द्यावे. हे विनंती. चिठी निराली आहे आज मितीची आहे शेठजीस दिल्ली हे हुंडी पत्र निराले त्याजरून देणे. हे विनंती.

लेखांक [४६४]

श्री * संवत १८२७ पौष शुद्ध ६
[२३ दिसवर १७७०]

राजभियाविराजित राजमान्य राजश्री

लाळाजीबाबा स्वामीचे सेवेसी.

सेवक माणको वळाल व शिंदो योगीराज कृतानेक सा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल जाणोन स्वकीय ल्या शेठे पागे. राजकी वर्तमाने विटाव्यास मोचे

छाविले होते किंवा घेतला. पुढे तीनी फीजा मिलोन फरकावादेस जातात. त्रिवर्ग सरदार येकरीत नाहीत. उभयेता येकरीत होत. आपल्या येजमाण्णी उभयेतासी बनत नाही. येसी गत आहे. आपला येवज आता काळीमात्र न ठेवणे. पेसजी ल्या होते की महारावजीकडोन वारा वसूल जाले. बाकी दाहा राहिले वस्त गाहन ठेवन येवज सिपायाच्या धन्यास पावता करावा. चिठ्या माघारे न येत ते गोष्ट करणे. आपला आमचा भाउपना याजकरिता आपण हे गोष्ट केली आनि ते गोष्टीस दिरिंग लावला आनि चिठ्या माघारा आल्या हे काये तर आता केल्या चिठ्या न माघान्या येईत ते करावे. इतकियाजवर आपली मर्जी प्रो बहुत काये ल्या हे विनंती. मीती पूस * सुधे ६. हे विनंती.

लेखांक [४६५]

श्री

* संवत १८२७ माघ शुद्ध ५

[२१ जनवरी १७७१]

राजश्रियाविराजित राजमान्ये राजश्री

लालाजीबाबा स्वामीचे शेनेसी.

सेवक माणको बलाळ व शिंदो योगीराज कृतानेक साा नमस्कार विनंती उपर. येथील कुशल जाणोन स्वकीये ल्या गेले पाो विशेष. आमचेव तमान ताा माघ * सुध ५ पंचेमीपावेतो सुखरूप असो. काळजी न करणे. तुम्ही पत्र पाो ते पावले. ल्या वर्तमान कळो आले. राजकी वर्तमान तर त्रिवर्ग सरदार येकचित नाहीत. मणसुमा येकाचा येक येकत नाही. दरवार आपला उत्तम. चिता न करणे. श्रीमंत भाउनी पत्र ल्या आहे ल्याजवरून कळो येईल. आपण तुम्हावर चिठ्या केल्या आहेत ब्रितपसीळ रुये.

५००० त्रिंबक नाा कोहले याजला देविले रुये

२००० गुमाणशार्ई.

३००० उजनची हुंडी मिळाडा मनदसोर्

५०००

१२०० मोजीराम छेजमल याजला देविले

येकून बासटसे रुये देण आनि कचजे घेउन पो. अनमाण न करणे. आगल्यरूप येवज ल्याप्रतो देणे. पेसजी ल्या होते की दोन हजार व येक हजार यो तीन हजार ल्याजपैकी येक हजार व दोन हजार ह्या पाचात आहेत. तुम्हास कळावे. बहुत काये ल्या कृपालोम असो दीजे हे विनंती

स रो नाना व राघोबास साा नमस्कार. ल्या परिसीजे हे विनंती. पाटणचा मार ल्या ल्यास पुढले वर्सा करून घेठ. काळजी न करणे हे विनंती.

पैा छ १३ माहे सवाल.

संमत १८२७ माघ शुद्ध १५.

[३० जनवरी १७७१]

लेखांक [४६६]

श्रीरामजी * संवत १८२८ मार्गशिर्ष शुद्ध १

[७ विसंवर १७७१]

सिद्धिशी सर्वोपमा महाराज श्रीमहाराव उमेदसिंघजी जोग्य पंडत श्री दिवान राघो मल्हारजी केन आशिर्वाद वाचा, आठा का समाचार भला छै. राज का सदा भला चाहिजे. अपरंच. आप का कागदपत्र आया वा फीतराक समाचार राज की तरफ का राजश्री जालिमसिंघजी वा पंडत श्री लालाजी के लिखे सूं जाहार हुआ ती सूं अठा से समाचार उनी दोनोही क् लिखा छे. सू राज सो जाहर करशी. मिति आगहन * सुदी १ साा १८२८. मुकाम नजिक दरयागंज अंतरवेद.

व्यक्तिसूची.

| व्यक्तिविशेष. | साल. | लेखांक. | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल. | लेखांक. | पृष्ठ. |
|---------------------|------|---------|-------|-------------------------|------|---------|--------|
| अ | | | | अवदाली अहमदशाह. | १७६० | ३९० | ३१९ |
| अकोबा | १७७८ | २४० | १९४ | | | ३९१ | ३२० |
| अगासे | १७५५ | २९५ | २३५ | | १७६१ | २३६ | १८९ |
| अगासे गणेशभट | १७५४ | १५६ | १३१ | अबदुल मजीदखान कछपेवाले. | | | |
| अगासे रामाजी नारायण | १७५५ | १६२ | १३४ | | १७५७ | ९० | ६७ |
| | | ३०९ | २५० | अबदुल रसूल | १७५५ | १७० | १४० |
| अच्युतराव गणेश | १७६४ | ४२१ | ३५३ | अबदुल समदखान | १७५८ | ९४ | ७२ |
| | | ४२२ | ३५७ | | १७६० | २३४ | १८७ |
| | १७६५ | ४३० | ३६३ | | | ३९२ | ३२२ |
| | | ४३२ | ३६५ | अमानसिंग बुदेला | १७५५ | ३१५ | २५५ |
| | १७६७ | ४४१ | ३७३ | अमृतराव शंकर | १७४६ | ४ | ४ |
| अदीनाबेग मोगल | १७५८ | ९४ | ७३ | | १७५५ | २९५ | २३५ |
| | | ९६ | ७४ | अलीवहादुर. | १७९० | १२४ | १०३ |
| | | ९७ | ७५ | अहमदखा बंगव | १७५१ | १३ | ११ |
| | | ९८ | ७६ | | १७५५ | ३३० | २७१ |
| | १७५९ | १०१ | ८० | अहीर | १७६१ | ३९६ | ३२८ |
| अनसहीखान | १७५२ | २५४ | २०६ | अंताजीपत | १७५४ | १४७ | १२१ |
| अनाजी तुकदेव | १७६९ | ४५५ | ३८६ | अतो ब्राह्मण | १७५४ | १५० | १२६ |
| अवदाली अहमदशाह | १७५२ | २०३ | १६३ | आ | | | |
| | | २०४ | १६६ | आकोलेकर राजाराम भवाजी | | | |
| | १७५७ | ८९ | ६७ | | १७६१ | ३९७ | ३२९ |
| | | १७७ | १४४ | आखेराम बकसी | १७५१ | १३९ | ११६ |
| | १७५८ | ९४ | ७३ | | | १४१ | ११७ |
| | | ३७६ | ३११ | | | १५१ | १२६ |
| | १७५९ | १०० | ७९ | | १७५४ | १५२ | १२७ |
| | | १०२ | ८३ | | | १५३ | १२८ |
| | १७६० | २३३ | १८६ | | | १५४ | १२९ |
| | | २३४ | १८७ | | १७५५ | १६९ | १३८ |
| | | | | | १७५६ | १७६ | १४३ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक. | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|------------------------|------|--------|-------|---------------------|------|-------|-------|
| आखेराम बकमी | १७५६ | १७६ | १४४ | आठवले विकामी दादाजी | १७५५ | २९५ | २३६ |
| | १७६० | ३९२ | ३२१ | | | ३०५ | २४६ |
| | | ३९२ | ३२५ | | | ३१० | २५० |
| | १७६३ | ४१५ | ३४७ | | | ३२७ | २६८ |
| | | ४१६ | ३४८ | | | ३७१ | ३०७ |
| | | ४१७ | ३४९ | | १७५८ | ३७७ | ३१२ |
| | | ४१९ | ३५० | | १७७० | ४६२ | ३९२ |
| | १७६४ | ४२१ | ३५३ | आण्णा | १७५३ | १४३ | ११९ |
| | १७६५ | ४३० | ३६३ | आत्माराम रघुनाथ | १७६८ | ११७ | ९१ |
| | १७६८ | ४४४ | ३७६ | आत्माजी बलाळ | १७६९ | ४५६ | ३८८ |
| आग्नेकर भोजीराम छेजमल | | | | आनदराव धर | १७६८ | ४५० | ३८१ |
| | १७७० | ४६३ | ३९३ | आनदराव राम | १७५७ | ३५७ | २९६ |
| | १७७१ | ४६५ | ३९४ | आनदराव नारायण | १७६० | ३९१ | ३२१ |
| आग्ने मुलाजी | १७५८ | १५६ | १३० | आनदराव नरसिंह | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| | १७५५ | ३२६ | २६७ | अनाजी कातो उन्हेलकर | १७५९ | १८८ | ११० |
| | | १६० | १३३ | आनदराव जमिदार | १७५२ | ३१ | २४ |
| | | १६२ | १३४ | | | २५४ | २०६ |
| | | १६० | १३० | आनदीबाई | १७६९ | ४५४ | ३८४ |
| | | १६२ | १३५ | | १७६७ | ४१ | ३७३ |
| „ मानाजी | १७५५ | १६० | १३३ | आनुबाई | १७५७ | ३५७ | २८८ |
| आठवले शिबकराय विश्वनाथ | | | | आपाजीपत | १७५४ | २६७ | २१५ |
| | १७७० | ४६२ | ३९२ | | १७५६ | ३३६ | २८१ |
| „ बालाजी कृष्ण | १७५५ | २९५ | २३६ | आपाजीराम | १७६८ | ४४८ | ३७१ |
| „ राघो हरी | १७५५ | १७० | १४० | आवाजीपत | १७६४ | ४२२ | ३५६ |
| | १७५७ | ३६२ | २९९ | आवाजी महादेव | १७६८ | ४४६ | ३७८ |
| | १७६० | ३८६ | ३१६ | आवाजीराव | १७५९ | ३७९ | ३१३ |
| | | ३८९ | ३१९ | आवढी | १७५८ | ३७१ | ३०७ |
| „ लक्ष्मण हरी | १७५८ | ३७२ | ३०८ | आवेडकर | १७६८ | ४४६ | ३७९ |
| „ विसाजी दादाजी | | | | | | | |
| | १७५४ | १५४ | १२१ | इम्रज | १७५९ | १६० | १३३ |
| | | २६७ | २१५ | | | १६२ | १३५ |
| | | २७४ | २२१ | | १७६१ | ४०१ | ३३७ |
| | | २७३ | २२१ | इगळे शिबकजी | १७६९ | ४५५ | ३८५ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल. | लेखांक | पृष्ठ. |
|---------------------|------|--------|-------|-------------------|------|--------|--------|
| हगले चित्रकजी | १७६९ | ४३७ | ३७० | कछवा | १७६१ | २३५ | १८८ |
| ठदलकर सिदोजी | १७६३ | ४१० | ३४२ | ,, माधवसिंग | १७४८ | १९८ | १५७ |
| इवापुरकर भाणको बलाल | १७६५ | ४३६ | ३६९ | | १७५४ | ४२ | ३३ |
| | | ४३७ | ३७० | | | १५० | १२५ |
| | १७७० | ४५९ | ३८९ | | १७५५ | १६८ | १३८ |
| | | ४६० | ३९० | | | १७० | १३९ |
| | | ४६१ | ३९२ | | | १७२ | १४१ |
| | | ४६३ | ३९३ | | | ३२० | २६० |
| | | ४६४ | ३९३ | | १७५६ | १७६ | १४३ |
| | १७७१ | ४६५ | ३९४ | | | ३३५ | २८० |
| इब्रसेन [Anderson] | १७८४ | १२३ | १०२ | | १७५९ | ११२ | १९५ |
| | | | | | १७६१ | ३९४ | ३२६ |
| उ | | | | | | ३९६ | ३२७ |
| उदेभान कासिद | १७६९ | ४५६ | ३८७ | | | ३९७ | ३३० |
| उदेरामजी | १७४९ | २४९ | २०३ | | १७६३ | ४१५ | ३४७ |
| ओ | | | | ,, सवाई ईश्वरसिंग | १७४८ | १४८ | १५७ |
| ओडेकर चित्रक गिणवेव | १७५४ | २६१ | २१० | कटारा रूपराम | १७५१ | ३०६ | २४७ |
| | १७६० | ३९४ | ३२६ | | | ३०७ | २४८ |
| | १७६१ | ३९४ | ३२६ | | | ३१२ | २५१ |
| | १७६२ | ४०९ | ३४१ | | १७५८ | ४२ | ३३ |
| | १७६३ | ४१३ | ३४४ | | | २६५ | २१४ |
| | १७६९ | ४५२ | ३८२ | | | २७२ | २२० |
| ,, वाळोवा | १७६० | ३९३ | ३२६ | | | २७६ | २२२ |
| ,, रगराव सिववेव | १७५१ | २५१ | २०४ | | | ४५ | ३४ |
| | १७५४ | २०५ | १६८ | | | १४९ | १२३ |
| | | २६१ | २१० | | | २०६ | १६९ |
| ,, मिवाजी गकर. | १७४७ | २४७ | २०२ | | | २८१ | २२५ |
| | | २६८ | २०३ | | १७५५ | ३०२ | २४३ |
| ,, भगवतराव | १७४७ | २४७ | २०२ | | | ३०६ | २४७ |
| | | २४८ | २०३ | | | ३०७ | २४८ |
| क | | | | कटारा रूपराम | १७५७ | ३५४ | २९२ |
| कछवा | १७५५ | २१६ | १७५ | कठपेकर | १७५७ | ९० | ६७ |
| | १७५६ | ३३५ | २८० | | १७६१ | ४०१ | ३३५ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ. |
|-----------------------|------|-------|--------|
| कणीराम | १७५४ | ४२ | ३३ |
| | १७५५ | ३०६ | २४८ |
| वदम इन्द्रोजी | १७५७ | ९० | ६७ |
| „ गणोजी | १७६३ | ४१० | ३४२ |
| | | ४१५ | ३४७ |
| | | ४१७ | ३४८ |
| | १७६४ | ४२१ | ३५३ |
| | | ४२२ | ३५७ |
| „ जानोजी | १७४० | २४४ | २०१ |
| „ भगवतराव | १७५७ | ९० | ६७ |
| करवडकर | १७६७ | ४४१ | ३७३ |
| करवे केशवभट | १७५७ | ८६ | ६५ |
| करमरकर रामाजी | १७६३ | ११५ | ९८ |
| करनूलकर | १७६१ | ४०१ | ३३५ |
| कराडे विनायकपत | १७६९ | ४५६ | ३८८ |
| करोलीकर गोपालसिंग | १७५४ | १५० | १२५ |
| कलवडे अनंत शंकर | १७७८ | २४० | १९४ |
| कवडे | १७६८ | ४४६ | ३७७ |
| कविजग | १७५२ | २५४ | २०६ |
| कृष्णाजी केशव | १७५५ | ३१६ | २५६ |
| कृष्णाजीपत | १७४३ | १२७ | १०७ |
| कृष्णाजी महादेव | १७५८ | ३६९ | ३०५ |
| कृष्णाचार्य | १७६४ | ४२८ | ३६३ |
| कृष्णाजी बलाल सिलेदार | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| कृष्णरावजी मुनसी | १७६१ | ४०१ | ३३५ |
| कृष्णाजीपत | १७५५ | ३२३ | २६४ |
| | १७५८ | ३६९ | ३०५ |
| | १७५९ | १८८ | १५७ |
| | | ३७६ | ३१२ |
| | | ३७१ | ३०८ |
| काकडे महादाजी गोविंद | १७५८ | ३६८ | ३०४ |
| | १७५९ | १०९ | ९१ |
| काजी खाचरोवकर | १७६९ | ४५५ | ३८६ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|----------------------|------|-------|-------|
| काजी नवलईकर | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| कानडे रामचंद्र गणेश | १७५५ | २९७ | २४० |
| | १७६९ | ४५३ | ३८३ |
| | १७७० | ४६० | ३९१ |
| | | ४६१ | ३९२ |
| कान्या | १७६५ | ४३४ | ३६७ |
| कानविदे निलोराम | १७६९ | ४५३ | ३८३ |
| | | ४५४ | ३८५ |
| कान्होपत तुपवाढ्या | १७३७ | २४२ | २०० |
| कासी रामचंद्र | १७५९ | ३८३ | ३१५ |
| काष्टीकर चितो नारायण | १७५७ | ३५० | २९० |
| | १७६० | ३८७ | ३१७ |
| „ ब्रकाजी नारायण | | | |
| | १७५७ | ३४९ | २८९ |
| कासी नरसिंह | १७६३ | ४१६ | ३४८ |
| काळे समाजी | १७६३ | ४१७ | ३४९ |
| „ उजलाजी | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| कितूरकर | १७५५ | २९५ | २३५ |
| किशनसिंग सुदरसीकर | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| कुटे माहादाजी नारायण | १७५४ | २६२ | २११ |
| | | २६३ | २१२ |
| | १७५५ | ३०९ | २५० |
| कुतुबशाहा | १७६० | २३४ | १८७ |
| | | ३९२ | ३२२ |
| कुशावा | १७६९ | ४५४ | ३८४ |
| | | ४५७ | ३८८ |
| कुळकर्णी खडो सदाशिव | १७७८ | २४० | १९४ |
| „ दादो अनंत | १७५७ | ३५० | २९० |
| „ विसाजी बाबाजी | | | |
| | १७५८ | ३७४ | ३०९ |
| „ विठ्ठल नारायण | १७४० | २४४ | २०१ |
| केशो कृष्ण | १६९ | ४५५ | ३८६ |
| केसो गोपाल | १७५७ | ३५४ | २९२ |

| व्यक्तिविशेष | साल. | लेखाक | पृष्ठ. | व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|-------------------|------|-------|--------|------------------------|------|-------|-------|
| केसो गोविंद | १७५९ | ११० | ९३ | कोटेकर [महाराव] | १७६७ | ४४१ | ३७३ |
| केसोराम नागर राज | १७५५ | ३३० | २७१ | | १७६९ | ४५४ | ३८४ |
| केसो महादेव | १७६९ | ४५५ | ३८६ | | १७७० | ४६४ | ३९४ |
| केसो विश्वनाथ | १७५८ | ३७३ | ३०९ | „ अजीतसिंग | १७५८ | २३० | १८४ |
| केशव सामराज | १७६३ | ४१९ | ३५२ | „ उमेवसिंग | १७७१ | ४६६ | ३९५ |
| | १७६४ | ४२६ | ३६० | „ गुमानसिंगजी | १७६५ | ४३८ | ३७० |
| | | ४२७ | ३६२ | „ छत्रसाल | १७६५ | ४३४ | ६३५ |
| कोटेकर [महाराव] | १७४९ | १२९ | १०९ | „ दुर्जनसाल | १७५२ | १४२ | ११८ |
| | १७५३ | १४४ | ११९ | | | २७३ | २२१ |
| | | १४५ | १२० | | १७५४ | १५६ | १२९ |
| | १७५४ | १४६ | १२१ | | | १९४ | १५३ |
| | | १४८ | १२३ | | | २६७ | २१६ |
| | | १४९ | १२३ | | | २७४ | २२२ |
| | | १५१ | १२६ | | १७५६ | ३३९ | २८३ |
| | | १५२ | १२७ | | १७५७ | ३६२ | २९९ |
| | | १५३ | १२८ | | १७५८ | २३० | १८५ |
| | | १५४ | १२९ | | | ३७२ | ३०८ |
| | | १५७ | १३१ | | १७६१ | १९५ | १५४ |
| १७५५ | १५८ | १३२ | | कोयबिरे जाणोजी | १७७८ | २४० | १९४ |
| | १६४ | १३६ | | कोनेर केशव | १७६९ | ४५२ | ३८२ |
| | १६८ | १३८ | | कोनेरपत त्रिवक विनायक. | | | |
| १७५६ | १७५ | १४२ | | | १७५० | ७ | ७ |
| | १७६ | १४३ | | कोल्हे बाबाजी | १७५५ | १७० | १४० |
| | ३४० | २८४ | | „ खडोजी | १७५४ | १५० | १२६ |
| १७५८ | २३० | १८४ | | कोली राजा जव्हारकर | १७५८ | ९१ | ७१ |
| १७६० | ३८६ | ३१७ | | कोशे रघुनाथ गणेश | १७५५ | ३०९ | २५० |
| १७६१ | १९४ | १५३ | | कोहले त्रिवक नाईक | १७७० | ४६५ | ३९४ |
| १७६३ | ४१५ | ३४६ | | ख | | | |
| | ४१६ | ३४७ | | खगारोत अनसुद्धसिंग | १७५५ | १७२ | १४० |
| | ४१९ | ३५० | | | | २१५ | १७५ |
| १७६४ | ४२१ | ३५३ | | | | २१६ | १७६ |
| १७६५ | २३९ | १९२ | | | १७५६ | १७५ | १४२ |
| | ४३१ | ३६५ | | | | २१८ | १७७ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष. | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|-------------------|------|-------|-------|-----------------------|------|-------|-------|
| सदारकर मजे वद | १७५२ | ३१ | २४ | खेर गोविंद बल्लाल | १७५७ | ८५ | ६५ |
| | | २५४ | २०६ | | १७५९ | १०२ | ८३ |
| खराडे तानाजी | १७६४ | ४२२ | ३५७ | | | १८८ | १४० |
| खरे वामुदेवभट | १७७८ | १२१ | १०१ | ,, बाबुराक बुदले | १७६८ | ४४६ | ३७८ |
| खाडेकर गणेश समाजी | १७६३ | ४१६ | ३४८ | ग | | | |
| खानखाना | १७५४ | २७२ | २२० | गजबाजखान | १७५८ | ९४ | ७३ |
| | | २८१ | २२५ | गडबोले रामभटनारायण | १७७० | ४६२ | ३९२ |
| | | २८२ | २२५ | गणेशपत | १७५२ | १४२ | ११८ |
| | | २८४ | २२७ | | १७६१ | ३९६ | ३२७ |
| | | २८५ | २२८ | गणेशराम [कानड] | १७५६ | १५० | १२५ |
| | १७५५ | २९० | २३१ | गवरे विष्णु महादेव | १७५४ | ४८ | ३६ |
| खानखालम | १७५१ | १९ | १८ | | | २७९ | २२४ |
| | १७५२ | ३२ | २५ | | १७५५ | ३१२ | २५३ |
| | | २५४ | २०६ | | | ३२२ | २६४ |
| वामकर कुसाजी | १७६१ | २३६ | १८९ | | १७५६ | ७६ | ५९ |
| खिजमतराज गोविंद | १७५९ | ३८० | ३१३ | | १७५७ | ८६ | ६५ |
| ,, महारपत | १७५९ | ३८१ | ३१४ | | १७६४ | ४२१ | ३५३ |
| ,, विठ्ठलराव | १७५९ | ३८० | ३१३ | | | ४२३ | ३५९ |
| खीची हिंदुसिंग | १७६९ | ४५५ | ३८५ | गनीमिया | १७५७ | ९० | ६७ |
| खुमानसिंग | १७५४ | २७९ | २२४ | गनेजा | १७६७ | ४४१ | ३७३ |
| खुगालचद वकील | १७६० | ३८८ | ३१८ | मलमलेकर धर्मराव तमाजी | | | |
| खुशाल वामण | १७६५ | ४३४ | ३६७ | | १७६४ | ४२१ | ३५३ |
| खुबचद | १७६० | ३८८ | ३१८ | | | ४२२ | ३५६ |
| खेर गोविंद बल्लाळ | १७५४ | ८५ | ६५ | | | ४२७ | ६६२ |
| | | २६८ | २१६ | ,, बाळजी गोविंद | | | |
| | १७५५ | २९२ | २३२ | | १७६६ | ४२७ | ३६२ |
| | | ३१२ | २५२ | | १७६७ | ४४० | ३७२ |
| | | ३१४ | २५४ | | १७६८ | ४५० | ३८१ |
| | | ३१६ | २५६ | गव्हाणे विठ्ठजी. | १७५४ | १५० | १२३ |
| | | ३२० | २६० | गाजेकर खडीजी | १७७८ | २४० | १९४ |
| | | ३२९ | २६९ | गाडवे रघुजी | १७६४ | ४२२ | ३५७ |
| | | ३३३ | २७३ | गायकवाड [माजी] | १७५१ | ९ | ८ |
| | | ३४२ | २८५ | | | १६ | १५ |
| | १७५६ | ७७ | ६० | | | | |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक. | पृष्ठ |
|----------------------|------|--------|-------|
| गायकवाड [दमाजी] | १७५२ | २९ | २३ |
| | १७५८ | ९५ | ५३ |
| „ सयाजी | १७५८ | ९५ | ७४ |
| गारदी नुजफरखान. | १७५३ | ३८ | ३० |
| | | ३१५ | २५५ |
| | | ३१६ | २५७ |
| | | ३२६ | २६७ |
| | १७५६ | ३३५ | २८० |
| „ हरीसिंग | १७६३ | ४११ | ३४३ |
| गिरमाजी खडेरार | १७५४ | १५० | १२६ |
| गुजर येमाजी | १७५४ | १५० | १२३ |
| | १७६३ | ४१० | ३४२ |
| गुजाळ हैवतराव | १७५४ | १५० | १२३ |
| गुडो महादेव | १७६० | ३९० | ३१९ |
| गुणभरीत मल्हारगोविंद | १७६४ | ४२० | ३५२ |
| गुरुजी महादाजी बलाळ | १७६१ | ४०५ | ३३९ |
| गुलगुले बाळाजी येसवत | १७४३ | १२७ | १०७ |
| | १७४६ | १२८ | १०९ |
| | | १९६ | १५५ |
| | १७४७ | १९७ | १५६ |
| | | २४७ | २०२ |
| | | २४८ | २०३ |
| | १७४८ | १९८ | १५७ |
| | | १२९ | १०९ |
| | १७४९ | १९९ | १६० |
| | | २०० | १६१ |
| | १७५० | १३० | ११० |
| | | १३१ | १११ |
| | | १३२ | १११ |
| | | १३३ | १११ |
| | | १३४ | ११२ |
| | | १३५ | ११२ |
| | | १३६ | ११२ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ |
|----------------------|------|--------|-------|
| गुलगुले बाळाजी येसवत | १७५० | १३७ | ११३ |
| | १७५१ | १३९ | ११६ |
| | | १४० | ११७ |
| | | १४१ | ११७ |
| | | २०२ | १६२ |
| | १७५२ | २०३ | १६३ |
| | | २०४ | १६६ |
| | १७५३ | १४४ | ११९ |
| | | १४५ | १२० |
| | | १४६ | १२० |
| | | २५७ | २०८ |
| | १७५४ | १४८ | १२२ |
| | | १५१ | १२६ |
| | | १५२ | १२७ |
| | | १५३ | १२८ |
| | | १५४ | १२९ |
| | | १५५ | १२९ |
| | | १५७ | १३१ |
| | | २०५ | १६७ |
| | | २०६ | १६५ |
| | | २०७ | १६९ |
| | | २०८ | १७० |
| | | २६१ | २१० |
| | १७५५ | १५८ | १३२ |
| | | १५९ | १६२ |
| | | १६१ | १३४ |
| | | १६३ | १३६ |
| | | १६४ | १३६ |
| | | १६५ | १३६ |
| | | १६६ | १३७ |
| | | १६७ | १३७ |
| | | १६८ | १३८ |
| | | १६९ | १३८ |

| व्यक्तिविशेष. | साल. | लेखांक. | पृष्ठ. |
|----------------------|------|---------|--------|
| गुलगुले बाळाजी येशवत | १७५५ | १७० | १३९ |
| | | १७१ | १४० |
| | | १७२ | १४१ |
| | | १७३ | १४१ |
| | | १७५ | १४२ |
| | | २०९ | १७१ |
| | | २१० | १७१ |
| | | २८८ | २३० |
| | | ३३४ | २७५ |
| | | २११ | १७२ |
| | | २१२ | १७३ |
| | | २१३ | १७४ |
| | | २१४ | १७४ |
| | | २१५ | १७५ |
| | | २१६ | १७५ |
| | १५५६ | १७४ | १४२ |
| | | १७६ | १४३ |
| | | २१७ | १७६ |
| | | २१८ | १७७ |
| | | २१९ | १७८ |
| | | ३४० | २८३ |
| | ३४५ | २८७ | |
| | ३४६ | २८८ | |
| १७५७ | १७७ | १४४ | |
| | १७८ | १४४ | |
| | १७९ | १४५ | |
| | २२० | १७८ | |
| | २२२ | १८० | |
| | २२३ | १८१ | |
| | २१४ | १८१ | |
| | २२५ | १८२ | |
| | २२६ | १८२ | |
| | ३४७ | २८८ | |

| व्यक्तिविशेष. | साल | लेखांक. | पृष्ठ. |
|-----------------------|------|---------|--------|
| गुलगुले बाळाजी येशवत. | १७५७ | ३४९ | २८९ |
| | | ३५६ | २९६ |
| | | ३५७ | २९६ |
| | | ३५८ | २९७ |
| | | ३६० | २९८ |
| | | ३६३ | २९९ |
| | १७५८ | १८१ | १४६ |
| | | १८३ | १४७ |
| | | १८४ | १४८ |
| | | १८५ | १४९ |
| | | १८६ | १४९ |
| | | २२७ | १८३ |
| | | २२८ | १८३ |
| | | २२९ | १८४ |
| | | २३० | १८४ |
| | १७५९ | १८७ | १५० |
| | | १८९ | १५१ |
| | | २५१ | २०४ |
| | | २६० | १८५ |
| | १७६१ | ४०३ | ३३७ |
| | १७६४ | ४२१ | ३५४ |
| १७६५ | २३८ | ३७० | |
| | ४२७ | ३६२ | |
| " भगवतराव यशवत | १७६९ | ४५३ | ३८२ |
| | ४५४ | ३८४ | |
| | ४५६ | ३८७ | |
| | ४५७ | ३८८ | |
| " लालाजी बलाळ | १७५० | १३७ | ११३ |
| | १७५५ | २८८ | २३० |
| | १७५६ | ३४१ | २८४ |
| | १७५७ | ३५० | २९० |
| | १७५८ | २२९ | १८४ |
| | १७६० | १९३ | १५३ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ. | व्यक्तिविशेष. | साल | लेखांक. | पृष्ठ. |
|--------------------------|------|--------|--------------------|--------------------------|------|---------|--------|
| गुलमुले वालाजी यशवत-१७६० | | २३२ | १८५ | गुलमुले वालाजी यशवत १७६४ | | ४२३ | ३५८ |
| | | २३३ | १८६ | | | ४२६ | ३६० |
| | | २३४ | १८६ | | | ४२७ | ३६१ |
| | | ३८५ | ३१६ | | | ४३० | ३६३ |
| | | ३८७ | ३१७ | | | ४३१ | ३६४ |
| | | ३८८ | ३१८ | | | ४३५ | ३६३ |
| | | ३८९ | ३१९ | | १७६५ | २३९ | १९२ |
| | | ३९० | ३१९ | | | ४३२ | ३६५ |
| | | ३९१ | ३२० | | | ४३३ | ३६६ |
| | | ३९२ | ३१२ | | | ४३५ | ३६७ |
| | | ३९३ | ३२६ | | | ४३६ | ३६९ |
| | | ३९४ | ३२६ | | | ४३७ | ३७० |
| | १७६१ | १९४ | १५३ | | १७६६ | ४३९ | ३७० |
| | | २३५ | १८८ | | १७६७ | ४४० | ३७२ |
| | | २३६ | १८८ | | | ४४१ | ३७२ |
| | | २३७ | १९० | | | ४४३ | ३६६ |
| | | ३९४ | ३२६ | | | ४४७ | ३६७ |
| | | ३९५ | ३२७ | | १७६८ | ४४९ | ३८० |
| | | ३९६ | ३२७ | | | ४५० | ३८१ |
| | | ४०० | ३३२ | | १७६९ | ४५२ | ३८२ |
| | ४०६ | ३३९ | | ४५३ | ३८२ | | |
| १७६२ | २३८ | १९१ | | ४५४ | ३८४ | | |
| | ४०९ | ३४१ | | ४५६ | ३८७ | | |
| | ४१० | ३४२ | | ४५७ | ३८८ | | |
| १७६३ | ८११ | ३४३ | | ४५८ | ३८९ | | |
| | ४१३ | ३४४ | १७७० | ४५९ | ३८९ | | |
| | ४१४ | ३४५ | | ४६० | ३९० | | |
| | ४१५ | ३४६ | | ४६१ | ३९१ | | |
| | ४१६ | ३४७ | | ४६४ | ३९३ | | |
| | ४१७ | ३४८ | | ४६५ | ३९४ | | |
| | ४१९ | ३४९ | १७७१ | ४६६ | ३९५ | | |
| | ४२१ | ३५२ | गुलराज वकील अवबाली | | | | |
| १७६४ | ४२२ | ३५५ | १७६३ | १४५ | ३४७ | | |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|-------------------|------|-------|-------|----------------------|------|-------|-------|
| गोखली बया | १७५४ | १५६ | १३१ | गोविंद रामराव | १७५५ | २९९ | २४२ |
| गोपालराव भगवत | १७६१ | ३९९ | ३३१ | | १७६० | ३८५ | २१६ |
| | १७६४ | ३२२ | ३५८ | गोविंदराव भाऊ. | १७५७ | ३४२ | २८५ |
| | १७६९ | ४५५ | ३८५ | गोविंद रायाजी. | १७५६ | ३५५ | २९४ |
| गोपालरावजी. | १७५६ | ३४१ | २८४ | गोसावी महंत गंगागीर | १७५३ | ४० | ३१ |
| | १७५८ | २२९ | १८४ | ,, विठोबा | १७४६ | १२८ | १०९ |
| गोपालराव | १७४९ | २०१ | १६२ | ,, विजैराम भारथी | | | |
| | १७६४ | ४२३ | ३५८ | | १७५५ | २१४ | १७४ |
| गोपाल गणेश. | १७५५ | ३१२ | २५२ | ,, हसपुरी. | १७५७ | ८२ | ६३ |
| | १७६१ | ४०५ | ३३९ | ,, आठवा | १७५७ | ३५९ | २९७ |
| गोपाल गोविंद | १७६३ | ४१९ | ३५१ | गोहदकर कुंवर बालजी | १७५५ | ३१२ | २५१ |
| गोपाल त्रिंबक | १७५६ | ३४१ | २८४ | गोहदकर भीमसिंग | १७५४ | ५८ | ४३ |
| | १७५७ | २९६ | | | | ५९ | ४४ |
| | १७६४ | ४२३ | ३५८ | | | २६४ | २१३ |
| गोविंदमठ | १७५७ | ३५१ | २९१ | | | २६८ | २१५ |
| गोविंदजी पंडित | १७६० | १९१ | १५२ | | १७५५ | ३१२ | २५२ |
| गोविंदराज सीतामहू | १७६४ | ४२७ | ३६२ | गंगापुत्र | १७५७ | ८५ | ६५ |
| | १७६७ | ४४३ | ३७६ | | १७८४ | १२३ | १०२ |
| | १७६८ | ४४९ | ३८० | गंगापुत्र खेममठ | १७५७ | ८५ | ६५ |
| गोविंदराव | १७५५ | ३०१ | २४३ | ,, बेनी मठ | १७५७ | ८५ | ६५ |
| गोविंदराय | १७५० | ७ | ६ | ,, माववमठ | १७५७ | ८५ | ६५ |
| गोविंदराव | १७५३ | ३८ | ३० | गर्ध अताजी माणकेस्वर | १७५१ | १७ | १६ |
| गोविंद आसूद | १७५७ | ३९३ | २९२ | | १७५४ | १४७ | १२१ |
| | १७६९ | ४५३ | ३८२ | | | १५६ | १३० |
| गोविंद सुकदेव | १७६९ | ४५२ | ३८२ | | १७५५ | ७१ | ५५ |
| गोविंद देवजी | १७५७ | ३५७ | २९६ | | | २९४ | २३४ |
| | १७६९ | ४५२ | ३८२ | | | २९५ | २३६ |
| गोविंद पानभरा | १७३७ | २४२ | २०० | | | ३०६ | २४७ |
| गोविंद भगवंत | १७५९ | ३७८ | ३१२ | | | ३०७ | २४८ |
| | १७६० | १९२ | १५२ | | | ३१२ | २५२ |
| | १७६३ | ४१२ | ३४४ | | | ३१४ | २५४ |
| गोविंद मनाजी. | १७६९ | ४५५ | ३८६ | | | ३२९ | २७० |
| गोविंद हरी. | १७५५ | ७३ | ५७ | | | ३३१ | २७२ |
| गोविंदबाबा पैठणकर | | | | | | | |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ. | व्यक्तिविशेष | साल. | लेखांक. | पृष्ठ. |
|------------------------|------|--------|--------|----------------------|------|---------|--------|
| श्री अताजी माणकेश्वर | १७५५ | ३३३ | २७५ | चंद्रचूड गंगाधर यशवत | १७५२ | २५४ | २०८ |
| | १७५६ | ३३५ | २८१ | | १७५३ | २५७ | २०७ |
| | १७५८ | ९६ | ७४ | | १७५४ | २७१ | २१९ |
| | | ९९ | ७७ | | | २७२ | २२० |
| | | ३१० | ३११ | | | २८० | २२४ |
| | १७५९ | १०० | ७९ | | | २८२ | २२६ |
| | | १०१ | ८१ | | १७५५ | २९० | २३१ |
| | | १०३ | ८६ | | | २९२ | २३३ |
| | | १०५ | ८८ | | | २९६ | २३७ |
| | | १०८ | ९१ | | | २९७ | २३९ |
| | १७६१ | ३९७ | ३२९ | | | २९८ | २४० |
| घ | | | | | | २९८ | २४१ |
| धनश्याम शिबक | १७६४ | ४२४ | ३६० | | | २९६ | २५६ |
| धनवा. | १७६९ | ४५६ | ३८८ | | १७५६ | ३४३ | २८६ |
| घाटगे रवलोकी. | १७६९ | ४५५ | ३८६ | | १७५७ | ३४७ | २८८ |
| घोरपडे नारायण व्यक्तेश | | | | | | ३५४ | २९३ |
| | १७५२ | २८ | २३ | | | ३५७ | २९६ |
| | १७५५ | २९२ | २३५ | | | ३५८ | २९७ |
| " अनुवार्ड. | १७५७ | ३४७ | २८८ | | १७५९ | ११२ | ९५ |
| | १७६१ | ४०२ | ३३६ | | | ३७८ | ३१२ |
| | | ४०३ | ३३७ | | १७६१ | २३६ | १८९ |
| घोरपडे बाजीराव राजे. | १७५२ | २५३ | २०५ | | | ३९४ | ३२६ |
| | | २५४ | २०६ | | | ४०० | ३३२ |
| " मालोजीराव | १७५२ | २५४ | २०६ | | १७६४ | ४२१ | ३५४ |
| | | ३० | २४ | चंद्रवत सुरतराम | १७६१ | ४०० | ३३२ |
| " सुरारजी | १७५१ | ८ | ८ | चंद्रमान सावकार. | १७५७ | ३४७ | २८८ |
| | १७५५ | २९५ | २३५ | बळ्हाण रायसिंग | १७५४ | २७१ | २१९ |
| | १७५६ | ३३५ | २८० | | | २१४ | १७४ |
| | १७६१ | ४०१ | ३३५ | चिटणीस अमृतराव | १७३७ | २४२ | १९९ |
| " सभाजी | १७५७ | ९० | ६८ | " आवाजी रघुनाथ. | | | |
| चंद्रचूड गंगाधर यशवत | १७४७ | २५० | २०३ | | १७५१ | २०२ | १६२ |
| | १७५० | ७ | ७ | | १७५७ | ३५८ | २९७ |
| | १७५१ | २२ | १९ | | १७५८ | २३० | १८४ |

| व्यक्तिविशेष. | साल | लेखाक. | पृष्ठ |
|------------------------|------|--------|-------|
| चिटणीस आवाजी रघु० | १७६५ | ४३५ | ३६७ |
| | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| ,, गोपाळराव रघुनाथ. | १७५६ | ७५ | ५८ |
| | १८०२ | १२६ | १०४ |
| चिटणीस मोरोबा | १७५५ | २९७ | २३९ |
| ,, महिपतराव | १७५९ | १०४ | ८७ |
| ,, महादाजी बाजी | १७६१ | ३९७ | ३२९ |
| ,, रामजीबावा | १७५५ | २९५ | २३५ |
| चितळे गणेश केशव | १७६८ | ४४६ | ३७७ |
| चिमणाजी गोविंद- | १७४३ | ४१३ | ३४४ |
| | | ४१६ | ३४८ |
| | १७५७ | ३५७ | २९६ |
| | १७६९ | ४५२ | ३८२ |
| चिमाजी भिळराव | १७३७ | २४२ | १९९ |
| चिमणाजी वामन | १७६३ | ४१६ | ३४८ |
| चैनरामजी | १७६४ | ४२५ | ३६० |
| | १७६५ | २३९ | १९२ |
| | १७६७ | ४४० | ३७१ |
| | | ४४३ | ३७५ |
| चोपदार बुधा | १७५९ | ११३ | ९६ |
| चोबे चैनराम मिसर. | १७६७ | ४४० | ३७२ |
| छ | | | |
| छत्रपती कुसाबाई भोसले. | १७६१ | ४०२ | ३३६ |
| ,, जिजाबाई भोसले करवीर | १७५७ | ३६७ | ३०२ |
| | १७६१ | ४०२ | ३३६ |
| | | ४०३ | ३३७ |
| ,, ताराबाई भोसले | १७४९ | २०१ | १६२ |
| | १७५० | ७ | ६ |
| | १७५१ | ८ | ७ |
| | | १३ | ११ |

| व्यक्तिविशेष. | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|---------------------------|------|-------|-------|
| छत्रपती ताराबाई भोसले | १७५२ | २३ | १९ |
| | | २६ | २१ |
| | | २८ | २२ |
| | | २९ | २३ |
| | | १४७ | १२१ |
| | १७५५ | ३२६ | २६८ |
| | १७५६ | ३३४ | २७६ |
| ,, रामराजा भोसले सातारकर. | | | |
| | १७५५ | ३२६ | २६८ |
| ज | | | |
| जगदळे | १७५४ | २९० | २२४ |
| जगन्नाथ सखोजी | १७५५ | ३१२ | २५२ |
| ,, माणकोजी | १७३७ | २४२ | १९८ |
| जनार्दनराम | १७५७ | ३६५ | ३०२ |
| जयराम अनंत. | १७६७ | २४३ | ३७५ |
| | | ४८३ | ३७५ |
| | | ४४० | ३७१ |
| | १७६८ | ४४९ | ३८० |
| | | ४५१ | ३८१ |
| जयराम पाहुरग | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| | | ९३ | ७२ |
| जयराम बानुराव | १७६९ | ४५५ | ३८५ |
| जहावाजसान | १७५८ | ९४ | ७३ |
| | | ३७५ | ३१० |
| ज्याहानवान. | १७५८ | ९४ | ७३ |
| | | ३७५ | ३१० |
| जाचक त्रिवकर, व नुकदेव | १७५५ | २९५ | २३६ |
| जव्हारकर | १७५३ | ९१ | ७० |
| जलालुद्दीन | १७५४ | २७२ | २०० |
| जाट. | १७५४ | ४२ | ३१ |
| | १७५७ | ७५ | ७५ |
| जाट नाथु. | १७६८ | ४४९ | ३६८ |
| | १७६९ | ४५७ | ३८० |

| व्यक्तिविशेष. | साल. | लेखाक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष. | साल. | लेखाक. | पृष्ठ. |
|---------------------|------|-------|------------------|-------------------|------|--------|--------|
| जाट सुरजमल | १७५४ | ४२ | ३३ | जाधव जिवाजी | १७५३ | ३८ | ३० |
| | | ४५ | ३४ | | १७३७ | २४२ | १९५ |
| | | ५१ | ३८ | „ देवजी | १७३७ | २४२ | १९८ |
| | | १४८ | १२२ | „ विटलराव बावाजी. | | | |
| | | १४९ | १२३ | | १७५५ | ३२६ | २६८ |
| | | २६५ | २१४ | „ सटवाजी | १७६३ | ४१६ | ३४८ |
| | | २०५ | १६८ | „ हैबतराव | १७५७ | ९० | ६७ |
| | | २०६ | १६९ | जाधवराव मानसिंग | १७५१ | ९ | ८ |
| | | २७९ | २२४ | „ रामचद्र | १७५१ | १६ | १५ |
| | | २७९ | २३१ | | १७५२ | ३१ | २४ |
| | | २७२ | २२० | | | ३२ | २५ |
| | १७५५ | ७० | ५४ | | | २५४ | २०६ |
| | | २९० | २३१ | जानेखान | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| | | ३०६ | २४७ | जमिनीस सदाशिव | १७३७ | २४२ | १९९ |
| | | ३१२ | २५१ | जालनापूरकर | १७६८ | ४४६ | ३७९ |
| | | ३१६ | २५७ | जावजी | १७५४ | १५० | १२४ |
| | १७५९ | १०० | ७९ | जावेदखान | १७५१ | १६ | १५ |
| | | १०२ | ८३ | | १७५२ | २७ | २२ |
| | | १०५ | ८८ | जिवबा नाईक | १७५७ | ३६४ | ३०१ |
| | | २३५ | १८८ | जीवनदास. | १७५४ | २७१ | २१९ |
| १७६१ | ३९५ | ३२७ | जीवाजी माणकेस्वर | १७६९ | ४५५ | ३८६ | |
| १७६९ | ४५९ | ३८९ | जीवाजी आणाजी | १७५९ | ३७८ | ३१२ | |
| १७७० | ४६३ | ३९३ | जोशी आपा | १७५५ | १६० | १३४ | |
| जाधव खानाजी सेनापती | १७५५ | १७० | | | ३०२ | २४३ | |
| | | २१६ | | | ३२५ | ३६७ | |
| | १७६२ | ४०७ | ३४० | „ गोविंद नारायण | १७५८ | ३७४ | ३१० |
| | १७६४ | ४२२ | ३५७ | „ द्वारकाबाई | १७५८ | ३७१ | ३०७ |
| | १७६५ | ४३२ | ३६५ | „ घोड. | १७५८ | १८० | १४६ |
| | | ४३३ | ३६६ | „ बालाजीपत | १७५८ | ३०१ | ३०७ |
| „ खेत्रोजी | १७६९ | ४५५ | ३८६ | „ बाळाजी कुण्ण. | १७५८ | ३६९ | ३०५ |
| „ चद्रमेन | १७५५ | २९५ | २३५ | | | ३७१ | ३०७ |
| „ चादनी पाटील | १७५८ | ३७४ | ३०९ | „ महादजीपत. | १७५४ | २६३ | २१२ |
| | १७५३ | ३८ | २९ | | १७५५ | २९५ | २३६ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक. | पृष्ठ |
|---------------------|------|--------|-------|
| जोशी महादजीपंत. | १७५५ | ३१६ | २५७ |
| | १७५७ | ३६८ | ३०४ |
| | | ३९७ | ३३० |
| जोशी मदनगोपाल रुद्र | १७२३ | १ | १ |
| जोशी वासुदेव. | १७५४ | १५६ | १३१ |
| | | २६८ | २१७ |
| | | २७५ | २२२ |
| झ | | | |
| झरेकर रतनजी. | १७४० | २४४ | २०१ |
| „ सटवाजी | | २४१ | १९७ |
| | १७५३ | १४५ | १२० |
| झाला जालमसिंग | १७६३ | ४१४ | ३४५ |
| | १७६४ | ४२१ | ३५४ |
| | १७६५ | ४३० | ३६४ |
| | | ४२० | ३६४ |
| | | ४३५ | ३६७ |
| | १७६८ | ४४७ | ३७९ |
| | | ४४४ | ३७६ |
| | १७७१ | ४६६ | ३९५ |
| „ सिवसिंग | १७५८ | २३० | १८५ |
| बोरस कर्नल. | १८०२ | १२६ | १०४ |
| ट | | | |
| टकार सिदमत | १७५५ | ३२६ | २६८ |
| टिलेकर हरजी. | १७५४ | १५० | १२३ |
| | | १०६ | २४७ |
| टोके मिरखान | १७५५ | ३०६ | २४७ |
| | १७५९ | १०९ | ९२ |
| | १७७८ | १२१ | १०१ |
| | १७७८ | १२१ | १०१ |
| „ साहेबखान- | ड | | |
| तहवरजग | १७५२ | २५४ | २०६ |
| ताकपीर कान्होजी | १७३७ | २४२ | १९७ |
| „ तान्हाजी. | १७३७ | २४२ | १९८ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ. |
|--------------------|------|-------|--------|
| ताकपीर देवजी- | १७३७ | २४२ | १९८ |
| „ मुन्हाजी- | १७३७ | २४२ | १९९ |
| ताबनकर अतोवा | १७५५ | १६० | १३० |
| ताहवेकर मोरोबानाईक | १७३७ | २४२ | १९९ |
| त्रिबकजीबाबा. | १७४८ | १९९ | १६१ |
| | १७४९ | २०२ | १६२ |
| | १७५१ | १९९ | १६१ |
| | १७५४ | २०४ | १६७ |
| | | १५० | १२४ |
| | २०५ | १६८ | |
| | २०७ | १७० | |
| | २०८ | १७१ | |
| | १७५५ | २१३ | १७३ |
| | | २१४ | १७५ |
| | | २१६ | १७६ |
| | १७५६ | ३३४ | ३७६ |
| | १७५७ | ३५९ | २९८ |
| | | ३६३ | ३०० |
| त्रिबक खडेराम | १७५५ | २९७ | २४० |
| त्रिबक गोपाल | १७५५ | ३१९ | २६० |
| | १७५६ | २१८ | १७८ |
| | | २१९ | १७८ |
| | | २२० | १७९ |
| | १७५७ | २२२ | १८० |
| | | २२३ | १८१ |
| | | २२४ | १८२ |
| | | २२५ | १८२ |
| | | २२६ | १८२ |
| | १७५८ | २२७ | १८३ |
| | | २३० | १८५ |
| | १७५९ | २३१ | १८५ |
| | | २४२ | २०० |
| त्रिबक दत्ताजी | १७५९ | ३८६ | ३१६ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल. | लेखाक | पृष्ठ |
|--------------------|------|-------|-------|------------------|------|-------|-------|
| त्रिवक विनायक | १७५५ | २९५ | २३५ | दामाडे उमाबाई | १७५० | ७ | ६ |
| त्रिवकपत [वाकबोर] | १७५४ | १५० | १२४ | दामोळकर आपाजीराम | १७६४ | ४२० | ३५२ |
| | १७६० | ३८८ | ३१८ | | १७६८ | ११७ | ९९ |
| | १७६१ | ३९५ | ३२७ | | १७८४ | १२२ | १०२ |
| | १७६३ | ४१५ | ३४६ | | | १२३ | १०२ |
| त्रिवकदास [वकील] | १७५७ | ३५२ | २९१ | | १७९० | १२४ | १०३ |
| त्रिवकराव नाना | १७६३ | ४१३ | ३४४ | | १७९३ | १२५ | १०४ |
| त्रिवक बापु. | १७५४ | १८० | १२४ | " कुण्णाजी | १७५८ | १८० | १४६ |
| | | १५५ | १२९ | | १७५९ | १८८ | १५० |
| त्रिवक बाबुराव | १७६३ | ४१३ | ३४४ | | | ४४८ | ३७९ |
| त्रिवक मल्हार | १७५४ | ४२२ | ३५७ | " जानकीबाई | १७४८ | १३८ | ११५ |
| | | ४२३ | ३५९ | | १७५८ | १७ | १४५ |
| त्रिवक सदाशिव | १७७० | ४६० | ३९० | | | ३९७ | ३४० |
| त्रिवकरावजी | १७७० | ४६१ | ३९२ | " महादेव हरी | १७५४ | १५६ | १३१ |
| तिबारी मोहनराम | १७५८ | १८६ | १४९ | | १७५५ | १६० | १३४ |
| सुलाजीपत. | १७५४ | १५० | १२४ | " रखमाबाई. | १७५८ | १८० | १४६ |
| तैमूर सुलतान | १७५८ | ९३ | ७२ | " रामराव आपाजी | | | |
| | | | | | १७९३ | १२५ | १०४ |
| थोरात | १७५५ | २९५ | २३५ | " रामाजी अनत | | | |
| " कासिबा | १७५५ | ३२३ | २६४ | | १७४८ | १३८ | ११५ |
| " निवावाकर | १७५५ | २९५ | २३५ | | १७५० | ६ | ५ |
| " राघोजी. | १७६३ | ४१५ | ३४६ | | | २० | १९ |
| " सुमानराज | १७४३ | २४५ | २०२ | | १७५१ | १३९ | ११६ |
| | १७४५ | २४६ | २०२ | | | १४० | ११७ |
| | | | | | १७५२ | २४ | २० |
| दयानाथराव | १७५९ | २३१ | १८५ | | | २२ | १९ |
| | १७६० | ३७३ | ३२६ | | | २५ | २१ |
| दरेकर सखेराव | १७५७ | ९० | ६७ | | | १४२ | ११८ |
| दशकृष्ण फिरीगी | १७५२ | २५४ | २०६ | | १७५३ | ३७ | २९ |
| दातार केशव | १७५५ | १६० | १३३ | | | ४० | ३१ |
| दातार साहाबाजीराम. | १७५४ | १५० | १२७ | | | १४० | ११७ |
| दादो महादेव. | १७४७ | २४७ | २०२ | | | १४१ | ११७ |
| | १७५० | ७ | ७ | | | १४४ | ११९ |

| व्यक्तिविशेष. | साल | लेखांक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष. | साल | लेखांक | पृष्ठ |
|---------------------|------|--------|-------|---------------------|------|--------|-------|
| दाभोलकर रामाजी अनंत | १७५३ | १४५ | १२० | दाभोलकर रामाजी अनंत | १७५४ | २६८ | २१६ |
| | | १४६ | १२० | | | २६९ | २१७ |
| | | १४७ | १२१ | | | २७० | २१८ |
| | १७५४ | ४१ | ३२ | | | २७१ | २१९ |
| | | ४२ | ३२ | | | २७३ | २२१ |
| | | ४३ | ३३ | | | २७४ | २२१ |
| | | ४४ | ३४ | | | २७६ | २२२ |
| | | ४६ | ३४ | | | २७७ | २२३ |
| | | ४८ | ३५ | | | २७८ | २२३ |
| | | ५४ | ४० | | | २८१ | २२५ |
| | | ५५ | ४१ | | | २८२ | २२५ |
| | | ५६ | ४१ | | | २८३ | २२६ |
| | | ५७ | ४२ | | | २८४ | २२७ |
| | | ५८ | ४३ | | | २८६ | २२८ |
| | | ६० | ४५ | | १७५५ | ६३ | ४८ |
| | | ६१ | ४५ | | | ६४ | ४८ |
| | | ६२ | ४६ | | | ६५ | ४९ |
| | | १४८ | १२२ | | | ६६ | ५० |
| | | १५० | १२३ | | | ६७ | ५० |
| | | १५१ | १२६ | | | ६८ | ५० |
| | | १५२ | १२७ | | | ७० | ५४ |
| | | १५३ | १२८ | | | ७३ | ५६ |
| | | १५४ | १२९ | | | ७१ | ५५ |
| | | १५५ | १२९ | | | १५३ | १२८ |
| | | १५६ | १२९ | | | १५६ | १२९ |
| | | १५७ | १३१ | | | १५७ | १३१ |
| | | २५९ | २०९ | | | १५८ | १३२ |
| | | २६० | २०९ | | | १५९ | १३२ |
| | | २६२ | २११ | | | १६० | १३४ |
| | | २६३ | २१२ | | | १६२ | १३४ |
| | | २६४ | २१२ | | | १६० | १३२ |
| | | २६६ | २१४ | | | १६१ | १३४ |
| | | २६७ | २१५ | | | १६३ | १३६ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ. | | |
|--------------------------|-----|--------|-------|--------------------------|------|--------|--------|----|--|
| दाभोलकर रामाजी अनंत १७५५ | १६४ | १३७ | | दाभोलकर रामाजी अनंत १७५५ | ३१६ | २५६ | | | |
| | १६५ | १३६ | | | ३१८ | २५९ | | | |
| | १६६ | १३७ | | | ३१९ | २६० | | | |
| | १६७ | १३७ | | | ३२० | २६० | | | |
| | १६८ | १३८ | | | ३२१ | २६१ | | | |
| | १६९ | १३८ | | | ३२२ | २६३ | | | |
| | १७० | १३९ | | | ३२४ | २६४ | | | |
| | १७१ | १४० | | | ३२५ | २६६ | | | |
| | १७२ | १४१ | | | ३२६ | २६७ | | | |
| | १७३ | १४१ | | | ३२७ | २६८ | | | |
| | १७४ | १४२ | | | ३२८ | २६९ | | | |
| | २८७ | २२९ | | | ३२९ | २६९ | | | |
| | २८९ | २३० | | | ३३० | २७१ | | | |
| | २९० | २३१ | | | ३३१ | २७२ | | | |
| | २९२ | २३२ | | | ३३२ | २७३ | | | |
| | २९३ | २३३ | | | ३३३ | २७५ | | | |
| | २९४ | २३४ | | | १७५६ | १७५ | १४२ | | |
| | २९६ | २३७ | | | | १७६ | १४३ | | |
| | २९७ | २३९ | | | | ३३६ | २८१ | | |
| | २९९ | २४१ | | | | ३३८ | २८२ | | |
| | ३०० | २४२ | | | | ३३९ | २८३ | | |
| | ३०१ | २४२ | | | | ३४३ | २८५ | | |
| | ३०२ | २४३ | | | | १७५७ | ८० | ६२ | |
| | ३०३ | २४४ | | | | | ८१ | ६२ | |
| | ३०५ | २४६ | | | | | ८३ | ६३ | |
| | ३०६ | २४६ | | | | | ८६ | ६५ | |
| | ३०७ | २४८ | | | १७७ | | १४४ | | |
| | ३०८ | २४९ | | | १७८ | | १४४ | | |
| | ३०९ | २४९ | | | १७९ | १४५ | | | |
| | ३१० | २५० | | | २२१ | १७९ | | | |
| | ३१२ | २५१ | | | ३५१ | २९० | | | |
| | ३१३ | २५३ | | | ३५५ | २९४ | | | |
| | ३१४ | २५४ | | | ३६२ | २९९ | | | |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|--------------------------|-----|-------|-------|-----------------------|------|-------|-------|
| दाभोलकर रामाजी अनंत १७५७ | ९७ | ७५ | | दाभोलकर हरी अनंत | १७५४ | १४७ | १२१ |
| | | ९८ | ७६ | | | १५६ | १२९ |
| | | १८० | १४५ | | १७५५ | १६० | १३३ |
| | | १८१ | १४६ | | | १६२ | १३४ |
| | | ३६४ | ३०० | | | ३०५ | २४६ |
| | | ३६७ | ३०२ | | | ३२३ | २६४ |
| १७५८ | | ३६७ | ३०३ | | १७५६ | ३३९ | २८३ |
| | | ३६८ | ३०४ | | १७५८ | १८० | १४५ |
| | | ३६९ | ३०५ | | | १८१ | १४६ |
| | | ३७३ | ३०८ | | | १८२ | १४७ |
| | | ३७७ | ३१२ | | | १८३ | १४७ |
| १७५९ | | १०० | ७९ | | | १८४ | १४८ |
| | | १०१ | ८० | | | १८५ | १४९ |
| | | १०४ | ८६ | | | १८६ | १४९ |
| | | १०५ | ८७ | | १७५९ | १८७ | १५० |
| | | १०६ | ८९ | | | १८८ | १५० |
| | | १०७ | ९० | | | १८९ | १५१ |
| | | १०८ | ९० | | | १९० | १५१ |
| | | ११० | ९३ | | | १९६० | १५२ |
| | | १११ | ९४ | दामाजी खडेराम | १७६९ | ४५५ | ३८५ |
| | | १८३ | १४७ | दानोदर रघुनाथ दाहुदकर | | | |
| | | १८५ | १४९ | | १७५५ | ३२६ | २६७ |
| | | १८७ | १५० | त्रिनकर महादेव | १७५५ | १६० | १३३ |
| | | १८८ | १५० | दिवेकर त्रिनकमत | १७५४ | २६० | २१० |
| | | १८९ | १५१ | | | २६२ | २११ |
| | | ३७८ | ३१२ | | | २६६ | २१५ |
| | | ३८२ | ३१४ | | १७५५ | ३०३ | २४४ |
| | | ३८३ | ३१४ | | | ३०८ | २४९ |
| १७६० | | १९३ | १५३ | | | ३०९ | २५० |
| | | १९४ | १५३ | | | ३१३ | २५४ |
| १७६१ | | १९५ | १५४ | | | ३२५ | २६६ |
| | | ३९७ | ३२८ | | १७५६ | ३३७ | २८२ |
| १७६४ | | ४२० | ३५२ | ,, नारोपत. | १७५८ | ६१ | ५० |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक. | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ. |
|---------------------|------|--------|-------|---------------------|------|-------|--------|
| दक्षिण वासुदेव | १७६१ | २३७ | १९० | नजीबखान रोहिला | १७५९ | १०२ | ८४ |
| कुधेखान | १७५९ | १९० | १५१ | | | १०५ | ८८ |
| दुर्जनसिंग | १७५६ | ३४० | २८४ | | | १११ | ९४ |
| दंडोल राजा | १७५८ | ९१ | ७० | | | १९० | १५१ |
| देवजी | १७३७ | २४२ | १९८ | | १७६० | २३४ | १८७ |
| देवापाडिये गणेशाराम | १७४० | २४४ | २०१ | | | ३९२ | ३२३ |
| „ जीवाजी मुदगल | १७४० | २४४ | २०१ | | १७७० | ४६१ | ३९१ |
| „ त्रिबकपत | १७३७ | २४२ | १९८ | | | ४६३ | ३९३ |
| देवमुख त्रिबकजी | १७३७ | २४१ | १९६ | नयोपत मोरेश्वर | १७६५ | ४३१ | ३६५ |
| „ नारोत्रिबक | १७६३ | ११५ | ९८ | | | ४३३ | ३६६ |
| „ भगवत्तराव रामर व | | | | | १७६७ | ४४१ | ३७२ |
| | १७४० | २४४ | २०० | | | ४४१ | ३७३ |
| „ राघोपत | १७५८ | १८० | १४६ | | १७६८ | ४४९ | ३८० |
| देसाई गणेश | १७५४ | १५० | १२४ | नरसिंगराव | १७५५ | २९५ | २३५ |
| „ तुलजाजी | १७५४ | १५० | १२४ | | १७५७ | ९० | ६७ |
| दौलतराव. | १७५५ | २९७ | २४० | नरहर लक्ष्मण | १७६४ | ४२२ | ३५७ |
| „ मुरार. | १७५४ | २८१ | २२५ | नाईक त्रिबक | १७७० | ४६९ | ३९० |
| | | २८२ | २२६ | | १७६५ | ४३७ | ३७० |
| घ | | | | „ घोडाजी | १७५५ | ३२३ | २६४ |
| घनेश्वर. | १७६१ | ३९७ | ३२८ | „ पिराजी | १७६८ | ४४६ | ३७७ |
| घानेगुडे राघोवा | १७६४ | ४२२ | ३५७ | „ भोवानी | १७६५ | ४३६ | ३६९ |
| घोडीवाई | १७६९ | ४५७ | ३८८ | „ मझादजी | १७५९ | ३८१ | ३१४ |
| घोडो गोविंद | १७५१ | ९ | ८ | „ मानया | १७५२ | ३१ | २४ |
| घोडो वसुत्रय | १७५१ | १२ | १० | | | ८७ | ६५ |
| घोडो पदमाजी | १७६३ | ४१६ | ३४८ | | १७६० | १९२ | १५२ |
| घोडोशा. | १७५४ | १५६ | १३१ | „ लक्ष्मण | १७६५ | ४३७ | ३७० |
| घोडों रघुनाथ | १७५७ | ३४९ | २९० | „ साबाजी | १७५९ | ३८१ | ३१४ |
| न | | | | नागोपत टिगा मोल्हे. | १७५४ | १५० | १२४ |
| नजीबखान रोहिला | १७५७ | ३६६ | ३०२ | न.यो.जीपत | १७५४ | १५० | १२४ |
| | १७५८ | ९४ | ७२ | | १७५५ | ३०५ | २४६ |
| | | ९७ | ७५ | | १७५६ | ३३८ | २८२ |
| | | ९८ | ७६ | | १७५७ | ३६४ | ३०१ |
| | | | | | १७६९ | ४५७ | ३८८ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|------------------|------|-------|-------|--------------------|------|-------|-------|
| नांदखेले | १७६९ | ४५५ | ३८५ | नारो विट्टल | १७६० | ३९१ | ३२० |
| नानाजी | १७५७ | ३६४ | ३०१ | | | ३९२ | ३२५ |
| नारखानी गोविंदपत | १७५५ | २९५ | २३६ | | | ३९३ | ३२६ |
| नारायणराव तात्या | १७५५ | २९५ | २३५ | नारोवा | १७५६ | ३४५ | २८७ |
| नागयण यशवन | १७५५ | २८८ | २३० | | | १७६० | ३८७ |
| नारायणजी | १७५५ | ३०७ | २४८ | नारोवा नाना | १७५५ | १७२ | १४१ |
| नाळक | १७६९ | ४५४ | ३८४ | | | २९५ | २३५ |
| नारो कृष्ण | १७५७ | ८७ | ६६ | | | १७५६ | २१० |
| नारो केजव | १७६३ | ११५ | ९७ | | | २१२ | १७३ |
| नारो श्र्यंबक. | १७६३ | ११५ | ९८ | | | २२० | १७८ |
| नारो बालाजी | १७५७ | २२३ | १८१ | | | ३४० | २८४ |
| | १७६४ | ४२६ | ३६१ | | | १७५७ | २२३ |
| | | ४२८ | ३६३ | | | १७६० | ३८९ |
| | १७६८ | ४५२ | ३८२ | | | १७६१ | ४०५ |
| नारोपत [गोपाल] | १७५३ | १४४ | ११९ | | | १७६३ | ४१४ |
| | | १४५ | १२० | | | १७६४ | ४२२ |
| | १७५४ | १५० | १२४ | | | ४२३ | ३५९ |
| | १७५८ | ३६१ | ३६० | | | १७६५ | ३२९ |
| | १७६१ | ४०५ | ३३९ | | | ४२५ | ३६० |
| | | ४०५ | ३३९ | | | १७६८ | ४४९ |
| | १७६५ | ४३४ | ३६६ | | | ४५१ | ३८१ |
| नारो रघुनाथ. | १७६३ | ४१६ | ३४८ | | | १७६९ | ४४३ |
| नारो विट्टल | १७५४ | १५६ | १३० | | | १७७० | ४५९ |
| | | २०६ | १६९ | | | ४६३ | ३९३ |
| | १७५५ | १७२ | १४१ | | | ४६५ | ३९५ |
| | | १७३ | १४१ | निजामबली | १७५६ | ३३६ | २८१ |
| | १७५६ | ३३४ | २७५ | | | १७५९ | ११२ |
| | | ३४५ | २८७ | | | ३४४ | २८७ |
| | १७६१ | ३४६ | २८८ | | | १७६१ | ४०१ |
| | | ४०५ | ३३७ | निजाम आसफजा | १७५१ | १५ | १३ |
| | १७५८ | ३७१ | ३०७ | | | | |
| | १७६० | ३८६ | ३१७ | ” गाजुदीखान फिरोजग | १७५१ | १४ | १२ |
| | | ३८९ | ३१९ | | | १५ | १४ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक. | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक. | पृष्ठ. | |
|-------------------------|------|--------|-----------|-----------------|---------------------|--------|--------|-----|
| निजाम गाचुदीखान फिरोजजग | १६ | १५ | | निजाम सञ्जवतजग | १७५१ | १८ | १७ | |
| | १८ | १७ | | | १७५२ | २८ | २२ | |
| | १९ | १८ | | | | २९ | २३ | |
| | २९ | २३ | | | | ३३ | २६ | |
| | २५ | २७ | | | १७५४ | २७१ | २१९ | |
| | ३३ | २६ | | | १७५५ | ३१५ | २५४ | |
| | १७५२ | २७ | २२ | | १७५६ | ३३६ | २८१ | |
| | | २९ | २३ | | १७५७ | ८८ | ६६० | |
| | | ३५ | २७ | | ,, हिदायत मोहिबीखान | | | |
| | | २०३ | १६४ | | | १७९१ | १८ | १७ |
| | | २०४ | १६७ | | निजात्रनम्बान | १७६० | ९० | ६९ |
| | | २५६ | २०८ | | | | २३४ | १८७ |
| | १७५४ | ६१ | ४६ | | | ३९२ | ३२२ | |
| | | २७१ | २१९ | | नित्यानन्द भट | १७७० | ८८ | ६६ |
| | | २७२ | २२० | | | | ४६० | ३९१ |
| | | २८१ | २२५ | | | | २५६ | २०८ |
| | | २८२ | २२५ | | निवाळकर | १७६१ | ४०१ | ३३५ |
| | | २८४ | २२७ | | निवाळकर आनदीवाई | १७६९ | ४५३ | ३८३ |
| | | २८४ | २२८ | | ,, आनदराव | १७५९ | ३८१ | ३१३ |
| | | २८५ | २२८ | | ,, कुण्णाजी नाईक | | | |
| १७५५ | २९० | २३१ | | १७५२ | ३१ | २५ | | |
| १७५७ | ३५५ | २९४ | | | २५४ | २०६ | | |
| १७५९ | १०२ | ८३ | ,, जानोजी | १७५१ | १५ | १४ | | |
| | २०४ | १६७ | | | १६ | १५ | | |
| १७६१ | २३६ | १८९ | | १८ | १७ | | | |
| | २८१ | २२५ | | १७५२ | ३२ | २५ | | |
| | २८४ | २२७ | | | ३३ | २६ | | |
| | २८५ | २२८ | | | २५४ | २०६ | | |
| निजाम नासरजग | १७५० | ७ | ७ | | १७५५ | २९५ | २३५ | |
| ,, बमालतजग | १७५७ | ९० | ६९ | ,, जसवनराव | १७५० | ३७९ | ३१२ | |
| | १७५५ | २९० | २३१ | | ३८० | ३१३ | | |
| ,, रामान्वजग | १७५१ | १४ | १२ | ,, बत्राजी नाईक | | | | |
| | १५ | १३ | | १७३७ | २८१ | १९७ | | |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक. | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल. | लेखाक. | पृष्ठ. |
|-----------------------|------|--------|-------|-----------------------|------|--------|--------|
| निवाळकर भूपालराव | १७५२ | ३१ | २५ | पवार जीवाजी देवासकर | १७५५ | २१६ | १७५ |
| | | २५४ | २०६ | | १७५९ | १०८ | ९१ |
| " मकरंदसिंग नाईक. | १७५२ | ३१ | २४ | " तुकोजी देवासकर | १७५४ | १५० | १२५ |
| | | २५४ | २०६ | " रामाजी | १७५५ | २९८ | २४१ |
| " महिपतराव | १७५२ | ३१ | २४ | | | ३१६ | २५६ |
| | | २५४ | २६० | " रामसिंग ठाकुर | १७६९ | ४५५ | ३८५ |
| | १७६९ | ४५५ | ३८६ | " रायाजी धारकर | १७५८ | ३७३ | ३०८ |
| " महादजी नाईक | | | | " यशवतराव धारकर | | | |
| | १७५१ | ९ | ८ | | १७४८ | ५ | ४ |
| | १७५५ | २९५ | २३५ | | १७५५ | ७० | ५४ |
| " यशवतराव | १७५२ | ३१ | २५ | | | ३२९ | २७० |
| | | २५४ | २०६ | | १७५७ | ३६३ | ३०० |
| " हनुमतराव | १७५२ | ३३ | २६ | पागा राघोबा | १७५४ | १५० | १२३ |
| | १७५२ | २५५ | २०७ | | १७६४ | ४२२ | ३५७ |
| | १७५५ | २९५ | २३५ | | १७६७ | ४४२ | ३७५ |
| | १७५७ | १७८ | १४४ | पाटणकर माधवराव नारायण | | | |
| | | १७९ | १४५ | | १७५४ | २८२ | २२६ |
| | | ३६५ | ३०१ | " रामाजी जगन्नाथ | | | |
| निमल वत्ताजी. | १७४९ | १९९ | १६० | | १७५५ | १५८ | १३२ |
| निलोपत माला. | १७५५ | २९५ | २३५ | पाटील कागजी | १७३७ | २४१ | १९५ |
| नैवालकर रघुनाथ हरी. | १७६१ | ४०४ | ३३८ | " गोवजी | १७३७ | २४१ | १९५ |
| | १७७० | ११८ | ९९ | | १७४० | २४४ | २०१ |
| प | | | | " चादजी | १७५८ | ३७४ | ३०९ |
| पटणी मनसाराम | १७६९ | ४५५ | ३८६ | " जावजी | १७५७ | ८७ | ६६ |
| पटवर्धन गोपाळ गोविंद. | १७५५ | २९५ | २३५ | " जीवाजी | १७३७ | २४१ | १९५ |
| पठाण सादलखान. | १७५१ | १३ | ११ | " नवगावकर. | १७५४ | १५० | १२५ |
| परचुरे नारो अनंत | १७५५ | ३०९ | २५० | " बावजी | १७३७ | २४१ | १९५ |
| परसराम सोयराजी | १७६९ | ४५५ | ३८६ | " भोळ | १७३७ | २४१ | १९५ |
| परभू बाबुराऊ | १७५४ | १५० | १२४ | " मालजी | १७३७ | २४१ | १९६ |
| पवार आपाजी | १७६३ | ४१० | ३४२ | " रघोजी | १७३७ | २४१ | १९५ |
| " जीवाजी देवासकर | १७५५ | ७२ | ५६ | " रत्न | १७३७ | २४१ | १९५ |
| | १७५५ | १७० | १४० | | १७४० | २४४ | २०१ |
| | | | | " विठोजी. | १७५८ | ३७४ | ३०९ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ. |
|----------------------|-----------|-------|-------|----------------------|------|-------|--------|
| पाटील विठोजी | १७५९ | ३८३ | ३१५ | पुरदरे महादाजी अवाजी | १७५५ | ३१५ | २५५ |
| पाडवा | १७५५ | २९४ | २३४ | | | ३१६ | २५७ |
| पाडुरग गिणदेवपत | चीथाईवाले | | | " महार तुकदेऊ | १७४१ | ३ | ३ |
| | १७६८ | ४४६ | ३७८ | पुरोहित जगनेस्वर | १७५५ | ७२ | ५६ |
| पाठरे | १७६८ | ४४६ | ३७८ | | | १७० | १४० |
| पांढरे भालेराव | १७५२ | ३१ | २४ | | | २१४ | १७४ |
| | | २५४ | २०६ | | | २१६ | १७५ |
| " गुण्यक्ष | १७५२ | ३१ | २४ | पेठे अयबक विश्वनाथ | १७५३ | ३८ | २९ |
| पातशाह | १७५८ | ९४ | ७३ | पेडगांवकर वसीवर | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| " अलीगोहर | १७६० | २३३ | १८६ | पेंडसे गणेश कृष्ण | १७५४ | १५० | १२५ |
| | | २३४ | १८६ | | | २६३ | २११ |
| | | ३९२ | ३२२ | | | २६८ | २१७ |
| " घाहाण्हा. | १७६० | २३४ | १८७ | | | २७८ | २२३ |
| पायगुडे मानाजी. | १७५५ | २९२ | २३३ | | | २८४ | २२७ |
| | | ३१६ | २५७ | | | २८६ | २२८ |
| पारसनीस कृष्णराव | १७५६ | ७७ | ६० | | | २५९ | २०९ |
| पालदे नारीपंत | १७५५ | २९४ | २३४ | | | २६३ | २११ |
| पिसे फिरगोजी. | १७५४ | १५० | १२४ | | | २७१ | २१९ |
| पुडरीक व्यासजी | १७६५ | ४३८ | ३७० | | | २७८ | २२३ |
| पुदे भिकाजी | १७३७ | २४१ | १९६ | | | २८२ | २२५ |
| पुनासेकर आपाजी कृष्ण | १७५४ | १५० | १२५ | | | २८४ | २२७ |
| पुरदरपत | १७५५ | ३२६ | २६७ | | | २२७ | २२७ |
| पुरदरे महादाजी अवाजी | १७५० | ७ | ६ | | | २८६ | २२८ |
| | १७५२ | २९ | २३ | | | २९५ | २३४ |
| | १७५४ | १४७ | १२१ | | १७५५ | २९९ | २४१ |
| | | २६८ | २१७ | | | ३०० | २४२ |
| | १७५५ | ६४ | ४८ | | | ३०१ | ३४२ |
| | | २९४ | २३४ | | | ३०२ | २४३ |
| | | २९५ | २३४ | | | ३०६ | २४६ |
| | | ३०५ | २४६ | | | ३०७ | २४८ |
| | | ३०६ | २४८ | | | ३११ | २५१ |
| | | ३१० | २५० | | | ३१२ | ३५१ |
| | | ३१२ | २५३ | | | ३१८ | २५९ |

| व्यक्तिविशेष. | साल | लेखाक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल- | लेखाक. | पृष्ठ. |
|------------------------|-----|-------|-------|---------------------------|------|--------|--------|
| वान बालाजी बाजीराव भट. | ३४४ | २८६ | | प्रधान रघुनाथ बाजीराव भट. | २६ | २२ | |
| १७५७ | ८६ | ६४ | | | २८ | २२ | |
| | ८७ | ६६ | | १७५४ | ४१ | ३२ | |
| | ९० | ६७ | | | ४३ | ३३ | |
| १७५८ | ९२ | ७१ | | | ४४ | ३४ | |
| | ९७ | ७५ | | | ४५ | ३४ | |
| | ९८ | ७६ | | | ४६ | ३४ | |
| | ३७५ | ३१० | | | ४८ | ३५ | |
| १७५९ | ९९ | ७८ | | | ४९ | ३६ | |
| | १०१ | ८० | | | ५४ | ४० | |
| | १०४ | ८६ | | | ५५ | ४१ | |
| | १०५ | ८७ | | | ५६ | ४१ | |
| | १०६ | ८९ | | | ५७ | ४२ | |
| | १०७ | ९० | | | ५८ | ४३ | |
| | १०८ | ९० | | | ६१ | ४५ | |
| | ११३ | ९६ | | | ६२ | ४६ | |
| | ३८० | ३१३ | | | ६५ | ४९ | |
| | ३८१ | ३१३ | | | १५३ | १२८ | |
| १७६० | ११४ | ९७ | | | २०५ | १६८ | |
| १७६१ | ३९७ | ३२९ | | | २६१ | २१० | |
| | ३९९ | ३३१ | | | २६८ | २१७ | |
| , माधवराव नारायण भट | | | | | २७१ | २१९ | |
| १७९३ | १२५ | १०३ | | १७५५ | ६६ | ५० | |
| १७६३ | ११५ | ९७ | | | ७२ | ५६ | |
| | ४१७ | ३४९ | | | ७३ | ५७ | |
| | ४१९ | ३५१ | | | १६६ | १३७ | |
| १७६४ | ४२१ | ३५४ | | | २९७ | २३९ | |
| १७६८ | ४४९ | ३८० | | | २९८ | २४० | |
| १७६९ | ४५७ | ३८८ | | | ३०४ | २४४ | |
| १७७० | ११८ | ९९ | | | ३०५ | २४६ | |
| १७७४ | ४२२ | ३५६ | | | ३०६ | २४७ | |
| १७५२ | २३ | १९ | | | ३१६ | २५७ | |
| १७५२ | २३ | १९ | | | | | |

| व्यक्तिविशेष. | साल. | लेखाक | पृष्ठ. | व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ | | |
|--------------------------|------|-------|--------|------------------|------|---------------------|-------|-----|-----|
| प्रधान रघुनाथ बाजीराव भट | ३१८ | २५९ | | प्रधान सदाशिव भट | १७५४ | ५३ | ४० | | |
| | ३२१ | २६१ | | | | २६८ | २१७ | | |
| | ३२२ | २६४ | | | १७५५ | २९८ | २४१ | | |
| | ३२६ | २६७ | | | १७५६ | ७९ | ६१ | | |
| | ३२९ | २७० | | | ३३७ | २८२ | | | |
| | १७५६ | ७६ | ५९ | | ३३८ | २८२ | | | |
| | | ३३७ | २८२ | | १७५७ | २२० | १७९ | | |
| | | ३४२ | २८५ | | | ३५४ | २९२ | | |
| | १७५७ | ८५ | ६५ | | १७५८ | ३७७ | ३१२ | | |
| | | ८७ | ६६ | | १७५९ | १०० | ७९ | | |
| | | ८९ | ६७ | | | ११२ | ९५ | | |
| | | ९० | ६७ | | | ११३ | ९६ | | |
| | | २२० | १७९ | | | १७६० | ११६ | ९७ | |
| | | ३५२ | २९१ | | | ३८५ | ३१६ | | |
| | | ३६६ | ३०२ | | | १७६१ | २३५ | १८८ | |
| | | ३६८ | ३०३ | | | ३९७ | ३२९ | | |
| | | ३६९ | ३०५ | | | प्रभुणे रामशास्त्री | १७४९ | १९९ | १६० |
| | १७५८ | ९५ | ७३ | | | | १७६३ | ११५ | ९८ |
| | | ९७ | ७५ | | | प्रयागवाल. | १७८४ | १२३ | १०२ |
| | | ९८ | ७७ | | | प्राणनाथ वंसीधर | १७५९ | ३८२ | ३१६ |
| | ३७० | ३०६ | | | १७६० | १९१ | १५२ | | |
| | ३७५ | ३१० | | | | १९२ | १५२ | | |
| ११ विष्वासराव बलाल भट. | | | | प्रियमिल मेवालाल | १७६९ | ४५५ | ३८६ | | |
| | ३३६ | २८१ | | | | | | | |
| | ३३७ | २८२ | | क | | | | | |
| | ३५९ | २९७ | | फडके बापुजी बलाल | १७५४ | २६६ | २१५ | | |
| | ३६१ | २९९ | | | १७५५ | २९४ | २३४ | | |
| | १७५७ | ८८ | ६६ | | | २९५ | २३४ | | |
| | १७५८ | १८० | १४५ | | | ३०६ | २४८ | | |
| | | | | | | ३२१ | २६१ | | |
| ११ सदाशिव चिमणाजी भट | | | | | १७५६ | ३३८ | २८२ | | |
| | १७५० | ७ | ६ | | | ३३९ | २८३ | | |
| | १७५१ | १३९ | ११६ | | १७५९ | ११३ | ९६ | | |
| | १७५२ | २४ | २० | ११ हरी बलाल | १७५५ | १६० | १३३ | | |

| व्यक्तिविशेष | साल. | लेखांक | पृष्ठ. | व्यक्तिविशेष. | साल. | लेखांक. | पृष्ठ. |
|---------------------|------|--------|--------|-------------------------|------|---------|--------|
| फडके हरी बलाळ | १७५५ | २९८ | २४१ | बाजी नरसिंह. | १७६८ | ४५० | ३८१ |
| | | ३०६ | २४८ | | | ४५१ | ३८२ |
| | | ३०९ | २५० | | १७६९ | ४५८ | ३८९ |
| | | ३१६ | २५६ | बाडे. | १७५४ | २७९ | २२४ |
| | | ३२१ | २६३ | बापुरावजी. | १७५८ | ३६८ | ३०४ |
| | १७६१ | ३९७ | ३२८ | बापुजी बलाल दफतरदार | १७६० | ११३ | ९ |
| फडणीस अंताजीपत. | १७३७ | २४२ | १९९ | बाबुराव | १७५६ | ३६६ | २८१ |
| „ सदाशिव बापुजी | १७६३ | ११४ | २४५ | बाबुराव परमू. | १७५४ | १५० | १२४ |
| | १७६७ | २९२ | २३२ | बाबुराव महादेव. | १७५५ | ३०४ | २४४ |
| फाळके आनंदराव | १७६५ | ४३५ | ३६८ | बापुजी श्रीपत जिल्हेदार | १७३७ | २४२ | १९८ |
| फिरंगी. | १७५२ | २९ | २३ | बाजीपत. | १७५७ | १० | ६८ |
| | | | | बावजी. | १७३७ | २४१ | १९५ |
| | | | | बावतीवाले. | १७५६ | ७५ | ५९ |
| बकाउलाखान | १७५५ | ३२९ | २६९ | बाबु | १७६९ | ४५४ | ३८५ |
| बकासिंग | १७५४ | ५९ | ४३ | बाबु. | १७५८ | ३६९ | ३०६ |
| बढवाईकर | १७६९ | ४५५ | ३८७ | बाबुखान. | १७५७ | ३५३ | २९२ |
| बर्वे गोपाळ गोविंद. | १७६१ | ३९४ | ३२६ | बाबु भालवार | १७५४ | १५० | १२५ |
| | | ३९६ | ३२७ | बाबुराय. | १७५७ | ८२ | ६३ |
| बरवे गोपाळराव गणेश | १७५५ | ३०४ | २४४ | | | ८३ | ६३ |
| „ रामाजी विठ्ठलनाथ | १७६० | ११४ | ९७ | | १७६९ | ४५७ | ३८८ |
| बळवंतराऊ नरहर. | १७५४ | १५० | १२४ | बाबुरावजी | १७५४ | १४७ | १२१ |
| बलाळ भास्कर. | १७५४ | १५० | १२४ | बाबु निहालचंद | १७५५ | ३३१ | २७२ |
| बगरडेकर | १७६८ | ४४४ | ३७६ | बाबुराव नारायण | १७५४ | १५० | १२६ |
| | १७६९ | ४५३ | ३८३ | | १७६० | ३९३ | ३२६ |
| बागलीकर. | १७६९ | ४५५ | ३८७ | | १७६१ | ३९४ | ३२६ |
| बागुलराऊ | १७३७ | २४१ | १९६ | | १७६१ | ३९४ | ३२६ |
| बाजी नरसिंह | १७६३ | ११९ | ३५१ | बाबुराऊ भास्कर. | १७५४ | १५० | १२४ |
| | १७६८ | ४२१ | ३५४ | बाबुराव राजाराम | १७५८ | १५० | १२४ |
| | | ४२२ | ३५७ | बालाजी. | | २४८ | २०३ |
| | | ४२७ | ३६२ | बालाजी कृष्ण | १७५५ | ३२५ | २४६ |
| | १७६५ | ४३१ | ३६४ | बालाजी मल्हार. | १७६८ | ११७ | ९९ |
| | | ४३३ | ३६६ | बालाजीराम. | १७५७ | ८७ | ६६ |
| | | ४३६ | ३६९ | बालाजी बाढ्या | १७३७ | २४२ | २०० |
| | १७६७ | ४४२ | ३७५ | | | | |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक. | पृष्ठ. |
|-----------------------|------|--------|--------|
| बालोजी जासूद. | १७५८ | ३७४ | ३१० |
| बिनीवाले विसाजी कृष्ण | १७५५ | २९५ | २३५ |
| | १७५७ | ९० | ६८ |
| | | ९८ | ६७ |
| | | १४७ | १२१ |
| बिबलकर रामाजी महादेव | | | |
| | १७५५ | १६० | १३३ |
| | | २९५ | २३६ |
| | | ३०६ | २४६ |
| | १७६० | ११४ | ९७ |
| बिहारी पामनाईक. | १७५२ | ३१ | २४ |
| बूदीकर | १७६८ | ४४७ | ३७९ |
| „ उमेदासिग | १७४८ | १९८ | १५८ |
| | १७५६ | २४० | २८४ |
| | १७६१ | ४०० | ३३२ |
| बुधसिग | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| बेनीराम. | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| बोकील निलोबा | १७५५ | ३१२ | २५२ |
| „ सखाराम भगवत | १७५४ | २६९ | २१७ |
| | | २७० | २१८ |
| | | २७६ | २२२ |
| | | २७७ | २२३ |
| | १७५५ | २८७ | २२९ |
| | | २८९ | २३० |
| | | २९० | २३१ |
| | | २९१ | २३२ |
| | | २९९ | २४१ |
| | | ३०४ | २४५ |
| | | ३११ | २५१ |
| | | ३१२ | २५२ |
| | | ३१६ | २५७ |
| | | ३२८ | २६८ |
| | | ३११ | २५१ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ. |
|-------------------|------|-------|--------|
| बोकील सखाराम कगवत | १७५५ | ३१२ | २५२ |
| | | ३१६ | २५७ |
| | १७५७ | ८८ | ६६ |
| | १७५८ | ९२ | ७१ |
| | | ९६ | ७५ |
| | | ११२ | ९५ |
| | १७५९ | ३८३ | ३१४ |
| मोटके बाबुराज | १७४० | २८८ | २०१ |
| बोध | १७५५ | २९५ | २३६ |
| | | | |
| भगवत सामराज | १७५१ | २५१ | २०४ |
| भगवतराज शंकर | १७६१ | २३५ | १८८ |
| | १७६४ | ४२६ | ३६० |
| | | ४२७ | ३६१ |
| | १७६७ | ४४१ | ३७२ |
| भवानी शंकर | १७६० | ३९२ | ३२५ |
| भट गणेश त्रिधननाथ | १७५८ | १८० | १४६ |
| | १७६३ | ११५ | ९७ |
| | १७७७ | ११९ | १०० |
| | १७८४ | १२३ | १०३ |
| भगवतराज | १७५० | १३२ | १११ |
| भाष्कर भट | १७५८ | ३६९ | ३०६ |
| भागवत घोडोराम | १७६१ | ४०१ | ३३५ |
| „ नागोर म | १०७ | ११३ | ९६ |
| | १७५२ | २५४ | २०५ |
| भाटी किसनसिग | १७५५ | १६६ | १३७ |
| भाटये नारोपत | १७५८ | ३६९ | ३०६ |
| भापकर सोनजी | १७५७ | ९० | ६७ |
| भानु जनार्दन बलाळ | १७५४ | २०३ | २२६ |
| | | २६० | २०९ |
| | | २६३ | २११ |
| | | २६६ | २१४ |
| | | २७८ | २२६ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक. | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|----------------------------|------|--------|-------------|------------------|------|-------|-------|
| मनसूरअलीखा सफदरजग १७५४ | | ६१ | ४६ | माधवजी किसनजी | १७५९ | ३८२ | ३१४ |
| | | ९६ | ७४ | माधवराव रघुनाथ | १७५९ | ३८१ | ३१३ |
| | | २८१ | २२५ | माधो सेठ जजनकर | १७६१ | ३९७ | ३२८ |
| | | २८२ | २२६ | मजमदार आवा | १७६१ | २३७ | १९० |
| | १७५५ | ३१५ | २५५ | मानकर खडोजी | १७५४ | १४७ | १२१ |
| | | ३१६ | २५८ | | १७५५ | १६२ | १३५ |
| | | ९६ | ७४ | | २९५ | २३६ | |
| | १७५८ | ९७ | ७६ | | ३०६ | २४७ | |
| | | ९८ | ७७ | माने नागोजी | १७५७ | १७८ | १४४ |
| | १७५९ | ९९ | ७८ | | १७९ | १४५ | |
| | १०२ | ८३ | ,, लिंगोजी | १७३७ | २४२ | २०० | |
| | १०० | ७९ | मान्या नायक | १७५२ | २५४ | २०६ | |
| मयाराम ब्राह्मण | १७६५ | ४३४ | ३६६ | मानिकचंद साहू | १७५२ | २५२ | २०५ |
| मयाराममिर्घा जैसिंगपुरेकर. | १७६९ | ४५५ | ३८६ | मालसे सदासिंहपत | १७५४ | १५० | १२६ |
| | १७५४ | २६३ | २१२ | मिर्जा अदलबेग | १७५९ | ३८२ | ३१४ |
| मल्हारपत | १७५८ | ३७४ | ३१० | | १७६१ | ३९७ | ३३० |
| मल्हारजी | १७५२ | २५४ | २०६ | | १७६३ | ३२३ | ३३० |
| महमद अबदुलाखा | १७५२ | २५४ | २०७ | ,, अब्दुलरहीमबेग | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| महमदअलीखान. | १७५२ | २५४ | २०७ | मिरजा साकर | १७५५ | ३३० | ३२७ |
| महमदअली बोहरी | १७६९ | ४५५ | ३८७ | मिश्र जेनराम | १७५५ | ४६४ | ३६७ |
| महमूदखान | १७५४ | २६८ | २१७ | मिश्र दीलतसिंह | १७५५ | ३३३ | २७४ |
| महादजी केशव | १७५४ | २८२ | २२६ | मिर्घा सुका | १७६७ | ४४३ | ३७१ |
| महादजी बाजी | १७५५ | ३०७ | २४८ | | १७६८ | ४५१ | ३८१ |
| महादजी शकर | १७६८ | ११७ | ९९ | मीर क्षमसुदीखान | १७५२ | २५५ | २०८ |
| | | ४४८ | ३७९ | मीर सिफिदरखा | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| | | ४ | ४ | मुकुंदराव महादेव | १७६९ | ४५५ | ३८५ |
| महावतजग नवाब | १७४६ | | | मुसाहेबखान | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| म्हाकूदे कासीराव | १७६९ | ४५५ | ३८६ | नेषशामजी | १७५० | १३० | ११० |
| माहादाजी शिवाजी | १७६९ | ४५५ | ३८६ | | | १३१ | ११० |
| " रघुनाथ | १७४७ | १९७ | १५७ | | १७५५ | २०९ | १७१ |
| | १७४९ | २०० | १६१ | | १७५५ | २११ | १७३ |
| | १७५१ | २०२ | १६२ | | १७६० | ३८७ | ३१७ |
| | १७५९ | १०४ | ८७ | मेहता सिरदारसिंह | १७६० | ३८७ | ३१७ |
| | १७६५ | ४३८ | ३७० | मेहता सुरतराम | १७६० | ३८७ | ३१७ |
| | १७६८ | ११७ | ९९ | | | | |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ |
|------------------------|------|--------|-------|-------------------|------|--------|-------|
| मैहदले बलवंतराव गणपत | १७५७ | ९० | ६७ | राघो चंद्रराव | १७६९ | ४५२ | ३८२ |
| मैत्री. | १७६९ | ४५३ | ३८३ | राजत जेतसिंग | | २१४ | १७४ |
| मोकासीवाले | १७५६ | ७५ | ५९ | राघो कैभव | १७५७ | ३६३ | ३०० |
| मोतीचंद | १७५९ | ३८२ | ३१४ | | १७५८ | १८५ | १४९ |
| मोपीलखान | १७६० | २३४ | १८७ | राघो श्रवक | १७५६ | ३४१ | २८४ |
| | | | | | १७५७ | ३६० | २९८ |
| मोर तिमानी कान्होनी | १७५८ | ३७४ | ३०९ | राघो बापुजी | १७६९ | ४५३ | ३८३ |
| ” रानोत्री | १७५८ | ३७४ | ३१० | रागडे | १७५५ | २१६ | १७५ |
| ” रामानी | १७५८ | ३७४ | ३०९ | | १७५५ | ४३२ | ३६५ |
| ” विठोनी | १७५८ | ३७४ | ३१० | राघो मऊर | १७५४ | १५० | १२४ |
| ” ज्योत्यानी | १७५५ | ३१२ | २५२ | | १७५८ | २२८ | १८३ |
| ” पाटील. | १७३७ | २४२ | १९९ | | १७६१ | २३५ | १८८ |
| मोरो कृष्ण | १७५५ | ३३० | २७१ | | १७६३ | ४५९ | ३४६ |
| | | ३३१ | २७३ | | | ४१९ | ३५० |
| मोरो नारायण | १७३९ | ४४३ | २०० | | १७६४ | ४२१ | ३५२ |
| | १७५८ | १८० | १४६ | | | ४२२ | ३५५ |
| मोहनलाल | १७५४ | ४२४ | ३३ | ” जनार्दन | १७५७ | २२० | १७९ |
| | १७५९ | ३८२ | ३१४ | | १७५८ | २२८ | १८३ |
| | | | | | १७६३ | ४१२ | ३४३ |
| य | | | | ” दादाजी | १७५८ | २२८ | १८३ |
| ययाजी शिवदेव | १७५२ | ३५ | २७ | | १७६० | ३६२ | ३२१ |
| | १७५४ | १४७ | १२१ | | | | |
| याकूबखलीखान बक्रील. | १७६१ | २३६ | १८९ | राघोनत भाना | १७६१ | २३७ | १९० |
| यादवरावजी | १७५५ | ३०० | २४२ | | १७६५ | २३९ | १९३ |
| | | ३०२ | २४३ | राघो लक्ष्मण | १७५४ | २८० | २२४ |
| | | ३११ | २५१ | | १७५५ | ३२६ | २६७ |
| | | ३१८ | २५९ | राघोबा | १७६९ | ४५६ | ३८८ |
| यादव धीपतराव. | १७५९ | १०४ | ८७ | राघोबा बशी | १७३३ | ४१९ | ३५० |
| यादोपंत माली | १७३७ | २४२ | १९९ | राघो मनहार शिवांग | १७३१ | ६६६ | ३९५ |
| येवलेकर शिवाजी नार्दिक | १७६१ | ३९० | २२८ | राजवाडे राघोभन | १७२६ | १५६ | १३० |
| ” नानानी | १७६० | १९२ | १५२ | | १७५५ | १६० | १३३ |
| | | | | | १७५८ | १८० | १४६ |
| र | | | | | | | |
| रघुनाथ सदासिंह | १७६८ | ४४६ | ३७८ | राघोबाजी शम्भू | १७०८ | ३७४ | ३१० |
| रंभाजीपंत | १७५८ | ३७१ | ३०७ | राजसिंग घोडबडा | १७६१ | ६०० | ३३२ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|---------------|------|-------|---------------------|--------------------|------|-------|-------|
| राजाराम भाळ | १७६४ | ४२६ | ३६२ | राठोड विजैसिंग | १७५५ | ३३३ | २७४ |
| राजोळे सटवाजी | १७५३ | १४५ | १२० | | १७५६ | ७७ | ६० |
| | | ४२८ | ३६३ | | | १५६ | १२९ |
| | १७५४ | १७६ | १४३ | | | २९१ | २३२ |
| राजाजी | १७६१ | ३९७ | ३३० | " रामसिंग | १७५४ | ५५ | ४१ |
| राधावाई | १७५७ | ३५१ | २९० | | | ५८ | ४३ |
| राठोड | १७५४ | ६१ | ४६ | | | ५९ | ४३ |
| राठोड अशंसिंग | १७५४ | ५९ | ४४ | | | ६० | ४५ |
| " वक्तसिंग | १७५४ | ५९ | ४४ | | | २६८ | २१७ |
| " विजैसिंग | १७५४ | ४६ | ३५ | | १७५५ | ६९ | ५३ |
| | | ४९ | ३६ | " सिवासिंगजी | १७५४ | १५२ | १२७ |
| | | ५४ | ४० | | | १५३ | १२८ |
| | | ५५ | ४१ | रामकृष्णराव गोविंद | १७७८ | १२१ | १०१ |
| | | ५७ | ४२ | राघोबा बकी | १७६३ | ४१९ | ३५० |
| | | ५९ | ४४ | रामचंद्र | १७६९ | ४५७ | ३८८ |
| | | ६० | ४५ | रामचद | १७५९ | १८८ | १५० |
| | | ६२ | ४७ | रामचंद्र कृष्णाजी | १७४३ | १२७ | १०८ |
| | १५२ | १२७ | | | १७६० | १९३ | १५३ |
| | १५३ | १२८ | | | | २३४ | १८६ |
| | १५६ | १२९ | | | | ३८८ | ३१८ |
| | २०८ | १७१ | | | | ४४३ | ३८६ |
| | २६८ | २१६ | | | १७६८ | ४४९ | ३८० |
| | २६९ | २१८ | | | | ४४३ | ३७६ |
| | २७० | २१८ | रामचंद्र कृष्ण | १७६० | २३४ | १८३ | |
| | २७१ | २१९ | रामचंद्र सावाजी | १७५७ | ३४६ | २८८ | |
| | २७७ | २२३ | रामचंद्र बन्गळ | १७६९ | ४५५ | ३८६ | |
| | २७८ | २२३ | रामा गोसावी सिलेदार | १७६९ | ४५५ | ३८६ | |
| | २८३ | २२६ | रामाजी गोपाळ | १७५४ | ४८ | ३६ | |
| | २९१ | २३२ | रामाजीपंत | १७५३ | ३८ | २९ | |
| १७५५ | ६९ | ५१ | | | १७५४ | २८३ | २२८ |
| | ६९ | ५३ | | | १७५५ | २८७ | २२९ |
| | २०७ | १६९ | रामाजीपंत रामराव. | १७५१ | १३९ | ११६ | |
| | २११ | १७३ | | | १७५६ | ७७ | ६० |

| व्यक्तिविशेष. | साल. | लेखांक. | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल. | लेखांक. | पृष्ठ. |
|-------------------|------|---------|-------|------------------------|------|---------|--------|
| रामाजीपत रामराव. | १७५६ | ८२ | ६३ | रामराक निलकठ. | १७५४ | २९८ | २४० |
| रामाजी नादक | १७६० | ११२ | १५२ | | | ३०२ | २४३ |
| रामाजी पडीत | १७६० | १५८ | १३२ | | | ३५९ | २९७ |
| | | | १६२ | | | ३६० | २९८ |
| | | | १९१ | | | ३६१ | २९८ |
| रामाजी जगन्नाथ. | १७५५ | २११ | १७२ | | | ३६३ | २९९ |
| | | | ३१७ | | १७५५ | ३११ | २५१ |
| रामाजी माणकेश्वर. | १७५५ | २९५ | २३५ | | १७५६ | ३३३ | २७५ |
| रामाजी यादव. | १७५९ | ९९ | ७८ | | | २४३ | २८६ |
| रामाजी सखदेव | १७५४ | ४२ | ३३ | | | २०३ | १८१ |
| रामाजी सखाजी | १७५५ | ३१६ | २५६ | | १७५७ | ३५६ | २९९ |
| रामाजी शकर. | १७५२ | २५० | २०३ | रामाजी खडेराक | १७४३ | २४५ | २०२ |
| | १७६० | ३८५ | ३१६ | रायरीकर चित्तो विठ्ठल | १७६८ | ४४६ | ३८७ |
| रामाजी यादव | १७५४ | २८० | २२४ | | | ४४८ | ३८० |
| रामनगरकर | १७५७ | ३५८ | २९७ | रावजी | १७६४ | ४२१ | ३५४ |
| | १७५८ | ९१ | ७० | | १७६८ | ४५१ | ३८१ |
| | १७५९ | ९९ | ७८ | रुद्राजी खडेराव | १७६३ | ४१७ | ३४९ |
| रामराव उधव | १७६५ | ४३८ | ३७० | | १७६४ | ४२२ | ३५५ |
| | १७६७ | ४४३ | ३७८ | | १७६५ | ४३१ | ३६५ |
| रामराव यादो. | १७५५ | ३११ | २५१ | | | ४१८ | ३४९ |
| | | ३१८ | २५९ | | | ४१९ | ३५० |
| | १७५६ | ३३५ | २८० | रेटरेकर गगाधर बाजीराव. | | | |
| रामराव नारायण | १७५५ | ७० | ५४ | | १७५५ | २९३ | २३३ |
| रामराव जमिदार. | १७५२ | ३१ | २४ | | | ३१६ | २५७ |
| रामवासपत | १७५१ | १६ | १५ | " बापू | १७५१ | १६ | १५ |
| | | १८ | १७ | रोहिले. | १७५४ | ५६ | ४२ |
| | १७५२ | २७ | २२ | रेणको आणाजी | १७५७ | ८७ | ६६ |
| | | २८ | २२ | | १७५९ | १०२ | ८४ |
| रामराक निलकठ | १७५५ | ३१९ | २५९ | रोही हरजी. | १७७८ | २४० | १९४ |
| | १७५४ | १५० | १२५ | ल | | | |
| | | २०५ | १६८ | लंबोवरपत. | १७५५ | ३०६ | २४७ |
| | | २०६ | १६९ | | | ३१२ | २५२ |
| | | २८७ | २२९ | लक्ष्मण सिधनाथ. | १७६९ | ४५३ | ३८३ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|--------------------|------|-------|-------|
| ..मण सिधपा | १७५५ | २९५ | २३६ |
| | १७५७ | ९० | ६७ |
| लिमये बाबुराव | १७५४ | २५९ | २०९ |
| | | २६६ | २१५ |
| | | २६८ | २१७ |
| | १७५५ | १६० | १३३ |
| | | २९५ | २३६ |
| | | ३०० | २४२ |
| | | ३०१ | २४३ |
| | | ३०२ | २४३ |
| | | ३०३ | २४४ |
| | | ३०७ | २४८ |
| | | ३१३ | २५३ |
| | | ३०८ | २४९ |
| | | ३०९ | २५० |
| | | ३१२ | २५३ |
| | | ३२१ | २६२ |
| | | ३२५ | २६६ |
| | १७५६ | ३३६ | २८१ |
| | १७५८ | ३७१ | ३०८ |
| | १७६० | ३९३ | ३२६ |
| .. बाळकृष्ण | १७५५ | ३५५ | २६६ |
| लेले अयवक हरी | १७५४ | १५० | १२५ |
| .. विसाजीपत | १७५५ | २९७ | २४० |
| | १७६८ | ४४६ | ३७८ |
| लेहणे केदारजी | १७५२ | २५५ | २०६ |
| साला त्रिजनाथ | १७५९ | ३७९ | ३१२ |
| ब | | | |
| बकाजी दुलभ | १७५४ | १५० | १२४ |
| | १७५५ | २९० | २३१ |
| बजीर | १७५४ | २७२ | २२० |
| बढोकर गोजाजी देवजी | १७७८ | २४० | १९४ |
| बळे कुसाजी कोलेर | १७४६ | १९६ | १५५ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखाक | पृष्ठ |
|----------------|------|-------|-------|
| | १७४७ | १९७ | १५६ |
| | १७४८ | १९९ | १६० |
| | १७४९ | २०० | १६१ |
| बळे चितो कृष्ण | १७४७ | १९७ | १५७ |
| | १७४८ | १९८ | १५७ |
| | | १९९ | १६१ |
| | १७४९ | २०१ | १६१ |
| | १७५१ | २०२ | १६२ |
| | १७५२ | २०३ | १६३ |
| | | २०४ | १६६ |
| | १७५४ | २०५ | १६७ |
| | | २०६ | १६९ |
| | | २०७ | १६९ |
| | | २०८ | १७० |
| | | २०९ | १७१ |
| | | २६४ | २१३ |
| | १७५५ | २१० | १७१ |
| | | २११ | १७२ |
| | | २१२ | १७३ |
| | | २१३ | १७४ |
| | | २१४ | १७४ |
| | | २१६ | १७५ |
| | | २१७ | १७६ |
| | | २१५ | १७५ |
| | | ३०० | २४२ |
| | | ३०२ | २४३ |
| | १७५६ | ३१८ | २५९ |
| | | २१८ | १७७ |
| | | २१९ | १७८ |
| | | २२२ | १७८ |
| | १७५७ | २२१ | १७९ |
| | | २२२ | १८० |
| | | २२३ | १८१ |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ | |
|------------------|--------------|--------|-------|-----|
| बले चित्तोकृष्ण. | १७५७ | २२४ | १८१ | |
| | | २२५ | १८२ | |
| | | २१६ | १८२ | |
| | | २३१ | १८५ | |
| | | २२८ | १८३ | |
| | १७५८ | २३१ | १८५ | |
| | १७५९ | २३२ | १८५ | |
| | १७६० | २३३ | १८६ | |
| | | २३४ | १८६ | |
| | १७६१ | २३५ | १८८ | |
| | | २३६ | १८८ | |
| | | २३७ | १९० | |
| | १७६२ | २३८ | १९१ | |
| | १७६३ | ४१९ | ३५० | |
| | १७६५ | २३९ | १९२ | |
| | १७७८ | २४० | १९३ | |
| | " घोडो कृष्ण | १७५२ | २०४ | १६६ |
| | | | २२२ | १८२ |
| | | १७५७ | २२० | १७८ |
| | | | २२३ | १८१ |
| १७५८ | | २२७ | १८३ | |
| | २२८ | १८३ | | |
| | २२९ | १८४ | | |
| " नारोकृष्ण | १७५४ | २०५ | १६८ | |
| | | २३० | १८४ | |
| | १७६१ | २३७ | १८९ | |
| | | २४० | १९३ | |
| " महादाजी कृष्ण | १७५४ | २०६ | १६९ | |
| | १७५७ | २२३ | १८१ | |
| | | २२५ | १८२ | |
| | | २२६ | १८२ | |
| | १७६० | २३२ | १८५ | |
| | १७७८ | २४० | १९३ | |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक. | पृष्ठ. |
|-----------------------|------|---------|--------|
| वाईगणकर भास्कर बलाळ | | | |
| | १७६९ | ४५३ | ३८३ |
| | | ४५४ | ३८४ |
| लक्ष्मका | १७५२ | ३० | २४ |
| लक्ष्मण गोविंद | १७५६ | ३४२ | २८२ |
| लक्ष्मण नारायण | १७५७ | ३४७ | २८८ |
| बाबले दौलतराव. | १७६९ | ४५५ | ३८५ |
| बाबले वि[हि]रोजी | १७६९ | ४५५ | ३८५ |
| " सताजी | १७५५ | १७० | १४० |
| | | २१६ | १७५ |
| | १७६१ | ३९७ | ३२९ |
| | १७६३ | ४१० | ३४२ |
| | | ४१८ | ३४९ |
| वामनराव धुडीराज | १७७८ | २४० | १९३ |
| विचुरकर त्रिवक नारायण | | | |
| | १७६२ | ४०७ | ३४० |
| | १७६३ | ४१५ | ३४९ |
| | १७६४ | ४२३ | ३५३ |
| | | ४२४ | ३५९ |
| " त्रिवक शिवदेव. | १७५५ | २९५ | २३५ |
| " नारोगकर | १७५१ | १० | ९ |
| | | १६ | १५ |
| | १७५५ | ७३ | ५७ |
| | | ३१२ | २५२ |
| | | ३२३ | २६४ |
| | १७५६ | ८१ | ६२ |
| | १७५७ | ३४७ | २८८ |
| | १७५८ | ३६८ | ३०३ |
| | १७५९ | १०१ | ८१ |
| | | १०९ | ९१ |
| | १७६१ | ४०६ | ३३९ |
| | १७६२ | ४०८ | ३४१ |
| | | ४१९ | ३५१ |

| व्यक्तिविशेष. | साल. | लेखांक. | पृष्ठ. |
|----------------------|------|---------|--------|
| बैद्य लक्ष्मण केशव. | १७६४ | ४२० | ३५२ |
| मोहसेकर. | १७५७ | ३६८ | ३०४ |
| व्यास गोपाळरामजी | १७६५ | ४३८ | ३७० |
| „ हरलाल नवलईकर | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| श | | | |
| सवादीपंत | १७६२ | २३८ | १९२ |
| सहाबोरेकर नारोडबुनाथ | १७६३ | ४१६ | ३४८ |
| सहाणे गिरजाजी. | १७५७ | ३५० | २९० |
| सहानवाजखान. | १७५७ | ८८ | ६६ |
| | | ९० | ६९ |
| शंकराजी | १७६३ | ११९ | ९७ |
| शंकराजी पाडुरंग | १७६९ | ४५५ | ३८६ |
| शंकरभा जमिदार | १७५२ | ३१ | २४ |
| | | २५४ | २०६ |
| शामराव नागनाथ | १७५५ | ३२३ | २६४ |
| शामराव भीमराव | १७५७ | ९० | ६७ |
| शामल | १७५५ | १६० | १३३ |
| श्रीधरजी | १७६९ | ४५३ | ३८४ |
| श्रीपतराव यादव | १७५९ | १०४ | ८७ |
| शिवो योगिराज | १७७० | ४६० | ३९० |
| | | ४६३ | ३९३ |
| | | ४६४ | ३९३ |
| | १७७१ | ४६५ | ३९४ |
| शिवरामपंत | १७७० | ४५९ | ३९० |
| शेकदार कृष्णाजीपंत | १७५८ | ३७४ | ३०९ |
| शेडे चिंतामण भट | १७७० | ४६१ | ३९१ |
| शेपोपंत. | १७५३ | ३८ | ३० |
| शेपो नारायण | १७६१ | ४०२ | ३३६ |
| | | ४०३ | ३३७ |
| शंकराजी केशव | १७६३ | ११५ | ९७ |
| श | | | |
| सख्वाजी | १७५७ | ९० | ६७ |
| सतुसिकनखां. | १७५२ | २५४ | २०६ |

| व्यक्तिविशेष. | साल | लेखांक | पृष्ठ. |
|-----------------------|------|--------|--------|
| सचीव सदाशिव चिमणाजी. | | | |
| | १७५४ | ५३ | ४० |
| | १७६८ | ११७ | ९९ |
| सदारामजी. | १७६४ | ४२१ | ३५५ |
| | | ४२२ | ३५८ |
| | | ४२५ | ३६० |
| सदाशिव. | १७६९ | ४५६ | ३८८ |
| सदाशिवर. व अवधूत | १७५८ | ८१ | ७० |
| सदाशिव गोपाल. | १७५३ | १४५ | १२० |
| सदाशिवपंत | १७६३ | ४१२ | ३४३ |
| सदाशिव पाडूरंग पावागड | १७५७ | ३५३ | २९२ |
| समरुकर. | १७६९ | ४५३ | ३८३ |
| समसामतदौला. | १७५४ | २८५ | २२८ |
| समशेरबहादुर | १७५५ | १६० | १३३ |
| | | ३२० | २६९ |
| | १७५७ | ८१ | ६२ |
| | | ८६ | ६५ |
| सरदेशमुखवाले. | १७५६ | ७५ | ५९ |
| सलगर अगाजी. | १७५२ | ३१ | २४ |
| सवाईराम. | १७५५ | १७० | १४० |
| | | २१६ | १७६ |
| सातारकर चित्तो अनंत. | १७६८ | ४४६ | ३७८ |
| सादलखान | १७५१ | १३ | ११ |
| सदाराम तेजपाल | १७५७ | ३५९ | २९७ |
| सादुलाखान | १७५९ | १९० | १५१ |
| सामवेदी व्यकटाचारी. | १७५८ | १८६ | १४९ |
| सालेकर तुलाजी | १७५३ | १४७ | १२२ |
| | | २९५ | २३५ |
| सावत | १७६४ | ४२४ | ३६० |
| सावनूरकर. | १७५५ | ३२६ | २६७ |
| | | ३३५ | २८० |
| | १७६१ | ४०१ | ३३५ |
| सावलदास छेजमल. | १७६९ | ४५५ | ३८६ |

| व्यक्तिविशेष | साल. | लेखांक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष. | साल | लेखांक | पृष्ठ |
|------------------|------|--------|-------|------------------|------|--------|-------|
| सासवडकर | १७५५ | ३१२ | २५२ | शिंदे जयाजी आपा. | १७५२ | २५४ | २०५ |
| | १७६४ | ४२१ | ३५५ | | | २५५ | २०७ |
| सिकेनीस. | १७६७ | ४४१ | ३७३ | | | २५६ | २०८ |
| सिंदे केरोजी. | १७५४ | १५५ | १२९ | १७५३ | ३६ | २८ | |
| सिंदे जयाजी आपा. | १७४६ | ४ | ४ | | ३७ | २९ | |
| | | १९६ | १५६ | | ३९ | ३१ | |
| | १७४७ | १९७ | १५६ | | ४० | ३१ | |
| | १७४९ | २०० | १६१ | | १४४ | ११९ | |
| | १७५० | ६ | ५ | | २५७ | २०८ | |
| | | ७ | ६ | १७५४ | ४१ | ३२ | |
| | १७५१ | ९ | ८ | | ४२ | ३२ | |
| | | ११ | ९ | | ४४ | ३४ | |
| | | १३ | १० | | ४५ | ३४ | |
| | | १४ | १२ | | ४६ | ३५ | |
| | | १५ | १३ | | ४७ | ३५ | |
| | | १७ | १६ | | ४९ | ३६ | |
| | | १८ | १६ | | ५० | ३८ | |
| | | १९ | १८ | | ५१ | ३८ | |
| | | १३९ | ११६ | | ५२ | ३९ | |
| | १७५२ | २२ | १९ | | ५३ | ४० | |
| | | २३ | १९ | | ५५ | ४१ | |
| | | २५ | २१ | | ५६ | ४१ | |
| | | २६ | २१ | | ५७ | ४२ | |
| | | २८ | २२ | | ५८ | ४३ | |
| | | २९ | २३ | | ५९ | ४३ | |
| | | ३० | २४ | | ६० | ४५ | |
| | | ३१ | २४ | | ६१ | ४६ | |
| | | ३२ | २५ | | १४९ | १२२ | |
| | | ३३ | २६ | | १५० | १२४ | |
| | | ३४ | २६ | | १५१ | १२६ | |
| | | ३५ | २७ | | १५२ | १२७ | |
| | २०२ | १६२ | | | १५३ | १२८ | |
| | २५३ | २०५ | | | १५७ | १३१ | |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष | साल. | लेखांक. | पृष्ठ. | | |
|-------------------|------|--------|-------|------------------|------|---------|--------|-----|-----|
| सिद्धे जयाजी आपा. | १७५४ | २०६ | १६९ | सिद्धे जयाजी आपा | १७५५ | ३२० | २६० | | |
| | | २६१ | २१० | | | ३२४ | २६५ | | |
| | | २६८ | २१७ | | | ३२५ | २६६ | | |
| | | २७१ | २१९ | | | ३२७ | २६८ | | |
| | | २७६ | २२२ | | | ३२८ | २६९ | | |
| | | २८१ | २२५ | | | ३३० | २७१ | | |
| | | २८२ | २२६ | | | १७५६ | १५८ | १३२ | |
| | | २८३ | २२६ | | | १७६ | १४३ | | |
| | | १७५५ | ६४ | | | ४८ | १७५७ | ३५९ | २९७ |
| | | | ६६ | | | ५० | १७५५ | ७२ | ५६ |
| | | | ६७ | | | ५० | ३३१ | २७२ | |
| | | | ६८ | | | ५१ | १७५६ | ७४ | ५७ |
| | | | ६९ | | | ५२ | ७८ | ६० | |
| | | | ७० | | | ५४ | ७९ | ६१ | |
| १५९ | १३२ | | १७६ | १४३ | | | | | |
| १६१ | १३४ | | १७५७ | ९६ | ७५ | | | | |
| १६५ | १३७ | | ९७ | ७५ | | | | | |
| १६३ | १३६ | | १७८ | १४४ | | | | | |
| १६६ | १३७ | | १७९ | १४५ | | | | | |
| २१६ | १७६ | | २२० | १७९ | | | | | |
| २८७ | २२९ | | २२२ | १८० | | | | | |
| २८९ | २३० | | ३५५ | २९५ | | | | | |
| २९१ | २३२ | १७५८ | १८१ | १४७ | | | | | |
| २९३ | २३३ | ३६८ | ३०४ | | | | | | |
| २९८ | २४० | ३७३ | ३०९ | | | | | | |
| २९९ | २४२ | १७५९ | ९९ | ७८ | | | | | |
| ३०१ | २४२ | १०१ | ८० | | | | | | |
| ३०२ | २४३ | १०२ | ८३ | | | | | | |
| ३०४ | २४५ | १०३ | ८६ | | | | | | |
| ३१४ | २५४ | १०४ | ८६ | | | | | | |
| ३१५ | २५५ | १०६ | ८९ | | | | | | |
| ३१६ | २५८ | ११० | ९३ | | | | | | |
| ३१९ | २६० | १७६० | १९३ | १५३ | | | | | |

| व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ. | व्यक्तिविशेष | साल | लेखांक | पृष्ठ |
|---------------|------|--------|--------|---------------|------|--------|-------|
| शिंदे जनकोजी. | १७६० | ३८७ | ३१७ | शिंदे दत्ताजी | १७५७ | ८९ | ६७ |
| | | ३८८ | ३१८ | | | ९० | ६९ |
| | १७६१ | १९४ | १५३ | | ३५५ | २९५ | |
| | | २३५ | १८९ | | ३६५ | ३०१ | |
| | ३९७ | ३३० | १७५८ | ९७ | ७५ | | |
| १७६३ | ४१५ | ३४६ | | ९८ | ७७ | | |
| „ जोत्याजी. | १७७० | ११८ | ९९ | १८३ | १४८ | | |
| „ तुकोजी. | १७५३ | ३८ | २९ | १८४ | १४८ | | |
| | १७५४ | ५८ | ४३ | २२७ | १८३ | | |
| „ दत्ताजी. | १७५१ | १३ | ११ | ३६८ | ३०४ | | |
| | १७५४ | ५८ | ४३ | १७५९ | ९९ | ७८ | |
| | ६१ | ४६ | १०० | | ७९ | | |
| | | २७७ | २२३ | १०१ | ८० | | |
| १७५५ | ६८ | ५१ | १०२ | ८३ | | | |
| | ७० | ५४ | १०३ | ८६ | | | |
| | ७० | ५५ | १०६ | ८९ | | | |
| | ७१ | ५५ | १०७ | ९० | | | |
| | ७२ | ५६ | १०८ | ९१ | | | |
| | ९६ | ५१ | ११० | ९३ | | | |
| | २१६ | १७६ | ११२ | ९६ | | | |
| | ३२४ | २६५ | १७६५ | ४३० | ३६४ | | |
| | ३२५ | २६६ | १७६६ | ४२० | ३५२ | | |
| | ३२६ | २६८ | १७५५ | १७० | १४० | | |
| | ३२८ | २६९ | | २१६ | १७६ | | |
| | ३३० | २७२ | १७६६ | ११६ | ९८ | | |
| ३३४ | २७६ | ४१३ | | ३४४ | | | |
| १७५६ | ७६ | ५९ | १७६३ | ४१५ | ३४६ | | |
| | ७७ | ६० | | ४१७ | ३४९ | | |
| | २१६ | १७६ | १७६४ | ४२३ | ३५९ | | |
| १७५७ | ८१ | ६२ | | ४२६ | ३६१ | | |
| | ८२ | ६३ | १७६७ | ४४१ | ३७२ | | |
| | ८४ | ६४ | | ४४२ | ३७४ | | |
| | ८८ | ६६ | | | | | |

„ नरसिंगराव

„ भागिरथिबाई

„ महावजी

| व्यक्तिविशेष. | साल | लेखाक. | पृष्ठ | व्यक्तिविशेष. | साल. | लेखाक. | पृष्ठ. | |
|---------------|------|--------|--------------------------|---------------------|------|--------|--------|-----|
| सिंदे महादजी. | १७६८ | ४४४ | ३७६ | सिंदे सावाजी पाटील. | १७६० | ३९५ | ३२७ | |
| | | ४४६ | ३७९ | | | १७६१ | २३७ | १९० |
| | | ४५१ | ३८२ | | | | ३९७ | ३३० |
| | १७६९ | ४५२ | ३८२ | सिलेगर आगाजी | १७५२ | २५४ | २०६ | |
| | | ४५८ | ३८९ | सिवजी भिकाजी | १७६८ | ४४५ | ३७७ | |
| | १७७७ | ११९ | १०० | सिवाजी भिकाजी. | १७५६ | ३४४ | २८६ | |
| | | १२० | १०१ | सिवराजपूरकर | १७५५ | ३३० | २७१ | |
| | | १२८ | १०१ | सिवाजी नारायण. | १७३९ | २४३ | २०० | |
| | १७७० | ४६० | ३९० | सिलैमखान. | १७५७ | ९० | ६७ | |
| | १७५५ | २१६ | १७५ | | | ९० | ६७ | |
| १७५२ | २५४ | २०६ | सुखटणकर रामचंद्र मल्हार. | | | | | |
| १७३३ | २ | २ | | १७३९ | २४३ | २०० | | |
| | ३ | ३ | | १७४३ | १२७ | १०७ | | |
| १७३९ | २४३ | २०० | | १२८ | १०९ | | | |
| १७४० | २४४ | २०१ | | १७४६ | १९६ | १५६ | | |
| १७४१ | ३ | ३ | | १७४७ | २४७ | २०२ | | |
| १७४३ | २४५ | २०२ | | | २४८ | २०३ | | |
| | २४६ | २०२ | | १७४९ | १२९ | १०९ | | |
| १७५१ | १३९ | ११६ | | २०० | १६१ | | | |
| १७५४ | ५९ | ४४ | | २०१ | १६२ | | | |
| १७५५ | ६९ | ५२ | | १७५० | ७ | ६ | | |
| १७५६ | ७८ | ६० | | | १३१ | ११० | | |
| १७५८ | ३६८ | ३०५ | | | १३० | ११० | | |
| १७५४ | १५० | १२३ | | | १३३ | ११२ | | |
| १७६१ | ३९७ | ३३० | | | १३२ | १११ | | |
| १७६४ | ४२७ | ३६२ | | | १३४ | ११२ | | |
| | ४३० | ३६४ | | | १३५ | ११२ | | |
| | ११६ | ९८ | | | १३६ | ११२ | | |
| | ४५३ | ३८४ | | | १३७ | ११३ | | |
| | ११८ | १०० | | | १७५४ | १५६ | १३१ | |
| १७७० | ११८ | १०० | | | २७५ | २२२ | | |
| १७५२ | २०४ | १६७ | | | १७५८ | ३६८ | ३०५ | |
| | २२८ | १८३ | | | १७५९ | ३७९ | ३३३ | |
| | २३० | १८४ | | | | | | |

| व्यक्तिविशेष. | साल | लेखांक. | पृष्ठ. | व्यक्तिविशेष. | साल | लेखांक. | पृष्ठ | |
|----------------|------|---------|--------|------------------------|------|---------|-------|-----|
| होळकर मल्हारजी | १७५१ | १७ | १६ | होळकर मल्हारजी | १७५५ | ३१८ | २५३ | |
| | | १८ | १६ | | | ३२६ | २६७ | |
| | | १९ | १८ | | | १७५६ | ७५ | ५८ |
| | | २० | १८ | | | | ३३६ | २८१ |
| | | २१ | १८ | | | | ३३९ | २८३ |
| | १७५२ | २२ | १९ | | ३४० | | २८४ | |
| | | २२ | १९ | | १७५७ | | ९० | ६९ |
| | | २६ | २२ | | | ३२६ | ३०२ | |
| | | २९ | २३ | | | ३४९ | २९० | |
| | | ३१ | २४ | | | १७५८ | ९२ | ७१ |
| | | ३२ | २५ | | | | ९४ | ७२ |
| | | ६१ | ४६ | | २३० | | १८५ | |
| | | ६२ | ४७ | | १७५९ | १०० | ७९ | |
| | | २०४ | १६६ | | | ११२ | ९४ | |
| | | १७५३ | १५३ | | १२८ | १७६१ | २३५ | ३८८ |
| | | १७५४ | ४२ | | ३३ | | ३९७ | ३३० |
| | ६२ | | ४७ | | ४०४ | ३३८ | | |
| | २०५ | | ७६८ | | १७६३ | ४१५ | ३४७ | |
| | २६५ | | २१४ | | | ४१९ | ३५१ | |
| | २७२ | | २२० | | | १७६४ | ४२३ | ३५९ |
| | २८४ | | २२७ | | ४४२ | | ३७५ | |
| | २८५ | | २२८ | | १७६८ | ४४४ | ३७६ | |
| | १७५५ | | ७२ | | | ५६ | ४२३ | ३५९ |
| | | ७३ | ५७ | | १७६७ | ४४२ | ३७५ | |
| | | १५८ | १३२ | | | ४४४ | ३७६ | |
| | | १५९ | १३२ | | १७६४ | ४२३ | ३५९ | |
| | | १६६ | १३७ | | | ४२२ | २०० | |
| २११ | | १७२ | १७३७ | २४१ | १९६ | | | |
| २१० | | २३१ | | २४१ | १९६ | | | |
| २१३ | | २३३ | क्ष | क्षीरसागर गोविंद कृष्ण | १७५४ | ४८ | ३५ | |
| २१५ | | २३६ | | | | १७५५ | १७४ | १४२ |
| २१८ | | २४० | | | | | २९८ | २४० |
| ३१२ | | २५३ | | | | २९९ | २४२ | |
| ३१४ | २५४ | १७६१ | | | | ३९७ | ३२८ | |
| ३१५ | २५५ | | | | | | | |
| ३१६ | २५६ | | | | | | | |

स्थलसूची.

| स्थलविधेय | लेखांक | पृष्ठ. | स्थलविधेय. | लेखांक. | पृष्ठ. |
|-----------|--------|--------|------------|---------|--------|
| . अ | | | अमदाबाद | ९५ | ७४ |
| अकबराबाद | २५२ | २०५ | | १८३ | १४८ |
| अकोलनेर | १४१ | ११८ | | ३५३ | २९२ |
| | १५६ | १३० | अयासा. | ४०४ | ३३८ |
| | २६८ | २१६ | अयोध्या | ९६ | ७४ |
| | ३७१ | ३०९ | | ९८ | ७७ |
| | ३७४ | ३०९ | | ९९ | ७८ |
| अचरे | ४५७ | ३८८ | | १०१ | ८१ |
| अजमेर | २१० | १७२ | | १९० | १५२ |
| | २११ | १७२ | | ३१५ | २५५ |
| | २८८ | २३० | | ३१६ | २५८ |
| | ३३३ | २७४ | | ३३१ | २७२ |
| | ३९७ | ३२८ | अरनिटा. | ४३४ | ३६७ |
| | ४५५ | ३८६ | अरणगांव. | ३९ | ३१ |
| अंजनवेल | ३१६ | २५७ | अचरंगाबाद. | १५ | १४ |
| | ३२६ | २६७ | | ३५ | २७ |
| अटक | ९३ | ७२ | | १७८ | ११४ |
| | ९४ | ७३ | | १८१ | १४७ |
| | ९५ | ७४ | | २२५ | १८२ |
| | ४५४ | ३८४ | | ३०६ | २४८ |
| अत्तरवेद | ८५ | ६४ | | ३३१ | २७२ |
| | १०२ | ८४ | | ३३३ | २७५ |
| | १३९ | ११६ | | ३६१ | २९९ |
| | १४० | ११७ | | ३९८ | ३३१ |
| | २३६ | १८९ | | ४१५ | ३४६ |
| | २८२ | २२६ | | ४१९ | ३५१ |
| | ३२० | २६० | | ४२२ | ३५८ |
| | ३५४ | २९३ | | ४२४ | ३६० |

| स्थलविशेष. | लेखाक | पृष्ठ | स्थलविशेष | लेखाक | पृष्ठ |
|---------------------|-------|-------|---------------|-------|-------|
| अवचितगड | ३१६ | २५८ | आवाड | १२५ | १०४ |
| अशेर [भ्रात] [किला] | ७८ | ६१ | | ४४६ | ३७८ |
| | ११९ | १०० | आम्नाघाट. | ३०६ | २४७ |
| | १२० | १०० | आमदरे | ३५९ | २९७ |
| अहमदनगर | ३६ | २८ | | ३६० | २९८ |
| | ९० | ६९ | | ४५५ | ३८५ |
| | ३३६ | २८१ | आया | ३२७ | २६० |
| आ | | | आवखली | ४५७ | ३८८ |
| अहिरवाडा [भो] | २९८ | २४१ | | | |
| | ४३९ | ३७० | इ | | |
| आकबरपूर | ४०४ | ३३७ | इटावा [भो] | २६४ | २१३ |
| आर्काट | ३१५ | २५५ | | २६८ | २१६ |
| | ३३६ | २८१ | | ३२० | २६० |
| आगर [कस्बे] | २६१ | २१० | | ३३० | २७१ |
| आगरे | ४२ | ३३ | | ४०४ | ३३७ |
| | १२६ | १०५ | इडवे | ४६४ | ३९३ |
| | २०३ | १६४ | इदूर. | २१९ | १७८ |
| | २०४ | १६६ | | ११२ | ९६ |
| | ३०६ | २४७ | | २३९ | १९३ |
| | ३१६ | २५७ | | २५७ | २०८ |
| | ३२० | २६० | | ३१८ | २५९ |
| | ३२६ | २६७ | | ४३४ | ३६७ |
| | ३२९ | २७० | | ४४३ | ३७५ |
| | ३३३ | २७५ | इंद्रप्रस्थ | ३८७ | ३१७ |
| | ३५४ | २९३ | इरावतनगर [भो] | १२६ | १०५ |
| | ४४४ | ३७६ | इसरादा | १९८ | १५९ |
| आजमेर. | २०३ | १६४ | इसलामपुरी | ४५३ | ३८३ |
| | २०४ | १६६ | | ४५४ | ३८४ |
| | ३९७ | ३२८ | ई | | |
| | | ३२९ | ईराण | १० | ९ |
| | ४५५ | ३८६ | | १२ | १० |
| आंतरी | २६८ | २१६ | ईसापुर | ३६ | २८ |
| आबसेण. | ४०४ | ३३६ | | ३९ | ३१ |

| स्थलविशेष | लेखांक | पृष्ठ | स्थलविशेष | लेखांक | पृष्ठ. |
|---------------------|--------|-------|---------------------|--------|--------|
| | | | उज्जैन [अवतिकापुरी] | ४२५ | ३६० |
| उज्जैन [मौजे] | ७५ | ५९ | | ४२७ | २६२ |
| उज्जैन [अवतिकापुरी] | ३९ | ३१ | | ४३१ | ३६४ |
| | ४० | ३१ | | ४३४ | ३६७ |
| | १४१ | ११७ | | ४४१ | ३७२ |
| | १४४ | ११९ | | ४४९ | ३८० |
| | १४५ | १२० | | ४५० | ३८१ |
| | १८३ | १४८ | | ४५१ | ३८१ |
| | १९२ | १५२ | | ४५९ | ३९० |
| | २२५ | १८२ | | ४६० | ३९० |
| | २२७ | १८३ | | ४६५ | ३९४ |
| | २३६ | १८९ | उदेपूर | ४८ | ३५ |
| | २३७ | १९० | | | ३९ |
| | २३९ | १९३ | | २७९ | २२४ |
| | ३१४ | २५४ | | ३९७ | ३३० |
| | ३३३ | २७५ | | ४५१ | ३९२ |
| | ३३४ | २७७ | | ४५८ | ३८९ |
| | ३४३ | २८५ | उदेरी | ११४ | ९७ |
| | ३५४ | २९४ | | १६० | १३३ |
| | ३८२ | ३१४ | | २७९ | २२४ |
| | ३८५ | ३१६ | उन्हेली. | ३३४ | २७६ |
| | ३८६ | ३१६ | | ३९७ | ३२९ |
| | ३८९ | ३१८ | | ४०० | ३३२ |
| | ३९७ | ३२८ | | ४२३ | ३५९ |
| | ३९७ | ३२९ | | | |
| | ३९७ | ३३० | | ऐ | |
| | ४१४ | ३४५ | ऐनापूर | २९८ | २४१ |
| | ४१५ | ३४६ | | ओ | |
| | ४१७ | ३४९ | ओकार | ५६ | ४२ |
| | ४१९ | ३५० | | औ | |
| | ४२० | ३५२ | औष [मौजे] | २ | २ |
| | ४२१ | ३५५ | | ब | |
| | ४२२ | ३५७ | अजनडोह | ३८१ | २१४ |

| श्रम विभाग. | लेखांक. | पृष्ठ. | ग्रन्थविषय. | लेखांक. | पृष्ठ. |
|----------------|---------|--------|------------------|---------|--------|
| | ४६० | ३१० | कर्नाटक. | ४१९ | ३५१ |
| | ४६१ | ३११ | | ४२१ | ३५४ |
| | ४६३ | ३१३ | | ४२३ | ३५९ |
| | | | | ४५६ | ३८० |
| क | | | | ४४० | ३७२ |
| ब नारायणराव. | ४२९ | ३३० | करवरा | ४१७ | ३६७ |
| बद | ४ | ४ | करवेग. | ३४० | ३७२ |
| बदनीशान (गोले) | ३६ | २८ | | ४१५ | ३७२ |
| बदगिया. | ९० | ६७ | करवे [प्रात] | २४१ | १९७ |
| बद [गोले] | १३ | ११ | | २४३ | २०० |
| | ४०४ | ३३८ | | २४४ | २०१ |
| बद | ३०९ | २७० | करमान [करवे] | ९० | ६८ |
| बदभे. | २४४ | २०१ | अतगवेर | ३९२ | ३२२ |
| बदगिया | २४१ | १९६ | करोली | ४०४ | ३३८ |
| बदगोमथ | २४१ | १९६ | करवतवारीचा घाट. | १८३ | १४८ |
| बदगोमथ. | ३१२ | २५२ | कान्हाग. | १२६ | १०५ |
| बदगोमथ | ४०४ | ३३८ | कान्धीर | २३ | १९ |
| | १३ | ११ | | ३८ | ३० |
| बदगोमथ. | १६७ | १३४ | कालवुणे | ४०१ | ३३५ |
| | ३०६ | २४७ | कृष्णामीर | ६४ | ४८ |
| | ३१६ | २५८ | | ७२ | ५६ |
| | | | | ७३ | ५७ |
| बदगोमथ. | ८ | ८ | | २९४ | २३४ |
| | १६ | १५ | | २९५ | २३५ |
| | ६४ | ४८ | | २९८ | २४१ |
| | ७३ | ५७ | | ३३४ | २८० |
| | २९४ | २३४ | | ३३५ | २८० |
| | २९५ | २३४ | | ४१९ | ३५१ |
| | ३०५ | २४६ | | ४६ | ३५ |
| | ३०६ | २४८ | कृष्णगड. | ४७ | ३५ |
| | ३१० | २५० | | १२६ | १०५ |
| | ३१२ | २५३ | कावला [गोले] | ३१ | २४ |
| | ३१६ | २५७ | कानकुर्ती [गोले] | १२३ | १०२ |
| | ४१५ | ३४६ | कालपी. | | |

| स्थलविशेष | लेखाक | पृष्ठ | स्थलविशेष | लेखाक. | पृष्ठ |
|------------------|-------|-------|---------------|--------|-------|
| कालपी | १९८ | २४१ | कुटिया. | ४०४ | ३३८ |
| कालीनदीतीर. | १३९ | ११६ | कुडाळ [प्रात] | ४२४ | ३६० |
| कालवा देवीचे तले | ३७१ | ३०७ | कुभेरी [पो] | १४८ | १२२ |
| काल्यादेह. | ४३३ | ३६६ | | १४९ | १२३ |
| | ४५१ | ३८२ | | २०५ | १६७ |
| कावमीर. | ९५ | ७४ | | २०६ | १६९ |
| काशी. | १३ | ११ | | २५१ | २१० |
| | ९० | ६९ | | २६१ | २१० |
| | ९६ | ७४ | | २९१ | २३२ |
| | ९७ | ७६ | | २९२ | २३३ |
| | ९८ | ७७ | | ३०४ | २४४ |
| | ९९ | ७८ | | ४६० | ३९१ |
| | १०१ | ८१ | कुरकुवा. | ४२३ | ३५९ |
| | १०२ | ८३ | कुपक्षेत्र. | ९४ | ७२ |
| | १०५ | ८८ | | १०६ | ८९ |
| | १२३ | १०२ | | ३९७ | ३२८ |
| | १४४ | १२९ | | ३९७ | ३३० |
| | २०३ | १६३ | कुरा | २९२ | २३२ |
| | ३४२ | २८५ | | २९२ | २३३ |
| कागे | ११४ | ९७ | | ३२९ | २७० |
| कासारवलीचे तळे | ३७१ | ३०७ | | ३३० | २७२ |
| कासगज | ४०४ | ३३८ | | ४०४ | ३३८ |
| कास्टी [मीजे] | ३६ | २८ | कुलतूर | ९० | ६७ |
| काल्या | २१६ | १७६ | | ३६० | २९८ |
| | ४३४ | ३६६ | | ३६३ | ३०० |
| काशी नरसी | ४१६ | ३४८ | | ४०५ | ३३९ |
| किरावली [पो] | १२६ | १०५ | | ४१५ | ३४६ |
| किसनगढ | २६५ | २१४ | | ४१७ | ३४८ |
| कुजपुरा | २३३ | १८६ | | ४३० | ३६४ |
| | २३४ | १८७ | | ४३२ | ३६५ |
| | ३९२ | ३२२ | | ४४४ | ३७६ |
| कूटरा. | ४०४ | ३३८ | | ४५० | ३८१ |

| ग्रामविशेष. | दिगात. | गुठ | ग्रामविशेष. | दिगात. | गुठ |
|-------------|--------|-----|----------------|--------|-----|
| कडपूर | १६० | ३९१ | कोट्टे. | २३६ | १८८ |
| बुधनपुरा. | १०१ | ३३८ | | २६१ | २१० |
| बगामुर्त | १५३ | ३८३ | | ३८० | २८१ |
| कोडा. | १०१ | ८३ | कोट्टमूनगी. | ४२० | ३५२ |
| केरुगामुड | १५३ | १५६ | कोट्टडी | ३१३ | २५९ |
| कोवना | ११३ | १२१ | कोडापुतोरा | ४०४ | ३३८ |
| | १६० | १३३ | कोडगाम. | २८१ | १९६ |
| | १८० | १४६ | कोयलगाडा | ४०१ | ३३५ |
| | १८२ | ११३ | कोरेगाऊ [मीजा] | २४१ | १९५ |
| | १९६ | १५६ | | ४५७ | ३८८ |
| | २१५ | २३६ | कोलेम | ६२ | ३३ |
| | ३१८ | २५९ | कोडेगात. | ७९ | ६१ |
| | ३३१ | २६१ | | २८१ | १९६ |
| | ३३४ | २७२ | | | |
| | ३३७ | २८९ | स | | |
| | ३३८ | २८२ | मगागोष. | २१८ | १७७ |
| | ३३९ | २८३ | दगगोष | २९८ | २४१ |
| | ४२४ | ३६० | मानगेर. | ४२२ | ३५७ |
| | ४५३ | ३८८ | | ४२३ | ३५९ |
| कोट्टे. | ७४ | ५८ | राटू | २१६ | १७६ |
| | १११ | ११० | गानयनी [कसवे] | ३०० | २४२ |
| | ११४ | ११९ | गातोली [पो] | १२६ | १०५ |
| | १४५ | १२० | | ३१६ | २५७ |
| | १५८ | १३२ | सानदेन | ७८ | ६१ |
| | १७० | १३९ | | २२० | १७९ |
| | १८० | १४८ | | ४२३ | ३५९ |
| | १८३ | १४८ | | ४५५ | ३८७ |
| | १८५ | १६९ | रिचीवाडा | ८६ | ६५ |
| | १८६ | १६९ | | ३९७ | ३३० |
| | २१२ | १७४ | | ३९९ | ३३१ |
| | २१८ | १७७ | सितोली | ३१२ | २५२ |
| | २२० | १७८ | सेड | ४६२ | ३९२ |
| | २३० | १८४ | खेवराबारा [पो] | ४०४ | ३३८ |

| स्थलविशेष | लेखांक | पृष्ठ | स्थलविशेष | लेखांक | पृष्ठ. |
|--------------|--------|-------|-------------|--------|--------|
| खेवरावीर | २६४ | २१० | गया. | १२३ | १०२ |
| खेरागड [पो] | १२६ | १०५ | गागली | १५० | १२४ |
| खोजे | २७८ | २२३ | गारसी | २४४ | २०१ |
| खोरपाटण | ३१६ | २५७ | गुजराय. | ८ | ८ |
| खवायत | १८३ | १४८ | | २० | १८ |
| | | | | २३ | १९ |
| गडमुक्तेश्वर | २८५ | २२८ | | २४ | २० |
| | २९० | २३१ | | २६ | २२ |
| | २९५ | २३४ | | १८१ | १४७ |
| गडकालिंजर | २४७ | २०२ | | १८२ | १४७ |
| गदवाल | २५४ | २०६ | खेची | २६ | २२ |
| ग्वाल्हेर | २९ | २३ | | ५६ | ४२ |
| | ५६ | ४२ | | १८१ | १४७ |
| | ५९ | ४४ | | २९५ | २३६ |
| | ७० | ५४ | | ३०१ | २४२ |
| | १२४ | १०३ | | ३९६ | ३२८ |
| | १६६ | १३७ | गुहाणा [पो] | १२६ | १०५ |
| | २३५ | १८८ | गोकाक | २९५ | २३५ |
| | २३७ | १९० | | ३०६ | २४८ |
| | २६४ | २१३ | गोकूल | ४६० | ३९१ |
| | २६८ | २१६ | गोवलकोट | ३२६ | २६७ |
| | २८९ | २३० | गोवे | १६१ | १३४ |
| | २९३ | २३३ | | ३०६ | २४७ |
| | ३०० | २४२ | गगा नदी | १० | ९ |
| | ३०१ | २४२ | | १२ | १० |
| | ३०२ | २४३ | | १३ | ११ |
| | ३०६ | २४७ | गोदावरी नदी | ३३ | २६ |
| | ३०७ | २४८ | | ६१ | ४६ |
| | ३१२ | २५१ | | ६२ | ४७ |
| | ३१३ | २५२ | | १०२ | ८३ |
| | ३२२ | २६४ | | १४१ | ११७ |
| | ३९५ | ३२७ | | १४३ | ११८ |
| गया. | ४ | ४ | | १६० | १३३- |

| स्थलविशेष | किमांक | पृष्ठ | स्थलविशेष. | किमांक | पृष्ठ. | | |
|-------------|--------|-------|------------------|--------|----------------|-----|-----|
| गोदावरी नदी | ११० | १५१ | बाँदवड. | ११२ | १५ | | |
| | ११० | १५२ | | ३०६ | २६७ | | |
| | १११ | १६० | पाभारगोंद. | ४०३ | ३५९ | | |
| | २०० | १६० | | ३ | ३ | | |
| | २३६ | १८१ | | ३६ | २८ | | |
| | २५६ | २०८ | | १५० | १२३ | | |
| | २८८ | २०९ | | १९७ | १५६ | | |
| | २८७ | २०९ | | २१८ | २०१ | | |
| | २८७ | २०७ | | बाँद. | २१६ | १७६ | |
| | २९५ | २३८ | | | विगली [मोने] | २४० | १९७ |
| | २९५ | २३५ | | | विनवड | २४० | १९९ |
| | ३५५ | २९५ | | | चंद्रभागा नदी. | ९३ | ७२ |
| | ३६६ | ३०२ | बी [ब] गेडी [गो] | १२६ | १०५ | | |
| | २१० | २३१ | | | | | |
| | २९३ | २३३ | ज | | | | |
| | ३१८ | २८९ | जगनेर | १२६ | १०५ | | |
| | ४८५ | ३६६ | जगनगर [पुर] | ५६ | ४२ | | |
| | ४८६ | ३७७ | | ६१ | ४६ | | |
| | ४५६ | ३८७ | | ६२ | ४७ | | |
| | गंगरट. | ३१९ | २९० | | ६५ | ४९ | |
| ३७३ | | ३०९ | | ९५ | ७४ | | |
| गगेरू | ३६६ | २०२ | | १७० | १३९ | | |
| गगो [गो] | १२६ | १०५ | | १७५ | १४२ | | |
| गंगोर [गो] | १०६ | १०५ | | १७५ | १४३ | | |
| गंभीरगड | ९१ | ७० | | २१६ | १७५ | | |
| | | | | २६९ | २१८ | | |
| | | | | २६९ | २१९ | | |
| घाट. | ८३ | ६३ | | २७९ | २२४ | | |
| घाटपूर [गो] | ४०४ | ३३८ | | २८९ | २३० | | |
| | | | | २८९ | २३१ | | |
| चमली. | २८९ | २३० | | ३९७ | ३३० | | |
| बाँदवड | ७५ | ५८ | जयगड. | ३२६ | २६७ | | |

| स्थलविशेष | लेखांक. | पृष्ठ. | स्थलविशेष | लेखांक | पृष्ठ. |
|--------------|---------|--------|--------------------|--------|--------|
| जयदुर्ग. | ३१६ | २५७ | | | |
| जलगाव जामोदी | ४५३ | ३८३ | द | | |
| जलालाबाद. | १९० | १५२ | टोक [पो] | १९८ | १५८ |
| जवारची गढी | ४६० | ३९० | टोके. | १०९ | ९२ |
| जव्हार. | ९१ | ७० | | ३५६ | २९६ |
| जाजमऊ | ४०४ | ३३८ | | ३५९ | २९७ |
| जाटवाडा | १४८ | १२२ | | ४१५ | ३४६ |
| जामोदी | ४५४ | ३८५ | | ४४६ | ३७८ |
| जालनापूर. | ४४६ | ३७८ | ड | | |
| | ४५३ | ३८३ | डग | ३७३ | ३०९ |
| | ४५४ | ३८४ | डरेवापूर. | ४०४ | ३३७ |
| | ३६ | २८ | डागरी | १२१ | १०१ |
| जावली | २९७ | २४० | डीग | ४६० | ३९१ |
| जुन्नर [पो] | ७९ | ६१ | डोगरपूर [पो] | ४५५ | ३८६ |
| जेजूरी | ११३ | ९६ | डोलस [मोजे] | ७९ | ६१ |
| | २४२ | १९८ | त | | |
| | ३३९ | २८३ | ताडा गणेरू [पो] | १२६ | १०५ |
| जेवले. | १८१ | १४६ | तापीतीर | ३१८ | २५९ |
| जोतिरिंग. | ४२७ | ३६२ | | ४०४ | ३३८ |
| जोगपूर | ३३३ | २७४ | तालगाव. | ३३० | २७१ |
| जोधपर | ४९ | ३७ | | ४०४ | ३३८ |
| | ५५ | ४१ | तावसर [नबीक नागोर] | २०९ | १७१ |
| | १५५ | १४३ | तिगजली. | ४०१ | ३३५ |
| | १६६ | १३७ | अयंक | २३ | १९ |
| | १७० | १४० | त्रिगजपूर | ३१२ | ३७८ |
| | २१६ | १७५ | त्रिवकेवर. | २९४ | २३४ |
| | २१८ | १७७ | | ३०५ | २४६ |
| | २४० | १९४ | | ३०६ | २४७ |
| जंजीरा | १०७ | ९० | | ३१८ | २५९ |
| शाबोली. | २१६ | १७६ | | ४२२ | ३५८ |
| शालोदे. | ३५३ | २९२ | सीसगाव [मोजे] | ७५ | ५९ |
| शाशी. | ११८ | १०० | तुकलाबाद | २०३ | १६३ |
| शोरक बडोद. | ४५५ | ३८५ | तुगभद्रा [नदी] | १४७ | १२१ |

| स्थलविशेष | लेखाक | पृष्ठ | स्थलविशेष | लेखाक | पृष्ठ. |
|-------------------|-------|-------|---------------|-------|--------|
| दुगौली | २१६ | १७६ | नवगाव | १२५ | १०४ |
| देऊलगाव [मोज] | ३६ | २८ | | १४३ | ११८ |
| | २४६ | १९५ | | १४७ | १२१ |
| देडोल | ९१ | ७० | | १५६ | १३० |
| देरेड [मोजे] | ७५ | ५९ | | ३७१ | ३०८ |
| देवरुख | १ | १ | | ४४६ | ३७८ |
| | १४७ | १२१ | नवाई | १९८ | १५८ |
| देवदुर्ग | ३१ | २४ | नवीगण. | ४०४ | ३३८ |
| देवकली ओरिया [पो] | ४०४ | ३३८ | नागेश्वर | १ | १ |
| दोबारी. | ४५८ | ३७९ | नागोठणे | ११७ | ९९ |
| दौलताबाद | ३६ | २८ | नागोर [प्रात] | १५८ | १३२ |
| | | | | १५९ | १३२ |
| घ | | | | १६० | १३३ |
| घरगाव [पो] | ४५५ | ३८६ | | १६१ | १३४ |
| घरचिरी | ४६२ | ३९२ | | १६३ | १३६ |
| घोडपे | ४४८ | ३७९ | | १६५ | १३७ |
| न | | | | १६८ | १३८ |
| नगर [पो] हुवेली | ३६ | २८ | | १७० | १३९ |
| | ३९ | ३१ | | १७० | १४० |
| | २९५ | २२६ | | १७२ | १४१ |
| नगवगा [मोजे] | १४३ | ११८ | | १७३ | १४१ |
| नगद [रया] | ४०४ | ३३८ | | १७६ | १४३ |
| नर्मदा नदी तीर | ४०४ | ३३९ | | २१० | १७१ |
| | ४१५ | ३४७ | | २११ | १७२ |
| नरवर | २६४ | २१३ | | २१२ | १७३ |
| | ३०१ | २४२ | | २१३ | १७४ |
| | ३०४ | २४४ | | २१४ | १७४ |
| | ३०६ | २४६ | | २१५ | १७५ |
| | ३०७ | २४८ | | २१६ | १७७ |
| | ३१२ | २५१ | | २१८ | १७७ |
| | ४१४ | ३४५ | | २१९ | १७८ |
| नरसीपूर | २९५ | २३५ | | ३०५ | २४६ |
| नरायणा | २२५ | १७५ | | ३१० | २५० |
| नलदुर्ग | १८१ | १४७ | | | |

| स्थलविशेष | लेखाक. | पृष्ठ. | स्थलविशेष | लेखाक. | पृष्ठ. | |
|-----------------|--------|--------|----------------|--------|--------|-----|
| पाटण | ३८७ | ३१७ | पारगांव [मोजे] | ३६ | २८ | |
| | ४०८ | ३४० | | २४१ | १९६ | |
| | ४०९ | ३४१ | पालगढ. | १६२ | १३५ | |
| | ४१० | ३४२ | | ३०६ | २४७ | |
| | ४१२ | ३४३ | | ३१६ | २५८ | |
| | ४१३ | ३४४ | पावस | १४७ | १२२ | |
| | ४१५ | ३४६ | पानागढ. | ३५३ | २९२ | |
| | ४१७ | ३४८ | | ४५५ | ३८५ | |
| | ४१८ | ३४९ | पिपलस [मोजे] | ७५ | ५८ | |
| | ४१९ | ३५० | | २४२ | १९८ | |
| | ४२१ | ३५४ | पिपलगाऊ गर्मा | ३७४ | ३०९ | |
| | ४२२ | ३५६ | पुणे. | २ | २ | |
| | ४२३ | ३५९ | | ९ | ९ | |
| | ४२६ | ३६१ | | ३८ | ३० | |
| | ४४७ | ३७९ | | ३९ | ३१ | |
| | ४५२ | ३८२ | | ५१ | ३८ | |
| | ४६५ | ३९५ | | ७२ | ५६ | |
| | पाटणा | १७० | १३९ | | ७५ | ५८ |
| | | १७४ | १४२ | | ७७ | ६० |
| २१२ | | १७४ | | ९६ | ७४ | |
| २१८ | | १७७ | | १०९ | ९१ | |
| २८८ | | २३० | | १३२ | १११ | |
| ४५० | | ३८१ | | १३४ | ११२ | |
| पांडिये पेडगाव. | ३९ | ३१ | | १७७ | १४४ | |
| | २४४ | २०१ | | २३७ | १९० | |
| पाडेपेड. | ३७४ | ३०९ | | २४२ | १९७ | |
| पाणपत | १९३ | १५३ | | २५९ | २०९ | |
| | २३४ | १८६ | | २६८ | २१७ | |
| | ३९० | ३१९ | | २७३ | २२१ | |
| | ३९१ | ३२० | | २७४ | २२१ | |
| | ३९२ | ३२३ | | २७८ | २२३ | |
| | ३९३ | ३२६ | | २८० | २२४ | |
| | पारसी. | २५४ | २०५ | | २८१ | २२५ |

| स्थलविशेष | लेखाक्र | पृष्ठ | स्थलविशेष | लेखाक्र. | पृष्ठ |
|------------------------|---------|--------|---------------------|----------|-------|
| पुण | २८६ | २२९ | पैठण [पो] | ७७ | ६० |
| | २९५ | २३६ | | ८८ | ६६ |
| | ३०४ | २४५ | | ४४६ | ३७७ |
| | ३०५ | २४६ | पोहरी | ३०१ | २४२ |
| | ३०६ | २४७ | | ३०२ | २४३ |
| | ३०६ | २४८ | | ३०४ | २४४ |
| | ३१० | २५० | | ३०६ | २४६ |
| | ३१२ | २५३ | पचमहाल [न बेदर] | २८ | २२ |
| | ३१६ | २५६ | | | |
| | ३१८ | २५९ | फत्तेपूर | ४०४ | ३३८ |
| | ३२१ | २६१ | फत्तेदुर्ग | १६२ | १३४ |
| | ३२६ | २६७ | | ३०६ | २४७ |
| | ३२७ | २६८ | फत्तेपूर सीकरी [पो] | १२६ | १०५ |
| | २२९ | २७० | फत्तेगड. | २१६ | २५८ |
| | ३३४ | २७५ | फामुद | ३३० | २७१ |
| | ६३७ | २८२ | | ४०४ | ३३७ |
| | ३३८ | २२८ | फरोकाबाद | १३ | ११ |
| | ३३९ | २८२ | | १३९ | ११६ |
| | ३६२ | २९९ | | ३५५ | २९४ |
| | ३६८ | ३०३ | | ४६४ | ३९४ |
| | ३७१ | ३०७ | फलटण [ता] | २४४ | २०१ |
| | ४१५ | ३४६ | फुलचरी | ३३६ | २८१ |
| | ४१७ | ३४९ | | | |
| ४२४ | ३६० | वकापूर | ३१६ | २५७ | |
| ४४८ | ३७९ | वडगाव. | १५५ | १२९ | |
| पुरछपार [पो] पुष्कर | १२६ | १०५ | वडोदे | ३९५ | ३२७ |
| | ६५ | ४९ | वडवाई [पो] | ४५५ | ३८५ |
| | १५५ | १२९ | वनास नदी | १९८ | १५७ |
| | २९६ | २३७ | वराणपूर | १६ | १५ |
| | | | | २३७ | १९० |
| पेठणे | ९६ | ७४ | | ४३९ | ३७१ |
| वेन [कसवे] | ४२० | ३५२ | | ४३६ | ३६७ |
| वैठण [पो] | ३६ | २८ | बलकवाणा | ३५४ | २९३ |
| | ७३ | ५७ | बहार घाट. | | |

| स्थलविशेष | लेखाक | पृष्ठ | स्थलविशेष | लेखाक. | पृष्ठ. |
|------------------|-------|-------|---------------|--------|--------|
| बागपत | १८८ | १५० | बुदी | २०८ | १७९ |
| धानकोट | ३१६ | २५८ | | २३५ | १८८ |
| | १६२ | १३५ | | ३४० | २८४ |
| नावधन | ३७१ | ३०७ | | ४४४ | ३७६ |
| बागलकोट | ३३५ | २८० | बुदेलखड | २३ | २० |
| बागनगिरा. | ३१ | २४ | | १०२ | ८४ |
| वारी | ४५८ | ३८९ | | ११२ | ९६ |
| वारपुले | २८४ | २२७ | | १९६ | १५६ |
| वाल [ज] मोजे | ३६ | २८ | | २४७ | २०२ |
| वालबोर [पो] | ४०४ | ३३८ | | ३९९ | ३३१ |
| वालमगड. | २७२ | २२० | वेदर | ४ | ४ |
| वावली भोई [मोजे] | ७५ | ५९ | | २८ | २२ |
| विकानेर | २३५ | १८८ | | ४०१ | ३३५ |
| विजापूर | ४४९ | ३५१ | बेलवडी [मोजे] | ३६ | २८ |
| विजैपूर [कसवे] | २३६ | १८८ | बगाला | ९४ | ७२ |
| विठूर | ३२९ | २६९ | | ९७ | ७६ |
| | ३३० | २७१ | | ९८ | ७७ |
| | २३१ | २७२ | | ९९ | ७८ |
| | ३३३ | २७५ | | १०१ | ८० |
| | ३३६ | १५६ | | १०२ | ८४ |
| | ३५५ | २९५ | | ११२ | ९६ |
| | ४०४ | २३८ | | ३९२ | ३२२ |
| विडकिनगाव [मोजे] | ३६ | २८ | | | |
| विदरार [सस्थान] | २९५ | २३५ | भटगाव | ४२८ | ३६३ |
| विदनूर | ३०६ | २४८ | | ४५३ | ३८२ |
| | ३१६ | २५७ | भदावर. | २३ | २० |
| विरोण [पो] | ४०४ | ३३७ | भागानगर | ३१५ | २५५ |
| विलासपूर पो | ४०४ | ३३७ | भागीरथी तीर | २९० | २३१ |
| वीड [पो] | २५५ | २०७ | | ४८९ | ३९० |
| | ४१७ | ३४९ | | ४६५ | ३९४ |
| | ४१९ | ३५० | भिलाडा | | |
| बुवकी | ४०४ | ३३८ | भुगाव | ३१६ | २५६ |
| बुदी | १९८ | १५८ | | ३३० | २७१ |

| स्थलविशेष | लेखाक | पृष्ठ | स्थलविशेष | लेखाक | पृष्ठ |
|----------------------|-------|-------|----------------|-------|-------|
| म | | | मारवाड [प्रात] | ९८ | ७६ |
| भऊसमसानाद | १४० | ११७ | | ९९ | ७८ |
| मगलपूर [पौा] | ४०४ | ३३७ | | १०१ | ८० |
| मडगांव | ४२८ | ३६३ | | १५३ | १२८ |
| | ४५३ | ३८२ | | १५६ | १२९ |
| मथुरा. | १२४ | १०३ | | १५८ | १३२ |
| | १५० | १२५ | | १६१ | १३४ |
| | २०४ | १६६ | | १६६ | १३७ |
| | २३६ | १८८ | | १७६ | १४३ |
| | ३५४ | २९३ | | २३० | १८५ |
| | ३७६ | ३११ | | २६६ | २१४ |
| | ४०० | ३३३ | | २६७ | २१५ |
| | | | | २७३ | २२१ |
| मलठण. | १८० | १४६ | | २७४ | २२१ |
| मलपुरा [पौा] | १२६ | १०५ | | २७६ | २२२ |
| मलीखेडा. | ४०१ | ३३५ | | २९८ | २४० |
| महादरा. | ३८ | २९ | | ३१५ | २५५ |
| महिमतगढ | १४७ | २२१ | | ३१६ | २५८ |
| | २९५ | २३६ | | ३३१ | २७२ |
| भद्र [कसवे] गंगातीर. | २०२ | १६२ | | ३३३ | २७४ |
| भूसोदे. [मसोदा] | १५० | १२४ | | ३७४ | ३०९ |
| | ४०० | ३३२ | मालपूर | १९८ | १५८ |
| | ४४४ | ३७६ | माहुलीसगम | ४६२ | ३९२ |
| मस्वावण [पौा] | ४०४ | ३३८ | मालवा | १६ | १५ |
| माढोगण. | २४१ | १९६ | | २३ | २० |
| मानपुरी. | २ | २ | | १८३ | १४८ |
| मारवाड [प्रात] | ३९ | ३६ | | ३२५ | २६६ |
| | ६० | ४५ | मिरज. | १७४ | १४२ |
| | ६२ | ४७ | | १८४ | १४८ |
| | ६५ | ४९ | | २३८ | १९० |
| | ७० | ५४ | | ३८९ | ३१९ |
| | ७१ | ५५ | | ३१२ | २५३ |
| | ७४ | ५८ | | ३१६ | २५८ |

| स्थलविशेष | लेखाक | पृष्ठ | स्थलविशेष. | लेखाक. | पृष्ठ. |
|------------------|-------|-------|----------------|--------|--------|
| मिरज | ३९५ | ३२७ | मडले [भ्रात] | ३९९ | ३३१ |
| | ४२२ | ३५८ | मदोसर | ४५५ | ३८६ |
| | ४२३ | ३५९ | | ४५९ | ३९० |
| | | | | ४६५ | ३८४ |
| मिरीगांव. | २९८ | २४१ | | | |
| मुकुदवारी. [हरा] | २३८ | १९२ | | | |
| मुगांव. | ३३० | २७१ | यादवगिरी | २९४ | २३४ |
| मुतोर | ४०४ | ३३८ | | २९५ | २३५ |
| भुयेगांव [पो] | ४०४ | ३३७ | गावल [पो] | ७८ | ६१ |
| भुरादाबाद. | २०४ | १६६ | येंसठ माजीपूर | २२० | १७९ |
| भुलतान. | ९५ | ७४ | येमुना नदी तीर | ४०४ | ३३८ |
| | २०७ | १६९ | | २३३ | १८६ |
| | २०८ | १७० | | २७८ | २२३ |
| | २८४ | २२८ | | २८५ | २२८ |
| | २८४ | २२८ | | २८६ | २२८ |
| भेडता. | ४७ | ३५ | | २९३ | २३३ |
| | ४९ | ३६ | | २९४ | २३४ |
| | १५३ | १२८ | | २९५ | २३४ |
| | १५४ | १२९ | | २९५ | २३५ |
| | १५५ | १२९ | | ३३० | २७१ |
| | १५६ | १२९ | | ३९२ | ३२३ |
| | २१९ | १७८ | | ३९३ | ३२६ |
| | २६८ | २१६ | | | |
| मेणपुरी | ३३० | २७१ | रघोली [मोजे] | ३६ | २९ |
| | ३३१ | २७२ | रजपुताना | ११२ | ९६ |
| मेरठ | ९८ | ७७ | रतनगढ | ३१२ | २५२ |
| | १०० | ७९ | | ३१६ | २५७ |
| | १०१ | ८१ | रत्नागिरी. | १४७ | १२२ |
| | १०५ | ८८ | | १६२ | १३५ |
| भोरवाडी. | ३७४ | ३०९ | | ३०६ | २४७ |
| भोर रासमाहाला पो | ४०४ | ३३८ | | ३२६ | २६७ |
| भोसमपूर. | ४०४ | ३३८ | | ४६२ | ३९२ |
| मडनगढ. | ३०६ | २४७ | रसालगढ. | १६२ | १३५ |
| | ३१६ | २५८ | | ३०६ | २४७ |

| स्थलविशेष | लेखाक | पृष्ठ | स्थलविशेष | लेखाक | पृष्ठ |
|-------------------|-------|-------|--------------------|-------|-------|
| राजगढ | ४५५ | ३८५ | लष्कर | ३८२ | ३१४ |
| राजपुरी | ११४ | ९७ | | ४५४ | ३८४ |
| राजनगाव [पोगां] | ३६ | २८ | लाहौर | ९२ | ७१ |
| राजबदरी | ४०१ | ३३५ | | ९३ | ७० |
| राजापूर [प्रात] | १ | १ | | ९५ | ७३ |
| | ४६२ | ३९२ | | ९५ | ७४ |
| राजेटाकली | ४४६ | ३७७ | | ९६ | ७४ |
| रामनगर | ९१ | ७० | | ९७ | ७६ |
| रामपुरा | ३९७ | ३३० | | ९८ | ७६ |
| रामपुरी | ४०० | ३३२ | | ९९ | ७८ |
| रामेश्वर | १० | ९ | | १०० | ७९ |
| | १२ | १० | | १०१ | ८० |
| | १४३ | ११९ | | १०२ | ८३ |
| रायेपूर | ३३३ | २७३ | | १०५ | ८८ |
| रारी थेकडला | ४०४ | ३३८ | | १०६ | ८९ |
| रास महाला [पोगां] | ४०४ | ३३८ | | १८७ | १५० |
| राहाल | ४४४ | ३७६ | | २८४ | २२८ |
| राक्षसभुवन | १४२ | ११८ | | २९० | २३१ |
| | २५५ | २०७ | | ३७५ | ३१० |
| | ४१५ | ३४६ | | ३७६ | ३११ |
| रूपनगर | २९५ | २३६ | | ३९२ | ३२२ |
| | २९८ | २४० | लिपणगाव [भोजे] | ३६ | २८ |
| | २९८ | २४१ | लोणी | ३३९ | २८३ |
| | २९९ | २४२ | लोनेर टाकली [भोजे] | ३६ | २८ |
| | ३०१ | २४३ | | | |
| | ३४० | २८३ | व | | |
| रेवा मुकुंदपूर | ११ | ९ | वडनेर | ७५ | ५८ |
| रोहेण | २१६ | १७६ | वराड [प्रात] | १८७ | १२१ |
| | | | | १९६ | १५६ |
| | | | | १९८ | १५६ |
| लखनौती [पोगां] | १२६ | १०५ | | ३४४ | २८७ |
| लष्कर | ४ | ३ | | ३८४ | ३१५ |
| | २८४ | २२७ | | ३९९ | ३३२ |
| | २९५ | २३६ | वसतगाड | १४७ | १२१ |

| स्थलविशेष | लेखांक | पृष्ठ | स्थलविशेष | लेखांक. | पृष्ठ. |
|-----------------|--------|-------|------------------|---------|--------|
| वसई | २४ | २० | श्रीगोदे | १७७ | १४४ |
| व्यासनदी | ९२ | ७१ | | १८४ | १४८ |
| वागवोर | १५० | १२४ | | २२० | १७८ |
| वारानशी | १५६ | १३१ | | २२१ | १७९ |
| वालुज | ३६ | २८ | | २२२ | १८० |
| | ३९ | ३१ | | २२३ | १८१ |
| विघ्नवली [मोजे] | १ | १ | | २४० | १९३ |
| विजयदुर्ग | १६० | १३३ | | ४१५ | ३४७ |
| | १६२ | १३५ | | ४१९ | ३५० |
| | २९५ | २३६ | | ४२१ | ३५२ |
| | ३०६ | २४८ | | ४२२ | ३५५ |
| | ३२६ | २६७ | | ४२३ | ३५८ |
| | ३३७ | २८१ | | ४२६ | ३६० |
| | ३३८ | २८२ | | ४२७ | ३६१ |
| | ३३७ | २८१ | | ४२८ | ३६३ |
| | ३३८ | २८२ | | ४४६ | ३७९ |
| विजयगड | ३२६ | २६७ | श्रीत्रकेश्वर | ३०५ | २४६ |
| विटावा | ४६४ | ३९३ | श्रीरगपट्टन | २९५ | २३५ |
| विठूर | ३३३ | २७५ | | ३१५ | २५५ |
| | ३५५ | २९४ | | ३१६ | २५७ |
| वृंदावन | २०३ | १६४ | शुक्रताल | १९० | १५१ |
| | ३३१ | २७३ | शेरगड. | ४२८ | ३६३ |
| | ३५४ | २९३ | शेवगाव | २३७ | १९० |
| वोडर [कसवे] | ७५ | ५८ | स | | |
| | | | सकतपूर | २६४ | २१३ |
| गहरी | ११३ | ९६ | | ३३० | २७१ |
| गाहाजापूर | १५० | १२४ | | ४०४ | ३३७ |
| | ४५५ | ३८५ | सकुरेवाड | २६४ | २१२ |
| शाहाडोरा | ३१२ | २६३ | | २६८ | २१६ |
| | ४०४ | ३३७ | | ३३० | २७१ |
| शिवराजपुर [पो] | ८५ | ६४ | | ३३१ | २७३ |
| श्रीगोदे | १४४ | ११९ | | ४०४ | ३३८ |
| | १६० | १३३ | सप्तऋषी [सातारा] | २०१ | २६१ |

| स्थलविशेष | नगराग. | पृष्ठ | स्थलविशेष | लेखाक | पृष्ठ |
|--------------|--------|-------|------------------|-------|-------|
| मन्त्रालय. | २२६ | १८८ | सावर [सामोर] | १५३ | १२८ |
| समालता [पो] | १२६ | १०५ | | २०४ | १६६ |
| सभीय [पो] | ४०४ | ३३८ | | २१६ | १७५ |
| भगमावाह [पो] | १२६ | १०५ | | २२९ | १८४ |
| गरहदी [पो] | १२६ | १०५ | | २९३ | २३३ |
| मवगजपुर | ४०४ | ३३८ | | २९६ | २३१ |
| महेश्वर. | ३०७ | २४८ | | ३७७ | ३१२ |
| | ३१२ | ३५१ | सालेमर | ३८८ | ३१८ |
| गाउमी | ३६९ | ३०५ | मावतवाडी. | ४२४ | ३६० |
| सागोत्रे. | २९५ | २३४ | साष्टी | १६० | १३३ |
| | | २३५ | | २९५ | २३६ |
| सागर [कसबे] | ११८ | १०० | सावनूर | २८ | २३ |
| | ३३२ | २७३ | | २९५ | २३५ |
| | ३९९ | ३३१ | | ३१६ | २५७ |
| साडी | ३५५ | २५५ | | ३३५ | ३८० |
| सातारा | ३ | ३ | सरहिद | ९४ | ७२ |
| | ३८ | २९ | सतलज नदी | १०२ | ७४ |
| | १२९ | १०९ | सवल मुरादावाह | २०४ | १६६ |
| | १४७ | १२१ | श्रीक्षेत्र, | ३०४ | २४५ |
| | १९९ | १६१ | सावरे | २८९ | २३० |
| | २०१ | १६२ | सासवड | २६८ | २१७ |
| | २४३ | २०० | साराली | ३९८ | ३३१ |
| | २९५ | २३६ | साहारणपूर [सुभे] | १२६ | १०५ |
| | ३२१ | २६१ | सिकरा | ४०४ | ३३७ |
| | ३२६ | २६८ | सिकाकोल | ४०१ | ३३५ |
| | ३३४ | २७६ | सिकारपुरखडी [पो] | १२६ | १०५ |
| | ३६९ | ३०६ | सिगोक्वर | १४७ | १२२ |
| | ४६२ | ३९२ | सिणे | २९५ | २३५ |
| सादणी | ४६३ | ३९३ | सिदखेड | ११२ | ९५ |
| | २०७ | १६९ | सिदोडी [मोजे] | ७९ | ६१ |
| सावर [सामोर] | ६५ | ४९ | सिधोटा. | ९० | ६७ |
| | १५२ | १२७ | सिधटेक [मोजे] | ७८ | ६० |

| स्थलविशेष. | लेखांक. | पृष्ठ | स्थलविशेष. | लेखांक. | पृष्ठ. |
|----------------|---------|-------|--------------|---------|--------|
| सिरगाव [मोजे] | ११५ | ९८ | सोनपत. | २३३ | १८६ |
| सिवडी [मोजे] | ७५ | ५८ | | ३९२ | ३२४ |
| | २६४ | २१३ | सोनवडी वाडी. | ३९ | ३१ |
| सिवराजपुर. | ३२९ | २७० | सोनगड | २४२ | १९८ |
| | ३३० | २७१ | सोनवी [नदी] | १ | २ |
| सिवली. | ४०४ | ३३८ | सोनवी. | ४६१ | ३९१ |
| सिवोद. | १८३ | १४७ | सोनुर. | ३३५ | २८० |
| सीतामहू | ४२७ | ३६२ | सोपार [पो] | १२६ | १०५ |
| | ४५५ | ३८५ | | ३०० | २४२ |
| सिरोज | २९८ | २४१ | | ३९२ | ३२३ |
| | २०४ | १६७ | | ४११ | ३४३ |
| | ३९६ | ३२७ | | ४२७ | ३६२ |
| | ३९९ | ३३१ | सोमेश्वर | ४६२ | ३९२ |
| | ३१२ | २५३ | सोरला | ४०४ | ३३७ |
| सुकेत [गडी] | ४४४ | ३७६ | सोरट [प्रात] | ९५ | ७४ |
| सुदरसी [पो] | ४५५ | ३८५ | | २६९ | २१३ |
| सुमेरगिरीचा मठ | ३८ | २८ | मोरीट | ३३० | २७१ |
| सुरत | १०७ | ९० | सोलागाव. | ८२ | ६३ |
| | १६० | १३३ | | ८३ | ६३ |
| | ३९४ | ३२६ | | ७५ | ५८ |
| सुलतानपुर. | ११२ | ९५ | सगमनेर. | ११३ | ९६ |
| सुवर्णदुर्ग | १६१ | १३४ | | २३७ | १९० |
| | १६२ | १३५ | समल | २०४ | १६६ |
| | ३०६ | २४७ | | | |
| | ३१६ | २५७ | हरपनहली | २९५ | २३५ |
| सदबा | ४०१ | ३३५ | हरसिची | १५० | १२३ |
| मेवगाव [पो] | ३६ | २८ | हवेली [ता] | २ | २ |
| सेवढे. | १०९ | ९२ | | २४१ | १९७ |
| मोथे | ३५३ | २९२ | हसवा. | ४०४ | ३३८ |
| मोथे | ३२६ | २६७ | हाटे. | ३९९ | ३३१ |
| | ३५३ | २९२ | हाड ती | ४३१ | ३६४ |
| सोनपत [पो] | १२६ | १०५ | | ४३३ | ३६६ |
| | ३९२ | ३२३ | | | |

| स्मलविशेष. | खलाक. | पृष्ठ. | स्मलविशेष. | खलाक. | पृष्ठ. |
|-------------|-------|--------|---------------|-------|--------|
| हासलपुर. | १८३ | १४७ | हिंदुस्थान | ४१९ | ३५१ |
| हिंदुस्थान. | ५१ | ३८ | | ४२१ | ३५४ |
| | ५१ | ३९ | | ४२२ | ३५७ |
| | ६९ | ५२ | | ४२३ | ३५९ |
| | ७१ | ५५ | | ४२७ | ३६२ |
| | ७३ | ५७ | | ४३९ | ३७१ |
| | १०१ | १८० | | ४४२ | ३७४ |
| | ११२ | ९६ | हिणे [मोजे] | ३८ | २८ |
| | २२२ | १८० | हिवेर [मोजे] | २४१ | १९५ |
| | २२६ | १८२ | | २४३ | २०० |
| | २९५ | २३६ | | २४४ | २०१ |
| | ३०६ | २४७ | हुमणावाद | २९८ | २४१ |
| | ३३५ | २८० | हेडगाव [मोजे] | ३६ | २९ |
| | ३७६ | ३११ | होडल | १२४ | १०३ |
| | ४१५ | ३४६ | हंडपाचा घाट | २०४ | १६७ |
| | ४१७ | ३४९ | हतगाव. | ४०४ | ३३८ |

